

Abhinava

PRĀKRTA VYĀKARANA

[The rules of Phonetic changes, combination of Vowel and Consonants, Declension, Language base, Government of Cases, Compounds, Primary and Secondary Suffixes, Moods and Tenses, Degree of Comparison, Conjugation of various roots, Denominative, Considerative, Causative and Reciprocal verbs, list of roots, titles of Śaunakeyī Māgadhī Arthī Māgadhī Jan Mal āśāśī Pāśācī, Culikā Pū sācī Prakṛts Apabhraṅśā etc etc]

PA

DR N C SHASTRI MA PH D (GOLD MEDALIST)

*Dept. of Sanskrit & Prākrit
H D Jain Collg Arwal
(Migal University)*

TARA PUBLICATIONS
Varanasi
1963.

FIRST EDITION 1963

Rs. 15/-

Printed at The Tara Printing Works, Varanasi

अभिनव प्राकृत-व्याकरण

[अग्नि-परिवर्तन, सन्धि, गुणन, धीप्रमथ, वारन, ममाग, तद्विग, तिङन्त वृत्त, नामधातु सम्बन्धो अनुशासनों के साथ धातु कोर; शीलेतो, अर्धतागती, पतार्धस प्रभृति विभिन्न प्राकृतों के विशिष्टाणुशासनों एवं भाषाभैतानिक विद्वानों के समन्वय]

टा० नेमिचन्द्र शास्त्री

ज्योतिषाचार्य, म्यापतीर्थ, एम० ए० (संस्कृत, हिन्दी और-प्राकृत एवं
वैनोतोजी), पी०एच०डी०, गोल्डमेडलिस्ट

संस्कृत एवं प्राकृत विभाग, एच०डी० जैन रज्जेज, आरा
(मगध विश्वविद्यालय)

३

तारा पब्लिकेशन्स

कमञ्जा, वाराणसी

१९६३

प्रथम संस्करण १९६३
मूल्य पन्द्रह रुपये

द्वारा प्रिन्टिंग चर्ज, धाराणसी

प्राच्य भारतीय भाषाओं एवं उनके वाङ्मय

के

पारङ्गत विद्वान्

समादरणीय

डा० हीरालालजी जैन

एम०ए०, एल०एल०बी०, डी०लिट०

की

सादर

—शुभावनत

नेमिचन्द्र शास्त्री

विषय-सूची

प्रस्तावना

अध्याय १

वर्ण विचार और संज्ञाएँ

स्वर	१-५
व्यञ्जन	१
वर्णों के उच्चारण स्थान	१
प्रवहन विचार	३
घोष	३
अघोष	३
अल्पप्राण	३
महाप्राण	३
स्पर्श	३
अयोमवाह	३
ऊर्म	३
शान्तःस्थ	३
स्व-विभक्ति-द्वादि स-शु-शु-रु-ग-कु-तु संज्ञाएँ	४
घट्टुल-रित-ल्लुक्-उद्गुत्तस्वर संज्ञाएँ	५

अध्याय २

सन्धि-विचार

सन्धि परिभाषा	६-२०
सन्धि के भेद और उनके विश्लेषण	६
स्वर सन्धि के भेद	६
दीर्घ सन्धि : नियम और उदाहरण	७
दीर्घसन्धि : निषेध और विशेष उदाहरण	८
गुणसन्धि : नियम और उदाहरण	९
विशिष्ट उदाहरण	९
गुणसन्धि : अपवाद और सन्धि अभाव	१०
ह्रस्व-दीर्घ विधान सन्धि : नियम और उदाहरण	११
प्रकृतिभावसन्धि : नियम और उदाहरण	११-१२

प्रदृति-भाव सन्धि : अपवाद	१३
नित्यसन्धि : नियम और उदाहरण	१३
व्यञ्जन सन्धि : नियम और उदाहरण	१४
पदान्त के मकार की व्यवस्था : नियम और उदाहरण	१५
अनुस्वार की व्यवस्था	१६
अनुस्वरागम : नियम और उदाहरण	१८
अनुस्वार लुक् : नियम और उदाहरण	१९
सव्यय सन्धि : स्वरूप, व्यवस्था और उदाहरण	१९
सव्यय सन्धि के अपवाद	२०

अध्याय ३

वर्ण विकृति

२१-८२

वर्ण विकृति के सामान्य नियम और उदाहरण	२१
अन्त्य हल् व्यञ्जन की व्यवस्था	२३
समृद्धिगण के शब्दों में ह्रस्व-दीर्घ स्वर व्यवस्था	२७
आकृति गण और स्वप्नादि गण : स्वर विकृति	२८
प्रथम प्रभृति शब्द : स्वरविकृति	३०
पानीयगण : स्वर विकृति	३८
मुकुलादि गण : स्वर विकृति	३९
कृपादिगण : स्वर विकृति	४२
अतु प्रभृति शब्दों में ऋकार विकृति	४४
द्वैत्यादि और धैरादिगण : स्वर विकृति	४८
सौम्यादि गण : स्वर विकृति	५९
कौशेय और पौरादि गण : स्वर विकृति	५०
व्यञ्जन विकृति : नियम और उदाहरण	५१
मध्यवर्ती क-ग-च ज-त लोप : उदाहरण	५१
मध्यवर्ती द-प-य व लोप : उदाहरण	५२
लोप के अपवाद	५३
ख-घ-ध-भ के स्थान पर ह्र : उदाहरण	५४
ठ-ड-ड के स्थान पर ढ-ड-ळ उदाहरण	५६
त्त के स्थान पर ढ : उदाहरण	५८
ऋत्वादि गण में त्त्कार के स्थान पर ह्र : उदाहरण	५९
न के स्थान पर ण : नियम और उदाहरण	६१

ट = ढ, ढ, ल :	नियम और उदाहरण	१११
ठ = ल, ह, ढ :	" "	११२
ड = ल :	" "	११२
ण = ल :	" "	११२
त = च, छ, ट, ढ, ण, र, ल, व, ह :	" "	११२
थ = ढ, ध, ह :	" "	११४
द = ढ, ध, र, ल, व, ह :	" "	११५
ध = ढ, ह : नियम और उदाहरण		११६
न = ण, प्ह, ल :	" "	११७
प = फ, म, व, र :	" "	११७
ब = म, म, य :	" "	११८
भ = व, ह	" "	११८
म = ढ, व, स :	" "	११८
य = झ, ज, त, ल, व, ह :	" "	११९
र = ढ, ण, ल :	" "	१२०
ल = र, ण :	" "	१२१
व = म, म :	" "	१२१
श = ल, स, ह :	" "	१२१
ष = छ, प्ह, स, ह :	" "	१२२
स = छ, ह :	" "	१२२
ध्वनि छोप : उदाहरण		१२३
क्ष = ख, छ, झ :	नियम और उदाहरण	१२४
क्क, रक्क = ख, वख :	" "	१२५
ह्य = च, छ :	" "	१२६
ह्व = च, ह्व = छ, ह्य = ज, ध्व = झ :	नियम और उदाहरण	१२६
ह्य, छ, हस, प्स = ह्य :	" "	१२७
ह्य, ह्य, र्य = ज :	" "	१२७
ह्य, ह्य = झ :	" "	१२८
ह्य = ह :	" "	१२९
ह्य, ह्य = ण :	" "	१२९
ह्य = थ, ह्य :	" "	१२९
ह्य = र ह :	" "	१३०

एम्, एम = ए :	नियम और उदाहरण	१३०
एन्, एण = ए, एण :	" "	१३१
इ = भ, एभ :	" "	१३१
इम्, इम = इ :	" "	१३१
इय, इय, इय, इय, इय = इह :	" "	१३१
इन्, इण, इन्, इन्, इन्, इण, इम = इह :	" "	१३२
ऊ = उह :	नियम और उदाहरण	१३३
ऊ = ऊ, ऊ :	" "	१३३
ई, ई, ई, ई, ई = ईह, ईय, ईय :	नियम और उदाहरण	१३४
ई = ईय :	नियम और उदाहरण	१३५
संयुक्त व्यन्जनो में विशेष परिवर्तन :	उदाहरण	१३६
द्विरच :	उदाहरण	१३७
भानियमित परिवर्तन :	उदाहरण	१३७
आमूल परिवर्तन, यर्गव्यस्यय :	उदाहरण	१३८

अध्याय ५

<u>लिङ्गानुशासन</u>	१३६-१४२
संस्कृत के कुछ गर्भगुह शब्द प्राकृत में पुंलिङ्ग :	१३६
विशिष्ट-विशिष्ट शब्दों की विशेष लिङ्ग व्यवस्था	१४१
स्त्री प्रत्यय	१४२-१४७
पुंलिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के नियम और उदाहरण	१४२
कतिपय अल्पवकीय शब्द	१४५

अध्याय ६

<u>शब्दरूप</u>	१४८-२१२
शब्द और पद : परिभाषा	१४८
प्राकृत शब्दों का वर्गीकरण	१४९
विभक्ति विभक्त जोड़ने के नियम	१४९
अकारान्त शब्दों में जोड़े जानेवाले विभक्ति विभक्त	१५१
देव शब्द की रूपावली	१५१
घोर, जिग, वञ्जत : रूपावली	१५२
धम्म : रूपावली	१५३
हाडा : रूपावली	१५३
इकारान्त, उकारान्त, शब्दों में विभक्तियों के जोड़ने के नियम	१५४

इकारान्त-उकारान्त विभक्ति चिह्न	१५१
हरि : रूपावली	१५५
गिरि, णरवद्, इसी : रूपावली	१५६
अग्नि, भाणु : रूपावली	१५७
वाउ : रूपावली	१५८
पदी, गामणी, खलपू : रूपावली	१५९
सयंभू : रूपावली	१६०
ऋकारान्त शब्दों में विभक्ति चिह्न जोड़ने के नियम	१६०
कत्तार, रूपावली	१६१
भत्तार, भायर, : रूपावली	१६२
पिउ, दाउ : रूपावली	१६३
सुरेअ : रूपावली	१६४
गिलोअ : रूपावली	१६५
स्वरान्त खीलिङ्ग शब्दों की व्यवस्था	१६५
धाकारान्त खीलिङ्ग शब्दों में जोड़े जानेवाले विभक्ति चिह्न	१६६
रदा, माला : रूपावली	१६६
डिहा, हलिहा, मटिआ : रूपावली	१६७
इकारान्त खीलिङ्ग शब्दों के विभक्ति चिह्न	१६८
मई : रूपावली	१६८
मुत्ति, राह : रूपावली	१६९
ईकारान्त खीलिङ्ग शब्दों के विभक्ति चिह्न	१६९
लउती, रणिरगी : रूपावली	१७०
यहिणी, धेणु : रूपावली	१७१
तणु, रज्जू, पट्टु : रूपावली	१७२
सामू, चमू : रूपावली	१७३
माआ, ससा, नणन्दा : रूपावली	१७४
माउत्तिआ, धूआ : "	१७५
गादी, नावा "	१७६
नपुंसकलिङ्ग के विभक्ति चिह्न	१७७
धग, धग : रूपावली	१७७
ददि, वारि, मुरदि, महु : रूपावली	१७८
जाणु, अंसु : रूपावली	१७९

अप्याण, व्यप, अत्त : रूपावली	१७९
राग, मह्य, सुद्ध : रूपावली	१८१
जगमो, चन्दमो : रूपावली	१८२
जसो, उसणो : रूपावली	१८३
हसन्त, हसमाण : रूपावली	१८३
भगवन्तो, सोहिल्लो : रूपावली	१८४
नेहाल्ल, तिरिच्छ, भिसअ, साअ, कम्मा : रूपावली	१८५
महिमा, गरिमा, अच्चि : रूपावली	१८६
हसई : रूपावली	१८७
भगवई, सरिआ : रूपावली	१८८
तडि, पडिआ, संपया, धुहा : रूपावली	१८९
फउहा, तिरा, दिसा, अचउआ, तिरिच्छी . रूपावली	१९०
विञ्चु, शम : रूपावली	१९१
नाम, पेम्म, अइ, सेयं, वयं : रूपावली	१९२
हसन्त, भगवन्त, आउसो, आउ : रूपावली	१९३
सञ्च, सुव : रूपावली	१९४
अत्त, पुव, पुरिम :	१९५
ण, त (तत्), ज (यद्) : रूपावली	१९६
क (किम्), एत्त, एअ (एतद्) : रूपावली	१९७
अमु, इम (इदम्) : रूपावली	१९८
सन्ना :	१९८
सुया, अण्णा, दाहिणा	१९९
सा (तद्), जा (यद्) :	२००
का (किम्), एई, एआ (एतद्) : रूपावली	२०१
अमु (अदम्) इमो, इमा (इदम्) :	२०२
नपुंसक सव्य, सुय, पुञ्च :	२०३
त (तद्), ज (यद्), कि (किम्), एअ, अमु, इम : रूपावली	२०४
सुअद्दु : रूपावली	२०५
अस्सद्दु :	२०६
सेल्लाप्राचरु शब्द : रूपावली	२०७

अध्याय ७

अव्यय और निपात

अव्यय परिभाषा और भेद

२१३-२३३

२१३

उपसर्ग : विश्लेषण	२१३
प्राकृत के बीस उपसर्ग सोदाहरण	२१४
क्रियाविशेषण	२१५
समुच्चय बोधक अव्यय	२१९
मनोविकार सूचक अव्यय	२१९
निपातों की अनुक्रणिका	२२१

अध्याय ८

<u>कारक, समास और तद्धित</u>	२३४-२६२
कारक परिभाषा और व्यवस्था	२३४
प्रथमा विभक्ति : नियम और उदाहरण	२३५
कर्मकारक की परिभाषा और द्वितीया विभक्ति : नियम और उदाहरण	२३६
करण कारक की परिभाषा और तृतीया विभक्ति : नियम और उदाहरण	२३७
सम्प्रदान कारक की परिभाषा और चतुर्थी विभक्ति : नियम और उदाहरण	२३९
अपादान कारक की परिभाषा और पञ्चमी विभक्ति : नियम और उदाहरण	२४०
षष्ठी विभक्ति : नियम और उदाहरण	२४१
अधिकरण कारक का स्वरूप और सप्तमी विभक्ति : नियम और उदाहरण	२४२
समास : परिभाषा और भेद	२४४
वाच्ययीभाव : नियम और उदाहरण	२४४
तत्पुरुष : नियम और उदाहरण	२४५
प्रादितत्पुरुष, उपपद और कर्मधारय : नियम और उदाहरण	२४८
द्विगु : परिभाषा, भेद और अनुशासन	२४९
चहुँगीदि : अनुशासन	२५०
द्वन्द्व : अनुशासन	२५३
तद्धित : परिभाषा और भेद	२५५
इदमर्थक प्रत्यय, उदाहरण	२५५
व्य, इमा, त्त्त, हुत्त, ळाल, इल्ल, उल्ल, आल, वन्त, मन्त : प्रत्यय और उदाहरण	२५६
त्तो, दो : प्रत्यय और उदाहरण	२५७
दि, स्वार्थिक इल्ल, ल, उल्ल; इत्तिभ : प्रत्यय और उदाहरण	२५८
पत्तिभ, पत्तिळ, पद्द, सि, सिअं, इमा : प्रत्यय और उदाहरण	२५९
लय, इय, ळालिभ, ल, ललो, इअ, णय : प्रत्यय और उदाहरण	२६०
तर, तम : प्रत्यय और उदाहरण	२६१

अध्याय ९

<u>क्रिया विचार</u>	२६३-३८२
क्रियारूपों की जानकारी के आवश्यक नियम	२६३
कर्त्तरि धातुओं के विकरण सम्यन्धी नियम	२६४
वर्तमान, भूत, भविष्यत्, विधि-आज्ञा एवं क्रियातिपत्ति ५ प्रत्यय	२६७
हस् धातु : समी फाओं की रूपावली	२६८
हो (भू) : रूपावली	२६९
ठा (स्था) : "	२७०
भा (ध्वै) : "	२७१
ने (नी) : "	२७२
उड़े (उड्डी) : "	२७३
पा : रूपावली	२७४
पहा (स्मा) : रूपावली	२७५
गा (गी) : रूपावली	२७६
विकरण भिन्नता से हो (भू) : रूपावली	२७७
रव (ह) : रूपावली	२७८
कर (कृ) रूपावली	२७९
अस् : रूपावली	२८०
एव (युप्) : रूपावली	२८१
युग (स्तु) : "	२८२
हरिस (हप्) : "	२८३
गच्छ (गम्) : "	२८४
घोल्ल, जंप, कह (कथ) : "	२८५
शुव (धू) : "	२८६
<u>कर्मणि—</u>	
हस : रूपावली	२८७
दा (भू) : "	२८८
ने (नी) : "	२८९
क्ता (ध्वै)	"
चिञ्च वि) : "	२९०
ठा (स्था) : "	२९०
पा :	"
भण :	"
	२९२
	२९३

लिङ्ग :	रूपावली	२९६
<u>प्रेरणार्थक—</u>		
हस :	रूपावली	२९६
कर (कृ) :	”	२९८
खक (ख्र्) :	”	३००
हो (भू) :	”	३०१
कुछ क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूपों का संकेत		३०३
कर्मणि और भाव में प्रेरकरूप		३०३
प्रेरक भाव और कर्मणि—हास, ह्यसि : रूपावली		३०४
खाम, पमावि (क्षम्) :	”	३०६
पिवास (पा) :	”	३०७
सन्नन्त—लिच्छ (लम्) :	”	३०९
जुगुच्छ (गुप्) :	”	३०९
बहुम्ब (भुज्) :	”	३१०
सुस्मृत् (धु) :	”	३११
यङन्त : विश्लेषण और उदाहरण		३१२
यङ्लुगन्त : विश्लेषण और उदाहरण		३१२
नाम धातु बनाने के नियम और उदाहरण		३१३
कृत् प्रत्यय		३१६
वर्तमान कृदन्त , प्रत्यय और उदाहरण		३१६
भावि वर्तमान कृदन्त , ,		३१७
कर्मणि वर्तमान कृदन्त , ,		३१८
वर्त्तरि प्रेरक, प्रेरक भावि और प्रेरक कर्मणि वर्तमान कृदन्त : प्रत्यय और उदाहरण		३१८
भूतकृदन्त : प्रत्यय और उदाहरण		३२०
प्रेरणार्थक, अनियमित भूत कृदन्त		३२१
<u>भविष्यत्कृदन्त</u>		३२३
हेत्वर्थ कृत् : प्रत्यय और उदाहरण		३२३
प्रेरणार्थक हेतु कृदन्त : प्रत्यय और उदाहरण		३२३
अनियमित हेत्वर्थ कृदन्त : , ,		३२४
सम्वन्ध भूत कृदन्त : , ,		३२६
प्रेरणार्थक सम्वन्ध सूचक कृदन्त : प्रत्यय और उदाहरण		३२६
अनियमित सम्वन्धक भूत कृदन्त : , ,		३२७

पैशाची के कुछ शब्द	४५०
चूलिका पैशाची . ध्वनि परिवर्तन सम्बन्धी नियम और उदाहरण	४५२

अध्याय ११

अपभ्रंश : इतिहास और व्यवस्था	४६४
अपभ्रंश : ध्वनि परिवर्तन सम्बन्धी नियम और उदाहरण	४६४
अपभ्रंश : वर्णोन्मत्त, वर्णविरयय और वर्णविकार	४२६
अपभ्रंश : शब्दरूपावली के नियम	४६१
अपभ्रंश : रूपावली [देव, वीर, इति, गिरि, माणु,]	४६६
श्रीलिङ्ग [माला, मई, पदद्वी, पेशु, यह]	४६९
नपुंसकलिङ्ग—बमल रूपावली	४७०
सर्वनाम—सव्व, तुम, हर्द, एद, जु, सो, फ, आय, जा, सा, का, जं, तं, किं, इमु : रूपावली	४७१
सर्वनामशब्दों से निष्पन्न विशेषण [परिमाणवाचक, गुणवाचक, सम्बन्धवाचक, स्थानवाचक, समयवाचक]	४७४
अन्य अव्यय—तालिका	४७५
तद्धित : प्रत्यय और उदाहरण	४७६
क्रियारूपों के नियम	४७७
धातुवादेश	४७९
क्रियाओं में जुड़नेवाले प्रत्यय	४७९
वरधातु की रूपावली	४८०
कृदन्त : प्रत्यय और उदाहरण	४८०
भूतकृदन्त	४८१
सम्बन्धक कृदन्त : प्रत्यय और उदाहरण	४८१
हेत्वर्थ कृदन्त : " "	४८१
विध्यर्थ कृदन्त . प्रत्यय और उदाहरण	४८२
शील्यर्थक कृदन्त : " "	४८२
क्रियाविशेषण	४८२

प्रस्तावना

भाषा-परिज्ञान के लिए व्याकरण ज्ञान की नितान्त आवश्यकता है। जब किसी भी भाषा के वाङ्मय की विशाल राशि संचित हो जाती है, तो उसकी विधिवत् व्यवस्था के लिए व्याकरण ग्रन्थ लिखे जाते हैं। प्राकृत के जनभाषा होने से आरम्भ में इसका कोई व्याकरण नहीं लिखा गया। वर्तमान में प्राकृत भाषा के अनुशासन सम्बन्धी जितने व्याकरण ग्रन्थ उपलब्ध हैं, वे सभी संस्कृत भाषा में लिखे गये हैं। वास्तव्य यह है कि जब पालि भाषा का व्याकरण पालि में लिखा हुआ उपलब्ध है, तब प्राकृत भाषा का व्याकरण प्राकृत में ही लिखा हुआ क्यों नहीं उपलब्ध है? अर्धमागधी के आगमिक ग्रन्थों में शब्दानुशासन सम्बन्धी जितनी सामग्री पायी जाती है, उससे यह अनुमान लगाना सहज है कि प्राकृत भाषा का व्याकरण प्राकृत में लिखा हुआ अवश्य था, पर आज वह कालकवलित हो चुका है। यहाँ उपलब्ध फुटकर सामग्री पर विचार करना आवश्यक है।

प्राकृत भाषा में प्राकृत व्याकरण के सिद्धान्त

आयारांग में (द्वि० ४, १ रु० ३३६) तीन वचन-लिंग-काण्ड-पुरष का विवेचन किया गया है। राणांग (अष्टम) में आठ कारकों का निरूपण पाया जाता है। इन सारी बातों के अतिरिक्त अनेक नये तथ्य अनुयोगद्वारा सूत्र में विस्तारपूर्वक वर्णित हैं।

इस ग्रन्थ में समस्त शब्दराशि को निम्न पाँच भागों में विभक्त किया है।

१—नामिक—सुन्तों का ग्रहण नाम में किया है। जितने भी प्रकार के संज्ञा शब्द हैं वे नामिक के द्वारा अभिहित किये गये हैं। यथा अस्सो, अस्से, अश्वः आदि।

२—नैपातिक—अव्ययों को निपातन से सिद्ध माना है। अतः अव्यय तथा अव्ययों के समान निपातन से सिद्ध अन्य देशी शब्द नैपातिक कहे गये हैं। यथा—

एतु, अकंतो, जह, जहा आदि।

३—आख्यातिक—धातु से निष्पन्न क्रियारूपों की गणना आख्यातिक में की है। यथा—

धावह, गच्छइ आदि।

४—औपसर्गिक—उपसर्गों के संयोग से निष्पन्न शब्दों को औपसर्गिक कहा गया है। यथा—परि, अणु, अव आदि उपसर्गों के संयोग से निष्पन्न अणुभवइ प्रभृति पद।

१—पंचनामे पंचविहे पणत्ते, तं जहा—(१) नामिकं, (२) नैपातिकं,

(३) आख्यातिकं, (४) औपसर्गिकं, (५) मिश्रम् । —अणुभोगदार सुत्तं १२५ सूत्र

६—मिश्र—मिथ्र शब्दावली के अन्तर्गत इस प्रकार के शब्दों की गणना की गयी है, जिन्हें हम समास, वृद्धन्त और तद्धित के पद कह सकते हैं। इस छोटी के शब्दों के उदाहरणों में 'संयत' पद प्रस्तुत किया है। वस्तुतः विशेष्य शब्दों को मिथ्र कहना अधिक तर्कसंगत है।

नाम शब्दों की निष्पत्तियाँ चार प्रकार से वर्णित हैं। आगम, लोप, प्रकृतिभाव और विकार ।^१

१. वर्णागम—वर्णागम कई प्रकार से होता है। वर्णागम भाषाविकास में सहायक होता है। इस वर्णागम का कोई निश्चित सिद्धान्त नहीं है। दुर्गाचार्य ने निरुक्त का लक्षण यतछाते हुए वर्णागम, वर्णविपर्यय (Metathesis) वर्ण विकार (Change of Syllable) वर्णनाश (Elision of Syllable) और अर्थ के अनुसार धातु के रूप की कल्पना करना—इन छः सिद्धान्तों को परिगणित किया है। अनुभोदार सुक्त में इसका उदाहरण कुण्डानि आया है।

२. लोप—भाषा के विकास को प्रस्तुत करनेवाला दूसरा सिद्धान्त लोप है। प्रयत्न छाष्य की दृष्टिसे इस सिद्धान्त का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वर्णलोप के भी कई भेद होते हैं—आदि वर्णलोप, मध्यलोप और अन्त्य वर्णलोप। यहाँ पर पटो + अथ = पटोऽत्र, घटो + अत्र = घटोत्र उदाहरण उपस्थित किये गये हैं।

३. प्रकृति भाव में दोनों पद ज्यों के त्यों रह जाते हैं, उनमें संयोग होने पर भी विकार उत्पन्न नहीं होता। यथा—माळे + इमे = माळे इमे, पटइमौ आदि।

४. वर्णविकार—दो पदों के संयोग होने पर उनमें विकृति होना अथवा ध्वनि-परिवर्तन के सिद्धान्तों के अनुसार वर्णों में विकार का उत्पन्न होना वर्णविकार है। यथा—
वधू > वहु, गुफा > गुहा, दधि + इदं = दधीद, नदी + इह = नदीह।

नाम—पदों के खोलिङ्ग, पुच्छिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग की अपेक्षा से तीन भेद होते हैं। आकारान्त, इकारान्त, उकारान्त और ओकारान्त शब्द पुच्छिङ्ग होते हैं। खोलिङ्ग शब्दों में ओकारान्त शब्द नहीं होते। नपुंसक लिङ्ग शब्दों में अकारान्त, इकारान्त और उकारान्त शब्द ही परिगणित हैं। यथा—

त पुण णामं त्तिविहि इत्थी पुरिसं णपुंसग चेव ।

एणसि तिण्हं पि अंतग्ग्मि अ परुवणं योच्छ ॥१॥

तत्थ पुरिसरस अना आ इ-उ ओ ह्वति चत्तारि ।

ते चेव इत्थिआओ ह्वति ओकार परिहीणा ॥२॥

१. अउणामे अउणत्ते १एणत्ते । त जहा—(१) भागमेण (२) तावेण
(३) पयएण, (४) विगारेण । —अनु भोगदार सुक्तं १२४ सू० ।

अंतिम-इतिअ-उंतिअ अंताउ नपुंसगस्य बोद्धव्या ।
 एतेसि तिण्हं पि अ घोच्छामि निदंसणे एत्तो ॥३॥
 आगारंतो 'राया' ईगारंतो गिरी अ सिहरी अ ।
 उगारंतो विण्हू दुमो अ अंताउ पुरिसाणं ॥४॥
 आगारंता माला ईगारंता 'सिरी' अ 'लच्छी' अ ।
 ऊगारंता 'जंजू' 'बहू' अ अंताउ इर्थीणं ॥५॥
 अंकारंतं 'घन्नं' ईंकारंतं नपुंसगं 'अत्थि' ।
 उंकारंतं पीलुं 'महुं' च अंता नपुंसगं ॥६॥

—अणुयोगदारसुत्त-व्यावर संस्करण स० २०१० सूत्र १२३ ।

इसो ग्रन्थ में भावनाम के चार भेद किये हैं—समास, तद्धित, धातु और निरुक्त ।
 समास के सात भेद बतलाये हैं^१—द्वन्द्व, बहुव्रीहि, कर्मधारय, द्विगु, तत्पुरुष, अव्ययीभाव
 और एकशेष । यथा—

द्वंद्वे अ बहुव्रीहि, कर्मधारय द्विगु अ ।
 तत्पुरिस अव्वईभावे, एकस्सेसे अ सत्तमे ॥१॥

बहुव्रीहि का उदाहरण देते हुए लिखा है—फुद्धा इमंमि गिरिम्मि कुडयकयंवा
 सो इमो गिरीफुद्धिय कुडयकयंवा ।

कर्मधारय—घवलो वसहो = घवलवसहो, किण्हो मियो = किण्हमियो ।

द्विगु—तिण्णि कहुगाणि = तिरुडुगं, तिण्णि महुराणि = तिमहुरं, तिण्णि
 गुणाणि = तिगुणं, सत्त गया = सत्तगयं, नवतुरंगा = नवतुरंगं ।

तत्पुरुष—तित्थे कागो = तित्थकागो, वणे हत्थी = वणहत्थी, वणे मयूरो =
 वणमयूरो, वणे वराहो = वणवराहो, वणे महिसो = वणमहिसो ।

अव्ययीभाव—अमुगामं, अणुणइयं, अणुचरियं ।

एकशेष—जहा एगो पुरिसो तहा बहवे पुरिसा, जहा एगो करिसावणो
 तहा बहवे करिसावणा जहा एगो साली तहा बहवे साली ।

तद्धित के आठ भेद बतलाये हैं^२—

१. कर्म नाम—तणहारण, कट्टहारण, पत्तहारण, कोलात्थि ।

२. स्थान्य नाम—तत्तुय्याण, पट्टकारे, मुंत्तकारे, पत्तकारे, दत्तकारे ।

३. सिलोक नाम—सण्णे, माहणे, सञ्जातिदी ।

४. संयोग नाम—रण्णो, ससुरण, रण्णो जामाउण, रण्णो साले ।

५. समीप नाम—गिरिसमीवे णयरं गिरिणयरं, वेत्तायडं ।

६. समूह नाम—तरंगवहकारे, मलयजइवारे ।

७. ईश्वरीय नाम—स्वाम्यर्थक—राईसरे, तलवरे, इब्भे, सेट्टी ।

८. अपत्य नाम—अरिहंतमाया, चक्कवदिमाया, रायमाया ।

कम्मे सिव्वसिलाए संजोग समीभवो अ संजूहो ।

इस्सरिअ अवचेण य तद्धितणामं तु अट्टविहं ॥

यद्यपि उपयुक्त सन्दर्भ तद्धितान्त नामों के घर्णन के समय आया है, वो भी तद्धित प्रकरण पर इससे प्रकाश पड़ता है। इन्हें कर्माव्यक, शिल्पार्थक, संयोगार्थक, समूहार्थक, अपत्यार्थक आदि रूप में ग्रहण करना चाहिए।

। इस ग्रन्थ में आठों विभक्तियों का उल्लेख है तथा ये विभक्तियाँ किम किस अर्थ में होती हैं, इसका भी निर्देश किया गया है।

निदेसे पडमा होइ, वित्तिया उवएसणे ।

तइया करणम्मि कया, चउरथी संपयावणे ॥१॥

पंचमी अ अवायाणे, छट्ठी सरसामिवायणे ।

सत्तमी सण्णिहाणत्ये, अट्टमाऽऽमंतणी भवे ॥२॥

—अणुप्रोगदार सुत्त, सू० १२८ ।

अर्थात्—निर्देश—क्रिया वा कर्त्तृ वर्णा में रहने पर प्रथमा विभक्ति होती है। यथा—स, इमो, अहं आदि प्रथमान्त रूप हैं। उपदेश में—क्रिया के द्वारा कर्त्ता जिसको सिद्ध करना चाहता है, द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—भण कुणसु इमं व तं व आदि। करण अर्थ में तृतीया विभक्ति होती है। यथा तेण कथं, मए वा कए आदि। सम्प्रदान में चतुर्थी और अपादान में पंचमी विभक्ति होती है। स्वामि-स्वामित्व भाव में षष्ठी, सन्निधानार्थ—अधिस्तरणार्थ में सप्तमी और वामन्त्रण—सम्बोधन में अष्टमी विभक्ति होती है।

इस प्रकार प्राकृत भाषा में लिखित शब्दानुशासन सम्बन्धी सिद्धान्त पाये जाते हैं। संस्कृत भाषा में लिखित प्राकृत व्याकरण

संस्कृत भाषा में लिखे गये प्राकृत भाषा के अनेक शब्दानुशासन उपलब्ध हैं। भारत मुनि का नाट्यशास्त्र ऐसा ग्रन्थ है, जिसके १५ वें अध्याय में विभिन्न भाषाओं का निरूपण करते हुए ६-२३ वें पद्य तक प्राकृत व्याकरण के सिद्धान्त बतलाये हैं और ३२वें अध्याय में उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। पर भारत के ये अनुशासन सम्बन्धी सिद्धान्त इतने संक्षिप्त और अस्पष्ट हैं कि इनका उल्लेखमात्र दक्षिण भारत के जिए ही उपयोगी है।

प्राकृतलक्षण

बृह सिद्धान्त पाणिनि वा प्राकृतलक्षण नाम का प्राकृत व्याकरण बतलाते हैं। हा० विशाख ने भी अपने प्राकृत व्याकरण में इस ओर संकेत किया है, पर यह ग्रन्थ ग

तो आज तक उपलब्ध ही हुआ है और न इसके होने का ही कोई सख्त प्रमाण मिला है। उपलब्ध शब्दानुशासनों में वररुचि के प्राकृतप्रकाश को कुछ विद्वान् प्राचीन मानते हैं और कुछ चण्डकृत प्राकृतलक्षण को। प्राकृतलक्षण संक्षिप्त रचना है। इसमें प्राकृत सामान्य का जो अनुशासन दिया गया है, वह प्राकृत अशोक की धर्मलिपियों की भाषा और वररुचि द्वारा प्राकृतप्रकाश में अनुशासित प्राकृत के बीच की प्रतीत होती है। इस शब्दानुशासन के मत से मध्यवर्ती अल्पप्राण व्यञ्जनों का लोप नहीं होता है, वे वर्तमान रहते हैं। वर्ग के प्रथम वर्णों में केवल क और तृतीय वर्णों में ग के लोप का विधान मिलता है। मध्यवर्ती च, ट, स, और प वर्ण ज्यों के त्यों रह जाते हैं। भाषा की यह प्रवृत्ति महाभवि अघघोष और भास के नाटकों में पायी जाती है। अतः प्राकृतलक्षण का रचनाकाल ईस्वी सन् द्वितीय-तृतीय शती मानने में कोई बाधा नहीं आती है।

इस ग्रन्थ में कुल सूत्र ९९ या १०३ हैं और चार पादों में विभक्त हैं। आरम्भ में प्राकृत शब्दों के तीन रूप—तद्भव, तत्सम और देशज घतलाये हैं। तीनों लिङ्ग और विभक्तियों का विधान संस्कृत के समान ही पाया जाता है। प्रथम पाद के ६वें सूत्र से अन्तिम ३६वें सूत्र तक संज्ञाओं और सर्वनामों के विभक्तिरूपों का निरूपण किया है। द्वितीयपाद के २९ सूत्रों में स्वर परिवर्तन, शब्दादेशों एवं अव्ययों का कथन किया गया है। पूर्वकालिक क्रिया के रूपों में तु, ता, चा, ट, तु, तूण, ओ एवं प्वि प्रत्ययों को जोड़ने का नियमन किया है। तृतीय पाद के ३६ सूत्रों में व्यञ्जनपरिवर्तन के नियम दिये गये हैं। चतुर्थ पाद में केवल चार सूत्र ही हैं, इनमें अपभ्रंश का लक्षण, अघोरेक का लोप न होना, पैशाची की प्रवृत्तियाँ, मागधी की प्रवृत्ति र् और स् के स्थान पर ल् और श् का आदेश एवं शौरसेनी में ल् के स्थान पर विकल्प से द् का आदेश किया गया है।

प्राकृतप्रकाश

चण्ड के उत्तरवर्ती भद्रस्त प्राकृत खैयाकरों ने रचनाशैली और विषयानुक्रम की दृष्टि से प्राकृतलक्षण का अनुकरण किया है। चण्ड के पश्चात् प्राकृत शब्दानुशासकों में वररुचि का नाम आदर के साथ लिया जा सकता है। प्राकृतमंजरी की भूमिका में वररुचि का गोत्र नाम कात्यायन कहा गया है। डा० पिशाल ने अनुमान किया था कि प्रसिद्ध वार्त्तिककार कात्यायन और वररुचि दोनों एक व्यक्ति हैं, किन्तु इस कथन की पुष्टि के लिए एक भी सख्त प्रमाण उपलब्ध नहीं है। एक वररुचि कालिदास के समकालीन भी माने जाते हैं, जो विक्रमादित्य के नररत्नों में से एक थे। प्रस्तुत प्राकृतप्रकाश चण्ड के पीछे का है, इसमें कोई सन्देह नहीं। प्राकृत भाषा का शब्दवार काव्य के लिए प्रयोग ईस्वी सन् की प्रारम्भिक शतियों के पहले ही होने लगा था। हाश कवि ने गाथासप्तशती

में ८४ प्राकृत कवियों की रचनाओं का संकलन किया है। याकोबी का मत है कि महाराष्ट्री प्राकृत का व्यापक प्रयोग ईस्वी तीसरी शताब्दी के पहले ही होने लगा था। अतः प्राकृतप्रकाश में वर्णित अनुशासन पर्याप्त प्राचीन है अतएव बररुचि को कालिदास का समकालीन मानना अनुचित नहीं है।

प्राकृत प्रकाश में कुल ५०९ सूत्र हैं। भामहृत्ति के अनुसार ४८७ और चन्द्रिका टीका के अनुसार ५०९ सूत्र उपलब्ध हैं। प्राकृतप्रकाश की चार प्राचीन टीकाएँ उपलब्ध हैं—

१. मनोरमा—इस टीका के रचयिता भामह हैं।
२. प्राकृतमञ्जरी—इस टीका के रचयिता काल्यायन नामक विद्वान् हैं।
३. प्राकृतसंजीवनी—यह टीका बसन्तराज द्वारा लिखित है।
४. सुवोधिनी—यह टीका सदानन्द द्वारा विरचित है और नवम परिच्छेद के नवम सूत्र की समाप्ति के साथ समाप्त हुई है।

इस ग्रन्थ में चारह परिच्छेद हैं। प्रथम परिच्छेद में स्वर विकार एवं स्वरपरिवर्तन के नियमों का निरूपण किया गया है। विशिष्ट-विशिष्ट शब्दों में स्वरसम्बन्धी जा विकार उत्पन्न होते हैं, उनका ४४ सूत्रों में विवेचन किया गया है। दूसरे परिच्छेद का आरम्भ मध्यवर्ती व्यञ्जनों के लोप से होता है। मध्य में आनेवाले क, ग, च, ज, ल, द, प, य और व का लोप विधान किया है। तीसरे सूत्र से विशेष, विशेष शब्दों के असंयुक्त व्यञ्जनों के लोप एवं उनके स्थान पर विशेष व्यञ्जनों के आदेश का नियमन किया गया है। यह प्रकरण अन्तिम ४७वें सूत्र तक चला है। तीसरे परिच्छेद में संयुक्त व्यञ्जनों के लोप, विकार एवं परिवर्तनों का निरूपण है। इस परिच्छेद में ६६ सूत्र हैं और सभी सूत्र विशिष्ट-विशिष्ट शब्दों में संयुक्त व्यञ्जनों के परिवर्तन का निर्देश करते हैं। चौथे परिच्छेद में ३३ सूत्र हैं, इनमें संकीर्णविधि—निश्चित शब्दों के अनुशासन वर्णित हैं। इस परिच्छेद में अनुकारी, विकारी और देशी इन तीनों प्रकार के शब्दों का अनुशासन आया है। पाचवें परिच्छेद के ४७ सूत्रों में लिङ्ग और विभक्ति-आदेश वर्णित हैं। छठवें परिच्छेद में ६४ सूत्र हैं, इन सूत्रों में सर्वनामविधि का निरूपण है अर्थात् सर्वनाम शब्दों के रूप एवं उनके विभक्ति प्रत्यय निर्दिष्ट किये गये हैं। सप्तम परिच्छेद में तिङन्त विधि है, धातुरूपों का अनुशासन संक्षेप में लिखा गया है। इसमें कुल ३४ सूत्र हैं। अष्टम परिच्छेद में धात्वादेश निरूपित है। इसमें कुल ७१ सूत्र हैं। संस्कृत की किस धातु के स्थान पर प्राकृत में कौन सी धातु का आदेश होता है, इसका विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। प्राकृत भाषा का यह धात्वादेश सम्बन्धी प्रकरण बहुत ही महत्त्वपूर्ण माना जाता है। नौवाँ परिच्छेद निपात का है। इसमें अव्ययों के अर्थ और प्रयोग दिये गये हैं। इस परिच्छेद में १८ सूत्र हैं। दसवें परिच्छेद में पैशाची भाषा का अनुशासन है। इसमें १४ सूत्र हैं। ग्यारहवें परिच्छेद में मागधी

प्राकृत का अनुशासन वर्णित है। इसमें कुल १७ सूत्र हैं। वारहवाँ परिच्छेद शौरसेनी प्राकृत के नियमन का है। इसमें ३२ सूत्र हैं और इनमें शौरसेनी प्राकृत को विशेषताएँ वर्णित हैं। तुलनात्मक दृष्टि से विचार करने पर अवगत होता है कि वररचि ने चण्ड का अनुसरण किया है। चण्ड द्वारा निरूपित विषयों का विस्तार अत्रय इस ग्रन्थ में पाया जाता है। अतः क्षीपी और विषय विस्तार के लिये वररचि पर चण्ड का ऋण मान लेना अनुचित नहीं कहा जा सकता।

इस सत्य से कोई इंकार नहीं कर सकता है कि वाया ज्ञान की दृष्टि से वररचि का प्राकृतप्रकाश बहुत ही महत्वपूर्ण है। संस्कृत भाषा की ध्वनियों में किस प्रकार के ध्वनि-परिवर्तन होने से प्राकृत भाषा के शब्दरूप गठित हैं, इस विषय पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया गया है। उपयोगिता की दृष्टि से यह ग्रन्थ प्राकृत अध्येताओं के लिये प्राज्ञ है।

सिद्धहेम शब्दानुशासन

इस व्याकरण में सात अध्याय संस्कृत शब्दानुशासन पर हैं और आठवें अध्याय में प्राकृत भाषा का अनुशासन लिखा गया है। यह प्राकृत व्याकरण उपलब्ध समस्त प्राकृत व्याकरणों में सबसे अधिक पूर्ण और व्यवस्थित है। इसके ४ पाद हैं। प्रथम पाद में २०१ सूत्र हैं। इनमें सन्धि, व्यञ्जनान्त शब्द, अनुस्वार, लिट्, विभक्ति, स्वर व्यत्यय और व्यञ्जन-व्यत्यय का विवेचन किया गया है। द्वितीय पाद के २१८ सूत्रों में सयुक्त व्यञ्जनो के परिवर्तन, समीकरण, स्वरभक्ति, वर्णविपर्यय, शब्दादेश, लटित, निपात और व्यर्थों का निरूपण है। तृतीय पाद में १८२ सूत्र हैं, जिनमें कारक विभक्तियों तथा क्रियारचनासम्बन्धी नियमों का ब्यथन किया गया है। चौथे पाद में ४४८ सूत्र हैं। आरम्भ के २५९ सूत्रों में धातुवादेश और आगे क्रमशः शौरसेनी, मगधी, पेशाची, शूलिका पेशाची और अपभ्रंश भाषाओं में विशेष प्रवृत्तियों का निरूपण किया गया है। अन्तिम दो सूत्रों में यह भी बतलाया गया है कि प्राकृत में उक्त लक्षणों का व्यत्यय भी पाया जाता है तथा जो धातु यहाँ नहीं बतलायी हैं, उसे संस्कृतवत् सिद्ध समझना चाहिए। सूत्रों के अतिरिक्त वृत्ति भी स्वयं हेम की लिखी है। इस वृत्ति में सूत्र गत लक्षणों को घड़ी विदादता से उदाहरण देकर समझाया गया है।

भाषार्य हेम ने प्राकृत शब्दों का अनुशासन संस्कृत शब्दों के रूपों को आदर्श मानकर किया है। हेम के मत से प्राकृत शब्द तीन प्रकार के हैं—तत्सम, तद्भव और दशी। तत्सम और देशी शब्दों को छोड़ जेय तद्भव शब्दों का अनुशासन इस व्याकरण द्वारा किया गया है।

भाषार्य हेम ने 'आर्यम्' ८।१।३ सूत्र में 'आर्यं प्राकृतं का नामोल्लेख किया है और बतलाया है कि 'आर्यं प्राकृतं बहुलं भवति, तदपि यथास्थानं दर्शयिष्यामः।

आपें द्वि सर्वे विधयो विकल्प्यन्ते” अर्थात् अधिक प्राचीन प्राकृत आर्ष—आगमिक प्राकृत में प्राकृत के नियम विकल्प से प्रवृत्त होते हैं।

हेम का प्राकृत व्याकरण रचना शैली और विषयानुक्रम के लिए प्राकृतलक्षण और प्राकृतप्रकाश का अभागी है। पर हेम ने विषय विस्तार में बड़ी पड़ता दिखायी है। अनेक नये नियमों का भी निरूपण किया है। ग्रन्थन शैली भी हेम की चण्ड और वरचि की अपेक्षा परिष्कृत है। चूलिका पेशाची और अपभ्रंश का अनुशासन हेम का अपना है। अपभ्रंश भाषा का नियमन ११८ सूत्रों में स्वतन्त्र रूप से किया है। उदाहरणों में अपभ्रंश के पूरे दोहे उद्धृत कर नष्ट होते हुए विशाल साहित्य का संरक्षण किया है। इसमें सन्देह नहीं कि आचार्य हेम के समय में प्राकृत भाषा का बहुत अधिक विकास हो गया था और उसका विशाल साहित्य विद्यमान था। अतः उन्होंने व्याकरण की प्राचीन परम्परा को अपनाने भी अनेक नये अनुशासन उपस्थित किये हैं।

त्रिविक्रमदेव का प्राकृत शब्दानुशासन

निम्न प्रकार आचार्य हेम ने सर्वाङ्गपूर्ण प्राकृत शब्दानुशासन लिखा है, उसी प्रकार त्रिविक्रमदेव ने भी। इनकी स्वोपज्ञवृत्ति और सूत्र दोनों ही उपलब्ध हैं। इस शब्दानुशासन में तीन अध्याय और प्रत्येक अध्याय में चार-चार पाद हैं, इस प्रकार कुल बारह पादों में यह शब्दानुशासन पूर्ण हुआ है। इसमें कुल सूत्र १०३६ हैं। त्रिविक्रमदेव ने हेम के सूत्रों में ही कुछ फेर-फार करके अपने सूत्रों की रचना की है। विषयानुक्रम हेम का ही है। ह, दि, स और ग आदि संज्ञाएँ त्रिविक्रम की नहीं है, पर इन संज्ञाओं से विषयनिरूपण में सरलता की अपेक्षा जटिलता ही उत्पन्न हो गयी है। इस व्याकरण में देशी शब्दों का वर्गीकरण पर हेम की अपेक्षा पूरा नहीं दिया की सूचना दी है। यद्यपि अपभ्रंश के उदाहरण हेम के ही हैं, पर संस्कृत छाया देकर इन्होंने अपभ्रंश के दोहों को समझने में पूरा सौकर्य प्रदर्शित किया है।

त्रिविक्रम ने अनेकार्थक शब्द भी दिये हैं। इन शब्दों के शब्दकोश से तात्पर्यिक भाषा की प्रवृत्तियों का परिज्ञान तो होता ही है, पर इससे अनेक सांस्कृतिक बातों पर भी प्रकाश पड़ता है। यह प्रकरण हेम की अपेक्षा विशिष्ट है इनका यह कार्य शब्द शास्त्र का न होकर अर्थशास्त्र का हो गया है।

पद्भाषाचन्द्रिका

लक्ष्मीधर ने त्रिविक्रमदेव के सूत्रों का प्रकरणानुसारी संस्करण कर अपनी नयी वृत्ति लिखी है। इस संस्करण का नाम ही पद्भाषाचन्द्रिका है। इस संस्करण में विद्यान्तरीशुद्धी का अंग रखा गया है। उदाहरण नेतृसूत्र, गउप्यहो, गाहाव्यपगरे, बन्धुसूत्ररी आदि प्रयोगों से दिये गये हैं। लक्ष्मीधर ने लिखा है—

वृत्ति त्रिविक्रमी गूढां व्याचिरयासन्ति ये युधाः ।
पद्भाषाचन्द्रिका तैरतद् व्याख्यारूपा विलोक्यताम् ॥

अर्थात्—जो विद्वान् त्रिविक्रम की गूढ वृत्ति को समझना और समझाना चाहते हैं, वे उसकी व्याख्यारूप पद्भाषाचन्द्रिका को देखें।

प्राकृत भाषा की जानकारी प्राप्त करने के लिए पद्भाषाचन्द्रिका अधिक उपयोगी है। इसकी तुलना हम भट्टोजिदीक्षित की सिद्धान्तसमीमुदी से कर सकते हैं।

प्राकृतरूपावतार

त्रिविक्रमदेव के सूत्रों को ही एतुसिद्धान्त कीमुदी के अंग पर संकल्पित कर सिद्धराज ने प्राकृतरूपावतार नामक व्याकरण ग्रन्थ लिखा है। इसमें संक्षेप में सन्धि, शब्दरूप, धातुरूप, समास, सङ्घित आदि का विचार किया है। व्यापारिक दृष्टि से आद्युद्योघ कराने के लिए यह व्याकरण उपयोगी है। हम सिद्धराज की तुलना वरदाचार्य से कर सकते हैं।

प्राकृतसर्वस्व

मार्कण्डेय का प्राकृतसर्वस्व एक महत्वपूर्ण व्याकरण है। इसका रचनाकाल १९ वीं शती है। मार्कण्डेय ने प्राकृत भाषा के भाषा, विभाषा, अपभ्रंश और पैशाची—ये चार भेद किये हैं। भाषा के मडाराष्ट्री, शौरसेनी, प्राच्या, अवन्ती और मागधी; विभाषा के शाकरी, चाण्डाली, शायरी, आभीरिणी और शाकवी; अपभ्रंश के नागर, पाचड और उपनागर एवं पैशाची के कैकयी, शौरसेनी और पांचाली आदि भेद किये हैं।

मार्कण्डेय ने आरम्भ के आठ पादों में मडाराष्ट्री प्राकृत के नियम बतलाये हैं। इन नियमों का आधार प्रायः वररुचि का प्राकृतप्रकाश ही है। ९ वें पाद में शौरसेनी के नियम दिये गये हैं। इसमें पाद में प्राच्या भाषा का नियमन किया गया है। ११ वें अवन्ती और वाह्लीकी का वर्णन है। १२ वें में मागधी के नियम बतलाये गये हैं, इनमें अर्धमागधी का भी उल्लेख है। ९ से १२ तक के पादों का भाषाविशेषण नाम का एक अलग खण्ड माना जा सकता है। १३ वें से १६ वें पाद तक विभाषा का नियमन किया है। १७वें और १८वें में अपभ्रंश भाषा का तथा १९वें और २०वें पाद में पैशाची भाषा के नियम दिये हैं। शौरसेनी के बाद अपभ्रंश भाषा का नियमन करना बहुत ही तर्कसंगत है।

ऐसा लगता है कि हम ने जहाँ पश्चिमीय प्राकृत भाषा की प्रवृत्तियों का अनुशासन उपस्थित किया है, वहाँ मार्कण्डेय ने पूर्वीय प्राकृत की प्रवृत्तियों का नियमन प्रदर्शित किया है।

इन व्याकरण ग्रन्थों के अतिरिक्त रामतरुवागीश का 'प्राकृतकल्पतरु' शुभचन्द्र का शब्दचिन्तामणि, शेषकृष्ण का प्राकृत चन्द्रिका और अण्णय दीक्षित का 'प्राकृत-मणिदीप' भी अच्छे ग्रन्थ हैं।

आधुनिक प्राकृत व्याकरणों में ए० सी० हुल्लर का 'इण्ट्रोडक्शन टु प्राकृत' (१९३६ सन्), दिनेशचन्द्र सरकार का 'ए ग्रामर ऑव दि प्राकृत लैंग्वेज (१९४३ सन्), ए० एन० घांठगे का 'एन इण्ट्रोडक्शन टु अर्धमागधी' (१९४० सन्), होप्फर का 'डे प्राकृत डिआलेक्टो लिभि दुओ' (बर्लिन १८३६ सन्), लास्सन का 'इन्स्टीट्यू-स्सीओनेस लिगुआए प्राकृतिकाए' (बौन ई० १८३९), वौवे का 'ए शोर्ट इण्ट्रोड-क्शन टु द ऑर्डनरी प्राकृत ऑव द संस्कृत ड्रामाज् विथ ए लिस्ट ऑव कॉमन् इरेगुलर-प्राकृत वर्डस्' (लन्दन ई० १८७५) हृषीकेश का 'ए प्राकृत ग्रामर विथ इंगलिश ट्रान्सलेशन (कलकत्ता ई० १८८३) रिचर्ड पिशाल का 'प्राकृत भाषाओं का व्याकरण' (पटना ई० १९५८) पं० वेचरदास दोशी का 'प्राकृत व्याकरण' (अहमदाबाद ई० १९२५); डा० सरयूप्रसाद अग्रवाल का 'प्राकृत विमर्श' (१९५३ ई०) आदि उपयोगी ग्रन्थ हैं। इन्हीं प्राचीन और नवीन ग्रन्थों से सामग्री ग्रहण कर 'अभिनव प्राकृत व्याकरण' लिखा गया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ

उपर्युक्त व्याकरण ग्रन्थों के रहने पर भी सर्वाङ्गपूर्ण प्राकृत व्याकरण की आवश्यकता बनी हुई थी, ऐसा एक भी प्राकृत व्याकरण नहीं, जिसका अध्ययन कर जिससे व्याकरण सम्बन्धी समस्त अनुशासनों को अवगत कर सके। हाँ, दस-पाँच ग्रन्थों को मिलाकर अध्ययन करने पर भले ही विषय की पूर्ण जानकारी प्राप्त की जा सके, पर एक ग्रन्थ के अध्ययन से यह संभव नहीं है। अतएव संस्कृत व्याकरण 'सिद्धान्त कौमुदी' की शैली के आधार पर प्रस्तुत व्याकरण ग्रन्थ लिखा गया है। इस ग्रन्थ में निम्न विषय दृष्टिकोण उपलब्ध होंगे :—

(१) सन्धि और समास के उदाहरणों में विभिन्न प्राकृत भाषाओं के पदों को रखा गया है। इनके अवलोकन से इस प्रकार की धारांका का होना स्वाभाविक है कि सामान्य प्राकृत से लेकर कया कया अभिप्राय है? उदाहरणों में अनेकरूपता रहने से सन्धि और समास के नियम किस प्राकृत भाषा के हैं? इस धारांका के निराकरण हेतु हमारा यही निवेदन है कि सन्धि और समास के नियम सभी प्राकृतों में समान हैं। जो नियम महाराष्ट्री प्राकृत में लागू होते हैं, वे ही अर्धमागधी या अन्य प्राकृत भाषाओं में भी। अतः सन्धिप्रकरण और समासप्रकरण में महाराष्ट्री, अर्धमागधी और शौरसेनी के उदाहरण मिलेंगे; यतः विभिन्न प्राकृतों के अनुशासन में ध्वनि और वर्णविकार सम्बन्धी अन्तर ही सबसे प्रधान है। कृत प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय सम्बन्धी

त्रिपेतापै भी पायी जाती हैं। दोष वाचें समस्त प्राकृतों में प्रायः समान रहती हैं। उदाहरणार्थ दीर्घसन्धि जिन परिस्थितियों में महाराष्ट्री प्राकृत में होती है उन्हीं परिस्थितियों में अर्धमागधी भाषा में भी। अतएव सामान्य प्राकृत से महाराष्ट्री प्राकृत का ग्रहण होने पर भी सन्धि, समास और स्त्रीप्रत्यय प्रकरण के उदाहरणों में समान नियमों से अनुशासित होनेवाले अर्धमागधी और महाराष्ट्री भाषाओं के उदाहरण संरक्षित हैं।

(२) पद, वाक्य, सन्धि, समास, स्त्री प्रत्यय, कृत, तद्धित आदि की परिभाषाएँ दी गयी हैं। इन परिभाषाओं में संस्कृत व्याकरण सरणि की गन्ध पायी जा सकती है। पर इस तथ्य को सदा ध्यान में रखना चाहिए कि किसी भी प्राच्य भाषा के अनुशासन प्रसंग में उक्त परिभाषाएँ धे ही रहेंगी, जो संस्कृत में हैं। यतः संस्कृत व्याकरण का सर्वाधिक प्रभाव अन्य भारतीय भाषाओं के व्याकरण ग्रन्थों पर है।

(३) स्त्रीप्रत्यय और कारक के नियम संस्कृत व्याकरण के आधार पर ही प्रस्तुत व्याकरण में निबद्ध किये गये हैं। प्रत्ययों के रूप भी संस्कृत व्याकरण के समान ही हैं।

(४) जितने प्राकृत व्याकरण उपलब्ध हैं, उनसे सभी कोई व्यक्ति अनुशासन सम्बन्धी नियमों की जानकारी प्राप्त कर सकता है, जब संस्कृत व्याकरण की जानकारी हो। संस्कृत व्याकरण की जितनी अच्छी जानकारी रहेगी, उक्त व्याकरण ग्रन्थों से प्राकृत भाषा सम्बन्धी अनुशासनों को उतने ही व्यापक और गम्भीर रूप में अवगत कर सकेगा। पर इस व्याकरण में इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि कोई भी व्यक्ति अन्य भाषा के व्याकरण को जाने बिना भी मात्र इस व्याकरण ग्रन्थ के अध्ययन से प्राकृत भाषा के अनुशासन सम्बन्धी समस्त नियमों को जान जाये।

(५) इस व्याकरण में स्त्रीप्रत्यय, कारक, शब्दरूप, धातुरूप, कृदन्त, तद्धित एवं धातुकोप विस्तृत रूप में दिये गये हैं। ये प्रकरण इतने व्यापक रूप में अन्य किसी व्याकरण ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं हो सकेंगे।

(६) शौरसेनी, जैन शौरसेनी, मागधी, अर्धमागधी, जैन महाराष्ट्री, पैशाची, सूत्रिया पैशाची एवं अपभ्रंश भाषा का अनुशासन भी दिया गया है, जिससे महाराष्ट्री के सिवा अन्य भाषाओं की प्रवृत्तियों की जानकारी भी प्राप्त की जा सकती है।

(७) पाद टिप्पणियों में हेम्, वररुचि और त्रिचिक्रम के सूत्र भी दिये गये हैं, जिससे अनुशासन सम्बन्धी नियमों को हृदयंगम करने में सरलता रहेगी।

(८) परिशिष्टों में उदाहरण शब्दानुक्रमणिका के साथ विभिन्न प्रयोगसूचियाँ दी गयी हैं, जिनसे पाठकों को प्राकृत भाषा के अध्ययन में सरलता प्राप्त होगी।

(९) इस शब्दानुशासन में एक विशेषता और उपलब्ध होगी कि जिस विषय को उठाया है, उसका अनुशासन सभी दृष्टिकोणों से पूर्णरूपेण उपस्थित किया है। जहाँ

तक हमारा विश्वास है इस पुरु व्याकरण के अध्ययन के उपरान्त अन्य व्याकरणों की जानकारी की अपेक्षा नहीं रहेगी। मध्यकालीन आर्यभाषाओं की प्रमुख प्रवृत्तियों के साथ 'आधुनिक आर्यभाषाओं की उत्पत्ति के घीज सिद्धान्तों को भी जाना जा सकेगा।

(१०) भाषाविज्ञान के अनेक सिद्धान्त भी इस व्याकरण में समाविष्ट हैं। स्वर-लोप, व्यञ्जनलोप, स्वरागम, व्यञ्जनागम, स्वर-व्यञ्जन-विपर्यय, समीकरण, विपरीकरण, घोषीकरण, अघोषीकरण, अभिधुति, अपभ्रुति और स्वरभक्ति के नियम इसमें अन्तर्हित हैं। अतः भाषाविज्ञान के अध्ययनार्थियों के लिए इस व्याकरण की उपयोगिता कम नहीं है।

आभार

इस व्याकरण को लिखने की प्रेरणा श्री भाई दिनयगंकर जी, तारा पब्लिकेशन्स, वाराणसी एवं मित्रर ड्रा० राममोहनदास जी एम० ए०, पी-एच० डी० आरा से प्राप्त हुई है। आप दोनों के आग्रह से यह कृति एक वर्ष में लिखकर पूर्ण की गयी है, अतः मैं उक्त दोनों भाइयों के प्रति हृदय से श्रुतज्ञता ज्ञापन करता हूँ।

आदरणीय डा० एन. टाटिया, निर्देशक प्राकृत जैन विद्यापीठ, मुजफ्फरपुर ने विषयसम्बन्धी सुझाव दिये हैं, जिनके लिए उनका आभारी हूँ। उदाहरणानुक्रमणिका एवं प्रयोगसूची तैयार करने में प्रिय शिष्य श्री सुरेन्द्रकुमार जैन ने अथक श्रम किया है, अतः उन्हें हृदय से आशीर्वाद देता हूँ। भाई प्रो० राजारामजी तथा स्वामी द्वारिकानाथ शास्त्री, व्याकरण-पालि-बौद्धदर्शनाचार्य, वाराणसी से प्रूफ-संशोधन में सहयोग प्राप्त होता रहा है, अतः उनके प्रति भी आभारी हूँ।

उन समस्त ग्रन्थकारों का भी आभारी हूँ, जिनकी रचनाओं के अध्ययन से प्रस्तुत प्राकृत व्याकरण सम्बन्धी सामग्री ग्रहण की गयी है।

भूलों का रहना स्वाभाविक है, अतः त्रुटियों के लिए क्षमायाचना करता हूँ।

{ एच० डी० जैन कालेज, आरा
(मगध विश्वविद्यालय)
धारण, वीर नि० सं० २४८६ }

नेमिचन्द्र शास्त्री

अभिनव प्राकृत-व्याकरण

पहला अध्याय

वर्ण-विचार और संज्ञाएँ

भाषा की मूल ध्वनियों तथा उन ध्वनियों के प्रतीक स्वरूप लिखित चिह्नों को वर्ण कहते हैं। प्राकृत की वर्णमात्रा संस्कृत की अपेक्षा कुछ भिन्न है। ऋ, ए, ऐ और औ स्वर प्राकृत में प्रदण नहीं किये गये हैं। व्यंजनों में श, ष और स इन तीन वर्णों में से केवल स का ही प्रयोग मिलता है। न का प्रयोग त्रिरूप से होता है। अतः प्राकृत की वर्णमात्रा में निम्न वर्ण पाये जाते हैं।

स्वर—जिन वर्णों के उच्चारण में अन्य वर्णों की सहायता अपेक्षित नहीं होती, वे स्वर कहलाते हैं। प्राकृत में स्वर दो प्रकार के हैं—ह्रस्व और दीर्घ।

अ, इ, उ, ए, औ (ह्रस्व)।

आ, ई, ऊ, ऐ, औ (दीर्घ)।

व्यंजन—जिन वर्णों के उच्चारण करने में स्वर वर्णों की सहायता लेनी पड़ती है, वे व्यंजन कहलाते हैं। प्राकृत में व्यंजनों की संख्या ३२ है।

क	ख	ग	घ	ङ	(क्वर्ग)
च	छ	ज	झ	ञ	(चवर्ग)
ट	ठ	ड	ढ	ण	(टवर्ग)
त	थ	द	ध	न	(तवर्ग)
प	फ	ब	भ	म	(पवर्ग)
	य	र	ल	व	(अन्तस्थ)
			श	ह	(ऊष्माक्षर)
					(अनुस्वार)

अनुस्वार को भी व्यंजन माना गया है, यत अनुस्वार म् या न् का रूपान्तर है। प्राकृत में विसर्ग की स्थिति नहीं है। विसर्ग सर्वदा ओ या ए स्वर में परिवर्तित हो जाता है। असंयुक्त अवस्था में ह और ष का व्यंहार भी नहीं पाया जाता है। अतः व्यंजन ३० हैं।

घर्णों के उच्चारण

कण्ठ्य—अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ और ह का उच्चारण स्थान कंठ है। अतः ये वर्ण कंठ्य कहलाते हैं।

तालव्य—इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ और य का उच्चारण स्थान तालु है, अतः ये वर्ण तालव्य कहलाते हैं।

मूर्धन्य—ट, ठ, ड, ढ, ण और र का उच्चारण स्थान मूर्धा है, अतः ये वर्ण मूर्धन्य कहलाते हैं।

दन्त्य—त, थ, द, ध, न, ल और स का उच्चारण स्थान दन्त है, अतः ये वर्ण दन्त्य कहलाते हैं।

ओष्ठ्य—उ, ऊ, प, फ, ब, भ और म का उच्चारण स्थान ओष्ठ है, अतः ये वर्ण ओष्ठ्य कहलाते हैं।

अनुनासिक—ज, झ, ञ, ण और म का उच्चारण स्थान नासिका है, अतः ये वर्ण अनुनासिक कहलाते हैं।

पे और ए का कण्ठ तालु, औ और ओ का कंठ-ओष्ठ, धरार का दन्तोष्ठ और अनुरधार का नासिका उच्चारण स्थान है।

प्रयत्न विचार

घर्णोच्चारण के लिए ध्वनिबंध को जो आयास करना पड़ता है, उसे प्रयत्न कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है—आभ्यन्तर और बाह्य।

घर्णोच्चारण के पूर्व हृदय में जो आयास—प्रयत्न होता है, उसे आभ्यन्तर और मुख से वर्ण निकलते समय जो आयास करना पड़ता है, उसे बाह्य प्रयत्न कहते हैं। आभ्यन्तर प्रयत्न का अनुभव योगनेत्राले को ही होता है, किन्तु बाह्य का अनुभव श्रोता भी करते हैं।

आभ्यन्तर प्रयत्न पाँच प्रकार का होता है—रूष्ट, ईषत्रूष्ट, ईषद्विष्ट, विष्ट और संष्ट।

क से म पर्यन्त वर्णों का रूष्ट, य, र, ल और व का ईषत्रूष्ट, स और ह का ईषद्विष्ट और स्त्रों का विष्ट प्रयत्न होता है। ह्रस्व उकारका प्रयोगस्थिति—परिनिष्ठित विद्धरूप, में संष्ट प्रयत्न होता है; किन्तु प्रक्रिया दशा—साधनायस्था, में विष्ट प्रयत्न ही रहता है।

घान प्रयत्न चार प्रकार का है—विचार, संचार, रसास, नाद, घोष, अपोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदास, अनुदास और स्वरित।

जिन वर्णों का उच्चारण करते समय कण्ठ का विनाश हो, उन्हें विचार, जिनके उच्चारण में कंठ का विनाश न हो, उन्हें संचार, जिनका उच्चारण करते समय रसास

चलती रहे, उन्हें श्वास; जिनका उच्चारण नाद से हो, उन्हें नाद; जिन वर्णों का उच्चारण करते समय शून्य हो, उन्हें घोष, जिनके उच्चारण में शून्य न हो, उन्हें अघोष, जिनके उच्चारण में प्राणवायु का अल्प उपयोग हो, उन्हें अल्पप्राण एवं जिाके उच्चारण में प्राण-वायु का अधिक उपयोग हो, उन्हें महाप्राण कहते हैं ।

क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ और स का विचार, श्वास और अघोष प्रयत्न है ।

ग, घ, ङ, ढ, द, ध, ऋ, ऌ, भ, म, ण, न, य, र, ल, व और ह वा भंगार, नाद और घोष प्रयत्न है ।

वर्णों के प्रथम, तृतीय और पंचम वर्ण तथा य, र, ल, व का अल्पप्राण प्रयत्न है^१ ।

वर्णों के द्वितीय, चतुर्थ वर्ण तथा स और ह वा महाप्राण प्रयत्न है^२ ।

क से म पर्यन्त पचीस वर्ण स्पर्श कहलाते हैं^३ । इनके उच्चारण में जीभ का अगला, पिठला या मध्यभाग कंठ, तालु प्रकृति स्थानों का स्पर्श करता है । अतः ये वर्ण स्पर्श वर्ण कहलाते हैं ।

य, र, ल और व ये चार वर्ण अन्तस्थ कहलाते हैं^४ । इनके अन्तस्थ कहलाने का कारण यह है कि ये चारों स्पर्श और ऊष्म के मध्यवर्ती हैं ।

स और ह ऊष्म वर्ण हैं । इन वर्णों के उच्चारण में अधिक वायु निरगत होती है, अतः ये ऊष्म कहलाते हैं ।

अनुस्वार की अयोगनाद संज्ञा है ।

क से म पर्यन्त जिन वर्णों को स्पर्श कहा गया है, उनके उच्चारण के लिए आने-वाला श्वास स्वरतन्त्रियों के प्रभाव से घोष या अघोष होकर आता है । अत इन वर्णों में प्रत्येक के मोटे-मोटे दो भेद हो गये—(१) घोष स्पर्श और (२) अघोष स्पर्श । अघोष स्पर्श के भी प्राणत्व के आधार पर दो भेद हैं—(१) अघोष अल्पप्राण स्पर्श और (२) अघोष महाप्राण स्पर्श । घोष स्पर्श के तीन भेद हैं—(१) घोष अल्पप्राण स्पर्श (२) घोष महाप्राण स्पर्श और (३) घोष अनुनासिक । घोष अनुनासिकों के उच्चारण में कौवा (कण्ठपिटक) बीच में रहता है, जिसके कल्पस्वरूप थोड़ी श्वास मुँह और नाक दोनों से निकलती है । अनुनासिक वर्णों के अतिरिक्त अन्य स्पर्शों के उच्चारण में कौवा नासिकागिर को बन्द किये रहता है, अत श्वास केवल मुँह से निकलती है ।

१. वर्णानां प्रथमतृतीयपञ्चमा यलथाल्पप्राणा ।

२. वर्णानां द्वितीयचतुर्थी शतश्च महाप्राणा ।

३. वाच्यो मावसाना स्पर्शा ।

४. यणोऽन्त स्था ।

इस प्रकार ऋण्य, मूर्धन्य, तालव्य, दन्त्य और ओष्ठ्य इन पाँचों वर्णों वगैरे में से प्रत्येक वर्ण के निम्न पाँच भेद होते हैं—

१. अघोष अल्पप्राण—फ, त, प आदि ।
२. अघोष महाप्राण—ख, ध, फ आदि ।
३. घोष अल्पप्राण—ग, द, ब आदि ।
४. घोष महाप्राण—घ, ध, भ आदि ।
५. अनुनासिक या घोष अल्पप्राण अनुनासिक—ह, न, म आदि ।

स्व संज्ञा—जिस वर्ण का जिन वर्णों के साथ तालु आदि स्थान और आभ्यन्तर प्रत्यक्ष एक हो, वह वर्ण स्व या सवर्ण संज्ञक होता है ।^१

विभक्ति संज्ञाएँ—सु आदि विभक्तियों में अन्तर् इत्संज्ञक वर्णों के साथ उच्चरित आदि वर्ण अपने तथा मध्यवर्ती वर्णों का भी बोधक होता है । जैसे प्रथमा विभक्ति में सु और ङ्स् की ङस् संज्ञा, द्वितीया विभक्ति में ञ्स् और श्स् की ञ्स् संज्ञा, तृतीया विभक्ति में श और भिस् की श्स् संज्ञा, चतुर्थी विभक्ति में छ और भ्यस् की छस् संज्ञा, पंचमी में छस् और भ्यस् की छस् संज्ञा, षष्ठी में हस् और भाम् की हस् संज्ञा एवं सप्तमी में छि और गुप् की छिप् संज्ञा होती है ।^२

ह संज्ञा^३—हस् वर्णों की "ह" संज्ञा होती है ।

दि संज्ञा^४—द्वि वर्णों की "दि" संज्ञा होती है ।

स संज्ञा^५—समास की "स" संज्ञा होती है ।

शु संज्ञा^६—श, य और स की "शु" संज्ञा होती है ।

गु संज्ञा^७—आदि वर्णों की "गु" संज्ञा होती है । यथा "तोः वन्दुक—"
इत्यादि में गु शब्द से आदि वर्णों का बोध होता है ।

रतु संज्ञा^८—दो संयुक्त व्यन्जनों की "रतु" संज्ञा होती है ।

ग संज्ञा^९—गणप्रधान जो आदि शब्द होता है, उच्यते "ग" संज्ञा होती है ।

जिगे—'क्रीते गुणगाः' में गुणगा शब्द गुणादि का बोधक है ।

कु संज्ञा^{१०}—शब्द के द्वितीय वर्णों की "कु" संज्ञा होती है ।

तु संज्ञा^{११}—द्वितीय विधान की "तु" संज्ञा होती है ।

बहुल संज्ञा^१—दिक्क की "बहुल" संज्ञा भी होती है।

रिन् संज्ञा^२—रेक की "रिन्" संज्ञा होती है।

लुक् संज्ञा—लुक् की "लुक्" संज्ञा होती है।

उद्बृत्त स्वर व संज्ञा^३—ध्वंजन ध्रित स्वर से ध्वंजन वा शेष हो जाने के जो स्वर शेष रह जाते हैं, उनकी "उद्बृत्त स्वर" संज्ञा होती है।

दूसरा अध्याय

सन्धि विचार

प्राकृत भाषा का ध्वानरण प्राकृत में ही लिखा हुआ उपलब्ध नहीं होता है। जितने भी प्राकृत वैयाकरण हैं, उन्होंने संस्कृत शब्दों में विकार के नियमों का निरूपण कर प्राकृत शब्दों की निष्पत्ति दिखलायी है। अतः यहाँ सन्धि के उन्हीं नियमों का विवेचन किया जायगा, जिनका प्रयोग प्राकृत साहित्य में पाया जाता है।

सन्धि—जब किसी शब्द में दो वर्ण निकट आने पर मिल जाते हैं, तो उनके मेल से उत्पन्न होनेवाले विकार को सन्धि कहते हैं।

संयोग और सन्धि में इतना भेद है कि जहाँ वर्ण अपने स्वरूप से बिना किसी विकार के मिलते हैं, उसे संयोग और जहाँ विरुद्ध होकर उनके स्थान में कोई आदेश होने से मिलते हैं, उसे सन्धि कहते हैं।

समास और सन्धि में यह अन्तर है कि समास में प्रायः दो या अधिक पद विभक्तियों का त्याग कर मिलते हैं, पर सन्धि में विभक्तियों सहित पदों का संयोग होता है। संक्षेप में वर्णविकार सन्धि है और शब्दविकार समास।

प्राकृत में सन्धि की व्यवस्था विकल्प से होती है, नित्य नहीं। सन्धि के तीन भेद हैं—स्वर सन्धि, व्यञ्जन सन्धि और अव्यय सन्धि।

स्वर सन्धि—दो अत्यन्त निकट स्वरों के मिलने से जो ध्वनि में विकार उत्पन्न होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं। जैसे—मगह + अहिवई = मगहाहिवई (मगधाधिपति)।

व्यञ्जन सन्धि—व्यञ्जन वर्ण के साथ व्यञ्जन या स्वर वर्ण के मिलने से जो विकार होता है, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं, जैसे—उसभम् + अजियं = उसभमजिय (ऋषभम् + अजितम्)। प्राकृत में विसर्ग सन्धि का कोई स्थान नहीं है, क्योंकि विसर्ग के स्थान पर आ या ए हो जाता है।

अव्यय सन्धि—संस्कृत में इस नाम की कोई सन्धि नहीं है, पर प्राकृत में अनेक अव्यय पदों में यह सन्धि पायी जाती है। यह सन्धि दो अव्यय पदों में होती है। यथा—किं + अपि किं पि। इसमें सन्देह नहीं कि प्राकृत में अव्यय और निपात का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यही कारण है कि इस सन्धि को अलग मानना पड़ता है।

स्वर सन्धि

प्राकृत में प्रधानतः चार प्रकार की स्वर सन्धियाँ पायी जाती हैं—दीर्घ, गुण, ह्रस्व-दीर्घ और प्रकृतिभाव या सन्धि-निषेध । वृद्धि सन्धि के भी विस्तृत रूप मिलते हैं ।

(१) दीर्घ सन्धि^१—ह्रस्व या दीर्घ अ, इ और उ ने उनका स्वसर्ग स्वर परे रहे तो दोनों के स्थान में सर्वत्र दीर्घ होता है । उदाहरण—

- (क) अ + अ = आ—दुंद + अहीमो = दुंदाहीमो, दुंद अहीमो (दुंदा गीरा)
 अ + आ = आ—विसम + आययो = विसमाययो, विसम आययो (विसमात्तप)
 आ + अ = आ—रमा + अहीमो = रमाहीमो, रमा अहीमो (रमाधीन.)
 आ + आ = आ—रमा + आरामो = रमारामो, रमा आरामो (रमारामः)

ण + अहिअइ = णाहिअइ

ण + वागअ = णागअ (नागतः)

ण + आलवइ = णालवइ (नाल्यति)

न + अभिजाणइ = नाभिजाणइ (नाभिजानाति)

न + वाइदूर = नाइदूर (नातिदूरम्)

ण + बालंविदा = णालंकिदा (नालंठता)

धम्मकहा + अपसान = धम्मफहापसान (धर्मकथावसानम्)

महा + आक्खंद = महाक्खंद, महाआक्खंद (महाकुन्दः)

बहु + उदग = बहुदग, बहुउदग (बहुदम्)

कअ + आवराह = कआवराह (कृतापराध)

आरक्ख + अघिक्खे = आरक्खाधिक्खे (आरक्षाधिष्ठानम्)

जेण + अहं = जेणाहं (यनाहं)

महाराअ + अधिराओ = महाराआधिराओ (महाराजाधिराजः)

इह + अदीए = इहाडिओए (इहाड्याम्)

सहस्स + अतिरेक = सहस्सातिरेक (सहस्रातिरेकः)

इगिय + आमार = इंगियामार (इंगितामार)

विसेस + अणल = विलेसाणल (विलेसानलम्)

दुदिअल + अउमाण = दुदिअलावमाण (दूतस्त्रावमाणम्)

अइ + अवरा = अहधिरा (अथापरा)

सास + अणल = सासाणल (स्वासानलम्)

इस सन्धि के निषेध—

अहरेग + अट्टवास = अहरेगअट्टवास (अतिरेकाष्टवर्षः)

सयल + अत्यमियजियलोअ = सयल अत्यमियजियलोअ (सयलात्मित-
जीवलोअः)

सन्व + अत्थेसु = सन्व अत्थेसु (सर्वाथेषु)

सेलग जक्ख + आरहण = सेलग जक्खआरहण (शीरुक्क यक्षारोहणम्)

ण + आणामि = ण आणामि (न जानामि)

ण + आणामि = ण आणामि (न जानामि)

ण + आणीयदि = ण आणीयदि (न आनयति)

अ + आणंतेण = अ आणंतेण (अजानता)

अ + आणिअ = अ आणिअ (अज्ञात्वा)

विशेष—

प्राकृत में प्रथम पद के अ और अण के स्थान पर ण आदेश होता है । यथा—
अ + अणसहिआलोअ = णसहिआलोअ (असोडालोअः)

अ + अणसहिअ पडिओह = णसहिअपडिओह (असोडप्रतिओघः)

अ + अणपहुप्पंत = णपहुप्पंत, णघहुत्त (अग्रभवत्)

(र) इ + इ = ई—मुणि + इणो = मुणीणो, मुणिइणो (मुनीनः)

इ + ई = ई—मुणि + ईमरो = मुणीसरो, मुणि ईसरो (मुनीस्वरः)

दहि + ईमरो = दहीसरो, दहि ईसरो (दधीस्वरः)

ई + इ = ई—गामणी + इइहासो = गामणीइइहासो, गामणी इइहासो
(गामणीतिहासः)

ई + ई = ई—गामणी + ईसरो = गामणीसरो, गामणी ईसरो (गामणीस्वरः)

पुइरी + ईस = पुइवीस (पृथिवीरः)

(ग) उ + उ = ऊ—भाणु + उउज्जाओ = भाणुउउज्जाओ, भाणु उउज्जाओ
(भानूवा-वायः)

साउ + उअयं = साऊअयं, साउउअयं (साणूदग्गम्)

उ + ऊ = ऊ—साहु + ऊसरो = साहूसरो, साहु ऊसरो (साहूसवः)

ऊ + उ = ऊ—पहु + उअरं = पहूअरं, पहु उअरं (पपूदग्गम्)

ऊ + ऊ = ऊ—कणेरु + ऊमिअ = कणेरुसिअं, कणेरु ऊसिअं
(कणेरुसिअं)

(२) गुण सन्धि^१— भ या वा वर्ग से परे ह्रस्व या दीर्घ इ और उ वर्ण हों तो पूर्व पर के स्थान में एर गुण आदेश होता है। उदाहरण—

- (क) वा + इ = ए—वास + इमी^२ = वासेमी, वास इमी (व्यासपिः)
 वा + इ = ए—रामा + इअरो = रामेअरो, रामा इअरो (रामेतरः)
 अ + ई = ए—वासर + ईसरो = वासरेसरो, वासर ईसरो (वासरेररः)
 वा + ई = ए—विलया + ईसो = विलयेसो, विलयाईसो (वनितेशः)

- (ख) अ + उ = ओ—गूढ + उअरं = गूढोअरं, गूढ उअरं (गूढोदरम्)
 आ + उ = ओ—रमा + उअचिअं = रमोअचिअं, रमाउअचिअं
 (रमोअचिअम्)

अ + ऊ = ओ—सास + ऊसासा = सासोसासा, सासऊसासा
 (रसासोच्छासा)

आ + ऊ = ओ—विष्णुवा + ऊमुंभिअं = विष्णुलोमुंभिअं, विष्णुला-
 ऊमुंभिअं (विष्णुलसितम्)

गुण सन्धि के अन्य उदाहरण

- दिवा + इभ = दिसेभ
 संदह + इभमोत्तिअ = संदहेभमोत्तिअ (संदहेभमोत्तिकः)
 पाअड + उरु = पाअडोरु (प्ररुोरुः)
 सामा + उअअं = सामोअअं (रवामोदरम्)
 गिरि लुलिअ + उअहि = गिरिलुलिओअहि (गिरिलुलिसोअधि)
 महा + इसि = महेसि (महापिः)
 राअ + इसि = राएसि (राजपिः)
 सख + उउय = सखोउय (सरुनुकः)
 गिअ + उउग = गिओउग (नित्यरुंकः)
 करिअर + उरु = करिओरु (करिओरु)
 अण + उउय = अणोउय (अननुकः)

१. प्रवर्णस्येयर्णादिनेदोदरल् १।२।६ हे० ।

२. पदयोः सन्धिर्वा ८।१।५—संस्कृतोन् सन्धिः सर्वः प्राकृते पदयोर्व्यवस्थिन-
 विभाषया भवति ।

अपवाद—सन्धि निषेध

पठमसमय + उवसंत = पठमसमयउवसंत (प्रथमसमयोपदान्तः)

आयरिय + उवज्ज्ञाय = आयरिय उवज्ज्ञाय (आवायोपाश्चात्)

हेट्टिम + उवरिय = हेट्टिमउवरिय (अधस्तोपरि)

कंठमुत्त + उरत्थ = कंठमुत्तउरत्थ (कंठसूत्रोरत्थः)

अप्प + उदय = अप्पउदय (अरुपोदयम्)

दीयदिसा + उदहीणं = दीयदिसा उदहीणं (द्वीपदिगुदधीनाम्)

सन्धि अभाव—

महा + उदय = महाउदय (महोदयम्)

ईहामिग + उसभ = ईहामिगउसभ (ईहानृगवर्गभः)

खग + उसभ = खगउसभ (खगवर्गभः)

पययण + उवघोयग = पययणउवघोयग (प्रवचनोपघातकः)

संजम + उवघाय = संजमउवघाय (संयमोपघातः)

वसंतुस्सव + उवायण = वसंतुस्सवउवायण (वसन्तोत्सवोपायग)

(३) विकृत वृद्धि सन्धि—

१—ए, ओ से पहले, किन्तु उस ए, ओ से पहले नहीं जो संस्कृत ए ओर औ से निकले हों, अ और आ का लोप हो जाता है। अर्थात् मूत्र ए और ओ से परे। अ और आ का लोप होता है। उदाहरण—

गाम + एणी = गामेणी

णव + एला = णवेल

खड्ग + एगावलि = खड्गुगेगावलि

फुल्ल + एला = फुल्लेली

जाळ + ओलि = जालोलि (ज्वालावलिः)

वण + ओलि = वणोलि (वनावलिः)

वाअ + ओलि = वाओलि (वातावलिः)

पहा + ओलि = पहोलि (प्रभावलिः)

उदम + ओलि = उदओलि (उदकार्गः)

वासेण + ओलि = वासेणोँलि (वर्षादिः)

माला + ओदड = मालोहड (मालापहतः)

मट्टिअ + ओलिस्स = मट्टिओलिस्स (मृत्तिकावलिस्सः)

जल + ओद् = जलोद् (जलौघः)

संठाण + ओसपिणी = संठाणोसपिणी (संस्थानासपिणी)

गुड + ओदन = गुडोदन (गुडौदनम्)

कररुद् + ओरंप = कररुहोरंप

वाअंदोलण + ओणविभ = वाअंदोलणोणविभ (वातान्दोलणानमित)

खंधुम्ब + एव = खंधुम्बेव (स्कन्धोत्क्षेप)

पातुम्ब + एव = पातुम्बेव (पादोत्क्षेपः)

(४) ह्रस्व दीर्घ विधान सन्धि^१—प्राकृत में सामासिक पदों में ह्रस्व का दीर्घ और दीर्घ का ह्रस्व होता है। इस ह्रस्व या दीर्घ के लिए कोई निश्चित नियम नहीं है। यह ह्रस्व स्वर का दीर्घ और दीर्घ स्वर का ह्रस्व विधान कभी बहुत—विकल्प से और कभी नित्य होता है। यथा—

ह्रस्व स्वर का दीर्घ—

अन्त + वेई = अन्तावेई (अन्तवेई)

सत्त + वीसा = सत्तावीसा (सत्तविशतिः)

पद् + हरं = पद्देहरं, पद्देहरं (पतिगृहम्)

वारि + मई = वारीमई, वारिमई (वारिमनी)

भुभ + यंतं = भुआयंतं, भुअयंतं (भुजायन्त्रम्)

वेल्ल + वणं = वेल्लवणं, वेल्लवणं (वेषुवन्त्रम्) ।

दीर्घ स्वर का ह्रस्व—

जउँणा + यडं = जउँणयडं, जउँणयडं (यमुनातटम्)

नई + सोत्तं = नइसोत्तं, नईसोत्तं (नदीस्रोतः)

मणा + सिला = मणसिला, मणासिला (मन.शिला)

गोरी + हरं = गोरिहरं, गोरीहरं (गौरीगृहम्)

यद्द + मुद्दं = यद्दुमुद्दं, यद्दुमुद्दं (यद्दुमुद्दम्)

सिला + खलिअं = सिलारुलिअं, सिलारुलिअं (सिपास्वलितम्)

(५) प्रकृतिभाव सन्धि—सन्धि कार्य के न होने को प्रकृति-भाव कहते हैं। प्राकृत में संस्कृत की अपेक्षा सन्धि नियम अधिक मात्रा में पाया जाता है। अतः यहाँ इन सन्धि के आवश्यक नियमों का विवेचन किया जायगा।

१. दीर्घह्रस्वी मिथो वृत्तो वा १।१४—वृत्तौ समाने स्वराणा दीर्घह्रस्वी बहुल भवतः।
निय. परस्परम् । तत्र ह्रस्वस्य दीर्घं ।

(१) इ और उ का त्रिजातीय स्वर के साथ सन्धि कार्य नहीं होता ।^१ जैसे—
पहावलि + अरुणो = पहावलिअरुणो (प्रभावत्यरुणः)

बहु + अयऊढो = बहुअयऊढो (बध्वयगूढः)

न वैरिवग्गे वि + अवयासो = न वैरिवग्गे वि अवयासो (न वैरिवग्गेऽप्यवकाशः)

दणु + इन्द्ररुहिरलित्तो = दणुइन्द्ररुहिरलित्तो (दणुजेन्द्ररुहिरलित्तः)

वि + अ = विअ (इव)

महु + ई = महुई (मधूनि)

वन्दामि + अज्जवइरं = वन्दामि अज्जवइरं

(२) ए और ओ के आगे यदि कोई स्वर वर्ण हो तो उनमें सन्धि नहीं होती है ।^२ यथा—

रुस्खादो + आअओ = रुस्खादो आअओ (वृक्षादागतः)

वणे + अडइ = वणेअडइ (वनेऽति)

लच्छीए + आणंदो = लच्छीएआणंदो (लक्ष्म्या आनन्दः)

देवीए + एत्थ = देवीएएत्थ (देव्या अत्र)

एभो + एत्थ = एओएत्थ (एकोऽत्र)

बहुआइनहुल्लिहणे + आअन्धतीएँ कञ्जुअं अंगे = बहुआइनहुल्लिहणे आअन्धतीएँ

कञ्जुअं अंगे (बद्धा नखोल्लेखने आवधन्त्या कञ्जुअङ्गे)

तं चेव मल्लिअ विरदण्ड विरसमालक्खिमो + एण्हि = तं चेव मल्लिअविरदण्ड

विरसमालक्खिमो एण्हि (तदेव सृदितविरदण्डविरसमालक्षयामः
इदानीम्)

अहो + अच्छरिअं = अहो अच्छरिअं (अहो आश्रयम्)

(३) उद्भूत स्वर का किसी भी स्वर के साथ सन्धि कार्य नहीं होता ।^३ यथा—

निसा + अरो = निसा अरो (निशावरः)—यहां घर शब्द के च का लोप होने से

अ स्वर उद्भूत है ।

गन्ध + उडि = गन्ध उडि (गन्धकुटीम्)—'कु' में क व्यञ्जन का लोप होने से उ उद्भूत है ।

निसि + अरो = निसि अरो (निशिचरः)—'च' का लोप होने से अ स्वर उद्भूत है ।

रयणी + अरो = रयणी अरो (रजनीचरः)

मणु + अत्तं = मणु अत्तं (मनुजत्वं)—'ज' का लोप होने पर अ उद्भूत है ।

१. न युवणंस्वास्वे ८।१।६. इवणंस्य उवणंस्य च अस्वे वणं परे सन्धिर्न भवति । हे० ।

२. एदोतो स्वरे ८।१।७ एकार-प्रोवारयो. परे सन्धिर्न भवति । हे० ।

३. स्वरस्योद्भूते ८।१।८. स्वरस्य उद्भूते स्वरे परे सन्धिर्न भवति । हे० ।

- एग + इंदिय = एगिंदिय (एकेन्द्रियः)
 सोअ + इंदिय = सोइंदिय (श्रोत्रेन्द्रियम्)
 घाण + इंदिय = घाणिंदिय (घ्राणेन्द्रियम्)
 जिभ + इंदिय = जिभिंदिय (जिह्वेन्द्रियम्)
 फास + इंदिय = फासिंदिय (स्पर्शेन्द्रियम्)
 तद्दिअस + इंदु = तद्दिअसिंदु (संक्षिप्तैन्दुः)
 राअ + ईसर = राईसर (राजेश्वरः)
 कण्ण + उप्पल = कण्णुप्पल (कर्णोत्पलम्)
 नील + उप्पल = नीलुप्पल (नीलोत्पलम्)
 णह + उप्पल = णहुप्पल (नलोत्पलम्)
 रयण + उज्जल = रयणुज्जल (रत्नोत्पलम्)
 पच्चद + उम्मूलिदं = पच्चदुम्मूलिदं (पर्वतोम्मूलितम्)
 कअ + ऊयासा = कऊसासा (कृतोच्छ्रामः)
 गमण + ऊमुअ = गमणूसुअ (गमनोत्सुकः)
 एग + ऊग = एगुण (एकौतः)
 पंच + ऊग = पंचूण (पञ्चोनः)
 भाग + ऊग = भागूण (भागोनः)
 महा + ऊसव = महूसव (महोत्सवः)
 वसंत + ऊसव = वसंतूसव (वसन्तोत्सवः)
 देव + इइदि = देविइदि (देवदिः)
 उत्तम + इइदि = उत्तमिइदि (उत्तमदिः)
 महा + इइदिय = महिइदिय (महादितः)
 विसेम + उयओगो = विसेमुयओगो (विशेषोपयोगः)

व्यंजन सन्धि

प्राकृत में व्यंजन सन्धि का द्विरृत प्रयोग नहीं मिलता है; यतः प्रायः शक्तिम हलन्त व्यंजन का लोप हो जाता है। व्यंजन का विकारमान धातुनायिक वर्णों में ही उपपन्न होता है। इस मन्त्रि का प्रमुख नियमों सहित विवेचन किया जाता है।

(१) ल के बाद आये इ ए संज्ञक विभाग के स्थान में उत पूर्व “अ” के स्थान हो हो जाता है। यथा—

१. अतो हो विसर्गम् २।।३७ मंग्लमशरणीशतप्रयातः परस्य विभागेत्य स्थाने हो श्वादेशो भवति । हे० ।

- १ अग्रतः > अग्राओ
- अन्त + विस्तम्भ. > अन्तोवीसंभो
- ८ पुरत > पुरओ
- ८ मनः + शिषा > मणोसिला ।
- ८ सर्गतः > सव्यओ ।
- मार्गतः > मग्गाओ ।
- भगतः > भवओ ।
- भद्रन्तः > भयन्तो ।
- सन्तः > सन्तो ।
- ८ वृत्. > वृदो ।

८ (२) पद के अन्त में रहने वाले मकार का अनुस्वार होता है ।^१ जैसे—

- गिरिम् > गिरिं
- जलम् > जलं
- फलम् > फलं
- वृक्षम् > वृक्षं

८ (३) मकार से परे स्वर रहने पर विभ्य से अनुस्वार होता है ।^२ यथा—

- उसभम् + अजिभं = उसभमजिभ्य, उसभंअजियं (ऋषभमजितम्)
- यम् + आहु = यमाहु, यं आहु
- घणम् + एव = घणमेघ, घणं एव (घनमेघ)

८ (४) बहुलाधिकार रहने से ह्रस्व अन्त्य व्यञ्जन का भी मकार होकर अनुस्वार हो जाता है ।^३ यथा—

- माक्षात् > सक्खं
- यत् > जं
- तत् > तं
- विष्वक् > वीसुं
- पृथक् > पिहं
- सम्पक् > सम्मं

१. मोनुस्वार ८।१।२३. अन्त्यमकारस्वानुस्वारो भवति । हे० ।

२. वा स्वर म्थ ८।१।२४. अन्त्यमकारस्य स्वरे परेनुस्वारो वा भवति । हे० ।

३. बहुलाधिकाराद् अन्त्यस्यापि व्यञ्जनस्य मकार. ८।१।२४ सूत्र वी वृत्ति । हे० ।

✓ (१) ह्, ज्, ण् और न् के स्थान में पश्चात् व्यंजन होने से सर्वत्र अनुस्वार हो जाता है। उदाहरण—

ह—पट्क्कि > पंति, पंती; पराह्मुल्ल > परंमुहो ।

ज—कञ्चुकः > कंचुओ; छाञ्चनम् > लंछणं ।

ण—पण्मुल्लः > छंमुहो; उत्कण्ठा > उक्कंठा ।

न—विन्ध्यः > विंको, सन्ध्या > संका ।

✓ (६) शौरसेनी प्राकृत में ह् और प् के परे रहने से अन्त्य म के स्थान पर विकल्प से 'ण' आदेश होता है। जैसे—

युत्तम् + इदम् = युत्तं + इणं = युत्तमिणं, युत्तंणिणं, युत्तं इणं ।

सरिशम् + इदम् = सरिशम् + इणं = सरिसमिणं, सरिसंणिणं, सरिसं इणं ।

विम् + एतत् = किं + एत्थं = किमेत्थं—किमेदं, किमेदं ।

एवम् + एतत् = एवं + एत्थं = एवमेत्थं, एवणेदं, एवमेदं ।

(७) अनुस्वार के पश्चात् कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग के अक्षर होने से क्रम से अनुस्वार को ह्, ज्, ण्, न् और म् विकल्प से होते हैं। यथा—

क— पं + को = पङ्को, पंको (पङ्कः)

ख— सं + खो = सङ्खो, संखो (संखः)

ग— अं + गणं = अङ्गणं, अंगणं (अङ्गनम्)

घ— लं + घणं = लङ्घणं, लंघणं (लङ्घनम्)

च— कं + चुओ = कञ्चुओ, कंचुओ (कञ्चुकः)

ट— लं + छणं = लञ्छणं, लंछणं (लञ्छनम्)

ण— अं + मिअं = अञ्जिअं, अंजिअं (अञ्जितम्)

क— सं + का = सङ्का, संका (संख्या)

ट— कं + टओ = कण्टओ, कंटओ (कण्टकः)

ठ— उ + कंठा = उक्कण्ठा, उकंठा (उत्कण्ठा)

ड— फं + वं = कण्ठं, कंडं (कण्ठम्)

ड— सं + षो = सण्ठो, संठो (पण्डः)

त— अं + तरं = अन्तरं, अंतरं (अन्तरम्)

थ— पं + थो = पण्यो, पंथो (पण्याः)

१. छ-ञ-ण-नो व्यञ्जने ऋ१२२५. छ, ञ, ण, न इत्येतेषा स्थाने व्यञ्जने परे अनुस्वारो भवति । हे० ।

२. घर्मेत्यो वा ऋ१२३०. अनुस्वारस्य वर्गे परे प्रत्यासत्तेस्तस्यैव घर्मेत्यान्त्यो वा भवति । हे० ।

- द— चं + दो = चन्दो, चंदो (चन्द्र.)
 घ— वं + धवो = वन्धवो, धंधवो (बान्धवः)
 प— कं + पइ = कम्पइ, कंपइ (कम्पते)
 फ— वं + फइ = वम्फइ, वंफइ (वम्फते)
 ब— कलं + वो = कलम्बो, कलंबो (कम्ब.)
 भ— आरं + भो = आरम्भो, आरंभो (आरम्भ.)

(c) प्राकृत में कितने ही शब्दों के प्रयोगानुसार पहले, दूसरे या तीसरे वर्ण पर अनुस्वार का आगम होता है। यह अनुस्वारागम भी सन्धि कार्य के अन्तर्गत है।
 उदाहरण :—

प्रथम स्वर के ऊपर अनुस्वार—

- अंसु (अधु) = अंसुं
 तंस (त्र्यम्) = तंसं
 वंरु (वम्) = वंरुं
 मसू (शम्) = मसूं
 पुळं (पुळम्) = पुळं
 गुळं (गुळम्) = गुळं
 मुहं (मूर्धा) = मुहं
 फसो (स्पर्शः) = फंसो
 बुधो (बुध्नः) = बुधो
 ककोडो (कर्कोटः) = कंकोडो
 दसणं (दर्शनम्) = दंसणं
 विछिओ (वृश्चिकः) = विछिओ
 गिठी या गुठी (गृष्टिः) = गिठी या गुंठी
 मज्जारो (मार्जारः) = मंजारो, मज्जारो

द्वितीय स्वर के ऊपर अनुस्वारागम—

- इइ = इहं
 पइमुआ = पइंसुआ (प्रतिश्रुत्)
 मणसी (मनस्वी) = मणसी ।
 मणसिणी (मनस्विनी) = मणंसिणी ।
 मणसिला (मनःशिला) = मणंसिला, मणसिला

१. वक्रादावन्त ८।१।२६ हे० । वक्र, व्यञ्ज, वयम्प, अधु, शम्शु, पुळ्, प्रतिश्रुत्क, गृष्टि, मनस्विनी, स्पर्श, श्रुत्, प्रतिश्रुत्, निव्रमन और दर्शन प्रभृति शब्द वक्रादि गण पठित हैं । सङ्घत में यह गण श्राट्ति गण कहलाता है ।

वयसो (वयस्यः) = वयंसो

पडिसुदं (प्रतिश्रुतम्) = पडिसुदं ।

तृतीय स्वर के ऊपर अनुस्वारागम—

अणित्तयं (वतिसुक्तम्) = अणित्तयं, अइमुत्तयं, अइमुत्तयं

उपरि (उपरि) = उपरि

अहिसुको (अभिसुक्तः) = अहिसुको

(९) जिन शब्दों के अन्त्य व्यंजन का लोप होता है उनके अन्त्य स्वर के ऊपर अनुस्वार का आगम होता है । जैसे—शुभक् = पिहं—इस उदाहरण में अन्त्य व्यंजन क् का लोप हुआ है और श्रु में संयुक्त ऋकार के स्थान पर इकारदेश हुआ है, तथा 'थ' के स्थान पर 'ह' हो जाने से 'पिह' बना है । पश्चात् उपयुक्त नियमानुसार अनुस्वार का आगम हो गया है ।

(१०) जहाँ स्वादि पदों की द्विरक्ति हुई हो, वहाँ दो पदों के बीच में 'श्' विकल्प से आ जाता है । यथा—

एक + एकं = एकमेकं, एकैकं (एकैकम्)

एक + एकेण = एकमेकेण, एकैकेण (एकैकेन)

अंग + अंगम्भि = अंगमंगम्भि, अंगअंगम्भि (अङ्गे, अङ्गे)

(११) उण एवं स्यादि के ण और सु के आगे विकल्प से अनुस्वार का आगम होता है । यथा—

काउण (कृत्वा) = काउणं, काउण

काउणण = काउणणं, काउणण

कालेण (कालेन) = कालेणं, कालेण

वच्छेण (वृक्षेण) = वच्छेणं, वच्छेण

वच्छेसु (वृक्षेसु) = वच्छेसुं, वच्छेसु

तेण = (तेन) तेणं, तेण

(१२) प्राकृत में अनुस्वारागम जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही अनुस्वार लोप भी । अत व्यंजन सन्धि कार्य के अन्तर्गत अनुस्वार लोप का प्रकरण भी आया है । यहाँ कुछ नियमों का निरूपण किया जायगा ।

(१३) संस्कृत के विशति, विशत्, संस्कृत, संस्कार और संस्तुत शब्दों के अनुस्वार का लोप होता है ।^१

१. क्त्वा-स्यादिर्ण-सोर्वा दा।१।२७. क्त्वाया स्यादीला च यो ण्यू तपोरनुस्वारोन्तो वा भवति । हे० ।

२. विशयादेतुक् दा।१।२८. विशयादीनाम् अनुस्वारस्य तुम् भवति । हे० ।

त्रिस्तुति = त्रीसा

त्रिस्तुत् = तीसा

संस्कृतम् = सषडं

संस्कारः = सषडो

संस्तुतम् = सत्तुअ

~ (१४) मांसादिगण के शब्दों में अनुस्वार या लुक् विकल्प से होता है।^१ जैसे—

(क) प्रथम स्वर के आगे अनुस्वार या लोप—

मासं, मंसं (मासम्)

मासलं, मंसलं (मांसम्)

कि, कि (विम्)

कासं, कंसं (कांसम्)

सीहो, सिघो (सिंह)

पासृ, पंसृ (पांसु-शुः)

(ख) द्वितीय स्वर के आगे अनुस्वार या लोप—

कह, कंहं (कथम्)

एव, एवं (एवम्)

नूण, नूणं (नृम्)

(ग) तृतीय स्वर के आगे अनुस्वार या लोप—

इआगि, इआर्णि (इदानीम्)

संमुह, समुहं (सम्मुलम्)

त्रिसुअ, त्रिसुभं (त्रिशुम्)

अव्यय सन्धि

अव्यय पदों में सन्धिकार्य करने को अव्यय सन्धि कहा गया है। यद्यपि यह सन्धि भी स्वर सन्धि के अन्तर्गत ही है, तो भी विस्तार से विचार करने के लिए इस सन्धि का पृथक् उल्लेख किया गया है। यहाँ अव्यय सन्धि के नियमों का विवेचन किया जाता है।

(१) पद से परे आये हुए अपि अव्यय के अ का लोप विकल्प से होता है। लोप होने के बाद अपि का प् यदि स्वर से परे हो तो उत्तरा व हो जाता है।^२ यथा—

केण + अपि = केणपि, केणापि (केनापि)

कहं + अपि = कहपि कहमपि (कथमपि)

१. मासादेर्वा = १।२६. मामादीनामनुस्वारस्य सुग वा भवति । हे० ।

२. पदादेर्वा = १।४१. पदान् परस्य अपरेण्वपस्यादेरुं वा भवति । हे० ।

किं + अपि = किंपि, किमपि (किमपि)

तं + अपि = तंपि, तमपि (तदपि)

✓ (२) पद मे उत्तर में रहनेवाले इति अव्यय के आदि इकार का लोप विकल्प से होता है और स्वर के परे रहनेवाले तकार को द्वित्व होता है ।^१ यथा—

किं + इति = किंति (किमिति)

जं + इति = जंति (यदिति)

दिट्ठं + इति = दिट्ठंति (दृष्टमिति)

न जुत्तं + इति = न जुत्तंति (न युक्तमिति)

स्वर से परे रहने पर तकार को द्वित्व—

तद्वा + इति = तद्वात्ति, तद्वात्ति (तथेति)

पिथो + इति = पिथोत्ति, पिथोत्ति (प्रियइति)

पुरिमो + इति = पुरिसोत्ति, पुरिसुत्ति (पुरइति)

(३) त्यद् आदि सर्वनामों से पर में रहनेवाले अवयवों तथा अवयवों से पर में रहनेवाले त्यदादि के आदि-स्वर का विसर से लोप होता है ।^२

एम + इमो = एसमो (एपोऽयम्)

अम्हे + एत्थ = अम्हेत्थ (वयमत्र)

जइ + एत्थ = जइत्थ (यथा)

जइ + अहं = जइहं (यद्यहं)

जइ + इमा = जइमा (यदीयम्)

अम्हे + एत्थ = अम्हेत्थ (वयमेव)

अपवाद—पद से पर में इ के न रहने पर इकार का लोप नहीं होता और तकार को द्वित्व ही होता है । यथा—

‘इअ विन्क-गुहानिलयाणु’ में इअ—इति के इकार का लोप नहीं हुआ और तकार को द्वित्व ही हुआ है । इति शब्द जब किसी वाक्य के आदि में प्रयुक्त होता है, तो तकारवाले इकार को अकार हो जाता है । जैसे—‘इति यत् प्रियायमाने’ संस्कृत वाक्य के स्थान पर ‘इआ जंपि अत्सण्णे’ हो जाता है ।

— — —

१. इने. स्वरान् तथा डि ८।१।४२. पदान् परम्य इनेरादेतुं भवति स्वरान् परम्य तारारे डिभंरति । १० ।

२. एवसाधम्यवान् तस्साय्य गुत् ८।१।४०. त्यसादेत्यकाय परम्य तकोरेव त्यसाय्यम्य-योसदे मय्यम्य पद्वने तुग् भवति । १० ।

तीसरा अध्याय

वर्ण विकृति

प्राकृत शब्दावलि को जानने के पूर्व संस्कृत वर्णों में होनेवाली उस विकृति को भी जान लेना आवश्यक है, जिसके आधार पर प्राकृत शब्दराशि खड़ी की जा सकती है। यहाँ वर्ण विकृति के साधारण और आवश्यक नियमों का विवेचन किया जाता है।

(१) विजातीय—भिन्न वर्गवाले संयुक्त व्यंजनों का प्रयोग प्राकृत में नहीं होता। अतः प्रायः पूर्ववर्ती व्यंजन का लोप होकर शेष को द्वित्व कर देते हैं। उदाहरण—

उत्कण्ठा = उक्कठा—इस उदाहरण में विजातीय त् और क् का संयोग है, अतः पूर्ववर्ती त् का लोपकर शेष क को द्वित्व कर दिया है। ण् का अनुस्वार हो जाने से 'उक्कठा' शब्द बना है।

नक्षत्र. = णक्षत्रो—यहाँ भी त् + क् में से त् का लोप हो गया है और क् को द्वित्व हो गया है।

याज्ञवल्क्येन = जण्णवक्केण—में ज् + न् = ज्ञ में से ज् का लोपकर न् + ण् को द्वित्व कर दिया तथा ल् + क् + य् = ल्य में से विजातीय वर्ग ल् + य् का लोपकर शेष क् को द्वित्व कर दिया है।

शक्र. > सक्को—र + क्—में र् का लोप और क् को द्वित्व।

धर्मः > धम्मो—र् + म् में से र् का लोप और म् को द्वित्व।

विमल्य > विक्करो—क् + ल् में से ल् का लोप और क् को द्वित्व।

उत्का > उक्का—ल् + क् में ल् का लोप और क् को द्वित्व।

पक्म > पक्कं, पिक्कं—क् + म् में से क् का लोप और क् को द्वित्व।

खड्ग > खग्गो—ङ् + ग् में से ङ् का लोप और ग् को द्वित्व।

अग्नीन् > अग्निणी—ग् + न् में से न् का लोप और ग् को द्वित्व।

योष्यः > जोग्गो—ग् + य् में से य् का लोप और ग् को द्वित्व।

१. क-म ट-उ त-द-प-श-प स-~~क-~~ पामध्वं लुक् ८।२।७७. एणा सनुत्तवर्णमवधि-
नामूर्ध्वं स्थिताना लुग् भवति । हे० ।

अनादौ शेषादेशयोद्वित्वम् ८।२।८६ पदस्थानाद्दो वर्तमानस्य शेषम्यादेशाय च द्वित्व
भवति । हे० ।

- वचप्रहः > कअग्गहो—ग् + र् में से र् का लोप और ग् को द्वित्व ।
 मार्गः > मग्गो—र् + ग् में से र् का लोप और ग् को द्वित्व ।
 वज्जा > वग्गा—ल् + ग् में से ल् का लोप और ग् को द्वित्व ।
 सप्तविशतिः > सत्तावीसा—प् + त् में से प् का लोप और त् को द्वित्व ।
 वर्णपुरम् > कण्णउरं—र् + ण् में से र् का लोप और ण् को द्वित्व ।
 मित्रम् > मित्त—त् + र् में से र् का लोप और त् को द्वित्व ।
 कर्म > कम्म—र् + म् में से र् का लोप और म् को द्वित्व ।
 धर्म > धम्म—र् + म् में से र् का लोप और म् को द्वित्व ।
 उत्सवः > उत्सवो—त् + स् में से त् का लोप और स् को द्वित्व ।
 उत्पलम् > उत्पलं—त् + प् में से त् का लोप और प् को द्वित्व ।
 उद्गति > उग्गइ—द् + ग् में से द् का लोप और ग् को द्वित्व ।
 भगिनप्रहः > अहिग्गहो—ग् + र् में से र् का लोप और ग् को द्वित्व ।
 भुक्तं > भुत्तं—क् का लोप हुआ और त् को द्वित्व ।
 मुद्ग > मुग्गू—द् का लोप और ग् को द्वित्व ।
 दुग्धम् > दुद्धं—ग् का लोप और घ् को द्वित्व ।
 कृष्णम् > कप्पफलं—ट् का लोप और फ् को द्वित्व ।
 पद्म. > सज्जो—द् का लोप और ज् को द्वित्व ।
 युतः > सुत्तो—प् का लोप और त् को द्वित्व ।
 एतः > गुत्तो—प् का लोप और त् को द्वित्व ।
 निश्चल. > णिच्चलो—ण् का लोप और च् को द्वित्व ।
 गोष्ठी > गोट्ठी—प् का लोप और ट् को द्वित्व ।
 पृष्ठः > छट्ठो—ष् का लोप और ट् को द्वित्व ।
 निष्ठुरः > नित्ठुरो—प् का लोप और ट् को द्वित्व ।
 स्थलिनः + स्थलिनो—स् का लोप ।
 स्नेहः > नेहो—स् का लोप ।
 अन्तःप्रातः > अन्तप्पाओ—विस्मर्ग फा लोप और प् को द्वित्व ।

अपवाद—ग्, ण्, न्, ज्, च् और ङ् ।

(२) वर्ग के पाँचवें अक्षरों का अपने वर्ग के दाशरों के साथ भी वहाँ-वहाँ संयोग होता जाता है । यथा—

अद्गुः > अद्दो, अंको—द् + क् का संयोग है ।

अद्गारः > इद्गारो ।

छाद्गृत्तम् > तालवेण्टं ।

दुरुत्तरं < दुरुत्तरम्—दुर् के र् का लोप नहीं हुआ है ।

दुरागदं < दुरागतम् " "

दुरवगाहं < दुरवगाहम् " "

विशेष—कहीं-कहीं निर् के रेफ का लोप देखा जाता है ।^१ जैसे—

अन्तोवरि < अन्तर् + उपरि—यहाँ अन्तर् के रेफ का लोप हुआ है ।

णिलक्कण्ठं < निरत्क्कण्ठम्—निर् के रेफ का लोप हुआ है ।

(७) विद्युत् शब्द को छोड़कर खीलिग में वर्तमान सभी व्यंजनान्त शब्दों के अन्त्य व्यञ्जन का आत्व होता है ।^२ ईपत्स्पृष्टतर होनेवाली^३ यभ्रुति के अनुसार आ के स्थान पर या भी हो जाता है । जैसे—सरिया, सरिअ < सरित्—अन्तिम हलन्त व्यञ्जन त् का लोप न होकर उसके स्थान पर आ हो गया है ।

संपया, संपआ < संपद्—अन्तिम हलन्त व्यञ्जन का लोप न होकर उसके स्थान पर आ हो गया है ।

वाया, वाआ < वाक् " " "

अच्छरा < अप्तरम् " " "

पडिवया, पडिवआ < प्रतिपद् " " "

वाआच्छलं < वाच्छलम्—क् के स्थान पर आ हुआ है ।

वाआविहयो < वाग्विभव—ग् के स्थान पर आ हुआ है ।

विशेष—विद्युत् शब्द का प्राकृत में विज्जू होता है ।^४

(८) खीलिग में वर्तमान रेफान्त शब्दों के अन्तिम र् को रा आदेश होता है ।^५ जैसे—

गिरा < गिर् (गीः) हलन्त व्यञ्जन र् के स्थान पर रा हो गया है ।

धरा < धुर् (धूः)— " " "

पुरा < पुर् (पूः)— " " "

महुअमहुरगिरा < मधूरुमधुरगिरिः— " " "

(९) धुध् शब्द के अन्त्य व्यञ्जन का 'दा' आदेश होता है ।^६ यथा—

१. नवचिद् भवत्यपि ८।१।१४ की वृत्ति हे० ।

२. त्रियामादविद्युत् ८।१।१५. त्रिया वर्तमानस्य शब्दस्यान्त्यव्यञ्जनस्य आत्वं भवति विद्युच्छब्दं वर्जयित्वा । हे० ।

३. बहुलाधिकाराद् ईपत्स्पृष्टतरयभ्रुतिरपि—८।१।१५ की वृत्ति । हे० ।

४. अविद्युत् इति विम्—उपयुक्तं सूत्र की वृत्ति ।

५. रो रा ८।१।१६. त्रिया वर्तमानस्यान्त्यस्य रेफस्य रा इत्यादेशो भवति । प्रात्त्वापवाद । हे०

६. धुधो हा ८।१।१७. धुध् शब्दस्यान्त्यव्यञ्जनस्य हादेशो भवति । हे० ।

ह्रुहा < ध्रुत् वा ध्रुप्—अन्त्य व्यञ्जन त् या ध् के स्थान पर 'हा' हुआ है ।

(१०) शरत् प्रभृति शब्दों के अन्तिम ह्रस्व व्यञ्जन के स्थान पर अ आदेश होता है ।^१ यथा—

सरअ < शरत्—त् के स्थान पर ञ हुआ है ।

भिसअ < भियक्—क् के स्थान पर अ हुआ है ।

(११) दिग् और प्राट्प् शब्दों के अन्तिम व्यञ्जनों के स्थान में स आदेश होता है ।^२ जैसे—

दिसा < दिक्—क् के स्थान पर स आदेश हुआ है ।

पाउसो < प्राट्—ट् के स्थान पर स आदेश हुआ है ।

(१२) आयुप् और अप्सरस् के अन्त्य व्यञ्जनों का विकल्प से स आदेश होता है ।^३ यथा—

दीहाउसो, दीहाऊ < दीर्घायुस्, दीर्घायुः ।

अच्छरसा, अच्छरा < अप्सरस्, अप्सराः ।

(१३) ककुम् शब्द के अन्त्य व्यञ्जन को ह आदेश होता है ।^४ जैसे—

कउहा < ककुम्, ककुप्—म् के स्थान में ह हुआ है ।

(१४) धनुप् शब्द के अन्त्य व्यञ्जन के स्थान में विकल्प से ह आदेश होता है ।^५ यथा—

धणुहं, धणू < धनुप्, धनुः—प् के स्थान पर विकल्प से ह हुआ है ।

विकल्पाभाव पक्ष में प् का लोप हो गया है और पूरी स्वर को दीर्घ कर दिया है ।

(१५) स् के अतिरिक्त अन्य व्यञ्जनों के स्थान पर भी विकल्प से अनुस्वार होता है ।^६ यथा—

सक्त् < साक्षात्—त् के स्थान पर अनुस्वार हुआ है ।

जं < यत्—त् के स्थान पर अनुस्वार ।

तं < सत्— " " "

१. शरदादेरत् ८।१।१८. शरदादेरन्त्यव्यञ्जनस्य अन् भवति । हे० ।

२. शरदो व. ४।१०. शरच्छब्दस्यान्त्यवह्ना दो भवति । यया-मरदो—वर० ।

३. दिक् प्रावृषोः स. ८।१।१६. एतयोरन्त्यव्यञ्जनस्य सो भवति । हे० ।

४. घातुरप्सरस्तोर्वा ८।१।२०. एतयोरन्त्यव्यञ्जनस्य सो वा भवति । हे० ।

५. ककुभो ह. ८।१।२१. ककुम् शब्दस्यान्त्यव्यञ्जनस्य हा भवति । हे० ।

६. धनुषो वा ८।१।२२. धनु शब्दस्यान्त्यव्यञ्जनस्य हो वा भवति । हे० ।

७. बहुलाधिकाराद् अन्यस्यापि व्यञ्जनस्य मकार. । ८।१।२४ सूत्र की वृत्ति—हे० ।

संफासो < संफरसो = संस्पर्शः—रू का लोप और स्, फां द्वित्त्वं, पश्चात्
स् लुक् और दीर्घ ।

आसो < आरसो = अरयः—यू लोप, द्वित्त्वं, सलोप और दीर्घ ।

वीससइ < विरससइ = विरयसिति— " "

वीसासो < विरसासो = विश्वासः— " "

दूसासगो < दुरशामनः—दू का लोप और दीर्घ

मणासिला < मनःशिला— " "

सीसो < सिरसो = शिष्यः—यू लोप, द्वित्त्वं, स् लोप और दीर्घ ।

पूसो < पुरसो = पुण्यः— " " " "

मणूसो < मणुस्तो = मनुष्य— " " " "

फासओ < फरसओ = कर्पकः—रू लोप, द्वित्त्वं, स् लोप और दीर्घ ।

वासा < वरसा = वर्षा— " " " "

वासो < वरसो = वर्षः— " " " "

वीसागो < विस्साण = विप्राणः—व लोप " "

वीसुं < विस्सुं = विश्वरू—यू लोप, उत्त्वं, स को द्वित्त्वं, स् लोप और दीर्घ ।

निसित्तो < निरिसित्तो = निरिपित्तः—यू लोप, द्वित्त्वं, स् लोप और दीर्घ ।

सासं < सस्तं = मस्यम्—य लोप, द्वित्त्वं, स् लोप और दीर्घ ।

कासइ < फरसइ = कस्यचित्— " " "

ऊसो = उरसो > उरमः—रू लोप, स् द्वित्त्वं; स् लोप और दीर्घ ।

धीसंभो = विसंभो > विश्वंभः—व लोप, " "

विरासरो = विकरसरो > विकरवरः— " " "

नीसो = निरसो < निरस्य— " " "

नीसदो < निरसदः—स लोप और दीर्घ

(१९) समृद्धगदि गण के शब्दों में आदि अकार को विकल्प से दीर्घ होता है । उदाहरण—

सामिद्धी, समिद्धी < समृद्धिः ।

पाअडं, पअडं < प्रकटम् ।

१. अतः समृद्धवादी वा < १।१।४४. समृद्धि इवेवमादिषु शब्देषु आदेवारस्य दीर्घो वा भवति । समृद्धि गण के शब्द निम्न हैं—

समृद्धि प्रतिपिद्धिष्व प्रमिद्धिः प्रकट तथा ।

प्रमुत्तञ्च प्रतिस्पर्द्धी प्रतिपञ्च मन्मिन्वी ॥

अभिजाति. महेश्वरच समृद्ध्यादिरयं गणः ।—कल्याणिका

पासिद्धी, पसिद्धी < प्रसिद्धिः ।
 पाडिवआ, पडिवआ < प्रतिपदा ।
 पासुत्तं, पसुत्तं < प्रसुप्तम् ।
 पाडिसिद्धी, पडिसिद्धी < प्रतिसिद्धि ।
 सारिच्छो, सरिच्छो < सदृश ।
 माणंसी, मणंसी < मनस्वी ।
 माणंसिनी, मणंसिनी < मनस्विनी ।
 आहिआई, अहिआई < अभियाति ।
 पारोहो, परोहो < प्ररोहः ।
 पावासु, पवासु < प्रवासी ।
 पाडिप्फद्धी, पडिप्फद्धी < प्रतिस्पर्द्धी ।

विशेष—प्राकृत प्रकाश में इस गण को आकृतिगण माना गया है।^१ हेमचन्द्र^२ ने भी आकृतिगण होने से निम्न शब्दों की भी निष्पत्ति बतलायी है ।

आफंसो < अस्पर्शः
 पारकेरं, पारक्कं < परकीयम् ।
 पावयणं < प्रवचनम् ।
 चाउरन्त < चतुरन्तम् ।

(२०) दक्षिण शब्द में आदि अकार को ह के पर में रहने पर दीर्घ होता है।^३ जैसे—

दाहिणो = दक्षिणः—क्ष के स्थान पर ह होने से दीर्घ हुआ है । क्ष के स्थान पर ह नहीं होने पर 'दक्षिण' का दक्खिणो यह रूप बनता है ।

(२१) स्वप्न आदि शब्दों में आदि ल पा हकार होता है।^४ उदाहरण—

सिविणो, सिमिणो, सुमिणो < स्वप्न ।
 इंसि < ईपत् ।
 वेडिसो < वेतस
 विलिअं < व्यलीकम् ।
 विअणं < व्यजनम् ।

१. प्रा समृद्ध्यादिमु वा १।२ -आकृतिगणोयम् । वर० ।

२. आकृतिगणोयम् तेन अस्पर्शं, आफंसो-इत्यादि वा।१।४४ सूत्र की वृत्ति हे० ।

३. दक्षिणे हे वा।१।४५. दक्षिणशब्दे आदेरतो हे परे दीर्घो भवति ।

४. इः स्वप्नादी वा।१।४६. स्वप्न इत्येवमादिषु प्रादेरग्य इत्वं भवति । हे० ।

इदीपत्त्वत्त स्वप्नेतेतमव्यजनमूदनाङ्गारेणु १।३ वर० ।

मुइंगो < मृदङ्गः ।
 कियिणो < कृपणः ।
 उत्तिमो < उत्तमः ।
 मिरिञ्चं < मरिचम् ।
 दिरणं < दत्तम् ।

(२२) पस्, अङ्गार और लण्ट शब्द को विकल्प में हकार होता है ।^१ जैसे—

पिक्कं, पक्कं < पस्वम्
 इंगालो, अङ्गारो < अङ्गारः
 णिडालं, णडालं < लण्टम्

(२३) मध्यम और क्तम शब्द में द्वितीय अकार के स्थान पर इत्व होता है ।^२ जैसे—

मडिक्कमो < मध्यमः
 कड्मो < क्तमः

(२४) सप्तपर्ण शब्द में द्वितीय अकार के स्थान पर विकल्प से इत्त्व होता है ।^३ यथा—

इत्तिवण्णो, इत्तवण्णो < सप्तपर्णः

(२५) हर शब्द में आदि अकार के स्थान पर विकल्प से ईकार होता है ।^४ यथा—
 हीरो, हरो < हरः

(२६) ध्वनि और विण्व शब्द में अकार के स्थान पर उकार होता है ।^५ जैसे—
 भुण्णो < ध्वनिः—ध् के स्थान पर भ् हुआ है और व का सम्प्रसारण होने से उ हुआ है ।

वीसुं < विण्वम्—यहां पर भी व् का संप्रसारण हुआ है ।

(२७) चन्द्र और खण्डित शब्दों में आदि अकार का विकल्प से णकार सहित उत्त्व होता है ।^६ यथा—

१. पक्वाङ्गार-मलाटे वा ८।१।४७. एण्वादेरत् इत्त्वं वा भवति । हे० ।

२. मध्यमवत्तमे द्वितीयस्य ८।१।४८. मध्यमशब्दे क्तमशब्दे च द्वितीयात् इत्त्वं भवति । हे० ।

३. सप्तपर्णो वा ८।१।४९. सप्तपर्णो द्वितीयस्यात् इत्त्वं वा भवति । हे० ।

४. ईहरे वा ८।१।५१. हरशब्दे आदेरत् ईकां भवति । हे० ।

५. ध्वनि विण्वोर. ८।१।५२. अनयोरादेरस्य उत्त्वं भवति । हे० ।

६. चन्द्रखण्डितेणा वा ८।१।५३. अनयोरादेरस्य एकारेण सहितस्य उत्त्वं वा भवति । हे० ।

सुन्द्रं, सुन्द्रं < वसुन्द्रं—अकार के स्थान पर नू (ण) सहित उत्त्व हुआ है ।
सुद्धिओ, सुण्डिओ < खण्डितः—

(२८) गण्य शब्द में वकार के अकार के स्थान पर उत्त्व होता है ।^१ जैसे—
गडओ, गडआ < गवयः ।

(२९) प्रथम शब्द में पकार और थकार के स्थान पर युगपत् और क्रमशः उकार होता है^२ । जैसे—

पुढुमं, पुढमं, पढुमं, पढमं < प्रथमम्

(३०) अभिज्ञ आदि शब्दों में णत्व करने पर ज्ञ के आकार का उत्त्व होता है ।^३ जैसे—

अहिण्णू < अभिज्ञ.

सव्णणू < सर्वज्ञ—शौरसेनी में सव्णणो और पैशाची में सव्णणो ।

आगमण्णू < प्रागमज्ञः ।

विशेष—णत्वाभाव में अहिज्जो < अभिज्ञ., सव्णज्जो < सर्वज्ञ होते हैं ।

(३१) शय्या आदि शब्दों में आदि अकार का एकार आदेश होता है ।^४
जैसे—सेज्जा < शय्या—अकार का एकार और य्या का ज्ञा ।

सुंदेरं < सुन्दरम्—दकारोत्तर अकार का एकार ।

उकरो < उत्करः—त का लोप और क को द्वित्व तथा अ को एकार ।

तेरहो < त्रयोदशः—त के र का लोप, अकार को एकार तथा दश के स्थान में रहा ।

अच्छेरं < आश्चर्यम्—पूर्वतो आ को द्वित्व कर दिया और रच के अ को एकार तथा रच के स्थान पर छउ ।

पेरंतं < पर्यन्तम्—अकार को एकार ।

वेल्ली < वल्लि —

१. गवये व ८।१।५४. गण्यशब्दे वकारावरस्य उत्वं भवति । हे० ।

२. प्रथमे पथोर्वा ८।१।५५. प्रथमशब्दे पकारथकारयोरकारस्य युगपत् क्रमेण च उकारो वा भवति । हे० ।

३. जो एत्वेभिजादौ ८।१।६६. अभिज्ञ एवं प्रकारेषु ज्ञस्य एत्वे कृते ज्ञस्यैव अत्र उच्यं भवति । हे० ।

४. एच्छय्यादौ ८।१।५७. शय्यादिषु आदेरस्य एत्व भवति । हे० । शय्यात्रयोदशारचयं पर्यन्तोत्करवत्तय । सौन्दर्यं चेति शय्यादिगण. शेषस्तु पूर्ववत् ।

गोशुभ्रं—वशुभ्रम्—क के स्थान पर ग और वाकार को एका, इत्ये ए के स्थान पर मूर्धन्य च, क का शेष और इत्ये शेष ।

एत्ये—अत्र—ग वा एत्ये तदा ग का ए ।

(३२) मक्षयर्थे शब्द में चकारोत्तरयोर् अ के स्थान पर एत्ये होता है ।^१ जैसे—
मक्षयर्थे—मक्षयर्थम् ।

(३३) अन्तर शब्द में तत्रागोचरयोर् अकार के स्थान पर एत्ये होता है ।^२ जैसे—

अन्तेउरं—अन्तपुरं । अन्नेआरी—अन्तप्राप्ति ।

यहाँ अन्तर शब्द में तत्रागोचरयोर् अकार को एत्ये नहीं होता है ।^३ जैसे—
अन्तगम्यं—अन्तर्गतम् ।

अन्तो-धीसम्भनियेसिआणं—अन्त विष्णुसम्भनियेसिआणम् ।

(३४) पद्म शब्द के वादि के अकार के स्थान पर ओत्ये होता है ।^४ जैसे—
पोमं, पउमं—पद्मम् ।

(३५) ममस्कार और परस्पर शब्द में द्वितीय अकार के स्थान पर ओत्ये होता है ।^५ यथा—

नमोऽकारो—नमस्कारः ; परोऽपरं—परस्परम् ।

(३६) अर्धि धातु में आदि के अ को विकल्प से ओ होता है ।^६ जैसे—

ओऽप्येह, अप्येह—अर्धयति—ओत्ये के अभाव में एत्ये होता है ।

ओऽप्येअं, अप्येअं—अर्धितम् ।

(३७) स्वप् धातु में आदि के अ के स्थान पर ओत्ये और उद्ये आदेश होते हैं ।^७ जैसे सोऽह, सुऽह—स्वपिति ।

(३८) नप् के बाद में आनेवाले पुनर् शब्द के अ के स्थान में वा और वाद विरहण से आदेश होते हैं ।^८ जैसे—

१. ब्रह्मवर्षे च. ८।१।५६. ब्रह्मवर्षेशब्दे चम्य भव एव भवति । हे० ।

२. तोल्लरि ८।१।६०. अन्तरशब्दे तम्य भव एव भवति । हे० ।

३. वयपिल्ल भवति । हे० ।

४. श्लोचदमे ८।१।६१. पद्य शब्दे आदेशत श्लोचं भवति । हे० ।

५. ममस्कार-परस्पर द्वितीयस्य ८।१।६२. अन्तयोद्वितीयस्य अन्त श्लोचं भवति । हे० ।

६. वापौ ८।१।६३. अर्धयती धातौ आदेशस्य श्लोचं वा भवति । हे० ।

७. राषाणुष्य ८।१।६४. स्वपिती धातौ आदेशस्य श्लोऽह उरं च भवति । हे० ।

८. नाप्पुनर्वादाई वा ८।१।६५. नत्र. परंपुन शब्दे आदेशस्य वा वाद इत्यादेशौ वा भवत. । हे० ।

ण उणा < न पुनः—आ आदेश हुआ है ।

ण उणाई < न पुनः—आइ आदेश हुआ है ।

ण उण < न पुनः—विस्त्प भाव पक्ष में ।

(३९) अन्त्यों में और उत्खात, चामर, कालक, स्थापित, प्रतिस्थापित, संस्थापित, प्राकृत, तालवृन्त, हालिक, नारायण, बलासा, कुमार, खादित, ब्राह्मण पूर्व पूर्वाङ्क शब्दों में आदि आकार का अकार विस्त्प से होता है ।^१ मञ्जारी माञ्जारी < माजारी:

मरलो, मरालो < मरालः

पहरो, पहारो < प्रहारः

तह, तहा < तथा

उक्त्तअं, उक्त्ताअं < उत्खातम्

कलओ, कालओ < कालः

परिठविअं, परिठाविअं < प्रतिष्ठापितम्

पउअं, पाउअं < प्राकृतम्

हलिओ, हालिओ < हालिकः

बलाआ, बलाआ < बलाका

रइअं, खाइअं < खादितम्

पुव्यण्हो, पुव्याण्हो < पूर्वाः

चाडू, चडू < चाडुः

पत्थरो, पत्थारो < प्रस्तारः

जह, जहा < यथा

अहव, अहवा < अथवा

चमरं, चामरं < चामरम्

ठविअं, ठाविअं < स्थापितम्

संठविअं, संठाविअं < संस्थापितम्

तलवेण्टं, तालवेण्टं < तालवृन्तम्

णराओ, णराओ < नारायः

कुमरो, कुमारो < कुमारः

बम्हणो, बाम्हणो < ब्राह्मणः

दवगगी, दावगगी < दवाग्निः

(४०) घण् को निमित्त मानकर जई आ रूप वृद्धि हुई हो, उस आदि आकार का विकल्प से अत्व होता है ।^२ जैसे—

पयहो, पयाहो < प्रवाहः

पअरो, पआरो < प्रकाः

पत्थवो, पत्थावो < प्रस्तार

अपवाद—कुछ घप्रन्त शब्दों में यह नियम लागू नहीं होता । जैसे—

राओ < रागः

(४१) मोस आदि शब्दों में अनुस्वार रहने पर आदि आकार का अत्व होता है ।^३ जैसे—

१. वाध्ययोखातादावदात. ७।१।६८. प्रव्ययेषु उत्खातादिषु च शब्देषु घादेराकारस्य भद्र वा भवति । हे० ।

२. पत्र् वृद्धेर्वा ८।१।६८ पत्र् निमित्तो यो वृद्धिरूप घावारस्तस्यादिभूतस्य घद् वा भवति । हे० ।

३. मासदिप्रनुस्वारे ८।१।७०. मामप्रवारेषु अनुस्वारे सति घादेरान्. घद् भवति । हे० ।

भंसं < भांसम्

पंसू < पांसुः

पंसणो < पांसनः

वंसं < वांसम्

वंसिओ < वांसिकः

वंसिओ < वांसिकः

संसिद्धिओ < सांसिद्धिकः

संजत्तिओ < सांयात्रिमः

(४२) श्यामाङ्ग में मकार के आकार को अत् होता है ।^१ यथा—

सामओ < श्यामाङ्गः

(४३) महाराष्ट्र शब्द में आदि के आकार को अत् होता है ।^२ यथा—

मरहट्टं, मरहट्टो < महाराष्ट्रः—यहाँ वर्ण विपर्यय भी हुआ है ।

(४४) सदा आदि शब्दों में विकल्प से आकार के स्थान पर इकार आदेश होता है ।^३ उदाहरण—

सद्, सआ < सदा—द्वितीय रूप विकल्पाभाव पक्ष का है ।

तद्, तआ < तदा—

” ”

जद्, जआ < जदा—य के स्थान पर ज होता है ।

णिसिअरो, णिसाअरो < निशाचरः—द्वितीय रूप विकल्पाभाव का है ।

(४५) यदि आर्या शब्द खधु (सास) के अर्थ में प्रयुक्त हो तो 'र्य' के पूर्ववर्ती आकार के स्थान में ऊ होता है ।^४ जैसे—

अज्जू < आर्या—सास के अर्थ में;

अज्जा < आर्या—श्लेष अर्थ में

(४६) आचार्य शब्द में चरारोत्तरवर्ती आकार के स्थान पर इत्व और अत्व होता है ।^५ यथा—

आइरिओ, आयरिओ < आचार्यः

(४७) स्थान और खल्वाट शब्द में आदि आकार के स्थान पर इकार आदेश होता है ।^६ जैसे—

ठीणं, थीणं, थिण्णं < स्थानम्—स्त के स्थान में थ और थ के स्थान में विकल्प हुआ है ।

खल्लीडो < खल्वाटः

१. श्यामाङ्ग मः ८।१।७१. श्यामाङ्ग मस्य आतः अद् भवति । हे० ।

२. महाराष्ट्रे ८।१।६६. महाराष्ट्रशब्दे आदेशाकारस्य अद् भवति । हे० ।

३. इ. सदादी वा ८।१।७२. सदादिषु शब्देषु आत इत्वं वा भवति । हे०

४. आर्याया य. अश्वाम् ८।१।७७. आर्याशब्दे अश्वत्रा वाच्याया र्यस्यात ऊर्भवति । हे० ।

५. आचार्ये चोच्च ८।१।७३. आचार्यशब्दे चस्य आत इत्व अत्वं च भवति । हे० ।

६. ईः स्थान खल्वाटे ८।१।७४. स्थानखल्वाटयोरादेशात् ईर्भवति । हे० ।

(४८) आसार शब्द में आदि आकार के स्थान पर विकल्प से ऊद् होता है ।^१ जैसे—

ऊसारो, आसारो < आसारः

(४९) द्वार शब्द में आकार के स्थान में विकल्प से एद् होता है ।^२ यथा—
देरं, दुवारं, वारं, वारं < द्वारम्—प्रथम को छोड़, शेष विकल्पाभाव पक्ष के रूप हैं ।

(५०) पारापत शब्द में रकारोत्तरवर्ती आकार के स्थान में एद् होता है ।^३
यथा—

पारेवओ, पारावओ < पारापतः

(५१) आर्द्र शब्द में आदि के आत् के स्थान पर विकल्प से उकार और ओकार होते हैं ।^४ यथा—

उल्लं, ओल्लं, अल्लं, अदं < आर्द्रम्—उत्तरवर्ती रूप विकल्पाभाव पक्ष के हैं ।

(५२) आली शब्द में पंक्तिवाची अर्थ होने पर आकार को ओकार होता है ।^५ जैसे—

ओली < आली, पंक्तिवाची अर्थ न होने पर आली-सखी ही रहता है ।

(५३) संयोग से अव्यवहित पूर्ववर्ती दीर्घ का कभी-कभी ह्रस्व रूप हो जाता है ।^६ यथा—

अंयं < आद्यम्

तंयं < त्राद्यम्

विरहृगी < विरहागिः

आसं < आस्यम्

मुनिदो < मुनीन्द्रः

तिर्यं < तीर्थम्

गुरुल्लाया < गुरुल्लाया

चुण्णो < चूर्णः

नरिंदो < नरेन्द्रः

मिलिन्धो < म्लेच्छः

अहरुद्दं < अघरोष्ठम्

नीलुप्पलं < नीलोत्पलम्

विशेष—संयोग नहीं रहने से आयासं, ईसरो, ऊपरो आदि शब्दों में उक्त नियम की प्रवृत्ति नहीं होती ।

१. ऊद्वासारो ङ।१।७६. आमारशब्दे आदेरात् ऊद् वा भवति । हे० ।

२. द्वारे वा ङ।१।७६. द्वारशब्दे आत् एद् वा भवति । हे० ।

३. पारापते रो वा ङ।१।८०. पारापतशब्दे रस्पत्यात् एद् वा भवति । हे० ।

४. उदोद्वाद्रं ङ।१।८२. आर्द्रशब्दे आदेरात् ऊद् घोष वा भवतः । हे० ।

५. ओदाल्यां पंकी ङ।१।८३. आलीशब्दे पंक्तिवाचिनि आत् ओत्वं भवति । हे० ।

६. ह्रस्वः संयोगे ङ।१।८४. दीर्घस्य यथादरानं संयोगे परे ह्रस्वो भवति । हे० ।

(५४) आदि इकार का संयोग के पर में रहने पर विकल्प से एकार होता है ।^१

यथा—

पेण्डं, पिण्डं < पिण्डम्—द्वितीय रूप विकल्पाभावात् पक्ष का है ।

णेदा, णिदा < निदा— " "

सेदूरं, सिदूरं < सिन्दूरम्— " "

घम्मेलं, घम्मिलं < घम्मिलम्— " "

वेण्हू, विण्हू < विण्णुः— " "

पेट्टं, पिट्टं < पिट्टम्— " "

चेण्हं, चिण्हं < चिहम्— " "

वेल्लं, विल्लं < विल्लम्— " "

विशेष—शौरसेनी में पिण्डादि शब्दों में एत्व नहीं होता । अतः पिण्डं, णिदा और घम्मिलं ये ही रूप पाये जाते हैं ।

(५५) पथि, पृथिवी, प्रतिश्रुत्, मूर्धिक, हरिद्रा और विभीतक में आदि इकार के स्थान पर अकार होता है ।^२ उदाहरण—

पथो < पथि

पुहई, पुढयी < पृथिवी—इ के स्थान पर ङ होने से पुढयी रूप बना है ।

पडंसुआ < प्रतिश्रुत्

मूसओ < मूर्धिक

हलही, हलहा < हरिद्रा—हरिद्रा शब्द में रेफ का ल होता है ।

बहेहओ < विभीतकः—'वि' की ई के स्थान पर अ हुआ है ।

विशेष—कुछ वैयाकरणों के मत में हरिद्रा शब्द में ईकार के स्थान पर अकार नहीं होता है । अतः हलिही, हलिहा ये रूप बनते हैं ।

(५६) बदर शब्द में दकार सहित अकार के स्थान पर ओकार होता है ।^३ यथा—

बोरं < बदरम्—बदरोत्तर अकार और दकार के स्थान पर ओकार हुआ है ।

(५७) लवण और नवमल्लिका शब्द में वकार सहित आदि अकार को ओकार होता है^४ । यथा—

लोणं < लवणं

णोमल्लिआ < नवमल्लिका

१. इत् एदा ८।१।८५. भादेरिक्कारस्य संयोगे परे एकारो वा भवति । हे० ।

२. पथि-पृथिवी-प्रतिश्रुत्-मूर्धिक-हरिद्रा विभीतकेष्वत् ८।१।८८ । हे० ।

३. ओ बदरे देन १।६. वर० ।

४. लवणनवमल्लिकयोर्वेन १।७. वर० ।

(५८) मयूर और मयूख शब्द में 'यू' के सहित आदि वर्णस्थ अकार को विकल्प से ओकार होता है।^१ उदाहरण—

मोरो, मऊरो < मयूरः—यू सहित मऊरोत्तर अकार को ओकार हुआ है। विकल्पामात्र पक्ष में यकार का लोप होने से मऊरो बना है।

मोहो, मऊहो < मयूखः—

(५९) चतुर्थी और चतुर्दशी शब्द में 'तु' के सहित आदि अकार को विकल्प से ओकार होता है।^२ यथा—

चोत्थी, चउत्थी < चतुर्थी—तु सहित चकारोत्तर अकार को ओ हुआ है और रेफ का लोप होने से थ को द्वित्व तथा पूर्ववर्ती थ् को त् हुआ है।

चोदसी, चउदशी < चतुर्दशी—तु सहित चकारोत्तर अकार को ओ हुआ है और रेफ का लोप होने से द को द्वित्व हुआ है।

(६०) इक्षु और वृश्चिक शब्द के इकार को उकार होता है।^३ यथा—उच्छु < इक्षुः—क्ष के स्थान पर छादेश, छ को द्वित्व, पूर्ववर्ती छ् को च् किया है तथा इस सूत्र से इकार को उकार हुआ है।

विच्छुओ < वृश्चिकः—फकार को इकार, श्र के स्थान पर च्छ और इकार के स्थान पर उकार हुआ है।

(६१) जम इति शब्द जिनो वाक्य के आदि में प्रयुक्त होता है, तब सकारवाले इकार का अकार हो जाता है।^४ जैसे—

इअ जं, पिआयसाणे < इति यावत् पिपायमाने—इति के स्थान पर इअ हुआ है।

इअ विअसिअ कुसुमसरो < इति विकसितसुसुमशाः—

इअ उअइ अण्णह धअणं < इति परदत्तण्णया वचनम्—

विशेष—इति शब्द के वाक्यादि में प्रयुक्त नहीं रहने पर अत्र नहीं होता। जैसे—

पिओसि < पिय इति—पाय के आदि में इति शब्द के न घामे में इअ नहीं हुआ, वरिष्ठ इ का लोप होकर त् को शिखर हो गया है।

पुरिमोसि < पुरय इति—

(६०) जहाँ निरू के रेफ का लोप होता है, वहाँ नि के इकार का ईकार हो जाता है।^५ जैसे—

१. मयूरमयूखयोर्ण्यो वा १।८. पर० ।

२. चतुर्थी चतुर्दशयोगुना १।६. पर० ।

३. अक्षुवृश्चिकयोः १।६३. पर० ।

४. इति लो वाक्यादी ८।१।६१ । हे० ।

५. पुरि निरः ८।१।६१. निरू लज्जाम्ब रेणोते सति इत् ईकारो भवति । हे० ।

णीसहो < निस्सहः—निर् के र् का छोप होने से नि. गि को दीर्घ हो गया है ।

णीसासो < निःश्वास —

विशेष—रेफ का छोप नहीं होने पर ईकार नहीं होता । जैसे—

णिरओ < निरयः—रेफ का छोप न होने से गि को दीर्घ नहीं हुआ है ।

णिरसहो < निस्सह —

(६३) द्विशब्द और नि उपसर्ग के इकार का उ आदेश होता है । कहीं-कहीं यह नियम लागू भी नहीं होता और कहीं विकल्प से उरव और ओत्व होता है । उदाहरण—

दुवाई, दुवे < द्वौ—द्वि शब्द में निर्य उत्व हुआ है ।

दुवअणं < द्विवचनम्—

दुअणो, दिउणो < द्विगुणः—विकल्प से उरव होने पर दुअणो और

विकल्पाभाव पक्ष में दिउणो ।

दुइओ, दिउओ < द्वितीयः—विकल्पाभाव पक्ष में दिउओ बनता है ।

दिओ < द्विजः—द्विशब्द के विषय में नियम की अप्रवृत्ति ।

दिरओ < द्विरद.—

दोवअणम् < द्विवचनम्—द्वि शब्द को ओत्व हुआ है ।

णुमज्जइ < निमज्जति—भि उपसर्ग के इकार को उरव ।

णुमण्णो < निमणन —

णिउइइ < निपतति—नि उपसर्ग के विषय में नियम की अप्रवृत्ति ।

(६४) कृन् धातु के प्रयोग में द्विधा शब्द के इकार का ओत्व और उरव होता है ।^१ जैसे—

दोहाकअं < द्विधा कृतम्—ओकार हुआ है ।

दुहाकअं < द्विधा कृतम्—उकार हुआ है ।

दोहा किज्जइ < द्विधा क्रियते—ओकार हुआ है ।

दुहा-किज्जइ < द्विधा क्रियते—उकार हुआ है ।

विशेष—कृन् का प्रयोग नहीं रहने से दिहा-गमं < द्विधागतम् में यह नियम लागू नहीं होता । कहीं-कहीं केवल (कृन् रहित) द्विधा में भी उरव पाया जाता है । यथा—

१. द्विग्योत्त्वं ८।१।६४. द्विशब्दे नावुपसर्गं च इत्त उद भवति । हे० ।

२. सौन्ध द्विधाकृन्ः ८।१।६७. द्विपाशब्दे कृन्पातो. प्रयोगे इत्त ओत्वं चकाराकुत्वं च भवति । हे० ।

दुहा त्रि सो सुर-बहु-सत्थो = द्विधापि स सुरबभूवार्थः ;

(६५) पानीय गण के शब्दों में दीर्घ ईकार के स्थान में ह्रस्व इकार होता है । जैसे—

पाणिअं < पानीयम्—बहुल अधिकार होने से पाणीअं भी होता है ।

अलिअं < अलीकम्—	”	”	अलीअं भी होता है
जिअइ < जीवति—	”	”	जीअइ ”
जिअउ < जीवतु—	”	”	जीअउ ”
विलिअं < वीडितम्—	”	”	विलीअं ”
करिसो < करीपः	”	”	करीसो ”
सिरिसो < शिरीपः—	”	”	सिरीसो ”
दुइअं < द्वितीयम्—	”	”	दुईअं ”
तइअं < तृतीयम्—	”	”	तईअं ”
गहिरं < गभीरम्—	”	”	गहीरं ”
उवणिअं < उपनीतम्—	”	”	उवणीअं ”
आणिअं < आनीतम्—	”	”	आणीअं ”
पलिविअं < प्रदीपितम्—	”	”	पलीविअं ”
ओसिअन्तो < अवसीदन्—	”	”	ओसीअन्तो ”
पसिअ < प्रसीद	”	”	पसीअ ”
गहिअं < गृहीतम्—	”	”	गहीअं ”
वन्मिओ < वल्मीकः—	”	”	वन्मीओ ”
तयाणि < तदानीम्	”	”	तयाणी ”

१. पानीयादिष्वित् ८।१।१०१. पानीयादिषु शब्देषु ईत् इद् भवति । हे० ।

‘कल्पलतिका’ के अनुसार पानीयगण में निम्नलिखित शब्द हैं—

पानीयत्रीडितालीवद्वितीयं च तृतीयकम् ।

यथागृहीतमानोतं गम्भीरञ्च करोपवत् ॥

इदानी च तदानीं च पानीयादिगणो यथा ।

‘प्राकृत मञ्जरी’ के अनुसार—पानीयत्रीडितालीवद्वितीयकरोपवत् ।

गम्भीरञ्च तदानीञ्च पानीयादिरयं गणः ॥

‘प्राकृत प्रकाश’ में उपनीत, आनीत, जीवति, जीवतु, प्रदीपित, प्रसीद, शिरोप, गृहीत, वल्मीक और अवसीदन् शब्दों का उल्लेख नहीं है ।

(४६) जीर्ण शब्द में, ईकार और उकार दोनों होते हैं ।^१ यथा—
जुण्णो, जिण्णो < जीर्णः

(६७) हीन और विहीन शब्दों में ईकार और ऊकार होते हैं ।^२ जैसे—
हूणो, हीणो < हीन ; विहूणो, विहीणो < विहीनः

(६८) तीर्थ शब्द के ईकार का ऊकार तत्र होना है, जब कि उसके आगे का र्थ ह हो गया हो ।^३ यथा—

तूर्ह < तीर्थम्—र्थ के स्थान में ह हुआ है और ईकार को ऊकार ।

तित्थं < तीर्थम्—र्थ के स्थान में ह नहीं होने से ऊकार का अभाव है ।

(६९) पीयूष, आपीड, विभीतरु, कीदृश और ईदृश शब्दों में ईकार को एकार होता है ।^४ जैसे—

पेऊसं < पीयूषम्

आमेळो < आपीडः—एकार को मकार और ईकार को एकार तथा ङ को ल ।

बहेडओ < विभीतरु—

केरिसो < कीदृशः

एरिसो < ईदृश.

(७०) नीड और पीठ शब्दों में ईकार को विकल्प से एत्व होता है ।^५ जैसे—

नेडं, नीडं < नीडम्

पेठं, पीठं < पीठम्—उ को ङ हुआ है ।

(७१) मुकुटादिगण के शब्दों में आदि उकार के स्थान में अकार आदेश होता है ।^६ जैसे—

मउलं < मुकुटम्—क का लोप होकर उकार जय है ।

गरुइ < गुर्वी—व् के स्थान पर उ हुआ है और र् तथा इ पृथक् हो गये हैं ।

मउडं < मुकुटम्—का का लोप और ट के स्थान पर ङ हुआ है ।

जहुट्टिलो, जहिट्टिलो < युधिष्ठिर—य के स्थान पर ज, इकार के स्थान पर उत्व ।

१. उजीर्णं ८।१।१०२. जीर्णशब्दे इत उद् भवति । हे० ।

२. ३ ऊर्हीन-विहीने वा ८।१।१०३. अनयोरीत ऊत्वं वा भवति । हे० ।

३. तीर्थं हे ८।१।१०४. तीर्थशब्दे हे सति इत उत्प भवति । हे० ।

४. एपीयूषापीड विभीतरु-कीदृशेशे ८।१।१०५. एषु इत एत्वं भवति । हे० ।

५. नीड-पीठे वा ८।१।१०६. अनयोरीत एत्व वा भवति । हे० ।

६. उतो मुकुटादिष्वत् ८।१।१०७. मुकुल इत्येवमादिषु शब्देषु आदेशतोत्वं भवति । हे० ।

मुकुटं मुकुल गुर्वी मुकुमारो युधिष्ठिर ।

अणुपरि शब्दौ च भुकुदादिरयं गणः । प्राट् तमंजरी ।

प्राकृत प्रकाश मे इसे मुकुटादिगण कहा है ।

सोअमल्लं < सौजुमार्यम्—र्य के स्थान पर ल, लकार का द्वित्व, फ का लोप और शेष उकार के स्थान पर अ ।

गलोई < गुडुधी—गकारोत्तरवर्ती उकार के स्थान पर अ, ड के स्थान पर ल, उकार का ओ और घ्र का लोप ।

विरोप—फर्हीं-कहीं प्रथम उकार का आकार भी होता है । यथा—

विद्दओ < विद्रुतः—द्रु में से रेफ का लोप और द को द्वित्व तथा उकार को वा हुआ है ।

(७२) यदि गुरु शब्द के आगे स्वार्थ में क प्रत्यय किया गया हो, तो उस गुरु शब्द के आदि उकार को विकल्प से अ आदेश होता है ।^१ जैसे—

गरुओ, गुरुओ < गुरुकः

स्वार्थिक क के अभाव में गरुओ (गुरुकः) होता है ।

(७३) भ्रुकुटी शब्द में उकार के स्थान पर हकार होता है ।^२ जैसे—

भित्ठि < भ्रुकुटी—भ्रु के रेफ का लोप और उकार के स्थान पर इत्व, क का लोप तथा ट के स्थान पर ड ।

(७४) पुरुष शब्द में रु के उकार को इत्व होता है ।^३ जैसे—

पुरिसो < पुरुषः—रु के स्थान पर रि हुआ है ।

पउरिसं < पौरपम्—पौ के स्थान पर प+उ, र के स्थान पर रि ।

(७५) क्षुत शब्द में आदि के उकार को इत्व होता है ।^४ यथा—

छीअं < क्षुतम्—क्षु के स्थान पर छी और त का लोप ।

(७६) सुभग और सुमल शब्दों में उकार को विकल्प से उरत्व होता है ।^५ यथा—
सूहओ, सुहओ < सुभग—सु के स्थान पर सू, भ के स्थान पर ह और ग का लोप ।

मूसलं, मुसलं < मुपम्—विश्वपाभाय पक्ष में मुसलं ।

(७७) उस्ताह और उच्छन्न शब्दों को छोड़कर इसी प्रकार के अन्य शब्दों में स्स और च्च के पर में रहने पर पूर के आदि उकार का दीर्घ उच्चार होता है ।^६ जैसे—

१. पुरी के वा ८।१।१०६. । हे० ।

२. भ्रुकुटी ८।१।११०. । हे० ।

३. पुरपे रोः ८।१।१११. । हे० ।

४. ईः दाते ८।१।११२. । हे० ।

५. उच्छुन्न मुसले वा ८।१।११३. । हे० ।

६. पनुगाशोयन्ने स्सच्ये ८।१।११४. । हे० ।

ऊसुओ < उत्सुरुः—उ के स्थान पर ऊ, त् का लोप तथा क का लोप और विसर्ग को ओत्व ।

ऊसुवो < उत्सवः— " " ष का लोप और विसर्ग को ओत्व ।

ऊसित्तो < उत्सित्तः—उ के स्थान पर ऊ त् का लोप और संयुक्त ष में से फ् का लोप तथा अवगोप त् को द्वित्व ।

ऊच्छुओ < उच्छुकः—उ के स्थान में ऊत्त और क का लोप, विसर्ग को ओत्व ।

विशेष—उच्छ्राहो < उत्साह—यहाँ दीर्घ ऊकार नहीं हुआ है ।

उच्छरणो < उच्छरन्— " " "

(७८) दुर् उपसर्ग के रेफ का लोप हो जाने पर ह्रस्व उ का दीर्घ ऊ विकल्प से होता है । जैसे—

दूसहो, दूसभो < दुस्सहः—दूसरा रूप विकल्पाभाव पक्ष का है ।

दूहभो, दुहभो < दुर्भगः— " "

(७९) संयुक्त अधरो के पर में रहने पर पूर्ववर्ती प्रथम उकार का ओकार होता है । जैसे—

तोण्डं < तुण्डम्—उकार के स्थान पर ओकार हुआ है ।

मोण्डं < मुण्डम्— " " "

पोकररं < पुकरम्—पु में रहनेवाले उकार के स्थान पर ओकार तथा फ् के स्थान पर व्छ ।

कोट्टिमं < कुट्टिमम्—उकार के स्थान पर ओकार ।

पोत्थरं < पुत्थरम्—उकार के स्थान पर ओकार तथा स्त के स्थान पर थ और क का लोप, घोष अ ।

लोद्धओ < लुद्धरुः—उकार के स्थान पर ओत्व, घ् का लोप और घ को द्वित्व ।

मोत्ता < मुत्ता—उकार के स्थान पर ओकार, संयुक्त क् का लोप और त् को द्वित्व ।

६. लुकिं दुरो वा ८।१।११५. । हे० ।

१. श्रोत्संयोगे ८।१।११५. हे०

तुरहादिगण्य के शब्द—

तुण्डकुट्टिमकुदालमुक्तामुद्गरत्रुध्वनाः ।

पुस्तकज्जैवमन्येऽपि कुग्मीकुन्तलपुणराः ॥ वल्पनतिका

सिट्टुं < सृष्टम्—सृ की ऋ के स्थान पर इ तथा संयुक्त सकार का लोप, ट को द्वित्व ।

पिथी < पृथ्वी—पृ की ऋ के स्थान पर इ तथा थ्री के स्थान पर थ्यी ।

समिद्धी < समृद्धिः—सृ की ऋ के स्थान पर इकार और ह्रस्व को दीर्घ ।

क्रियो < कृपः—कृ की ऋ के स्थान पर इ और प का व ।

उक्किट्टुं < उत्कृष्टम्—कृ की ऋ के स्थान पर उत्व, त् का लोप और क् को द्वित्व, प् का लोप तथा ट को द्वित्व ।

विकल्प से इत्य—

विसो, घसो < वृषः

किण्हो, कण्हो < कृणः

महिषिट्टुं < महीषुष्टम्—यहाँ उत्तरपद रहने से षुष्ट शब्द में विकल्प से इत्य नहीं हुआ ।

(८२) ऋतु प्रभृति शब्दों में आदि ऋकार को उकार होता है । उदाहरण^१—

उदू < ऋतुः—ऋकार के स्थान पर उ और त के स्थान पर द ।

पउत्ती < प्रवृत्तिः—प्र के स्थान पर प, व का लोप और ऋ के स्थान पर उ तथा ति को दीर्घ ।

परामुट्टो < परामृष्टः—सृ की ऋ के स्थान पर उकार, प् का लोप, ट को द्वित्व और द्वितीय ट को ठ ।

पाउसो < प्रावृष्ट—प्र का प, व का लोप, ऋ के स्थान पर उ और ट् को स

परहुओ < परभृतः—भृ की ऋ के स्थान पर उत्व, भ के स्थान पर ह ।

णिञ्जुअं, णिञ्जुदं < निञ्जुत्तम्—रेफ का लोप, व को द्वित्व, ऋ के स्थान पर उ, त का लोप और स्वरक्षेप ।

उसहो < ऋषभः—ऋ के स्थान पर उ और भ के स्थान पर ह ।

भाउओ < भ्रावृः—भ्रा में से रेफ का लोप, सृ में त का लोप, ऋ के स्थान पर उ ।

पहुदि < प्रभृति—प्र का प, भृ के स्थान पर हु और त के स्थान पर द ।

संवुदं < संवृत्तम्—वृ की ऋ के स्थान पर उ तथा त को द ।

बुद्धो < वृद्धः—वृ की ऋ के स्थान पर उ तथा दन्तवर्णों को मूर्धन्य ।

मुडालं < मृणालम्—सृ की ऋ के स्थान पर उ तथा ण के स्थान पर ड ।

पाहुडं < प्रावृत्तम्—प्र के स्थान पर प, भ के स्थान पर ह और त के स्थान पर द ।

१. उदत्वादी ८।१।१३१. ऋतु दर्यादिषु शब्देषु धादेः उ उद् भवति । हे० ।

पुहृं < पृष्टम्—पृ की ऋ के स्थान पर उ, घृ का लोप, ट को द्वित्व तथा द्वितीय
ट को ठ ।

पुहृइ, पुहृवी < पृथिवी—पृ की ऋ के स्थान पर उ और थ के स्थान पर ह ।

पाउअं < प्रावृत्तम्—प्रा के स्थान पर पा, वृ के व का लोप, ऋ के स्थान पर
उ, त का लोप तथा विमर्ग को भोत्व ।

भुई < भृति—भृ की ऋ के स्थान पर उ तथा तकार का लोप ।

पिउअं < विवृत्तम्—वृ के व का लोप, इसी के ऋ के स्थान पर उत्व ।

वुंदावणं < वृन्दावनम्—वृ के ऋ के स्थान पर उत्व ।

जामाउओ, जामादुओ < जामावृकः—वृ के तकार का लोप, ऋ के स्थान पर
उ और क का लोप तथा स्वरशेष ।

पिउओ < पितृकः—वृ के त का लोप, ऋ के स्थान पर उ और क का लोप,
तथा भोत्व ।

णिहुअं, णिहुवं < निभृत्तम्—भृ में भ के स्थान पर ह और ऋ के स्थान पर उ ।

णिवृउइ < निवृत्ति—वृ में से रेफ का लोप, ऋ को उत्व तथा व को द्वित्व ।

बुड्डी < वृद्धि—वृ के ऋ के स्थान पर उत्व और दन्त्य वर्णों को मूर्धन्य ।

माउआ < मावृका—वृ के त का लोप, ऋ के स्थान पर उ और क का लोप,
स्वरशेष ।

णिउअं < निवृत्तम् = वृ के व का लोप, ऋ का उत्व तथा त का लोप, स्वरशेष ।

वुत्तान्तो < वृत्तान्त—ऋ का उत्व ।

उजू < ऊजुः—ऋ का उत्व ।

पुहुवी < पृथिवी—पृ में ऋ के स्थान पर उत्व, थ का को ह आदेश ।

वुंदं < वृन्दम्—वृ के ऋ के स्थान पर उत्व ।

माऊ, मादु < मावृ—वृ में से तकार का लोप, ऋ के स्थान पर उत्व । तकार
का लोप न होने पर द ।

(८३) निवृत्त और वृन्दारक शब्द में ऋ के स्थान पर विकल्प से उत्व होता
है । यथा—

निवृत्तं, निअत्तं < निवृत्तम्—विकल्पाभाव पक्ष में ऋ के स्थान पर अ हुआ है ।

वृन्दारया, वन्दारया < वृन्दारका—

(८४) वृषभ शब्द में ऋ के स्थान पर विकल्प से वकार सहित उत्व होता
है । यथा—

उसहो, घसहो = वृषभः—विकल्पाभाव पक्ष में ऋ के स्थान में अ हुआ है ।

(८५) समास आदि में जो पद प्रधान न होकर गौण होता है, उसके अन्तिम ऋ के स्थान में उकार आदेश होता है ।^१ जैसे—

माउमंडलं, मादुमंडलं < मातृमण्डलम्—तकार का लोप न होने पर त का द हुआ है और ऋ के स्थान पर उकार ।

माउहरं, मादुहरं < मातृपृहम्
पाउघणं < पितृवनम् तकार का लोप और ञ के स्थान पर उकार ।

(८६) गौण—अप्रधान मातृशब्द के ऋकार को विकल्प से इकार होता है ।^२ जैसे—

माइ-हरं, माउ-हरं < मातृपृहम्

माइ-मंडलं, माउ-मंडलं, मादु-मंडलं < मातृमंडलम्

(८७) मृपा शब्द में ऋकार के स्थान पर उत्, ऊत् और ओत् होते हैं ।^३ जैसे—

मुसा, मूसा, मोसा < मृपा

मुसा-याओ, मूसा-याओ, मोसा-याओ < मृपायादः

(८८) वृष्ट, वृष्टि, पृथक्, मृदन् और नसृक शब्दों में ऋकार के स्थान पर इकार और उकार होते हैं ।^४ जैसे—

विट्टो, चुट्टो < वृष्टः

विट्टी, चुट्टी < वृष्टिः

पिहं, पुहं < पृथक्

मिइंगो, मुइंगो < मृदन्

नत्तिओ, नत्तुओ < नसृकः

(८९) वृहस्पति शब्द में ऋकार के स्थान पर विकल्प से इकार और उकार होते हैं ।^५ जैसे—

विहृपफई, चुहृपफई, यहृपफई < वृहस्पतिः

(९०) वृन्त शब्द में ऋकार के स्थान पर इत् एत् और ओत् होते हैं ।^६ जैसे—

विण्टं, वेण्टं, वोण्टं < वृन्तम्

(९१) व्यञ्जन के सम्पर्क रहित—केवल ऋ के स्थान पर रि आदेश होता है ।

यह वहाँ निरूप से और वहाँ निरूप होता है ।^७ जैसे—

रिद्धी < ऋद्धिः

रिणं < ऋणम्

रिञ्जू, उञ्जू < ऋञ्जः

रिसहो, उसहो < वृषभः

१. नीलान्तस्य ८।१।१३४. । हे० ।

२. गातुद्धि ८।१।१३५. । हे० ।

३. उतूदोत्तुपि ८।१।१३६. । हे० ।

४. ददुती वृट्-पृष्टि-पृथक्-मृदन्-नसृके ८।१।१३७. । हे० ।

५. वा वृत्ततौ ८।१।१३८. । हे० ।

६. ददेदोदवृन्ते ८।१।१३९. । हे० ।

७. रिः वेत्तस्य ८।१।१४०. । हे० ।

रिऊ, उदू < क्रतुः रिसो, इसी = कपि.

रिद्धी < क्रद्धिः

(९२) जिस दृश् धातु के आगे कृत्, क्विप्, स्क् और सक् प्रत्यय आये हों, उसके ऋ का रि आदेश होता है।^१ जैसे—

एआरिसो < एतादृशः—तू का लोप स्वर रोप, दू का लोप और ऋ के स्थान पर 'रि' ।

तारिसो < तादृशः—ट में से दू का लोप और ऋ के स्थान पर रि ।

सरिसो < सदृशः— ,, ,,

सरिच्छो < सदृक्षः ,, ,, क्ष के स्थान पर छ ।

भवारिसो < भवादृशः— दू का लोप और ऋ के स्थान पर रि ।

जारिसो < यादृशः— ,, ,,

केरिसो < कीदृशः—की के स्थान पर के और दू का लोप, ऋ के स्थान पर रि ।

अम्हारिच्छो < अस्मादृक्षः—दू का लोप, ऋ के स्थान पर 'रि', क्ष के स्थान पर छ ।

अन्नारिसो < अन्यादृशः—न्या के स्थान पर न्ना, दू का लोप, ऋ के स्थान पर 'रि' ।

अम्हारिसो < अस्मादृशः—स्मा के स्थान पर म्हा, दू का लोप, ऋ के स्थान पर रि ।

तुम्हारिसो < तुष्मादृशः—ष्मा के स्थान पर म्हा, दू का लोप, ऋ के स्थान पर रि ।

विरोप—शौरसेनी में उक्त शब्दों के रूप निम्नप्रकार होते हैं ।

जादिसं < यादृशम् तादिसं < तादृशम्

पैशाची में—जातिसं < यादृशम् तानिसं < तादृशम्

अपभ्रंश में—जइसं < यादृशम् तइसं < तादृशम्

(९३) किसी भी शब्द में आदि ऐकार का एकार होता है।^२ यथा—

सेणो = शैणः—श के स्थान पर स और ऐकार को एकार ।

तेह्लुकं, तेह्लोकं < त्रैलोक्यम्—^३ में से रू का लोप, ऐकार को एकार, च् का लोप और क को द्वित्व ।

सेच्चं < शैतपम्—पेकार का एकार, त्य के स्थान पर च ।

एरावणो < ऐरावत —पेकार का एकार और त के स्थान पर ण ।

१. दृशः क्विप्-टक्त्तकः वा१।१४२. । हे० ।

२. ऐत् एत् वा१।१४२. । हे० ।

केलासो < कैलाशः—ऐकार का एकार ।

केढवो < कैतवः—ऐकार का एकार और त के स्थान पर ढ ।

वेहृव्यं < वैहृव्यम्—ऐकार का एकार, ध के स्थान पर ह, और य लोप तथा व् को द्वित्व ।

(१४) दैत्यादि गण में ऐ के स्थान में अइ आदेश होता है । यह नियम ए का अपवाद है । जैसे—

दइधं < दैत्यम्—ऐ के स्थान पर अइ, त्य के स्थान पर ण ।

दइण्णं < दैन्यम्— " " , न्य के स्थान पर ण्ण ।

अइसरिअं < ऐश्वर्यम्— " " , व का लोप और र्यम् का रिअं ।

भइरवो < औरवः—ऐकार का एकार

दइधअं < दैवतम्—ऐकार का एकार, त लोप ओर स्वरशेष ।

वइआलीओ < वैतालिकः—ऐकार का एकार, ल लोप, स्वर शेष तथा क लोप और स्वर शेष ।

वइएसो < वैदेशः—ऐकार का अइ, द लोप और स्वर शेष ।

वइएहो < वैदेह— " "

वइअवभो < वैदर्भः—ऐकार का अइ, द लोप, स्वर शेष, रेफलोप और भ को द्वित्व, पूर्ववर्ती भ को व ।

वइस्साणरो < वैश्वानरः—ऐकार का अइ, व लोप, स को द्वित्व, न को ण ।

कइअयं < कैतरम्—ऐकार का अइ, त लोप, स्वर शेष ।

वइसाहो < वैशाखः—ऐकार का अइ, ख के स्थान में ह ।

वइसालो < वैरागल—ऐकार का अइ ।

(१५) वैरादिगण में ऐकार के स्थान में विकल्प से अइ आदेश होता है । यथा—

वइरं, वेरं < वैरम्—ऐकार के स्थान पर अइ, विरल्याभाव में ए ।

कइलासो, केलासो < कैलाशः— " "

कइरयं, केरयं < कैरवम्— " "

१. अइदैत्यादी च ८।१।१५१. हे० । दैत्यादि गण के शब्द—

दैत्यादी वैश्यवैशाखवैशाम्पायनवैववाः ।

स्वैरवैदेवैदेशवैपयिता मपि ।

दैत्यादिष्वपि विज्ञेयास्तथा वैदेशिनादयः ॥—मल्लतिलपा

२. वैरादी वा ८।१।१५२. हे० । वैरादिगण के शब्द—

दैत्यः स्वैरं वैश्यं वैटभवंदेहवो च वैशाख ।

वैशिाभैरववैशाम्पायनवैदेशिवारच दैत्यादि ॥—प्राकृत मंत्ररी ।

वइसवणो, वेसवणो < वैश्रवणः—रेरार के स्थान पर अइ, श्र के र का लोप, वभाव पत्र में प ।

वइसंपाअणो, वेसंपाअणो < वैशम्पायनः— ,, ,, य लोप और स्वरभेप ।

वइआलिओ वेआलिओ < वैतालिः — ,, ,, क का लोप और स्वरभेप ।

वइसिओ, वेसिओ < वैशिकः—

” ” ”

चइत्तो, चेत्तो = चैत्र —

” ” च के र का लोप और त्त को

द्वित्व ।

(९६) शब्द के आदि अक्षर को ओरार आदेश होता है ।^१ जैसे—

कोमुई < कौमुदी—औ के स्थान पर ओकार, व लोप और स्वरभेप ।

जोठरणं < जौवनम्—य के स्थान पर ज, औ का ओ और व को द्वित्व ।

कोत्थुहो < कौस्तुभः—औरार का ओ, स्तु के स्थान पर थु और भ के स्थान पर ह ।

सोहगं < सौभाग्यम्—औकार का ओ, भ के स्थान पर ह, य् लोप और ग को द्वित्व ।

दोहगं < दौभाग्यम्—

” ” ”

गोदमो < गौतमः—औरार का ओ और त का द ।

कोसवी < कौशाम्बी—औरार का ओ हुआ है ।

कोचो < कौच —

” ”

कोसिओ < कौशिकः— ,, और क का लोप तथा स्वर भेप ।

(९७) सौन्दर्यादिपत्र के शब्दों में औ के स्थान पर उत् आदेश होता है ।^२
यथा—

सुन्दरं, सुन्दरिअं < सौन्दर्यम्—औ के स्थान पर उ होने से ।

सुडो < सौण्डः—औ के स्थान पर उत् आदेश ।

दुवारिओ < दौवारिकः—औ के स्थान पर उत् और क का लोप, स्वर भेप ।

मुंजायणो < मौञ्जायन —औ के स्थान पर उत् आदेश ।

सुगंधचर्णं < सौगन्धपम्—औ के स्थान पर उत् आदेश ।

पुलोमी < पौलोमी—

” ”

सुवणिगओ < सौवर्णिकः—

” ”

१. श्रौत श्रौत ८।१।१५६. । हे० ।

२. उत्सौन्दर्यादी ८।१।१६०. हे० ।

(९८) कौशेयक और पौरादिगण के शब्दों में ओ के स्थान पर अउ आदेश होता है ।^१ यथा—

कउक्खेअओ, कुक्खेअओ < कौशेयकः ।

पउरो < पौरः

कउरयो < कौरवः

पउरिसं < पौरुषम्

सउहं < सौधम्

गउडो < गौडः

मउली < मौलिः

मउणं < मौनम्

सउरा < सौराः

कउला < कौला

(९९) अव और अप उपसर्गों के आदि स्वर का आगेवाले सस्वर व्यंजन के साथ विकल्प से ओत् होता है ।^२ जैसे—

ओआसो, अवआसो < अवकासः—अव के स्थान पर ओ और क का श्लेष, स्वर श्लेष ।

ओसरइ, अवसरइ < अपसरति—अप के स्थान पर ओ, त का श्लेष और स्वर श्लेष ।

ओहणं, अअहणं < अपघनम्—अप के स्थान पर ओ तथा घ के स्थान पर ङ ।

विशेष—निम्न रूपों में यह नियम लागू नहीं होता—

अवगअं < अपगतम्—प के स्थान पर व ।

अवसदो < अपसदः— " " "

(१००) आगेवाले सस्वर व्यंजन के साथ उप के आदि स्वर के स्थान में विास्व से ऊत् और ओत् आदेश होते हैं ।^३ जैसे—

ऊहसिअं, ओहसिअं < उउसितम्—उप के स्थान पर ऊ और ओ हुआ है ।

ऊआसो, ओआसो < उपवासः—उप के स्थान पर ऊ और ओ, व का श्लेष और स्वर श्लेष ।

इन सामान्य स्वरविकृति नियमों के पश्चात् व्यञ्जनविकृति के नियमों का निर्देश किया जाता है—

(१०१) स्वर से पर में रहनेवाले अनादिभूत तथा दूसरे क्रियो व्यञ्जन तो

१. ऋउः पौरादी ष ८।१।१६२. ६० ।

सौन्दर्यादिगण के शब्द—

सौन्दर्यं शौण्डिहो दीरात्तिः शौण्डोत्प्लिरम् ।

कौशेयः पौरुषः पौमोमि मौण्डोत्पापिवात्स्यः ॥ —रत्नप्रतिष्ठा ।

पौरादिगण के शब्द—

पीरपीरपरीरानि, मौण्डःपीरितीरवाः ।

शौण्ड्यं मौन्दिपीरियं, पीरुत्प्लिरा मवा । —रत्नप्रतिष्ठा ।

२. ऋउोते ८।१।१७२. ६० ।

३. ऊओो ८।१।१७३. ६० ।

संयोगरहित क, ग, च, ज, त, द, प, य और व वर्णों का प्रायः लोप होता है ।
उदाहरण—

क लोप—

लोओ < लोऋः—क का लोप, स्वर शेष और विपर्ग को ओत्तर ।

सअढं < शकृट्म्—क का लोप, स्वर शेष और ङ के स्थान पर ढ ।

मउलं < मुकुलं—मु के उ के स्थान पर अ, क का लोप और उ स्वर शेष ।

णउलो < नकुलः—न का ण और क का लोप, स्वरशेष ।

णोआ < नौका—न का ण और औ का ओ तथा क का लोप, स्वरशेष ।

तिरथयरो < तीर्थकरः—ती को ह्रस्व, रेक का लोप, थ का द्विश्व, क लोप और स्वरशेष, य भृति ।

ग लोप—

णओ < नगः—ग लोप, स्वरशेष ।

णअरं, नयरं, णयरं < नगरम्—ग लोप और शेष स्वर के स्थान में य भृति ।

मयंको < मृगाङ्गः—मृ का म, ग का लोप और शेष स्वर को य भृति ।

साअरो, सायरो < सागरः—ग लोप और शेष स्वर को य भृति ।

भाइरही < भागीरथी—ग लोप, स्वर शेष और थ के स्थान पर ह ।

च लोप—

सई < शची—श को स और चकार का लोप, स्वर शेष ।

कअग्गहो, कयग्गहो < कवग्गुः—च लोप, शेष स्वर को य भृति ।

सुई < सूची—च लोप और स्वर शेष ।

रोअदि < रोचते—च लोप और स्वर शेष ।

उइदं < उचितम्—च लोप और स्वर शेष, त को द ।

सूअअं < सूचम् ।

ज लोप—

रअओ < रजक —ज और क दोनों का लोप और स्वर शेष ।

पआवई < प्रजापतिः—ज लोप, स्वर शेष और प के स्थान पर व ।

गओ < गजः—ज लोप और स्वर शेष ।

रअढं < रजतम्—ज का लोप, स्वर शेष और त के स्थान पर ढ ।

त लोप—

विआणं < वितानम्—त लोप और स्वर शेष ।

क्रिअं < कृतम्—कृ में रहनेवाली क के स्थान पर अ और त लोप, स्वर शेष ।

रसाअलं < रसातलम्—त लोप और स्वर शेष ।

रअणं, रयणं < रतनम्—त लोप और स्वर शेष, स्वर शेष के स्थान में य श्रुति।

द लोप—

जइ < यदि—य को ज और द लोप।

नई < नदी—द लोप और स्वर शेष।

गआ < गदा— „ „

मअणो < मदतः— „ „

वअणं < वदनम्— „ „

मओ < मदः— „ „

प लोप—

रिऊ < रिपुः—प लोप और उ शेष तथा उकार को दीर्घ।

सुउरिसो < सुपुरपः— „

कई < कपिः—प लोप और स्वर शेष।

विउलं < विपुलं— „ „

य लोप—

दआलू < दपालुः—य लोप, स्वर शेष और लु को दीर्घ।

णअणं < नयनम्— „ „

विओओ < वियोगः—य और ग का लोप स्वर शेष।

वाउणा < वायुना—य लोप और स्वर शेष।

व लोप—

जीओ < जीपः—व लोप और स्वर शेष।

दिअहो < दित्तः—व लोप, स्वर शेष और स के स्थान पर ह।

ल्लाअणं < लावण्यम्—व लोप, स्वर शेष, य लोप और ण को द्वित्व।

विओहो < वियोधः—व लोप, स्वर शेष और ध के स्थान पर ह।

वडआणलो < वडवानलः—व लोप, स्वर शेष।

विशेष—प्रायः शब्द का प्रयोग होने से कहीं-कहीं लोप नहीं होता। यथा—

सुकुसुमं < सुकुसुमम् पयागजलं < प्रयागजन्म।

पियगमणं < पियगमनम् सुगओ < सुगवः

अगरु < अगरु सचावं < सचापम्

समवाओ < समवायः

(क) स्वर से पर में नहीं रहने के कारण उक्त वर्णों का लोप नहीं हुआ—

संकरो < संकरः णधं चरो < नक्तं चर.

धणंजओ < धनञ्जयः पुरंदरो < पुरन्दरः

संवरो < संवरः

(ग) निम्न शब्दों में मंयुक्त होने के कारण लोप नहीं हुआ—

अघो < अर्घः
अर्घो < अर्घ्यः

घग्गो < घर्गः
मग्गो < मर्गः

(ग) निम्न शब्दों में आद्यक्षर होने के कारण उक्त वर्गों का लोप नहीं हुआ—

फालो < फालः
गोघो < गन्धः

चोरो < चौरः—औंकार के स्थान पर ओकार ।

जारो < जारः

तरु < तरुः—रु के हरर उकार को दीर्घ हुआ है ।

दयो < दयः

पायं < पापम्—द्वितीय प के स्थान पर व हुआ है ।

(घ) समास में उपरपद के आदि का विकल्प से लोप होता है—

सद्दअरो, सद्दचरो < सद्दधः

जलअरो, जलचरो < जलधः

सद्दआरो, सद्दकारो < सद्दकारः

(ङ) कुछ विद्वानों के मत में क का लोप नहीं होता, बल्कि उसके स्थान पर ग होता है । जैसे—

एगत्तणं < एगत्तम्

एगो < एकः

अमुगो < अमुकः

आगारो < आकारः

आगरिसो < आनयः

(च) कहीं कहीं आदि में आनेवाले कदि वर्गों का भी लोप देखा जाता है—

स लण < स पुनः

सो य, सो सोअ < स च—च का लोप होने पर शेष स्वर अ के स्थान में य भ्रुति होने से च का य होता है ।

इन्धं < चिह्नम्—आदि च का लोप और इ के स्थान पर ध ।

(छ) आपे प्रारुत में च के स्थान पर ट पाया जाता है । यथा—

आउण्टणं < आउण्णम्

(१०३) क, ग, घ, ज, त, द, ढ, ण और व का लोप होने पर अवशिष्ट स्वर अ या आ के स्थान में लघु प्रथम-तर यकार का उच्चारण होता है । यथा—

नयरं < नगरम्—ग का लोप होने पर अवशेष अ के स्थान पर य ।

फयग्गहो < फचाद्दः—च का लोप होने पर अवशेष अ के स्थान पर य ।

फायमणी < फावमणिः—

रययं < रज्जम्—ज और त का लोप होने पर अवशेष स्वर अ के स्थान में य ।

पयावई < प्रजापति:—ज का लोप और अवशेष आ के स्थान में या, प का व और त का लोप, दीर्घ ।

रसायलं < रसातलम्—त का लोप और अवशेष अ को य ।

पायालं < पातालम्—त का लोप और अवशेष आ को या ।

(१०३) असवर्ण से पर में अनादि प का लोप लुक् नहीं होता, धरिक प्रकार को वकार होता है ।^१ उदाहरण—

उवसगो < उपसर्गः—प का व, रेफ का लोप और ग को द्वित्व ।

कवालो < कपालः—यहाँ प का लोप नहीं हुआ, उसके स्थान पर व हुआ है ।

उल्लाओ < उल्लापः—

” ”

कवोलो < कपोलः—

” ”

महिवालो < महिपालः—

” ”

उवमा < उपमा—

” ”

पावं < पापम्—प का व हुआ है ।

सवहो < शपथः—प का व तथा थ का ह हुआ है ।

सावो < शापः—प का व हुआ है ।

विशेष—(क) संयुक्त होने पर प का व नहीं होता । यथा—

विप्पो < विप्रः—प्र में प् + ट् + अ का संयोग है अतः रेफ का लोप और प को द्वित्व ।

सप्पो < सर्पः—रेफ का लोप और प को द्वित्व ।

(ख) आदिस्थ होने पर प का न तो लोप होता है और न उसके स्थान में व ही होता है । यथा—

पई < पति,—त का लोप तथा इकार को दीर्घ ।

पंडिओ < पण्डित.—त का लोप और विसर्ग को भोत्व ।

(१०४) आपीड शब्द में पकार को म होता है ।^२ यथा—

आमेलो < आपीडः—प का म और ड को ल हुआ है ।

(१०५) स्वर से पर में रहनेवाले असंयुक्त और अनादि ए, घ, थ, च और झ यणों के स्थान में प्रायः ह आदेश होता है ।^३ वास्तविकता यह है कि इन व्यंजनों में ह संयुक्त है । जैसे—

ए = क् + ह्, घ = ग् + ह्, ध् = त् + ह्, ध = द् + ह्, फ = प् + ह्, भ् = ब् + ह् । अतः उक्त व्यंजनों में विजातीय का लोप होकर ह शेष रह जाता है । उदाहरण—

१. पौ वः २।१५. वर० ।

२. आपीडे मः २।१६. वर० ।

३. ए-घ-थ-ध-भाम् ८।१।१८७. हे० ।

- मुहं < मुत्तम्—त् का ह हुआ है ।
 महो < मत्तः—त् का ह हुआ है ।
 मेहला < मेत्तला—,, ,,
 लिहइ < लिपति—,, और त् का लोप तथा इ शेष ।
 पमुहेण < प्रमुणेण—प्र के स्थान पर प और त् का ह हुआ है । ।
 सही < सत्ती—त् के स्थान पर ह ।
 अलिहिदा < अलिखिता—त् के स्थान पर ह और त के स्थान पर द ।
 मेहो < मेवः—घ के स्थान पर ह हुआ है ।
 जहणं < जवनम्—,, ,,
 माहो < माघः—,, ,,
 लाहअं < लाघाम्—घ के स्थान पर ह और व का लोप तथा स्वर अ शेष ।
 लहु < लतुः—घ के स्थान पर ह ।
 नाहो < नाथः—थ के स्थान पर ह ।
 गाहा < गाथा—,, ,,
 मिहुणं < मिधुनम्—,, ,,
 सवहो < शपथः—प के स्थान पर व और थ के स्थान पर ह ।
 कहेहि < कथय—थ के स्थान पर ह ।
 यहं < कथम्—,, ,,
 मणोरहो < मनोरथः—,, ,,
 साहू < साधुः—घ के स्थान पर ह ।
 राहा < राधा—,, ,,
 वाहा < वाधा—,, ,,
 वहिरो < वधिरः—,, ,,
 वाहइ < वाधते—घ के स्थान पर ह और विभक्ति चिह्न ह ।
 इंदहणू < इन्द्रधनुः—रेफ का लोप और ध के स्थान पर ह ।
 अहिअं < अधिनम्—घ के स्थान पर ह ।
 माहवीलदा < माधवीलता—घ के स्थान पर ह तथा त के स्थान पर द ।
 महुअर < मधुकरः—ध के स्थान पर ह तथा क का लोप, अ शेष ।
 सहा < सभा—भ के स्थान पर ह ।
 सहावो < स्वभावः—व का लोप और भ के स्थान पर ह ।
 णहं < नभः—भ के स्थान पर ह ।
 सोहइ < शोभते—भ के स्थान पर ह और विभक्ति चिह्न ह ।
 सोहणं < शोभनम्—भ के स्थान पर ह ।

आहरणं < आभरणम्—भ के स्थान पर ह ।

दुहहो < दुर्लभ.—रेफ का लोप और ल को द्वित्व तथा भ के स्थान पर ह ।

विशेष—(क) स्वर से पर में नहीं रहने से—

संखो < शङ्खः—यहाँ ख स्वर से पर नहीं है, बल्कि अनुस्वार व्यञ्जा से परे है ।

संघो < सङ्घः— " घ " " " " " "

कंधा < कन्धा— " थ " " " " " "

संभो < स्तम्भः— " भ " " " " " "

(ख) उपयुक्त वर्णों के असंयुक्त होने पर इ आदेश होता है, संयुक्त होने से नहीं । जैसे—

अक्खइ < अक्षति—ख के स्थान पर ह नहीं हुआ ।

अग्घइ < अर्घति—घ के स्थान पर " "

क्कथइ < कथयति—थ के " "

वन्धइ < बन्धति—ध के " "

लडभइ < लभते—भ के " "

(ग) गज्जइ घणो < गर्जयति घनः—घ आदि में रहने से ह नहीं हुआ ।

गज्जन्ते ते मेधा < गर्जयन्ते ते मेधाः—ख आदि " "

पज्जलो < प्रजलः—प्रायः कथन के कारण ह नहीं हुआ ।

पल्लंघणो < प्रलम्बयन्ः— " "

अधीरो < अधीरः— " "

अघण्णो < अघन्धः— " "

ज्जिणधम्मो < जिनधर्मः— " "

पणट्टभओ < प्रनटभरः— " "

(१०६) स्वर से पर में रहनेवाले धर्मयुक्त और शनादि ट, ठ और ढ के स्थान में प्रमराः ङ, ञ और ल आदेश होते हैं । उदाहरण—

मढो < मठः—ठ के स्थान में ढ हुआ है ।

सढो < सठः— " "

पमढो < पमठः— " "

पुढारो < पुठारः— " "

णढो < नः—ट के स्थान में ढ हुआ है ।

भढो < भः— " "

विडयो < विरपः—ट के स्थान पर ड और ष के स्थान पर व ।

घडो < घटः—ट के स्थान पर ष ।

घडइ < घटते—ट के स्थान पर ड और विभक्ति चिह्न इ ।

यलया-मुँहं < यडयामुयम्—ड के स्थान पर ल, य लोप और आ स्वर के स्थान पर य ध्रुति तथा य के स्थान पर ह ।

गरुलो < गरुडः—ड के स्थान पर ल ।

कीलइ < कीडति—रेफ का लोप, ड के स्थान पर ल और विभक्ति चिह्न इ ।

तलायो < तडागः—ड के स्थान पर ल, ग लोप और अ स्वर के स्थान में यध्रुति ।

वलही < वडधिः—ड के स्थान में ल और ध के स्थान में ह तथा दीर्घ ।

घंटा < घण्टा—स्वर से पर में ट के न होने से ट के स्थान में ड नहीं हुआ ।

वेयुंठो < वैडुण्डः—स्वर से पर में ठ के न होने से ड नहीं हुआ ।

मौंडं < मुण्डम्—स्वर से पर में ड के न होने से ल नहीं हुआ ।

कोंडं < कुण्डम्—

खटा < खटा—संयुक्त रहने के कारण ट का ड नहीं हुआ ।

चिड्डइ < तिष्ठति—संयुक्त रहने से ड का ड नहीं हुआ ।

खड्गो < लडगः—संयुक्त रहने से ड का ल नहीं हुआ ।

टक्को < टडूः—अनादि-आदि भिन्न होने से ट को ड नहीं हुआ ।

ठाई < स्थायी—

डिंभो < डिम्भः—

(१०७) प्यन्त यट धातु में ट का ल आदेश विक्रम से होता है ।^१ यथा—

चयिला, चविडा < चंपटा—प के स्थान पर व और ट के स्थान में ल तथा

विक्रमभावावपक्ष में ड ।

फालेइ, फाडेइ < पाटयति—ट का ल तथा विक्रमभावाव में ड और विभक्ति

चिह्न इ ।

(१०८) सटा, शरुड और कैटभ शब्द में ट को ड होता है ।^२ यथा—

सटा < सटा—ट के स्थान पर ड ।

सयटो < शकटः—फ का लोप और अ स्वर के स्थान पर य ध्रुति, तथा ट का ड ।

केडवो < कैटभः—पेकार का एकार और ट का ड तथा भ का व 'कैटभे वा'

२।२९. सूत्र से ।

१. चंपटा-पाटौ वा २।१।१६८ । हे० ।

२. सटा-शकट-कैटभे वः २।१।१६६. हे० ।

(१०९) स्फटिक में टकार के स्थान पर ल होता है ।^१ यथा—
फलिहो < स्फटिकः—ट का ल और क का ह ।

(११०) प्रति उपसर्ग में तकार के स्थान में प्रायः डकार आदेश होता है ।^२
जैसे—

पडिवण्णं < प्रतिपन्नम्—प्र के स्थान पर प, त के स्थान पर ड और प का व ।

पडिहासो < प्रतिभासः—प्र के स्थान पर प, त के स्थान पर ड और भ के स्थान पर ह ।

पडिहारो < प्रतिहारः—प्र को प और त को ड ।

पाडिप्फद्धी < प्रतिस्पर्धी—त के स्थान पर ड, स्पर् के स्थान पर प्फ, रेफ का लोप और ध को द्विस्व ।

पडिसारो < प्रविसारः—त के स्थान पर ड ।

पाडिसरोः < प्रतिसरः—त के स्थान पर ड ।

पडिसिद्धि < प्रतिसिद्धिः— " " "

पडिनिअत्तं < पतिनिवृत्तम्—त के स्थान पर ड, य का लोप और ऋ के स्थान पर ऌ ।

पडिमा < प्रतिमा—त के स्थान पर ड ।

पडिवया < प्रतिपत्—त के स्थान पर ड, प को व और वान्त्य व्यंजन त् के स्थान पर आ तथा य भृति ।

पडंसुआ < प्रतिधुत्—त के स्थान पर ड, रेफ का लोप और वान्तिम व्यंजन त् के स्थान में आ ।

पडिअरड् < प्रतिअरोति—त के स्थान में ड, क्रियापद वरड् ।

पहुडि < प्रभृति—भ के स्थान पर ह, ऋ के स्थान में टकार और त वा ड ।

पाहुडं < प्राभृत्—भ के स्थान में ह और त के स्थान में ड ।

यायडो < व्यायत्—व्या के स्थान में वा, य के स्थान में व और ऋ के स्थान में अ तथा त को ड ।

पहाया < पनारा—त को ह, क् का लोप और आ स्वर के स्थान में व भृति ।

यहेडओ < विभीतकः—भ के स्थान पर ड, ईकार को एकार, त को ड और क लोप तथा अ स्वर ज्ञेय, विगर्ग को ओस्व ।

हरडई < हरीगडो—त को ड, ऋ का लोप और ई स्वर ज्ञेय ।

१. लार्किने तः ८।१।११७. इ० ।

२. प्रयारी डः ८।१।२०६. इ० ।

दुःखं < दुःखतम्—आर्ष में प लोप, क को द्वित्व, ऋ को अ तथा त को ड ।

सुःखं < सुःखतम्—आर्ष में ऋ के स्थान पर अ और त का ड ।

आह्वं < आह्वतम्—

” ”

अवह्वं < अवह्वतम्—

” ”

पइसमयं < प्रतिसमयं—ति के स्थान पर इ नहीं हुआ और त का लोप हो जाने से इ स्वर शेष ।

पईयं < प्रतीपम्—त के स्थान पर इ नहीं हुआ, त् का लोप होने से ई शेष ।

संपइ < सम्प्रति—त लोप और इ स्वर शेष ।

पइट्टाणं < प्रतिष्ठानम्—त् लोप और इकार शेष तथा टा में से प का लोप ट को द्वित्व ।

पइट्टा < प्रतिष्ठा—

” ”

पइण्णा < प्रतिष्ठा—त लोप और ङ के स्थान पर ण्ण ।

(१११) ऋत्यादि गण के शब्दों में तकार का दकार होता है ।^१ जैसे—

तदू < ऋतुः—ऋ के स्थान पर उ और त के स्थान में द तथा उ को दीर्घ ।

रअदू < रजतम्—ज का लोप और उसके स्थान पर अ स्वर शेष तथा त को द ।

आअदो < आगतः—ग का लोप और उसके स्थान पर अ स्वर शेष तथा त को द ।

निव्वुदी < निवृत्तिः—रेफ का लोप, व को द्वित्व और ऋ के स्थान पर उ तथा त को द ।

आउदी < आवृत्तिः—व का लोप, ऋ के स्थान पर उ और त को द ।

संवुदी < संवृत्तिः—ऋ के स्थान पर उ तथा त को द ।

सुइदी < सुइतिः—क का लोप, ऋ के स्थान पर इ और त को द एवं दीर्घ ।

आइदी < आइतिः—

” ”

हदो < इतः—त के स्थान पर द ।

संजदो < संयतः—य के स्थान पर ज और त के स्थान पर द ।

१. ऋत्वादित्थु तो द. २।७ वर०; ऋत्वादि गण मे निम्न शब्द परिगणित है—

ऋतुः किरातो रजतश्च तात सुसंगतं सयत साम्प्रतश्च ।

सुसंस्कृतिश्रीतिसमानशब्दास्तथाकृतिनिवृत्तितुल्यमेतत् ॥

उपसर्गसमायुक्ते वृत्तिवृत्ती वृतागतौ ।

ऋत्वादिगणने नेया अन्ये शिष्टानुसारतः ॥

विडदं < विडृतम्—व का लोप, ऋ के स्थान पर उ और त के स्थान में द ।

संजादो < संजातः—य के स्थान पर ज और त को द ।

संपदि < संप्रति—प्र के स्थान पर प और त को द ।

पडिघदी < प्रतिपत्तिः—प्रति उपसर्ग की ति के स्थान पर डि, प षो ष और त को द तथा इकार को दीर्घ ।

विशेष—त के स्थान पर द होना शौरसेनी की विशेषता है । साधारण प्राकृत में शब्दरूप निम्न प्रकार बनेंगे ।

उऊ < कतुः—क के स्थान पर उ और त का लोप तथा उ को दीर्घ ।

रअर्ज < रजतम्—ज और त का लोप तथा इनके स्थान पर अ, अ स्वर षेप ।

एअं < एतम्—त का लोप और उसके स्थान पर अ स्वर षेप ।

गओ < गतः—त का लोप और उसके स्थान पर अ स्वर षेप, विभर्ग का ओस्व ।

संपअं < साम्प्रतम्—म् का अनुस्वार, प्र के स्थान पर प और त का लोप, अ स्वर षेप ।

जओ < जतः—य का ज और त का लोप, अ स्वर षेप, विभर्ग का ओस्व ।

तओ < ततः—त का लोप, अ स्वर षेप और ओस्व ।

कअं < कृतम्—त का लोप, अ स्वर षेप और म् का अनुस्वार ।

हआसो < हताशः—स का लोप, अ स्वर षेप तथा श का स ।

ताओ < तातः—त का लोप अ स्वर षेप और विभर्ग का ओस्व ।

(११२) दंदा और दद, प्रदीपि और दीप धातुओं के दकार के स्थान में ऋमराः ष, ल और पैरित्थिठ ध आदेश होते हैं ।^१ जैसे—

दसइ < दशति—द के स्थान पर ष, तात्पथ्य दा के स्थान पर दन्त त तथा तकार का लोप और इकार स्वर षेप ।

ददइ < ददति—द के स्थान पर ष, त और इ स्वर षेप ।

पट्टेचेइ < प्रक्षीपति—द के स्थान पर ल, प का व और व का संयन्तान द, गुण तथा त का लोप और इ स्वर षेप ।

पल्लितं < प्रलीतम्—द का ल, इत्य, व का लोप और त को द्विश्व ।

पिप्पद, दिप्पद < क्षीपति—द के स्थान पर पैरित्थिठ ध, य लोप और व को द्विश्व, त लोप और इ स्वर षेप ।

१. दंत-दीः ८।१।२१८. इ० । प्रक्षीप-दीः ८।१।२२१. इ० । लीती धो का ८।१।२२३. इ० ।

(११३) स्वर से पर में रहनेवाले असंयुक्त और अनादि न का ण आदेश होता है ।^१ पर आदि में वर्तमान असंयुक्त न का विकल्प से ण आदेश होता है ।^२ उदाहरण—

सअणं < शपनम्—य का लोप और अ स्वर घोप तथा स्वर से पर अनादि और असंयुक्त न का ण ।

कणअं < कनम्—स्वर से पर अनादि और असंयुक्त न का ण, क लोप और अ स्वर घोप ।

घअणं < घचनम्—घ लोप और अ स्वर घोप और न का ण ।

माणुसो < मानुषः—न का ण और मूर्धन्य प का दन्त्य स ।

णरो, नरो < नरः—न के स्थान पर विकल्प से ण ।

णई, नई < नदी—न के स्थान पर ण तथा इ का लोप और ई स्वर घोप ।

(११४) स्वर से पर में रहनेवाले असंयुक्त और अनादि फ के स्थान में बहीं भ, कहीं ह और कहीं दोनों—भ और ह होते हैं ।^३ उदाहरण—

रेभ < रेफः—फ के स्थान पर भ ।

सिभा < सिफा—तालव्य श के स्थान पर दन्त्य स और फ के स्थान पर भ ।

मुक्ताहलं < मुक्ताफणम्—फ के स्थान पर ह ।

सेभालिआ, सेहालिआ < शेफालिका—विकल्प से फ के स्थान पर भ और ह तथा क लोप और आ स्वर घोप ।

सभरी, सहरी < सफरी—फ के स्थान में भ और ह ।

सभलं, सहलं < सफणम्—फ के स्थान में भ और ह ।

विशेष—

गुंफइ < गुंफति—स्वर से पर में नर्त्ती रहने के कारण फ का भ नहीं हुआ ।

पुप्फं < पुप्फम्—संयुक्त रहने के कारण उक्त नियम लागू नहीं हुआ ।

फण्णी < फनिः—आदि में होने से फ को भ या ह नहीं हुआ ।

(११५) स्वर से पर में रहनेवाले असंयुक्त और अनादि घ का विकल्प से व आदेश होता है ।^४ जैसे—

अलावू, अलाऊ < अलावू—घ के स्थान पर विकल्प से व और विकल्पभाव-पक्ष में व का लोप तथा ऊ घोप ।

सवल्लो < सवल्लु—घ के स्थान पर व ।

१. नो लः ८।१।२२८. हे० ।

२. वादी ८।१।२२६ हे० ।

३. फो म-ही ८।१।२३६. हे० ।

४. नो वः ८।१।२३७. हे० ।

(११६) विमिनी शब्द के व के स्थान पर भ आदेश होता है ।^१ यथा
भिसिणी < विसिनी—व के स्थान पर भ और न के स्थान पर ण ।

(११७) वदन्ध शब्द में व के स्थान पर म और य होते हैं ।^२ यथा—
कमन्धो, कयन्धो < वदन्धः—व के स्थान पर म होने से कमन्ध और य होने से कयन्ध रूप बना है ।

(११८) विषम शब्द में म के स्थान पर विरूप से द होता है ।^३ यथा—
विसदो, विसमो < विषम—म के स्थान पर विरूप से द हुआ है ।

(११९) मन्मथ शब्द में म के स्थान पर विकल्प से व होता है ।^४ यथा—
यम्महो < मन्मथः—म के स्थान व, संयुक्त न का लोप और म को द्वित्व तथा थ के स्थान पर ह ।

(१२०) अभिमन्यु शब्द में म के स्थान पर व और म विकल्प से होते हैं ।^५
यथा—

अहिवन्नु, अहिमन्नु < अभिमन्यु—भ के स्थान पर ह, म के स्थान पर विकल्प से व, विकल्पाभावात् परस्य में म तथा संयुक्त य का लोप और न को द्वित्व, दीर्घ ।

(१२१) भ्रमर शब्द में म के स्थान पर विकल्प से स आदेश होता है ।^६
यथा—

भसलो, भमरो < भ्रमर—संयुक्त रेफ का लोप, म के स्थान पर विकल्प से स और रेफ के स्थान पर लस्य ।

(१२२) पद के आदि में य का ज आदेश होता है ।^७ यथा—

जसो < यश.—य के स्थान पर ज और ताण्ड्य श को दन्त्य स ।

जमो < यम.—य के स्थान पर ज हुआ है ।

जाइ < याति—य के स्थान पर ज और त का लोप, इ स्वर शेष ।

विशेष—

अयशो < अश्वर—रद के आदि में न रहने के कारण उक्त नियम चरितार्थ नहीं हुआ ।

संजमो < संयम—उपसर्ग युक्त होने से शनादि य का ज हुआ है ।

संजोओ < संयोगः—

” ” ”

मयजसो < मययगः—य का व हुआ है और य वा ज तथा ताण्ड्य श का दन्त्य म ।

१. विमिनी म ८।१।२३८. हे० । २. वदन्धे मन्धो ८।१।२३९. हे० ।

३. विसमे मो वी या ८।१।२४१. हे० । ४. मन्मथे व. ८।१।२४२. । हे० ।

५. माभिमन्थो ८।१।२४३. हे० । ६. भ्रमरे सो वा ८।१।२४४. हे० ।

७. आदेशो जः ८।१।२४५. हे० ।

गाढ-जोव्यणा < गाढयौवना—कल्पवृत्तिका के निष्मानुसार सामान्यतः उत्तर-पदस्थ य का भी ज होता है ।

अजोग्गो < अयोग्यः—

अहाजाअं < यथाजातम्—आदि य का लोप हुआ है और अ स्वर शेष है, य के स्थान पर ह तथा त का लोप और अ स्वर शेष ।

(१०३) तीय पूर्व वृत् प्रत्ययों के यकार के स्थान में द्विरूप ज (ज्) विरह्य से आदेश होता है ।^१ यथा—

दीज्जो, दीओ < द्वितीयः—तीय प्रत्यय के यकार के स्थान पर ज् ।

उत्तरीज्जं, उत्तरीअं < उत्तरीयः—य के स्थान पर ज् ।

करणिज्जं, करणीअं < करणीयम्—अनीय प्रत्यय के य के स्थान पर विरह्यपा-भाय पक्ष में य का लोप और अ स्वर शेष ।

रमणीज्जं, रमणीअं < रमणीयम्—

विम्हयणिज्जं, विम्हयणीअं < विम्हयनीयम्—

जवणिज्जं, जवणीअं < जवणीयम्—

विइज्जो, वीओ < द्वितीयः—तीय प्रत्यय के य के स्थान पर ज् ।

पेज्जा, पेआ < पेया—यत् प्रत्यय के य के स्थान पर विरह्य से ज्, विरह्यपा-भायपक्ष में य का लोप और अ स्वर शेष ।

(१२०) युष्मद् शब्द के य के स्थान में त आदेश होता है ।^२ जैसे—

तुम्हारिसो < युष्माद्दश—य के स्थान में त तथा ध के स्थान में म्द तथा दशः के स्थान पर रिसो हुआ है ।

(१२१) यष्टि शब्द में य के स्थान पर ल आदेश होता है ।^३ यथा—

लट्टी < यष्टिः—य के स्थान पर ल और प का लोप और ट को द्विरूप तथा ट को ढ ।

वेणु-लट्टी < वेणु-यष्टि

उच्छुः-लट्टी < इक्षु-यष्टिः—इक्षु के स्थान पर उच्छु तथा शेष पूर्वयत् ।

महु-लट्टी < मधु-यष्टिः—ध के स्थान पर ह, य को ल और प का लोप, ट को द्विरूप, उत्तरवर्ती के ट स्थान पर ढ तथा दीर्घ ।

१. योत्तरीयानोय-तीय-कृचे जः ८।१।२४८. हे० ।

२. युष्मद्यर्चपरे तः ८।१।२४९. हे० ।

३. यच्छ्यां तः ८।१।२४७. । हे० ।

(१२६) छविहीन अर्थ में छाया शब्द में यकार के स्थान पर विकल्प से ह्रास आदेश होता है । यथा—

छाहा < छाया—या के स्थान पर हा ।

यच्छ्रस्सच्छाहा < युशस्य छाया—य के स्थान पर हा ।

मुहच्छाया < मुतच्छाया—कान्ति अर्थ होने से छाया शब्द के य को ह नहीं हुआ ।

(१२७) हरिद्रादि गण के शब्दों में असंयुक्त र के स्थान में ल आदेश होता है । उदाहरण—

ह्र्लिद्दी < हरिद्रा—र के स्थान पर ल और संयुक्त रेफ का लोप तथा द को द्वित्व और आकार को ईकार ।

दह्लिद्दाइ < दरिद्राति—र के स्थान पर ल, संयुक्त रेफ का लोप और द को द्वित्व तथा त का लोप और इ स्वर भेष ।

दह्लिद्दो < दरिद्रः—र के स्थान पर ल, संयुक्त रेफ और य का लोप तथा इ को द्वित्व ।

दाह्लिद्दं < दरिद्रन्म्—र के स्थान पर ल, संयुक्त रेफ और य का लोप तथा इ को द्वित्व ।

दह्लिद्दो < दरिद्रः—र को ल और संयुक्त रेफ का लोप तथा द को द्वित्व ।

जहुद्धिलो < युधिष्ठिर—य के स्थान पर अ, ध के स्थान पर ह, य का लोप और ङ को द्वित्व और र को ल ।

सिद्धिलो < मिथिलः—तात्पर्य स को दस्य स, ध के स्थान पर ह और रेफ को ल ।

मुह्लो < मुषाः—म के स्थान पर ह और र को ल ।

पल्लो < पलनः—र के स्थान पर ल ।

पल्लुगो < पलनः— " "

पल्लुगो < पलनः— " "

हंमालो < मंगारः—म के स्थान पर ह और र को ल ।

सममालो < मारकाः—संयुक्त म का लोप और क को द्वित्व तथा रेफ को ल ।

सोमालो < सुमनः—ह का लोप, उ को मन्धि और र को ल ।

शिल्लभो < शिराभः—शिराभ शब्द में 'शिर' से 'य' आता है, 'भ' से 'ल' को ल आता है, र के स्थान पर ल ।

फालिहा < परिखा—र के स्थान पर ल, ख के स्थान पर ह ।

फालिहो < परिघः—र के स्थान पर ल और घ के स्थान पर ह ।

फालिहहो < पारिभद्र—र के स्थान पर ल, भ को ह और संयुक्त र का लोप तथा द को द्वित्व ।

काहलो < कातरः—त को ह और र को ल हुआ है ।

लुम्हो < रुणः—र के स्थान पर ल, ण को कर्ण हुआ है ।

अयदालं < अपद्वारम्—अप के स्थान पर अय, य् का लोप, द णो द्वित्व और र को घ ।

भसलो < भसरः—संयुक्त रेफ का लोप, स के स्थान पर स और र को ल ।

जढलं < जाठम्—र के स्थान पर ल और ठ को ढ होता है तथा यद्वां वर्ण-विपर्यय होने से जढलं हुआ है ।

वढलो < वठरः—ठ को ढ तथा र को ल हुआ है ।

निट्ठुलो < निष्टुरः—प् का लोप, ठ को द्वित्व तथा र को ल हुआ है ।

(१२८) स्थूल शब्द के एकार को र होता है ।^१ यथा—

थोरं < स्थूर्म्—संयुक्त स का लोप और ल के स्थान पर र ।

(१२९) साहल, साङ्गल और साङ्गूल शब्दों में विकल्प से ल को ण आदेश होता है ।^२ यथा—

साहलो < साहलः—ल के स्थान पर ण होता है ।

णङ्गलं < लंगलम्—

णाङ्गूलं < लङ्गूलम्—

(१३०) एषाट् शब्द में आदि ल को ण होता है ।^३ यथा—

णिडालं, णडालं < एषाटम्—ल के स्थान पर ण, ट का ढ और वर्णविपर्यय ।

(१३१) स्वप्न और नीवी शब्द में व को विकल्प से म होता है ।^४ यथा—

सिमिणो, सिविणो < स्वप्न ।

नीमी, नीवी < नीवी ।

(१३२) संस्कृत वर्णमाला के श और य के स्थान में प्राकृत में स आदेश होता है ।^५ यथा—

१. स्थूले लो र ८।१।२५५. हे० ।

२. साहल-साङ्गल-साङ्गूले वादेणं ८।१।२५६. हे० ।

३. ललाटे च ८।१।२५७. हे० ।

४. स्वप्नोऽप्योर्वा ८।१।२५६. हे० ।

५. श-यो. स ८।१।२६०. हे० ।

कुसो < कुशः—तालव्य श के स्थान पर दन्त्य स ।

सेसो < शेषः—तालव्य और मूर्धन्य दोनों के स्थान पर दन्त्य स ।

सदो < णदः—तालव्य श को दन्त्य स, संयुक्त व् वा लोप और द को द्वित्व ।

निसंसो < नृसंसः—नकारोत्तर ऋ को इ और तालव्य श को दन्त्य स ।

वंसो < वंसः—तालव्य श को दन्त्य स ।

दस < दश—

सोहइ < शोमते—तालव्य श को दन्त्य स, भ के स्थान पर ह और विभक्ति

विह्न इ ।

सण्डो < पण्डः—मूर्धन्य प को दन्त्य स ।

कसाओ < कपायः—

विसेसो < विशेषः—दोनों ही श, प को दन्त्य स ।

(१३३) दसन् और पापाण शब्दों में श और प के स्थान पर विकल्प से ह होता है ।^१ यथा—

दसमुहो, दहमुह < दशमुहः ।

दहबलो, दसबलो < दशबलः ।

दहरहो, दसरहो < दशरथः ।

पहाणो < पापाणः ।

(१३४) अनुस्वार से पर में रहने वाले ह के स्थान में विकल्प से घ आदेश होता है ।^२ यथा—

सिघो, सीहो < सिहः ।

संघारो, संहारो < संहारः ।

(१३५) व्याकरण, प्राकार और आगत शब्दों में क, ग और स्वर का रिक्त्य से लोप होता है ।^३

घारणं, वायरणं < व्याकरणम्—प्रथम रूप घ्य का सर्गापहारी लोप होने से यन्ता है और द्वितीय में अ स्वर शेष तथा इसके स्थान पर य ।

पारो, पयारो < प्राकारः—

आओ, आगओ < आगतः—प्रथम रूप ग का सर्गापहारी लोप होने से और द्वितीय लोप न होने से यन्ता है ।

१. दश-पापाणो हः ८।१।२६२. हे० ।

२. हो घोनुस्वारात् ८।१।२६४. हे० ।

३. व्याकरण-प्राकाराने षणोः ८।१।२६८. हे० ।

उक्ता < उक्ता—संयुक्तादि ल लुक् और क को द्वित्व ।

वक्त्रा < वक्त्रम् " " "

सण्हुं < सण्हुम्—संयुक्तान्त्य ल लुक् और द्वित्वाभाव ।

विक्रानो < विक्रान्त्यः—संयुक्तान्त्य ल लुक् और क को द्वित्व ।

सद्दो < सद्दः—संयुक्तादि व लुक् और द को द्वित्व ।

अद्दो < अद्दः— " "

पिप्रां < पिप्रांम्—संयुक्तान्त्य व लुक् और क को द्वित्व, पकारोपर म को

द्वयार ।

धत्थं < धत्थन्म्—संयुक्तान्त्य लुक्, ध को द्वित्वाभाव, स्त में संयुक्तादि म् लोप और त को द्वित्व, ट्कारवर्ती त यो ध ।

अयो < अयः—रेफ का लोप और क को द्वित्व ।

यग्नो < यग्नाः—संयुक्तादि र लुक् और ग को द्वित्व ।

चर्षा < चर्षम्—संयुक्तादि र लुक् और ग को द्वित्व ।

गद्दो < गद्दः—संयुक्तान्त्य र लुक् और द्वित्वाभाव ।

रत्तो < रत्ति—संयुक्तान्त्य र् लुक् और त को द्वित्व ।

चंद्रो. चंद्रो < चन्द्रः—संयुक्तान्त्य रेफ का लोप और द्वित्वाभाव; मत्तान्तर में

अप्पञ्जो, अप्पण्णु < अप्पञ्ज —संयुक्तादि ल लृक्, ष द्वित्व, ज के ञ का लोप और ञ द्वित्व; ञ लोपाभावपक्ष में ण द्वित्व और अकार को ऊकार ।

अहिञ्जो, अहिण्णु < अभिञ्जः—भ को ह, ञ लोप, ज को द्वित्व, विरुत्वाभाव पक्ष में ण को द्वित्व, अकार को ऊकार ।

जाणं, णाणं < जानम्—ज लोप और ज शेष, नकार को णत्व, विरुत्वाभाव में ञ के स्थान पर ण ।

दइवञ्जो, दइवण्णु < दैवजः—पे के स्थान पर शइ, ष लोप और ज को द्वित्व ।

इंगिअञ्जो, इंगिअण्णु < इंगित्तञ्जः—त लोप और अ स्वर शेष, ष लोप, ज द्वित्व ।

मणोञ्जं, मणोण्णं < मनोत्तम्—ञ लोप और ज को द्वित्व ।

पज्जा, पण्णा < प्रजा—ज लोप, ज को द्वित्व, विरुत्वाभाव पक्ष में ज लोप और ण को द्वित्व ।

अज्जा, अण्णा < गाजा—

संजा, सण्णा < संजा—ज लोप और ज शेष, स्वर से पर न होने से द्वित्वाभाव; विरुत्वाभाव पक्ष में ज लोप और अवशेष ण को द्वित्व ।

(१४२) वर्ग के द्वितीय और चतुर्थ वर्णों के द्वित्व होने पर द्वितीय वर्ण के पूर्व उसी वर्ण के प्रथम और तृतीय अक्षर हो जाते हैं^१ यथा—

यत्तण्णं < व्याख्यानम्—य लोप, शेष य को द्वित्व तथा पूर्ववर्ती य को क ।

अग्घो < अर्घः—संयुक्त रेफ का लोप, घ को द्वित्व और पूर्ववर्ती घ को ग ।

(१४३) दीर्घ स्वर पूर्व अनुस्वार से पर में रहनेवाले संयुक्त शेष व्यञ्जन का द्वित्व नहीं होता ।^२ जैसे—

ईसरो < ईश्वरः—संयुक्तान्त्य व का लोप और पूर्ववर्ती दीर्घ स्वर होने से स को द्वित्व का अभाव ।

ल्यसं < लास्यम्—संयुक्तान्त्य य का लोप, पूर्व में दीर्घ स्वर होने से द्वित्वाभाव ।

सकंठो < संक्रान्त —संयुक्तान्तर र का लोप, पूर्व में अनुस्वार रहने से द्वित्वाभाव ।

संम्ल < संम्लग—संयुक्तान्त्य य का लोप,

१. द्वितीय तुर्वयोपरि पूर्व ८।२।६०. हे० ।

२. न दीर्घानुस्वारान् ८।२।६२. हे० ।

(१४४) रेफ और हकार को द्वित्व नहीं होता है ।^१ यथा—

सुंदेरं < सौन्दर्यम्—संयुक्तादि य का लोप होने पर रेफ को द्वित्व नहीं हुआ ।

बम्हचेरं < महार्च्यम्—

धीरं < धैर्यम्—

विहलो < विह्वलः—संयुक्तान्त्य व का लोप और ह को द्वित्वाभाव ।

कहावणो < कार्पाणः—संयुक्तादि रेफ का लोप, प के स्थान पर ह और ह को द्वित्वाभाव तथा प को व ।

(१४५) समासान्त पदों में पूर्वोक्त नियम की प्रवृत्ति विकल्प से होती है ।^२ यथा—

नइ-गामो, नइ-गामो < नदी-ग्रामः—इ लोप, ई स्वर प्रोप, संयुक्तान्त्य रेफ का लोप और विकल्प से ग को द्वित्व ।

कुसुमप्पयरो, कुसुम-पयरो < कुसुम प्रसरः—रेफ का लुक् होने पर प को विकल्प से द्वित्व ।

देव-त्थुई, देव-थुई < देव-स्तुतिः—स लोप, स को विकल्प से द्वित्व, द्वितीय त के स्थान पर थ ।

तेल्लोकं, तेल्लोकं < त्रैलोक्यम्—र लोप, ल को विकल्प से द्वित्व ।

आणालखम्भो, आणाल-खम्भो < आणानस्तम्भः—समास होने से विकल्प से द्वित्व एवं वर्णव्यत्यय ।

मलय-सिहरखण्डं, मलय-सिहर-खण्डं < मलयसिहरखण्डम्—समास में विकल्प से ख को द्वित्व ।

पम्मुकं, पम्मुकं < प्रमुक्तम्—समास होने से म को विकल्प से द्वित्व हुआ है ।

(१४६) तैलादिगण के शब्दों में प्राचीन प्राकृत वाचार्थों के निर्णयानुसार कहीं अनन्त्य और अन्त्य व्यञ्जनों को द्वित्व होता है ।^३ उदाहरण—

तेल्लं < तैलम्—अन्त्य व्यञ्जन ल को द्वित्व ।

१. र-होः ८।२।६३. हे० ।

२. समासे वा ८।२।६७. हे ।

३. तैलादी ८।२।६८. हे० ।

४. प्राकृत प्रकाश में तैलादिगण के बदले नीडादि गण का उल्लेख मिलता है । 'नीडादिपु' ३।५२ में इस गण के शब्दों का नियमन किया है । 'कल्पसतिका' में नीडादिगण के शब्द निम्न वृत्ताये गये हैं—

नीडव्याहृतमण्डकसोतासि प्रेमयौवने ।

ऋणुः स्थूलं तथा तैलं त्रैलोन्यं च गणो गया ॥

मंडुको < मंडकः—अन्त्य व्यञ्जन क को द्वित्व ।

उज्जू < जजु—अन्त्य व्यञ्जन ज को द्वित्व ।

सोत्तम् < स्रोतम्—अन्त्य व्यञ्जन त को द्वित्व ।

पेम्मं < प्रेमम्—अन्त्य व्यञ्जन म को द्वित्व ।

विड्डा < घीडा—अन्त्य व्यञ्जन ढ को द्वित्व ।

जोव्यणं < यौवनम्—अनन्त्य—मध्य व्यञ्जन व को द्वित्व ।

बहुत्तं < बहुत्वम्—अन्त्य व्यञ्जन त को द्वित्व ।

(१४६) सेरादिगण के शब्दों में प्राचीन प्राकृत आचार्यों के मतानुसार कहीं अन्त्य और कहीं अनन्त्य व्यञ्जनों को विकल्प से द्वित्व होता है ।

उदाहरण—

सेव्वा < सेरा—अन्त्य व्यञ्जन व को द्वित्व ।

विहित्तो, विहित्तो < विहित्तः—अन्त्य व्यञ्जन त को विकल्प से द्वित्व ।
विकल्पाभाव में त लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्त ।

कोउहल्लं, कोउहल्लं < कौतूहलम्—अन्त्य व्यञ्जन ल को द्वित्व ।

वाउल्लो, वाउलो < व्याकुलः—संयुक्तान्त्य य का लोप, क का लोप, उ स्वर शेष और विकल्प से ल को द्वित्व ।

नेड्डं, नीडं, नेडं < नीडम्—अन्त्य व्यञ्जन ढ को विकल्प से द्वित्व ।

नक्कता, नह्हा < नखाः—अन्त्य व्यञ्जन ख को विकल्प से द्वित्व ।

माउक्कं, माउअं < मृदुक्म्—क को आ, द का लोप, शेष क के स्थान पर उत्त और विकल्प से क को द्वित्व ।

एक्को, एओ < एकः—अन्त्य व्यञ्जन क को द्वित्व, विकल्पाभावापक्ष में क का लोप अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्त ।

थुल्लो, थोरो < स्थूलः—संयुक्तादि स् का लोप, ल को द्वित्व ।

हुत्तं-हूअं < हुतम्—त को द्वित्व, विकल्पाभाव पक्ष में त का लोप, अ स्वर शेष ।

१. सेनादौ वा चा२।१६६ हे० । सेनादि गण मे निम्न शब्द परिगणित हैं—

सेवा कौतूहलं देवं विहितं मखजानुनी ।

पिवादयः नखा शब्दा एतादाद्या मयार्थका ॥

मैलोक्यं कश्चिक्कारश्च वेश्या मूर्जञ्च दु खितम् ।

रात्रिविश्वासानिश्वासा मनोऽस्तेस्वररश्मयः ॥

दीर्घक शिवतूष्णीं मित्रगुणादिदुर्लभाः ।

दुष्करोनिष्कृप.वर्मकरेज्जासपरस्परम् ।

नायकाद्यास्तया शब्दा. सेनादिगणसम्भवाः ॥ कल्पलतािका ॥

दृङ्व्यं, दृङ्व्यं < दृङ्वम्—अन्त्य व्यञ्जन क को विकल्प से द्वित्व ।

तुण्ह्रिषो, तुण्ह्रिओ < तुण्ह्रिकः—ए के स्थान पर षह और अन्त्य व्यञ्जन क को विकल्प से द्वित्व ।

मुषो, मूओ < मूकः—अन्त्य व्यञ्जन क को विकल्प से द्वित्व, चित्वाभाव में क का लोप और ष स्वर शेष ।

स्वणू, स्वाणू < स्वाणुः—स्वा के स्थान पर न तथा अन्त्य व्यञ्जन को द्वित्व ।

धिण्णं, धीणं < स्थाणम्—स्था के स्थान पर धी, अन्त्य व्यञ्जन ण को द्वित्व ।

अम्हृषेरं, अम्हृषेरं < अस्मदीयम्—अन्तर व्यञ्जन क को विकल्प से द्वित्व ।

तं चैअ, तं चैअ < तं चैअ—अन्त्य—आदि व्यञ्जन क को द्वित्व, व का लोप और ष स्वर शेष ।

सोचिअ, सोचिअ < सो चैअ " " "

(१४७) ए के स्थान पर न आदेश होगा है, किन्तु कुछ स्थानों में ए और ष भी आदेश होते हैं । यथा—

व्यओ < शपः—ए के स्थान पर न, न लोप और ष स्वर शेष, विष्णं का शोरष ।

लम्भ्यं < लम्भम्—ए के स्थान पर न, न को द्वित्व और पूर्व के न को क ।

छीणं, छीणं < छीणम्—ए के स्थान पर न होने से छीणं, छ होने से छीणं और क होने से छीणं रूप बनता है ।

मिन्नद् < मिन्नदि—ए के स्थान पर ष, ष लोप और न का न तथा द्वित्व ।

(१४८) आदि गण के शब्दों में ए के स्थान पर न न होकर ए आदेश होगा है । आदि में ए का ए और मध्य या अन्त्य ए के स्थान में क उ होगा है । यथा—

अन्दी < अदि—ए के स्थान पर क उ आदेश हुआ है ।

एन्द् < इधुः—इ के स्थान पर क भी ए के स्थान पर क उ हुआ है तथा दीर्घ ।

मच्छिआ < मक्षिका—क्ष के स्थान पर च्छ और क लोप तथा आ स्वर श्रेय ।
 सारिच्छो < सदक्षः—द लोप और ऋ के स्थान पर रि तथा क्ष को च्छ
 हुआ है ।

छेत्तं < छेत्तम्—क्ष को छ तथा त्र में से र लोप और त को द्वित्व ।

छुहा < क्षुधा—क्ष को छ और ध को ह हुआ है ।

दच्छो < दक्षः—क्ष को च्छ हुआ है ।

कुच्छी < कुक्षिः— " "

वच्छं < वक्षम्— " "

छुण्णो < क्षुण्णः—क्ष के स्थान पर छ हुआ है ।

कच्छा < कक्षा—क्ष के स्थान पर च्छ हुआ है ।

छारो < क्षार—क्ष के स्थान पर छ हुआ है ।

कुच्छेअयं < कौक्षेयवं—क्ष के स्थान पर च्छ और य लोप तथा अ स्वर श्रेय ।

छुरो < क्षुर—क्ष को छ हुआ है ।

उच्छा < उक्षन्—क्ष को च्छ हुआ है ।

छयं < क्षतम्—क्ष को छ हुआ है ।

सारिच्छं < सादक्ष्यम्—क्ष के स्थान पर च्छ ।

(१४९) उत्तर अर्थ के वाचक छ शब्द में क्ष के स्थान पर छ आदेश होता है ।^१ यथा—

छगो < क्षगः—उत्तर अर्थ होने से क्ष के स्थान पर छ हुआ है ।

रगो < क्षगः—समय वाचक होने से क्ष के स्थान पर छ हुआ है ।

(१५०) पृथ्वी अर्थ होने पर क्षमा शब्द में क्ष के स्थान पर छ आदेश होता है ।^२ यथा—

छमा < क्षमा—पृथ्वी अर्थ होने से क्ष के स्थान पर छ ।

रमा < क्षमा—माफी माँगना अर्थ होने से क्ष के स्थान में छ ।

(१५१) ऋक्ष शब्द में क्ष के स्थान पर छ विकल्प से होता है ।^३ यथा—

रिच्छं, रिक्खं < ऋक्षम्—ऋ के स्थान पर रि, क्ष के स्थान पर च्छ तथा विकल्पभाव पक्ष में बल हुआ है ।

(१५२) संयुक्त वम और डम् के स्थान में प आदेश होता है ।^४ यथा—

रपं, रूपिणी < वमम्, रक्मिणी—वम के स्थान पर प्प आदेश हुआ है ।

वुप्लं < वुड्मणम्—डम् के स्थान पर प्प आदेश हुआ है ।

१. क्षण उत्सवे ८।२।२०. हे० ।

२. क्षमाया की ८।२।१८. हे० ।

३. ऋशो वा ८।२।१६. हे० ।

४. इममोः ८।२।५२. हे० ।

(१५३) षक और स्क के स्थान में ख आदेश होता है, यदि उन संयुक्ताक्षरों से घटित शब्द द्वारा किसी संज्ञा की प्रतीति होती हो ।^१ यथा—

पोक्खरं < पुष्करम्—ष्क के स्थान पर क्ख हुआ है ।

पोक्खरिणी < पुष्करिणी " " " " " "

संघो < स्कन्धः—स्क के स्थान पर ख ।

संघावारो < स्कन्धावारः—स्क के स्थान पर ख ।

अप्पस्सदो < अपस्सन्दः—स्क के स्थान पर क्ख हुआ है ।

दुक्करं < दुष्करम्—संज्ञा न होने से षक के स्थान पर ख आदेश नहीं हुआ, किन्तु संयुक्त ष का लोप और क को द्वित्व ।

निक्कामं < निष्कामम्—

सक्कयं < संस्कृतम्—संज्ञा न होने से स्क के स्थान पर क्ख नहीं हुआ, किन्तु स् का लोप और क को द्वित्व ।

निक्कंपं < निष्कम्पम्—ष्क के स्थान पर ख नहीं हुआ किन्तु ष् लोप, क को द्वित्व ।

निक्कओ < निष्कृत —ष्क के स्थान पर क्ख नहीं हुआ, किन्तु ष् का लोप, क को द्वित्व, क का थ ।

नमोक्खारो < नमस्कारः—स्क को क, अ को ओ, स लोप और क को द्वित्व ।

सक्खारो < सस्कारः—त् लोप और क को द्वित्व ।

तक्खरो < तस्करः—स्क के स्थान पर ख नहीं, स लोप और क को द्वित्व ।

(१५४) ऊट्ट, इट्ट और संदट्ट शब्द के ट्ट को छोड़कर अन्य ट्ट के स्थान में ठ आदेश होता है ।^२ यथा—

लट्टी < लटि—य के स्थान पर ल और ट्ट के स्थान पर ठ तथा द्वित्व, पूर्व ठ के स्थान पर ट एवं ईकार को दीर्घ ।

मुट्टी < मुटि—ए के स्थान पर ट्ट और ह इकार को दीर्घ ।

दिट्टी < दिटि—ट्ट में रहनेवाली क के स्थान पर इकार; ट्ट के स्थान में ट्ट और इकार को दीर्घ ।

सिट्टी < धेटि—संयुक्त रेफ वा लोप, ताण्य श के स्थान पर इत्थ न, प्का को इकार तथा ट्ट को ट्ट और इकार को दीर्घ ।

१. पञ्चमोर्गिनि ८।२।४. हे० ।

२. छत्पातुट्टे शार्दूले ८।२।३४—हे०

पुट्टो < पृष्टः—पृ में रहनेवाली ऋ के स्थान पर उकार और ष्ट के स्थान पर ट्ट, विसर्ग को ओत्व ।

कट्टं < कष्टम्—ष्ट के स्थान पर ट्ट ।

सुरट्टो < सुराष्टः—रा को ह्रस्व, ष्ट के स्थान पर ट्ट, रेफ का लोप और विसर्ग को ओत्व ।

इट्टो < इष्टः—ष्ट को ट्ट, विसर्ग को ओत्व ।

अणिट्टं < अनिष्टम्—न को ण, ष्ट के स्थान पर ट्ट ।

उट्टो < उष्टः—ष्ट के ष् का लोप और ट्ट को द्वित्व ।

संदट्टो < संदष्टः—ट्ट में रहनेवाली ऋ के स्थान पर अ, प् का लोप और ट्ट को द्वित्व ।

(१५५) चैत्प शब्द के त्य को छोड़कर अन्य त्य के स्थान में च आदेश होता है ।^१ जैसे—

सच्चं < सत्यम्—त्य के स्थान पर च हुआ है ।

पच्चओ < प्रत्ययः—त्य के स्थान पर च और य लोप और अ स्वर शेष, ओत्व ।

णिच्चं, निच्चं < नित्यम्—न के स्थान पर चैत्पिक ण और त्य को च ।

पच्चच्छं < प्रत्यक्षम्—त्य को च और क्ष के स्थान पर च्छ ।

(१५६) प्रत्युप शब्द में त्य को च और प को त्रिकल्प से ह होता है ।^२ जैसे—

पच्चूहो, पच्चूसो < प्रत्युपः—त्य को च और प को ह ।

(१५७) कुछ स्थलों में त्व, ध्व, द्व और ध्व के स्थान में क्रमशः च्, च्छ, ज और ज्म आदेश होते हैं ।^३ यथा—

भोच्चा < भुक्त्वा—त्व के स्थान पर च्च और क का लोप ।

णच्चा < शात्वा—त्व के स्थान पर च्च ।

सोच्चा < भुक्त्वा—रेफ का लोप, ताल्भ्य श को दन्त्य स, उकार को ओत्व और त्व को च ।

पिच्छी < पृथ्वी—ध्व को च्छ हुआ है और पृ की ऋ को हकार ।

विर्ज्जं < विद्वान्—द्वा के स्थान पर ज्ज और न को अनुस्वार ।

जुज्ज्भा < जुद्ध्वा—ध्व के स्थान पर ज्ज हुआ है ।

१. त्यो चैत्वे ढा२।१३. हे० ।

२. प्रत्युपे परच ही वा ढा२।१४. हे० ।

३. त्व ध्व द्व-ध्वा च-छ-ज-भाः क्वचित् ढा२।१५. हे० ।

जज्जो < जज्यः—द्य के स्थान पर ज् ।

सेज्जा < शज्या— " "

भज्जा < भार्या—र्या के स्थान पर ज् ।

ऊज्जं < कार्याम्— " "

वज्जं < वर्याम्—र्या के स्थान में ज् ।

पज्जाओ < पठ्याय— " "

पज्जन्तं < पर्यन्तम्— " "

विशेष—शौरसेनी में र्य के स्थान पर द्य भी पाया जाता है ।

(१६१) ध्य के स्थान में ऋ पृं म्न् और ङ के स्थान में ण आदेश होते हैं । यथा—

म्हाणं < ध्यानम्—ध्य के स्थान पर ऋ आदेश

उवज्ज्माओ < उपाध्यायः—प का व, ध्य का ऋ, य छोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व ।

सज्ज्माओ < स्वाध्याय—ध्य के स्थान पर उक् ।

मज्ज्मां < मध्यं— " "

अज्ज्माओ < अध्यायः— " " तथा य छोप अ स्वर शेष

और ओत्व ।

निण्णं < निम्नम्—म्न के स्थान पर ण्ण ।

पज्ज्जुणो < प्रद्युम्न—प्र के स्थान पर प, द्यु के स्थान पर ज्जु और म्न के स्थान पर णो ।

णाणं < ज्ञानम्—ज्ञ के स्थान पर ण्ण आदेश ।

संण्णा < संज्ञा— " "

पण्णा < प्रज्ञा— " "

विण्णाणं < विज्ञानम्— " " और न के स्थान पर ण ।

(१६२) समस्त और स्तम्भ शब्द के स्त को लोक्षर अन्य स्त के स्थान में थ आदेश होता है । यथा—

हृत्थो < हृस्तः—स्त के स्थान पर थ आदेश हुआ है ।

थोत्तं < स्तोत्रम्—स्तो के स्थान पर थ तथा त्र में संयुक्त त् + र में से र का लोप और त को द्वित्व ।

१. सात्वत ध्य-दा ज् ८।२।२६. हे० तथा म्नाजोर्णं ८।२।४२. हे० ।

२. स्तस्य घोसमस्त-स्तम्ये ८।२।४५. हे० ।

पुञ्जहो < पूजाङ्—संयुक्त रेफ का लोप, ञ को द्वित्व, ह्ज के स्थान में ष् ।
अवरहो < अपराङ्—अप के स्थान पर अय और ङ के स्थान में ष् ।

(१६६) संयुक्त स्म, ष्म, स्म और ह्य के स्थान में ष् आदेश होता ।^१

उदाहरण—

कम्हारो < काश्मीरः—स्म के स्थान पर ष् आदेश और ईकार का आकार ।
पम्हाइ < पद्म—ष्मन् में से संयुक्त क् का लोप और स्म के स्थान पर ष् ।
कुम्हाणो < कुश्मानः—स्म के स्थान पर ष् और न को णत्व ।
कम्हारा < कश्मीराः—स्म के स्थान पर ष् और ईकार के स्थान पर आकार ।
गिम्हो < ग्रीष्मः—ष्म के स्थान पर ष् और विसर्ग को ओत्व ।
उम्हा < ऊष्मदा—ऊकार को उ और ष्म के स्थान पर ष् ।
अम्हारिसो < अस्मादश—स्म के स्थान पर ष् और दशः के स्थान पर रिसो ।
विम्हो < विष्मयः—स्म के स्थान पर ष् और म लोप, अ स्वर षेप
और ओत्व ।

वम्हा < वृष्णा—संयुक्त रेफ का लोप, ह्य के स्थान पर ष् आदेश ।

सुम्हा < सुष्वा—ह्य के स्थान में ष् आदेश ।

वंभणो, वम्हणो < व्वाष्ण—संयुक्त रेफ का लोप, ह्य के स्थान में ष् और
विकल्पाभाव में वंभ होता है ।

वंभचेरं, वम्हचेरं < व्वाष्चर्यम्—ह्य के स्थान पर ष् तथा चर्यम् का चेरं ।^२

ररसी < ररिमः—उक्त नियम लागू न होने से म लोप और स को द्वित्व ।

सरो < स्मर—उक्त नियम लागू न होने से म लोप ।

(१६७) संयुक्त ह्य के स्थान पर झ आदेश होता है ।^३ यथा—

सम्हो < सह्यः—ह्य के स्थान पर झ ।

मम्हं < मयम्—

गुज्मं < गुज्यम्—

(१६८) संयुक्त ङ के स्थान में ळ आदेश होता है ।^३ जैतं—

कल्हारं < कल्लारम्—संयुक्त ङ के स्थान में ळ आदेश ।

पल्हाओ < पल्लादः—संयुक्त रेफ का लोप, ङ के स्थान में ळ और द का लोप,
अ स्वर षेप तथा ओत्व ।

१. पद्म-श्म-ष्म-स्म ह्य ष्ः ८।२।७४. हे० ।

२. वं भो. ८।२।१२४. हे० । ३. हो ष्ः ८।२।७६. हे० ।

थोअं < स्तोकम्—स्तो के स्थान पर थो, क लोर और अ स्वर श्लेष ।

पत्थरो < प्रस्तरः—स्त के स्थान पर त्थ, विसर्ग को ओत्व ।

थुई < स्तुतिः—स्तु के स्थान पर थु और त का लोप, इकार को दीर्घ ।

समत्तं < समस्त्वम्—स्त संयुक्त में से आदि वर्ण स् का लोप और त् को द्वित्व ।

तंयो < स्तम्बः—आदि संयुक्त स् का लोप, म् को अनुस्वार और विसर्ग को ओत्व ।

(१६३) संयुक्त न्म के स्थान में म आदेश होता है ।^१ तथा—

जम्मो < जन्म—न्म को म्म आदेश ।

मम्महो < मन्मथः—न्म के स्थान पर म्म और थ के स्थान पर ह, विसर्ग को ओत्व ।

(१६४) ष्य और ष्य के स्थान में फ आदेश होता है ।^२ जैसे—

पुष्फं < पुष्पम्—ष्य के स्थान पर फ्फ आदेश ।

सप्फं < शप्पम्—

निष्फेसो < निष्पेपः

फंद्दणं < स्पन्दनम्—ष्य के स्थान में फ आदेश और न को णत्त्वं ।

पडिफफद्दी < प्रतिस्पर्धा—ष्य के स्थान पर फफ, संयुक्त रेफ का लोप ।

प्रति को पडि ।

फंसो < स्पर्श—ष्य के स्थान पर फ, संयुक्त रेफ का लोप, ओत्व और अकारण अनुस्वार ।

(१६५) संयुक्त स्न, षग, स्न, ह, और सूक्ष्म शब्द के स्न के स्थान में षह आदेश होता है ।^३ उदाहरण—

विष्हू < विष्णुः—ष्ग के स्थान पर षह तथा उकार को दीर्घ ।

कएहो < कृष्णः—कृ में रहनेवाली ऋ के स्थान पर अ और षग को षह ।

उएहोसं < उष्णीषम्—ष्ण के स्थान में षह, मूर्धन्व ष को सत्त्वं ।

जोएहा < ज्योत्स्ना—संयुक्तान्त्य थ का लोप और त्स्ना के स्थान पर षहा ।

एहाऊ < स्नायुः—स्न के स्थान पर षह, यकार का लोप और ऊ स्वर श्लेष तथा दीर्घ ।

एहाणं < स्नानम्—स्न के स्थान में षह और न को णत्त्वं ।

यएही < वडिः—ड्ड के स्थान में षह तथा द्वस्व हकार को दीर्घ ।

जएहू < जहूः—

१. न्मो मः ८।२।६१. हे० । २. ष्य-स्पर्शोः फः ८।२।५३. हे० ।

३. सूक्ष्म-स्न-ष्ण-स्न-ड-ड-क्षणा एहः ८।२।७५. हे० ।

सुवे कअ < स्वः कृतम्—श और व् का पृथक्करण, का को स, उत्व ।

सुवे जना < स्वे जनाः—स् और व् का पृथक्करण एवं उत्व ।

(१७२) ज्या शब्द में पृथक्करण और अन्त्य व्यंजन से पूर्व ईकार होता है । यथा—

जीआ < ज्या—ज और या का पृथक्करण, ईस्व और य लोप तथा आ स्वर शेष ।

—

चौथा अध्याय

वर्ण-परिवर्तन

वर्ण त्रिवृत्ति अध्याय में वर्ण परिवर्तन (स्वर और व्यंजनों का परिवर्तन) दिव्यलाया गया है, पर वह इतना वैयक्तिक और शास्त्रीय है, जिससे प्राकृतभाषा की शब्दावली को अवगत करने में जिज्ञासुओं को आघात करना होगा। अतः इस अध्याय में सरलता-पूर्वक ध्वनि-परिवर्तन के नियमों का सौदाहरण प्रिचन किया जायगा। सध्य यह है कि संस्कृत ध्वनियों में परिवर्तन कर प्राकृत शब्द गढ़े जाते हैं। अतः प्राकृत भाषा के पैयाकरणों ने प्राकृत की शब्दावली संस्कृत को प्रवृत्ति—मूल शब्द मानकर सिद्ध की है।

स्वर-परिवर्तन

(१) संस्कृत की अ ध्वनि प्राकृत में आ, इ, ई, उ, ए, ओ, अइ और आइ में परिवर्तित हो जाती है। उदाहरण—

(क) अ = आ—संस्कृत की अ ध्वनि का विकल्प से आ में परिवर्तन ।

आहिआई, अहिआई < अभियाति—अ को विकल्प से दीर्घ, मज्य और अन्त्य य तथा त का लोप, अ और इ स्वर शेष, दीर्घ ।

आफंसो, अफंसो < अस्पदाः—अ को विकल्प से दीर्घ, संयुक्त स का लोप, प को फ, संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व ।

चाउरंतं, चउरंतं < चतुरन्तम्—चकारोत्तर अ को दीर्घ, त लोप, उ शेष ।

दाहिणो, दक्खिणो < दक्षिणः—दकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, क्ष को विकल्प से ह, विकल्पभावपक्ष में वष ।

पारकेरं, परकेरं < परकीयम्—पकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, कीय के स्थान पर केरं ।

पारक्कं परक्कं < परकीयम्—पकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, कीय को वकं ।

पुणा, पुण < पुनः—न जो ण एवं विकल्प से दीर्घ ।

पायडं पयडं < प्रकटम्—प्र के संयुक्त र का लोप, पकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, क लोप, अस्वर और य श्रुति, ट को ड ।

पाडिवआ, पडिवआ < प्रतिपत्—प्र के संयुक्त र का लोप, पकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, प का व और त् का आ ।

पाडिसिद्धी, पडिसिद्धी < प्रतिसिद्धिः—प्र के संयुक्त रेफ का छोप और अ को विकल्प से दीर्घ, अन्तिम हकार को दीर्घ ।

पाडिफदी, पडिफदी < प्रतिस्पर्धी—प्र के संयुक्त रेफ का छोप, अ को विकल्प से दीर्घ, स छोप और प को फ तथा संयुक्त रेफ का छोप, ध को द्वित्व और पूर्व को द ।

पावयणं, पवयणं < प्रवचनम्—प्र के संयुक्त रेफ का छोप, अ को विकल्प से दीर्घ, च छोप और स्वर को य ध्रुति, न को ण ।

पारोहो, परोहो < प्रोहः—प्र के संयुक्त रेफ का छोप और अ को विकल्प से दीर्घ ।

पावासु, पयासु < प्रवासी—

पासिद्धी, पसिद्धी < प्रसिद्धिः—

पासुत्तो पासुत्तो < प्रसुतः—

प छोप और त को द्वित्व ।

माणंसी, मणंसी < मनस्वी—मकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, न को ण, अनुस्वार और संयुक्त व का छोप ।

माणंसिणी, मणंसिणी < मनस्विनी

सामिद्धी, समिद्धी < समृद्धिः—सकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, मकारोत्तर ऋ को इ और इकार को ईकार ।

सारिच्छो, सरिच्छो < सदक्षः—सकारोत्तर अ को दीर्घ और दक्ष के स्थान पर रिच्छो ।

(ख) अ = इ संस्कृत की अ ध्यनि का इ में परिवर्तन ।

इसि < ईपत्—दीर्घ ईकार को ह्रस्व इकार, पकारोत्तर अ को इकार और अन्तिम ह्रस्वस्य व्यञ्जन त् का छोप ।

उचिमो < उत्तमः—तकारोत्तर अकार को इकार और विसर्ग का ओत्व ।

कइमो < कतमः—तकारोत्तर अकार को इकार और विसर्ग को ओत्व ।

क्रियिणो < कृपणः—कृ में रहनेवाली ऋ को इ, प को च और अकार को इकार, विसर्ग को ओत्व ।

द्विर्णं < दत्तं—दकारोत्तर अकार को इत्य तथा ङ के स्थान पर णं ।

मिरिअं < मरिचम्—मकारोत्तर अकार को इकार, च का छोप और अ स्वर छेप ।

मडिभमो < मधमः—संयुक्त य का छोप, ध के स्थान पर भ, द्वित्व और पूर्ववर्ती भ को ज् तथा अ को इकार ।

मुईगो < मृदङ्गः—मृ में रहनेवाली ऋ के स्थान पर उ, द छोप और अ स्वर के स्थान पर इत्य ।

वेडिसो < वेतसः—त को ढ और अकार के स्थान पर इत्य ।

विअणं < व्यजनम्—संयुक्त व का लोप और अ को इत्य, ज लोप तथा अ स्वर शेष ।

विळीअं < व्यलीरुम्—संयुक्त व का लोप और अ को इत्य, क लोप और अ स्वर शेष ।

सिविणो < स्वन्तः—स्व का वृथक्करण, अ को इत्य तथा न को णत्व, विसर्ग का ओत्स्य ।

इंगारो, अंगारो < अङ्गारः—विकल्प से अ के स्थान पर इत्य ।

पिककं, पक्कं < परम्—पकारोत्तर अकार को विकल्प से इत्य, संयुक्त व का लोप और क को द्वित्य ।

णिडालं, णडालं < लडाटम्—ककारोत्तर अ को विकल्प से इत्य, ट को ढ ।

छत्तिवण्णो, छत्तवण्णो < सप्तपर्गः—सप्त के स्थान पर छत्त, अकार को इत्य, प को व तथा संयुक्त रेफ का लोप, ण को द्वित्य पूर्व विसर्ग का ओत्स्य ।

(ग) अ = ई—शब्द के आदि में रद्वेगुली संस्कृत की अ ध्वनि ई में परिवर्तित हो जाती है ।

हीरो, हरो < हारः—हकारोत्तर अकार को इत्य ।

(प) अ = उ—संस्कृत की अ ध्वनि का उ ध्वनि में परिवर्तन अर्थात् संप्रसारण ।

गउओ < गवयः—पकारोत्तर अ के स्थान पर उ और य लोप, अ शेष, विसर्ग का ओत्स्य ।

गउआ < गउयाः—पकारोत्तर अ के स्थान पर उ, य लोप और स्वर शेष, खोलिग ।

भुणी < ध्वनिः—संयुक्त व का लोप, ध को ऋ, अकार को उत्स्य, न कां प ।

वीसुं < विश्वक्—संयुक्त व लोप, अ को उत्स्य ।

तुरिअं < स्वरितम्—संयुक्त व लोप, अ को उत्स्य ।

सुअइ, सुअइ < स्वपिति—संयुक्त व लोप, अ को उत्स्य ।

खुडिओ, खुडिओ < खण्डितः—विकल्प से खकारोत्तर अकार को उ, व लोप और अ स्वर शेष ।

चुडं, चंडं < चण्डम्—चकारोत्तर अकार को वैकल्पिक उ ।

पुडम, पडुमं, पुडुमं, पडमं < प्रथमम्—विकल्प से पकारोत्तर अकार को उ पकारोत्तर अकार को क्रमशः दोनों अकार को उ तथा ध के स्थान पर व ।

(ङ) अ = ऊ—संस्कृत की अ ध्वनि का ऊ में परिवर्तन ।

अहिण्णू < अभिड्ड—भ के स्थान पर ह, ङ के स्थान पर ण्णू तथा अ का ङ ।

आगमण् < आगमङ्—ङ के स्थान पर ण् और अ को उत्प ।

क्यण् < कृतञ्—छ का लोप, इ के स्थान पर ण और अ को उत्प ।

विण् < विङ्—ञ को ण और अ को उत्प ।

सव्वण् < सर्वङ्—संयुक्त रेफ का लोप, व को द्वित्व, श को ण तथा अ को उत्प ।

(च) अ = ए—संस्कृत की अ ध्वनि का प्राकृत में एकार परिवर्तन होता है ।

एत्थ < अत्र—अ के स्थान पर ए, त्र के स्थान पर थ ।

अंतेउरं < अन्त.पुरम्—तकारोत्तर अकार को एकार, पत्तार का लोप और उ स्वर शेष ।

अंतेआरी < अन्तरचारी—तकारोत्तर अकार को एकार, चकार लोप और आ स्वर शेष ।

गेंदुअं < कन्दुअम्—क के स्थान पर ग तथा अकार को एकार और क लोप, अ स्वर शेष ।

वन्हचेरं < वल्लचर्यम्—संयुक्त रेफ का लोप, ह के स्थान पर म्, चकारोत्तर अकार को एकार, संयुक्त य का लोप ।

सेज्जा < शय्या—तालव्य ङ को दन्त्य स, अकार को एकार और य को ञ ।

सुंदेरं < सौन्दर्यम्—तकारोत्तर अकार को उकार, दकारोत्तर अ को एकार और संयुक्त य का लोप ।

अच्छेरं, अच्छरिअं < आरव्यम्—च के स्थान पर छ तथा विकल्प से अकार को एकार ।

उकरो, उकरो < उक्करः—संयुक्त त का लोप, का को द्वित्व और ककारोत्तर अकार को एकार ।

पेरंतो, पञ्जंतो < पर्यन्तः—पकारोत्तर अकार को विकल्प से एकार, विकल्पाभावे य के स्थान पर ञ ।

वेल्ली, वल्ली < वल्ली—रकारोत्तर अकार को विकल्प से एकार ।

(छ) अ = ओ—संस्कृत की अ ध्वनि प्राकृत में ओ रूप में परिवर्तित होती है ।

नमोकारो < नमस्कारः—मकारोत्तर अकार को ओकार, संयुक्त स का लोप और क को द्वित्व ।

परोप्परं < परस्परम्—रकारोत्तर अकार को ओकार, संयुक्त त का लोप और प को द्वित्व ।

ओप्पेइ, अप्पेइ < अर्पयति—अ को विकल्प से ओ, संयुक्त रेफ का लोप, प को द्वित्व और य को प्थ तथा त लोप और इ स्वर शेष ।

सोवइ, सुवइ < स्वपिति—संयुक्त व् का लोप, परचात् सकारोत्तर अकार को ओकार, प को व और त्रिभक्ति चिह्न इ ।

ओप्यिअं, अप्यिअं < अर्पितम्—विकल्प से अकार को ओकार, रेफ का लोप और प को द्वित्व, त लोप और अ स्वर शेष ।

पोम्मं < पदूमम्—पकारोत्तर अकार को ओकार, दूम के स्थान पर म्म ।

(ज) अ अइ—संस्कृत के मय प्रत्ययान्त शब्दों में विकल्प से मकारोत्तर अकार को प्राकृत में अइ होता है ।

जलमइअं, जलमअं < जलमयम्—मकारोत्तर अकार के स्थान पर विकल्प से अइ, य लोप और अ स्वर शेष ।

विसमइअं, विसमअं < विपमयम्—मकारोत्तर अकार के स्थान पर विकल्प से अइ, य लोप और अ स्वर शेष ।

दुहमइअं, दुहमअं < दुःखमयम्—ख के स्थान पर ह, मकारोत्तर अकार के स्थान पर विकल्प से अइ, य लोप, अ स्वर शेष तथा अ के स्थान पर यभृति ।

सुहमइअं, सुहमअं < सुखमयम्— " " "

(ऋ) अ = आइ—संस्कृत की अ ध्वनि प्राकृत में आइ भी होती है ।

उणाइ, न उणो < न पुनः—प का लोप, उ स्वर शेष तथा नकारोत्तर अकार को विकल्प से आइ ।

पुणाइ, पुणो < पुनः— " " "

(र) संस्कृत की आ ध्वनि प्राकृत में अ, इ, ई, उ, ऊ, ए और ओ में परिवर्तित हो जाती है ।

(क) आ = अ—संस्कृत की आ ध्वनि निम्नलिखित शब्दों में अ रूप में परिवर्तित हो जाती है ।

आचरिओ < आचार्यः—च लोप, अ स्वर शेष और य भृति, वा में रहनेवाके आ को अ, र्य को रिओ ।

कंसिओ < कंसिकः—कां के स्थान पर कं वाकार को अकार ।

कंसं < कंसम्— " " " संयुक्त य लोप ।

पंडवो < पाण्डवः—पा के स्थान पर प ।

पंसणो < पालनः— " "

पंसू < पंसुः— " "

मरहट्टो < महाराष्ट्रः—हा और रा के स्थान पर ह, र तथा वर्णव्यत्यय, संयुक्त प और रेफ का लोप, ट को द्वित्व ।

मंसं < मांसम्—मां के आकार को अकार ।

बंसियो—गंशिकः—गां के आकार को अकार, ताल्प्य ङ को दन्त्य स, ङ छोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व ।

सामओ < श्यामाङ्—संयुक्त मा का लोप, मा के आकार को अकार, ङ छोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व ।

संजत्तिओ < सांयत्रिकः—सां के स्थान पर स, य को ज, संयुक्त रेफ का लोप त को द्वित्व, क लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व ।

ससिद्धिओ < सांसिद्धिकः—सां के स्थान पर स, क लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व ।

उक्खयं, उम्त्तायं < उत्खातम्—संयुक्त त का लोप, स को द्वित्व, पूर्ववर्ती क को ल तथा विकल्प से खा को ख, त लोप, अ स्वर शेष, य ध्रुति ।

पुब्बएहो, पुब्बाएहो < पूर्वाङ्गः—संयुक्त रेफ का लोप, व को द्वित्व, आ को विकल्प से अ ।

कलओ, कालओ—कालक.—मा में रहनेवाले आ को विकल्प से अ, क लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व ।

कुमरो, कुमारो—कुमारः—मा में रहनेवाले आ को विकल्प से अ ।

खइरं, खाइरं < खादिम्—खा के स्थान पर विकल्प से ख, द लोप और इ स्वर शेष ।

चमरो, चामरो < चामरः—चा को विकल्प से च ।

तलवेट, तालवेट < तालवृत्तम्—ता को विकल्प से त तथा वृत्तम् को वेट ।

नराओ, नाराओ < नाराच.—निकरन् से ना को न, च लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व ।

पययं, पायय < प्राट्टम्—संयुक्त रेफ का लोप, आ को विकल्प से अ, त लोप, स्वर शेष तथा यधुति ।

बलया, बलाया < बलाका—ला के स्थान पर विकल्प से ल, क खौप, आ स्वर शेष और यधुति ।

बम्हणो, बाम्हणो < माहणः—संयुक्त रेफ का लोप, आ को विकल्प से अ, झ को म्ह ।

ठविओ, ठाविओ < स्थापितः—संयुक्त स का लोप, थ को ठ तथा आकार को विकल्प से अकार, प को ब, त लोप, अ स्वर शेष, ओस्व ।

परिट्ठविओ, परिट्ठाविओ < परिष्ठापितः—ठ को विकल्प से ठ ।

संठविओ, संठाविओ < संस्थापितः—संयुक्त स का लोप, था को विकल्प से थ और थ के स्थान पर ठ ।

हलिओ, हलिओ < हलिङः—ह्र के स्थान पर विकल्प से ह, क छेप, स्वर षेप और विसर्ग को ओस्व ।

अह्य, अह्या < अयवा—य के स्थान पर ह और वा की विकल्प से व ।

तह, तहा < तथा—थ के स्थान पर ह और था में रहनेवाले आकार को विकल्प से अकार ।

जह, जहा < यथा— " " " "

व, वा < वा—वा में रहने वाले आकार को विकल्प से व ।

ह, हा < हा—हा " "

(ख) आ = इ—संस्कृत की आ ध्वनि निम्नलिखित शब्दों में इ के रूप में परिवर्तित होती है ।

आइरिओ, आयरिओ < आचार्यः—च का छेप, आ स्वर षेप और इत्त आ के स्थान पर विकल्प से इत्त्व ।

कुप्पिसो, कुप्पासो < कृपांसः—ऊकार के स्थान पर उकार, संयुक्त रेफ का छेप और प को द्वित्व तथा आकार को विकल्प से इकार ।

निसिअरो, निसाअरो < निशाकरः—तालाव्य ष को दृश्य स तथा सा में रहने वाले आ को विकल्प से इकार, क छेप, अ स्वर षेप और विसर्ग को ओस्व ।

(ग) आ = ई—निम्नलिखित शब्दों में संस्कृत की आ ध्वनि ई में परिवर्तित होती है ।

सहीडो < सहीडः—संयुक्त व का छेप, छ को द्वित्व और आकार को इकार तथा ट को ड, विसर्ग को ओस्व ।

ठीणं, थीणं < स्थानम्—संयुक्त स का छेप, स्थ के स्थान में थ और थ को ठ तथा आकार को ईकार, न को ण ।

- (घ) आ = उ

उहं < आर्हम्—आ के स्थान पर उ, र्ह को लु ।

सुएहा < सास्ना—सा में रहने वाले आ को उकार और स्ना के स्थान पर ण्हा ।

थुवओ < स्तावरु—स्त के स्थान पर थ और आकार को उकार, क छेप और अ स्वर षेप, विसर्ग को ओस्व ।

(ङ) आ = ऊ

अज्जू < आर्या—साद् अर्थ होने से र्य के स्थान पर ज और आकार को ऊकार ।

ऊसारो, आसारो < आसारः—आ के स्थान पर विकल्प से ऊ ।

(च) आ = ए—निम्नलिखित शब्दों में संस्कृत की आ ध्वनि ए में परिवर्तित होती है ।

गोत्रम् < प्राहम्—संयुक्त रेफ वा लोप, आकार को एकार, झ के स्थान पर ज्क ।
 असहृजो, असहृजो < असहाय्य.—दा के स्थान पर विरल्प से हे और घ्य
 को ज्क, विसर्ग को ओत्व ।

एत्तिअमेत्तं, एत्तिअमत्तं < एतावन्मात्रम्—एतावन् के स्थान पर एत्तिअ, मा
 के स्थान पर विकल्प से मे, संयुक्त रेफ वा लोप, त को द्वित्व ।

भोअणमेत्तं, भोअणमत्तं < भोजनमात्रम्—ज का लोप और अ स्वर श्लेष, मा
 के स्थान पर मे, संयुक्त रेफ का लोप, त को द्वित्व ।

देर, दार < द्वारम्—संयुक्त व का लोप, आकार को विकल्प से एकार ।

पारेवओ, पारावओ < पारापत.—रा में रहने वाले आ के स्थान पर विकल्प
 से ए, प के स्थान पर व, त लोप और अ स्वर श्लेष, विसर्ग को ओत्व ।

पच्छेकम्मं, पच्छाकम्मं < पश्चात्कर्म—पश्चात् के स्थान पर पच्छा और आकार
 को विकल्प से एकार ।

(ङ) आ = ओ

ओल्ल < आर्द्रम्—आ के स्थान पर ओ, द्र के स्थान पर ल ।

ओली < शाली—आ के स्थान पर ओ ।

(३) सस्कृत की इ ध्वनि प्राकृत में अ, इ, उ, ए और ओ के रूप में परिवर्तित
 होती है ।

(क) इ = अ—निम्नलिखित शब्दों में इ ध्वनि प्राकृत में अ हो जाती है ।

इअ < इति—तरार का लोप और इ स्वर श्लेष तथा इ के स्थान पर अ ।

वित्तिरो < तित्तिरि.—रकार में रहने वाली इकार के स्थान पर अ ध्वनि ।

पहो < पथिन्—थ के स्थान पर ह और इकार के स्थान पर अ, हलन्त्व अन्य
 व्यंजन का लोप ।

पुहई < पृथिवी—पृ में रहने वाली ऋ के स्थान पर उ, थ के स्थान पर इ'
 इकार को अकार और व लोप, ई स्वर श्लेष ।

पडसुआ < प्रतिभुत्—प्रति के स्थान पर पड संयुक्त रेफ का लोप, ताल्ठ्य श
 को दृश्य स और त् को आ ।

वहेडओ < विभीतक.—व में रहने वाली इ के स्थान पर अ, भ के स्थान पर ह,
 इ को ए, त के स्थान पर छ, क लोप और अ स्वर श्लेष, विसर्ग को ओत्व ।

मुसओ < मूपिठ—मूर्धन्य प को दृन्त्य स तथा इकार को अकार, क लोप,
 अ स्वर श्लेष और विसर्ग को ओत्व ।

हलदा < हरिदा—र के स्थान पर ल, इकार को अकार और द्रा में सं रेफ का
 लोप और द को द्वित्व ।

इंगुअं, अंगुअं < इंगुदम्—इ के स्थान पर विकल्प से अ, इ लोप और अ स्वर शेष ।

सिडिलं, सडिलं < सिथिलम्—तालव्य ष का दन्त्य स, ल में रहनेवाली इ के स्थान पर विकल्प से अ तथा थ को ढ ।

पसिडिलं, पसडिलं < पसिथिलम्—संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य ष को दन्त्य ष, विकल्प से ह के स्थान पर अ, थ को ढ ।

(ख) इ = ई—निम्नलिखित शब्दों में संस्कृत की इ ध्वनि प्राकृत में ई हो जाती है ।
जीहा < जिह्वा—जि में रहने वाली इ के स्थान पर ईकार, संयुक्त व का लोप ।
वीसा < विशति—वि में रहने वाली इकार के स्थान पर ईकार, अनुस्वार का लोप ।

वीसा < विशत्—वि में से संयुक्त रेफ का लोप, इकार को ईकार, अनुस्वार लोप ।

सीहो < सिंहः—सि में संयुक्त इकार को ईकार, अनुस्वार लोप ।

नीसरई, निस्सरइ < निस्सरति—नि में रहनेवाली इकार को विकल्प से दीर्घ ।

नीसहं, निस्सहं < निस्सहम्— " " "

(ग) इ = उ—निम्न शब्दों में संस्कृत की इ ध्वनि प्राकृत में उ हो जाती है ।

उच्छू < इक्षुः—इ के स्थान पर उ और क्षु के स्थान पर ऋट् ।

दु < द्वि—संयुक्त व का लोप और इकार को उकार ।

दुविहो < द्विविधः—संयुक्त व का लोप और इकार को उकार तथा ध के स्थान पर ह, विसर्ग को आन्त ।

णु < नि—नि में रहने वाली इकार के स्थान पर उकार, न को ण ।

दुआई < द्विजातिः—संयुक्त व का लोप और इकार के स्थान पर उकार, ज लोप और भा स्वर शेष, त लोप और इकार को दीर्घ ।

नु < नि—इकार को उकार ।

दुहा < द्विधा—संयुक्त व का लोप, इकार को उकार, ध को ह ।

णुमज्जइ < निमज्जति—नि में रहनेवाली इ के स्थान पर उ और न को णत्थ, व का लोप, इ स्वर शेष ।

दुमत्तो < द्विमात्रः—संयुक्त व का लोप, इकार को उकार, मात्रः को मत्तो ।

णुमन्नो < निमन्नः—नि में रहनेवाली इकार के स्थान पर उकार, संयुक्त ग का लोप और न को द्वित्व ।

दुरेहो < द्विरेलः—संयुक्त व का लोप, इकार को उकार, ख को ह ।

पावासु < प्रवासिन्—संयुक्त रेफ का लोप, प को दीर्घ, सि में रहनेवाली इ के स्थान पर उ ।

मेज्जं < प्राहम्—संयुक्त रेफ का लोप, आकार को एकार, छ के स्थान पर ङ्ग ।
 असहेज्जो, असहज्जो < असहाज्यः—हा के स्थान पर विकल्प से हे और ए
 को ज, विसर्ग को ओत्त्व ।

एत्तिअमेत्तं, एत्तिअमत्तं < एतावन्मात्रम्—एतावन् के स्थान पर एत्तिअ, मा
 के स्थान पर विकल्प से मे, संयुक्त रेफ का लोप, त को द्वित्व ।

भोअणमेत्तं, भोअणमत्तं < भोजनमात्रम्—ज का लोप और अ स्वर शेष, मा
 के स्थान पर मे, संयुक्त रेफ का लोप, त को द्वित्व ।

देरं, दारं < द्वारम्—संयुक्त व का लोप, आकार को विकल्प से एकार ।

पारेवओ, पारावओ < पारापतः—रा में रहने वाले आ के स्थान पर विकल्प
 से ए, प के स्थान पर व, त लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्त्व ।

पच्छेकम्मं, पच्छाकम्मं < पश्चात्कर्म—पश्चात् के स्थान पर पच्छा और आकार
 को विकल्प से एकार ।

(छ) आ = ओ

ओल्लं < आर्लम्—आ के स्थान पर ओ, ङ् के स्थान पर छ ।

ओली < आली—आ के स्थान पर ओ ।

(३) संस्कृत की इ ध्वनि प्राकृत में अ, इ, उ, ए और ओ के रूप में परिवर्तित
 होती है ।

(क) इ = अ—निम्नलिखित शब्दों में इ ध्वनि प्राकृत में अ हो जाती है ।

इअ < इति—तकार का लोप और इ स्वर शेष तथा इ के स्थान पर अ ।

तित्तिरो < तित्तिरिः—रकार में रहने वाली इकार के स्थान पर अ ध्वनि ।

पहो < पथिन्—थ के स्थान पर ह और इकार के स्थान पर अ, हलन्त्य अन्त्य
 व्यंजन का लोप ।

पुहई < पृथिवी—पृ में रहने वाली ऋ के स्थान पर उ, थ के स्थान पर ई
 हकार को अकार और व लोप, ई स्वर शेष ।

पडंसुआ < प्रतिभुत्—प्रति के स्थान पर पड संयुक्त रेफ का लोप, ताण्ण श
 को दन्त्य स और त् को आ ।

वहेडओ < विभीतकः—व में रहने वाली इ के स्थान पर अ, भ के स्थान पर ह
 इ को ए, त के स्थान पर ड, क लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्त्व ।

मुसओ < मूपिकः—मूर्धन्य प को दन्त्य स तथा इकार को अकार, क लोप,
 अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्त्व ।

हलद्दा < हनिद्दा—र के स्थान पर ल, इकार को अकार और दा में से रेफ का
 लोप और द को द्वित्व ।

इंगुअं, अंगुयं < इंगुदम्—इ के स्थान पर विकल्प से अ, द लोप और अ स्वर शेष ।

सिडिलं, सडिलं < सिडिन्म्—तालव्य श का दन्त्य स, स में रहनेवाली इ के स्थान पर विकल्प से अ तथा थ को द ।

पसिडिलं, पसडिलं < पसिथिलम्—संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स, विकल्प से इ के स्थान पर अ, थ को द ।

(ख) इ = ई—निम्नलिखित शब्दों में संस्कृत की इ ध्वनि प्राकृत में ई हो जाती है ।
 जीहा < जिहा—जि में रहने वाली इ के स्थान पर ईकार, संयुक्त व का लोप ।
 वीसा < विशति—वि में रहने वाली इकार के स्थान पर ईकार, अनुस्वार का लोप ।

तीसा < तिशत्—ति में से संयुक्त रेफ का लोप, इकार को ईकार, अनुस्वार लोप ।

सीहो < सिहः—सि में संयुक्त इकार को ईकार, अनुस्वार लोप ।

नीसरई, निस्सरइ < निस्सरति—नि में रहनेवाली इकार को विकल्प से दीर्घ ।

नीसहं, निस्सहं < निस्सहम्— " " "

(ग) इ = उ—निम्न शब्दों में संस्कृत की इ ध्वनि प्राकृत में उ हो जाती है ।

उरुहू < इधुः—इ के स्थान पर उ और धु के स्थान पर षट् ।

दु < द्वि—संयुक्त व का लोप और इकार को उकार ।

दुयिहो < द्विविधः—संयुक्त व का लोप और इकार को उकार तथा ध के स्थान पर ह, विसर्ग को आन्तर ।

णु < नि—नि में रहने वाली इकार के स्थान पर उकार, न को ण ।

दुआई < द्विआतिः—संयुक्त व का लोप और इकार के स्थान पर उकार, ज लोप और आ स्वर शेष, त लोप और इकार को दीर्घ ।

नु < नि—इकार को उकार ।

दुहा < द्विधा—संयुक्त व का लोप, इकार को उकार, ध को ह ।

णुमज्जइ < निमज्जति—नि में रहनेवाली इ के स्थान पर उ और न को णत्व, त का लोप, इ स्वर शेष ।

दुमत्तो < द्विमात्रः—संयुक्त व का लोप, इकार को उकार, मात्रः को मत्तो ।

णुमन्नो < निमन्नः—नि में रहनेवाली इकार के स्थान पर उकार, संयुक्त ग का लोप और न को द्वित्व ।

दुरेहो < द्विरेखः—संयुक्त व का लोप, इकार को उकार, ख को ह ।

पावासु < प्रवासिन्—संयुक्त रेफ का लोप, प को दीर्घ, सि में रहनेवाली इ के स्थान पर उ ।

दुवयणं < द्विवचनम्—संयुक्त व का लोप, इकार को उकार, व के स्थान पर य, न को णत्व ।

पाचासुओ < प्रवासिरुः—संयुक्त रेफ का लोप, अ को दीर्घ, सि में रहने वाली इकार को उकार, क लोप और विसर्ग को ओत्व ।

जडुद्विलो, जह्द्विलो < युधिष्ठिरः—य को ज, घ को इ तथा इकार के स्थान पर विकल्प से उकार, संयुक्त प का लोप, ठ को द्वित्व, पूर्यं ठ को ट और र को ल ।

दुउणो, विउणो < द्विगुणः—संयुक्त घ का लोप, इकार को उकार, ग लोप और उ स्वर शेष । विकल्प से द का लोप होने पर विउणो रूप बनेगा ।

दुइओ, विइओ < द्वितीयः—संयुक्त व का लोप, इकार को उत्त्व, व लोप, ई शेष और हस्व, य लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग का ओत्व ।

(घ) इ = ए

मेरा > मिरा—मि में रहनेवाली इ को एकार ।

केसुअं, किंसुअं < किंसुअम्—इकार को एकार, क लोप और अ स्वर शेष । इकार को एत्व न होने पर किंसुअं रूप बनता है ।

(इ) इ = ओ

दोवयणं < द्विवचनम्—संयुक्त व का लोप और इकार को ओत्व, सम्भवती व लोप, अ स्वर शेष और य श्रुति ।

दोहा, दुहा < द्विधा—संयुक्त व का लोप, इकार को विकल्प से ओत्व, घ को ह ।

(च) नि = ओ

ओउमरो, निउमरो < निर्भरः—निर्भर शब्द में विकल्प से नि के स्थान पर ओ होता है, तथा संयुक्त रेफ का लोप, ऋ को द्वित्व, पूर्ववर्ती ऋ को ज ।

(४) संस्कृत की ई ध्वनि प्राकृत में अ, आ, इ, उ, ऊ और ए में परिवर्तित होती है ।

ई = अ

हरडई < हरीतकी—री में की ई के स्थान पर अ, त को ड और क लोप तथा ई स्वर शेष ।

ई = आ—

कम्हारा < कश्मीराः—रम के स्थान पर म्इ तथा ईकार के स्थान पर आ ।

इ = इ—निम्न शब्दों में संस्कृत की ई ध्वनि प्राकृत में इ हो जाती है ।

ओसिअंतं < अबसीदत्—अव = ओ, सी के स्थान पर सि, दत् = अंतं ।

आणिअं < आनीतम्—नी के स्थान पर हस्व इकार होने से णि, व लोप और अ स्वर शेष ।

विहूणो, विहीणो < विहीनः—इकारोत्तर ईकार को विकल्प से उकार तथा न को णत्व, विसर्ग को ओत्व ।

हूणो, हीणो < हीनः—

(व) ई = ए—संस्कृत के निम्न लिखित शब्दों में ई ध्वनि को ए हो जाता है ।

आमेलो < आपीडः—पकारोत्तर ईकार को एकार और ड को ङ ।

केरिसो < कीदशः—ककारोत्तर ईकार को एकार, दशः के स्थान पर रिसो ।

एरिसो < ईदशः—ई के स्थान पर एकार, दशः के स्थान पर रिसो ।

पेऊसं < पीयूपम्—वकारोत्तर ईकार को एत्व, य लोप और ऊ खर सोप, मूर्धन्य प को इत्य स ।

घट्टेडओ < विभीतरु—इकार को अकार, भकारोत्तर ईकार को एकार, भ के स्थान पर ह, त को ड और क लोप, भ स्वर सोप, विसर्ग को ओत्व ।

नेडं, नीडं < नीडम्—नकारोत्तर ईकार को विकल्प से एकार ।

पेटं, पीटं < पीटम्—पकारोत्तर ईकार को विकल्प से एकार तथा ड को ड ।

(५) संस्कृत की उ ध्वनि प्राकृत में अ इ, ई, ऊ और ओ में परिवर्तित हो जाती है ।

उ = अ—निम्न लिखित शब्दों में संस्कृत की उ ध्वनि प्राकृत में अ में परिवर्तित होती है ।

अगरुं < अगुरुम्—गकारोत्तर उकार के स्थान पर अ ।

गलोड् < गुरुची—गकारोत्तर उकार को अ, उ को ङ और ऊ को ओ, चकार का लोप, ई स्वर सोप, परचात् हस्व ।

गरुई <—गुरीं—गकारोत्तर उकार को अ, रीं का ट्थन्करण अतः रीं ।

सउडो < सुडुः—मकारोत्तर उकार को अ, ङ लोप और ट को ड ।

मउरं < मुडुम्—

” ”

मउलो < मुडुः—

” ”

मउलं < मुडुम्—

” ”

सोअमल्लं < सौकुमार्यम्—भौ को भोकार होने से सो, क पर लोप और उसके स्थान में उ स्वर सोप, उकार को अ तथा मार्यं का मल्लं ।

अयरिं, उयरिं < उपरि—उ के स्थान पर विकल्प से अ, प को य ।

गरुओ, गुरुओ < गुरुः—गकारोत्तर उ के स्थान पर विकल्प से अ, क लोप और अ स्वर सोप, विसर्ग को ओत्व ।

(५) उ = इ—संस्कृत के निम्न लिखित शब्दों की उ ध्वनि का प्राकृत में इ हो जाता है ।

पुरिसो < पुरयः—रकारोत्तर उकार के स्थान पर इ, मूर्धन्य प को इत्य म ।

पउरिसँ < पौरपम्—औ के स्थान पर ओ, पश्चात् अ + उ, रकारोत्तर उ को इस्व ।

भिउडी < भुकुटिः—संयुक्त रेफ का छोप, उकार को इकार, क छोप, उ स्वर शेष और ट को ढ ।

(ग) उ = ई

. छीअं < क्षुत्वम्—क्ष के स्थान पर छ, उकार को ईकार, त छोप और अ स्वर शेष ।

(घ) उ = ऊ

दूहवो, दुहओ < दुर्भगः—द्वारोत्तर उकार को विकल्प से उकार, संयुक्त रेफ का छोप, भ को ह और ग छोप, अ स्वर शेष तथा ओस्व ।

मूसलं, मुसलं < मुपलम्—गारोत्तर उकार को विकल्प से ऊरव ।

दूसहो, दुस्सहो < दुस्तदः—द्वारोत्तर उकार को विकल्प से ऊस्व ।

सूहवो, सुहओ < सुभागः—पकारोत्तर उकार को विकल्प से उकार, भ को ह, ग छोप और अ स्वर शेष ।

(ङ) उ = ओ

कोउहलं, कुऊहलं < कुत्तुहलम्—ककारोत्तर उकार को ओस्व, तकार का छोप, उ स्वर शेष तथा ऊ को विकल्प से इस्व ।

(६) संस्कृत की ऊ ध्वनि प्राकृत में अ, इ, ई, उ, ए और ओ रूप में बदल जाती है ।

(क) ऊ = अ—निम्न लिखित प्राकृत शब्दों में संस्कृत की ऊ ध्वनि विकल्प से अ में परिवर्तित होती है ।

दुअलं दुऊलं < दुनूलम्—मध्यवर्ती क छोप, उ स्वर शेष और ऊ के स्थान पर विकल्प से अ ।

सणहं, सुणहं < सूक्ष्मम्—सकारोत्तर उकार के स्थान पर विकल्प से अकार, क्ष के स्थान पर ष ।

(ख) ऊ = ई

निउरं, नुउरं < नूपुरम्—उकार के स्थान पर विकल्प से इकार, प का छोप उ शेष ।

(ग) ऊ = ई—

उव्यीढं, उव्यूढं < उव्यूढम्—व्यू का छोप और व को द्वित्व और उकार को विकल्प से ईकार ।

(घ) ऊ = उ—निम्न लिखित शब्दों में उकार के स्थान पर उस्व होता है ।

कंडुअइ < कण्डुपते—उकार के स्थान पर उकार और यकार का छोप, अ स्वर शेष, विभक्ति चिह्न इ ।

विहूणो, विहीणो < विहीनः—द्वकारोत्तर ईकार को विकल्प से जकार तथा न को णत्व, विसर्ग को ओत्व ।

हूणो, हीणो < हीनः—

(च) ई = ए—संस्कृत के निम्न लिखित शब्दों में ई ध्वनि को ए हो जाता है ।

आमेल्ले < भापीडः—पकारोत्तर ईकार को एकार और ड को छ ।

केरिसो < कीटशः—पकारोत्तर ईकार को एकार, टश के स्थान पर रिसो ।

एरिसो < ईटशः—ई के स्थान पर एकार, टशः के स्थान पर रिसो ।

पेऊसं < पीयूपम्—पकारोत्तर ईकार को एत्व, य लोप और ऊ स्वर शेष, मूर्धन्य प को दन्त्य स ।

वहेडओ < विभीतक—द्वकार को अकार, भकारोत्तर ईकार को एकार, भ के स्थान पर ह, त को ड और क लोप, भ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व ।

नेडं, नीडं < नीडम्—नकारोत्तर ईकार को विकल्प से एकार ।

पेडं, पीडं < पीडम्—पकारोत्तर ईकार को विकल्प से एकार तथा ठ को ड ।

(५) संस्कृत की उ ध्वनि प्राकृत में अ इ, ई, ऊ और ओ में परिवर्तित हो जाती है ।

उ = अ—निम्न लिखित शब्दों में संस्कृत की उ ध्वनि प्राकृत में अ में परिवर्तित होती है ।

अगरुं < अगुरुम्—गकारोत्तर उकार के स्थान पर अ ।

गलोइ < गुह्वी—गकारोत्तर उकार को अ, उ को छ और ऊ को ओ, चकार का लोप, ई स्वर शेष, पश्चात् ह्रस्व ।

गरुई <—गुर्वी—गकारोत्तर उकार को अ, र्वा का पृथक्करण अत रई ।

मउडो < मुकुट—मकारोत्तर उकार को अ, क लोप और ट को ड ।

मउरं < मुकुम्—

” ”

मउलो < मुकुल—

” ”

मउल < मुकुलम्—

” ”

सोअमल्लं < सौकुमार्यम्—औ को ओकार होने से सो, क वा लोप और उसके स्थान में उ स्वर शेष, उकार को अ तथा मार्य का मल्लं ।

अवरिं, उवरिं < उपरि—उ के स्थान पर विकल्प से अ, प को व ।

गरुओ, गुरुओ < गुरुः—गकारोत्तर उ के स्थान पर विकल्प से अ, क लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व ।

(ख) उ = इ—संस्कृत के निम्न लिखित शब्दों की उ ध्वनि का प्राकृत में इ हो जाता है ।

पुरिसो < पुरुष—रकारोत्तर उकार के स्थान पर इ, मूर्धन्य प को दन्त्य स ।

पउरिसं < पौरुपम्—औ के स्थान पर ओ, पश्चात् अ + उ, रकारोत्तर उ को इत्व ।

भिउडी < भृकुटिः—संयुक्त रेफ का लोप, उकार को इकार, क लोप, उ स्वर शेष और ट को ढ ।

(ग) उ = ई

क्षीअं < क्षुतम्—क्ष के स्थान पर छ, उकार को ईकार, त लोप और अ स्वर शेष ।

(प) उ = ऊ

दूह्वो, दुह्वो < दुर्मगः—दकारोत्तर उकार को विकल्प से ऊकार, संयुक्त रेफ का लोप, भ को ह और ग लोप, अ स्वर शेष तथा ओत्व ।

मूसलं, सुसलं < सुतलम्—मकारोत्तर उकार को विकल्प से ऊत्व ।

दूसहो, दुस्सहो < दुस्तहः—दकारोत्तर उकार को विकल्प से ऊत्व ।

सुह्वो, सुह्वो < सुभगः—सकारोत्तर उकार को विकल्प से ऊकार, भ को ह, ग लोप और अ स्वर शेष ।

(ङ) उ = ओ

कोउहलं, कुऊहलं < कुतूहलम्—ककारोत्तर उकार को ओत्व, तकार का लोप, ऊ स्वर शेष तथा ऊ को विकल्प से हस्व ।

(ढ) संस्कृत की ऊ ध्वनि प्राकृत में अ, इ, ई, उ, ए और ओ रूप में बदल जाती है ।

(क) ऊ = अ—निम्न लिखित प्राकृत शब्दों में संस्कृत की ऊ ध्वनि विकल्प से अ में परिवर्तित होती है ।

दुअलं दुऊलं < दुतलम्—मध्यवर्ती क लोप, ऊ स्वर शेष और ऊ के स्थान पर विकल्प से अ ।

सण्हं, सुण्हं < सूणमम्—सकारोत्तर ऊकार के स्थान पर विकल्प से अकार, ङ के स्थान पर ण् ।

(ख) ऊ = ई

निउरं, नुउरं < नूपुरम्—ऊकार के स्थान पर विकल्प से इकार, प का लोप व शेष ।

(ग) ऊ = ई—

उब्बीढं, उब्बूढं < उब्ब्यूढम्—दू का लोप और व को द्वित्व और ऊकार को विकल्प से ईकार ।

(घ) ऊ = उ—निम्न लिखित शब्दों में ऊकार के स्थान पर उत्व होता है ।

कंडुअइ < कण्डुयते—ऊकार के स्थान पर उकार और यकार का लोप, अ स्वर शेष, विभाक्त चिह्न इ ।

कंडुया < कण्डूया—ऊकार के स्थान पर उकार ।

कंडुयणं < कण्डूयणम्—ऊकार को उत्व तथा न को णत्व ।

भुमया < भ्रू—ऊकार के स्थान पर उत्व ॥

वाउलो < वात्ल—तकार का लोप और ऊ स्वर शेष, ऊ के स्थान में उत्व ।

हणुमंतो < हनुमान्—नकार को णत्व और ऊकार को उत्व ।

कोउहलं, कोऊहलं < कुत्हल्म्—ककारोत्तर उकार को ओकार, तकार का लोप और ऊकार के स्थान पर विकल्प में उत्व ।

महुअं, महुअं < मधूरम्—ध के स्थान पर ह और ऊकार को विकल्प से उत्व ।

(ङ) ऊ = ए

नेउरं, नूउरं < नूपुरम्—ऊकार के स्थान पर एत्व और पकार का लोप और उ स्वर शेष ।

(च) ऊ = ओ—निम्न लिखित शब्दों में ऊ को ओ होता है ।

कोउपरं < कूर्परम्—ऊकार को ओकार, संयुक्त रफ का लोप, प का द्वित्व ।

कोहण्डी < कृष्णण्डी—ककारोत्तर ऊकार को ओत्व, णा के स्थान पर ह ।

गडोई < गुहूची—डकार के स्थान पर ल, डकारोत्तर ऊकार को ओ एवं पकार का लोप, ई शेष ।

तंदोलं < ताम्बूलम्—ता को हस्व, ककारोत्तर ऊकार को ओत्व ।

तोणीरं < तूणेरम्—ऊकार को ओत्व ।

मौल्लं < मूलम्—मकारोत्तर ऊकार को ओत्व, संयुक्त य का लोप और ल को द्वित्व ।

धोरं < रूधूलम्—संयुक्त स का लोप, धकारोत्तर ऊकार को ओत्व एवं ल को रकार ।

तोणं, तूणं < तूणम्—तकारोत्तर ऊकार को विकल्प से ओत्व ।

थोणा, थूणा < रूथूणा—संयुक्त स का लोप और थकारोत्तर ऊकार को विकल्प से ओत्व ।

(ञ) धाकृष्य यजमाणा में ऋ को स्थान नहीं दिया गया है । अतः संस्कृत की ऋ का परिवर्तन अ, आ, इ, उ, ऊ, ए, ओ, अरि और रि के रूप में होता है ।

(क) ऋ = आ—निम्न लिखित शब्दों में ऋदि में अग्नेवाही ऋ अ के रूप में बदल जाती है ।

वर्यं < कृतम्—ककारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, त लोप, अ स्वर शेष और य भुवि ।

घर्यं < घृतम्—घकारोत्तर

“ “ “

घट्टो < घृष्टः—घकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व ।
तर्णं < तृणम्—तकारोत्तर ऋ के स्थान अ ।

मओ < मृगः—मकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, ग लोप और अ स्वर शेष,
विसर्ग का ओत्व ।

मट्टं < मृष्टम्—मकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, संयुक्त ष का लोप और ट
को द्वित्व ।

घसहो < वृषभः—वकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, मूर्धन्य ष को दन्त्य स, भ
के स्थान पर ह और विसर्ग का ओत्व ।

दुकृढं < दुष्कृतम्—संयुक्त ष का लोप, क को द्वित्व, ऋ के स्थान पर अ एवं
त के स्थान पर ङ ।

पुरेकृढं < पुरस्कृतम्—रकारोत्तर अ को एत्वं, संयुक्त स का लोप, ऋ के स्थान
पर अ, त को ङ ।

मट्टिया < मृत्तिका—मकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, त को ट तथा ककार का
लोप, आ स्वर शेष, य ध्रुति ।

णिअत्तं < निवृत्तम्—न को णत्व, वकारोत्तर ऋकार को अ ।

मञ्जु < मृज्यु—मकारोत्तर ऋ को अ और त्य के स्थान पर च ।

मउओ < मृदुक.—, , , द लोप, उ स्वर शेष, क लोप, अ स्वर शेष
और विसर्ग को ओत्व ।

वन्दारओ < वृन्दारकः—वकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, क लोप, अ स्वर शेष
और विसर्ग को ओत्व ।

वगी < वृगी—वकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ तथा क को ग ।

कसणपक्खो < कृष्णपक्षः—ककारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, ण का पृथकरण
मूर्धन्य ष को दन्त्य स तथा क्ष को क्ख ।

पाययं < प्राकृतम्—ककारोत्तर ऋ के स्थान पर अ और इत् अ को य ध्रुति,
त लोप, अ स्वर शेष और अ को य ।

वहूपफई < वृहस्पति—वकारोत्तर ऋकार को अत्वं, ष के स्थान पर ष्फ ।

सिलवटो < शिलापृष्ठ—तालव्य श को दन्त्य स, लकार को इत्वं, ष का व
और ऋ को अ ।

मअलाठणं < मृगलाञ्छनम्—मकारोत्तर ऋकार को अत्वं, ग लोप और अ
स्वर शेष ।

मअवहू < मृगवधू—मकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, घ के स्थान पर ह ।

रामकृण्हो < रामकृष्ण—ककारोत्तर ऋकार को अ और ण को ण्व ।

(ख) ऋ = आ—निम्न शब्दों में विकल्प से ऋ के स्थान पर आ आदेश होता है ।

कासा, किसा < कृशा—ककारोत्तर ऋकार को विकल्प से आत्व ।

माउक्कं, मउत्तणं < मृदुत्वम्—मकारोत्तर ऋकार को विकल्प से आत्व ।

मानक्कं, मउअं < मृदुकम्—

(ग) ऋ = इ—निम्न शब्दों में संस्कृत की ऋ ध्वनि इ में परिवर्तित होती है ।

उक्किट्टुं < उत्कृष्टम्—संयुक्त त का लोप, क को द्वित्व और ऋ के स्थान पर इ ।

इद्धी < ऋद्धिः—ऋ के स्थान पर इ ।

इसी < ऋषिः—ऋ के स्थान पर इ, मूर्धन्य प को सत्व और हकार को दीर्घ ।

किच्छम् < कृच्छम्—क ककारोत्तर ऋ के स्थान पर इ ।

किविणो < कृपणः— " " तथा प का घ और विसर्ग का ओत्व ।

किई < कृतिः—ककारोत्तर ऋ के स्थान पर इ, त लोप और इ स्वर को दीर्घ ।

किची < कृत्तिः—क में रहनेवाली ऋ के स्थान पर इ, त के स्थान पर च ।

किद्या < कृत्या—क में रहने वाली ऋ के स्थान पर इ, त्य के स्थान पर च ।

किवो < कृपः—ककारोत्तर ऋकार के स्थान पर इ और प को य ।

किया < कृपा—

किवाणं < कृपाणम्— " " " "

किदो < कृशः— " " " श के स्थान पर 'द' ।

किसाणु < कृशाणुः— " " " वाङ्मय श को स, उकार को ऊपर ।

किसिओ < कृपितः—ककारोत्तर ऋकार के स्थान पर इ, मूर्धन्य प लोप, त लोप और स्वर घेप तथा ओत्व ।

किसण < कृषा—ककारोत्तर ऋकार के स्थान पर इ ।

गिट्टी < गृष्टिः—गकारोत्तर ऋकार को इत्थ, मूर्धन्य प लोप, ट को द्वित्व ।

गिद्धी < गृद्धिः—गकारोत्तर ऋकार को इत्थ ।

घुसिणं < घृषणम्—घकारोत्तर ऋ को इत्थ ।

विणा < वृणा—वकारोत्तर ऋ के स्थान पर इ ।

विचं < वृत्तम्—वकारोत्तर ऋकार के स्थान पर इ । संयुक्त प लोप और ष को द्वित्व ।

विट्टं < वृष्टम्—वकारोत्तर ऋ के स्थान पर इ, संयुक्त प लोप, ट को द्वित्व, द्वितीय ट को ठ ।

विट्टी < वृष्टिः— " " "

धिई < धतिः—घकारोत्तर ऋकार को इत्वर, त लोप और श्रेय स्वर इ को दीर्घ ।
नत्तिओ < नन्त्कः—संयुक्त प का लोप, त को द्वित्व, ऋकार को इत्वर, क लोप
और अ स्वर श्रेय, विसर्ग को ओत्वर ।

नियो < न्युपः—नकारोत्तर ऋकार को इत्वर और प को य, विसर्ग को ओत्वर ।

निसंसो < नृदांसः—नकारोत्तर ऋकार को इत्वर, चाष्टव्य श को दन्त स, विसर्ग
को ओत्वर ।

पिहं < पृथक्—पकारोत्तर ऋकार को इत्वर, थ को ह, अन्त्य हलन्त का लोप,
अनुस्वारागम ।

पिच्छी < पृथ्वी—पकारोत्तर ऋ को इत्वर, ध्वी के स्थान पर ष्टी ।

विहिओ < वृंहितः—घकारोत्तर ऋकार को इत्वर, त का लोप, अ स्वर श्रेय और
विसर्ग को ओत्वर ।

भिगो < भृङ्गः—भकारोत्तर ऋकार को इत्वर, विसर्ग को ओत्वर ।

भिगारो < नृङ्गारः— ” ” ”

भिऊ < भृगु—भकारोत्तर ऋकार को इत्वर, ग का लोप और उ स्वर,
श्रेय, दीर्घ ।

माई < मातृ—तकारोत्तर ऋ को इत्वर तथा दीर्घ ।

मिईगो < मृदंगः—मकारोत्तर ऋकार को इत्वर, द का लोप, अ स्वर श्रेय तथा
श्रेय अ को इत्वर, विसर्ग को ओत्वर ।

मिट्टं < मृष्टम्—मकारोत्तर ऋकार को इत्वर, संयुक्त प का लोप, ट को द्वित्व
तथा द्वितीय ट को ठ ।

विइण्हो < वितृणः—तकारोत्तर ऋकार को इत्वर, ण. के स्थान पर ण्हो ।

विरुत्तुओ < वृश्चिकः—वकारोत्तर ऋकार को इत्वर, श्च के स्थान पर ष्च तथा
इ को उत्वर, क लोप, अ स्वर श्रेय और विसर्ग को ओत्वर ।

वित्त < वृत्तम्—वकारोत्तर ऋ के स्थान पर इत्वर ।

विती < वृत्तिः—वकारोत्तर ऋ को इत्वर, तकारोत्तर इकार को दीर्घ ।

विद्वकई < वृद्धकविः—वकारोत्तर ऋ को इत्वर, व का लोप और श्रेय स्वर इ
को दीर्घ ।

विट्टो < वृष्ट —वकारोत्तर ऋ को इत्वर, संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व तथा
द्वितीय ट को ठ ।

विट्टी < वृष्टिः— ” ”

विसी < वृसी—वकारोत्तर ऋ को इत्वर ।

वाहिअ < व्याहृतम्—संयुक्त य का लोप, इकारोत्तर ऋकार को इत्वर, त का लोप
और अ स्वर श्रेय ।

सिआलो < श्यालः—तालव्य श को दन्त्य स, शकारोत्तर ऋकार को इत्व, ग का लोप और आ स्वर श्रेय, विसर्ग को ओत्व ।

सिंगारो < शंगारः—तालव्य श को दन्त्य स, शकारोत्तर ऋ को इत्व, और विसर्ग को ओत्व ।

सइ < सट्ट—क वा लोप और ककारोत्तर ऋकार को इत्व, अन्त्य इच्छन्त त का लोप ।

समिद्धी < समृद्धिः—मकारोत्तर ऋकार को इत्व, ङकारोत्तर इकार को दीर्घ ।

सिट्टु < सष्टम्—सकारोत्तर ऋकार को इत्व, संयुक्त प का लोप, ट को द्वित्व और द्वितीय ट को ठ ।

सिट्टी < सृष्टिः— " " " अन्तिम इकार को दीर्घ ।

खिहा < खिहा—स्व में रहनेवाली ऋ को इत्व, स्व के स्थान पर ङ ।

ह्रिअयं < ह्रदयम्—ह्र में रहने वाली ऋ को इत्व तथा ङ का लोप और अ स्वर श्रेय ।

माइहरं < मातृष्टम्—तकारोत्तर ऋ का इत्व और मृहं की हरं ।

मियतण्हा < मृगतृष्णा—मकारोत्तर ऋकार को इत्व, ग का लोप, अ स्वर श्रेय और य ध्रुति, तकारोत्तर ऋ को अ तथा ण्य के स्थान पर ण्हा ।

मियंको, मयंको < मृगाङ्ग—मकारोत्तर ऋकार को इत्व, ग का लोप और अ स्वर को य ध्रुति ।

इहामियो < इहामृगः—मकारोत्तर ऋ को इत्व, ग का लोप, अस्वर श्रेय तथा प ध्रुति, विसर्ग को ओत्व ।

मियसिराओ < मृगशिरा—मकारोत्तर ऋकार को इत्व, ग लोप, अ स्वर श्रेय तथा य ध्रुति, तालव्य श को दन्त्य स ।

इसिगुत्तो < ऋपिगुप्तः—ऋकार को इत्व, मूर्धन्य प को स, संयुक्त प का लोप, ष को द्वित्व ।

इसिदत्तं < ऋपिदत्तम्—ऋकार को इत्व, मूर्धन्य प को दन्त्य स ।

धिट्टो, धट्टो < षट्टः—धकारोत्तर ऋकार को विकल्प से इत्व, संयुक्त प का लोप, ट को द्वित्व, द्वितीय ट को ठ, विसर्ग को ओत्व ।

पिट्टं, पट्टं < षट्टम्—पकारोत्तर ऋकार को विकल्प से इत्व, संयुक्त प का लोप, ट को द्वित्व तथा द्वितीय ट को ठ ।

पिहण्फई, पहण्फई < षट्टपतिः—पकारोत्तर ऋकार को विकल्प से इत्व, ण को ण्, तकार का लोप और इ स्वर श्रेय को दीर्घ ।

माद्मंडलं, माउमंडलं < मरुमण्डलम्—तकारोत्तर ऋकार को विकल्प से इत्य ।

मिच्छू, मच्छू < मृक्षुः—मकारोत्तर ऋकार को विकल्प से इत्य और ल्युः को षू ।

विद्धो, वुद्धो < वृद्धः—यकारोत्तर ऋकार को विकल्प से इत्य ।

विंटं, वेंटं < वृन्तम्—वकारोत्तर ऋकार को विकल्प से इत्य तथा व को ट ।

सिंगं, संगं < शृङ्गम्—ताएअय श को दन्त्य स, शकारोत्तर ऋकार को विकल्प से इत्य ।

(प) ऋ = उ—निम्न प्राटत शब्दों में संसृष्ट की ऋ ष्यनि उकार में परिवर्तित है ।

उऊ < ऊः—ऋकार को उ तथा ऋकार का छोप और श्रेष एर उ को दीर्घ ।

उसहो < ऋपभः—ऋ को उत्त्व, मूर्धन्य प को दन्त्य स, भ को ह, विसर्ग को भोर ।

जामाउओ < जामावृकः—तकारोत्तर ऋकार को उत्त्व, तकार का छोप, क छोप, थ एर ओर विसर्ग को ओत्व ।

नत्तुओ < नन्तृकः—संयुक्त प का छोप, त को द्वित्व, ऋकार को उत्त्व, क का छोप और श्रेष एर थ को ओत्व ।

निहुअं < निवृत्तम्—भकार को ह तथा ऋ को उत्त्व, तकार का छोप और अ एर श्रेष ।

निउअं < निवृत्तम्—यकारोत्तर ऋकार को उत्त्व, व का छोप, तकार का छोप और ओर अ एर श्रेष ।

निव्युअं < निवृत्तम्—संयुक्त रेफ का छोप, व द्वित्व, ऋकार को उत्त्व, त छोप और अ एर श्रेष ।

निव्युई < निवृत्तिः—संयुक्त रेफ का छोप, व को द्वित्व, ऋकार को उत्त्व, त छोप और इकार श्रेष तथा इसको दीर्घ ।

परहुओ < परभृतः—भकारोत्तर ऋकार को उत्त्व, भ को ह, त छोप और अ एर श्रेष, विसर्ग को ओत्व ।

परव्युट्टो < परावृष्टः—मकारोत्तर ऋकार को उत्त्व, संयुक्त ज का छोप, ट को द्वित्व, द्वितीय ट को ठ, विसर्ग को ओत्व ।

पिउओ < पितृकः—तकारोत्तर ऋकार को उत्त्व, क का छोप अ एर श्रेष और विसर्ग का ओत्व ।

पुहई < श्थिरी—यकारोत्तर ऋकार को उत्त्व, थ के स्थान पर ह, इ एर को अ, वकार का छोप और ई एर ।

पहुडि < प्रभृति—संयुक्त रेफ का छोप, भकारोत्तर ऋकार को उत्त्व, त को ट ।

पउत्ती < प्रवृत्तिः—संयुक्त रेफ का लोप, वकारोत्तर ऋकार को उत्त्व, व का लोप, अन्तिम स्वर इ को दीर्घ ।

पउट्टो < प्रवृट्—संयुक्त रेफ का लोप, वकारोत्तर ऋकार को उत्त्व, व का लोप, संयुक्त प का लोप, ट को द्वित्व, द्वितीय ट को ड ।

पाहुडं < प्रानृत्वम्—संयुक्त रेफ का लोप, म को ह, ऋकार को उत्त्व, त को ड ।

पाउओ < प्रावृतः—संयुक्त रेफ का लोप, वकार का लोप और अवशेष ऋ को उत्त्व, त का लोप, अ स्वर शेष तथा विसर्ग को ओत्व ।

पाउसो < प्रावृपः—संयुक्त रेफ लोप, व लोप और अवशेष ऋकार को उत्त्व, मूर्धन्य प को इन्त्य स, विसर्ग को ओत्व ।

भुई < भृतिः—भकारोत्तर ऋकार को उत्त्व, तकार का लोप और शेष स्वर इ को दीर्घ ।

भाउओ < भ्रावृकः—संयुक्त रेफ का लोप, तकार का लोप, ऋकार को उत्त्व, क का लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व ।

माउओ < मावृकः—तकार का लोप, ऋकार को उत्त्व, क का लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व ।

माउआ < मावृका—तकार का लोप, शेष स्वर ऋ को उत्त्व, क का लोप और अ स्वर शेष ।

मुणालं < मृणाएम्—मकारोत्तर ऋकार को उत्त्व ।

युत्ततो < वृत्तान्तः—वकारोत्तर ऋकार को उत्त्व ।

बुद्धो < वृद्ध—वकारोत्तर ऋकार को उत्त्व, इन्त्य वर्णों को मूर्धन्य, विसर्ग का ओत्व ।

बुद्धी < वृद्धिः—वकारोत्तर ऋकार को उत्त्व, इन्त्य वर्णों को मूर्धन्य, इकार को दीर्घ ।

वुदं < वृन्दम्—वकारोत्तर ऋकार को उत्त्व ।

वुदावणो < वृन्दावनः—वकारोत्तर ऋकार को उत्त्व, न को णत्व और विसर्ग जो ओत्व ।

विउअं < वितृत्तम्—मध्यवर्ती वकार का लोप, शेष ऋ को उत्त्व, त लोप और अ स्वर शेष ।

वुट्टो < वृष्टः—वकारोत्तर ऋकार को उत्त्व, संयुक्त प का लोप, ट को द्वित्व तथा द्वितीय ट को ड ।

वुट्टी < वृष्टि—वकारोत्तर, ऋकार को उत्त्व, संयुक्त प का लोप, ट को द्वित्व तथा द्वितीय ट को ड, इकार दीर्घ ।

पुट्टो < एष्ट. — संयुक्त स का छोप, पकारोत्तर ऋकार को उत्स्य, संयुक्त प का छोप, ट को द्वित्व, द्वितीय ट को ठ, विसर्ग को ओत्स्य ।

संयुअं < संयुत्वम् — पकारोत्तर ऋकार को उत्स्य, यकार का छोप, अ दोष ।

मुसा, मोसा < मृष — मकारोत्तर ऋकार को विरूप्य से उ, उ के अभाव में ओ तथा मूर्धन्य प को इत्स्य स ।

उसहो, यसहो < वृषभः — यकारोत्तर ऋकार को विरूप्य से उत्स्य, विरूप्याभाव पक्ष में ऋकार को अ ।

(घ) ऋ = ऊ ।

मूसा, मुसा, मोसा < मृषा — मकारोत्तर ऋकार के स्थान पर विरूप्य से ऊकार, विरूप्याभाव पक्ष में उकार तथा ओकार होने से तीन रूप बनते हैं ।

(ङ) ऋ = ए —

बैट, विटं < वृन्तम् — यकारोत्तर ऋकार को विरूप्य से एकार, विरूप्याभावपक्ष में इकार तथा त को ट ।

(च) ऋ = ओ —

मोसा < मृषा — मकारोत्तर ऋ को विरूप्य से ओत्स्य ।

घोटं < वृन्तम् — यकारोत्तर ऋकार को विरूप्य से ओत्स्य ।

(छ) ऋ = अरि —

दरिओ < दस. — दकारोत्तर ऋकार को अरि, संयुक्त प और अन्तिम त का छोप, अ स्वर दोष, विसर्ग को ओत्स्य ।

(ज) ऋ = ङि —

आदिओ < आदतः — मध्यवर्ती इकार का छोप और दोष ऋ के स्थान पर ङि, त छोप, अ स्वर दोष, विसर्ग को ओत्स्य ।

(झ) ऋ = रि — निम्न प्राकृत शब्दों में वर्तमान भाषा प्रवृत्ति के समान संस्कृत को ऋ के स्थान पर रि मिलता है ।

रिच्छो < कक्ष. — ऋ के स्थान पर रि और क्ष को ङ, विसर्ग को ओत्स्य ।

अन्नारिसो < अन्वाहस. — संयुक्त य का छोप, न को द्वित्व, दकार का छोप और दोष स्वर ऋ को रि, श को स, विसर्ग को ओत्स्य ।

अन्नारिच्छो < अन्वाहसः — संयुक्त य का छोप, न को द्वित्व, दकार का छोप और दोष स्वर ऋ को रि, क्ष को ङ तथा विसर्ग को ओत्स्य ।

अमूरिसो < अमूरस. — दकार ङ छोप, दोष स्वर ऋ को रि, वाच्य श को इत्स्य स, विसर्ग को ओत्स्य ।

अमूरिच्छो < अमूहक्षः—दकार का लोप, शेष स्वर ऋ को रि, क्ष को चउ ।

अम्हारिसो < अस्मादशः—दकार का लोप, शेष स्वर ऋ को रि, तालव्य श को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व ।

अम्हारिच्छो < अस्मादक्षः—दकार का लोप, शेष स्वर ऋ को रि, क्ष को चउ, विसर्ग को ओत्व ।

एरिसो < ईदशः—ई के स्थान में ए, दकार का लोप और शेष स्वर ऋ के स्थान में रि, तालव्य श को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व ।

एरिच्छो < ईदक्षः—ई के स्थान में ए, दकार का लोप और शेष स्वर ऋ के स्थान में रि, क्ष को चउ और विसर्ग को ओत्व ।

एआरिसो < एतादशः—मध्यवर्ती तकार का लोप, आ स्वर शेष, दकार का लोप और शेष स्वर ऋ को रि, तालव्य श को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व ।

एआरिच्छो < एतादक्षः—मध्यवर्ती तकार का लोप, आ स्वर शेष, दकार का लोप और शेष स्वर ऋ को रि, क्ष को चउ और विसर्ग को ओत्व ।

केरिसो < कीदशः—फकारोत्तर ईकार को एकार, दकार का लोप और शेष स्वर ऋकार को रि ।

केरिच्छो < कीदक्षः—

तारिसो < तादशः—दकार का लोप, शेष स्वर ऋकार को रि, श को स, विसर्ग को ओत्व ।

तारिच्छो < तादक्षः—दकार का लोप, शेष स्वर ऋकार को रि, क्ष को चउ तथा विसर्ग का ओत्व ।

तारिक् < तादक्—दकार का लोप, शेष स्वर ऋ को रि, अन्त्य हलन्त्य क् का लोप ।

भवारिसो < भयादशः—

भवारिच्छो < भयादक्षः—

भवारि < भयादक्—

जारिसो < यादशः—आदि यकार को जकार, य का लोप, शेष स्वर ऋ के स्थान पर रि, तालव्य श को दन्त्य स विसर्ग को ओत्व ।

जारीच्छो < यादक्षः—आदि यकार को जकार, य का लोप, शेष स्वर ऋ के स्थान पर रि, क्ष को चउ, विसर्ग को ओत्व ।

जारिक् < यादक्—आदि य को ज, दकार का लोप, शेष स्वर ऋ को रि, अन्त्य हलन्त्य क् का लोप ।

तुम्हारिसो < युष्मादशः—युष्मा के स्थान पर तुम्हा, दकार का लोप, शेष स्वर ऋ को रि, तालव्य श को दन्त्य स ।

तुम्हारिच्छो < युष्मादशः— „ „ क्ष को ष्ट, विसर्ग को ओत्व ।

तुम्हारि—युष्मादक्— „ „ अन्त्य ह्रस्वन्त्य क् का लोप ।

सरिसो < सदशः—दकार का लोप, शेष स्वर ऋ को रि, तालव्य श को दन्त्य स विसर्ग का ओत्व ।

सरिच्छो < सदशः— „ „ क्ष को ष्ट, विसर्ग को ओत्व ।

सरि < सदक्— „ „ अन्त्य ह्रस्वन्त्य क् का लोप ।

रिञ्जू, उञ्जू < ऋजुः—ऋ के स्थान में विकल्प से रि, विकल्पाभाव में उ ।

रिणं, अणं < ऋणम्— „ „ विकल्पाभाव में अ ।

रिऊ, उऊ < ऋतुः— „ „ तकार का लोप, शेष स्वर उ

को दीर्घ ।

रिसहो, उसहो < रूपभ— „ „ विकल्पाभाव पक्ष में उ ।

रिसी, इसी < ऋषिः— „ „ विसर्गाभाव पक्ष में इ ।

(८) प्राकृत में संस्कृत की एकार ध्वनि इ और ऊ में बदल जाती है ।

(क) ए = इ—

किसरं, केसरं < केसरम्—कारोत्तर एकार को विकल्प से इत्व ।

चविडा, चवेडा < चपंटा—प को व, कारोत्तर ए को विकल्प से इ ।

दिवारो, देयरो < देवारः—कारोत्तर एकार को इत्व, वकार का लोप और अ स्वर शेष ।

विअणा, वेअणा < वेदना—कारोत्तर एकार को इत्व, इकार का लोप और अ स्वर शेष ।

(ख) ए = ऊ—

थूणो, येणो < स्तेनः—स्त के स्थान पर थ और एकार के स्थान पर विकल्प से ऊकार ।

(९) प्राकृत में संस्कृत की ऐकार ध्वनि का अ अ, इ, ई, अइ और ए में परिवर्तन होता है ।

(क) ऐ = अअ ।

उच्चअं < उच्चैस्—कारोत्तर ऐकार के स्थान पर अअ ।

नीचअं < नीचैस्— „ „

कइरवं, केरवं < कैरवम्—ककारोत्तर ऐकार को विकल्प से अइ तथा विकल्पाभाव पक्ष में ए ।

कइलासो, केलासो < कैलासः—

चइत्तो, चेत्तो < चैत्रः—चकारोत्तर ऐकार को विकल्प से अइ तथा विकल्पाभाव में ए ।

वइरं, वेरं < वैरम्—वकारोत्तर ऐकार को विकल्प से अइ तथा विकल्पाभाव में ए ।

वइसंपायणो, वेसंपायणो < वैशम्पायनः—

” ” ”

वइसवणो, वेसवणो < वैश्रवणः—

” ” ”

वइसिअं, वेसिअं < वैशिमम्—

” ” ”

(ढ) ऐ = ए—

एरावणो < ऐरावणः—ऐकार को एकार ।

केढवो < कैढभः—ककारोत्तर ऐकार को एकार, ढ को ढ और भ को व, विसर्ग का भोत्र ।

तेल्लुककं < त्रैलोक्यम्—संयुक्त रेफ का लोप, तकारोत्तर ऐकार को एत्व, संयुक्त य का लोप और क को द्वित्व ।

वेज्जो < वैद्यः—वकारोत्तर ऐकार को एत्व, छ के स्थान पर ज्ज ।

वेहृचवं < वैधव्यम्—वकारोत्तर ऐकार को एत्व, ध को ह, संयुक्त य लोप और व को द्वित्व ।

सेला < दौला—सकारोत्तर ऐकार को एत्व ।

(९) प्राकृत में संस्कृत की ओ ध्वनि का अ, ऊ, अउ और आअ में परिवर्तन होता है ।

(क) ओ = अ—

अन्नन्नं, अन्नुन्नं < अन्न्योन्नम्—संयुक्त य का लोप, न को द्वित्व और ओ के स्थान पर विकल्प से अ, विकल्पाभाव में उ ।

आवज्जं, आउज्जं < आतोद्यम्—तकारोत्तर ओकार के स्थान पर विकल्प से अ, विकल्पाभाव में उ, छ के स्थान पर ज्ज ।

पवट्टो, पउट्टो < प्रकोष्ठः—क का लोप और ओ के स्थान पर अ, विकल्पाभाव में उ, संयुक्त य का लोप और ठ को द्वित्व ।

मणहरं, मणोहरं < मनोहरम्—नकारोत्तर ओ के स्थान पर विकल्प से अ ।

सिरविअणा, सिरोविअणा < शिरोवेदना—रकारोत्तर ओ के स्थान में विकल्प से अ ।

सररुहं, सरोरुहं < सरोरुहम्—

” ” ”

(ख) ओ = ऊ—

सुसासो < सोच्छ्वासः—सकारोत्तर ओकार को ऊकार ।

(ग) ओ = अउ—

गउओ < गोकः—गकारोत्तर ओकार को अउ, क लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व ।

गउआ < गोआ—गकारोत्तर ओकार को अउ, क लोप, आ स्वर शेष ।

गउ, गऊ < गो—

” ” ”

(घ) ओ = आऊ—

गाऊ < गो—ओकार को आऊ हुआ है ।

(१०) संस्कृत की ओ ध्वनि का प्राकृत में अउ, आ, उ, आव और ओ में परिवर्तन होता है ।

(क) औ = अउ—

कउरवो < कौरवः—ओकार के स्थान पर अउ तथा विसर्ग को ओत्व ।

कउलो < कौलः—

” ” ”

कउसलं < कौशलम्—ककारोत्तर औकार को अउ, तालव्य श को दन्त्य स ।

गउडो < गौडः—गकारोत्तर औकार को अउ ।

गउरवं < गौरवम्—

” ”

पउरो < पौरः—पकारोत्तर औकार के स्थान पर अउ ।

पउरिसं < पौरुषम्—

” ”, मूर्धन्य प को स तथा ह को रि ।

मउणं < मौनम्—मकारोत्तर औकार के स्थान में अउ, न को ण ।

मउली < मौलिः—

” ”

सउहं < सौधम्—सकारोत्तर औकार को अउ तथा ध के स्थान पर ह ।

सउरा < सौराः—

” ” ”

(ख) औ = आ—

गारवम् < गौरवम्—औकार के स्थान आकार ।

(ग) औ = उ—

दुवारिओ < दौवारिकः—दकारोत्तर औकार के स्थान पर उ, क का लोप, अ स्वर शेष तथा विसर्ग को ओत्व ।

पुलोमी < पौलोमी—पकारोत्तर औकार को उत्व ।

मुंजायणो < मौञ्जायन—मकारोत्तर औकार को उत्व ।

मुंडो < मौण्डः—मकार के स्थान में दन्त्य स तथा औकार को उत्व ।

आगारो < आकारः—क के स्थान पर ग और दीर्घ ।

उवासगो < उपाशरुः—प के स्थान पर व, ताछव्य श को दन्त्य, क को ग ।

एगो < एकः—क के स्थान पर ग, विसर्ग को ओत्व ।

गेंदुअं < कन्दुकम्—क के स्थान पर ग और अकार को एकार अन्तिम क का लोप, अ स्वर शेष ।

दुगुल्लं < दुकूलम्—क का ग और ऊकार को ह्रस्व उकार ।

मयगलो < मद्रकलः—द का लोप, अ स्वर शेष तथा य ध्रुति, क के स्थान में ग ।

मरगयं < मरकतम्—फ के स्थान में ग, व लोप और शेष अ स्वर को य ।

साधगो < धावकः—संयुक्त रेफ का लोप, ताछव्य श को दन्त्य स, क को ग तथा विसर्ग को ओत्व ।

लगो < लोकः—क को ग, विसर्ग को ओत्व ।

(ग) क = च—

चिलाओ < किरातः—क के स्थान पर च और र को छ ।

(घ) क = भ—

सीमरो, सीअरो < शीकरः—ताछव्य श को दन्त्य स, क को विकल्प से म, विकृष्णभाव में क का लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग का ओत्व ।

(ङ) क = म—

चंदिमा < चन्द्रिका—संयुक्त रेफ का लोप और क को म ।

(च) क = व—

पवट्टो < पकोष्ठः—संयुक्त रेफ का लोप, क के स्थान पर व, संयुक्त प का लोप, ठ को द्वित्व और पूर्ववर्ती ठ को ट ।

(छ) क = ह—

चिहुरो < चिहुरः—क को ह, विसर्ग को ओत्व ।

निहुरो < निहुरः—क को ह, मूर्धन्य प को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व ।

फलिहो < स्कटिकः—संयुक्त स का लोप, ट का लोप, क के स्थान पर ह, विसर्ग को ओत्व ।

सीहुरो < शीकरः—ताछव्य श को दन्त्य स, क को ह और विसर्ग को ओत्व ।

(१२) संस्कृत की ख छत्रि प्राकृत में क में बदल जाती है ।

र = क—

संक्लं < शंक्लम्—संयुक्त रेफ का लोप, ताछव्य श को दन्त्य स और ख के स्थान पर क ।

संज्ञा < श्रृंश्रु—संयुक्त रेफ का लोप, ताडव्य श को दन्त्य स और ग के स्थान पर क ।

(१३) संस्कृत की ग धनि का प्राकृत में म, छ और व में परिवर्तन होता है ।

(क) ग = म—

पुंनामाइं < पुंनागानि—ग के स्थान पर म तथा न लोप और इ स्वर, अनुस्वार ।

भामिणी < भगिनी—ग के स्थान पर म और न को णत्व ।

(ख) ग = ल—

छालो < छागः—ग के स्थान पर ल और विसर्ग को ओत्व ।

छाली < छागी—ग के स्थान पर छ ।

(ग) ग = व—

दूहयो < दुर्मगः—उपसर्ग के दुर को दीर्घ, भ को इ और ग के स्थान में व तथा विसर्ग को ओत्व ।

सूहयो < सुभगः—उपसर्ग के सु को दीर्घ, भ को इ और ग के स्थान पर व तथा विसर्ग को ओत्व ।

(१४) प्राकृत में संस्कृत का च वर्ण ज, ट, छ और स में परिवर्तित होता है ।

(क) च = ग—

पिसागी < पिशाची—तालव्य श को दन्त्य स और च को ग ।

(ख) च = ट—

आउंटणं < आकुञ्जन्म्—क का लोप, उ स्वर शेष तथा च के स्थान पर टत्व, न को णत्व ।

(ग) च = ल—

पिसहो < पिशाचः—तालव्य श को दन्त्य स और च के स्थान में छ, विसर्ग को ओत्व ।

(घ) च = स—

खसिओ < खचितः—च के स्थान पर स, अन्तिम त का लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग वा ओत्व ।

(१५) संस्कृत का ज वर्ण प्राकृत में झ में परिवर्तित होता है ।

झडिलो, जडिलो < जटिलः—ज के स्थान पर विस्वप् से झ आदेश, ट के स्थान में छ तथा विसर्ग वा ओत्व ।

(१६) संस्कृत का ट वर्ण प्राकृत में ढ, ठ और ल के रूप में परिवर्तित होता है ।

(क) ट = ड—

घडो < घडः—ट के स्थान में ड, विसर्ग का ओत्व ।

नडो < नडः— " "

भडो < भडः— " "

(ख) ट = ड—

केडवो < कैडभः—ऐकार को एकार, ट को ड और भ को व, विसर्ग को औरव ।
सयडो < शकट—तालव्य श को स, फकार का छोर, अ स्वर शेष और य
श्रुति तथा ट को ड ।

सडा < सटा—ट को ड ।

(ग) ट = ल—

फलिहो < स्फटिः—संयुक्त स का छोप, ट के स्थान पर ल और क को ह ।

चविला < चपंटा—प को व, एकार को इत्व और ट को ल ।

फालेइ < पाटयति—प के स्थान पर फा, ट को ल, अकार को एकार तथा
विभक्ति चिह्न इ ।

(१७) संस्कृत की ठ ध्वनि का प्राकृत में ल, ट और ड में परिवर्तन हो जाता है ।

(क) ठ = ल—

अंफोहो < अङ्गोठ—ठ के स्थान पर ल हुआ है ।

अंफोहोहोहं < अङ्गोठोहोहम्—ठ के स्थान पर ल, तकारोत्तर ऐकार को एकार ।

(ख) ठ = ह—

पिहडो < पिठरः—ठ का ह और र का ड हुआ है ।

(ग) ठ = ड—

पड < पठ—ठ का व हुआ है ।

पिडरो < पिठरः—ठ को ड तथा विसर्ग का ओत्व ।

(१८) संस्कृत का ड वर्ण प्राकृत में ल हो जाता है ।

वलयासुहं < वडयासुहम्—ड के स्थान पर ल ।

तलार्यं < तडारगम्— " "

फीला < फीडा— " "

(१९) संस्कृत का ण वर्ण प्राकृत में विकल्प से ल में बदल जाता है ।

पेल, पेणू < पेणुः—

(२०) संस्कृत के छ वर्ण का प्राकृत में च, छ, ड, ट, ण, र, ल, य और इ में परिवर्तन होता है ।

(क) त = च—

चुच्छं < तुच्छम्—त के स्थान पर च आदेश हुआ है ।

(ख) त = छ—

छुच्छं < तुच्छम्—त के स्थान पर छ आदेश हुआ है ।

(ग) त = ट—

टगरो < तगरः—त के स्थान पर ट और विसर्ग को ओत्व ।

टूवरो < तूवरः—

टसरो < तसरः—संयुक्त रेफ का लोप, शेष त के स्थान पर ट, विसर्ग को ओत्व ।

(घ) त = ढ—

पढाया < पताया—त के स्थान पर ढ, क का लोप, अ स्वर शेष और य ध्रुति ।

पडिऊरइ < प्रतिऊरति—त के स्थान पर ड और फरोति का ऋह ।

पडिनिअत्तं < प्रतिनिवृत्तम्—त के स्थान पर ड, व का लोप, ऋ के स्थान पर अ ।

पडिवया < प्रतिपत्—त के स्थान पर ड, प को व और त् के स्थान पर आ

तथा यध्रुति होने से या ।

पडिहासो < प्रतिभासः—त को ढ, भ को ह और विसर्ग को ओत्व ।

पडिमा < प्रतिमा—त को ड ।

पंडसुआ < प्रतिभूत्—त के स्थान पर ड ।

पडिसारो < प्रतिसारः— ,, ,,

पडिहासो < प्रतिहासः— ,, ,,

पहुडि < प्रभृति—भ के स्थान पर ह, संयुक्त ऋ को उ, त को ड ।

पाहुडं < प्राभृत्तम्—भ के स्थान पर ह, संयुक्त ऋ को उ, त को ड ।

मडयं < मृतरम्—मृ की ऋ के स्थान पर अ, त को उ, क लोप, अ स्वर शेष

और यध्रुति ।

अवहडं, अवहयं < अवहृत्तम्—ह में रद्वेगाली ऋ को अ, त को विकल्प से ड, विकल्पाभास में त का लोप और यध्रुति ।

ओहडं, ओहयं < अरहृत्तम्—अर के स्थान पर ओ, त का उ, विकल्पाभास में त लोप और य ध्रुति ।

कडं, रयं < कृतम्—कारोत्तर ऋ को अ, विकल्प से त को ड विकल्पाभास में त लोप, अ स्वर शेष और यध्रुति ।

दुककडं, दुकरयं < दुकृत्तम्—संयुक्त प् का लोप, क को द्वित्व, ऋ को अ और त के स्थान पर विकल्प से ड ।

मडं, मयं < मृतम्—ऋ को अ, त को ड, विकल्पाभाव में तकार का लोप तथा अ स्वर की यभृति ।

वेडिसो, वेअसो < वेतसः—त को ड और इत्त्व, विकल्पाभाव पक्ष में त का लोप और अ स्वर शेष ।

सुकडं, सुकयं < सुकृतम्—ककारोत्तर ऋकार को अ, त को ड, विकल्पाभाव में त का लोप, अ स्वर शेष तथा यभृति ।

(ङ) त = ण—

अणित्तयं < अतिमुत्तम्—त के स्थान पर ण, मकार का लोप, शेष उ को अनुनासिक, संयुक्त क का लोप, अन्तिम क का लोप, अ स्वर शेष और यभृति ।

गडिभणो < गडित्—संयुक्त रेफ का लोप, अ को द्वित्व, पूर्वर्ती महाप्राण के स्थान पर अल्पप्राण, त को ण विसर्ग को ओत्त्व ।

(च) त = र—

सत्तरी < सप्तति—संयुक्त प का लोप, त को द्वित्व और ति के स्थान पर रि तथा दीर्घ ।

(छ) त = ल—

अलसी < अतसी—त के स्थान पर ल ।

सालवाहणो < सातवाहनः—त के स्थान पर ल, न को णत्व, विसर्ग को ओत्त्व ।
पल्लिं, पल्लिअं < पल्लितम्—त के स्थान पर विकल्प से ल, विकल्पाभाव पक्ष में त का लोप, अ स्वर शेष ।

(ज) त = व—

आवज्जं, आउज्जं < आतोद्यम्—त के स्थान पर विकल्प से व और घ को ज।
पीवलं, पीअलं < पीतलम्—त के स्थान पर विकल्प से व, विकल्पाभाव पक्ष में त का लोप और अ स्वर शेष ।

(ऋ) त = ह—

विहस्थी < वितस्तिः—त के स्थान पर ह और स्ति के स्थान पर स्थी ।
वाह्यो, वायरो < कातरः—त के स्थान पर विकल्प से ह और रेफ को छ ।
माहुलिगं, माउलिगं < माहुलिङ्गम्—त को विकल्प से ह, विकल्पाभाव पक्ष में त का लोप और उ स्वर शेष ।

वसही, वसई < वसति—त को विकल्प से ह, विकल्पाभाव पक्ष में तरार का लोप और इ स्वर शेष तथा दीर्घ ।

(२१) संस्कृत का य वर्ण प्राकृत में ढ, ध और ह में परिवर्तित हो जाता है ।

(क) थ = ढ—

पढमो < प्रथमः—य को ढ और अनुस्वार को ओत्त्व ।

मेढी < मेधिः—थ को ढ और इकार को दीर्घ ।

सिढिलो < सिथिरः—तालव्य दा को दन्त्य स, थ को ढ, रेफ को छ ।

निसीढो < निदीथः—तालव्य दा को दन्त्य स तथा थ को ढ ।

पुढवी < पृथिरी—पकारोत्तर ऋकार को उकार और थ को ढ ।

(स) थ = ध—

पिधं < पृथक्—पकारोत्तर ऋ को इत्थ तथा थ के स्थान पर ध, अनुस्वार और अन्त्य ह्रस्व व्यञ्जन क का लोप ।

(ग) थ = ह—

निसीहो < निशीथः—तालव्य श को दन्त्य स और थ को ढ ।

कहइ < कथयति—थ के स्थान पर ह, विभक्ति विद्ध इ ।

नाहो < नाथः—थ को ह ।

मिहुणं < मिधुनम्—थ के स्थान पर ह और न को णत्थ ।

आवसहो < आवसथः—थ के स्थान पर ह ।

(२२) संस्कृत का द षणं प्राकृत में ड, ध, र, ल, ज और ह में परिवर्तित हो जाता है ।

(क) द = ड—

डंस < दंश—द के स्थान पर ड और तालव्य श को दन्त्य स ।

डह < दह—द के स्थान पर ड ।

फडणं, कयणं < कदनम्—द के स्थान पर विकल्प से ड, विकल्पभावात् में द का लोप, अ स्वर शेष और य भ्रुति ।

डड्हो < दध्—द के स्थान में ड और दध के स्थान पर ड ।

डंडो < दण्ड—द के स्थान पर ड और विसर्ग को ओत्थ ।

डंभो < दम्भ— " " " "

डवभो < दर्भः—द के स्थान पर ड, संयुक्त रेफ का लोप, भ को द्वित्व और महाप्राण को अल्पप्राण ।

डरो < दरः—द को ड और विसर्ग को ओत्थ ।

डसणं < दशनं—द को ड, तालव्य श को दन्त्य स तथा न को णत्थ ।

डाहो < दाहः—द को ड और विसर्ग को ओत्थ ।

डोला < दोला—विकल्प से द को ड ।

डोहलो, दोहलो < दोहदः—द के स्थान में विकल्प से ड और अन्तिम द को छ ।

(ख) द = ध—

धीप < दीप—द को ध ।

धिष्णइ < दीष्यते—द के स्थान में ध, दीर्घ ई को ह्रस्व और विभक्ति चिह्न इ ।

(ग) द = र—संख्याशक शब्दों में अनादि और असंयुक्त संस्कृत का द पण प्राकृत में र हो जाता है ।

एआरह < एकादश—क का लोप और आ स्वर शेष, द के स्थान पर र और श को ह ।

वारह < द्वादश—संयुक्त द का लोप, द के स्थान पर र, श को ह ।

तेरह < त्रयोदश—त्र के स्थान पर ते, द को र, दा को ह ।

चरली < चतुर्थी—द को र ।

(घ) द = ल—

पलीवेइ < प्रदीपयति—संयुक्त रेफ का लोप, द को ल, ए को य, अकार को ए और विभक्ति चिह्न इ ।

पलित्तं < प्रदीप्तम्—संयुक्त रेफ का लोप, द को ल, संयुक्त प का लोप और त को ह्रस्व ।

दोहलो < दोहदः—अन्तिम द को ल ।

फलंभो, कयंभो < फलम्भ—विस्मय से द को ल और विकल्पाभाव पक्ष में द का लोप, अ स्वर शेष और य श्रुति ।

(ङ) द = व—

इवट्टिओ < वदधितः—द के स्थान पर व, रेफ का लोप और ध को ट तथा द्विस्व, वकार का लोप, अ स्वर शेष, त्रिदश का शोभ ।

(च) द = ह—

कउहं < कउदम्—मत्परतो क का लोप, उ शेष तथा द के स्थान पर ह ।

(२३) प्राकृत में मत्पण्य वा ध वर्ग उ और ह में परिवर्तित होता है ।

(क) ध = ट—

निसडो < निषधः—मूर्धन्य ध को दन्त्य त और ध को उ ।

ओसाडं < औषधम्—भौकार को ओकार, मूर्धन्य ध को दन्त्य त तथा ध को ट ।

(ख) ध = ह—

इंदणू < इन्द्रधनु—संयुक्त रद का लोप, ध को ह, न को नरद और उकार को दीर्घ ।

याह्ये < यधिया—ध को ह और विभक्ति को शोभ ।

वाहृद् < बाधते—ध के स्थान में ह और विभक्ति चिह्न ह ।

वाहो < व्याधः—संयुक्त य का लोप और ध को ह ।

साहू < साधुः—ध को ह और ह्रस्व उकार को दीर्घ ।

(२४) प्राकृत में संस्कृत के न वर्ण का ण, ण्ह और ल में परिवर्तन होता है ।

(क) न = ण—स्वर परन्ती, एकपदस्थित और असंयुक्त न को ण होता है ।

कणयं < कनयम्—न को णत्व, क लोप और अ स्वर को य श्रुति ।

नयणं < नयनम्—न को णत्व ।

मयणो < मदनः—मध्यपरती द का लोप, और शेष अ स्वर के स्थान पर य श्रुति न को णत्व ।

वयणं < वयनम्—मध्यपरती च का लोप, अ स्वर के स्थान पर य, न को णत्व ।

वयणं < वदनम्—मध्यपरती द का लोप, अ के स्थान पर य तथा न को णत्व ।

णई < नदी—न को णत्व, दकार का लोप और ईस्वर शेष ।

णरो < नरः—न को णत्व, विसर्ग को ओत्व ।

णोइ < नयति—न को णत्व और विभक्ति चिह्न इ ।

(ख) न = ण्ह—

ण्हाविओ < नापित्—न के स्थान पर विकल्प से ण्ह, प को व, तकार का लोप अ स्वर शेष तथा विसर्ग को ओत्व, विकल्पाभाव में—नाविओ रूप ।

(ग) न = ल—

लिवो < निम्बः—न को ल, विसर्ग को ओत्व ।

(२५) संस्कृत के प वर्ण का प्राकृत में फ, म, व और र में परिवर्तन होता है ।

(क) प = फ—

फणसो < पनसः—प के स्थान पर फ, न को णत्व और विसर्ग को ओत्व ।

फलिहो < परिधः—प के स्थान पर फ, र को ल, ध को ह और विसर्ग को ओत्व ।

फलिहा < परिला—प के स्थान पर फ, र को ल और ख के स्थान में ह ।

फरुसो < परुषः—प को फ और मूर्धन्य प को दन्त्य ल ।

फाडि < पाटि—प को फ और ट को ड ।

फालिहो < पारिभद्रः—प को फ, र को ल, भ को ह और संयुक्त रेफ का लोप, द को द्वित्व तथा विसर्ग को ओत्व ।

(ख) प = म—

आमेलो < आपीडः—प के स्थान पर म, ईकार को एकार, ड को ल, विसर्ग को ओत्व ।

नीमो < नीपः—प को म, विसर्ग को ओत्व ।

(ग) प = घ—

वहुत्तं < प्रभूतम्—संयुक्त रेफ का लोप और प को घ, भ को इ तथा त को द्वित्व ।

(घ) प = र—

पारद्धी < पापद्धिः—यहाँ प के स्थान पर र, संयुक्त रेफ का लोप और दीर्घ ।

(२६) संस्कृत के व वर्ण का प्राकृत में, भ, म और य में परिवर्तन होता है ।

(क) व = भ—

भिसिणी < विसिनी—व के स्थान पर भ हुआ है ।

(ख) व = म—

कर्मधो < कवन्धः—मध्यवर्ती य को मकार ।

(ग) व = य—

कयन्धो < कयन्धः—व के स्थान पर य और विसर्ग को ओत्व ।

(२७) संस्कृत के म वर्ण का प्राकृत में व और इ में परिवर्तन होता है ।

(क) भ = व—

केढवो < कैटभः—पेकार को एत्व, ट को ढ और भ को व ।

(ख) भ = ह—

नहं < नभस्—भ के स्थान पर ह ।

पहा < प्रभा—संयुक्त रेफ का लोप और भ को ह ।

सहा < सभा—भ को ह ।

सहायो < स्वभावः—संयुक्त व का लोप, भ के स्थान पर ह और विसर्ग को ओत्व ।

सोहइ < शोभते—तालव्य दा को दन्त्य स, भ को ह और विभक्ति चिह्न इ ।

(२८) संस्कृत का म वर्ण प्राकृत में ढ, व और स में परिवर्तित होता है ।

(क) म = ढ—

विसढो < विपमः—मूर्धन्य प को दन्त्य स और म को ढ ।

(ख) म = व—

यन्महो < मन्मथः—म के स्थान पर व तथा संयुक्त न का लोप और म को द्वित्व, थ को ह ।

अहिवन्नु < अभिमन्नुः—भ को ह और म को व, संयुक्त य का लोप, न को द्वित्व और इत्व को दीर्घ ।

(ग) म = स—

भसढो < भमरः—संयुक्त रेफ का लोप, म को स और रेफ को ल ।

(घ) म = अनुनासिक—निम्न शब्दों में मु के मकार का छोप हो जाता है और शेष स्वर उ के स्थान में अनुनासिक ऊँ हो जाता है ।

अणिकेतयं < अतिमुचम्—मकार का छोप और शेष स्वर उ को अनुनासिक ॐ ।

फाँडो < कामुरुः—मकार का छोप और शेष स्वर उ को अनुनासिक ॐ ।

चाँडो < चामुण्डा— " " "

जँडो < यमुना— " " "

(२९) संस्कृत के य घर्ष का प्राकृत में आह, ज्ञ, ज, त, ल, व और इ में परिवर्तन होता है ।

(फ) य = आह—

कइवाहं < कतिपयम्—तकार का छोप, इ स्वर शेष, प के स्थान में व और य को आह ।

(ख) य = ज्ञ—

उत्तरिज्ञं < उत्तरीयम्—री को ह्रस्व और य को ज्ञ ।

तइउजो < तृतीयः—तकारोत्तर ऋकार को अ, त का छोप और शेष स्वर ई को ह्रस्व और य को ज्ञ ।

विइउजो < द्वितीयः—संयुक्त इ का छोप, मध्यवर्ती त का छोप, शेष स्वर ई को ह्रस्व, य को ज्ञ ।

(ग) य = ज—संस्कृत शब्दों में आदि में आनेवाला य प्राकृत में ज में बदल जाता है ।

जमो < यमः—य के स्थान पर ज, विसर्ग को ओत्व ।

जसो < यश — " तालव्य श को दन्त्व स और विसर्ग को ओत्व ।

जाइ < याति—य को ज, त का छोप और इ स्वर शेष ।

(घ) य = त—

तुम्हकेरो < युष्मदीयः—युष्मद् के स्थान पर तुम्ह और ईय को केर ।

तुम्हारिसो < युष्मादश —युष्मद् के स्थान पर तुम्ह और दश के स्थान पर रिस ।

तुम्ह < युष्मद्—युष्मद् के स्थान पर तुम्ह ।

(ङ) य = ल—

लट्टी < यष्टिः—य के स्थान पर ल, संयुक्त ए का छोप, ट का द्वित्व और द्वितीय अव्यप्राण का महाप्राण, इकार को दीर्घ ।

(च) य = व—

कइअवं < कतिपयम्—त का छोप और इ स्वर शेष, प का छोप और अ स्वर शेष तथा व का व ।

(छ) य = ह—

छाही < छाया—य के स्थान पर ह और आकार को ईत्स्व ।

सच्छाहं < सच्छायम्—य को ह ।

(३०) संस्कृत का र वर्ण प्राकृत में ड, ण और र में चढ़ल जाता है ।

(क) र = ड—

किडो < किरिः—र के स्थान पर ड, इकार को दीर्घ ।

पिहडो < पिडरः—ड के स्थान पर ह और र को ड ।

भेडो < भेरः—र के स्थान पर ड ।

(ख) र = ण—

कणवीरो < करवीरः—र के स्थान पर ण ।

(ग) र = ल—

अयदालं < अपद्वारम्—संयुक्त व का छोप और द को द्वित्व, र को ल ।

इंगालो < अङ्गारः—अकार को इकार और र को ल ।

फलुणो < करुणः—र को ल ।

काहलो < कातरः—त को ह और र को ल ।

दलिदो < दरिद्रः—र को ल, संयुक्त रेफ का छोप और द को द्वित्व ।

दलिदाइ < दरिद्राति— " " "

दालिदं < दारिद्रयम्— " और य का छोप

फलिदा < परिखा—प का फ, र को ल और य को ह ।

फलिदो < परिषः—प को फ, र को ल और य को ह ।

फालिहदो < पारिभद्रः—प को फ, र को ल, भ को ह तथा संयुक्त रेफ का छोप

और द्र को द्वित्व ।

भसलो < भ्रमरः—संयुक्त रेफ का छोप, म को स और र को ल ।

मुहलो < मुपरः—प को ह और र को ल ।

जहुट्टिलो < युधिष्ठिरः—य को ज, ध को ह, संयुक्त प का छोप, ठ को द्वित्व और पूर्वर्ता महाप्राग को अल्पप्राग, र को ल ।

लुको < लणः—र को ल और ण को ल ।

वलुणो < वरुणः—र को ल ।

सिदिलो < सिधिरः—साल्ढ्य स को इत्स्व स, थ को ड और र को ल ।

सयालो < सस्कारः—संयुक्त स का छोप, क को द्वित्व और र को ल ।

सोमालो < सुमारः—क का लोप, ओप स्वर उ का लोप तथा पूर्व स्वर उ को ओस्व, र को ल ।

थूलो—स्थूरः—संयुक्त स का लोप और र को छ ।

थूलभदो < स्थूरभद्र.—संयुक्त स का लोप, र को छ, संयुक्त र का लोप तथा द को द्वित्व ।

हलिदो < हरिद्र.—र को छ, संयुक्त रेफ का लोप और द को द्वित्व ।

हलिदा < हरिदा— ” ” ”

जडलं, जडरं < जठरम्—ठ को ढ और र को विकल्प से छ ।

निट्टुलो, निट्टुुरो < निष्टुरः—संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व द्वितीय अल्प-प्राण को महाप्राण और र को छ ।

(३१) संस्कृत का ल वर्ण प्राकृत में ण और र में परिवर्तित होता है ।

(क) णडाल, णिडालं < छलाटम्—छ के स्थान पर ण, ट को ड, षर्ण व्यस्यय होने से णडाएम्, अकार को इत्व होने से णिडालं ।

णंगल, लगलं < लाङ्गलम्—छ को ण तथा ह्रस्व ।

णाहलो, लाहलो < लाहलः—छ को ण ।

(ख) ल = र—

थोरं < स्थूरम्—संयुक्त स का लोप, ऊकार को ओटय, र को ल ।

(३२) संस्कृत के व वर्ण का प्राकृत में भ और म में परिवर्तन होता है ।

(क) व = भ—

भिबभलो, विबभलो, विहलो < विहल —व के स्थान पर भ ।

(ख) व = म—

समरो < शमरः—तालव्य ग के स्थान पर दन्त्य स, व को म ।

वेसमणो < वैश्रवण —पेकार को एकार, संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स, व को म और विलम्ब को ओटय ।

नीमी < नीवी—व के स्थान पर म ।

सिमिणो < स्मिन्नः—संयुक्त वर्णों का पृथकरण, इकारागम और ञ को म तथा न को णत्व ।

(३३) संस्कृत के श वर्ण का छ, स और ह में परिवर्तन होता है ।

(क) श = छ—

छमी < शमी

छिरा < शिरा

छावो < शावः

(ख) श = स—

कुसो < कुश --श को स ।

दस < दश— ”

निसंसो < नृशंस — संयुक्त ऋकार को ह्रस्व और श को स ।

विसइ < विशति—अनुस्वार को लोप, श को स और त का लोप, इ शेष ।

वंसो < वंशः—श के स्थान पर स ।

सहो < शब्द.—श को स, संयुक्त व् का लोप और द को द्वित्व ।

सामा < श्यामा—संयुक्त या का लोप, श को स ।

सुद्वं < शुद्धम्—श को स ।

सोहइ < शोभते—श को स, भ को ह और विभक्ति चिह्न इ ।

(ग) श = ह—

एआरह < एकादश—क लोप, अ स्वर शेष, द को र और श को ह ।

दह < दश—श को ह ।

दहवलो < दशवलय— „

दहमुहो < दशमुखः— „ और ख को ह ।

दहरहो < दशरथः—श को ह और थ के स्थान में भी ह ।

वारह < द्वादश—संयुक्त द का लोप, द को र, श को ह ।

तेरह < त्रयोदश—त्रय के स्थान में ते, द को र, श को ह ।

(३४) संस्कृत के प वर्ण का प्राकृत में छ, ण्ह, स और ह में परिवर्तन होता है ।

(क) प = छ—

छप्पहो < पट्पदः—पट् के स्थान पर छ और द को ह ।

छमुहो < पण्मुहः— „ „

छट्टो < पठः—प के स्थान पर छ, संयुक्त प का लोप और ठ को द्वित्व तथा

प्रथम महाप्राण का अल्पप्राण ।

छट्टी < पठी— „ „ „

(ख) प = ण्ह—

सुण्हा < स्तुपा—संयुक्त न का लोप और प के स्थान में ण्ह ।

(ग) प = स—

कसायो < कपायः—प के स्थान में स ।

निहसो < निकपः—क को ह और प को स ।

संडो < पण्डः—प को स ।

(३५) संस्कृत के त वर्ण का प्राकृत में छ और ह में परिवर्तन होता है ।

(क) स = छ—

छत्तपण्णो < सप्तपर्णः—स को छ, संयुक्त प का लोप, त को द्वित्व, प को ष, संयुक्त रेफ का लोप और ण को द्वित्व ।

छुहा < सुधा—स के स्थान में छ आदेश और घ को ह ।

(ख) स = ह—

दिवहो < दिवसः—स के स्थान पर ह और विसर्ग को ओत्व ।

(३६) संस्कृत का ह वर्ण प्राकृत में घ और र में बदलता है ।

सिंघ < सिंहः—ह के स्थान पर घ ।

उत्थारो < उत्साहः—ह को थ और ह के स्थान पर र ।

(३७) संस्कृत की कई ध्वनियों का प्राकृत में लोप हो जाता है ।

(क) स्वर लोप—

रणं < अरण्यम्—अ का लोप ।

लाऊ < अलावू— ”

(ख) व्यञ्जन लोप—

पारो < प्राकारः—रू का लोप ।

वारणं < व्याकरणम्— ”

आओ < आगतः—ग का लोप ।

दणू < दनुजः—ज का लोप ।

दणुवहो < दनुजघः— ”

भाणं < भाजनम्— ”

राउलं < राजकुलम्— ”

उंवरो < उदुम्बरः—द का लोप ।

दुग्गाधी < दुर्गादेवी— ”

पावडणं < पादपतनम्— ”

पाधीडं < पादपीठम्— ”

किसलं < किसलयम्—य का लोप

कालासं < कालायसम्— ”

हिअं < हृदयं— ”

सहिओ < सहृदयः— ”

अडो < अवडो—व लोप ।

अत्तमाणो < आवर्तमानः— ”

एमेव < एवमेव—व कोप

जीअं < जीवितम्— ”

देवलं < देवकुलम्— ”

पारओ < प्रावाररुः— ”

जा < यावत्— ”

संयुक्त व्यञ्जन परिवर्तन

(३८) संस्कृत की क्ष ध्वनि का प्राकृत में ख, छ और क होता है; परन्तु पद के मध्य या अन्त में क्ष के आने पर क्ख, क्छ और क्क हो जाता है ।

(क) क्ष = ख—

खओ < क्षयः—क्ष के स्थान पर ख और य लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग का ओत्व ।

खीणं < क्षीणम्—क्ष के स्थान पर ख ।

खीरं < क्षीरम्—

” ”

खोडओ < क्ष्वेटकः—क्ष का ख, ट को ड और क लोप, अ स्वर शेष और

विसर्ग को उत्त्व ।

खोडओ < क्ष्वेटकः—

इक्खू < इक्षुः—पद के मध्य में क्ष के होने से क्ख और उकार को दीर्घ ।

खिक्खो < क्षिक्खः—क को खि ” ” विसर्ग को ओत्व ।

खिक्खं < क्षिक्खम्—

”

”

”

खिक्खआ < मक्षिका—पद मध्य में रहने से क्ष को क्ख, ककार का लोप और

अ स्वर शेष ।

खिक्खणं < मक्षिणम्—पद के मध्य में रहने से क्ष को क्ख ।

पक्खीणं < प्रक्षीणम्—संयुक्त रेफ का लोप, पद के मध्य में रहने से क्ष को क्ख ।

पक्खेयो < प्रक्षेपः—

”

”

”

सारिक्खं < साहक्ष्यम्—ह के स्थान पर खि और ण के मध्य में रहने से क्ष्य

का क्ख ।

खिक्खो < यक्षः—य को खि और क्ष का क्ख । --

(ख) क्ष = छ—

छणो < क्षणः—क्ष के स्थान पर छ ।

छयं < क्षतम्—क्ष के स्थान पर छ, तकार का लोप, अ स्वर शेष और यभुति ।

छमा < क्षमा—क्ष के स्थान छ ।

छारो < क्षारः—

” ”

छीणं < क्षीणम्—

” ”

छीरं < क्षीरम्—

” ”

छुण्णो < क्षुण्णः—

” ”

छीयं < क्षुतम्—” ” और त लोप, अ स्वर शेष तथा य भुति ।

छुहा < क्षुधा—क्ष को छ तथा ध को ह ।

छुरो < क्षुरः—क्ष को छ ।

द्वैतं < द्वैतम्—क्ष को ष ।

अच्छिद < अक्षि—पद के मध्य में क्ष के रहने से क्ष के स्थान पर ष ।

उच्छ्रु < श्रुः—द के स्थान पर उश्च, पद के मध्य में क्ष के होने से ष ।

उच्छ्रा < उश्चा—पद के मध्य में होने से क्ष के स्थान में ष ।

रिच्छो < कश्चः—क के स्थान पर रि और पद के मध्य में होने से क्ष को ष ।

कच्छो < कश्चः—पद के मध्य में होने से क्ष के स्थान में ष ।

कच्छा < कश्चा— " " "

कुच्छी < कुक्षि— " " "

कुच्छ्रयं < कुक्षयम्—भीकार को उश्च, पद के मध्य में क्ष के होने से ष,

य और क का लोप, अ स्वर धेनु अन्तितम में ग धुति ।

दृच्छो < दक्षः—पद के मध्य में होने से क्ष को ष ।

पच्छीर्णं < पक्षीर्णम्— " "

मच्छिआ < मक्षिआ— " "

लच्छो < लक्ष्मीः— " "

यच्छं < यक्षम्— " "

यच्छो < यक्ष— " "

सरिच्छो < सक्षः— " "

सारिच्छं < साक्षयम्— " "

(ग) क्ष = क्—

क्षीर्णं < क्षीर्णम्—क्ष के स्थान पर क् ।

क्लिञ्जद् < क्षीजते—क्ष के स्थान पर क्, ईकार को दश्च, य को उ और द्विश्च, रिभक्ति विद्म इ ।

पक्ष्मीर्णं < पक्षीर्णम्—पद मध्य में होने से क्ष के स्थान पर क् ।

(३९) संस्कृत के संयुक्त रूप ण्क और क्क के स्थान में ख होता है, पर पद के मध्य में आने से क्क हो जाता है ।

(क) क्क = क्त—

निक्करं < निक्कम्—पद के मध्य में क्क रहने से क्त ।

पोक्करं < पुक्करम्— " "

पोक्करिणी < पुक्करिणी— " "

(ख) क्क = क्त—

अक्करन्दो < अक्कन्दः—पद के मध्य में क्क रहने से क्त ।

खन्दो < क्कन्दः—पद के आदि में क्क रहने से ख आदिन्त ।

खंधो < क्कन्धः— " "

खंधावासी < क्कन्धावासी— " "

(४०) संस्कृत के संयुक्त वर्ण त्थ का प्राकृत में च होता है, पर पद के मध्य में आने से ङव ।

(क) त्थ = च ।

चाओ < त्यागः—पदादि में रहने से त्थ के स्थान में च ।

चाई < त्यागी— " "

चयइ < त्यजति— " "

पच्चओ < प्रत्ययः—पद के मध्य में रहने से त्थ के स्थान में च ।

पच्चूसो < प्रत्यूषः— " " "

सच्चं < सत्यम्— " " "

(४१) प्रयोगानुसार त्थ को च, ध्व को छ, द्व को ज और ध्र को ऋ भादेश होता है, किन्तु पद के मध्य में इनके आने से उक्त वर्ण ङ, ञ, ज और ऋक हो जाते हैं ।

(क) त्थ = च्च—

किच्चा < कृत्वा—पद के मध्य में होने से त्थ के स्थान पर च ।

चच्चरं < चत्वरम्— " "

णच्चा < ज्ञात्वा—ज्ञ के स्थान में ण तथा पद के मध्य में होने से त्था के स्थान पर ङवा ।

दृच्चा < दृत्वा—पद के मध्य में होने से त्थ के स्थान में च ।

भोच्चा < भुक्त्वा— " "

सोच्चा < श्रुत्वा—संयुक्त रेफ का लोप, ताड्य ध्र को दन्त्य स तथा उगार को ओत्व, पद मध्य में त्थ के होने से ङव ।

(घ) ध्व = छ—

पिच्छी < पृथ्वी—प में संयुक्त ऋ के स्थान पर ह्रस्व और पद के मध्य में ध्व के होने पर ङउ ।

(ग) द्व = ज—

विज्जं < विज्ञान्—पद के मध्य में होने से द्व के स्थान पर ज और भा को ह्रस्व अन्त्य ह्रस्व व्यंजन न् का अनुस्वार ।

(घ) ध्व = ऋ—

ऋओ < ध्वजः—पदादि में होने से ध्र का ऋ, ज का लोप, ध्र स्वर लोप और विसर्ग का आत्व ।

युज्ज् < युजा—पद के मध्य में होने से र्र के स्थान पर र्ज ।

सज्ज् < साध्यसम्—सा को ह्रस्व, पद के मध्य में होने से ध्र को र्ज ।

(४२) इत्थ स्वर से परे संस्मृत के संयुक्त वर्ण ध्य, ध, स्स और प्स को प्राकृत में ष्ट होता है ।

(क) ध्य = ष्ट—

पच्छं < पथ्यम्—ध्य के स्थान पर ष्ट ।

पच्छा < पथ्या— " "

मिच्छा < मिथ्या— " "

सामच्छं < सामथ्यम्— " "

(ख) ध्य = ष्ट—

अच्छेरं < आध्र्यम्—अ को इत्थ, य को ष्ट, र को इत्थ ।

पच्छा < पथात्—ध के स्थान पर ष्टा और अन्त्य या शेष ।

पच्छिमं < पथिमम्—ध के स्थान पर ष्ट ।

विच्छिओ < वृच्छिः—य में संयुक्त ष्ट को इ, थ को ष्ट तथा ष को ष, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्थ ।

(ग) स्स = ष्ट—

संस्सरो < संस्सराः—स्स के स्थान पर ष्ट ।

उस्सवो < उस्सवः— " "

उस्साहो < उस्साहः— " "

उस्सुओ < उस्सुः— " "

मस्सरो < मस्साः— " "

(घ) प्स = ष्ट—

अप्सरा < अप्परा—प्प के स्थान पर ष्ट ।

उप्सुत्तिह < उप्पुत्ति— " "

लिप्सुत्तिह < लिप्पुत्ति— " "

(४३) पद के आदि में रहने वाले संस्मृत के संयुक्त वर्ण ध्य, ध, स्स और प्स को प्राकृत में ष्ट होता है, पर पद के मध्य में इन वर्णों के आने पर ष्ट हो न सकेगा ।

(क) ध्य = ष्ट—

मुद्दि < मुत्तिः—पदादि में ध के रहने से न, त्तमार या षोत्थ और इत्थ द्वारा ष्ट शेष होगा ।

जोशो < जोत्थः—पदादि में रहने से ष के स्थान में न, त्तमार या षोत्थ, अ स्वर शेष, विसर्ग का श्रान्त ।

अयज्ञं < अवद्यम्—पद के मध्य में रहने से छ का ज्ञ ।

मज्जं < मद्यम्— " " "

वेज्जो < वैद्य.— " " "

(ख) व्य = ज—

जज्जो < जद्यः—व्य के पद मध्य में होने से ज्ञ ।

सेज्जा < शय्या— " " ताल-य श को इत्य स और

अकार को एत्य ।

(ग) र्य = ज—

कज्जं < कार्यम्—पद के मध्य में र्य के रहने से ज्ञ ।

पज्जत्तं—पर्याप्तम्— " " " तथा संयुक्त प का लोप और त को द्वित्व ।

पज्जाओ < पर्याय —पद के मध्य में रहने से र्य को ज्ञ ।

भज्जा < भार्या—भा को ह्रस्व और पद के मध्य में होने से र्य को ज्ञ ।

मज्जाया < मर्शादा—पद के मध्य में होने से र्य को ज्ञ तथा द का लोप, आ स्वर श्रेय और य ध्रुति ।

वज्जं < वर्यम्—पद के मध्य होने से र्य को ज्ञ ।

(४४) पद के आदि में रहनेवाले संस्कृत के संयुक्त वर्ण ष्य और ह्य को प्राकृत में झ होता है, किन्तु पद के मध्य में इन वर्णों के आने पर ज्झ होता है ।

(क) ध्य = झ—

झाराणं < ध्यानम्—पदादि में ध्य के रहने से उसके स्थान में झ तथा न को पत्य ।

झायइ < ध्यायति—पदादि में ध्र के रहने से उसके स्थान में झ ।

विज्झो < विन्ध्यः—पद के मध्य में ध्य के रहने से ज्झ ।

सज्झं < साधय्—सा को ह्रस्व और पद के मध्य में रहने से ध्य को ज्झ ।

सज्झाओ < साध्यायः—संयुक्त व का लोप और ह्रस्व, पद के मध्य में रहने से ध्य को ज्झ ।

(ख) ह्य = झ—

गुज्झं < गुह्यम्—पद के मध्य में रहनेवाले ह्य के स्थान पर ज्झ ।

नज्झइ < नह्यति— " "

मज्झं < मय्यम्— " "

सज्झो < सहाः— " "

(४५) संस्कृत का संयुक्ताक्षर र्त सामान्यतः प्राकृत में हृ ही जाता है ।

केवट्टो ऽ कैरर्तः—ऐकार को एकार और र्त को हृ तथा विसर्ग को ओत्त्व ।

जट्टो ऽ जर्तः—र्त के स्थान पर हृ और विसर्ग का ओत्त्व ।

नट्टई ऽ नर्वकी—र्त के स्थान पर हृ तथा ककार का लोप, ई स्वर शेष ।

पयट्टइ ऽ प्रयर्तते—संयुक्त रेफ का लोप, य को व, र्त को हृ, विभक्ति चिह्न हृ ।

रायट्टयं ऽ राजयर्तम्—ज का लोप, अ स्वर शेष, य ध्रुति, र्त को हृ तथा क का लोप अ स्वर को य ध्रुति ।

वट्टी ऽ वर्ती—र्त को हृ ।

वट्टलं ऽ वर्तुलम्— ”

वट्टा ऽ वार्ता— ”

संवट्टिर्त्तं ऽ संवर्तितम्— ”

(४६) संस्कृत के संयुक्ताक्षर म्न और ञ के स्थान पर प्राकृत में ण होता है, पर पद के मध्य में इन वर्णों के आनेपर इनके स्थान में ण्य होता है । व्यञ्जन से आगे रहने या दीर्घ स्वर के परे रहने से ण ही होता है ।

(क) म्न = ण—

निष्णं ऽ निम्नम्—पद के मध्य में म्न के आने से इसके स्थान में ण्य ।

पञ्जुष्णो ऽ प्रयुष्णः—संयुक्त रेफ का लोप, ञु को ञ्जु और म्न के स्थान में ण्य ।

(ख) ञ्ज = ण—

आणा ऽ आज्ञा—दीर्घ स्वर से परे ञ्जा के रहने से ञ्ज के स्थान में ण ।

पण्णा ऽ प्रज्ञा—पदमध्य में ञ्जा के होने से ण्य ।

विष्णाणं ऽ विज्ञानम्— ” ”

णाणं ऽ ज्ञानम्—पदादि में ञ्ज के होने से ण ।

संणा ऽ संज्ञा—अनुस्वार-म् के परे रहने के कारण ञ को ण ।

(४७) संस्कृत का संयुक्त वर्ण स्त प्राकृत में थ ही जाता है, पर पदमध्य में आने पर थ होता है ।

थयो ऽ स्तयः—पदादि में स्त के होने से, उसके स्थान में थ ।

थंभो ऽ स्तम्भः— ” ” ”

थद्धो ऽ स्तद्धः— ” ” ”

थुद्धं ऽ स्तुति— ” ” ”

थोर्त्तं ऽ स्तोत्रम्— ” ” ”

थोत्तं ऽ स्तोत्रम्— ” ” ”

थीर्णं ऽ स्तथानम्— ” ” ”

अत्थि < अस्ति—पदमध्य में स्त के होने से त्थ हुआ है ।

पत्त्रथो < पर्यस्तः— " " "

पसत्यो < प्रशस्तः— " " "

पत्थरो < प्रस्तरः— " " "

हृत्यो < हस्तः— " " "

चितोप—कुछ शब्दों में स्त का ख हो जाता है । यथा—

खंभो < स्तम्भः—यहाँ स्त के स्थान पर ख हुआ है ।

(४८) संस्कृत का संयुक्त वर्ण ए प्राकृत में ट हो जाता है, पर पदमध्य में आने से ए का ट्ट होता है ।

अणिट्टं < अनिष्टम्—पदमध्य में रहने से ए के स्थान पर ट्ट ।

इट्टो < इष्टः— " " "

कट्टं < कष्टम्— " " "

फट्टं < फाष्टम्— " " "

दट्टो < दष्टः— " " "

दिट्टी < दृष्टिः— " " "

पुट्टो < पुष्टः— " " "

मुट्टी < मुष्टिः— " " "

लट्टो < लथिः—पदमध्य में रहने से ए के स्थान पर ट्ट ।

सुरट्टा < सुराष्ट्रा— " " "

सिट्टी < सृष्टिः— " " "

कोट्टागारं < कोष्ठागारम्— " " "

मुट्टु < मुडु— " " "

(४९) संस्कृत के संयुक्त वर्ण इम् और एम के स्थान पर प्राकृत में व हो जाता है, पर पदमध्य में इन वर्णों के आने से एव हो जाता है ।

कुपलं < कुड्मलम्—इम् के स्थान पर व हुआ है ।

रुत्पिणी < रुत्पिनी—पदमध्य में होने से एम के स्थान में एव हुआ है ।

(५०) संस्कृत के संयुक्त वर्ण एव, एव को प्राकृत में फ होता है, किन्तु पदमध्य में इन वर्णों के आने से एक्क हो जाता है ।

(क) एव = फ—

निष्पाओ < निष्पावः—पद मध्य में रहने से एव के स्थान पर एक्क हुआ ।

निष्पेसो < निष्पेव --- " "

पुष्कं < पुष्कम्— " "

सष्कं < सष्कम्— " "

(ख) स्प = फ—

फंदणं < स्पन्दनम्—पदादि में रहने से स्प के स्थान पर फ ।

पडिप्फदी < प्रतिस्पर्धी—पद के मध्य में रहने से स्प के स्थान में फ्फ ।

वुह्फर्ई < वृहस्पतिः—

”

”

(५१) संस्कृत का संयुक्त वर्ण ह् प्राकृत में भ हो जाता है, पर पदमध्य में आने पर विकल्प से ब्भ होता है ।

जिबभा, जीहा < जिह्वा—पद मध्य में रहने से ह् के स्थान में विकल्प से ब्भ, विकल्पाभाव में संयुक्त व का लोप और पूर्व इकार को दीर्घ ।

विबभलो, विहलो < विह्वल—पदमध्य में रहने से ह् को विकल्प से ब्भ तथा विकल्पाभाव पक्ष में संयुक्त व का लोप और विसर्ग का ओत्व ।

(५२) संस्कृत का संयुक्त वर्ण न्म प्राकृत में म्म हो जाता है ।

जम्मो < जन्म—न्म के स्थान पर म्म ।

वन्महो < मन्मथः—न्म के स्थान पर म्म तथा थ के स्थान में ह, विसर्ग को ओत्व ।

मम्मणं < मन्मनः—न्म के स्थान पर म्म तथा नकार को णत्व ।

(५३) संस्कृत के संयुक्त वर्ण र्म के स्थान पर प्राकृत में विकल्प से म्म का परिवर्तन हो जाता है ।

तिम्मं, तिग्गं < तिरमम्—र्म के स्थान पर विकल्प में म्म, विकल्पाभाव में संयुक्त म का लोप और ग को द्वित्व ।

जुम्मं, जुग्गं < जुग्मम्—य को ज, र्म को विकल्प से म्म, विकल्पाभाव में संयुक्त म का लोप और ग को द्वित्व ।

(५४) संस्कृत के संयुक्त वर्ण र्म, र्म, र्म, ह्म और र्म के स्थान पर प्राकृत में म्म हो जाता है ।

(क) र्म = म्म—

कम्हारा < करमीराः—र्म के स्थान में म्म तथा ईकार को आकार ।

कुम्हाणो < कुरमान—र्म के स्थान में म्म आदेश और नकार को णत्व ।

(ख) र्म = म्म—

उम्हा < ऊर्मा—र्म के स्थान पर म्म तथा ऊ को ह्रस्व ।

गिम्हो < ग्रीर्म—र्म को म्म, संयुक्त र्फ का लोप और ईकार को ह्रस्व ।

(ग) र्म = म्म—

अम्हारिसो < अस्मादशः—र्म के स्थान पर म्म, दश के स्थान पर रिस, विसर्ग को ओत्व ।

विम्हओ < विस्मयः—स्म के स्थान में म्ह, यकार का लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व ।

(घ) ह्य = म्ह—

वम्हा < वम्हा—ह्य के स्थान पर म्ह, संयुक्त रेफ का लोप ।

वम्हणो < वाम्हाणः— " " " " और आ को ह्रस्व ।

वम्हचैरं < वम्हचर्यम्—ह्य के स्थान पर म्ह, य के संयुक्त रेफ का लोप और चर्यं को चैरं ।

सुम्हा < सुम्हाः—ह्य के स्थान पर म्ह ।

(ङ) क्षम = म्ह—

पम्हलं < पक्षमलम्—क्षम के स्थान पर म्ह ।

पम्हाइं < पक्षमाणि— " " "

(११) संस्कृत के संयुक्त वर्ण श्न, ष्ण, स्न, ह्न, ङ्, क्षम और सूक्ष्म शब्द के क्षम के स्थान में प्राकृत में ण्ह हो जाता है ।

(क) श्न = ण्ह—

पण्हो < प्रश्न—प्र में से संयुक्त रेफ का लोप, और श्न के स्थान पर ण्ह, विसर्ग को ओत्व ।

सिण्हो < शिरश्नः—तालन्त्य श के स्थान में दन्त्य स तथा श्न के स्थान पर ण्ह ।

(ख) ष्ण = ण्ह—

उण्हिसं < उष्णीषम्—ष्ण के स्थान में ण्ह, मूर्धन्य ष को दन्त्य स ।

कण्हो < कृष्णः—क में रहनेवाली ष के स्थान में अ और ष्ण के स्थान में ण्ह, विसर्ग को ओत्व ।

जिण्हू < जिष्णुः—ष्ण के स्थान पर ण्ह, उच्चार को दीर्घ ।

विण्हू < विष्णुः— " " "

(ग) स्न = ण्ह—

जोण्हो < जोश्नः—संयुक्त य का लोप तथा संयुक्त त का लोप और स्न के स्थान में ण्ह ।

पण्हुओ < प्रस्तुतः—प में से संयुक्त रेफ का लोप, स्न के स्थान पर ण्ह, व का लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व ।

पण्होओ < स्नातः—स्न के स्थान में ण्ह, त का लोप और अ स्वर शेष तथा विसर्ग को ओत्व ।

(ष) ष्ट = ष्ट—

जष्ट् < जष्टुः— ष्ट के स्थान पर ष्ट और उकार को दीर्घ ।

यष्टी < यष्टिः— " " और इकार को दीर्घ ।

(ष) ष्ण = ष्ण—

अवरण्हो < अपराहः— ष के स्थान पर व, ष के स्थान पर ष्ट ।

गुव्यण्हो < गुवाहः— संयुक्त रेफ का लोप, व को द्विरप और भा को अक्षर

तथा ष के स्थान में ष्ट ।

(ष) ष्ण = ष्ण—

तिण्हं < तीहणम्— ती को इत्, षण के स्थान में ष्ट ।

सण्हं < सण्हणम्— संयुक्त ल का लोप, मूर्धन्य ष को द्विरप ल, षण के स्थान में ष्ट ।

क्ष्म = ष्ण—

सण्हं < सूक्ष्मम्— सू के स्थान पर स और क्ष को ष्ट ।

(१६) संस्कृत का संयुक्त वर्ण ष्ट प्राकृत में ष्ट हो जाता है ।

वल्हारं < वल्हारम्— ष्ट के स्थान में ष्ट ।

पल्हाओ < पल्हाः— " " " "

(१७) संस्कृत का ञ वर्ण प्राकृत में विकल्प से ज होता है, पर पदमध्य में जाने से ज्ञ होता है ।

अहिज्जो, अहिण्णो < अभिजः— भ के स्थान पर ह, पदमध्य में रहने से ज्ञ के स्थान पर विकल्प से ज्ञ, विकल्पाभाव में ण ।

अज्जा, आणा < आज्ञा— पदमध्य में रहने से ज्ञ के स्थान पर ज, विकल्पाभाव में ण ।

अप्पज्जो, अप्पण्णु < आत्मजः— आरम के स्थान पर अप्प, ज्ञ के स्थान पर पदमध्य में रहने से ज, विकल्पाभाव में ण ।

इंगिअज्जो, इंगिअण्णु < इंगितजः— पदमध्य में ज्ञ के रहने से विकल्प से ज्ञ, विकल्पाभाव में ण ।

देवज्जो, देवण्णु < देवजः— देवार को एकार, पदमध्य में रहने से ज्ञ के स्थान पर विकल्प से ज्ञ, विकल्पाभाव में ण ।

पज्जा, पण्णा < प्रज्ञा— पदमध्य में ज्ञ के रहने से ज्ञ को विकल्प से ज्ञ तथा विकल्पाभाव में ण ।

पज्जो, पण्णो < प्राज्ञः—

मणोज्जं, मण्णुणं < मनोदम्—

सव्यज्जो, सव्यण्णु < सर्वज्ञः—

" " "

संजा, संणा < संजा—व्यञ्जन से परे रहने के कारण ज को ज, विकल्पाभाव में ण ।

(१८) संस्कृत का संयुक्त वर्ण हँ प्राकृत में रिह हो जाता है ।

अरिहइ < अर्हति—अर्ह के स्थान पर रिह, त का लोप और इ शेष ।

अरिहो < अर्हः—

” ”

गरिहा < गर्हा—

” ”

घरिहो < वर्हः—

” ”

(१९) संस्कृत के संयुक्त व्यञ्जन र्श और र्ष के स्थान पर प्राकृत में रिस होता है ।

(क) र्श = रिस—

आयरिसो < आदर्श —र्श के स्थान पर रिस हुआ है ।

दरिसणं < दर्शनम्—

” ”

सुदरिसणं < सुदर्शनम्

” ”

(ख) र्ष = रिस—

वरिसं < वर्षम्—र्ष के स्थान पर रिस हुआ है ।

वरिससयं < वर्षशतम्—

” ”

वरिसा < वर्षा—

” ”

(६०) संस्कृत के संयुक्त ल के स्थान पर प्राकृत में इल होता है ।

अंयिलं < अम्लम्—संयुक्त ल के स्थान पर इल हुआ है, म के स्थान पर पूर्व स्वर पर अनुस्वार के साथ घ हुआ है ।

किलम्मइ < काम्यति —संयुक्त ल के स्थान पर इल, म्य को म्म, विभक्ति इ ।

किलंतं < बलान्तर—संयुक्त ल को इल ।

किलिट्टं < किलष्टम्—

”

किलिन्नं < किलन्नम्—

”

किलेसो < क्लेशः—

”

गिलाइ < गलायति—

”

गिलानं < गलानम्—

”

पिलुट्टं < प्लुट्टम्—

”

पिलेसो < प्लोपः—

”

मिलाइ < म्बायति—

”

मिलानं < म्लानम्—

”

सिलेसो < श्लेषः—

”

सिलिम्हा < श्लेषा—संयुक्त ल को हल ।

सिलोओ < श्लोकः— ”

सिलिट्टं < शिलष्टम्— ”

सुइलं < शुक्लम्— ” संयुक्त क का लोप, तालव्य श को दन्त्य स ।

(६१) संस्कृत के 'र्य' संयुक्त व्यञ्जन को प्राकृत में रिञ होता है ।

आयरिओ < आचार्यः—चकार का लोप, आ शेष, य भुवि, ह्रस्व और र्य के स्थान पर रिञ ।

गंभीरिअं < गाम्भीर्यम्—दीर्घ को ह्रस्व और र्य को रिञ ।

गहीरिअं < गाभीर्यम्— ” ”

चोरिअं < चौर्यम्—औंकार को ओंकार और र्य के स्थान पर रिअं ।

धीरिअं < धैर्यम्—पेकार को ईत्प और र्य को रिअं ।

वम्हचरिअं < ब्रह्मचर्यम्—संयुक्त रेफ का लोप, ह्र को म्द और र्य को रिअं ।

भरिआ < भाषां—र्य को रिअं ।

वरिअं < वर्यम्— ”

वीरिअं < वार्यम्— ”

थेरिअं < थैर्यम्—संयुक्त स का लोप, ऐकार को एकार, र्य को रिअं ।

सूरिओ < सूर्यः—र्य को रिअं ।

सुन्दरिअं < सौन्दर्यम्—औंकार को उकार, र्य को रिअं ।

सोरिअं < शौर्यम्—र्य को रिअं ।

(६२) संस्कृत के संयुक्त व्यञ्जनों में कुछ विशय परिवर्तन भी होता है ।

(क) गण = क—

लुक्को < खणः—रण के स्थान पर क्क और रु को लु ।

(घ) क्षण = वर—

तिक्खं < तीक्ष्णम्—ती को ह्रस्व तथा क्षण के स्थान पर क्ख ।

(ग) स्त = स—

खंभो < स्तम्भ—स्त के स्थान पर ख ।

(घ) स्फ = स—

खेडओ < स्फेदरुः—स्फ के स्थान पर ख ।

(ङ) त्त = च—

किच्ची < कृत्तिः—त्त के स्थान पर च्च ।

(च) थ्य = थ—

तर्ध < तथ्यम्—थ्य के स्थान पर च्च ।

(छ) स्प = छ—

छिहा < स्पहा—

(ज) त्त = ट्ट—

पट्टणं < पत्तनम्—त्त के स्थान पर ट्ट ।

मट्टिआ < मृत्तिका—त्त के स्थान पर ट्ट ।

(ऋ) र्थ = ठ्ठ—

अठ्ठो < अर्थः—र्थ के स्थान पर ठ्ठ ।

चउठ्ठो < चउर्थः ”

(ञ) र्त = ड्ड—

गड्डो < गर्तः—र्त के स्थान पर ड्ड ।

(ट) र्द = ड्ड—

पयड्डो < कपर्दः—र्द के स्थान पर ड्ड ।

छड्डो < छर्दः— ” ”

छड्डो < छर्दिः— ” ”

मड्डिओ < मर्दितः— ” ”

विच्छड्डो < विच्छर्दः— ” ”

संमड्डो < संमर्दः— ” ”

(ठ) र्ध, र्द्ध, रग्ध, रध = ड्ड—

अड्ड < अर्धम्—र्ध के स्थान पर ड्ड ।

ईड्डो < वृद्धिः—र्द्ध के स्थान पर ड्ड ।

दड्डो < दग्धः—रग्ध के स्थान पर ड्ड ।

विअड्डो < विअग्धः— ” ”

बुड्डो < बृद्धः—र्द्ध के स्थान पर ड्ड ।

बुड्डो < बृद्धिः— ” ”

सड्डो < सध्दा— ” ”

ठड्डो < स्तब्धः—ब्ध के स्थान पर ड्ड ।

(ड) ञ्च = ञ्ण—

पण्णरह्ण < पण्णरह—ञ्च के स्थान पर ञ्ण ।

पण्णासा < पण्णासात्— ” ”

(ढ) त्त = ञ्ण—

दिण्णं < दण्णम्—त्त के स्थान पर ञ्ण ।

(ण) त्म = प्प—

अप्पा < आत्मा—त्म के स्थान पर प्प ।

अप्पाणो < आत्मानः— ” ”

(त) म्र = म्व—

अवं < आत्मम्—म्र के स्थान पर म्व ।

तवं < ताम्रम्— ” ”

(थ) ह्य = भ्म—

वम्भणो < माह्वणः—ह्य के स्थान पर भ्म ।

वंभचेरं < मल्लचर्यम् ” ”

(द) क्ष, ख, र्थ, र्घ, र्घ, प्य और प्म = ह—

दाहिणो < दक्षिणः—क्ष के स्थान पर ह ।

दुहं < दुःखम्—ख के स्थान पर ह ।

तूहं < तीर्थम्—र्थ के स्थान पर ह ।

दीहो < दीर्घः—र्घ के स्थान पर ह ।

काहावणो < कार्पावणः—र्घ के स्थान पर ह ।

वाहो < वाप्यः—प्य के स्थान पर ह ।

कोहण्डी < कुष्माण्डी—प्म के स्थान पर ह ।

कोहण्डं < कुष्माण्डम् — ”

(६३) निम्न वर्णों को प्राकृत में द्वित्व हो जाता है ।

उज्जू < सज्जुः—ज को द्वित्व । जोव्वणं < यौवनम्—व को द्वित्व ।

तेल्लं < नेल्लम्—ल को द्वित्व । चहुत्तं < प्रभूतम्—त को द्वित्व ।

पेम्मं < पेम—म को द्वित्व । मंडूको < मण्डूकः—क को द्वित्व ।

विड्डा < मीडा—ड को द्वित्व । एक्को < एकः—क को द्वित्व ।

कणिणारो < कणिकारः—ण को द्वित्व । कोउहल्लं—उत्तहल्लं—ल को द्वित्व ।

तुण्हको < तूण्णिकः—क को द्वित्व । नक्खो < नखः—ख को द्वित्व ।

दड्डो < देवः—व को द्वित्व । नेड्डं < नीडम्—ड को द्वित्व ।

मुको < मूकः—क को द्वित्व ।

(६४) निम्न शब्दों में अनियमतः परिवर्तन होते हैं—

अच्छरं, अच्छरिअं, अच्छरिज्जं, अच्छरीअं < आश्चर्यम् ।

केलं, कयलं < कदलम् । कोहलं < कुतलम् ।

चोग्गुणो < चतुर्गुणः । चोत्थो, चउत्थो < चतुर्थः ।

चोत्थी, चउत्थी < चतुर्थी । चोद्दह, चउद्दह < चतुर्थः ।

चोहसी, चडहसी < चतुर्दशी ।	चोव्वारो, चउव्वारो < चतुर्वारः ।
तेत्तीसा < त्रयस्त्रिंशत् ।	तेरह < त्रयोदश ।
तेयीसा < त्रयोविंशतिः ।	तीसा < त्रिंशत् ।
नोणीअं, लोणीअं < नवनीतम् ।	नोहलिआ < नवमलिका ।
नोमालिआ < नवमल्लिमा ।	पोप्फलं < पूगफलम् ।
पोरो < पूतरः ।	पाउरणं, पगुरणं < प्रावरणम् ।
वोरं < वदरम् ।	मोहो, मऊहो < मयूखः ।
रुणं < रुदितम् ।	लोनं < लवणम् ।
वीसा < विंशतिः ।	सोमालो < सुकुमारः ।
थेरो < स्थविरः ।	

(६५) निम्न शब्दों में आमूल परिवर्तन हो जाता है ।

हेट्टं < अघत् ।	ओ, अव < अप ।
अच्छरसा < अप्पसा ।	आउसं < आयुः ।
आढत्तो < आरब्धः ।	धूआ < दुहिता ।
दाढा < दंष्ट्रा ।	हरो < हृदः ।
धणुहं < धनुप् ।	इसि < ईपत् ।
ओ < उत ।	ओ < उप ।
अवहं उवहं < उभयस् ।	कउहा < कउम् ।
छूदं < क्षिप्तम् ।	घरं < गृहम् ।
पिक्को < पुसः ।	तिरिच्छि < तिर्यक् ।
पाइको < पदाति ।	वहिणी < भगिनी ।
मइलं < मलिनम् ।	मंजरो < मार्जारः ।
विलया < वनिता ।	रुक्खो < रूक्षः ।
वेसलिअं < वैदुर्यम् ।	सिप्पी < शुक्तिः ।
थेवं, थोवं, थोफं < शतौष्म ।	सुसाणं, मसाणं < रमशानम् ।

(६६) निम्न शब्दों में वर्णव्यत्यय हुआ है ।

अळचपुरं < अचलपुरम् ।	आणालो < आलानः ।
कणेरु < करेणुः ।	मरहट्टं < मद्राशाष्टम् ।
हलुअं < लणुष्म ।	णडालं < णलाटम् ।
वाणासो < वासागमी ।	हलिआरो < हरिताकः ।
दहो < द्रव, दः ।	

पाँचवाँ अध्याय

लिंगानुशासन

प्राकृत में संस्कृत के समान पुलिग, स्त्रीलिग और नपुंसकलिग ये तीन ही लिङ्ग माने गये हैं। प्राणिवाचक और अप्राणिवाचक समस्त संज्ञाएँ उक्त तीनों लिङ्गों में विभक्त हैं। साधारण लिङ्गव्यवस्था संस्कृत के समान ही है, किन्तु जिन शब्दों में अन्तर है, उन्हींका यहाँ निर्देश किया जाता है।

(१) प्राट्प्, शरद् और तरणि शब्दों का पुलिग में प्रयोग होता है।^१ यथा—
पाउसो < प्राट्प्—संस्कृत में यह शब्द स्त्रीलिग है।

सरओ < शरद्— ” ”

तरणी < तरणी— ” ”

(२) दामन्, शिरस् और नभस् को छोड़ कर शेष सकारान्त तथा नकारान्त शब्द पुलिग में प्रयुक्त होते हैं।^२

(क) सकारान्त शब्द—

जसो < यशस्—यश—संस्कृत में यह शब्द नपुंसकलिग है।

पओ < पयस्—पयः— ” ”

तमो < तमस्—तमः— ” ”

तेओ < तेजस्—तेजः— ” ”

सरो < सरस्—सरः— ” ”

(ख) नकारान्त शब्द

जम्मो < जग्मन्—जग्म— ” ”

नम्मो < नर्मन्—नर्म— ” ”

कम्मो < कर्मन्—कर्म— ” ”

वम्मो < वर्मन्—वर्म— ” ”

विशेष—

(क) वयं < वयस्—वयः—संस्कृत में यह नपुंसकलिग है और प्राकृत में भी इसे नपुंसकलिग ही माना गया है।

१. प्रावृट्शस्तरण्यः वृत्ति—८।१।३१. हे० ।

२. स्तपदाम-शिरो-नभः—८।१।३२. हे० ।

सुमणं < सुमन्स्—सुमनः—संस्कृत में यह नपुंसकलिङ्ग है और प्राकृत में भी इसे नपुंसकलिङ्ग ही माना गया है ।

सम्मं < शर्मन्—शर्म— " "

चम्मं < चर्मन्—चर्म— " "

(ख) दामं < दामन्—दाम—संस्कृत के समान नपुंसकलिङ्ग ही है ।

सिरं < शिरस्—शिरः— " "

नहं < नभस्—नभः— " "

(३) अक्षि (आंख) के समानार्थक शब्द तथा निम्न निर्दिष्ट वचनादिगण के शब्द पुलिङ्ग में विकल्प से प्रयुक्त होते हैं^१ । अक्षि शब्द का पाठ अञ्जल्यादि गण में भी होने से इसका प्रयोग स्त्रीलिङ्ग में भी होता है^२ । यथा—

अच्छी < अक्षिणी—संस्कृत में नपुंसकलिङ्ग, पर यहाँ विकल्प से पुलिङ्ग ।

अच्छीइं < अक्षिणी—संस्कृत में नपुंसकलिङ्ग, यहाँ भी विकल्प से नपुंसकलिङ्ग ।

एसा अच्छी < एतदक्षि—यहाँ स्त्रीलिङ्ग में व्यवहार है ।

चक्स् < चक्षुषी—संस्कृत में नपुंसकलिङ्ग किन्तु प्राकृत में पुलिङ्ग ।

णअणो (पुलिङ्ग) } नयनम्—संस्कृत में नपुंसकलिङ्ग, किन्तु प्राकृत में त्रिरूप
णअणं (नपुंसकलिङ्ग) } से पुलिङ्ग ।

खोअणो (पुलिङ्ग) } खोचनम्— " "

वअणो (पुलिङ्ग) } वचनम्— " "

कुलो (पुलिङ्ग) } कुलम्— " "

माहूप्यो (पुलिङ्ग) } माहात्म्यम्— " "

छन्दो (पुलिङ्ग) } छन्द— " "

दुक्त्वा (पुलिङ्ग) } दुःखानि— " "

भायणा (पुलिङ्ग) } भाजनानि— " "

भायणाहं (नपुंसक) } भाजनानि— " "

१. वाक्यार्थ-वचनाद्याः ८।१।३३. हे० ।

२. अञ्जल्यादिपाठादक्षिणशब्दः स्त्रीलिङ्गेऽपि ८।१।३३. की वृत्ति ।

(४) क्रियो-क्रियो आचार्य के मत से पृष्ठ, अक्षि और प्रश्न शब्द विकल्प से स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं ।^१ यथा—

पुट्टी (स्त्रीलिङ्ग)	} पृष्टम्—संस्कृत में नपुंसकलिङ्ग है, पर प्राकृत में विकल्प से स्त्रीलिङ्ग भी है ।
पुट्टं (नपुंसक)	
अच्छी (स्त्रीलिङ्ग)	} अक्षि— " "
अच्छं (नपुंसक)	
पण्हा (स्त्रीलिङ्ग)	} प्रश्नः—संस्कृत में यह पुलिङ्ग है, पर प्राकृत में विकल्प से स्त्रीलिङ्ग भी होता है ।
पण्हो (नपुंसक)	

(५) गुणादि शब्द विकल्प से नपुंसकलिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं ।^२

गुणं (नपुंसक)	} गुण—संस्कृत में गुण शब्द पुलिङ्ग है, पर प्राकृत में इसका व्यवहार पुलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग दोनों में होता है ।
गुणो (पुलिङ्ग)	
देवाणि (नपुंसक)	} देवाः—संस्कृत में देव शब्द नित्य पुलिङ्ग है, पर प्राकृत में यह विकल्प से नपुंसकलिङ्ग भी होता है ।
देवा (पुलिङ्ग)	
खगं (नपुंसक)	} खड्गः—खड्ग शब्द संस्कृत में पुलिङ्ग है पर प्राकृत विकल्प से ।
खगो (पुलिङ्ग)	
मंडलगं (नपुंसक)	मंडलगो (पुलिङ्ग) < मंडलगम्— " "
कररूहं (नपुंसक)	कररूहो (पुलिङ्ग) < कररूहः— " "
रुक्ताइ (नपुंसक)	रुक्ता (पुलिङ्ग) < रुक्ताः— " "

(६) इमान्त—इमन् प्रत्यय जिनके अन्त में आया हो और अज्ञत्यादि गण के शब्द विकल्प से स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं ।^३

इमान्त शब्द—

एसा गरिमा (स्त्रीलिङ्ग)	एसो गरिमा (पुलिङ्ग) < एष गरिमा ।
एसा महिमा (स्त्रीलिङ्ग)	एसो महिमा (पुलिङ्ग) < एष महिमा ।
एसा धुत्तिमा (स्त्रीलिङ्ग)	एसो धुत्तिमा (पुलिङ्ग) < एष धुत्तिमा ।

१. पृष्ठाक्षिप्रश्ना. त्रिया वा ४२०. वर० ।

२. गुणाद्याः क्रीत्रे वा ८१३४. हे० ।

३. वेमाञ्जल्याद्या. त्रियाम् ८१३५. हे० ।

अञ्जल्यादिगण में अञ्जलि, पृष्ठ, अक्षि, प्रश्न, चौयं, कुक्षि, बलि, निधि, विधि, रश्मि और प्रन्थि शब्द गृहीत हैं । कल्पलतािका के अनुसार रश्मि शब्द विकल्प से स्त्रीलिङ्ग ही है ।

अञ्जल्यादिगण के शब्द—

एसा अंजली (स्त्री), एसो अंजली (पु०) < एष अञ्जलिः ।

चोरिआ (स्त्री०), चोरिओ (पु०) < चौर्यम् ।

निही (स्त्री), निही (पु०) < निधिः ।

विही (स्त्री०), विही (पु०) < विधिः ।

गंठी (स्त्री०), गंठी (पु०) < गन्धिः ।

रस्सी (स्त्री०), रस्सी (पु०) < रस्मिः ।

(७) जब वाहु शब्द स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त होता है, तब उसके उकार के स्थान में आकार आदेश होता है । पर जब पुल्लिङ्ग में प्रयुक्त होता है तब आकार आदेश न होकर बाहु रूप ही रह जाता है । यथा—

एसा वाहा (स्त्री), एसो वाहू (पु०) < एष वाहुः ।

स्त्रीप्रत्यय

स्त्रीलिङ्ग शब्द दो प्रकार के होते हैं—मूल स्त्रीलिङ्ग शब्द और प्रत्यय के योग से बने स्त्रीलिङ्ग शब्द । जिन शब्दों का अर्थ मूल से ही स्त्रीवाचक है और रूप पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग में नहीं होते, उनको मूल स्त्रीवाचक शब्द कहते हैं । यथा—लदा, माषा, लिहा, हलिहा, महिआ, लच्छी, सत्पिणी आदि ।

प्रत्यय के योग से बने स्त्रीलिङ्ग शब्द मूल से स्त्रीलिङ्ग नहीं होते, किन्तु स्त्रीप्रत्यय जोड़ देने से उनमें स्त्रीत्व आता है । ऐसे शब्द जोड़ीदार होते हैं अर्थात् पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों लिङ्गों में व्यवहृत होते हैं । अतः स्त्रीप्रत्यय—ये प्रत्यय हैं, जिनके लगाने पर पुल्लिङ्ग शब्द स्त्रीलिङ्ग हो जाते हैं । संस्कृत में टाप्, डाप्, पाप् (आ); टीप्, टोप्, टीन् (ई); ऊङ् (ऊ) और ति ये आठ स्त्रीप्रत्यय हैं; पर प्राकृत में आ; ई और ऊ प्रत्यय ही होते हैं । अधिकांश प्राकृत शब्दों में संस्कृत के समान ही स्त्रीप्रत्यय का विधान किया गया है ।

(१) सामान्यतया प्राकृत में अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के छिप आ प्रत्यय प्रगता है । यथा—

अअ + आ = अआ < अजा; अअ + आ = अआ < अजा ।

मू मम + आ = मूमिया < मूमसा; माम + आ = माला < माषा ।

वळ + आ = वळआ < वळवा, हाउ + आ = होहा (पोंडी)

काः + आ = कोःआ < काःआ; अयल < अयला, पुसल < पुसला ।

निउण—निउणा, अचल—अचला, मलिग—मलिगा, चउर—चउरा,
पढम—पढमा ।

वीय—वीया ।

(२) स्त्रीलिङ्ग में सस—स्वस आदि शब्दों से पर में आ प्रत्यय जोड़ने से ससा
आदि रूप होते हैं ।^१

(३) संस्कृत के नकारान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए ई प्रत्यय होता है ।
यथा—राधा + ई = राणी, माहण + ई = माहणी; बंभग + ई = बंभणी । हरिथ—
हरिथणी ।

(४) स्कारान्त, तकारान्त और भय्, भञ्, ठक् और ठन् प्रत्ययों से बने संस्कृत
शब्दों से प्राकृत में प्रायः स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए ई प्रत्यय जुड़ता है । यथा—

स्कारान्त—कुंभार + ई = कुंभारी, कुम्हारी; लोहार—लोहारी;
कुमार—कुमारी ।

तकारान्त—सिरीमभ + ई = सिरीमई; पुत्तभ—पुत्तभई; धणभ—
धणभई ।

(५) संस्कृत के पितृ शब्दों—नर्तक, खनक, पथिक प्रभृति तथा गौर, मनुष्य,
मत्स्य, श्रेंग, पिङ्गल, हय, गयध, फय, हुग, हरिण, कौशग, अणक, भापक, राफुल,
चदर, उभय, नर और मंगल शब्दों में स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए प्राकृत में ई प्रत्यय जोड़ा
जाता है । यथा—

गहभ + ई = गहभई, रणभ + ई = रणभई, पहिभ + ई = पहिभई, कुमार +
ई = कुमारी, किमोर—किसोरी, मुन्नर—मुन्नरी, नभ—नई, पड—पडो, कभल—
कभली, थल—थली, फल—फली, मंडल—मंडली आदि ।

(६) जाति अर्थ में जातिवाचक अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए
ई प्रत्यय जोड़ा जाता है । यथा—

सीद + ई = सीदी, बग्घ + ई = बग्घी, मभ + ई = मई, हरिण—
हरिणी, कुरंग—कुरंगी, सूअर—सूअरी, जंबुध—जंबुधई, सिगाण—सिगाणी,
विडाल—विडाली, घोड—घोडी, महिस—महिसी, हंस—हंसी, सारस—
सारसी, गोव—गोवी, चंडाण—चंडाली, बंभग—बंभणी, रक्खस—रक्खसी,
निसाभर—निसाभरी ।

(७) पाणिनि के 'टिड्ढाणञ् शस्वादि (४।१।६९) से वास् आदि प्रत्यय निमित्तक
धीप् होता है, पर प्राकृत में विकल्प से ई हाता है ।^२ यथा—साहणी—साहणी;
कुरुचरी—कुरुचरी आदि ।

१. स्वतादेई का ३।३५ हे० । २. प्रत्यये डीने वा का ३।३१.

(८) संस्कृत के अजातिराचक पुलिङ्ग शब्दों से प्राकृत में स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए विकल्प से ई प्रत्यय होता है ।^१ यथा—

नीली—नीला; काली—काला, इसमाणी—इसमाणा, सुष्णही—सुष्णहा;
इमीए—इमाए; इमीणं—इमाणं, ईईए—एआए; ईईण—एआण ।

(९) संस्कृत के छाया और हरिदा शब्दों को प्राकृत में स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए विकल्प से ई प्रत्यय जुड़ता है ।^२ यथा—

छाही—छाया; हलही—हलदा ।

(१०) तु, अम् और आम्, तुप् (सभी विभक्तियों) के पर में रहने पर त्त्, यद् और तद् शब्दों से प्राकृत में स्त्रीलिङ्ग में ई प्रत्यय विकल्प से होता है ।^३ यथा—

कीओ—काओ; कीए—काए; कीउ—कासु; जीओ—जाओ; तीओ—ताओ ।

(११) पुलिङ्ग शब्द जो नर या द्योतरु है, उससे स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए ई प्रत्यय जोड़ा जाता है । पर पालकान्त शब्दों में ई प्रत्यय नहीं जुड़ता है । बंभणस्सा जाया बंभणी, मुहस्स जाया मुही, गणअस्स जाया गणई, णाविअस्स जाया णाविई, णिसाअस्स जाया णिसाई ।

(१२) संस्कृत के जानपद, कुण्ड, गोग, स्थल, भाग, नाग, कुक्ष, कायुक आदि शब्दों से प्राकृत में स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए विकल्प से ई प्रत्यय जोड़ा जाता है । ई प्रत्यय के अभाव में था होता है । यथा—

जाणवद + ई—जाणवदी; कुंडी—कुंडा, थली—थला, गोणा—गोणी,
भागा—भागी, कुसी—कुसा ।

(१३) संस्कृत के इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड, आचार्य, हिम, अरण्य, यवन, मातुल और उपाध्याय शब्दों से प्राकृत में ई लगने के पूर्व आण जोड़ दिया जाता है—

इंद्र + ई = इंडाणी, भव + ई = भवाणी; सव्य + ई = सव्याणी, रुद्राणी,
मिड्राणी, आयरियाणी, जवणाणी, मरुलाणी, उवग्भायाणी ।

(१४) धर्मविधि से पाणिग्रहण (विवाह) अर्थ प्रकृत हो तो संस्कृत के पाणिग्रहण शब्द से प्राकृत में ई प्रत्यय होता है । यथा—

पाणिगहीदी—धर्मविधि पूर्वक विवाह की गयी पत्नी ।

पाणिगहीदा—अन्य किसी प्रकार से विवाह की गयी पत्नी ।

१. अजातेः पुंस. दा१।३२.

२. छाया-हरिदयो. दा३।३४.

३. कि-यत्तदोत्पत्तमि दा३।३३.

(१५) आर्य और क्षत्रिय शब्दों से ई प्रत्यय और आन का आगम विरह्य से होता है । यथा—

अर्या—अर्याणी, रक्षिया—रक्षिभागी ।

(१६) बहुब्रीहि समास होने पर अथपरमाक शब्द के उत्तर में विरह्य से ई प्रत्यय होता है । यथा—

चन्दमुद्दी—चन्दमुदा, सुएसा—सुएमी, तंघणहा—तंघणही ।

(१७) नमान्त और मुत्तान्त शब्दों से प्राकृत में विरह्य से ई होता है । यथा—
वज्जणहा—वाज्जणही, गोरसुहा—गोरसुदी, ऱालमुहा—ऱालसुदी ।

(१८) जिन शब्दों के उत्तरपद में पाऊ, वर्ण, पर्ण, पुष्प, फळ, मूल और चाल हों, उन शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए ई प्रत्यय होता है । यथा—

संउअण्णी; साळरण्णी; संखपुष्की, दामीदली, दम्भमूणी, गोवाली ।

(१९) नासिका, उदर, ओष्ठ, जंघा, दन्त, कर्ण और शृंग शब्दों से विरह्य से ई प्रत्यय होता है । यथा—

तुंगनासिआ, तुंगनासिई; दोहोअरा, दोहोअरी ।

कतिपय अध्ययनीय शब्द

पुलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
राया < राजा	राणी < रानी
विउसो < विद्वान्	विउसी < विदुषी
माणुसो < मनुष्य	माणुसी < मानुषी
माउलो < मातुलः	माउली, मानलाणी < मातुलानी
मच्छो < मत्स्यः	मच्छी < मत्सी
गिह्वइ < गृहपतिः	गिह्वण्णी < गृहपती
अह्विइ < अधिपतिः	अह्विण्णी < अधिपती
तुअ < तुदन्	तुअंती < तुदन्ती
सहा < सखा	सही < सखी
मुणि < मुनिः	मुणी < मुनिः
साहु < साधुः	साहू < साधुः
जुवा < जुवा	जुवई < जुवती
सुएसो < सुरेशः	सुएसी, सुएसा < सुरेशी, सुरेश्या
धीवरो < धोवरः	धीवरी < धीवती
सुदो < शूद्रः	सुदा, सुदी < शूद्रा, शूद्री

आयरिओ < आचार्यः	आयरिआणी, आयरिआ < आचार्यानी, आचार्या
खत्तियो < क्षत्रियः	खत्तिया, खत्तियाणी < क्षत्रिया, क्षत्रियाणी
उवज्झायो < उपाध्यायः	उवज्झाया, उवज्झायाणी < उपाध्याया, उपाध्यायानी
पढ < पठन्	पढन्ती < पठन्ती
अट्थ	अज्जत्था
धीवरो < धीवरो	धीवरी < धीवरी
कुंभआरो < कुम्भकारः	कुंभआरी < कुम्भकारी
सुवण्णआरो < स्वर्णकारः	सुवण्णआरी < स्वर्णकारी
वालओ < वालुकः	वालिया < वालिका
पुरिसो < पुरुषः	इत्थी < स्त्री
किन्नरो < किन्नरः	किन्नरी < किन्नरी
माहणो < माहणः	माहणी < माहणी
गोवो < गोपः	गोवी < गोपी; गोवा < गोपा
मऊरो < मयूरः	मऊरी < मयूरी
पिअो < पिता	माआ < माता
भाया < भ्राता	वहिणी < भगिनी
कच्छवो < कच्छपः	कच्छवी < कच्छपी
सुत्तगारो < सूतकारः	सुत्तगारी < सूतकारी
वुत्तिगारो < वृत्तिगारः	वुत्तिगारी < वृत्तिगारी
सीसो < शिष्यः	सीसा < शिष्या
हत्थिं < हस्तिः	हत्थिणी < हस्तिनी
सेट्ठिं < श्रेष्ठी	सेट्ठिनी < श्रेष्ठिनी
गंधिओ < गन्धिकः	गंधिआ < गन्धिका
पइ < पतिः	भज्जा < भार्या
नडो < नटः	नडी < नटी
चन्दमुहो < चन्द्रमुखः	चन्दमुही < चन्द्रमुखी
पीवरो < पीवरः	पीवरी < पीवरी
इंदो < इन्द्रः	इंदाणी < इन्द्राणी
गोवालओ < गोपालक	गोवालिया < गोपालिका
कामुओ < कामुकः	{ कामुआ < कामुका कामुई < कामुकी

पदमो < प्रथमः	पदमा < प्रथमा
वीयो < द्वितीयः	वीया < द्वितीया
निउणो < निउणः	निउणा < निउणा
चवलो < चवलः	चवला < चवला
अयलो < अचलः	अयला < अचला
सुप्पणहो < शूर्पनखः	सुप्पणहा, सुप्पणही < शूर्पनखी, शूर्पनखा
महिसो < महिषः	महिसो < महिषी
अओ < अजः	अआ < अजा
चडओ < चटकः	चडआ < चटका
भवो < भवः	भवाणी < भवानी
संखपुप्फो < संखपुष्पः	संखपुप्फी < संखपुष्पी
तरुणो < तरुणः	तरुणी < तरुणी
णायओ < नायकः	णायिआ < नायिका
रुदो < रुद्रः	रुदाणी < रुद्राणी

छठवाँ अध्याय

सुबन्त या शब्दरूप प्रकरण

भाषा का आधार वाक्य है और वाक्य का आधार शब्द। शब्दों की रचना वर्णों के मेल से होती है।

जो वान से सुनायी पड़ता है, वह शब्द है। एक या एक से अधिक अक्षरों के योग से बनी हुई स्वतन्त्र सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं। जैसे—‘देवा पि तं नमंसति’ वाक्य में देवा, पि—अपि, तं और नमंसति शब्द हैं। शब्द दो प्रकार के होते हैं—सार्थक और निरर्थक। सार्थक शब्द की पदमंज्ञा होती है। व्याकरणशास्त्र में सार्थक शब्द का ही विवेचन किया जाता है। पद—सार्थक शब्द मूलतः दो प्रकार के हैं—संज्ञा और क्रिया।

प्राकृत में रूपान्तर के अनुसार पदों के दो भेद हैं—विकारी और अविकारी। जिस सार्थक शब्द के रूप में विभक्ति या प्रत्यय जोड़ने से विकार या परिवर्तन होता है, उसे विकारी कहते हैं। यथा—देवा, देवा, पठह, पठन्ति आदि। विकारी—परिवर्तनशील सार्थक शब्दों के संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विभेदण ये चार मूल भेद हैं। अविकारी पद अव्यय कहलाते हैं।

प्राचीन वैयाकरणों ने नाम, आख्यात और अव्यय ये तीन ही प्रकार के शब्द माने हैं। सर्वनाम, संख्यावाचक और विभेदण भी नाम के अन्तर्गत हैं। नामों को प्रातिपदिक कहा गया है। प्रातिपदिकों के साथ सुप् प्रत्यय लगाने से संज्ञा पद बनते हैं। प्रत्येक संज्ञा के पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग ये तीन लिङ्ग होते हैं।

प्राकृत भाषा में संस्कृत के समान लिंगभेद स्वाभाविक स्थिति पर निर्भर नहीं है, बल्कि यह लिंगभेद कृत्रिम है। उदाहरणार्थ स्त्री का अर्थ बतलाने के लिए दारो, भज्जा और कलत्त-ये तीन शब्द प्रचलित हैं। इनमें दारो पुल्लिङ्ग, भज्जा स्त्रीलिङ्ग और कलत्त नपुंसकलिङ्ग हैं। इसी प्रकार शरीर का बोध करानेवाले शब्दों में लिंगभेद वर्तमान है। यथा—तणू स्त्रीलिङ्ग, देहो पुल्लिङ्ग और सरीर नपुंसकलिङ्ग हैं। कई शब्द ऐसे हैं, जिनके रूप एक से अधिक लिंगों में चलते हैं। किन्हीं पुल्लिङ्ग शब्दों में प्रत्यय जोड़ने से भी स्त्रीलिङ्ग शब्द बनते हैं और किन्हीं प्रत्ययों के योग से नपुंसक लिङ्ग के शब्द बन जाते हैं। इतना जाने पर भी प्राकृत में संस्कृत के समान ही शब्द प्रायः नियतलिङ्गी हैं—शब्दों के लिङ्ग निर्धारित है।

(३) ह्रस्व अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले अम् के अकार का लोप होता है^४ । यथा—

देव + अम् = देवम् < देवम्, णउल्ल + अम् = णउल्लं < नकुल्लम् ।

(४) ह्रस्व अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले टा—तृतीया विभक्ति के एकवचन और आम्—पद्यी के बहुवचन के स्थान में ण आदेश होता है और ट् प्रत्यय के रहने से अ को एत्व हो जाता है । तृतीया एकवचन और पद्यी के बहुवचन में ण के ऊपर विकल्प से अनुस्वार हो जाता है^१ । यथा—

देव + टा = देवेण, देवेणं < देवेन; देव + आम् = देवाण, देवाणं < देवानाम् ।

(५) ह्रस्व अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले भिस् के स्थान में हि आदेश होता है और अकार को एत्व हो जाता है, तथा हि के ऊपर विकल्प से अनुनासिक और अनुस्वार भी होते हैं^२ । यथा—

देव + भिस् = देवेहि, देवेहिं, देवहि < देवैः ।

णउल्ल + भिस् = णउल्लेहि, णउल्लेहिं, णउल्लेहि < नकुल्लैः ।

(६) ह्रस्व अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले ङसि—पंचमी एकवचन के स्थान में त्तो, दो, दु, हि और हिन्तो आदेश होते हैं^३ । दो और दु के दशर का लुक् भी होता है । जैसे—

देव + ङसि = देवत्तो, देवादो—देवाओ, देवादु—देवाड, देवादि और देवाहिन्तो < देवात्—पदां नियम २ के अनुसार अ का आत्व हुआ है ।

(७) ह्रस्व अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले भ्यस्—पंचमी बहुवचन के स्थान में त्तो, दो, दु, हिं, द्वितो और सुंतो आदेश होते हैं^४ । तथा विकल्प से दीर्घ होता है । यथा—

देव + भ्यस् = देवत्तो, देवादो—देवाभो, देवाड,—देवाड, देवाहि, देवेदि, देवाहितो, देवेहितो, देवेसुंतो, देवासुतो < देवेभ्यः ।

(८) ह्रस्व अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले ङस्—पद्यी एकवचन के स्थान में 'स्स' आदेश होता है^५ । यथा—

देव + ङस् = देवस्स < देवस्य, णउल्ल + ङस् = णउल्लस्स < नकुल्लस्य ।

(९) ह्रस्व अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले ङि—सप्तमी एकवचन के स्थान में ए और म्मि आदेश होते हैं^६ तथा अकार को एत्व होता है । यथा—

१. टा-प्रामोणं: ८।३।६. हे० ।

२. भिसो हि हिं हि ८।३।७. हे० ।

३. इत्सेस् त्तो दो दु-हि हिन्तो लुक्:

४. भ्यसस् त्तो-दो दु-हि-हितो गुन्तो

८।३।८ ह० ।

८।३।९ ह० ।

५. इत्तः स्सः ८।३।१० हे० ।

६. डे म्मि सं: ८।३।११ हे० ।

देव + डि = देवे, देवेम्मि < देवे; णउले, णउलम्मि < नउले ।

(१०) इस्व अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले सुप्—सप्तमी विभक्ति बहुवचन में हलन्त्य ए का लोप हो जाता है और अकार को पत्य तथा सु के ऊपर विकल्प से अनुस्वार होता है । यथा—

देव + सुप् = देवेसु, देवेसुं < देवेसु ।

(११) उक्त नियमों के अनुसार पुंलिंग अकारान्त शब्दों के लिए विभक्ति-चिह्न निम्नांकित हैं—

		प्राकृत विभक्ति चिह्न		संस्कृत विभक्ति चिह्न	
प्रा०	सं०	एक०	बहु०	एक०	बहु०
पदमा < प्रथमा—	ओ	आ	सु (:)	जस् (आः)	
वीआ < द्वितीया—		ए, आ	अम्	शस् (आन्)	
तइआ < तृतीया—	ण, णं	दि, दिँ, हिँ	टा (आ)	भिस् (मिः)	
चउर्यी < चतुर्थी—	[य, आ, ण, णं	ए (ए)	भ्यस् (भ्यः)		
ए विकल्पसे]					
पंचमी < पञ्चमी—	तो, ओ, उ, दि, हिँतो	तो, ओ, उ, दि, हिँतो, सुँतो	डसि (अः)	भ्यस् (भ्यः)	
छट्ठी < षष्ठी—	स्स	ण, णं	इस् (अः)	आम्	
सत्तमी < सप्तमी—	ए, म्मि	सु, सुं	डि (इ)	सुप् (सु)	
संयोज्ण < संयोजन—	भा, ओ, लुक्	आ	सु	जस्	

अकारान्त शब्दों के रूप

देव

एकवचन	बहुवचन
प०—देवो	देवा
वी०—देवं	देवा, देवे
त०—देवेण, देवेणं	देवेदि, देवेहिँ, देवेहिँ
च०—देवस्स, (देवाय)	देवाण, देवाणं
पं०—देवत्तो, देवाआ, देवाउ, देवाहि, देवाहिँतो, देवा	देवत्तो, देवाओ, देवाउ, देवाहि, देवेदि, देवाहिँतो, देवेहिँतो, देवापुँतो, देवेसुँतो
छ०—देवस्स	देवाण, देवाणं
स०—देवे, देवम्मि	देवेसु, देवेसुं
सं०—हे देवो, हे देवा	हे देवा

वीर

एकवचन	बहुवचन
प०—वीरो	वीरा
धी०—वीरं	वीरे, वीरा
त०—वीरेण, वीरेणं	वीरेहि, वीरेहिँ, वीरेहिँ
च०—वीरस्स (वीराय)	वीराण, वीराणं
पं०—वीरत्तो, वीराओ, वीराउ, वीराहि, वीराहिँतो, वीरा	वीरत्तो, वीराओ, वीराउ, वीराहि, वीरेहि, वीराहिँतो, वीरेहिँतो, वीरासुँतो, वीरेसुँतो
छ०—वीरस्स	वीराण, वीराणं
स०—वीरे, वीरम्मि (वीरंसि)	वीरेसु, वीरेसुँ
सं०—हे वीरो, हे वीरा	हे वीरा

जिण (जिन)

एकवचन	बहुवचन
प०—जिणो	जिणा
धी०—जिणं	जिणा, जिणे
त०—जिणेण, जिणेणं	जिणेहि, जिणेहिँ, जिणेहिँ
च०—जिणस्स, जिणाय	जिणाण, जिणाणं
पं०—जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ, जिणाहि, जिणाहिँतो, जिणा	जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ, जिणाहि, जिणेहि, जिणाहिँतो, जिणेहिँतो, जिणासुँतो, जिणेसुँतो
छ०—जिणस्स	जिणाण, जिणाणं
स०—जिणे, जिणम्मि, जिणंसि	जिणेतु, जिणेतुँ
सं०—हे जिणो, हे जिणा	हे जिणा

वच्छ < वृक्ष

एकवचन	बहुवचन
प०—वच्छो	वच्छा
धी०—वच्छं	वच्छा, वच्छे
त०—वच्छेण, वच्छेणं	वच्छेहि, वच्छेहिँ, वच्छेहिँ
च०—वच्छस्स, वच्छाय	वच्छाण, वच्छाणं
पं०—वच्छत्तो, वच्छाओ, वच्छाउ, वच्छाहि, वच्छाहिँतो, वच्छा	वच्छत्तो, वच्छाओ, वच्छाउ, वच्छेहि, वच्छाहि, वच्छाहिँतो, वच्छेहिँतो, वच्छासुँतो, वच्छेतुँतो

छ०—वच्छस्स	वच्छाण, वच्छाणं
स०—वच्छे, वच्छम्मि, वच्छंसि	वच्छेसु, वच्छेसुं
सं०—हे वच्छो, हे वच्छा	हे वच्छा

धम्म < धर्म

एकवचन	बहुवचन
प०—धम्मो	धम्मा
वी०—धम्मं	धम्मा, धम्मे
त०—धम्मेण, धम्मेखं	धम्मेहि, धम्मेहिं, धम्मेहि
च०—धम्मस्स, धम्माय	धम्माण, धम्माणं
पं०—धम्मत्तो, धम्माओ, धम्माउ	धम्मत्तो, धम्माओ, धम्माउ, धम्माहि, धम्मेहि,
	धम्माहि, धम्माहितो, धम्मा
छ०—धम्मस्स	धम्माण, धम्माणं
स०—धम्मे, धम्मम्मि, धम्मंसि	धम्मेसु, धम्मेसुं
सं०—हे धम्मो, हे धम्मा	हे धम्मा

अवमाण (अपमान), अल्लोम (अलोक), आचार (आचार), उज्जम (उद्यम), उउएम (उपदेश), कुठार (कुठार), कोह (कोप), चन्द (चन्द्र), जिगसर, देह, नाथ (न्याय), नरिंद (नरेन्द्र), निरय (नरक), वहिर (वधिर), वंभण (माह्वण), भाय (भाव), मणोरह (मनोरथ), महिवाल (महिपाल), मिग, मअ (सृग), सुक्ख, मोरख (मोक्ष), मेह (मेघ), रोस (रोप), लोअ (लोक), वइ (वध), वम्मह (वन्मथ), वाह (व्याध), विणय (विनय), वीयराअ (वीतराग), संघ (सङ्घ). सज्जण (सज्जन), सड (सड), सहाव (स्वभाव), सर (सर), सग्ग (स्वर्ग), सावग (ध्रावक), हत्थ (हस्त), पायव (पादप), कच्छव (कच्छप), अहिय (अधिप), गिहत्थ (गृहस्थ), सुत्तगार (सूत्रकार), वुत्तिगार (वृत्तिकार), भासगार (भाष्यकार), सूरिअ (सूर्य), वरिअ (वर्य), सोरिअ (शौर्य), कसण, कसिण (कृष्ण), पज्जुण (पलुम्न), नमोअकार (नमस्कार), सीह, (सिंह), वरघ (व्याघ्र), सियाल, सिगाल (श्रृगाल), गय (गज), वसह (वृषभ), ओह (ओष्ठ), दंत (दन्त), कुंभार (कुंभकार), चम्मर (चर्मकार), लोह (लोभ), दोस (द्वेष), राग (राग), घड (घट), पड (पट), मड (मठ) एवं मड आदि अकारान्त शब्दों के रूप देव, धम्म, वीर, वच्छ के समान ही चलते हैं। साधारणतः चतुर्थी के रूप पष्ठी के समान ही होते हैं, पर संसृष्ट के प्रभाव के कारण य और ए प्रत्यय संयुक्त रूप भी मिलते हैं। यथा—वहाय और वहाए।

आकारान्त शब्द

(१२) आकारान्त शब्दों के रूप प्रायः द्वय अकारान्त शब्दों के समान ही होते हैं, पर पंचमी विभक्ति में द्वि प्रत्यय नहीं जुड़ता है। तृतीया में एत्व भी नहीं होता।

आकारान्त हाहा शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—हाहा	हाहा
वी०—हाहां	हाहा
त०—हाहाण, हाहाण्	हाहाहि, हाहाहिँ, हाहाहिँ
च०—हाहस्त्र, हाहणो	हाहाण, हाहाण्
पं०—हाहचो, हाहाओ, हाहाउ, हाहाहितो	हाहचो, हाहाओ, हाहाउ, हाहाहितो, हाहासुतो
छ०—हाहणो, हाहस्त्र	हाहाण, हाहाण्
स०—हाहम्मि	हाहासु, हाहासुँ
सं०—हे हाहा	हे हाहा

इसी प्रकार किलाळवा (किलाळपा), गोमा (गोपा) और सोमवा (सोमपा) शब्दों के रूप चलते हैं।

इकारान्त और उकारान्त शब्द

(१३) इकारान्त और उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों में सु, जस्, भिस्, भ्यस् और सुप् विभक्तियों के पर में रहने पर अन्त इ और उ को दीर्घ होता है।

(१४) आचार्य हेमचन्द्र के मतानुसार इकारान्त और उकारान्त शब्दों में द्वितीया विभक्ति बहुवचन में शस् प्रत्यय का लोप और अन्तिम स्वर को दीर्घ हो जाता है।^१

(१५) इकारान्त और उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों से पर में आनेवाले जस् के स्थान में ओ और णो आदेश होते हैं। यही-कहाँ जस् का लुक् भी हो जाता है।^२

(१६) आचार्य हेम के मतानुसार इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों में जस् के स्थान में डिन्, अउ, अओ आदेश और उकारान्त से केवल डिन्, अओ आदेश होते हैं। णो

१. इदुतो दीर्घः ८।३।१६ हे० ।

२. लुप्ते शसि ८।३।१८ हे० ।

३. जस्-शसोर्णो वा ८।३।२२ हे० ।

आदेश भी होता है। उक्त से यहाँ यह तात्पर्य है कि अन्त के इकार और उकार का लोप हो जाता है।^१

(१०) इकारान्त और उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों से पर में आनेवाले शस् और डस् के स्थान में विकल्प से णो आदेश होता है।^२

(१८) इकारान्त और उकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले टा—तृतीया एकवचन के स्थान में 'णा' आदेश होता है।^३

(१९) उकारान्त चउ < चतुर शब्द से पर में आनेवाले भिस्, भ्यस् और सुप् विभक्ति को विकल्प से दीर्घ होता है।^४

(२०) ऐम के मत में इकारान्त और उकारान्त शब्दों में इत्ति और डस् के के परे रहने में विकल्प से णो आदेश होता है।^५

(२१) णेय रूपों की सिद्धि अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के समान ही होती है।

इकारान्त और उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के विभक्तिचिह्न

एकवचन	बहुवचन
पदमा—प्रत्यय लृक्, दीर्घ	अउ, अओ, णो, ई
वीआ— „ „	णो, ऐ
तइया—णा	हि, हिँ, हिं
चउरथी—णो, स्स	ण, णं
पंचमी—णो, चो, ओ, उ, द्वितो	चो, ओ, उ, द्वितो, सुंतो
छट्ठी—णो, स्स	ण, ण
सत्तमी—म्मि, सि	सु, सुं
संबोधण—ई, प्रत्ययलृक्	अउ, अओ, णो, ई

इकारान्त हरि शब्द के रूप

एकवचन	बहुवचन
प०—हरी	हरउ, हरओ, हरिणो, हरी
वी०—हरि	हरिणो, हरी
त०—हरिणा	हरीहि, हरीहिँ, हरीहिं
च०—हरिणो, हरिस्स	हरीण, हरीणं
पं०—हरिणो, हरिचो, हरीओ, हरीत्र, हरीद्वितो	हरिचो, हरीओ, हरीउ, हरीद्वितो हरीसुंतो

१. पुसि जसो डउ डयो वा ना३।२० हे० । २. डसो वा ५।१५ वर० ।

३. दो णा ना३।२४ हे० ।

४. चतुरो वा ना३।१७ हे० ।

५. इमि डसो पुं क्लीबे वा ना३।२३ हे० ।

छ०—हरिणो हरिस्स	हरीण, हरीणं
स०—हरिम्मि, हरिंसि	हरीसु, हरीसुं
सं०—हरी, हरि	हरउ, हरओ, हरिओ, हरी

इकारान्त गिरि शब्द के रूप

एकवचन	बहुवचन
प०—गिरी	गिरी, गिरओ, गिरउ, गिरिणो
धी०—गिरिं	गिरिणो, गिरी
त०—गिरिणा	गिरिहि, गिरिहिं, गिरीहि
च०—गिरिणो, गिरिस्स	गिरीण, गिरीणं
पं०—गिरिणो, गिरिणो, गिरीओ, गिरीउ, गिरीहिंओ	गिरिणो, गिरीओ, गिरीउ, गिरीहिंओ, गिरीसुंओ
छ०—गिरिणो, गिरिस्स	गिरीण, गिरीणं
स०—गिरिम्मि, गिरिंसि	गिरीसु, गिरीसुं
सं०—गिरी, गिरि	गिरउ, गिरओ, गिरिणो, गिरी

इकारान्त णरवइ (नरपति) शब्द के रूप

एकवचन	बहुवचन
प०—णरवई	णरवउ, णरवओ, णरवइणो, णरवई
धी०—णरवईं	णरवइणो, णरवईं
त०—णरवइणा	णरवईहि, णरवईहिं, णरवईहिं
च०—णरवइणो, णरवइस्स	णरवईण, णरवईणं
पं०—णरवइणो, णरवइणो, णरवईओ, णरवईउ, णरवईहिंओ	णरवइणो, णरवईओ, णरवईउ, णरवईहिंओ, णरवईसुंओ
छ०—णरवइणो, णरवइस्स	णरवईण, णरवईणं
स०—णरवइम्मि, णरवइंसि	णरवईसु, णरवईसुं
सं०—हे णरवई, हे णरवइ	हे णरवउ, हे णरवओ, हे णरवइणो, हे णरवई

इकारान्त इसी-रिसी (ऋषि)

एकवचन	बहुवचन
प०—इसी	इसउ, इसओ, इसिणो, इसी
धी०—इसिं	इसिणो, इसी

ए०—इमिग	इमीदि, इमीदि, इमीदि
ए०—इमिगो, इमिग्य	इमीग, इमीगं
ए०—इमिगो, इमिगो, इमीगो, इमीदिगो, इमीगुंती इमीग,	इमीग, इमिगो, इमीगो, इमीदिगो, इमीगुंती
ए०—इमिगो, इमिग्य	इमीग इमीगं
ए०—इमिगि इमिगि	इमीगु, इमीगुं
ए०—इ इमि, इ इमी	इ इमिग, इ इमीगो, इ इमिगो, इ इमी

इकारान्त अग्नि (अग्नि)

पुरुषवचन	पदवचन
ए०—अग्नी	अग्निग, अग्निगो, अग्निगो, अग्नी
द्वि०—अग्नि	अग्निगो, अग्नी
स०—अग्निगा	अग्नीदि, अग्नीदि, अग्नीदि
ए०—अग्निगो, अग्निग्य	अग्नीग, अग्नीगं
ए०—अग्निगो, अग्निगो, अग्नीगो, अग्नीग, अग्निदिगो	अग्निगो, अग्नीगो, अग्नीग, अग्निदिगो, अग्निगुंती
ए०—अग्निगो, अग्निग्य	अग्नीग, अग्नीगं
स०—अग्निगि, अग्निगि	अग्नीगु, अग्नीगुं
ए०—इ अग्नि, इ अग्नी	इ अग्निग, इ अग्नीगो, इ अग्निगो, इ अग्नी

इसी प्रकार गुणि (गुनि), कोदि (कोपि), मधि, रागि (राशि), ररि, कइ (करि) कवि (कवि), अरि, विमि, समादि (समाधि), निदि (निधि), विदि (विधि), दंदि (दंदि) करि (करि), तरस्वि (तरस्विन्), पागि (प्राग्निन्), पदि (पथि), गुदि (गुथि) भादि शब्दों के रूप पण्ये हैं। पाठ्य में पदि, मुदि, गाम्भि प्रभृति इह शब्द इतर और ऐसे इकारान्त माने गये हैं। अतः विद्वन्वत् से इनके रूप अग्नि के समान भी पण्ये हैं।

उकारान्त भाणु (भाणु) शब्द

पुरुषवचन	पदवचन
ए०—भाणु	भाणुगो, भाणुगो, भाणुगो, भाणुग, भाणु
द्वि०—भाणु	भाणुगो, भाणु

तं०—भाणुणा	भाणूहि, भाणूहिँ, भाणूहिँ
च०—भाणुणो, भाणुस्स	भाणूण, भाणूणं
पं०—भाणूणो, भाणुत्तो, भाणूओ भाणूउ, भाणूहितो	भाणूत्तो, भाणूओ, भाणूउ, भाणूहितो भाणूसुत्तो
छं०—भाणुणा, भाणुस्स	भाणूण, भाणूणं
स०—भाणुसि, भाणुमि	भाणूसु, भाणूसुँ
सं०—हे भाणू, हे भाणू	हे भाणूणो, हे भाणूओ, हे भाणूओ, हे भाणूउ

उकारान्त वाउ (वायु) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—वाऊ	वाउणो, वाउओ, वाउओ, वाऊ
वी०—वाउ	वाउणो, वाऊ
तं०—वाउणा	वाऊहि, वाऊहिँ, वाऊहिँ
च०—वाउणो, वाउस्स	वाऊण, वाऊण
पं०—वाउणो, वाउत्तो, वाउओ वाऊउ, वाऊहितो	वाउत्ता, वाऊओ, वाऊउ, वाऊहितो, वाऊसु तो
छं०—वाउणो, वाउस्स	वाऊण, वाऊण
स०—वाउसि, वाउमि	वाऊसु, वाऊसुँ
सं०—हे वाउ, हे वाऊ	हे वाउणो, हे वाउओ, हे वाउओ, हे वाऊ

इसी प्रकार जउ (यदु), धम्मणु (धर्मज्ञ), स०णु (सर्मज्ञ) दइणु (देवज्ञ), गउ (गो), गुरु, साटु (साधु), उणु, वणु (वणु), मेरु, ऋरु, धणु (धनु), सिधु, केउ (केतु), विउणु (विद्युत), राहु, सऊ (शङ्ख), उचउ (दधु), पवामु (प्रवासिन्), वेणु (वेणु), सेउ (सेतु), मचउ (मृत्तु), खणु (खण्ड), गोचमु (गोचरु), सरमु (सरभू), अभिसु (अभिभू) और सयमु (स्वयम्भू) आदि शब्दों के रूप चलते हैं। प्राकृत में खण्ड, गोचरु, सरभू, अभिभू, और सयभू शब्द विकल्प से ह्रस्व उकारान्त होते हैं। अतः इन शब्दों के रूप वाउ के समान भी चलते हैं।

इकारान्त और ऊकारान्त शब्दों के रूप भी इकारान्त और उकारान्त शब्दों के समान होते हैं। हेमचन्द्र ने दीर्घ ई, ऊ के लिए ह्रस्व का विधान किया है और लवोधन के प्रकारचन में अपने नियम को वैकल्पिक माना है।

दीर्घ ईकारान्त पही (प्रधी) शब्द

एकवचन

बहुवचन

प०—पही	पहउ, पहओ, पहिणो, पही
पी०—पहि	पहिणो, पही
त०—पहिण	पहीदि, पहीदिँ, पहीदिँ
च०—पहिणो, पहिस्स	पहीण, पहीणं
पं०—पहिणो, पहित्तो, पहीओ	पहित्तो, पहीओ, पहीउ
पहीउ, पहीहित्तो	पहीहित्तो, पहीसुंतो
छ०—पहिणो, पहिस्स	पहीण, पहीणं
स०—पहिम्मि, पहिंवि	पहीसु, पहीसुं
सं०—हे पहि	हे पहउ, हे पहओ, हे पहिणो, हे पही ।

दीर्घ ईकारान्त गामणी (ग्रामणी) शब्द

एकवचन

बहुवचन

प०—गामणी	गामणउ, गामणओ, गामणिणो, गामणी
पी०—गामणि	गामणिणो, गामणी
त०—गामणिण	गामणीदि, गामणिदिँ, गामणीदिँ
च०—गामणिणो, गामणिस्स	गामणीण, गामणीणं
पं०—गामणिणो, गामणित्तो,	गामणित्तो, गामणीओ, गामणीउ,
गामणीओ, गामणीउ, गामणीहित्तो	गामणीहित्तो, गामणीसुंतो
छ०—गामणिणो, गामणिस्स	गामणीण, गामणीणं
स०—गामणिम्मि, गामणिंवि	गामणीसु, गामणीसुं
सं०—हे गामणी	हे गामणउ, हे गामणओ, हे गामणिणो, हे गामणी

दीर्घ ऊकारान्त खलपू शब्द

एकवचन

बहुवचन

प०—खलपू	खलपउ, खलपउ, खलपओ,
	खलपुणो, खलपू
पी०—खलपुं	खलपुणो, खलपू,
त०—खलपुण	खलपूदि, खलपूदिँ, खलपूदिँ

प०—सपुणो, सपुणस	सपुणो, सपुणस
पं०—सपुणो, सपुणो, सपुणो	सपुणो, सपुणो, सपुणो,
सपुण, सपुणितो	सपुणितो, सपुणितो
छ०—सपुणो, सपुणस	सपुण, सपुण
स०—सपुण्मि, सपुण्ति	सपुण्मि, सपुण्ति
सं०—हे सपुण	हे सपुणो, हे सपुण,
	हे सपुणो, हे सपुणो, हे सपुण

दीर्घ ऊकारान्त सयंभू (स्वयम्भू) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—सयंभू	सयंभवो, सयंभव, सयंभवो, सयंभुणो, सयंभू
वी०—सयंभू	सयंभुणो, सयंभू
व०—सयंभुणा	सयंभूहि, सयंभूहि, सयंभूहि
प०—सयंभुणो, सयंभुस्स	सयंभुण, सयंभुण
पं०—सयंभुणो, सयंभुणो, सयंभूओ,	सयंभुणो, सयंभूओ, सयंभू,
सयंभूउ, सयंभूहितो	सयंभूहितो, सयंभूसुतो
छ०—सयंभुणो, सयंभुस्व	सयंभूण, सयंभूण
स०—सयंभुन्मि, सयंभुंति	सयंभूम्, सयंभूम्
सं०—हे सयंभु	हे सयंभवो, सयंभव, सयंभवो, सयंभुणो, सयंभू

ऊकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

(२२) ऊकारान्त शब्दों के आगे किसी भी विभक्ति के आने पर अन्त्य ऊ के स्थान पर 'आर' आदेश होता है और उसके रूप ऊकारान्त शब्दों के समान चलते हैं ।

(२३) सु और अम् को छोड़कर दोष सभी विभक्तियों में ऊकारान्त शब्द के अन्त्य ऊ के स्थान में विकल्प से उआर होता है ।^१ उत्सवपक्ष में ऊकारान्त शब्दों के समान रूप होते हैं ।

१. आरः स्यादी—दा३।४५ हे० ।

२. श्रुतामुदत्पमौसुवा—दा३।४५ हे० ।

(२४) सम्बोधन पदवचन में ऋकारान्त शब्दों के अन्तिम ऋ के स्थान पर विकल्प से अ आदेश होता है^१ । पर जो ऋकारान्त शब्द विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है, उसके स्थान पर यह नियम लागू नहीं होता । ऋकारान्त शब्दों में तु विभक्ति के परे विकल्प से 'आ' आदेश होता है^२ ।

(२५) पितृ, भ्रातृ और जामातृ शब्दों से पर में किसी भी विभक्ति के आने पर ऋकार के स्थान में अर आदेश न होकर अर आदेश होता है^३ । अर आदेश होने पर भी रूप अकारान्त के समान ही चलते हैं ।

(२६) प्रथमा पदवचन में ऋकारान्त शब्दों के ऋ के स्थान पर विकल्प से आ आदेश होता है^४ ।

(२७) अकारान्त होने पर अकारान्त शब्दों के रूप अकारान्त जिण के समान और उकारान्त हो जाने पर 'भाणु' के समान होते हैं । विभक्तिचिह्न भी अकारान्त और उकारान्त शब्दों के समान ही जोड़े जाते हैं ।

ऋकारान्त कर्तृ शब्द—कत्तार और कत्तु

पदवचन

बहुवचन

प०—कत्ता, कत्तारो

कत्तारा, कत्तवो, कत्तभो, कत्तउ,

कत्तुणो, कत्तू

धी०—कत्तारं

कत्तारे, कत्तारो, कत्तुणो, कत्तू

त०—कत्तारेण, कत्तारेणं, कत्तुणा

कत्तारेहि, कत्तारेहिं, कत्तारेहिं, कत्तूहि,

कत्तूहिं, कत्तूहिं

च०—कत्ताराय, कत्तारस्स, कत्तुणो,

कत्ताराण, कत्ताराणं, कत्तूण, कत्तूणं

कत्तुस्स

पं०—कत्तारत्तो, कत्ताराभो, कत्ताराउ,

कत्तारत्तो, कत्ताराभो, कत्ताराउ,

कत्ताराहि, कत्ताराहितो, कत्तारा,

कत्ताराहि, कत्ताराहितो, कत्तारासुत्तो,

कत्तुणो, कत्तुत्तो, कत्तूभो, कत्तूउ,

कत्तारेहि, कत्तारेहितो, कत्तारेसुत्तो,

कत्तूहिवो

कत्तुत्तो, कत्तूभो, कत्तूउ, कत्तूहिन्तो,

कत्तूसुन्तो

छ०—कत्तारस्स, कत्तुणो, कत्तुस्स

कत्ताराण, कत्ताराणं, कत्तूण, कत्तूणं

स०—कत्तारे, कत्तारम्मि, कत्तुम्मि

कत्तारेसु, कत्तारेसुं, कत्तूसु, कत्तूसुं

सं०—हे कत्त, हे कत्तारो

हे कत्तारा, हे कत्तवो, हे कत्तभो, हे कत्तउ,

कत्तुणो, कत्तू

१. श्रुतोद्भा ढा३।३६ हे० ।

२. पितृभ्रातृजामातृणामरः ५।३४. वर० ।

३. आ सी न वा ढा३।४८. हे० ।

४. आ ष सी ५।३५. वर० ।

भर्तृ--भत्तार, भत्तर, भत्त शब्द

एकवचन

बहुवचन

प०—भत्ता, भत्तारो, भत्तारो

भत्तुणो, भत्तरा, भत्तवो, भत्तओ,

भत्तउ, भत्त

वी०—भत्तारं, भत्तरं

भत्तारे, भत्तरे, भत्तारा, भत्तू, भत्तुणो

त०—भत्तरेण, भत्तारेण, भत्तुणा

भत्तारेहि, भत्तरेहि, भत्तारेहिँ, भत्तरेहिँ,

भत्तारेहिँ, भत्तरेहिँ, भत्तूहि, भत्तूहिँ,

भत्तूहिँ

च०—भत्तारस्, भत्तरस्, भत्तुणो,

भत्तूणं, भत्तूण, भत्ताराणं, भत्ताराण,

भत्तुस्स

भत्तारणं, भत्ताराण

पं०—भत्तरत्तो, भत्तराओ, भत्तराउ,

भत्तरतो, भत्तराओ, भत्तराउ, भत्तराहि,

भत्तराहि, भत्तराहिन्तो, भत्तुणो,

भत्तराहिन्तो, भत्तराहुन्तो, भत्तरेहि,

भत्तुत्तो, भत्तूओ, भत्तूउ,

भत्तरेहिन्तो, भत्तरेहुन्तो, भत्तुत्तो, भत्तूओ,

भत्तूहिन्तो, भत्ताराओ, भत्ताराउ,

भत्तूउ, भत्तूहिन्तो, भत्तूहुन्तो

भत्ताराहि, भत्ताराहिन्वो, भत्तारा

छ०—भत्तरस्स, भत्तारस्स, भत्तुणो,

भत्ताराण, भत्तारणं, भत्ताराण, भत्ताराणं,

भत्तुस्स

भत्तूण, भत्तूणं

स०—भत्तरे, भत्तरम्मि, भत्तारे,

भत्तरेसु भत्तरेसुं, भत्तारेसु, भत्तारेसुं,

भत्तारम्मि, भत्तुम्मि

भत्तूसु, भत्तूसुं

सं०—हे भत्त, हे भत्तर, हे भत्तरो,

हे भत्तरा, भत्तारा, हे भत्तुणो, भत्तू

हे भत्तार

भ्रातृ--भायर, भाउ शब्द

एकवचन

बहुवचन

प०—भाया, भायरो

भायारा, भायवो, भायओ, भायउ,

भाउणो, भाऊ

वी०—भायरं

भायरे, भायरा, भाउणो, भाऊ

त०—भायरेण, भायरेण, भाउगा

भायरेहि, भायरेहिँ, भायरेहिँ, भाऊहि,

भाऊहिँ, भाऊहिँ

च०—भायराय, भायरस्स, भाउणो,

भायराण, भायराण, भाऊण, भाऊणं

भाउस्स

पं०—भायरत्तो, भायराओ, भायराउ, भायरत्तो, भायराओ, भायराउ, भायराद्धि, भायराद्धि, भायराद्धिन्तो, भायराद्धिन्तो, भायरासुन्तो, भायरेद्धि, भायरा, भाउणो, भाउत्तो, भायरेद्धिन्तो, भायरेसुन्तो, भाउत्तो, भाऊओ, भाऊउ, भाऊद्धिन्तो भाऊओ, भाऊउ भाऊद्धिन्तो, भाऊसुन्तो
छं०—भायरस्स, भाउणो, भाउस्स भायराण, भायराणं, भाऊण, भाऊणं
सं०—भायरे, भायरम्मि, भाउम्मि भायरेसु, भायरेसुं, भाऊसु, भाऊसुं
सं०—द्वे भाय, भायर, भायरो, भायरं भायरे, भायरा, भाअओ, भाअओ, भाअउ, भाऊणो, भाऊ

पितृ—पिउ, पिअर शब्द

एकवचन

बहुवचन

पं०—पिअरो, पिआ (पिता)	पिअरा, पिउणो, पिअओ, पिअओ, पिअउ, पिऊ
वी०—पिअरं	पिअरे, पिअरा, पिउणो, पिऊ
त्व०—पिअरेण, पिअरेणं, पिउणा	पिअरेद्धि, पिअरेद्धि, पिअरेद्धिं, पिऊद्धि, पिऊद्धिं, पिऊद्धिं
च०—पिअरस्स, पिउणो, पिउस्स	पिअराण, पिअराणं, पिऊण, पिऊणं
पं०—पिअराओ, पिअराउ, पिअरा, पिउणो, पिऊओ, पिऊउ	पिअराओ, पिअराउ, पिअराद्धि, पिअरेद्धि, पिअराद्धिन्तो, पिअरेद्धिन्तो, पिअरासुन्तो, पिअरेसुन्तो, पिऊओ, पिऊसुन्तो, पिऊउ, पिऊद्धिन्तो
छं०—पिअरस्स, पिउणो, पिउस्स	पिअराण, पिअराणं, पिऊण, पिऊणं
सं०—पिऊरंस्सि, पिअरम्मि, पिअरे, पिउत्ति, पिउम्मि	पिअरेसु, पिअरेसुं, पिऊसु, पिऊसुं
सं०—पिअरं, पिअ, पिअरो, पिअरा, पिअर	पिउणो, पिअओ, पिअओ, पिअउ, पिउ

दातृ—दाउ, दायार शब्द

एकवचन

बहुवचन

पं०—दायारो, दायार	दायारा, दाउणो, दायवो, दायओ, दायउ, दाऊ
-------------------	--

ची०—दायारं	दायारे, दायारा, दाउणो, दाऊ
त०—दायारेण, दायारेणं, दाउणा	दायारेहि, दायारेहिं, दायारेहिँ, दाऊहि, दाऊहिं, दाऊहिँ
च०—दायारस्स, दाउणो, दाउस्स	दायाराण, दायाराणं, दाऊण, दाऊणं
पं०—दायाराओ, दायाराउ, दायारा, दाउणो, दाऊओ, दाऊउ	दायाराओ, दायाराउ, दायाराहि, दायारेहि, दायाराहिन्तो, दायारेहिँतो, दायारासुँतो, दायारेसुँतो, दाऊओ, दाऊउ, दाऊहिँतो, दाऊसुँतो
छ०—दायारस्स, दाउणो, दाउस्स	दायाराण, दायाराणं, दाऊण, दाऊणं
स०—दायारंसि, दायारम्मि, दायारे दाउंसि, दाउम्मि	दायारेसु, दायारेसुं, दाऊसु, दाऊसुं
सं०—दायार, दाय, दायारो, दायारा	दायारा, दाउणो, दायओ, दायओ, दायउ, दाऊ

एकारान्त, ऐकारान्त, ओकारान्त और औकारान्त

पुल्लिग शब्द

(२८) प्राकृत में एकारान्त और ओकारान्त शब्दों का प्रायः अभाव है। संस्कृत के एकारान्त और ओकारान्त शब्दों में स्वारधिक क—अ प्रत्यय जोड़ने से प्राकृत शब्द बनते हैं, पर उनके रूप जिण शब्द के समान होते हैं।

(२९) संस्कृत के ऐकारान्त और औकारान्त शब्द प्राकृत में अकारान्त हो जाते हैं, अतः इनके रूप प्रायः वीर या जिण शब्द के समान चलते हैं।

एकारान्त सुरै < सुरेअ शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—सुरेओ	सुरेआ
वी०—सुरेअं	सुरेआ, सुरेए
त०—सुरेएण, सुरेएणं	सुरेएहि, सुरेएहिं, सुरेएहिँ
च०—सुरेअस्स, सुरेआय	सुरेआण, सुरेआणं
पं०—सुरेअत्तो सुरेआओ, सुरेआउ, सुरेआहि, सुरेआहिँतो, सुरेआ	सुरेआत्तो, सुरेआओ, सुरेआउ, सुरेआहि सुरेएहि, सुरेआहिन्तो, सुरेआसुन्तो
छ०—सुरेअस्स	सुरेआण, सुरेआणं
स०—सुरेअंसि, सुरेअम्मि	सुरेएसु, सुरेसुं
सं०—हे सुरेओ	हे सुरेआ

ओकारान्त ग्लौ-गिलोअ शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—गिलोओ	गिलोआ
द्वी०—गिलोअं	गिलोए, गिलोआ
तृ०—गिलोएण, गिलोएणं	गिलोएहि, गिलोएहिं, गिलोएहिं
च०—गिलोअस्स, गिलोआय	गिलोआण, गिलोआणं
पं०—गिलोअत्तो, गिलोआओ, गिलोआठ, गिलोआहि, गिलोआहिन्तो, गिलोआ	गिलोअत्तो, गिलोआओ, गिलोआठ, गिलोआहि, गिलोएहि, गिलोआहिंत्तो, गिलोआसुंत्तो, गिलोएहिंत्तो, गिलोएसुंत्तो
छ०—गिलोअस्स	गिलोआण, गिलोआणं
स०—गिलोअंसि, गिलोअम्मि	गिलोएसु, गिलोएसुं
सं०—हे गिलोओ	हे गिलोआ

स्वरान्त पुंलिङ्ग शब्दरूप समाप्त ।

स्वरान्त स्त्रीलिङ्ग

(३०) स्त्रीलिङ्ग शब्दों से पर में आनेवाले जस् और शस् के स्थान में विकल्प से उत्त् और ओत् आदेश होते हैं और उनसे पूर्व के ह्रस्व स्वर को विकल्प से दीर्घ हो जाता है ।

(३१) स्त्रीलिङ्ग में टा, डस् और डि में प्रत्येक क स्थान में अत्, आत्, इत् और एत् ये चार आदेश होते हैं । पूर्व के ह्रस्व स्वर को दीर्घ हो जाता है । पर डस् प्रत्यय के स्थान में आदेश होनेपर पूर्व के ह्रस्व स्वर को विकल्प से दीर्घ होता है ।

(३२) अम् विभक्ति में—द्वितीया एकवचन में अन्तिम दीर्घ को विकल्प से ह्रस्व होता है ।

(३३) स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान दीर्घ ईकारान्त शब्द से पर में आनेवाले सु, जस् और शस् के स्थान में विकल्प से आ आदेश होता है ।

(३४) संज्ञोपन में आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों में आ के स्थान पर एस्व होता है ।

१. ब्रियामुदोली वा ८।३।२७ हे०

२. टा-डस्-डेरदादि द्वेदा तु डसेः ८।३।२६ हे०

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में जोड़े जानेवाले विभक्ति चिह्न

एकवचन	बहुवचन
प०—(लुक्)	उ, ओ, (लुक्)
वी०—	उ, ओ, (लुक्)
त०—अ, इ, ए	हि, हिं, हिँ
च०—अ, इ, ए,	ण, णं
पं०—अ, इ, ए, ओ, उ, द्वित्वे	ओ, ओ, उ, द्वित्वे, सुन्तो
छ०—अ, इ, ए	ण, णं
स०—अ, इ, ए	सु, सुं
सं०—(लुक्)	उ, ओ, (लुक्)

लदा < लता शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—लदा	लदा, लदाओ, लदाउ
वी०—लदं	लदा, लदाओ, लदाउ
त०—लदाए, लदाइ, लदाअ	लदाहि, लदाहिँ, लदाहिँ
च०—लदाए, लदाइ, लदाअ	लदाण, लदाणं
पं०—लदाए, लदाइ, लदाअ, लदत्तो, लदाओ, लदाउ, लदाद्वित्वे	लदत्तो, लदाओ, लदाउ, लदाद्वित्वे, लदासुन्तो
छ०—लदाए, लदाइ, लदाअ	लदाण, लदाणं
स०—लदाए, लदाइ, लदाअ	लदासु, लदासुं
सं०—हे लदे, हे लदा	हे लदा, हे लदाओ, हे लदाउ

माला

एकवचन	बहुवचन
प०—माला	मालाउ, मालाओ, माला
वी०—मालं	मालाउ, मालाओ, माला
त०—मालाअ, मालाइ, मालाए	मालाहि, मालाहिँ, मालाहिँ
च०—मालाअ, मालाइ, मालाए	मालाण, मालाणं
पं०—मालाअ, मालाइ, मालाए, मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाद्वित्वे	मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाद्वित्वे, मालासुन्तो

छ०—माळाअ, माळाइ, माळाए	माळाण, माळाणं
स०— " " "	माळासु, माळासुं
सं०—माळे, माळा	माळाओ, माळाउ, माळा

छिहा (स्पृहा)

एकवचन	बहुवचन
प०—छिहा	छिहाउ, छिहाओ, छिहा
वी०—छिहं	" " "
त०—छिहाअ, छिहाइ, छिहाए	छिहादि, छिहादिं, छिहादिं
च०— " " "	छिहाण, छिहाणं
पं०—छिहाअ, छिहाइ, छिहाए, छिहाओ, छिहाओ, छिहाउ, छिहादिन्तो	छिहाओ, छिहाओ, छिहाउ, छिहादिन्तो, छिहासुन्तो
छ०—छिहाअ, छिहाइ, छिहाए	छिहाण, छिहाणं
स०— " " "	छिहासु, छिहासुं
सं०—छिहे, छिहा	छिहाउ, छिहाओ, छिहा

हलिदा, हलदा (हरिद्रा)

एकवचन	बहुवचन
प०—हलिहा	हलिहाउ, हलिहाओ, हलिहा
वी०—हलिहं	" " "
त०—हलिहाअ, हलिहाइ, हलिहाए	हलिहादि, हलिहादिं, हलिहादिं
च०— " " "	हलिहाण, हलिहाणं
पं०— " " " हलिहाओ, हलिहाओ, हलिहाउ, हलिहादिन्तो	हलिहाओ, हलिहाओ, हलिहाउ, हलिहादिन्तो, हलिहासुन्तो
छ०—हलिहाअ, हलिहाइ, हलिहाए	हलिहाण, हलिहाणं
स०— " " "	हलिहासु, हलिहासुं
सं०—हलिहे, हलिहा	हलिहाउ, हलिहाओ, हलिहा

मट्टिआ (मृत्तिका)

एकवचन	बहुवचन
प०—मट्टिआ	मट्टिआउ, मट्टिआओ, मट्टिआ
वी०—मट्टिअं	" " "

त०—	मट्टिआअ, मट्टिआइ, मट्टिआए	मट्टिआदि, मट्टिआदि, मट्टिआदि'
च०—	" " "	मट्टिआण, मट्टिआणं
पं०—	" " "	मट्टिआत्तो, मट्टिआओ
	मट्टिआत्तो, मट्टिआओ, मट्टिआउ, मट्टिआउ, मट्टिआहिन्तो, मट्टिआसुन्तो	मट्टिआहिन्तो
छ०—	मट्टिआअ, मट्टिआइ, मट्टिआए	मट्टिआण, मट्टिआणं
स०—	" " "	मट्टिआसु, मट्टिआसुं
सं०—	हे मट्टिए, मट्टिआ	हे मट्टिआउ, मट्टिआओ, मट्टिआ

इकारान्त स्त्रीलिंग विभक्तिचिह्न-प्रत्यय

एकवचन	बहुवचन
प०—(लुक्)	उ, ओ, (लुक्)
वी०—म्	" "
त०—अ, आ, इ, ए	दि, दिँ, दि
च०— " "	ण, णं
पं०— " , " , चो, ओ, उ, हिन्तो	चो, ओ, उ, हिन्तो, सुन्तो
छ०— " "	ण, णं
स०— " "	सु, सुं
सं०—ई (लुक्)	उ, ओ (लुक्)

मई (मति)

एकवचन	बहुवचन
प०—मई	मईउ, मईओ, मई
वी०—मई	" " "
त०—मईअ, मईआ, मईइ, मईए	मईदि, मईदिँ, मईदि
च०— " " "	मईण, मईणं
पं०— " " "	मईत्तो, मईओ, मईउ,
	मईहिन्तो, मईसुन्तो
छ०—मईअ, मईआ, मईइ, मईए	मईण, मईणं
स०— " " "	मईसु, मईसुं
सं०—हे मई, मई	हे मईउ, मईओ, मई

मुचि (मुक्ति)

प०—मुत्ती	मुत्तीउ, मुत्तीओ, मुत्ती
वी०—मुत्ति	" "
त०—मुत्तीअ, मुत्तीआ, मुत्तीइ, मुत्तीए	मुत्तीहि, मुत्तिहिँ, मुत्तीहिँ
च०— " " "	मुत्तीण, मुत्तीणं
पं०— " " " मुत्तित्तो, मुत्तीओ, मुत्तीउ, मुत्तीहिनतो	मुत्तित्तो, मुत्तीओ, मुत्तीउ, मुत्तीहिनतो, मुत्तीमुन्तो
छ०—मुत्तीअ, मुत्तीआं, मुत्तीइ, मुत्तिए, मुत्तीण, मुत्तीअं	
स०— " " "	मुत्तीसु, मुत्तासुं
सं०—हे मुत्ती, मुत्ति	मुत्तीउ, मुत्तीओ, मुत्ती

राइ (रात्रि)

एकवचन	बहुवचन
प०—राई	राईओ, राईउ, राई
वी०—राहं	" "
त०—राईअ, राईआ, राईइ, राईए	राईहि, राईहिँ, राईहिँ
च०— " " " "	राईण, राईणं
पं०—राईअ, राईआ, राईइ, राईए, राईत्तो, राईओ, राईउ, राईहिनतो	राइत्तो, राईओ, राईउ, राईहिनतो, राईमुन्तो
छ०—राईअ, राईआ राईइ, राईए	राईण, राईणं
स०— " " " "	राईसु, राईसुं
सं०—हे राई, राइ	हे राईउ, राईओ, राई

ईकारान्त स्त्रीलिंग विभक्तिचिह्न-प्रत्यय

एकवचन	बहुवचन
प०—[लृक्], आ	आ, उ, ओ, [लृक्]
वी०—सँ	" " " "
त०—अ, आ, इ, ए	हि, हिँ, हिँ
च०— " " " "	ण, णं
पं०— " " " " त्तो, ओ, उ, हिनतो	त्तो, ओ, उ, हिनतो, मुन्तो

छ०—अ, आ, इ, ए	ण, णं
स०—, , , ,	सु, सुं
सं—[लक्]	आ, उ, ओ [लक्]

लच्छी (लक्ष्मी)

एकवचन

बहुवचन

प०—लच्छी, लच्छीआ	लच्छीआ, लच्छीउ, लच्छीओ, लच्छी
वी०—लच्छि	" " " "
त०—लच्छीअ, लच्छीआ, लच्छीइ, लच्छीए	लच्छीहि, लच्छीहिं, लच्छीहिं
च०—, , , ,	लच्छीण, लच्छीणं
पं०—, , , ,	लच्छीणो, लच्छीओ, लच्छीउ,
	लच्छीणो, लच्छीओ, लच्छीउ, लच्छीहिन्तो, लच्छीसुन्तो
	लच्छीहितो
छ०—लच्छीअ, लच्छीआ, लच्छीइ, लच्छीए	लच्छीण, लच्छीणं
स०—, , , ,	लच्छीसु, लच्छीसुं
सं—हे लच्छि	हे लच्छीआ, लच्छीउ, लच्छीओ, लच्छी

रुप्पिणी (रुक्मिणी)

एकवचन

बहुवचन

प०—रुप्पिणी, रुप्पिणीआ	रुप्पिणीआ, रुप्पिणीउ, रुप्पिणीओ, रुप्पिणी
वी०—रुप्पिणि	रुप्पिणीआ, रुप्पिणीउ, रुप्पिणीओ, रुप्पिणी
त०—रुप्पिणीअ, रुप्पिणीआ, रुप्पिणीइ, रुप्पिणीए	रुप्पिणीहि, रुप्पिणीहिं, रुप्पिणीहिं
च०—रुप्पिणीअ, रुप्पिणीआ, रुप्पिणीइ, रुप्पिणीए	रुप्पिणीण, रुप्पिणीणं
पं०—रुप्पिणीअ, रुप्पिणीआ, रुप्पिणीइ, रुप्पिणीए	रुप्पिणीणो, रुप्पिणीओ, रुप्पिणीउ, रुप्पिणीहिन्तो, रुप्पिणीओ, रुप्पिणीओ, रुप्पिणीसुन्तो
	रुप्पिणीउ, रुप्पिणीहिन्तो
छ०—रुप्पिणीअ, रुप्पिणीआ, रुप्पिणीइ, रुप्पिणीए	रुप्पिणीण, रुप्पिणीणं

स०—रुप्पिणीअ, रुप्पिणीआ, . रुप्पिणीसु, रुप्पिणीसुं
रुप्पिणीइ, रुप्पिणीए

सं०—हे रुप्पिणि हे रुप्पिणीआ, रुप्पिणीउ, रुप्पिणीओ,
रुप्पिणी

बहिणी (भगिनी)

एकवचन

बहुवचन

प०—बहिणी, बहिणीआ

बहिणीआ, बहिणीउ, बहिणीओ, बहिणी

बी०—बहिणि

” ” ”

त०—बहिणीअ, बहिणीआ, बहिणीइ, बहिणीहि, बहिणीहिं, बहिणीहिं
बहिणीए

च०—बहिणीअ, बहिणीआ, बहिणीइ, बहिणीण, बहिणीणं
बहिणीए

पं०— ” ” बहिणित्तो, बहिणीओ, बहिणीउ,
बहिणित्तो, बहिणीओ, बहिणीउ, बहिणीसुन्तो, बहिणीहितो
बहिणीहितो

छ०—बहिणीअ, बहिणीआ, बहिणीइ, बहिणीण, बहिणीणं
बहिणीए

स०—बहिणीअ, बहिणीआ, बहिणीइ, बहिणीसु, बहिणीसुं
बहिणीए

सं०—हे बहिणि हे बहिणीआ, बहिणीउ, बहिणीओ,
बहिणी

उकारान्त स्त्रीलिंग धेणु-शब्द

एकवचन

बहुवचन

प०—धेणू

धेणूउ, धेणूओ, धेणू

बी०—धेणुं

” ” ”

त०—धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए

धेणूहि, धेणूहिं, धेणूहिं

च०—

”

धेणूण, धेणूणं

पं०—

”

धेणुत्तो, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहितो,

धेणुत्तो, धेणूओ, धेणूउ,
धेणूहितो

धेणूसुन्तो

छ०—	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूण, धेणूणं
स०—	" "	धेणूसु, धेणूसुं
सं०—	हे धेणू, धेणु	हे धेणूउ, धेणूओ, धेणू

तणु

एकवचन	बहुवचन	
प०—	तणू	तणूउ, तणूओ, तणू
वी०—	तणुं	" "
त०—	तणूअ, तणूआ, तणूइ, तणूए	तणूहि, तणूहिं, तणूहिं
च०—	" " "	तणूण, तणूणं
पं०—	" " "	तणुत्तो, तणूओ, तणूउ, तणूहिन्तो,
	तणुत्तो, तणूओ, तणूउ, तणूहिन्तो	तणूसुन्तो
छ०—	तणूअ, तणूआ, तणूइ, तणूए	तणूण, तणूणं
स०—	" " "	तणूसु, तणूसुं
सं०—	हे तणू, तणु	हे तणूउ, तणूओ, तणू

रज्जु

एकवचन	बहुवचन	
प०—	रज्जू	रज्जूउ, रज्जूओ, रज्जू
वी०—	रज्जुं	" "
त०—	रज्जूअ, रज्जूआ, रज्जूइ, रज्जूए	रज्जूहि, रज्जूहिं, रज्जूहिं
च०—	" " "	रज्जूण, रज्जूणं
पं०—	" " "	रज्जुत्तो, रज्जूओ, रज्जूउ,
	रज्जुत्तो, रज्जूओ, रज्जूउ,	रज्जूहिन्तो, रज्जूसुन्तो
	रज्जूहिन्तो	
छ०—	रज्जूअ, रज्जूआ, रज्जूइ, रज्जूए	रज्जूण, रज्जूणं
स०—	" " "	रज्जूसु, रज्जूसुं
सं०—	हे रज्जू, रज्जु	हे रज्जूउ, रज्जूओ, रज्जू

ऊकारान्त स्त्रीलिंगशब्द

पहू

एकवचन	बहुवचन	
प०—	पहू, पहूआ	पहूभा, पहूउ, पहूओ, पहू
वी०—	पहूं	" " "

त०—	पह्म, पह्मा, पह्म, पह्म	पह्मि, पह्मिहँ, पह्मि
च०—	" " "	पह्मण, पह्मणं
पं०—	" " "	पह्मणो, पह्मो, पह्म, पह्मिन्तो,
	पह्मणो, पह्मो, पह्म, पह्मिन्तो	पह्मण्तो
छ०—	पह्म, पह्मा, पह्म, पह्म	पह्मण, पह्मणं
स०—	" " "	पह्मणु, पह्मणुं
सं०—	हे पह्म	हे पह्म, पह्म, पह्मो,

सास् (श्वथू)

	पुरुषवचन	पुरुषवचन
प०—	सास्, सास्मा	सास्मा, सास्, सास्मो, सास्
वी०—	सासुं	" " "
त०—	सासुम, सासुमा, सासुह, सासु	सासुहि, सासुहिँ, सासुहि
च०—	" " "	सासुण, सासुणं
पं०—	" " "	सासुणो, सासुमो, सासु, सासुहिन्तो,
	सासुणो, सासुमो, सासु, सासुहिन्तो	सासुण्तो
छ०—	सासुम, सासुमा, सासुह, सासु	सासुण, सासुणं
स०—	" " "	सासुणु, सासुणुं
सं०—	हे सासु	हे सासुमा, सासु, सासुमो, सासु

चम्

	पुरुषवचन	पुरुषवचन
प०—	चम्, चम्मा	चम्मा, चम्, चम्मो, चम्
वी०—	चमुं	" " "
त०—	चम्म, चम्मा, चम्म, चम्म	चम्मि, चम्मिहँ, चम्मि
च०—	" " "	चम्मण, चम्मणं
पं०—	" " "	चम्मणो, चम्मो, चम्म, चम्मिन्तो,
	चम्मणो, चम्मो, चम्म, चम्मिन्तो	चम्मण्तो
छ०—	चम्म, चम्मा, चम्म, चम्म	चम्मण, चम्मणं
स०—	" " "	चम्मणु, चम्मणुं
सं०—	हे चम्	हे चम्मा, चम्, चम्मो, चम्

ऋकारान्त स्त्रीलिंग शब्द-

माआ

एकवचन	बहुवचन
प०—माआ	माआओ, माआउ, माआ
वी०—माअं	" "
त०—माआअ, माआइ, माआए	माआहि, माआहिँ, माआहिँ
च०— " " "	माआण, माआणं
पं०— " " "	माआओ, माआउ, माआहिन्तो,
माआत्तो, माआत्तो, माआओ,	माआसुन्तो
माआउ, माआहिन्तो	
छ०—माआअ, माआइ, माआए	माआण, माआणं
सं०— " " "	माआसु, माआसुं
सं०—हे माआ	हे माआओ, माआउ, माआ

ससा (स्वसृ)

एकवचन	बहुवचन
प०—ससा	ससाओ, ससाउ, ससा
वी०—ससं	" " "
त०—ससाअ, ससाइ, ससाए	ससाहि, ससाहिँ, ससाहिँ
च०— " " "	ससाण, ससाणं
पं०— " " "	ससत्तो, ससाओ, ससाउ, ससाहिन्तो,
ससत्तो, ससाओ, ससाउ, ससाहिन्तो	ससासुन्तो
छ०—ससाअ, ससाइ, ससाए	ससाण, ससाणं
सं०— " " "	ससासु, ससासुं
सं०—हे ससा	हे ससाओ, ससाउ, ससा

नणन्दा (ननन्द)

एकवचन	बहुवचन
पं०—नणन्दा	नणन्दाओ, नणन्दाउ, नणन्दा
वी०—नणन्दं	" " "
त०—नणन्दाअ, नणन्दाइ, नणन्दाए	नणन्दाहि, नणन्दाहिँ, नणन्दाहिँ
च०— " " "	नणन्दाण, नणन्दाणं
पं०— " " "	नणन्दत्तो, नणन्दाओ, नणन्दाउ,
नणन्दत्तो, नणन्दाओ, नणन्दाउ,	नणन्दाहिन्तो, नणन्दासुन्तो
नणन्दाहिन्तो	

छ०—नणन्दाअ, नणन्दाइ, नणन्दाए	नणन्दाण, नणन्दाणं
स०— " " "	नणन्दासु, नणन्दासुं
सं०—हे नणन्दा	हे नणन्दाओ, नणन्दाउ, नणन्दा

माउसिआ (मातृष्वसृ)

एकवचन	बहुवचन
प०—माउसिआ	माउसिआओ, माउसिआउ, माउसिआ
वी०—माउसिअं	" " "
त०—माउसिआअ, माउसिआइ, माउसिआए	माउसिआदि, माउसिआहिं, माउसिआहिं
च०— " "	माउसिआण, माउसिआणं
पं०— " " माउसिआत्तो, माउसिआओ, माउसिआउ, माउसिआहिन्तो	माउसिआत्तो, माउसिआओ, माउसिआउ, माउसिआहिन्तो, माउसिआसन्तो
छ०—माउसिआअ, माउसिआइ, माउसिआए	माउसिआण, माउसिआणं
स०—, " ,	माउसिआसु, माउसिआसुं
सं०—हे माउसिआ	हे माउसिआओ, माउसिआउ, माउसिआ

धूआ (दुहितृ)

एकवचन	बहुवचन
प०—धूआ	धूआओ, धूआउ, धूआ
वी०—धूअं	" " "
त०—धूआअ, धूआइ, धूआए	धूआदि, धूआहिं, धूआहिं
च०—, " "	धूआण, धूआणं
पं०— " " धूआत्तो, धूआओ, धूआउ, धूआहिन्तो	धूआत्तो, धूआओ, धूआउ, धूआहिन्तो, धूआसुन्तो
छ०—धूआअ, धूआइ, धूआए	धूआण, धूआणं
स०—, " "	धूआसु, धूआसुं
सं०—हे धूआ	हे धूआओ, धूआउ, धूआ

ओकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

गावी (गो)

एकवचन	बहुवचन
प०—गावी, गावीआ	गावीआ, गावीउ, गावीओ, गावी
दी०—गावि	" " "
त०—गावीअ, गावीआ, गावीइ, गावीए	गावीहि, गावीहिँ, गावीहिँ
च०—, " "	गावीण, गावीणं
पं०—, " " गाविस्तो, गावीओ, गावीउ, गावीहिन्तो	गाविस्तो, गावीओ, गावीउ, गावीहिन्तो, गावीसुन्तो
छ०—गावीअ, गावीआ, गावीइ, गावीए	गावीण, गावीणं
स०—, " "	गावीसु, गावीसुं
सं०—हे गावि	हे गावीआ, गावीउ, गावीओ, गावी

औकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

नावा (नौ)

एकवचन	बहुवचन
प०—नावा	नावाओ, नावाउ, नावा
दी०—नावं	" " "
त०—नावाअ, नावाइ; नावाए,	नावाहि, नावाहिँ, नावाहिँ
च०—, " "	नावाण, नावाणं
पं०—, " " नावस्तो, नावाओ, नावाउ, नावाहिन्तो	नावस्ता, नावाओ, नावाउ, नावाहिन्तो नावासुन्तो
छ०—नावाअ, नावाइ, नावाउ	नाराण, नावाणं
स०—" "	नावासु, नावासुं
सं०—हे नावा	हे नावाओ, नावाउ, नावा

स्वरान्त छील्लि शब्दरूप समाप्त ।

स्वरान्त नपुंसक लिंग शब्द

(३५) नपुंसक लिंग में स्वरान्त शब्दों से पर में आनेवाले गु के स्थान में प्रथमा पुरुवचन में म् होता है ।

(३६) नपुंसक लिंग में स्वरान्त शब्दों से पर में आनेवाले क्त और शस के स्थान में प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में हं, हं और णि आदेश होते हैं ।

(३७) नपुंसक लिंग के सम्बोधन पुरुवचन में 'गु' का छोप होता है ।

(३८) गु के पर में रहने पर प्रथमा के पुरुवचन में इकारान्त और उकारान्त शब्दों के अन्तिम ह और उ को दीर्घ नहीं होता ।

नपुंसकलिंग के विभक्तिचिह्न

पुरुवचन	बहुवचन
प०—म्	णि, हं, हं
दी०—म्	णि, हं, हं
स०—०	" "

येष विभक्तियों में पुल्लिंग के समान विभक्ति चिह्न होते हैं

वण (वन) शब्द

पुरुवचन	बहुवचन
प०—वणं	वणाहं, वणाहं, वणाणि
दी०—वणं	" "
त०—वणेण	वणेहि, वणेहि
च०—वणस्म	वणाणं
पं०—वणत्तो, वणाभो, वणाउ, वणाहि, वणाहिनतो, वणा	वणत्तो, वणाभो, वणाउ, वणादि, वणाहिनतो, वणासुन्तो
छ०—वणस्स	वणाणं
स०—वणे, वणम्मि	वणेसु, वणेसुं
सं०—हे वण	हे वणाहं, हे वणाहं, हे वणाणि

धण (धन) शब्द

पुरुवचन	बहुवचन
प०—धणं	धणाहं, धणाहं, धणाणि
दी०—धणं	धणाहं, धणाहं, धणाणि

इसके आगे वीर शब्द के समान रूप होते हैं ।

इकारान्त दहि (दधि) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—दहि	दहीहैं, दहीहं, दहीणि
वी०—दहि	दहीहैं, दहीहं, दहीणि
त०—दहिणा	दहीहि
च०—दहिणो, दहिस्स	दहीण, दहीणं
पं०—दहिणो, दहित्तो, दहीओ, दहीउ, दहीहिन्तो	दहित्तो, दहीओ, दहीउ, दहीहिन्तो, दहीमुन्तो
छ०—दहिणो, दहिस्स	दहीण, दहीणं
स०—दहिम्मि	दहीसु, दहीसुं
सं०—हे दहि	हे दहीहं, दहीहं, दहीणि

वारि

एकवचन	बहुवचन
प०—वारि	वारीहैं, वारीहं, वारीणि
वी०—वारि	वारीहैं, वारीहं, वारीणि

इसके आगे इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के समान रूप होते हैं ।

सुरहि (सुरभि)

एकवचन	बहुवचन
प०—सुरहि	सुरहीहैं, सुरहीहं, सुरहीणि
वी०—सुरहि	सुरहीहैं, सुरहीहं, सुरहीणि

इसके आगे पुल्लिङ्ग शब्दों के समान रूप होते हैं ।

उकारान्त महु (मधु) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—महुं	महुहैं, महुहं, महुणि
वी०—महुं	महुहैं, महुहं, महुणि
त०—महुणा	महुदि, महुदिं, महुदिं
च०—महुणो, महुस्स	महुण, महुणं
पं०—महुणो, महुत्तो, महुओ, महुउ, महुहिन्तो	महुत्तो, महुओ, महुउ, महुहिन्तो,

महूउ, महूहिन्तो
 ध०—महूणो, महूरस
 स०—महूमि
 सं०—इं महू

महूसुन्तो
 महूण, महूणं
 महूसु, महूसुं
 दे महूँ, महूँ, महूणि

जाणु (जानु)

एकवचन
 प०—जाणुं
 वी०—जाणुं

बहुवचन
 जाणूँ, जाणूँ, जाणूणि
 जाणूँ, जाणूँ, जाणूणि

इसके आगे महु के समान रूप होते हैं।

अंसु (अशु) शब्द

एकवचन
 प०—अंसुं
 वी०—अंसुं

बहुवचन
 अंसूँ, अंसूँ, अंसूणि
 अंसूँ, अंसूँ, अंसूणि

इसके आगे महु के समान रूप होते हैं।

स्वरान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द समाप्त।

व्यञ्जनान्त पुलिङ्ग शब्द

प्राकृत में व्यञ्जनान्त या ह्रस्वन्त शब्द नहीं होते। कुछ ह्रस्वन्त शब्दों के अन्त्य व्यञ्जनों का लोप होता है और कुछ ह्रस्वन्त शब्द अजन्त—स्वरान्त के रूप में परिणत हो जाते हैं। अतः ह्रस्वन्त शब्दों के साधनार्थ स्वरान्त शब्दों के समान ही नियम समझने चाहिये।

अप्पाण, अत्ताण, अप्प और अत्त (आत्मन्)

एकवचन
 प०—अप्पाणो, अप्पा, अप्पो;
 अत्ताणो, अत्ता, अत्तो
 वी०—अप्पाणं, अप्पं, अत्ताणं, अत्तं

बहुवचन
 अप्पाणो, अप्पाणा, अप्पा;
 अत्ताणो, अत्ताणा, अत्ता
 अप्पाणो, अप्पाणे, अप्पाणा, अप्पे,
 अप्पा; अत्ताणो, अत्ताणे, अत्ताणा,
 अत्ते, अत्ता।

- त०—अप्पणिआ, अप्पणइआ, अप्पणेहि-हिँ-हिँ, अप्पेहि-हिँ-हिँ;
 अप्पणा, अप्पणेण, अप्पणेणं, अत्ताणेहिँ-हिँ-हिँ, अत्तेहिँ-हिँ-हिँ
 अप्पेण, अप्पेणं; अत्तणा,
 अत्ताणेण, अत्ताणेणं, अत्तेण,
 अत्तेणं
- च०—अप्पाणस्स, अप्पणो, अप्पस्स; अप्पाणाण, अप्पाणाणं, अप्पाण,
 अत्ताणस्स, अत्तणो, अत्तस्स अप्पाणं; अत्ताणाण, अत्ताणाणं, अत्ताण,
 अत्ताणं
- पं०—अप्पाणत्तो, अप्पाणाओ, अप्पाणत्तो, अप्पाणाओ, अप्पाणउ,
 अप्पाणाउ, अप्पाणाहि, अप्पाणाहि, अप्पाणाहिन्तो, अप्पाणा-
 अप्पाणाहिन्तो, अप्पाणा, सुन्तो, अप्पाणेहि, अप्पाणेहिन्तो,
 अप्पाणेतुन्तो,
 अप्पाणो, अप्पत्तो, अप्पाओ, अप्पत्तो, अप्पाओ, अप्पाउ, अप्पाहि,
 अप्पाउ, अप्पाहि, अप्पाहिन्तो, अप्पाहिन्तो, अप्पासुन्तो, अप्पेहि,
 अप्पा;
 अप्पेहिन्तो, अप्पेसुन्तो;
 अत्ताणत्तो, अत्ताणाओ, अत्ताणाउ,
 अत्ताणाउ, अत्ताणाहि, अत्ताणाहि, अत्ताणाहिन्तो, अत्ताणासुन्तो,
 अत्ताणाहिन्तो, अत्ताणा अत्ताणेहि, अत्ताणेहिन्तो, अत्ताणेतुन्तो;
 अत्ताणो, अत्तणो, अत्ताओ, अत्तत्तो, अत्ताओ, अत्ताउ, अत्ताहि,
 अत्ताउ, अत्ताहि, अत्ताहिन्तो, अत्ताहिन्तो, अत्तासुन्तो, अत्तेहि,
 अत्ता अत्तेहिन्तो, अत्तेसुन्तो
- छ०—अप्पाणस्स, अप्पणो, अप्पस्स; अप्पाणाण, अप्पाणाणं, अप्पाण, अत्ताणं;
 अत्ताणस्स, अत्तणो, अत्तस्स अत्ताणाण, अत्ताणाणं, अत्ताण, अत्ताणं
- स०—अप्पाणम्मि, अप्पाणे, अप्पम्मि, अप्पाणेतु, अप्पाणेतुं, अप्पेतु, अप्पेतुं;
 अप्पे, अत्ताणम्मि, अत्ताणे, अत्ताणेतु, अत्ताणेतुं, अत्तेतु, अत्तेतुं
 अत्तम्मि, अत्ते
- सं०—हे अप्पाणो, अप्पाण, अप्पो, हे अप्पाणो, अप्पाणा, अप्पा;
 अप्पा, अप्प, हे अत्ताणो, हे अत्ताणो, अत्ताणा, अत्ता
 अत्ताण, अत्तो, अत्ता, अत्त

राय (राजन्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—राया	रामा, रायाणो, राइणो
दी०—रायं, राइणं	राप, राया, रायाणो, राइणो
त०—राइणः, राइणा, रापण, रापणं	रापहि-हि-हिं; राईहि-हि-हिं
च०—रणो, राइणो, रायस्स	राइण, राईणं, रायाण, रायाणं
पं०—रणो, राइणो, रायत्तो; रायोओ, रायाउ, रायाहि, रायाहिन्तो	रायत्तो, राइत्तो, राईउ, राईओ, राईहिन्तो, राईमुन्तो, रायाओ, रायाउ, रायाहिन्तो, रायामुन्तो
छ०—रणो, राइणो, रायस्स	राईण, राईणं, रायाण, रायाणं
स०—राये, रायम्मि, राइम्मि	राईमु, राईमुं, रापमु, रापमुं
सं०—हे राया, राय	हे राया, रायाणो, राइणो

महय, महवाण (मधयन्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—महरा, महवो	महरा
दी०—महयं	महये, महरा
त०—महराग, महयेण, महयेगं	महवेहि-हि-हिं
च०—महयणो, महयस्स,	महवाण, महवाणं
पं०—महवाणो, महवत्तो, महराओ, महवाउ, महराहि, महवाहिन्तो, महवा	महवत्तो, महराओ, महराउ, महराहि, महवाहिन्तो, महवामुन्तो, महवेहि, महयेहिन्तो, महयेमुन्तो
छ०—महयणो, महयस्स	महवाण, महवाणं
स०—महये, महवम्मि	महयेमु, महयेमुं
सं०—हे महवा, महवो	हे महवा

मुद्द, मुद्दाण (मूर्धन्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—मुद्दा, मुद्धो	मुद्दा
दी०—मुद्धं	मुद्धे, मुद्दा

त०—चन्दमेण, चन्दमेथं	चन्दमेहि, -हिं-हिं
च०—चन्दमाय, चन्दमस्त	चन्दमाण, चन्दमाथं
प०—चन्दमत्तो, चन्दमाभो, चन्दमाउ, चन्दमत्तो, चन्दमाभो, चन्दमाउ, चन्दमाहि, चन्दमादि, चन्दमाहिन्तो,	चन्दमाहिन्तो, चन्दमाभुन्तो आदि
चन्दमा	
छ०—चन्दमस्त	चन्दमाण, चन्दमाणं
स०—चन्दमे, चन्दमम्मि	चन्दमेसु, चन्दमेसुं
सं०—हे चन्दम, चन्दमा, चन्दमो	हे चन्दमा

जसो (यशस्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—जसो	जसा
वी०—जसं	जसे, जसा

इससे भागे चन्दमो के समान रूप होते हैं ।

उसणो (उशनस्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—उसणो	उसणा
वी०—उसणं	उसणे, उसणा

शेष रूप चन्दमो के समान होते हैं ।

वर्तमानकृदन्त पुल्लिङ्ग

हसन्तो, हसमाणो (हसत् , हसमाण) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—हसन्तो, हसमाण	हसन्ता, हसमाणा
वी०—हसन्तं, हसमाणं	हसन्ते, हसन्ता, हसमाणे, हसमाणा
त०—हसन्तेण, हसन्तेणं	हसन्तेहि-हिं-हिं
हसमाणेण, हसमाणेणं	हसमाणेहि-हिं-हिं
च०—हसन्तस्स, हसमाणस्स	हसन्ताण, हसमाणाण, हसन्ताणं, हसमाणाणं

प०—हसन्तत्तो, हसन्ताओ, हसन्ताड०; हसमाणत्तो, हसमाणाओ, हसमाणाड०	हसन्तत्तो, हसन्ताहि, हसन्ताहिन्तो, हसन्तासुन्तो, हसमाणत्तो, हसमाणाहि, हसमाणाहिन्तो, हसमाणासुन्तो
छ०—हसन्तस्स, हसमाणस्स	हसन्ताणं, हसन्ताण, हसमाणाण, हसमाणाणं
स०—हसन्ते, हसन्तम्मि, हसमाणे, हसमाणम्मि	हसन्तेसु, हसन्तेसुं, हसमाणेसु, हसमाणेसुं
सं०—हे हसन्तो, हे हसमाणो	हे हसन्ता, हे हसमाणा

वत्प्रत्ययान्त पुल्लिङ्ग

भगवन्तो (भगवत्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—भगवन्तो	भगवन्ता
वी०—भगवन्तं	भगवन्ते, भगवन्ता
त०—भगवन्तेण, भगवन्तेणं	भगवन्तेहि-हिं-हिं
च०—भगवन्तस्स	भगवन्ताण, भगवन्ताणं
पं०—भगवन्तत्तो, भगवन्ताओ, भगवन्ताड, भगवन्ताहि, भगवन्ताहिन्तो	भगवन्तत्तो, भगवन्ताओ, भगवन्ताहि, भगवन्ताहिन्तो, भगवन्तासुन्तो इत्यादि
छ०—भगवन्तस्स	भगवन्ताण, भगवन्ताणं
स०—भगवन्ते, भगवन्तम्मि	भगवन्तेसु, भगवन्तेसुं
सं०—हे भगवन्त, भगवन्तो	हे भगवन्ता

सोद्विहो (शोभावत्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—सोद्विहो	सोद्विहो

दोष रूप भगवन्तो शब्द के समान होते हैं ।

इसी प्रकार धगवन्तो (धनवान्), पुणमन्तो (पुण्यवान्), भत्तिमन्तो (भक्तिवान्), सिरीमन्तो (श्रीमान्), जडाणो (जटयान्), जोण्हासो (ज्योत्स्नावान्), दण्णुलो (दर्पवान्), सदाणो (शब्दवान्), कव्वइत्तो (काव्यवान्), माण-इत्तो (मानवान्) आदि शब्दों के रूप चलते हैं ।

नेहालु (स्नेहवान्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—नेहालु	नेहालओ, नेहालवो, नेहालउ, नेहालणो, नेहालु
द्वी०—नेहालुं	नेहालणो, नेहालु

शेष रूप माणु शब्द के समान होते हैं ।

इसी प्रकार दयालु (दयामान्), ईसालु (ईर्ष्यावान्), एज्जालु (लज्जामान्) प्रभृति शब्दों के रूप धनते हैं ।

तिरिच्छ, तिरिक्ख, तिरिअ, तिरिअंच (तिर्यञ्च्)

एकवचन	बहुवचन
प०—तिरिच्छो, तिरिक्खो, तिरिअो तिरिअंचो	तिरिच्छा, तिरिक्खा, तिरिआ, तिरिअंचा,
द्वी०—तिरिच्छं, तिरिक्खं, तिरिअं, तिरिअंचं	तिरिच्छे, तिरिक्खे, तिरिक्खे, तिरिक्खा, तिरिए, तिरिआ, तिरिअंचं, तिरिअंचा

इससे आगे सभी रूप देव शब्द के समान होते हैं ।

भिसओ (भिपज्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—भिसओ	भिसआ

शेष शब्द देव के समान होते हैं ।

सरओ (शरद्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—सरओ	सरआ

आगे के सभी रूप देवशब्द के समान होते हैं ।

हलन्त स्त्रीलिंग शब्द

कम्मा (कर्मन्)

एकवचन	बहुवचन
प०—कम्मा	कम्माओ, कम्माउ, कम्मा
द्वी०—कम्मं	कम्माओ, कम्माउ, कम्मा

त०—कम्माअ, कम्माइ, कम्माए	कम्माहि-हि-हिं
च०—कम्माअ, कम्माइ, कम्माए	कम्माग, कम्मायं
पं०—कम्माअ, कम्माइ, कम्माए, कम्मात्तो, कम्माओ, कम्माउ, कम्माहिन्तो	कम्मात्तो, कम्माओ, कम्माउ, कम्माहिन्तो, कम्मानुन्तो
छ०—कम्माअ, कम्माइ, कम्माए	कम्माग, कम्मायं
सं०—कम्माअ, कम्माइ, कम्माए	कम्मानु, कम्मात्तुं
सं०—हे कम्मा	हे कम्माओ, कम्माउ, कम्मा

महिमा (महिमन्)

एकवचन	बहुवचन
प०—महिमा	महिमाओ, महिमाउ, महिमा
दी०—महिमं	महिमाओ, महिमाउ, महिमा

अवशिष्ट रूप कम्मा के समान होते हैं ।

गरिमा (गरिमन्)

एकवचन	बहुवचन
प०—गरिमा	गरिमाओ, गरिमाउ, गरिमा
दी०—गरिमं	गरिमाओ, गरिमाउ, गरिमा

अवशिष्ट रूप कम्मा के समान होते हैं ।

अधि (अधिस्)

एकवचन	बहुवचन
प०—अधी	अधीओ, अधीइ, अधी
दी०—अधि	अधीओ, अधीइ, अधी
त०—अधीअ, अधीआ, अधीइ, अधीइ	अधीइ, अधीइ, अधीइ
प०—अधीअ, अधीआ, अधीइ, अधीइ	अधीअ, अधीअ

पं०—अचीअ, अचीआ, अचीइ, अचीए, अचिआं, अचीओ, अचीउ, अचीहिन्तो	अचित्तो, अचीओ, अचीउ, अचीहिन्तो, अचीसुन्तो
छं०—अचीअ, अचीआ, अचीइ, अचीए	अचीण, अचीणं
सं०—अचीअ, अचीआ, अचीइ, अचीए	अचीसु, अचीसुं
सं०—हे अचि, अची	हे अचीओ, अचीउ, अची

चर्तमानकृदन्त स्त्रीलिंग

हसई, हसन्ती, हसमाणी (हसन्ती)

एकवचन

बहुवचन

प०—हसई, हसईआ, हसन्तो,
हसन्तीआ, हसमाणी,
हसमाणीआ

हसईआ, हसईउ, हसईओ, हसई,
हसन्तीआ, हसन्तीउ, हसन्तीओ,
हसन्ती, हसमाणीआ, हसमाणीउ,
हसमाणीओ, हसमाणी

धी०—हसईं; हसन्ति; हसमाणि

हसईआ, हसईउ, हसईओ, हसई;
हसन्तीआ, हसन्तीउ, हसन्तीओ,
हसन्ती; हसमाणीआ, हसमाणीउ,
हसमाणीओ, हसमाणी

त्त०—हसईअ, हसईआ, हसईइ,
हसईए; हसन्तीअ, हसन्तीआ,
हसन्तीइ, हसन्तीए; हसमाणीअ,
हसमाणीआ, हसमाणीइ,
हसमाणीए

हसईहि-हि-हिं; हसन्तीहि-हि-हिं;
हसमाणीहि-हि-हिं

च०—हसईअ, हसईआ, हसईइ,
हसइए; हसन्तीअ, हसन्तीआ,
हसन्तीइ, हसन्तीए; हसमाणीअ,
हसमाणीआ, हसमाणीइ,
हसमाणीए

हसईण, हसईणं, हसन्तीण, हसन्तीणं,
हसमाणीण, हसमाणीणं

प०—हसईअ, हसईआ, हसईइ, हसईए, हसइत्तो, हसईओ, हसईउ, हसईहिनतो,
 हसइत्तो, हसईओ, हसईउ, हसईसुन्तो; हसन्तित्तो, हसन्तीओ, हस-
 हसईहिनतो, हसन्तीअ, हसन्तीआ, न्तीउ, हसन्तीहिनतो, हसन्तीसुन्तो; हस-
 हसन्तइ, हसन्तीए, हसन्तित्तो, माणित्तो, हसमाणीओ, हसमाणीउ, हस-
 हसन्तीओ, हसन्तीउ, हसन्ती- माणीहिनतो, हसमाणीसुन्तो
 हिनतो; हसमाणीअ, हसमाणीआ
 हसमाणीइ, हसमाणीए, हसमा-
 णित्तो, हसमाणीओ, हसमाणिउ,
 हसमाणीहिनतो

छ०—हसईअ, हसईआ, हसईइ, हसईण, हसईणं, हसन्तीण, हसन्तीणं;
 हसईए; हसन्तीअ, हसन्तीआ, हसमाणीण, हसमाणीणं,
 हसन्तीइ, हसन्तीए,
 हसमाणीअ, हसमाणीआ,
 हसमाणीइ, हसमाणीए

स०—हसईअ, हसईआ, हसईइ, हसईसु, हसईसुं, हसन्तीसु, हसन्तीसुं;
 हसईए; हसन्तीअ, हसन्तीआ, हसमाणीसु, हसमाणीसुं, हसमाणीसुं
 हसन्तीइ, हसन्तीए; हसमाणीअ,
 हसमाणीआ, हसमाणीइ,
 हसमाणीए

सं०—दे हसइ; दे हसन्ति; दे हसमाणि दे हसईआ, हसईउ, हसइओ, हसइ; दे
 हसन्तीआ, हसन्तीउ, हसन्तीओ, हसन्ती,
 दे हसमाणिआ, हसमाणीउ, हसमाणीओ,
 हसमाणी

भगवई (भगवती)

एकवचन

बहुवचन

प०—भगवई, भगवईआ

भगवईआ, भगवईउ, भगवईओ, भगवई

श्रेय रूप छच्छी के समान होते हैं ।

सरिआ (सरित्)

एकवचन

बहुवचन

प०—सरिआ

सरिआओ, सरिआउ, सरिआ

श्रेय शब्दरूप माला के समान होते हैं ।

तडिआ, तडि (तडिच्)

एकवचन

बहुवचन

प०—तडिआ

तडिआओ, तडिआउ, तडिआ

'तडिआ' शब्द के शेष रूप साळा के समान होते हैं ।

तडि

एकवचन

बहुवचन

प०—तडी

तडीओ, तडीउ, तडी

वी०—तडि

तडीओ, तडीउ, तडी

त०—तडीअ, तडीआ, तडीइ, तडीए

तडीहि-दि-हि

च०—तडीअ, तडीआ, तडीइ, तडीए

तडीण, तडीणं

प०—तडीअ, तडीआ, तडीइ, तडीए

तडीणो, तडीउ, तडीदिन्तो, तडीमुन्तो

छ०—तडीअ, तडीआ, तडीइ, तडीए

तडीण, तडीणं

स०—तडीअ, तडीआ, तडीइ, तडीए

तडीमु तडीसुं

सं०—हे तडि, तडी

तडीओ, तडीउ तडी

पाडिअआ, पडिअआ (प्रतिपद्)

एकवचन

बहुवचन

प०—पाडिअआ

पाडिअआओ पाडिअआउ, पाडिअआ

अ०—पडिअआ

पडिअआओ पडिअआउ, पडिअआ

शेष रूप कम्मा के समान होते हैं ।

संपया (संपद्)

एकवचन

बहुवचन

प०—संपया

संपयाआ, संपयाउ, संपया

शेष रूप कम्मा के समान हैं

सुहा (सुध्)

एकवचन

बहुवचन

प०—सुहा

सुहाओ, सुहाउ, सुहा

वी०—सुहं

सुहाओ, सुहाउ, सुहा

शेष रूप कम्मा के समान होते हैं ।

कउहा (ककुम्)

एकवचन

बहुवचन

प०—कउहा

कउहाओ, कउहाउ, कउहा

शेष रूप कम्मा के समान होते हैं ।

गिरा [गिर्]

एकवचन

बहुवचन

प०—गिरा

गिराओ, गिराउ, गिरा

शेष रूप कम्मा के समान होते हैं ।

गिरा के समान घुरा (घुर्) और पुरा (पुर्) शब्द के रूप होते हैं ।

दिसा [दिश्]

एकवचन

बहुवचन

प०—दिसा

दिसाओ, दिसाउ, दिसा

शेष रूप कम्मा के समान होते हैं ।

अच्छरसा, अच्छरा (अप्परसू)

एकवचन

बहुवचन

प०—अच्छरसा

अच्छरसाओ, अच्छरसाउ, अच्छरसा,

बी०—अच्छरा

अच्छराओ, अच्छराउ, अच्छरा

अवशिष्ट रूप कम्मा के समान होते हैं ।

तिरच्छी (तिरश्ची)

एकवचन

बहुवचन

प०—तिरच्छी, तिरच्छीआ

तिरच्छीआ, तिरच्छीओ, तिरच्छीउ,
तिरच्छी

बी०—तिरश्चित्त

तिरश्चित्तआ, तिरश्चित्तओ, तिरश्चित्तउ,
तिरश्चित्त

अवशिष्ट रूप गइ शब्द के समान होते हैं ।

विञ्जु (विद्भुत्)

एकवचन	बहुवचन
प०—विञ्जु	विञ्जुओ, विञ्जुउ, विञ्जु
पी०—विञ्जु	विञ्जुओ, विञ्जुउ, विञ्जु
त०—विञ्जुअ, विञ्जुआ, विञ्जुइ, विञ्जुए	विञ्जुहि-हि-दि
च०—विञ्जुअ, विञ्जुआ, विञ्जुइ, विञ्जुए	विञ्जुण, विञ्जुणं
पं०—विञ्जुअ, विञ्जुआ, विञ्जुइ, विञ्जुए; विञ्जुओ, विञ्जुओ, विञ्जुउ, विञ्जुदिन्तो	विञ्जुओ, विञ्जुओ, विञ्जुउ, विञ्जुदिन्तो, विञ्जुसुन्तो
छ०—विञ्जुअ, विञ्जुआ, विञ्जुइ, विञ्जुए	विञ्जुण, विञ्जुणं
स०—विञ्जुअ, विञ्जुआ, विञ्जुइ, विञ्जुए	विञ्जुसु, विञ्जुसुं
सं०—हे विञ्जु, विञ्जु	हे विञ्जुओ, विञ्जुउ, विञ्जु

व्यञ्जनान्त नपुंसकलिङ्गशब्द

दाम (दामन्)

एकवचन	बहुवचन
प०—दामं	दामाई, दामाई, दामाणि
पी०—दामं	दामाई, दामाई, दामाणि
त०—दामेण, दामेयं	दामेहि, दामेहि, दामेदि
च०—दामाय, दामस्त	दामाण, दामाणं
पं०—दामओ, दामाओ, दामाउ, दामादिन्तो, दामा	दामओ, दामाओ, दामाउ, दामाहि, दामाहि, दामादिन्तो, दामासुन्तो
छ०—दामस्त	दामाण, दामाणं
स०—दामे, दामस्मि	दामेसु, दामेसुं
सं०—हे दाम	हे दामाई, दामाई, दामाणि

नाम (नामन्)

एकवचन	बहुवचन
प०—नामं	नामाइं, नामाईं, नामाणि
बी०—नामं	नामाइं, नामाईं, नामाणि

इससे आगे के रूप दाम के समान होते हैं ।

पेम्म (प्रेमन्)

एकवचन	बहुवचन
प०—पेम्मं	पेम्माइं, पेम्माईं, पेम्माणि
बी०—पेम्मं	पेम्माइं, पेम्माईं, पेम्माणि

शेष शब्दरूप दाम के समान होते हैं ।

अह (अहन्)

एकवचन	बहुवचन
प०—अहं	अहाइं, अहाईं, अहाणि
बी०—अहं	अहाइं, अहाईं, अहाणि

अवशेष रूप दाम के समान हैं ।

सान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

सेयं (श्रेयस्)

एकवचन	बहुवचन
प०—सेयं	सेयाइं, सेयाईं, सेयाणि
बी०—सेयं	सेयाइं, सेयाईं, सेयाणि

इससे आगे के रूप वन शब्द के समान होते हैं ।

ययं [ययस्]

एकवचन	बहुवचन
प०—ययं	ययाइं, ययाईं, ययाणि
बी०—ययं	ययाइं, ययाईं, ययाणि

इससे आगे के रूप वन शब्द के समान होते हैं ।

वर्तमान कृदन्त नपुंसक लिङ्ग—हसन्त, हसमाण

एकवचन	बहुवचन
प०—हसन्तं	हसन्ताइ, हसन्ताई, हसन्ताणि
हसमाणं	हसमाणाई, हसमाणाई, हसमाणाणि
वी०—हसन्तं	हसन्ताई, हसन्ताई, हसन्ताणि
हसमार्गं	हसमाणाई, हसमाणाई, हसमाणाणि

अप्रतिष्ठ रूप वण शब्द के समान होते हैं ।

इसी प्रकार घेरन्तं, घेरमाणं; धरन्तं, धरमाणं, सरन्तं, सरमाणं; महन्तं, महमाणं आदि शब्दों के रूप भी होते हैं ।

वत्प्रत्ययान्त नपुंसकलिङ्ग भगवन्तं (भगवत्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—भगवन्तं	भगवन्ताई, भगवन्ताई, भगवन्ताणि

शेष रूप वण के समान होते हैं ।

आउसो, आउ (आउय्)

एकवचन	बहुवचन
प०—आउसं	आउसाई, आउसाई, आउसाणि
वी०—आउसं	आउसाई, आउसाई, आउसाणि

दोष रूप वण शब्द के समान होते हैं ।

आउ

एकवचन	बहुवचन
प०—आउं	आऊइं, आऊइं, आऊणि
वी०—आउं	आऊइं, आऊइं, आऊणि
त०—आउणा	आऊदि-हिं हिं
च०—आउणो, आउण्य	आऊण्य, आऊण्यं
प०—आउणो, आउणो, आऊभो, आऊउ, आऊदिन्तो	आउणो, आऊभो, आऊउ, आऊदिन्तो, आऊमुन्तो

छ०—आउणो, आउस्स	आऊण, आऊणं
स०—आउम्मि	आऊसु, आऊसुं
सं—हे आउ	हे आऊइं, आऊइँ, आऊणि

सर्वनाम शब्द -

सच्च (सर्व)

एकवचन	बहुवचन
प०—सच्चो	सच्चे
वी०—सच्चं	सच्चे, सच्चा
त०—सच्चेण, सच्चेणं	सच्चेहि-हिं-हिँ
च०—सच्चाय, सच्चस्स	सच्चेसि, सच्चाण, सच्चाणं
प०—सच्चत्तो, सच्चाओ, सच्चाउ,	सच्चत्तो, सच्चाओ, सच्चाउ, सच्चाहि,
सच्चाहि, सच्चाहिन्तो, सच्चा	सच्चाहिन्तो, सच्चासुन्तो, सच्चेहिन्तो,
	सच्चेसुन्तो
छ०—सच्चस्स	सच्चेसि, सच्चाण, सच्चाणं
स०—सच्चहिं, सच्चम्मि, सच्चस्सि	सच्चेसु, सच्चेसुं
सं०—हे सच्च, हे सच्चो	हे सच्चे

सुव (स्व)

एकवचन	बहुवचन
प०—सुवो	सुवे
वी०—सुवं	सुवे, सुवा
त०—सुवेण, सुवेणं	सुवेहि-हिं-हिँ
च०—सुवाय, सुवस्स	सुवेसि, सुवाण, सुवाणं
प०—सुवत्तो, सुवाओ, सुवाउ, सुवाहि,	सुवत्तो, सुवाओ, सुवाउ, सुवाहि, सुवा-
सुवाहिन्ता, सुवा	हिन्तो, सुवासुन्तो, सुवेहि, सुवेहिन्तो,
	सुवेसुन्तो
छ०—सुवस्स	सुवेसि, सुवाण, सुवाणं
स०—सुवहिं, सुवम्मि, सुवस्सि, सुवस्स	सुवेसु, सुवेसुं
सं०—हे सुव, हे सुवो	हे सुवो

अन्न (अन्य)

एकवचन	द्विवचन
प०—अन्नो	अन्ने
वी०—अन्नं	अन्ने, अन्ना
त०—अन्नेण, अन्नेणं	अन्नेहि-हिं-हिँ
च०—अन्नाय, अन्नस्स	अन्नेसि, अन्नाण, अन्नाणं
प०—अन्नत्तो, अन्नाओ, अन्नाउ, अन्नादि, अन्नादिन्तो, अन्ना	अन्नत्तो, अन्नाओ, अन्नाउ, अन्नादि, अन्नादिन्तो, अन्नेहिन्तो, अन्नासुन्तो, अन्नेसुन्तो
छ०—अन्नस्स	अन्नेसि, अन्नाण, अन्नाणं
स०—अन्नदि, अन्नम्मि, अन्नासिं, अन्नत्थ	अन्नेसु, अन्नेसुं
सं०—हे अन्न, हे अन्नो	हे अन्ने

पुव्व, पुरिम (पूर्व)

एकवचन	द्विवचन
प०—पुव्वो	पुव्वे
पुरिमो	पुरिमे
वी०—पुव्वं	पुव्वे, पुव्वा
पुरिमं	पुरिमे, पुरिमा
त०—पुव्वेण, पुव्वेणं	पुव्वेहि-हिं-हिँ
पुरिमेण, पुरिमेणं	पुरिमेहि-हिं-हिँ
च०—पुव्वाय, पुव्वस्स	पुव्वेसि, पुव्वाण, पुव्वाणं
पुरिमाय, पुरिमस्स	पुरिमसि, पुरिमाण, पुरिमाणं
पं०—पुव्वत्तो, पुव्वाओ, पुव्वाउ, पुव्वादि, पुव्वा	पुव्वत्तो, पुव्वाओ, पुव्वाउ, पुव्वादि, पुव्वादिन्तो, पुव्वासुन्तो, पुव्वेहिन्तो, पुव्वेसुन्तो
पुरिमत्तो, पुरिमाओ, पुरिमाउ, पुरिमादि, पुरिमादिन्तो, पुरिमा	पुरिमत्तो, पुरिमाओ, पुरिमाउ, पुरिमादि, पुरिमादिन्तो, पुरिमासुन्तो, पुरिमा

छ०—पुच्वस्स; पुरिमस्स	पुच्वेसि, पुच्वाण, पुच्वाणं पुरिमेसि, पुरिमाण, पुरिमाणं
स०—पुच्वेहिं, पुच्वमि, पुच्वस्सि, पुच्वत्थ पुरिमहिं, पुरिममि, पुरिमस्सि, पुरिमत्थ	पुच्वेसु, पुच्वेसु, पुरिमेसु, पुरिमेसु*
सं०—हे पुच्वो, हे पुच्व हे पुरिम, हे पुरिमो	हे पुच्वे हे पुरिमे

* वीस (विस), उह, उभ (उभ), अवह, उवह, उभय (उभय), अण, अन्न (अन्य), अण्णार (अन्यतर), इअर (इतर), फयर, (फतर), फइम (फतम), नेम, नेम (नेम), सम, सिम, अवर (अपर), दाहिण, दक्खिण (दक्षिण), उत्तर, अवर, अहर (अधर), स और अंतर शब्दों के 'रूप' सव्व के समान होते हैं ।

पुल्लिग ण, त (तत्)

एकवचन	बहुवचन
प०—सो, ण	ते, ने
बी०—त्तं, णं	ते, ता, ने, णा
त०—त्तिणा, तेण, तेणं, णिणा, णेण, जेणं	तेहि-हिं-हिं; नेहि-हिं-हिं
च०—तास, तस्स, से	तास, तेसि, सि, ताण, ताणं
पं०—तो, तम्हा, त्तो, ताओ, ताउ, ताहि, ताहिन्तो, ता	त्तो, ताओ, ताउ, ताहि, ताहिन्तो, तामुन्तो, तेहि, तेहिमुन्तो, तेहिन्तो
छ०—तास, तस्स, से	तास, तेसि, सि, ताण, ताणं
स०—ताहे, ताहा, तइआ, तहिं तम्मि, तस्सि, तत्थ	तेसु, तेसुं

ज (यद्)

एकवचन	बहुवचन
प०—जो	जे
बी०—जं	जे, जा
त०—जिणां, जेण, जेणं	जेहि-हिं-हिं

ख०—जास, जस्य	ज, जाण, जाणं
प०—जम्हा, जत्तो, जाओ, जाउ, जाहि, जाहिन्तो, जा	जणो, जाओ, जाउ, जाहि, जाहिन्तो, जाणुन्तो, जेहि, जेहिन्तो, जेणुन्तो
छ०—जास, जस्य	जेसि, जाण, जाणं
स०—जाहे, जाण, जेभा, जेहि, जम्मि, जेसि, जस्य	जेणु, जेणुं

क (किम्)

एकवचन	बहुवचन
प०—को	के
वी०—कं	के, का
त०—किणा, केण, केणं	केहि दिं-दिं
च०—कास, कस्य	कास, केसि, काण, काणं
पं०—कणो, कीस, कम्हा, कत्तो, काओ, काउ, काहि, काहिन्तो, का	कणो, काओ, काउ, काहि, काहिन्तो, काणुन्तो, केहि, केहिन्तो, केणुन्तो
छ०—कास, कस्य	कास, केसि, काण, काणं
स०—कोरे, काल, कम्हा, कहि, कम्मि, केसि, कस्य	केणु, केणुं

एत, एअ (एतद्)

एकवचन	बहुवचन
प०—एसो, एम, इणं, इणमो	एते, एप्
वी०—एत्तं, एअं	एते, एता, एम, एभा
त०—एतेणा, एतेण, एतेणं; एइणा, एएण, एएणं	एतेहि-दिं-दिं एएहि-दिं-दिं
च०—ते, एतस्स, एअस्स	सि, एतेसि, एतान, एतानं, एएमि, एभाणं, एएणं
पं०—एत्तो, एताहे, एतत्तो, एताओ, एताउ, एताहि, एताहिन्तो, एता; एअत्तो, एअओ, एअउ, एअहि, एअहिन्तो, एअ	एतत्तो, एताओ, एताउ, एताहि, एताहिन्तो, एताणुन्ता, एतेहि, एतेहिन्तो, एतेणुन्तो, एअत्तो, एअओ, एअउ, एअहि, एअहिन्ता, एअणुन्तो

छ०—से, एअस्स, एतस्स	सि, एतेसि, एताण, एआणं, एएसि, एआण, एआणं
स०—आयम्मि, इअम्मि, एतम्मि, एतस्सि, एअम्मि, एअस्सि, एथ	एतेसु, एतेसुं, एएसु, एएसुं

अम् (अदस्)

एकवचन	बहुवचन
प०—अम्	अमुणो, अमणो, अमओ, अमउ, अम्
वी०—असुं	अम्, अमुणो
त०—अमुणा	अमूहि-हि-हिं
च०—अमुणो, अमुस्स	अमूण, अमूणं
पं०—अमुणो, अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो	अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो, अमूसुन्तो
छ०—अमुणो, अमुस्स	अमूण, अमूणं
स०—अयम्मि, इअम्मि, अमुम्मि	अमूसु, अमूसुं

इम (इदम्)

एकवचन	बहुवचन
प०—अयं, इमो	इमे
वी०—इणं, इमं, णं	इमे, इमा, णे, णा
त०—इमिणा, इमेण, इमेणं, णिणा, णेण, जेणं	इमेहि-हि-हिं; णेहि-हि-हिं; एहि-हि-हिं
च०—से, इमस्स, अस्स	सि, इमेसि, इमाण, इमाणं
प०—इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहि, इमाहिन्तो, इमा	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहि, इमाहिन्तो, इमात्तुन्तो
छ०—से, इमस्स, अस्स	सि, इमेसि, इमाण, इमाणं
स०—अस्सि, इमम्मि, इमस्सि, इह	इमेसु, इमेसुं, एसु, एसुं

स्त्रीलिङ्ग सर्वनाम शब्द

सब्बा (सर्वा)

एकवचन	बहुवचन
प०—सब्बा	सब्बाओ, सब्बाउ, सब्बा
वी०—सब्बं	सब्बाओ, सब्बाउ, सब्बा

त०—सव्याभ, सव्याइ, सव्याए	सव्यादि द्वि द्वि
च०—सव्याभ, सव्याइ, सव्याए	सव्येसि, सव्याण, सव्याणं
प०—सव्याभ, सव्याइ, सव्याए, सव्यत्तो, सव्याओ, सव्याउ, सव्याहिनतो	सव्यत्तो, सव्याओ, सव्याउ, सव्याहिनतो, सव्यामुन्तो
छ०—सव्याभ, सव्याइ, सव्याए	सव्येसि, सव्याण, सव्याणं
स०—सव्याभ, सव्याइ, सव्याए	सव्यासु, सव्यासुं
सं०—हे सव्ये, सव्या	हे सव्याओ, सव्याउ, सव्या

सुवा (स्वा)

एकवचन	बहुवचन
प०—सुवा	सुवाओ, सुवाउ, सुवा
वी०—सुव	सुवाओ, सुवाउ, सुवा
त०—सुवाभ, सुवाइ, सुवाए	सुवादि-द्वि द्वि
च०—सुवाभ, सुवाइ, सुवाए	सुव्येसि, सुवाण, सुवाणं
प०—सुवाभ, सुवाइ, सुवाए, सुवत्तो, सुवाओ, सुवाउ, सुवाहिनतो	सुवत्तो, सुवाओ, सुवाउ, सुवाहिनतो, सुवामुन्तो,
छ०—सुवाभ, सुवाइ, सुवाए	सुव्येसि, सुवाणं, सुवाणं
स०—सुवाभ, सुवाइ सुवाए	सुवासु, सुवासुं
सं०—हे सुवे, सुवा	हे सुवाओ, सुवाउ, सुवा

अण्णा-अन्ना (अन्या)

एकवचन	बहुवचन
प०—अण्णा	अण्णाओ, अण्णाउ, अण्णा
वी०—अण्ण	अण्णाओ, अण्णाउ, अण्णा

शेष रूप सव्या दण्ड के समान होते हैं ।

दाहिणा, दक्खिणा (दक्षिणा)

एकवचन	बहुवचन
प०—दाहिणा; दक्खिणा	दाहिणाओ, दाहिणाउ, दाहिणा दक्खिणाओ, दक्खिणाउ, दक्खिणा

वी०—दाहिणं,
दक्षिणं

दाहिणाओ, दाहिणाउ, दाहिणा
दक्षिणाओ, दक्षिणाउ, दक्षिणा

शेष रूप सव्या शब्द के समान हैं ।

सा (तद्)

एकवचन

बहुवचन

प०—सा, णा

तीओ, तीआ, तीउ, ती, ताओ, ताउ, ता

वी०—तं, णं

तीओ, तीआ, तीउ, ती, ताओ, ता

त०—तीअ, तीआ, तीइ, तीए,

तीहि हिं-हिं, ताहि-हिं-हिं, णाहि-हिं-हिं

ताअ, ताइ, ताए

णाअ, णाइ, णाए

च०—तिस्सा, तीसे, तीअ, तीआ

सिं, तेसिं, ताण, ताणं, तास

तीइ, तीइ, तास, से, ताअ

ताइ, ताए

पं०—तीअ, ताआ, तीइ, तीए;

तिचो, तीओ, तीउ, तीहिन्तो, तिसुन्तो,

तिचो, तीओ, तीउ, तीहिन्तो,

तचो, ताओ, ताउ, ताहिन्तो, तासुन्तो

ताअ, ताइ, ताए, तो, तम्हा,

तचो, ताओ, ताउ, ताहिन्तो

छ०—तिस्सा, तीसे, तीअ, तीआ,

सिं, तेसिं, ताण, ताणं, तास

तीइ, तीए, तास, से, ताअ,

ताइ, ताए

स०—तीअ, तीआ, तीइ, तीए

तीसु, तीसुं

ताअ, ताइ, ताए

तासु, तामुं

जा (यद्)

एकवचन

बहुवचन

प०—जा

जीओ, जीआ, जीउ; जी, जाओ,

जाउ, जा

वी०—जं

जीओ, जीआ, जीउ, जी, जाओ,

जाउ, जा

त०—जीअ, जीआ, जीइ, जीए;

जीहि, जीहिं, जीहिं;

जाअ, जाइ, जाए

जाहि-हिं-हिं

- च०—जलुसु, जीते, जीअ, जीआ, जेसल, जण, जणं
 जीइ, जीए; जाअ, जाइ, जाए
 ढ०—जीअ, जीआ, जीइ, जीए, जत्तो, जाओ, जाउ, जाहलुनतो, जासुनतो
 जलुतो, जीओ, जीउ, जीहलुनतो;
 जाअ, जाइ, जाए, जनुदा, जत्तो,
 जाओ, जाउ, जाहलुनतो
 छ०—जलुसु, जीते, जीअ, जीए, जेसल, जण, जण
 जाअ, जाए
 स०—जीअ, जीए, जाअ, जाइ, जाए जीसु, जीसुं, जासु, जासुं

का (कलुसु)

- | | |
|---|---|
| एकवचन | बहुवचन |
| ढ०—का | कीओ, काउ, की, काओ, काउ, का |
| वी०—क | कीओ, काउ, की, काओ, काउ, का |
| त०—कीअ, कीए, काअ, काए | कीहलु हलु हलु, काहलु-हलु हलु |
| च०—कलुसु, कीते, कीअ,
कास, काए | केसल, कण, कणं, कास |
| ढं०—कीअ, कीए, कलुतो, कीओ,
कीहलुनतो, काअ, कत्तो, काओ,
काहलुनतो | कलुतो, कीओ, कीउ, कीहलुनतो, कीसुनतो,
कत्तो, काओ, काउ, काहलुनतो, कासुनतो |
| छ०—कलुसु, कीते, कीए, कास,
काइ, काए | कसल, कण, कणं |
| स०—कीअ, कीआ, कीइ, काअ,
काइ, काए | कीसु, कीसुं; कासु, कासुं |

एई, एआ (एत्तु)

- | | |
|------------------------------------|------------------------------|
| एकवचन | बहुवचन |
| ढ०—एसु, एस, हण, हणसु, एई,
एईआ | एईआ, एई, एआओ, एआ |
| वी०—एइं, एअं | एईआ, एईओ, एआओ, एआउ |
| त०—एईअ, एईआ, एईइ, एईए,
एआअ, एआए | एईहलु हलु-हलु, एआहलु-हलु-हलु |

च०—एईअ, एआअ, एईइ, एआए	एईण, एईणं; सिं, एआण, एआणं
पं०—एईअ, एईआ, एईइ, एइत्तो, एईहिन्तो, एआअ, एअत्तो, एआहिन्तो	एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहिन्तो, एआसुन्तो
छ०—एईअ, एईआ, एईइ, एआअ, एआए	एईण, सिं, एआण, एआणं
स०—एईअ, एईआ, एआअ, एआइ	एईसु, एईसुं; एआसु, एआसुं

अम् (अदस्)

एकवचन	बहुवचन
प०—अम्	अम्ओ, अम्उ, अम्
वी०—अम्	अम्ओ, अम्उ, अम्
त०—अम्अ, अम्आ, अम्इ, अम्ए	अम्हि-हिं हिं
च०—अम्अ, अम्आ, अम्इ, अम्ए	अम्ण, अम्णं
पं०—अम्अ, अम्इ, अम्ए, अम्त्तो, अम्ओ	अम्त्तो, अम्ओ, अम्उ, अम्हिन्तो, अम्सुन्तो
छ०—अम्अ, अम्आ, अम्इ, अम्ए	अम्ण, अम्णं
स०—अम्अ, अम्आ, अम्इ, अम्ए	अम्सु, अम्सुं

इमी, इमा (इदम्)

एकवचन	बहुवचन
प०—इमी, इमीअ, इमिआ, इमा,	इमीआ, इमीओ, इमाओ, इमाव, इमा
वी०—इमिं, इमं, इणं, णं	इमीआ, इमीओ, इमाओ, इमाउ, णओ, णउ
त०—इमीअ, इमीआ, इमाअ, इमाए, णअ, णाये	इमीहि-हिं हिं; इमाहि-हिं-हिं, णाहि-हिं
च०—इमीअ, इमीइ, इमाअ, इमाइ, इमाए	इमीण, इमीणं, इमेसिं, इमाण, इमाणं
पं०—इमीअ, इमीआ, इमीए, इमित्तो, इमाओ, इमाअ, इमाइ, इमाउ, इमत्तो, इमाहिन्तो	इमित्तो, इमीहिन्तो, इमीसुन्तो; इमत्तो, इमाओ, इमाहिन्तो, इमासुन्तो

छ०—इमीअ, इमीइ, इमीए, इमाअ, इमाए	इमीण, इमीणं, इमेसि, इमाण, इमाणं
स०—इमीअ, इमीआ, इमीए, इमाअ, इमाए	इमीसु, इमीसुं; इमासु, इमासुं

नपुंसकलिङ्ग सर्वनाम शब्द सञ्च (सर्व)

एकवचन	बहुवचन
प०—सञ्चं	सञ्चाइं, सञ्चाइँ, सञ्चाणि
वी०—सञ्चं	सञ्चाइँ, सञ्चाइँ, सञ्चाणि
त०—सञ्चेण, सञ्चेणं	सञ्चेहि-हि-हिँ
च०—सञ्चाय, सञ्चस्य	सञ्चेसि, सञ्चाण, सञ्चाणं
प० सञ्चतो, सञ्चाभो, सञ्चाउ, सञ्चादि, सञ्चाहिन्तो, सञ्चा	सञ्चतो, सञ्चाभो, सञ्चाउ, सञ्चादि, सञ्चाहिन्तो, सञ्चासुन्तो, सञ्चेहिन्तो सञ्चेसुन्त।
छ०—सञ्चाय, सञ्चस	सञ्चेसि, सञ्चाण, सञ्चाणं
स०—सञ्चदि, सञ्चसि, सञ्चम्मि सञ्चएथ, हे सञ्च	सञ्चेसु, सञ्चेसुं, हे सञ्चाइ, सञ्चाइँ, सञ्चाणि

सुच (स्व)

एकवचन	बहुवचन
प०—सुचं	सुचाइं, सुचाइँ, सुचाणि
वी०—सुचं	सुचाइँ, सुचाइँ, सुचाणि

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं ।

पुञ्च, पुरिम (पूर्व)

एकवचन	बहुवचन
प०—पुञ्चं पुरिमं	पुञ्चाइं, पुञ्चाइँ, पुञ्चाणि पुरिमाइं, पुरिमाइँ, पुरिमाणि
वी०—पुञ्चं पुरिमं	पुञ्चाइँ, पुञ्चाइँ, पुञ्चाणि पुरिमाइं, पुरिमाइँ, पुरिमाणि

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं ।

त (तद्)

एकवचन	बहुवचन
प०—ते, णं	ताहं, ताहँ, ताणि, जाहँ, जाहँ, जाणि
दी०—तं, णं	ताहं, ताहँ, ताणि, जाहँ, जाहँ, जाणि

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं ।

ज (यद्)

एकवचन	बहुवचन
प०—जं	जाहँ, जाहँ, जाणि
दी०—जं	जाहँ, जाहँ, जाणि

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं ।

किं (किम्)

एकवचन	बहुवचन
प०—किं	काहँ, काहँ, काणि
दी०—किं	काहँ, काहँ, काणि

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं ।

एअ (एतद्)

एकवचन	बहुवचन
प०—एअं, एअ, इणं, इणमो	एआहँ, एआहँ, एआणि
दी०—एअं	एआहँ, एआहँ, एआणि

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं ।

अमु (अदस्)

एकवचन	बहुवचन
प०—अमुं	अमूहँ, अमूहँ, अमूणि
दी०—अमुं	अमूहँ, अमूहँ, अमूणि

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं ।

इम (इदम्)

एकवचन	बहुवचन
प०—इदं, इणमो, इणं	इमाहँ, इमाहँ, इमाणि
दी०—इदं, इणमो, इणं	इमाहँ, इमाहँ, इमाणि

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं ।

तीनों लिङ्गों में समान-युष्मद् शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—तुमं, तं, तुं, तुवं, तुह, तुह	मे, तुम्भे, तुज्ज्, तुम्ह, तुह्दे, उह्दे, तुम्हे, तुज्जे, उम्हे . .
बी०—तं, तुं, तुवं, तुमं, तुह, तुमे, तुवे	यो, तुज्ज्, तुज्जे, तुम्हे, तुह्ये, तुह्दे, उह्दे, मे
त०—मे, दि, दे, ते, तइ, तुए, तुमं, तए, तुमइ, तुमए, तुमे, तुमाइ	मे, तुम्भेहिं, तुम्हेहिं, तुज्जेहिं, उज्जेहिं, उम्हेहिं, तुह्देहिं, उह्देहिं
च०, छ०—तइ, तु, ते, तुम्हं, तुह, तुहं, तुए, तुम, तुमे, तुमो, तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुम्भ, तुम्ह, तुज्ज्, उम्भ, उम्ह, उज्ज्, उह्द	ए, वो, मे, तुम्भ, तुम्ह, तुज्ज्, तुम्भं, तुम्हं, तुज्ज्, तुम्भाण, तुम्हाण, तुज्जाण, तुवाण, तुमाण, तुहाण, उम्हाण, उम्हाणं, तुम्भाणं, तुम्हाणं आदि
पं०—तइत्तो, तईओ, तईउ, तईहिन्तो, तुवत्तो, तुवाओ, तुवाउ, तुवादि, तुवाहिन्तो; तुव, तुमत्तो; तुहत्तो, तुहाओ, तुहादि; तुम्भत्तो, तुम्भाहिन्तो; तुम्हत्तो, तुम्हाहिन्तो, तुज्जाउ, तुज्जाहि, तुह्द, तुम्भ, तुम्ह, तुज्ज्	तुम्भत्तो, तुम्भाहिन्तो, तुम्भासुन्तो; तुम्हत्तो, तुम्हाहिन्तो, तुम्हासुन्तो; तुम्हेहि; तुज्ज्त्तो, तुज्ज्जाओ, तुज्जाहिन्तो, तुज्जासुन्तो; तुह्दत्तो, तुह्दाउ; उह्दत्तो, उह्दासुन्तो; उम्हत्तो, उम्हाओ, उम्हाहिन्तो, उम्हासुन्तो
स०—तुमे, तुमए, तुमाइ, तइ, तए, तुम्मि, तुवम्मि, तुवस्सि, तुवत्थ, तुमम्मि, तुमस्सि, तुमत्थ, तुहम्मि, तुहस्सि, तुहत्थ, तुम्भम्मि, तुम्भस्सि, तुम्भत्थ, तुम्हम्मि, तुम्हस्सि, तुम्हत्थ, तुज्ज्म्मि, तुज्ज्स्सि, तुज्ज्त्थ	तए, तुसुं, तुवेसु, तुवेसुं, तुमेसु, तुमेसुं, तुहेसु, तुहसुं, तुम्भेसु, तुम्भेसुं, तुम्हेसु, तुम्हेसुं, तुज्जेसु, तुज्जेसुं, तुमसु, तुमसुं, तुम्हसु, तुम्हसुं, तुज्जासु, तुज्जासुं, तुम्हासु, तुम्हासुं

तीनों लिङ्गों में समान 'अस्मद्' शब्द

पुंसवचन

बहुवचन

प०—स्मि, अस्मि, अस्मिद्, हं, अहं, अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वयं, मे
अहयं

वी०—णे, णं, मि, अस्मि, अम्ह, अम्हे, अम्हो, अम्ह, णे
मम्ह, मं ममं, मिस, अहं

त०—मि, मे, ममं, ममप, ममाइ, अम्हेदि, अम्हादि, अम्ह, अम्हे, णे
मइ, मप, जे

च०, छ०—मे, मइ, मम, मद, मज्झं, णे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्हं, अम्हे,
मज्झ, मम्हं, अम्ह, अम्हं अम्हो, अम्हाण, ममाण, ममाणं, महाण,
मज्झाणं, महाणं

पं०—मइत्तो, मईओ, मईउ, मईदिन्तो; ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममा-
ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, हिन्तो, ममासुन्तो, अम्हत्तो, अम्हाओ,
ममादिन्तो, ममा, महत्तो, अम्हाउ, अम्हादि, अम्हादिन्तो, अम्हा-
महाओ, महाउ, महादि, महा- सुन्तो, अम्हेदि, अम्हेदिन्तो, अम्हेसुन्तो
दिन्तो, महा, मज्झत्तो, मज्झाओ,
मज्झाउ, मज्झादि, मज्झादिन्तो,
मज्झा

स०—मि, मइ, ममाइ, मप, मे, अम्हेसु अम्हेसुं, ममेसु, ममेसुं; महेसु,
अम्हस्मि, अम्हस्सि, अम्हत्थ, महेसुं; मज्झेसु, मज्झेसुं; ममसु, ममसुं;
ममस्मि, ममस्सि, ममत्थ; मइसु, महसुं, मज्झसु, मज्झसुं
महस्मि, महस्सि, महत्थ;
मज्झस्मि मज्झस्सि, मज्झत्थ

संख्यावाचक शब्द

संख्यावाचक शब्दों में अट्टारस (अष्टादश) संख्यावाचक शब्द तक पष्ठी विभक्ति के बहुवचन में पद् और णं प्रत्यय जुड़ते हैं।

पुंलिङ्ग इक, एक, एग, एअ (एक)

एकवचन	बहुवचन
प०—एगो, एओ, एको; एक्खो	एगे, एए; एक्के; एकल्ले
द्वी०—एगं, एअं; एकं, एक्खल्लं	एगे, एगा, एए, एआ; एक्के, एका; एक्कल्ले, एक्खला

शेष रूप सव्य शब्द के समान होते हैं ।

स्त्रीलिङ्ग एगा, एआ, एका, एकला (एका)

एकवचन	बहुवचन
प०—एगा, एआ; एका, एवला	एगाओ, एगाउ, एगा; एआओ, एआउ, एआ; एकाओ एकाउ, एका; एक्खलाओ, एक्खला
द्वी०—एगं, एअं एकं, एक्खल्लं	एगाओ, एगाउ, एगा; एआओ, एआउ, एआ; एकाओ, एकाउ, एका, एक्खलाओ, एक्खला

शेष रूप सव्या शब्द के समान होते हैं ।

नपुंसकलिङ्ग—एग, एअ, एक, एकल्ल (एक)

एकवचन	बहुवचन
प०—एगं	एगाइं, एगाइँ, एगाणि
एअं	एआइं, एआइँ, एआणि
एकं	एक्काइं, एक्काइँ, एक्काणि
एक्खल्लं	एक्कालाइं, एक्कालाइँ, एक्कालाणि
द्वी०—एगं	एगाइं, एगाइँ, एगाणि
एअं	एआइं, एआइँ, एआणि
एकं	एक्काइं, एक्काइँ, एक्काणि
एक्खल्लं	एक्खलाइं, एक्खलाइँ, एक्खलाणि
सं०—हे एग	हे एगाइँ, एगाइँ, एगाणि
हे एअ	हे एआइं, एआइँ, एआणि
हे एक्क	हे एक्काइं, एक्काइँ, एक्काणि
हे एक्कल्ल	हे एक्खलाइं, एक्खलाइँ, एक्खलाणि

शेष रूप पुंलिङ्ग के समान होते हैं ।

उभ, उह (उभ)

बहुवचन

५०—उभं

वी०—उभे, उभा

त०—उभेहि, उभेहि, उभेहि

च०, छ०—उभण्हं, उभण्ह

पं०—उभत्तो उभाओ, उभाउ, उभाहि, उभाहिन्तो, उभासुन्तो, उभेहि ।

सं०—उभेसु, उभेतुं

दु, दो. वे (द्वि) तीनों लिङ्गों में

बहुवचन

प०—दुवे, दोणिण, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, वे

वी०—दुवे, दोणिण, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, वे

त०—दोहि-हि-हि; वेहि-हि-हि

च०, छ०—दोण्ह, दोण्हं, दुण्ह, दुण्हं; वेण्ह, वेण्हं, विण्ह, विण्हं ।

पं०—दुत्तो, दोओ, दोउ, दोहिन्तो, दोसुन्तो; वेत्तो, वेओ, वेउ, वेहिन्तो,

वेसुन्तो

सं०—दोसु, दोसुं, वेसु, वेसुं

ति (त्रि) तीनों लिङ्गों में

बहुवचन

प०—तिण्णि

वी०—तिण्णि

त०—तीहि, तीहि, तीहि

च०, छ०—तीण्ह, तीण्हं

पं०—तित्तो, तीआ, तीउ, तीहिन्तो, तीसुन्तो

सं०—तीसु, तीसुं

चउ (चतुर)—तीनों लिङ्गों में

बहुवचन

प०—चत्तारो, चउरो, चत्तारि

वी०—चत्तारो, चउरो, चत्तारि

त०—चऊहि, चऊहि, चऊहि

च०ल्ल०—चउण्ह, चउण्हं

पं०—चउत्तो, चउत्तो, चउत्त, चउत्तित्तो, चउत्तित्तो, चउत्तो, चउत्तित्तो,
चउत्तित्तो

स०—चउत्तु, चउत्तुं, चउत्तु, चउत्तुं

पंच (पञ्चन्) तीनों लिङ्गों में

बहुवचन

प०—पंच

वी०—पंच

त०—पंचदि-दि-दि

च०ल्ल०—पंचण्ह, पंचण्हं

पं०—पंचत्तो, पंचत्तो, पंचत्त, पंचत्तित्तो, पंचत्तित्तो, पंचत्तित्तो पंचेदि

स०—पंचत्तु, पंचत्तुं

छ (पप्) तीनों लिङ्गों में

बहुवचन

प०—छ

वी०—छ

त०—छदि, छदि, छदि

च०ल्ल०—छण्ह, छण्हं

पं०—छत्तो, छत्त, छत्तित्तो, छत्तित्तो

स०—छत्तु, छत्तुं

सत्त (सत्तन्) तीनों लिङ्गों में

बहुवचन

प०—सत्त

वी०—सत्त

त०—सत्तदि दि-दि

च०ल्ल०—सत्तण्ह, सत्तण्हं

पं०—सत्तत्तो, सत्तत्त, सत्तत्तित्तो, सत्तत्तित्तो

स०—सत्तत्तु, सत्तत्तुं

अट्ट (अष्टन्) तीनों लिंगों में

बहुवचन

प०—अट्ट

वी०—अट्ट

त०—अट्टहि-हिं हिं

च०ल्ल०—अट्टण्ह, अट्टण्हं

पं०—अट्टाओ, अट्टाउ, अट्टाहिनतो, अट्टासुन्तो

स०—अट्टसु, अट्टसुं

णव, नव (नवन्) तीनों लिंगों में

बहुवचन

प०—णव

वी०—णव

त०—णवहिं हिं हिं

च०ल्ल०—णवण्ह, णवण्हं

पं०—णवाओ, णवाउ, णवाहिनतो, णवासुन्तो

स०—णवसु, णवसुं

दह, दस (दशन्) तीनों लिंगों में

बहुवचन

प०—दह, दस

वी०—दह, दस

त०—दहहिं हिं-हिं, दसहिं हिं-हिं

च०ल्ल०—दहण्ह, दहण्हं, दसण्ह, दसण्हं

पं०—दहाओ, दहाउ, दहाहिनतो, दहासुन्तो, दसाओ, दसाउ, दसाहिनतो, दसासुन्तो

स०—दहसु, दहसुं, दससु, दससुं

तेरह (त्रयोदश) तीनों लिंगों में

बहुवचन

प०—तेरह

वी०—तेरह

त०—तेरहहि-हिं-हिं

च०छ०—तेरहण्ह, तेरहण्हं

पं०—तेरहओ, तेरहउ, तेरहहिन्तो, तेरहमुन्तो

स०—तेरहमु, तेरहसुं

इसी प्रकार चउहह, पण्णरह, सोल्लह, छइह, सत्तरह और अट्ठारह शब्दों के रूप होते हैं ।

कइ (कति) तीनों लिंगों में समान

बहुवचन

प०—कइ

धी०—कइ

त०—कईहि-हिं-हिं

च०छ०—कइण्ह, कइण्हं

पं०—कइत्तो, कईओ, कईउ, कईहिन्तो, कईमुन्तो

स०—कईमु, कईसुं

वीसा (विंशति) तीनों लिंगों में

एकवचन

प०—वीसा

धी०—वीसं

त०—वीसाअ, वीसाइ, वीसाए

च०छ०—वीसाअ, वीसाइ, वीसाए

पं०—वीसाअ, वीसाइ, वीसाए,
वीसत्तो, वीसाओ, वीसाउ,
वीसाहिन्तो

वीसाहिन्तो

स०—वीसाअ, वीसाइ, वीसाए

सं०—हे वीसा

बहुवचन

वीसाओ, वीसाउ, वीसा

वीसाओ, वीसाउ, वीसा

वीसाहि-हिं-हिं

वीसाण, वीसाणं,

वीसत्तो, वीसाओ, वीसाउ, वीसाहिन्तो,
वीसामुन्तो

वीसामु, वीसामुं

हे वीसाओ, वीसाउ, वीसा

इसी प्रकार एगुणवीसा, एगवीसा, दुवीसा, तेवीसा, चउवीसा, पण्णवीसा, छव्वीसा, सत्तवीसा, अट्ठावीसा, एगुणत्तीसा, वीसा, एगत्तीसा, दुत्तीसा, दोत्तीसा, तेत्तीसा, चउत्तीसा, पण्णत्तीसा, छत्तीसा, सत्तत्तीसा, अट्ठत्तीसा, एगुणवत्तालीसा, चत्तालीसा, एगवत्तालीसा, धायाळा, तेआलीसा, चउआलीसा, पण्णवत्तालीसा, छवत्तालीसा, सत्तवत्तालीसा, अट्ठआलीसा, एगुणवन्ना, पन्नासा, एगावन्ना, दोवन्ना, तेवन्ना, चउवन्ना, पणवन्ना, छपन्ना, सत्तावन्ना, अट्ठावण्ण एवं अट्ठवन्ना शब्दों के रूप होते हैं ।

सातवाँ अध्याय

अव्यय और निपात

ऐसे शब्द, जिनके रूप में कोई विकार—परिवर्तन उत्पन्न न हो और जो सदा एकते—सभी विभक्ति, सभी वचन और सभी लिङ्गों में एक समान रहें, अव्यय कहलाते हैं ।

अव्यय शब्द का शाब्दिक अर्थ है कि लिङ्ग, विभक्ति और वचन के अनुसार जिनके रूपों में व्यय—घटती-बढ़ती न हो; वह अव्यय है ।^१

अव्यय पाँच प्रकार के होते हैं—(१) उपसर्ग (२) क्रिया विशेषण (३) समुच्चयादि बोधक (Conjunctions), (४) मनोविकारशुबक (Interjections) और (५) अतिरिक्त अव्यय ।

उपसर्ग (उपसर्ग)

जो अव्यय क्रिया के पूर्व आते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं । उपसर्ग लगाने से क्रिया के अर्थ में परिवर्तन या वैशिष्ट्य आ जाता है । उपसर्ग की स्थिति तीन प्रकार की होती है ।

(१) कोई उपसर्ग धातु के मुख्यार्थ को बाधकर नवीन अर्थ का बोध कराता है; (२) कोई धात्वर्थ का ही अनुवर्तन करता है और (३) कोई विशेषण होकर उसी धात्वर्थ को ओर भी स्पष्ट कर देता है ।^२ यथा—हरइ—छे जाता है; अवहरइ (अपहरति)—चुराता है, अगुहरइ (अनुहरति)—नकल करता है, परिहरइ (परिहरति)—छोड़ता है, आहरइ (आहरति)—लाता है, पइरइ (प्रहरति)—मारता है, विहरइ (विहरति)—विहार करता है, उपहरइ (उपहरति)—उपहार देता है^३, आदि ।

१. स्वरादिनिपातमव्ययम्—स्वरादि धोर निपात की मध्यय सत्ता है ।—१-१-२७ पा०
सदृश त्रिषु सिङ्गेषु सर्वापु च विभक्तिषु ।

वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ॥ —सि० कौ० अव्यय प्रकरण

२. धात्वार्थं बाधते कश्चिकश्चित्तनुवर्तते ।

विशिनाष्ट समेवाभ्यंमुपसर्गगतिभिः ॥

३. उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते ।

प्रहारःऽऽहार-संहार-विहार-परिहारवत् ॥—स्नातकसंस्कृतव्याकरणम् पृ० १२१

संस्कृत में २२ उपसर्ग हैं, पर प्राकृत में २० उपसर्ग ही मिलते हैं; निस् का अन्तर्भाव निर् में और दुस् का अन्तर्भाव दुर में हो जाता है। प, परा, ओ-अ, व, सं, अणु, ओ-अव, ओ-नि, दु, अहि, वि, अहि, सु, उ, अइ, णि नि, पडि-पति, परि-पलि, इ पि-वि अवि, ऊ-ओ-उव और आ ये बीस उपसर्ग हैं। संस्कृत में भी निस् का प्रयोग निर् के अन्तर्गत और दुस् प्रयोग दुर के अन्तर्गत पाया जाता है।

प < प्र—प्रकर्ष—अधिकता बतलाने के लिप्—परुवेइ (परुपयति), पभासेइ (प्रभापते)

परा < परा—विपरीत अर्थ बतलाने के लिप्—पराघाओ (पराघातः); पराजिणइ (पराजयते)

ओ, अय < अप—दूर अर्थ बतलाने के लिप्—ओसरइ, अवसरइ (अपसरति) अवहरइ (अपहरति) दूर छे जाता है; ओसरिअं, अवसरिअं (अपसृतम्)

सं < सम्—अच्छी तरह—संखिवइ (संखिपति), संखिचं (संखिसम्)।

अणु, अनु < अनु—पीछे या साथ—रामं अणुगमइ छक्खणो; अणुजाणइ (अनु-जानाति), अनुमई (अनुमतिः)।

ओ, अव < अव-नीचे, दूर, अभाव—ओअरइ (अवतरति); ओआरो (अवतारः) अवसाणो (अवमानः); ओआसो, अवयासो (अवकास)।

ओ, नि, नी < निर्—निषेध, बाहर, दूर—ओमल्लं, निम्मल्लं (निर्मालयम्) निग्गओ (निर्गतः), नीम्महो (निस्सहः), रामो तं गिराकरइ।

दु, दू < दुर—कठिन, घुरा—दुन्नयो (दुर्नयः), दूदवो (दुर्भंगः)।

अहि, अभि < अभि—ओर—अहिगमणं (अभिगमनम्)—किसी ओर जाना, अभिहणइ (अभिहित्ति), अहिप्पाओ (अभिप्रायः)।

वि < वि—अलग होना, बिना—विक्खुअइ (विक्खति), विणओ (विनयः), वेण-इआ (वैनयिकाः)।

अहि, अधि < अधि—ऊपर—अहिरोइइ (अधिरोदति)—ऊपर चढ़ता है, अज्जायो (अध्यायः), अहीइ (अधीते)।

सु—सु < सु—अच्छा सहज—सुअरं (सुकरम्), सुदवो (सुभगः)।

उ < उत्—ऊपर, ऊँचा भेद—उग्गच्छइ (उद्गच्छति), उग्गओ (उद्गतः), उप्पत्तिआ (औत्पत्तिकी)।

अइ, अति < अति—बाहुल्य या उल्लंघन—अईओ (अतीतः), वइहंतो (व्यति-क्रान्तः), अतिसओ (अतिशयः), अच्चन्तं (अत्यन्तम्)।

णि, नि < नि—अन्दर, नीचे—दुष्टे नियमइ (दुष्टान् नियमति)—दुष्टों को बधीन या नीचे करता है; निवेशो (निवेशः), सन्निवेशो (सन्निवेशः) निविसइ (निविशते)।

पडि-पति परि < प्रति—ओर, उल्टा—पडिआरो (प्रतिकारः) पडिमा (प्रतिमा), पतिष्टा (प्रतिष्ठा), परिष्टा (प्रतिष्ठा)।

परि, पडि < परि—चारों ओर—मुजो पुद्वों परिगमइ—सूर्य पृथ्वी के चारों घूमता है। परिबुधो (परिबुधः), परिहो (परिहः)।

इ, पि, वि, अवि < अपि—भी, निकट—देवदत्तो वि णागओ—देवदत्त भी नहीं आया। किमवि (किमपि), कोइ, कोवि (कोऽपि)।

ऊ, ओ उव < उप—निकट, उवासणा (उपासना)—निकट बैठना, प्रार्थना, ऊकायो, भोजकायो, उवकायो (उपाध्याय),

आ < आङ्—तरु—दिशोओ आसमुई पुद्वीए पइ आसि—दिशीए 'समुद्रपर्यन्त पृथ्वी का राजा था, आवासो (आवास), आयन्तो (आचान्त)।

क्रियाविशेषण

क्रियाविशेषण अव्यय प्राकृत में संस्कृत के समान कई प्रकार के होते हैं। क्रिया-विशेषणों की संख्या प्राकृत में संस्कृत से भी अधिक है। नीचे अकारादि क्रम से प्रमुख क्रियाविशेषणों की शालिका दी जाती है।

अइ < अत्ति—अतिशय,

अइ < अयि—संभावना

अईव < अतीव—विशेष, अधिकता,

अओ < अत—इसलिए

बहुत

अगओ < अगनः—आगे

अगो < अघे—पहुँचे

अज्ज < अज—आज

अण (नञ्) < अन—निषेधार्थक

अणमएणं (अन्योन्यम्) <

अणगहा < अन्यथा—विपरीत

अन्यो-वन्—आपस में

अणंतरं < अनन्तरम्—पश्चात्,
बिना

अत्यं < अस्तम्—अदरान, अस्त-छिपना

अत्थि < अस्ति—सत्तासूचक,
अस्तित्वसूचक

अत्थ < अस्तु—विधित्वचक, निषेधसूचक

अंतो < अन्तर—भीतर

अतरं < अन्तरम्—अन्तर

अप्पणो < आत्मनः—अपना

अपरज्जु < अपरेणुः—दूसरे दिन

अप्येव < अप्येवम्—संशय

अभिकरं < अभोक्षणम्—निरन्तर,
बारम्बार

अभितो < अभितः—चारों ओर

अलं < अलम्—बस, पयाँस

अल्लाहि < अल्लाहि—निवारण, निषेध

अवस्सं < अवश्यम्—अवरय

अवरिं < उपरि—ऊपर

असई < असकृत्—अनेक बार

अहता < अधस्तात्—नीचे

अहव, अहवा < अधवा—पक्षान्तर

अहा < यथा—जिस प्रकार

अहे < अध.—नीचे

आवि < आवि.—प्रकृत

आहृच्च < आहृष्य—बलात्कार

इ < इ—पादपूर्ति के लिए

इओ < इतः—वहाँ से, वाक्यारम्भ में

इकसरिअं < एकस्वतम्—सम्प्रति

इत्थत्तं < इत्थत्त्वम्—इसप्रकार

इच्चत्थो < इत्थर्थः—इसके निमित्त

इयाणि < इदानीम्—इस समय

इर < किल—निरवय

इह < इह—यहाँ

इहं < कथक्—सत्य

इहयं < कथकक्—सत्य

इह्रा < इतरथा—अन्यथा

इं < विम्—प्ररन, गहाँ

ईसिं < ईपत्—धोवा

ईसि < ईपत्—धोवा

उत्तरओं < उत्तरत.—उत्तासे

उच्चअ < उच्चैः—ऊँचे

उत्तरसुवे < उत्तरस्वः—परचात्

उत्पि < उपरि—ऊपर

उवरिं < उपरि—ऊपर

उवरि < उपरि—ऊपर

एअं < एतत्—यह

एकइआ < एकदा—एक समय

एकइआ < एकदा—एक समय

एकया < " "

एकसरिअं < एकस्वतम्—भूति, सम्प्रति

एकसि, इकसि < एतदा—एक समय

एकसिअं, इकसिअं < एकदा—

एक समय

एक समय

एगयओ < एकैकतः—एक-एक

एगंततो < एगान्तत —एक और

एगज्झं < ऐक्यम्—एक प्रकार

एतावता, एयावया < एतावता—इतना

एत्थं, एत्थ < अत्र—यहाँ

एव < एव—ही

एयं < एवम्—इस तरह

एवमेव < एवमेव—इस तरह

फओ < कुतः—कहाँ से

परंथइ < कुप्रचित्—ठहो

फल्लं < कन्थम्—कड़

फह, कहं < कथम्—कैसे

फहि, कहिं < कुप्र—कहाँ

फालओ < कालतः—समय से

काहे < वादि—कृ, किय समय
 कृणा, कृण्णा, कृणो < कृणु—प्रथम किर, किल < किल—निश्चय, सचमुच
 केवच्चिरं, केवच्चिरेण < किय-
 चिरम्, कियच्चिरेण—कितनी देर से

एलु, सु < खलु—निश्चय
 जइ < यदि—जो
 जत्थ < यथ—जहाँ
 जहेव < यथैव—जिस प्रकार से
 जाव < यावत्—जतक
 जह-तहर < यथा-तथा—जैसे-तैसे
 जेण < येन—जिससे
 भग्गिति—सम्प्रति
 ण < न—निषेधार्थक
 णं < नं—वाच्यार्थकार
 णवर—परन्तु, केवल
 णवरं < नवरम्—प्रियेपता
 णूण, णूणं < नूनम्—निश्चय, तर्क
 तं < तम्—वाच्यारंभ, इसलिए
 तए < तथा—तब

तत्थ < तत्र—वहाँ
 तह, तहाँ < तथा—उस तरह
 तहि, तहिं < तत्र—वहाँ
 तिरो < तिरः—छिपाना
 तु < तु—किन्तु
 दर < दर—आया, थोड़ा, अल्प
 दुट्ठु < दुट्ठ—दुष्ट, खराब
 धुवं < धुवं—निश्चय
 पच्चुअ < प्रत्युत—उल्टा
 पच्छा < पश्चात्—पीछे
 परज्जु < परैद्युः—दूसरे दिन, कल

किंचि < किञ्चित्—अल्प, ईपत्, थोड़ा
 किर, किल < किल—निश्चय, सचमुच
 केवलं < केवलम्—तिर्क

चिअ, चेअ < घैय—और भी
 जओ < यतः—क्योंकि
 जह, जहाँ < यथा—जैसे
 जं < यत्—जो, क्योंकि
 जह, जहाँ < यथा-यथा—जैसे-जैसे
 जाव < यावत्—जतक
 जे < ये—पादपूरक
 भग्गिति < भग्गिति—जल्दी
 णइ—अवप्रारण
 णमो < नमः—नमस्कार
 णवरि—अनन्तर
 णाणा < नाना—अनेक
 णो < नो—निषेध
 तंजहा < तद्यथा—उदाहरणार्थ, जैसे
 तओ, तनो, तत्तो < ततः—पुनः इसके
 पश्चात्

तप्पमिइं < तत्प्रभृति—इसको आदि कर
 सहेव < तथैव—उसी तरह
 तिरियं < तिर्यक्—याँका या तिरछा
 तीअं < अतीतम्—अतीत
 थु < थूत्—तिरस्कार
 दिवारत्तं < दिवारात्रम्—रात-दिन
 दुहओ, दुह्हा < द्विधा—दो प्रकार
 णिच्चं, निच्चं < नित्यम्—नित्य
 पगे < प्रगे—प्रातःकाल में
 पडिरुव्यं < प्रतिरूपम्—समान
 परं < परम्—परन्तु

समुच्चयबोधक अव्यय

जो अव्यय एक वाक्य को दूसरे वाक्य में मिलाता है, उसे समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। इसके सात भेद हैं।

- (१) संयोजक—य, अह, अहो, (अथ), उद, उ (तु), किंच आदि।
- (२) वियोजक—या, किंवा, तु, ऊ, क्रि तु आदि।
- (३) संकेतार्थ—जइ, चेअ, णोचंअ, (नोचेत्), जइपि, सहावि, जदि, इत्यादि।
- (४) कारणवाचक—हि, तअ, तेण इत्यादि।
- (५) प्रवचनवाचक—अहो, उद, किं, किमुत्, तणु, णु, किणुत्, इत्यादि।
- (६) कोलत्राचक—जाव, ताय, जदा, तदा, वदा इत्यादि।
- (७) विधि अथवा निषेधार्थक—अइ, अइ, इं, आम, अदा, इत्यादि।

अह कार्यात्म और 'इति' कार्यान्त का सूचक है। 'य' शब्द और अर्थ का सूचक है। जहाँ हिन्दी में 'और' दो जोड़े हुए शब्दों के बीच में आता है, वहाँ प्राकृत में 'थ' शब्द दोनों के उपरान्त आता है। यथा—रामो लक्खणो य सोआए सह गमीईअ।

मनोविकारसूचक अव्यय

(१) अव्यो—दुःख, संभाषण, अपराध, रिस्नय, आनन्द, आदर, भय, रोद, विपाद और पश्चात्ताप अर्थों में 'अव्यो' का प्रयोग होता है। अव्यो तम्मेसि—रोद है कि तुम उदास हो। अव्यो तुअमेरिसो माणो—प्रणययुक्त प्रणयी में तुम्हारा ऐसा मान ?—इससे अपराध और आश्चर्य दोनों प्रकट होते हैं। आनन्द अर्थ में—अव्यो पिअस्स समओ—यह आनन्द की बात है कि प्रियतम के आने का समय है। आदर अर्थ में—अव्यो सो एइ—मेरा प्रियतम यह आ रहा है। भय अर्थ में—रुसणो अव्यो—भय है कि वह थोड़े अपराध पर ही रुठ जानेवाला है। रोद और विपाद अर्थ में—अव्यो कट्टु—मे खिन्न और विषग्न हूँ। पश्चात्ताप अर्थ में—अव्यो कि एसो सहि यए वरिओ—सखि ! मैं तो पछता रही हूँ कि मैंने इसे घरा क्यों ?

(२) आ, हुम् क्रोध सूचक; आ फहमिदं संजाअं—अरे ! यह कैसे हो गया—क्रोध दितलाया गया है। हं ते कइवरा विवरीया बोहा—क्रोध सहित—रोद है कि कविवर विपरीत बोध बाजे हैं।

(३) विपाद, विकल्प, पश्चात्ताप, निश्चय और सत्य अर्थों में 'हन्दि' अव्यय का प्रयोग किया जाता है। विपाद अर्थ में—हन्दि विदेसो—दुःख है कि हमारे लिए यह विदेश है। विकल्प अर्थ में—जीवइ हन्दि पिआ—पता नहीं मेरी प्रियतमा

जीती है अथवा नहीं। पश्चात्ताप अर्थ में—हृन्दि किं पिआ मुक्का ? क्या हमने त्राह दुःख का बिना विचार किये ही प्रियतमा को छोड़ दिया ? निश्चय अर्थ में—हृन्दि मरण—मरना निश्चि है। सत्य अर्थ में—हृन्दि जमो गिम्हो—प्रीप्प पमराज है, यह बात सच है। शोकसूचक अर्थ में—हा रोगेण पीडितास्मि—रोग से पीडित हैं।

(४) भय, वारण और विषाद अर्थ में 'वेव्वे' का प्रयोग होता है। यथा—समुहोद्धीअम्मि मयरे वेव्वे च्चि भणेइ मल्लिउच्चिणिरी—सम्मुखोत्थिते भ्रमरे वेव्वे इति भणति मल्लिकामुल्लवेत्री।

(५) निश्चय, वितर्क, संभावना और विस्मय अर्थों में 'हु' और 'खु' का प्रयोग किया जाता है। निश्चय अर्थ में—सो हु अन्नरओ—यह निश्चित है कि वह दूसरी स्त्री में रम गया है। वितर्क और संभावनाओं अर्थों में—तस्स हु जुग्गा सि सा खु न तं—मैं ऐसा अनुमान करता हूँ और यह सभय भो है कि वह दूसरी स्त्री उसके योग्य है और तुम उसके प्रियतम के योग्य नहीं हो। विस्मय अर्थ में—एसो खु तुउक्क रमणो—आश्चर्य है कि यह तुम्हारा प्रिय है।

(६) गद्दी, आक्षेप, विस्मय और सूचन अर्थों में ऊ का प्रयोग किया जाता है। गद्दी अर्थ में—तुउक्क ऊ रमणे—तुम्हारा निन्दित रमण। आक्षेप अर्थ में—ऊ कि मए भणिअं—अरे मैंने क्या कह डाला। विस्मय अर्थ में—ऊ अक्षुरा मह सही—अहो, मेरी सखी अप्सरा है। सूचन अर्थ में—ऊ इअ हसेइ लोओ—तुम्हारे प्रियतम को दोष दे-देकर सखियाँ हँसती हैं।

(७) आश्चर्य अर्थ में अम्मो अव्यय का प्रयोग होता है। यथा—स अम्मो पत्तो खु अएणो—यह प्रियतम अपने आप प्राप्त हो गया; आश्चर्य है।

(८) रतिकलह अर्थ में रे, अरे और हरे अव्यय का प्रयोग होता है। यथा—अरे मए समं मा करेसु उवहामं—रतिकाल में कगडा हो जाने पर नायिका कड़वी है—अरे मेरे साथ हँसी मत करो। अरे वहुवहह—अरे बहुतों के प्रिय।

(९) हकी अव्यय निवेद अर्थ में प्रयुक्त होता है। यथा—

हकी, इअ व्व च्चीरीहि उल्लविअं।

(१०) अम्हो आश्चर्य अर्थ में प्रयुक्त होता है। यथा—अम्हो कहं भाइ—आश्चर्य कथं भासि।

अतिरिक्त अव्यय

निपात

सद्विर्तों और कृत् प्रत्ययों के संयोग से भी कुछ अव्यय बनते हैं। तथा इआणि, इआणि (इदानीम्), इअहरा (इतरथा), एग्धि, एत्ताहे (इदानीम्) कहि (कुत्र), कुओ कुओ (कुतः), जस्थ (यत्र), जहा, जहा, जहि (यथा), सव्वाओ, (सर्वतः); सहामउत्तो (सहस्रहृत्वः), एकहा आदि अव्यय के समान ही प्रयुक्त होते हैं।

प्राकृत में निपात का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जो पद व्याकरण के नियमों के विपरीत सिद्ध होते हैं, वे निपातन से सिद्ध माने जाते हैं। जनभाषा होने से प्राकृत में ऐसे सहस्रों शब्द हैं, जिनकी व्युत्पत्तिपां सिद्ध नहीं की जा सकती हैं। ऐसे शब्द निपातन से सिद्ध माने जाते हैं। जितने देशी शब्द हैं, वे प्रायः निपातन से सिद्ध माने गये हैं।

अ

अउभहरो—रहस्थभेदी

अकंतो—बृद्धः

अग्गिआयो—इन्द्रगोपः

अंकिअं—आलिङ्गितम्

अच्छिअच्छी—परस्पराङ्घ्रिः

अच्छुअसिरी—मनोरथाधिकफलप्राप्तिः

अजमो—कञ्जः

अडुअणा—पुंअली

अणरहू—नवशधुः

अणुअओ—प्रयत्तः, परिजागरित

अणुसूआ—आमन्नप्रपरा

अणगइओ—सर्वार्थनृत्तः

अत्तिहरी—वृती

अन्तरिअं—शाना, कविश्लम्

अपिट्टं—पुनरुत्तम्

अप्पुणं—पूर्णम्

अमओ—अमुरः

अम्हत्तो—प्रमृष्टः

अहोएपो—अपराधः

अग्गिओ—[परचितः, विप्रगृहीतः]

अग्गुअं—प्रतीतम्

अच्छिअणं—निमीलनम्

अच्छिहुरूहो—द्वेष्यः

अजडो—जार

अट्टणो—भार्तज

अणडो—जारः

अणहचणअं—भसितम्

अणुदियं—दिनमुत्तम्

अणं—भारोपितम्, खण्डितम्

अण्णासअं—भारस्त्वम्

अधकं—अकाण्डम्

अपंडिअं—अनदम्

अपुणं—आक्रान्तम्

अवुअसिरी—मनोरथाधिकफलप्राप्तिः

अम्मअं—असंघट्टम्

अयुजरेयइ—अविरयुवतिः

अरणी—सरणी
 अद्विहो—भ्रमरः
 अवडाहिअं—उष्टृष्टम्
 अवरिज्जं—अद्वैतम्
 अवद्विट्ठो—क्षपित.
 अवाडिओ—वञ्चितः
 अविहिओ—मत्तः
 अरसंगिअं—आसक्तम्
 अहिरोइअं—पूर्णम्
 अहुमाअं—पूर्णम्

अलवलरसहओ—पूर्ववृषभः
 अवगहो—भाक्रान्तः
 अवड्वहिअं—वृषादिनिपतितम्
 अवसण्णं—स्तुतम्
 अवहोओ—विरह
 अविणअवइ—जारः
 अव्या—भाम्या
 अहिअलो—क्रोधः
 अहिसिओ—प्रद्वीतः

आ

आआसत्तअं—हर्म्यष्टम्
 आकासिअं—पर्याप्तम्
 आणंद्वसो—प्रथमरजस्वलाखवसम्
 आप्पणं—पिष्टम्
 आरिट्ठो—यातः

आरोग्गरिअं—रक्तम्
 आविअं—प्रोतम्
 आविवओ—व्यासक्तः, प्रवृद्धः
 आहडं—सीस्कारः
 आलिआ—भाषी

आओ—आपः
 आडविओ—चूर्णितः
 आपुअं—भाननम्
 आरनालम्—अम्बुजम्
 आरोइअं—मुकुलितम्, मुक्तम्, भ्रान्तम्,
 पुलकितम्
 आरोद्धो—प्रवृद्ध, गृहागतः
 आविलिओ—कुपितः
 आसंधो—आस्था
 आद्विहो—रुद्धः, गलितः

इ

इसओ—विस्तीर्णः

ई

ईद्धग्गिधूमो—तुदिनम्

उ

उओ—श्रद्धः
 उकाअं—प्रसृतम्

उओग्गिओ—सन्नद्धः
 उकाजो—अनवस्थितः

उषांदिअ—आरोपितम्, खण्डितम्
 उषारिओ—विस्तीर्णः
 उषासं—उरुष्टम्
 उषरणं—अपकीर्णम्
 उषणम्—पूर्णम्
 उषारिअं—पुरस्तृतम्
 उच्युगो—अनस्यितः
 उच्छ्ररणं—उच्छ्रितम्
 उच्छ्रदो—आरुढः
 उज्जमाणं—पलायितम्
 उज्जलो—प्रयत्नः
 उज्जिअं—अपकृतम्, निम्नीकृतम्
 उडाहिअं—उत्क्षिप्तम्
 उड्ढिओ—उत्क्षिप्तः
 उत्तुर्वो—दृष्टः
 उदूलिअं—अवनतम्
 उद्वओ—शांतः
 उद्वरिअं—अद्वितम्
 उप्पत्तो—गलितः, विरक्तः
 उम्मडो—उदृष्टः
 उम्महो—उदृष्टः
 उर्यलो—अभ्यासितः
 उरूमहो—प्रेरितः
 उलुहुलअं—अग्निवृत्तम्
 उल्लिकं—दुरवेष्टितम्
 उल्लुहुडिअं—अवनतम्
 उल्लोको—धुवितः
 उवडिअं—अवनतम्
 उन्विषो—प्रक्षिप्तः
 उन्विष्वओ—कृद्धः

उषांदं—विप्रक्षयम्
 उषारिअं—आरोपितम्, खण्डितम्
 उषोसिअं—पुरस्तृतम्
 उगाहिअं—उत्क्षिप्तम्
 उच्चदिअं—मूपितम्
 उच्चलो—अभ्यासितः, दारितः
 उच्युरणो—उच्छ्रितः
 उच्छ्रल्लो—अपकीर्णः
 उज्जणिअं—अपकृतम्, निम्नीकृतम्
 उज्जलिअं—प्रक्षिप्तम्, उत्क्षिप्तम्
 उज्जसिअं—उरुष्टम्
 उदंवो—विष्टः
 उडिअं—अन्वितम्
 उत्ततो—अभ्यासितः
 उदाहिअं—उत्क्षिप्तम्
 उद्वारिअं—रणदृतम्, उरुणातम्
 उद्वणो—उद्वतः
 उद्वलो—पार्श्वद्वाराप्रवृत्तः
 उप्पहो—अभ्यासितः
 उम्मरिअं—अग्निवृत्तम्
 उर्यकिअं—अपकृतम्
 उरविअं—आरोपितम्, खण्डितम्
 उलुओसिअं—रोमाञ्चितम्
 उल्लिओ—उपसर्पितः
 उल्लुअं—दुरस्तृतम्, रक्तम्
 उल्लदो—आरुढः
 उवउज्जो—अपकृतः
 उविद्वो—वस्तः
 उन्विडिअं—प्रक्षिप्तम्, वस्तान्वितम्
 उसलिअं—रोमाञ्चितम्

ऊ

ऊआ—यूका
ऊर्णदिअं—आनन्दिअम्
ऊसअं—उपधानीकृतम्
ऊसुंभिअं—रुद्रगणरोदनम्

ऊगिअं—अलंकृतम्
ऊरिसकिओ—रुद्रः
ऊसविअं—उद्दान्तम्
ऊसुंभिअं—उपधानीकृतम्

ए

एकल्लो = प्रखलः

एल्लविल्लो = धनी, वृषः

ओ

ओओधिअं = आघातम्
ओअङ्गम् = विप्रलब्धम्
ओवद्धिअं = पुरस्कृतम्
ओज्जरो = भीरुः
ओदुरो—उन्दुरुः
ओम्मल्लं—घनीभूतम्
ओवाअओ—आघातपः
ओसडिओ—आकीर्णः
ओसरिओ—आकीर्णः, अक्षिसंकोचात्
संज्ञित.

ओअम्मओ = अभिभूतः
ओअल्लो = कम्प, अपचार.
ओच्छुंदिअं = अपहृतशरीरादिव्ययितम्
ओणअं—अवनतम्
ओप्पं—मृष्टम्
ओमंसो—अपसृतः
ओसट्टो—विस्सितः
ओसण्णो—बुद्धितः
ओसाअणं—महीशानम्

ओसिअं—अपूर्वम्
ओहल्ली—अपसृतिः
ओहामिओ—अभिभूतः

ओसिरणं—च्युत्सर्जनम्
ओहरणं—आघातम्

क

कउडं—ककुदम्
कक्खल्लो—कर्कशः
कडदरिअं—छिन्नम्, छिद्रता
कडिओ—प्रीणितम्

कक्खडो—कर्कशः
कक्कं—कार्यम्
कडप्पो—कलापः
कडिल्लं—आशीः, गहनम्, दौवारिकः,
कटिवस्त्रम्, निर्विबरः, विपक्षः

कणइल्लो—शुकः
कत्तं—कल्लम्
कंदोदं—उत्पलम्

कणइ—लता
कथो—उपरतः, क्षीणः
कमणी—निःश्रेणी

कमलै—आस्यम्, कण्ठः
 करमा—क्षीण
 कलवू—अलायुः
 कन्वरिअं—आरोपितम्, रचिदतम्
 कारिगं—ट्टिमम्
 किपाडो—स्फलितः
 किरिकिरिअ—उर्णोपरिगिरा, उवुअम्
 कुडिउमा—गर्भवती
 कुडुवीअं—सुरतम्
 कुम्मणो—म्लानः
 कोडिओ—पिशुनः
 कोलीरं—उदरिन्दम्

करमूरी—दृढता
 करिहो—करीः
 कलेरं—कराकम्
 काअपिउला—कोकिला
 कालं—तमिषम्
 किमिघरयसणं—कौडेयम्
 कियो—किरुः
 कुडङ्गो—एतागृहम्
 कुडुअं—कुनुमम्
 कोज्जिअं—आपूरितम्
 कोडिहो—पिशुनः

ख

खंधमसी—स्फन्धपट्टिः
 खुडुओ—धुलकः
 खेडुं—तेलः

खंधलट्टी—स्फन्धपट्टिः
 खुरहखुडी—प्रणयकोपः

ग

गअं—आधूगितम्
 गअसाडहो—विराफः

गुम्मिओ—मूलाच्छिउअः
 गज्जिअओ—अद्दस्पर्त्तनिमित्तइहासः,
 अद्दस्पर्त्तनिमित्तरुपुअः

गंजोओ—समाकुलः
 गत्तो—गतः
 गहो—गण्डस्थलम्
 गविअं—गवधतम्
 गहिआ—प्राद्याः
 गामणहं—ग्रामस्थानम्
 गावी—गौः
 गुज्जलिओ—संपदितः
 गुम्मइओ—अपूरितः, स्वलितः, आम्-
 लोचलितः, मूः, मिवटितः

गत्तडो—गायिका
 गमिदो—अपूर्णः, गूः, स्थलितः
 गलद्वओ—प्रेरितः
 गहरो—गृहः
 गहिहो—महिः
 गामरेडो—ग्रामभक्षकः
 गावो—गतः
 गुमिलो—मूः
 गुलिअं—मथितम्

गोणा—गौः
 गोदा—गोदावरी
 गोला—गोदावरी
 गोसो—प्रस्यूपः

गोणिको—गोसमूहः
 गोरडितम्—क्षस्तम्
 गोसण्णो—मूलं.

घ

घअअंदं—मुकुरम्
 घडं—सृष्टीवृत्तम्
 घडिआ—गोष्ठी
 घाअणो—गायनम्
 घुसिमं—घसृणम्

घडइअं—संकुचितम्
 घडाघडी—गोष्ठी
 घसणिअं—अन्निरटम्
 घुगघुसुरअं—अशकं फणितम्

च

चउफं—चतुष्पथम्
 चचरिओ—चंवरीकः
 चच्चिओ—स्थासकः
 चण्डिज्जो—पिशुनः, कोपः
 चपेटा—काषातः
 चलणाओहो—चरणायुधम्
 चिकं—स्तोकः, क्षुत्तम्
 चित्तलं—रम्यम्
 चिमिणं—रोमान्चित्तम्
 चिलिचिलिआ—धारा

चफलं—वर्तुलम्
 चच्चा—तलाहतिः
 चण्डिको—कोपः
 चंदोज्जं—वुसुदम्
 चप्पलओ—बहुमिध्यावादी
 चल्लणकं—जवनांशुवम्
 चिकलअणो—सदनः
 चित्तविअओ—परितोपितः
 चिरिचिरिआ—धारा
 च्छाइहो—रूपवाम्

छ

छट्टा—छत्रा
 छिकं—सृष्टम्
 छिच्छओ—जारः
 छिण्णालो—जारः
 छिल्लं—छिद्रम्
 छेणो—स्तेनः

छंडिअं—छन्नम्
 छिच्छई—पुंश्चली
 छिद्धि—धिक्धिक्
 छिण्णो—जारः
 छूहिअं—पार्श्वपरावृत्तम्

ज

जअहो—दृष्टः
जंघालुओ—द्वृतः
जडं—त्यक्तम्
जणहरो—नररक्षसः
जंभणंभणो—स्वैरभापी
जहणरोहो—ऊहः
जुअणो—युग
जोअडो—खद्योतः
जोइओ—खद्योतः
जोइ—विद्युतः
जभहुरायिअं—निवासितम्

जंघामओ—द्वृतः
जच्छंदो—स्वच्छन्दः
जणउत्तो—ग्रामप्रधानः
जपिकिररमगिरओ—दृष्टार्थयाचनशीलः
जरण्डो—वृद्धः
जहणसुअं—जघनांशुक्म्
जूसओ—उत्क्षिप्तः
जोअणो—खद्योतः
जोइखो—द्वीपः
जोओ—वन्दः

झ

झडिओ—ग्रान्तः
झपिअं—पर्यस्तम्

भंदिअं—प्रवृत्तम्

ठ

ठाणिजं—गौरवम्

ड

डंभिओ—डाम्भिकः
डेकुणो—मत्कुणः
डोसिणी—डरोहना

डिडओ—जलान्तः पतितः
डेड हुरो—दहुर

ण

णन्दिणी—पेयु
णाली—चस्त
णिउको—तूष्णीकः
णिकजो—अनप्रस्थितः
णिकराचिओ—शान्तः
णिगठो—निर्गतः
णिजो—सुप्तः

णलिअं—निलदम्
णिअद्वणं—परिधानम्
णिउरं—छिन्नम्, जीर्णम्
णिकजो—निरचयः
णिगमिअं—निवासितम्
णिशुडो—उद्धतः
णिप्पणिओ—जलधौतः

णिष्फंसो—निष्फिरः

णिम्मीसुओ—निःशमभ्रुः

णिञ्चहइ—उद्धवति

णिहयो—धुसः

णिह्लणं—निलयम्

णिमिञ्चं—आघ्रातम्

णिरासो—नृसंसः

णिसुद्धो—वातित.

णिहुञ्चं—सुरतम्

णीसंको—नृपः

त

तच्छिलो—तत्परः

तणसोही—तृणशून्यम्

तण्णाञ्चं—आर्द्रम्

तत्तुरिञ्चं—रञ्जितम्

तंबकुसुमं—कुरवकम्, कुरण्डकम्

तलरो—तलवरः

तल्लडं—तल्पम्

तेआलिसा—त्रिचत्वारिंशत्

तोमरिओ—शस्त्रमार्जनम्

तडकडिओ—अनवस्थितः

तणेसी—तृणराशि.

तत्तिलो—तत्परः

तंयकिमी—इन्द्रगोपः

तलं—तल्पम्

तल्लं—तल्पम्

तित्ति—सात्पर्यम्

तेवण्णा—त्रिपञ्चारात्

थ

थिरण्णेसो—अस्थिरः

थेवो—स्तोकः

थोवो—स्तोकः

थेरोसणं—अम्बुजम्

थोक्को—स्तोरः

द

दड्ढाली—दग्धर्म

दुग्गं—दु.सम्

दुद्धोलना—गौः

दुग्मइणी—कल्हकारिणी

दूणो—द्विपः

दोग्गं—युग्मम्

दौदुरो—सुंदरिः

दोसारअणो—चन्द्रः

दरवहदो—कातरः

दुग्घोटो—द्विपः

दुदुमिञ्चं—रसितम्

दुरिञ्चं—द्वुतम्

दूसलो—दुर्भंगः

दोरघोटो—द्विपः

दोसणिजन्तो—चन्द्रः

दोसो—शेषः

ध

धगिआ—धन्या
धुअरासो—धमरः
धुअहं—धुरस्तम्
धूमरी—दुहिनम्

धारावासो—दुर्दुरः
धुतो—आक्रान्तः
धूमद्वअमहिसी—दृतिष्ठाः
धोरणी—पद्दिकः

न

नीगओ—नदः

प

पअरो—अर्थदरः
पंसुलो—रुद्रः
पच्छाणिओ—सन्मुपमागतः
पद्धिअं—असंतृप्तम्
पडिरिग्गअं—भरम्
पडिसोत्तो—प्रतिकृष्टः
पड्ढाविअं—समापितम्
पणवण्णा—पञ्चपञ्चाशत्
पंडरंगु—प्रादेशः
पद्धलं—पार्श्वद्वयाप्रवृत्तः
पड्डालो—केसरः
परिअट्टविअं—परिउत्तम्
परिक्खाइअओ—परिक्षीणः
परिहाइओ—परिक्षीणः
परोट्टं—पर्यस्तम्
पह्लित्तं—पर्यस्तम्
पविग्घं—विस्तृतम्
पसह्लिओ—प्रेरितः
पाउरणं—प्रावरणम्, कवचम्
पाडहुक्कः—प्रतिभूः
पासाणिओ—साक्षी
पिउष्ठा—पिनुष्यमा, सखी

पअलाओ—फणी
पान्नरणं—प्रावरणम्
पञ्जतरं—इहितम्
पडिस्सरो—प्रतिकृष्टम्
पडिसिद्धी—प्रतिस्वर्षा
पडिहत्थो—अपूर्वः
पणिलिअं—हतम्
पण्णा—पञ्चाशत्
पत्थरं—पादादनम्
पम्मो—पाणिः
परभत्तो—भीष्टः
परिअट्टिअं—प्रकटितम्
परिच्चिअं—उद्विष्टम्
परेओ—विशाचः
पलहिअओ—मूर्धः, उपलद्धद्वयः
पल्लोट्टीहो—रहस्वभेदी
पधिरंजवो—स्तिग्धः
पहट्टो—उद्धतः, अविरट्टः
पाओ—फणी
पाडिपिद्धी—प्रतिस्वर्षा
पासावो—गवाक्षः
पिठसिआ—पिनुष्यता

पिडओ—भादिप्रः
 पिप्पडिअं—पत्किचित्पडितम्
 पिण्यं—जज्ञम्
 पुण्णाली—पुंभली
 पुरिल्लो—देश्यः
 पुव्वंगो—मुण्डितः
 पेसणआली—दूती
 पेकिअं—रूपदितम्

पिबुइअं—प्रशान्तम्
 पिलुअं—धुतम्
 पुआइ—उन्मत्तः, पिशाचः
 पुप्पी—पितृधरसा
 पुल्लओ—भमरः
 पेज्जलिओ—संघटितः
 पोररथो—मत्सरी

घ

घइल्लो—घलीरदं
 घन्पोल्लो—मेलकः
 घम्हाल्लो—अपस्मारः
 वहिओ—मधितः
 घहुद्धिआ—ज्येष्ठभ्रातृवधुः
 वाओ—मालः
 युल्लुल्लो—उरुउदः

वंडिओ—वन्दी
 वम्हहरं—अम्मुजम्
 वलामोडो—चलात्कारः
 वहुजाणो—घोरः, धूर्तः, जारः
 वहुल्ली—श्रीशोचितशालभञ्जिका
 वुड्ढिरो—महिषः

भ

भच्चो—भागिनेवः
 भाइरो—भीरुः
 भिगं—नीलम्, स्वीकृतम्
 भेज्जो—भीरुः

भट्टिओ—विष्णुः
 भाउज्जा—भ्रातृजाया
 भेज्जल्लो—भीरुः
 भोइओ—मक्षः

म

मइमोहिणी—सुरा
 मघोणो—मघमान्
 मडप्परो—गर्वः
 मदोली—दूती
 मरिओ—लुटितः, विस्तीर्णः
 महल्लो—मुखरः
 माउच्चा—मातृधरसा, सली
 माणंसी—मायावी, मनस्वी

मइल्लुत्ती—पुपवती
 मंजरो—माजारः
 मत्तवाल्लो—मत्तः
 गम्माक्को—गर्वः
 महालयपक्खो—महालयपक्षः
 माइदो—माकन्दः
 माउसिआ—मातृधरसा
 माभाइ—अभयम्

माहिवाओ—माघवातः
मुसलं—नांसलम्
मुहुरोमराइ—भूः

मिअं—अर्जंशतम्
मुदलं—मुषम्
मेहुणिआ—मातुछाश्मजा, स्याछी

र

रअणिद्धअं—कुमुदम्
रगिछो—अभिलपितः
रिछोली—पंक्तिः
रिमिणो—रोदनशीलः
रुअरुइआ—उत्कलिना
रोक्कअं—प्रोक्षितम्

रइलसखं—जघनम्
रिअं—छनम्
रिटो—अरिष्टम्, दैत्यः, कारुः
रुद्धो—आक्रान्तः
रुवसिणी—रुपवती

ल

लंवा—वहरी, वेशः
लइणा—छता
लज्जालुइणी—वहदकारिणी
लववो—गुप्तः
लुक्को—सुतः
लिदुक्को—गतः

लअणी—छता
लक्कुडो—एगुडः
लडहा—विछासवती
लाहिछो—अम्पटः
लोट्टो—समृतः

व

वअणीआ—उन्मत्ता, दुःशीला
वक्कं—पिष्टम्
वच्छुद्धलिओ—प्रयुद्धतः
वडिणायो—धर्मवण्ड.
वड्दिमं—सुतम्
वडइअं—पीडितम्
वणनत्तडिअं—पुरस्सतम्
वट्पिअं—रक्तम्
वरइत्तो—नूतनवर.
वरत्तो—पीतः, पतित, पठितः
वल्लटं—पुनरुक्तम्

वइरोडो—गारः
वकरलं—आच्छादितम्
वंजर—मानारः
वडिसाअं—सुतम्
वड्दुअरो—शुद्धतरः
वणइ—वनराजिः
वंदं—वृन्दम्
वट्पिओ—कैदारः
वरणडो—प्राकारः
वल्लकिअं—उरसंगितम्
वल्लविअं—छाक्षारक्तम्

वहिद्भ्रं—पर्याप्तम्
 वाअडो—शुकः
 वाडी—वृत्तिः
 वामो—आक्रान्तः
 वारिज्जो—विवादः
 विअंदुटं—अवरोपितम्, मुक्तम्
 विच्छुरिअं—अपूर्वम्
 विड्ढो—सुसोत्थितः
 वित्थिरं—विस्तारः
 विरुओ—विरुद्धः
 विसारो—सैन्यम्
 विहृडणो—अनर्थः
 विहुंउओ—विशुद्धः
 वीवी—वीचिः
 वेणुसारो—अमरः
 वेल्डो—विडम्बनम्
 वेल्डहो—कोमलः, विहासी
 वेल्हरीओ—बहुरी, केशः
 व्युडो—विटः

बहुहाडिणी—वध्या उपरि परिणीता
 वाउहो—प्रलपितः
 वामूलरो—वामदरः
 वारडुं—अभिपीडितम्
 वायडो—उडुम्बी
 विउसगो—व्युत्सर्गः
 विद्धितं—अज्ञितम्
 विडुच्छओ—निपिद्धः
 विरिचरो—धाराधारेचनशीलः
 विवओ—विस्तीर्णः
 विसो—वृषः, मूपकः
 विदिमिदिओ—विकसितः
 वीली—वीधिः
 वेणिअं—वचनीयम्
 वेणो—आक्रान्तः
 वेल्ड्भ्रं—संकुचितम्
 वेल्हरी—विहासवती
 वोट्टी—सकः

स

संसाओ—आरुढः, चूर्णितः, पीतः,
 उद्विरनः

सइलासिओ—मयूरः
 संकरो—रथ्या
 सघअणं—संहननम्
 सडिअग्गिअं—वर्धितम्
 सत्थरो—संस्तरः
 समराड्भ्रं—विष्टम्
 समुदहरं—अम्बुगुहं
 सहउत्थिया—वृत्ती

सइकोडी—शतकोटि.

सग्गहो—शुकः
 संगोहं—संघातः
 संचारी—वृत्ती
 सत्तो—गतः
 सहालं—मूपरम्
 समुद्धणवणीअं—चन्द्रः
 सरिसाहुलो—सदृशः
 साउहो—अनुरागः

साणिओ—दान्तः
 साल्किआ—शारिका
 सिट्टो—सुसोत्थितः
 सिहडहिल्लो—बालरुः
 सीउट्टं—हिमकालदुर्दिनम्
 सीसकं—शीर्षकम्
 सुहरओ—धारिकागृहम्, चटकः
 सुरद्धओ—दिवसः
 सेवालं—सेवालम्
 सोहिअं—पिष्टम्

सामरी—शात्मरी
 साहुली—शाखा
 सिप्यो—शुची
 सिहिणं—स्तनम्
 सीउल्लं—हिमकालदुर्दिनम्
 सुण्डसिओ—निद्राशीलः
 सुरंगो—दीपः
 सूरली—मध्याह्नम्
 सोत्ती—तरङ्गिणी

ह

हकिअं—उन्नतम्
 हडहडओ—अनुसंगः
 हिज्जा—हीः
 हीमोरं—भीमरम्
 हेपिअं—उन्नतम्
 हेसमणं—उन्नतम्

हट्टमहट्टो—ध्रुवस्वस्थः
 हल्लपयिअं—स्वरितम्
 हिद्धो—क्षस्तः
 हीरणा—जपा
 हेरिवो—देरम्बः
 हेसिअं—रसितम्

आठवाँ अध्याय

कारक, समास और तद्धित प्रकरण

कारकविचार

यरोति क्रियां जनयतीति कारकम्—क्रिया के उत्पादक को कारक कहते हैं; अथवा 'क्रियान्वयि कारकम्'—क्रिया के साथ जिसका सम्बन्ध हो, उसे कारक कहते हैं। हेमचन्द्र ने—'क्रियाहेतुः कारकम्' क्रिया की उत्पत्ति में जो हेतु—सहायक हो, उसे कारक कहा है। प्राकृत में संस्कृत के समान ही कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण ये छः कारक हैं। प्राकृत के वैयाकरणों ने सम्बन्ध को कारक नहीं माना है और न पठो (छट्टी) विभक्ति के रूपों को ही पृथक् स्थान दिया है। पठो के रूप चतुर्थी के समान ही होते हैं। वास्तविक बात यह है कि सम्बन्ध कारक का क्रिया के साथ सम्बन्ध नहीं है। यथा—विउसाणं परिसाए मुख्खेहि मडणं सेवीअउ, अन्नह मुख्खत्ति नज्जिह्निन्ति—विद्वानों की सभा में मूर्खों को मौन रहना चाहिए, अन्यथा उनकी मूर्खता प्रकट हो जाती है। इस वाक्य में 'सेवीअउ' क्रिया के साथ 'विउसाणं' का किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है और न 'विउसाणं' में 'सेवीअउ' क्रिया का जनकत्व-उत्पादकत्व ही है। अतः यह पद पठो विभक्ति तो है, पर सम्बन्ध-कारक नहीं है।

त्रिभक्ति की परिभाषा करते हुए कहा है—“संख्याकारकबोधयित्री विभक्तिः”—जिसके द्वारा संख्या और कारक का बोध हो, वह विभक्ति है। 'विउसाणं' से विद्वानों के समूह का बोध होता है, अतः यह पठो विभक्ति तो है, पर कारक नहीं।

त्रिभक्ति और कारक में एक अन्तर यह भी है कि कारक कुछ दे और त्रिभक्ति कुछ हो जाती है यथा—कर्त्ता में सर्वदा प्रथमा और कर्म में द्वितीया विभक्ति ही नहीं होती; चरित्र कर्त्ता में तृतीया और कर्म में प्रथमा विभक्ति भी होती है। जैसे—'रावणो रामेण हथो' इस वाक्य में हनन क्रिया का वास्तविक कर्त्ता राम है, पर राम प्रथमा विभक्ति में नहीं है, तृतीया विभक्ति में रखा गया है। इसी प्रकार हनन क्रिया का वास्तविक कर्म रावण है, उसे द्वितीया विभक्ति में न रखकर प्रथमा विभक्ति में रखा गया है।

१. कर्त्ता—क्रिया के द्वारा जिस संज्ञा के सम्बन्ध में विधान किया जाता है, उस संज्ञा के रूप को कर्त्ता कारक कहते हैं। जैसे—रामो 'भाईअइ'—में 'भाईअइ' क्रिया राम के सम्बन्ध में विधान करती है कि राम ध्यान करता है।

प्रथमा विभक्ति के नियम—

(१) प्रातिपदिकार्थ—शब्द का मात्र अर्थ, लिङ्गमात्र, परिमाणमात्र अथवा वचन मात्र बतलाने के लिए प्रथमा विभक्ति होती है^१। प्रातिपदिक शब्द का अर्थ—“नियतोपस्थितिकः प्रातिपदिकार्थः”—जिस शब्द की जिस अर्थ के साथ नियम से उपस्थिति हो, उसे प्रातिपदिकार्थ कहते हैं। प्रातिपदिकार्थ में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा—जिणो, वाज, पञ्चणो, सर्वभू, णाणं आदि।

संस्कृत के समान प्राच्य में भी शब्द में जत्र तत्र प्रत्यय नहीं लगता, तब तत्र उसका अर्थ नहीं जाना जा सकता है। प्रातिपदिक (Crudo form) में सुप् आदि विभक्तियों को जोड़ने से ही अर्थ प्रकट होता है। उदाहरण के लिए यों समजना चाहिए कि विभक्ति रहित देर शब्द का उच्चारण करें तो यह निरर्थक होगा। जत्र 'देरो' उच्चारण करते हैं तभी इस शब्द का अर्थ 'देर' ने यह प्रकट होता है। इसलिये संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण में विभक्ति प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

लिङ्गमात्र में—तडो, तडी, तडं; परिमाणमात्र में—उजन मात्र वा जान कराने के लिए—दोणोव्यीही—यहाँ प्रथमा विभक्ति से व्रीहि का द्रोण रूप परिमाण विहित होता है।

वचनमात्र—एको, वडू आदि।

(२) सम्बोधन में भी प्रथमा विभक्ति होती है। यथा हे देवो, हे देवा, हे हे पञ्चुणा।

२. कर्म—जिन पदार्थ पर क्रिया के व्यापार का फल प्राप्त होता है; उस पदार्थ से सूचित होनेवाली संज्ञा के रूप को कर्म कारक कहते हैं। किसी वाक्य में प्रयोग किये गये पदार्थों में से जिसको कर्त्ता सबसे अधिक चाहता है, उसे कर्म कहते हैं,^२ अर्थात् कर्त्ता के लिए जो अत्यन्त ईप्सित-अभ्यष्ट है, उसीको कर्म संज्ञा होती है। जैसे—'मासेसु अस्सं बंधइ' उड़ने के तेव में घोड़े को बाँधता है, इस वाक्य में बाँधने-

१. स्वतन्त्रः कर्त्ता २।२।२. हे०।

२. प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा २।३।४६ पा०।

३. कर्त्तुं रोस्तिवतम कर्म १।४।४६. पा०।

वाला अपनी बांधने की क्रिया के द्वारा अश्व को चरागत करना चाहता है। अतः दन्धन व्यापार द्वारा अश्व ही कर्त्ता को अभीष्ट है, उद्द नहीं। उद्द की चाह अश्व को हो सकती है और उसके प्रलोभन से उसका बांधना सुगमतर हो सकता है, परन्तु कर्त्ता को उसकी चाह नहीं है। अतः मात्सेसु में कर्म संज्ञा नहीं हुई।

क्रियाविशेष द्वारा जो कर्त्ता को अत्यन्त अभीष्ट है, उसीकी कर्म संज्ञा होती है। जैसे—पयेण ओदनं भुंजइ—दूध से भात खाता है, वास्य में दूध भी भात की तरह कर्त्ता को प्रिय है, पर कर्त्ता अपने भोजन व्यापार द्वारा, जिसे सबसे अधिक पाना चाहता है, वह भात है, दूध नहीं। यतः दूध पेय है, वह तो केवल भोजन क्रिया के सम्पादन में सहायक है, अतः यहाँ पर पयेण की कर्म संज्ञा नहीं है, ओदनं की है।

(१) अनुक्त कर्म को बतलाने के लिए कर्म कारक में द्वितीया रिभक्ति का प्रयोग होता है। यथा—हरिं भजइ, गामं गच्छइ, वेअं पढइ, पुत्थकं पढइ, भाणं भाइअइ, अत्थं चिन्वइ।

(२) सप्तमी और प्रथमा रिभक्ति के स्थान पर क्वचित् द्वितीया रिभक्ति होती है। यथा—विज्जुज्जोमं भरइ रत्ति—विणुदुघोमं भात्ति रात्र्याम्—यहाँ सप्तमी के स्थान पर द्वितीया हुई है।

चउवीसं पि जिणवरा—चुविगतिवि जिणवराः—यहाँ प्रथमा के स्थान पर द्वितीया हुई है।

(३) संस्कृत के समान प्राकृत में भी द्विजर्मक धातुओं के योग में अपादान आदि कारकों में भी द्वितीया रिभक्ति होती है। यथा—

(१) माणवअं पहं पुच्छइ—यघे से शस्ता पूरता है।

(२) रुक्खं ओचिन्वइ फलाइ—वृक्ष के फलों को इकट्ठा करता है।

(३) माणवअं धम्मं सासइ—माणवक से धर्म बहता है।

(४) दाी, स्था और आस् धातुओं के पूर्व यदि अधि (अहि) उपसर्ग लगा हो तो इन क्रियाओं के आधार की कर्म संज्ञा होती है। यथा—अहिचिट्ठइ वइउंठं हरी।

(५) अहि और नि उपसर्ग जब पुरु माय विन् (विस्) धातु के परसं आते हैं, तो विन् के आधार को कर्म कारक होता है। यथा—अहि नियसइ सम्मग्गं।

(६) यदि वम् धातु के पूर्व उव, अणु, अहि और आ में से कोई भी उपसर्ग लगा हो तो क्रिया के आधार को कर्मकारक होता है। यथा—

१. कर्मणि द्वितीया २।३।२. पा०।

२. सप्तम्या द्वितीया ८।३।१ ३७ हे०

हरी वड्डंठं उवधसइ, अहियसइ, आउसइ वा ।

(७) अहिओ (अभिः)—चारों ओर, परिओ (परितः)—सत्र ओर, समया—समीप, निरहा (निदपा)—समीप, हा, पडि, धिअ, सत्रओ और उवरि उरि शब्दों को जिनमें सन्निकटता पाई जाय उनमें द्वितीया विभक्ति होती है । यथा—

अहिओ क्सिणं, परिओ क्सिणं, गामं समया, निरहा तंके, हा क्सिणा मत्तं, परिजणो रायाणं अहिओ चिट्ठइ ।

(८) अणु के योग में द्वितीया विभक्ति होती है । यथा—णइ अणुसिआ सेना, अणुहरि सुरा, मोहणं अणुगच्छइ हरी ।

(९) अधिक तथा हीन अर्थ का वाचक होने पर अणु के योग में भी द्वितीया विभक्ति होती है । यथा—अणुहरि सुरा—देवता हरि से हीन हैं ।

(१०) जन्म अंगुलि नदेश करना हो, इत्यंभूत—ये इस प्रकार के हैं—यह बतलाना हो, भाग—यह उनके हिस्से में पड़ा या पड़ता है, यह प्रकट करना हो अथवा पुनरुक्ति दिखलानी हो तो पडि, परि और अणु के योग में द्वितीया विभक्ति होती है । यथा—

(१) वच्छं पडि विज्जुअइ विज्जु—वृक्ष पर विजली चमकती है ।

(२) भसो विसणुं पडि अणु वा—विष्णु के वे भक्त हैं ।

(३) एच्छी हरिं पडि अणु वा—एधमी विष्णु के हिस्से में पड़ीं या पड़े ।

(४) वच्छं वच्छं पडि सिधइ—प्रत्येक वृक्ष को सोंचता है ।

(११) पूजार्थ में तु अव्यय और उल्लंघन अर्थ में अइ अव्यय के योग में द्वितीया विभक्ति होती है । यथा—

अइ देवा क्सिणो—दृष्य सब देवताओं की अपेक्षा एज्य हैं ।

सुसिप्पअं वच्छं—अच्छी तरह सोंचा हुआ वृक्ष ।

३. करण कारक—अपने कार्य की सिद्धि में कर्ता जिसकी सत्से अधिक सहायता लेता है, उसे करण कहते हैं । यथा—“रामेण बाणेन ह्यओ वाली” वाक्य में कर्ता राम वाली को मानने में सत्से अधिक सहायता बाण की लेता है; यों तो हाथ और धनुष भी सहायक हैं, पर वे अत्यन्त सहायक नहीं हैं, अतः इन्हें करणकारक नहीं माना जायगा । तात्पर्य यह है कि जो क्रिया-कार की निवृत्ति में साधन का बोध कराता है, उसे करणकारक कहते हैं । करण अर्थ में तृतीया विभक्ति होती है । यथा—रामो जलेन कडं पच्छाल्लइ ।

(१) प्रकृति—रभभागादि अ में तृतीया होती है । यथा—पइईअ चारु—
रभभार से गुन्दर, गोत्तेण गगो, रसेण महुरो, सुहेण जाइ । किं जगणजोद्वणरिड-
दणमणेण जम्मेण ।

(२) दिर् धातु के योग में विकल्प से द्वितीया विभक्ति भी होती है । यथा—
अच्छेहि अछडा या दोध्वइ—पारो से या पारो को म्पत्ता है ।

(३) समपूर्व णा धातु के कर्म की विकल्प से करण सज्ञा होती है । यथा—
पिअरेण, पिअरं या सण्णाणइ—पिता के साथ मेल से रहता है ।

(४) फणप्राप्ति या कार्यसिद्धि को बतलाने के लिए तृतीया विभक्ति होती
है । यथा—दुवाअसरसेहि वाअरणं मुणइ—दाइशवयं: व्याकरणं धूयते ।

(५) सइ, मामं, सायं और सई के योग में तृतीया विभक्ति होती है ।
यथा—पुत्तेण सहाअओ पिआ—पुत्रेण सदागतः पिता, लररणी रामेण साअं
गच्छइ, देवदत्तो जग्यदत्तेण समं नहाति ।

(६) पिधं, विना, नाना शब्दों के साथ तृतीया, द्वितीया या पञ्चमी विभक्ति
होती है । यथा—पिधं रामेण, रामत्तो, रामं या; जलेन, जलत्तो, जलं या; जलं
विना कमलं चिट्ठुं ण सकइ ।

(७) जिस विभूत अंग के द्वारा अङ्गी का विचार मालूम हो, उस अंग में
तृतीया विभक्ति होती है । यथा—पाएण खंजो, ण्णेण वहिरो—पैर का लँगड़ा;
कान का बहिरा ।

(८) जिस कारण या प्रयोजन से कोई कार्य किया जाता है या होता है,
उसमें तृतीया विभक्ति होती है । यथा—

दडेण घडो जाओ—दण्डे के कारण घड़ा उत्पन्न हुआ ।

पुण्णेण दिट्ठो हरि—पुण्य के कारण हरि दिखलायी पड़े ।

अज्झणेण वसइ—अभयन के प्रयोजन से रहता है ।

(९) जो जिस प्रकार से जाना जाय, उसके लक्षण में तृतीया विभक्ति
होती है । यथा—

जडाहि तावसो—जडाओं से तपस्वी जान पड़ता है ।

गमणेण रामं अणुहरइ—गमन में राम के सदृश है ।

(१०) कार्य, अर्थ, प्रयोजन, गुण तथा इसी प्रकार उपयोग या प्रयोजन प्रकृत
करने वाले शब्दों के योग में उपयोज्य या वापर्यक वस्तु को तृतीया विभक्ति होती
है । यथा—

तिणेण कज्जं भवइ ईसराणं—धनी लोगों का कार्य तिनके से भी हो जाता है ।

को अर्थो पुत्तेण जो ण विउसो ण धम्मिओ—उस पुत्र के उत्पन्न होने से क्या लाभ है, जो न विद्वान् है और न धर्मात्मा ।

(११) आर्य प्रयोगों में सप्तमी स्थान में तृतीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है । यथा—

तेणं कालेणं, तेणं समएणं—तस्मिन् काले, तस्मिन् समये—उस समय में ।

४. सम्प्रदान कारक—दानकार्य के द्वारा कर्ता जिसे सन्तुष्ट करता है, उसे सम्प्रदान कहते हैं । अर्थात् जिस पदार्थ के लिए कोई क्रिया की जाती है, उसका बोध कराने वाली संज्ञा के रूप को सम्प्रदान कारक कहते हैं । सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है । यथा—विष्पाय या विष्पस्स गावं देइ—विषाय गां ददाति ।

(१) रोअ—रूच् धातु तथा रूक् के समान अर्द्धवाली अन्य धातुओं के योग में प्रसन्न होनेवाला सम्प्रदान कहलाता है और सम्प्रदान को चतुर्थी होती है । यथा—

हरिणो रोयइ भत्ती—हरी को भक्ति अच्छी लगती है ।

वालकरस मोअथा रोअन्ते—वालकरस मोक्षकाः रोचन्ते, वालकर को छद्म अच्छे लगते हैं । मम तव वियारो रोयइ—मुझे तुम्हारा विचार अच्छा लगता है ।

तस्स वाआ मज्झं न रोयइ—उसकी बात मुझे अच्छी नहीं लगती ।

(२) सल्लाह (श्लाघ) हुण, (हुण्), चिट्ट (स्था) और (सय) शप् धातुओं के योग में जिसको जाना जाय उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है और सम्प्रदान को चतुर्थी विभक्ति होती है । यथा—

गोपी समरत्तो किसणाय किसणरस वा सल्लाहइ, चिट्टइ, सवइ वा—गोपी कामदेव के वश से श्रीकृष्ण के अर्थ अपनी श्लाघा करती है, स्थित होकर वृष्ण को अपना अभिप्राय बताती है तथा कृष्ण के लिए अपना उपालम्ब करती है ।

(३) धर—धङ् उधार लेना—उर्ज लेना धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है । यथा—

भत्ताय, भत्तस्स वा धरइ मोवखं हरी—हरि भक्त के लिए मोक्ष को धारण करते हैं ।

सामो अस्सपइणो सइं धरइ—श्याम ने अरयपति से एक सौ कर्ज लिए ।

(४) सिह (सृह) धातु के योग में जिते चाहा जाय, वह सम्प्रदानसंज्ञक होता है और सम्प्रदान को चतुर्थी विभक्ति में रखते हैं । यथा—

पुष्फाणं सिहइ—पुष्पभ्यः सृहयति—पूणों की चाहना करता है ।

(६) कुम्भ (कुम्भ,) दोह (दोह), ईम (ईम) तथा असूभ (असूभ) धातुओं के योग में तथा इन धातुओं के समान अर्द्धवाची धातुओं के योग में जिनके उपर क्रोधादि क्रियाँ ज्ञाते हैं, उनकी चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा हरिणो कुम्भइ, दोहइ, ईसइ, असूअइ, वा।

(६) निश्चित काल के लिए वेतन इत्यादि पर किसी को रत्ता जाग परिष्करण करवाता है, उस परिष्करण में जो करण होता है, उसकी विस्तृत से सम्प्रदान संज्ञा होता है। यथा—

सयेण सयस्स वा परिकीणइ—सौ रूपये के वेतन पर रत्ता गया।

(७) जिस प्रयोजन के लिए कोई कार्य किया जाव, उस प्रयोजन में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—

सुत्तिणो हरि भजइ—सुक्ति के लिए हरि को भजता है।

भक्ती णाणाय कप्पइ, संपज्जइ, जाअइ वा।

(८) हेमचन्द्र के मत से तादर्थ्य-उसके लिए-अर्थ में पृथी विभक्ति विज्ञप्त से आती है। यथा—

मुणिरस्स, मुणीणं देइ—मुनीनं मुनिभ्यो वा ददाति।

नमो नाणस्स—नमो ज्ञानाय, नमो गुहस्स—नमो गुरवे।

देवस्स देवाय नमो।

(९) द्वित और सुख के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—

वंभणस्स द्विअं सुहं वा—मालण के लिए द्वितकर या सुखकर।

(१०) नमो, सुत्थि, सुहा, सुभाहा, और भलं के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—

हरिणो नमो—हरि को नमस्कार हो।

पआणं सुत्थि—प्रजा का कल्याण हो।

पिआणं सुहा—पितरों को यह समर्पित है।

अलं मल्लो मल्लस्स—मल्ल दूसरे मल्ल के लिए पयांस-काफी है।

५ अपादाने कारक—जिससे किसी वस्तु का विशेष होता है, उसे अपादान-कारक कहते हैं। अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—धावत्तो अस्सत्तो पडइ—दौड़ते हुए घोड़े से गिरता है।

(१) दुगुञ्ज, विराम और पमाय तथा इनके समावार्थक शब्दों के साथ पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—पावत्तो दुगुञ्जइ, विरमइ वा; धम्मत्तो पमायइ।

(२) जिसके कारण डर मालूम हो अथवा जिसके डर के कारण रक्षा करनी हो, उस कारण को पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—चोरओ वीहइ, सत्पथो भयं, रामो कलहत्तो वीहइ।

(३) प्राकृत में 'भी' धातु के योग में पञ्चमी के अर्थ में चतुर्थी विभक्ति भी पायी जाती है। यथा—दुष्टाण को न वीहइ—दुष्टेभ्यः को न विभक्ति—दुष्टों से कौन नहीं डरता है।

(४) पञ्चमी के अर्थ में षष्ठी विभक्ति भी देखी जाती है। यथा—चोरस वीहइ—चौराद्विभक्ति—चोर से डरता है।

(५) पञ्चमी के स्थान में कहीं-कहीं तृतीया और सप्तमी विभक्ति भी पायी जाती है। यथा—चोरेण वीहइ—चौराद्विभक्ति, अन्तेउरे रमित्तमागओ राया—अन्तःपुराद् रन्त्यागत इत्यर्थः।

(६) पञ्चपूर्वक जि धातु के योग में जो असत्य होता है, उसकी अपादान संज्ञा होती है और पञ्चमी विभक्ति हो जाती है। यथा—अवभृणत्तो पराजयइ।

(७) जनधातु के कर्त्ता का भाद्विकारण अपादान होता है। यथा—नामत्तो कोहो अहिजाअइ, कोहत्तो मोहो अहिजाअइ।

६. प्रातिपदिक और कारक के अतिरिक्त स्वस्वामिभावदि सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। मुख्यतः सम्बन्ध चार प्रकार का है—स्वस्वामिभाव सम्बन्ध, अन्य जनक मात्र सम्बन्ध, अवयवावयविभार सम्बन्ध और स्थान्यादेश। सातुणो धर्ण में स्वस्वामिभाव सम्बन्ध है, दत्तः साधु धन का स्वामी है। पिअरस्त, पिउणो वा पुत्तं में अन्य-जनकमात्र सम्बन्ध है। पसुणो पाअं में अवयव-अवयविभाव सम्बन्ध है, पत्तः पत्तु अग्रणी है और पैर उसके अग्रयण है। गम्भू के स्थान में अश्चउ, अइ और अइस आदेश होता है, अत्तः यहाँ स्थान्यादेश सम्बन्ध माना जायगा। इन सम्बन्धों के अतिरिक्त कार्य-कारणादि और भी सम्बन्ध हैं सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा—वाअरस्त अंगाणि पससेइ—वैप के अंगों की प्रशंसा करता है। जहा तुह अंगाणि अईव मणोहराणि तहा तुमं सुमहुराई गीवाडं गाडं समत्थो सि—जैसे तुम्हारे अंग सुन्दर हैं, वैसे ही तुम सुमधुर गाना गाने में भी समर्थ हो।

(१) कर्त्तादि में भी सम्बन्धमात्र की निवृत्ता होने पर षष्ठी विभक्ति हो जाती है। यथा—तस्स वाहरणत्थं माहावाहिहाणा चेडी पेसिया—उत्त उपादे के हिष् मापणी नाम की दासी की भेजा।

तस्स कहियं—उत्तसे कहा, गाआण, गाऊए वा रुमरइ—माता को याद करता है।

(२) हेउ शब्द के प्रयोग में जो शब्द कारण वा प्रयोजन रहता है, वह और हेउ शब्द दोनों ही पद्यों में रते जाते हैं। यथा—अन्नस्स हेउस्स वसइ—अन्न प्राप्ति के प्रयोजन से रहता है। कस्य हेउस्स वसइ—किस कारण रहते हैं।

(३) द्वितीया-तृतीयादि विभक्ति के स्थान पर पद्यी विभक्ति होती है। यथा—सीमाधरस्स वन्दे—सीमाधरं वन्दे; तिस्सा मुहस्स भरिमो—वसग सुखं भरामः, धणस्स लुद्धो—अनेन लुब्धः; तेसिमेअमणाइण्णं—तैरेतदनाचरितम्; चिरस्स मुक्का—चिरेण मुक्ता; इअराइं जाण लहुअक्खराइं पायन्तिमिल्ल सहिआण—पादान्तेन सहितेभ्यः इतराणि।

७. अधिकरण कारक—कर्त्ता और कर्म के द्वारा किसी भी क्रिया का आधार अधिकरण कहलाता है। आधार के तीन भेद हैं—भौतिक, वैयक्तिक और अभिव्यापक। जिसके आधेय का भौतिक संश्लेष हो, उसे औपश्लेषिक आधार कहते हैं। जैसे—रुडे आसइ कागो—यहां चटाई से बैठनेवाले का भौतिक संश्लेष प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता है। जिसके साथ आधेय का बौद्धिक संश्लेष हो, उसे वैयक्तिक आधार कहते हैं। यथा—मोक्खे इच्छा अरिय—इच्छा का मोक्ष में अधिष्ठित होना बौद्धिक संश्लेष है। जिसके साथ आधेय का व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध हो, उसे अभिव्यापक कहते हैं। यथा—“तिलोसु तेलं” में तैल तिल के किसी एक भाग में नहीं रहता है, बल्कि समस्त तिल में व्याप्त रहता है।

(१) अधिकरण तथा दूर एवं अन्तिक अर्थ वाले शब्दों में सप्तमी विभक्ति होती है। कडे आसइ कागो; गामस्स दूरे अन्तिके वा।

(२) सामी, ईसर, अहिवइ, दायाद, साखी, पडिहू और पसुअ इन सात शब्दों के योग में पद्यी और सप्तमी ये दोनों ही विभक्तियाँ होती हैं। यथा—

गवाणं गोसु वा सामी, गवाणं गोसु वा पसूओ ।

(३) यदि किसी वस्तु का अपने समुदाय की अन्य वस्तुओं में से किसी विशेषण द्वारा वैशिष्ट्यनिर्देश किया जाय तो समुदायवाचक शब्द सप्तमी अथवा पद्यी विभक्ति में रखा जाता है। यथा—रुइसु कइणं वा हरिचन्दो सेट्टो—रुपियों में हरिश्चन्द्र सबसे बड़े कवि है। गवाणं गोसु वा कसिणा बहुकसोरा—गायों में काली गाय बहुत बृष देनेवाली है। छत्ताणं छत्तेसु वा गोइन्दो पडु—विचारियों में गोविन्द श्रेष्ठ है।

- (४) समृद्धि अर्थ में—महाणं समिद्धि—सुमहं ।
 (५) अभाव अर्थ में—मल्लिकानं अभाओ—निम्मल्लिकं ।
 (६) अत्यय—नाश में—हिमस्स अचओ—अइदिमं ।
 (७) असम्प्रति—अनौचित्य अर्थ में—निहा संपइ न जुजइ—अइनिहं ।
 (८) यथा का भाव—योग्यता—रूयस्स जोग्गं—अणुरूपम् (अनु रूपम्) ।
 ” वीप्ता—नयरं नयरं ति—पइनयरं (प्रतिनगरम्) ।
 ” ” —दिणं दिणं ति—पइदिणं (प्रतिदिनम्) ।
 ” ” —घरे घरे ति—पइघरं (प्रतिघरम्) ।
 ” अन्तिकम—सत्ति अणइकमिअ—जहाविहि (यथात्रिधि) ।
 ” ” —सत्ति अणइकमिऊण—जहासत्ति (यथाशक्ति) ।
 (९) आनुपूर्व्य—कम—जेट्टस्स अणुपुठ्वेण—अणुजेट्टं (अनुज्येष्टम्) ।
 (१०) यौगपद्य—एठ साथ होना—चक्केण जुगय—सचकं (मचकम्) ।
 (११) सम्पत्ति—छत्ताणं संपइ—सछत्तं (सक्षत्रम्) ।

(२) तत्पुरुष (तत्पुरिस)

(१) उत्तरपदार्थप्रधानतत्पुरुषः—जिसमें उत्तरपद के अर्थ की प्रधानता रहती है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। राइणो पुरिसो = रायपुरिसो में उत्तरपद पुरुष की प्रधानता है। तात्पर्य यह है कि तत्पुरुष समास में प्रथम पद विशेषण और द्वितीय पद विशेष्य रहता है, अतः विशेषण की प्रधानता रहने के कारण इसमें उत्तरपद की प्रधानता मानी जाती है।

तत्पुरुष समास के आठ भेद हैं—प्रथमा तत्पुरुष, द्वितीया तत्पुरुष, तृतीया तत्पुरुष, चतुर्थी तत्पुरुष, पञ्चमी तत्पुरुष, षष्ठी तत्पुरुष, सप्तमी तत्पुरुष और अन्य तत्पुरुष ।

(१) प्रथमा तत्पुरुष (पठमा तत्पुरिस)

(१) पुंन्व, अवर, अहर और उत्तर प्रथमान्त पद अपने अवयवी पठ्यन्त के साथ एसाधिरण में समास को प्राप्त होते हैं। यथा—पुंन्व कायस्स = पुंन्वकायो, अवरं कायस्स = अवरकायो, उत्तरं गामस्स = उत्तरगामो ।

(२) द्वितीया तत्पुरुष (द्वीया तत्पुरिस)

(२) सिअ, अतोत्त, पडिअ, गअ, अइअत्त्, पत्त और आवरण शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति के आने पर द्वितीया-तत्पुरुष समास होता है। यथा—

समासविचार

(१) “समसनं समासः”—संक्षेप को समास कहते हैं अर्थात् दो या अधिक शब्दों को इस प्रकार साथ रखना, जिससे उनके आकार में कमी आ जाय और अर्थ भी प्रकट हो जाय। तात्पर्य यह है कि परस्पर सम्बद्ध अर्थवाले शब्दों का एक रूप में मिलना समास है। समास से सिद्ध पद—सामानाधिकरण या समस्तपद कहलाते हैं। समस्तपद के प्रत्येक पद को विभक्तियों के साथ अलग-अलग करने को विग्रह कहते हैं।

समास मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं—(१) अव्ययीभाव, (२) तत्पुरुष, (३) बहुव्रीहि और (४) द्वन्द्व। अव्ययीभाव में पहले पद के अर्थ की, तत्पुरुष में दूसरे पद के अर्थ की, बहुव्रीहि में अन्य पद के अर्थ की तथा द्वन्द्व में सभी पदों के अर्थों की प्रधानता होती है।

तत्पुरुष समास दो प्रकार का होता है—(१) समानाधिकरण तत्पुरुष और (२) व्यधिहरण तत्पुरुष। समानाधिकरण तत्पुरुष का ही दूसरा नाम कर्मधारय समास है। द्विगु समास कर्मधारय का ही भेद है।

एकत्रय समास भी स्वतन्त्र नहीं है, यह द्वन्द्व का ही एक उपभेद है। कदा भी है—

दंदि य बहुव्रीहि कर्मधारय द्विगुयए चैव ।

तत्पुरिसे अव्ययीभावे एषसेसे य सत्तमे ॥

(१) अव्ययीभाव (अव्ययीभाव)

(१) अव्ययीभाव समास में पहला पद बहुधा कोई अव्यय होता है और यही प्रधान होता है। अव्ययीभाव समास का मग्न्या पद क्रियाविभक्ति सम्बन्ध होता है।

(२) विभक्ति आदि अर्थों में अव्यय का प्रयोग होने पर अव्ययीभाव समास होता है।

(१) विभक्ति अर्थ में—हरिष्मि इदं—अदिहरिः, अप्यंसि अन्तो—अरम्भ्यं ।

(२) मनीष अर्थ में—गुरुगो समीपं—उरगुरुः, मित्रगिरिनो समीपं—उर्वासुगिरिं ।

(३) पद्मात् अर्थ में—त्रिगुप्त पद्मा—अणुत्रिंशः, भोग्यतास पद्मा—अणुभोग्यं ।

संसाराओ भीओ = संसारभीओ (सगारभीत), वंमणाअ भट्टो = वसण-
भट्टो (वसं भट्ट), अत्ताणाओ भय = अत्ताणभय (अत्ताणभय), वग्धाओ
भयं = वग्धभय (व्याघ्रभय), रिणाओ मुत्तो = रिणमुत्तो (रिणमुत्त), चोराओ
भय = चोरभय (चोरभय), येणाओ भीओ = येणभीओ (स्तगभीत),
धोवाओ मुत्तो = धोवमुत्तो (स्तोघान्मुत्त) ।

(६) पष्ठी तत्पुरुष (छट्ठी तत्पुरिस)

(१) जिस तत्पुरुष समास का प्रथम पद पष्ठी विभक्ति में है, उसे पष्ठी तत्पुरुष कहते हैं । यथा—

देवस्स मदिरे = देवमदिरे (देवमदिरे), कत्ताण मुह = कत्ताणमुह (कम्पा
मुग्ग), नरेस्स इदो = नरिदो (नरेन्द्र), देवस्स इदो = देविदो (देवेन्द्र),
लोहस्स साला = लोहसाला (लोहसाला), विज्जाण टाण = विज्जाणटाण (विष्ण-
स्सा), समाहिणो टाण = समाहिणटाण (समाधिस्था न) देवस्स युई = देवयुई,
देवयुई (देवस्तुति), जिणाण इन्दो = जिणेन्दो, जिणिन्दो (जिनन्द्र),
विबुहाण अहिपो = विबुहाहिपो (विबुगधिप), वहूए मुह = वहूमुह (बधु-
सुत्त), धम्मस्स पुत्तो = धम्मपुत्तो (धर्मपुत्र), गणिअस्स अज्जाओ =
गणिआज्जाओ (गणिता वापर), देवस्स पुज्जाओ = देवपुज्जाओ (देवपूजक) ।

(७) सप्तमी तत्पुरुष (सप्तमी तत्पुरिस)

(१) सप्तमी तत्पुरुष समास उस करते हैं, जिसका प्रथम पद सप्तमी विभक्ति
में रहा है । यथा—

कलासु कुसलो = कलासुसलो (कलासुसल), वभणेसु उत्तमो = वभणो-
त्तमो (व्राह्मणोत्तम), जिणेसु उत्तमो = जिणोत्तमो (जिनात्तम), सभाए
पडिओ = सभापडिओ (सभापडित) कडाहे पक्को = कडाहपक्को (कडापक),
कम्भे कुसलो = कम्मकुसलो (कम्मकुसल), विज्जाए दक्को = विज्जादक्को
(विष्णदक्ष), नरेसु सेट्टो = नरसेट्टो (नरभेष्ट), नाणम्मि उज्जाओ = नाणोज्जाओ,
नाणुज्जाओ (शानोघात), गिह्हे जाओ = गिह्जाओ (गृहजात) ।

(८) अन्वितत्पुरुष (अण्वितत्पुरिस)

अन्वितत्पुरुष समास के चत्तुस्त्पुरुष, प्राद्वितत्पुरुष, गतितत्पुरुष, उपपत्तितत्पुरुष,
अलुक्क तत्पुरुष, मन्वितत्पुरुष तत्पुरुष, पद्य मयूर-वसन्नादि तत्पुरुष में सात भेद हैं ।

(क) नन् तत्पुरुष (न तत्पुरिस)

(१) जब तत्पुरुष समास में प्रथम शब्द न और दूसरा कार्य सजा या विद्यमान
है तो उस नन् तत्पुरुष कहते हैं । व्यञ्जन के पूर्व न न में और स्वर के पूर्व न न में
पढ़ा जाता है । यथा—

किसणं सिओ = किसणसिओ, इंदियं अतीतो = इंदियातीतो (इन्द्रिया-
तीतः), अग्नि पडिओ = अग्निपडिओ (अग्निपतितः), सिवं गओ = सिवगओ
(सिवगतः), सुहं पत्तो = सुहपत्तो (सुहप्राप्तः), भद्दं पत्तो = भद्दपत्तो (भद्द-
प्राप्तः), पलयं गओ = पलयगओ (प्रलयगतः), दिवं गओ = दिवगओ (दिवं-
गतः), कट्टं आवणो = कट्टावणो (कट्टावन्नः), मेहं अइअत्थो = मेघाइअत्थो
(मेघात्पत्तः), वीरं अरिसओ = वीररिसओ (वीराभितः) ।

(३) तृतीया तत्पुरुष (तईया तप्पुरिस)

(१) जत्र तत्पुरुष समास का प्रथम शब्द तृतीया विभक्ति में हो, तत्र उसे तृतीया तत्पुरुष कहते हैं । यथा—

साहूहिं वन्दिओ = साहुवंदिओ (साधुवन्दितः), जिणेण सरिसो = जिणसरिसो
(जिनसदृशः), ईसरेण कडे = ईसरकडे (ईश्वरकृतः), दयाए जुत्तो = दयाजुत्तो
(दयायुक्तः), गुणेहिं संपन्नो = गुणसंपन्नो (गुणसम्पन्नः), रसेण पुण्णं = रसपुण्णं
(रसपूर्णं), मायाए सरिसी = मावसरिसी (मात्रसदृशः), कुलगुणेण सरिसी =
कुलगुणसरिसी (कुलगुणसदृशः), रूवेण समाणा = रूवसमाणा (रूपसमाना),
आयारेण निउणो = आयारनिउणो (धाचारनिपुणः), णहेहि भिण्णो = णह-
भिण्णो (नव्यभिन्नः), गुडेन मिरसं = गुडमिरसं (गुडमिश्रं), महुणा मत्तो =
महुमत्तो (मधुमत्तः), पंकेन लित्तो = पंकलित्तो (पंकलितः), वाणेन विदो =
वाणविदो (वाणविदः) ।

(४) चतुर्थी तत्पुरुष (चत्थी तप्पुरिस)

(१) जिस तत्पुरुष समास का प्रथम पद चतुर्थी विभक्ति में हो, उसे चतुर्थी तत्पुरुष कहते हैं । यथा—

कलसाय सुवण्णं = कलससुवण्णं (कलशसुवर्णम्), मोक्खत्थं नाणं,
मोक्खाय नाणं वा = मोक्खनाणं (मोक्षज्ञानम्), लोयाय हिओ = लोयहिओ
(लोकाहितः), लोमास्स सुहो = लोमसुहो (लोम्बुलः), कुंभस्स मट्ठिआ =
कुंभमट्ठिआ (कुम्भमृत्तिका), भूयाणं बली = भूयबली (भूतबलि), वंभणाय
हिअं = वंभणहिअं (ब्राह्मणहितम्), गवरस हिअं = गवहिअं (गोहितम्), थंभाय
कट्टं = थंभकट्टं (थूपदारः), बहुजणस्स हिओ = बहुजणहिओ (बहुजनहितः) ।

(५) पञ्चमी तत्पुरुष (पंचमी तप्पुरिस)

(१) जत्र तत्पुरुष समास का पक्ष्य पद पञ्चमी विभक्ति में रहता है, तत्र उसे पञ्चमी तत्पुरुष कहते हैं । यथा—

(३) जिसमें विशेष्य विशेषण से पूर्व रहे, उसे विशेष्य पूर्वपद कहते हैं।
यथा—वीरो अ एसो जिणिदो = वीरजिणिदो (वीरजिनेन्द्रः), महंतो च सो
रायो = महारायो (महाराज.), कुमारी अ सा समणा = कुमारीसमणा,
कुमारसमणा (कुमारीव्रमण), कुमारी अ सा गविभणी = कुमारगविभणी
(कुमारगविभी) ।

(४) जिसके दोनों पद विशेषणवाचक हों, वह विशेषणोभयपद कहलाता
है। यथा—

रक्तो अ एस सेओ = रक्तसेओ आसो (रक्तसेतोऽथः), सीअं च तं
उण्हं य = सीउण्हं जलं (शीतोष्णं जलम्), रत्तं अ तं पीअं य = रत्तपीअं यत्थं
(रक्तपीतं वज्रम्) ।

(५) उपमानवाचक शब्द जिसके पूर्वपद में रहे, वह उपमानपूर्वपद कहलाता
है। यथा—

चंदो इव मुहं = चन्द्रमुहं (चन्द्रमुखम्), घणो इव सामो = घणसामो
(घणश्यामः), वज्जो इव देहो = वज्जदेहो (वज्जदहः), चन्दो इव आणणं =
चंद्राणणं (चन्द्राननम्) ।

(६) उपमानवाचक शब्द जिसके उत्तरपद में हो, उसे उपमानोत्तरपद कहते
हैं। यथा—

मुहं चंदो ष्य = मुहचंदो (मुखचन्द्र.), जिगो चंदो ष्य = जिगिचंदो
(जिनचन्द्र) ।

(७) जिसमें सम्भावना पायी जाय ऐसा विशेषण अपने विशेष्य के साथ
समास को प्राप्त करता है और इस प्रकार के समास को सम्भावनापूर्वपद समास कहते
हैं। यथा—

संजमो एव धणं = संजमधणं (संयमधनम्), तयो चिअ धणं = तवोधणं
(तपोधनम्), पुण्णं चेअ पाहेज्जं = पुण्णपाहेज्जं (पूर्यपायंशम्) ।

(८) जिसमें अवधारणा पायी जाय ऐसा विशेषण पद भी अपने विशेष्य पद
के साथ समस्त हो जाता है। यथा—

अन्नाणं चेअ तिमिरं = अन्नाणत्तिमिरं (अज्ञानत्तिमिरम्), नाणं चेअ धणं =
नाणधणं (ज्ञानधनम्), पयमेव पउमं = पयपउमं (पादपदम्) ।

द्विगु (दिगु)

(१) जिस तत्पुरुष के संबन्धावाचक शब्द पूर्वपद में हों, वह द्विगु समास
कहलाता है। द्विगु समास दो प्रकार का होता है—(१) एकवचनी और (२)
अनेकवचनी ।

न लोमो = अलोमो (अलोकः), न देवो = अदेवो (अदेवः), न आयारो = अणायारो (अणायारः), न इट्टं = अणिट्टं (अणिट्टम्), न दिट्टं = अदिट्टं (अदिट्टम्), न अयज्जं = अणयज्जं (अणयज्जम्), न विरई = अविरई (अविरिः), न सधम् = असधम् (असधम्), न ईसो = अणीसो (अनीशः), न कयं = अकयं (अकृतम्), न वंभणो = अवंभणो (अवाभणः) ।

(ख) प्रादितत्पुरुष (प्रादितत्पुरिस)

(१) जत्र तत्पुरुष समास में प्रथमपद 'प्र-प' आदि उपसर्गों में से कोई हो तो उसे प्रादि तत्पुरुष कहते हैं । यथा—

: पगतो आयरियो = पायरिओ (प्राचार्यः), उग्गओ वेल् = उव्वेलो (उव्वेलः), संगतो अत्थो = समत्थो (समर्थः), अइक्कंतो पल्लं = अइपल्लंओ (अतिपश्यन्), निग्गओ कासीए = निक्कासी (निष्काशी) ।

(ग) उपपद समास

(१) जत्र तत्पुरुष समास का प्रथमपद ऐसी संज्ञा या अव्यय में हो, जिसके न रहने से शब्द का रूप ही न रह सकता हो, तो उसे उपपद तत्पुरुष कहते हैं । यथा—

कुम्भं करइ च्चि = कुम्भआरो (कुम्भकारः), भासआरो (भाष्यकारः), सव्वण्णु (सर्वज्ञः), पायवो (पादपः), कच्छवो (कच्छपः), अहियो (अधिपः), गिहत्थो (गृहस्थः), सुत्तआरो (सूत्रकारः), वुत्तिआरो (वृत्तिकारः), निव्वया (निम्नगा), नीयगा (नीचगा), नम्मया (नर्मदा), सगडम्मि (समकृतमित्र), पावणासओ (पापनाशकः) ।

(घ) कर्मधारय

(१) जत्र प्रथमपद विशेषण हो और दूसरा विशेष्य हो तो उसे कर्मधारय कहते हैं । इसके सात भेद हैं—(१) विशेष्यपूर्वपद (२) विशेष्यपूर्वपद (३) विशेषणोभयपद (४) उपमानपूर्वपद (५) उपमानोत्तरपद (६) सम्भावनापूर्वपद (७) अवधारणापूर्वपद ।

(२) जिसमें विशेषण विशेष्य से पहले रहे, उसको विशेष्यपूर्वपद कहते हैं । यथा—रत्तो अ एसो घडो = रत्तघडो (रत्तघटः), सुंदरा य एसा पडिमा = सुंदर-पडिमा (सुन्दरप्रतिमा), परमं एत्थं पयं परमपयं (परमपदम्), पीरुत्तं वत्थं = पीरुवत्थं (पीरुवत्थम्), गोरो सो वसभो = गोवसभो (गौरवृषभः), महंतो सो वीरो = महावीरो (महावीरः), वीरो सो जिणो = वीरजिणो (वीरजिनः), कण्हो य सो पक्खो = कण्हपक्खो (कण्हपक्ष), सुद्धो सो पक्खो = सुद्ध-पक्खो (शुद्धपक्षः) ।

सेयं अंवरं जेसि ते = सेयंवरा (श्वेताम्बराः); महंता वाहुणो जरस सो महावाहू (महावाहू); पंच वत्ताणि जरस सो = पंचवत्तो सीहो (पञ्चवक्त्रः); चत्तारि गुहाणि जरस सो = चउम्मुहो (चतुर्मुखः) ब्रह्मा; तिण्णि नेत्ताणि जरस सो = तिणेत्तो (त्रिनेत्रः) हरो, एगो दंतो जरस सो = एगदंतो (एकदन्तः) गणेसो; वीरा नरा जम्मि गामे सो गामो = वीरणरो (वीरनरः), सुत्तो सिंघो जाए गुहाए सा = सुत्तसिहा गुहा (सुत्तसिहा गुफा); दिण्णाइं वयाइं जेसि ते = दिण्णवयो साहवो (दक्षप्रताः साधवः); पत्तं नाणं जं सो = पत्तनाणो मुणी (प्राप्तज्ञानः मुनिः) जिओ ऋमो जेण सो = जिअऋमो अऋलंओ (जितऋमोऽऋल्लः); नट्टं दंसणं जत्तो सो = नट्टदंसणो मुणी (नट्टदर्शनो मुनिः), जिओ अरिगणो जेण सो = जिआरिगणो अजिओ (जितारिगणोऽजितः) ।

(३९) व्यधिकरण बहुव्रीहि यह है, जिसके सभी पद प्रथमान्त न हों, केवल एक ही पद प्रथमान्त हो और दूसरा पद पण्डी या सप्तमी में हो । यथा—

चक्रं पाणिम्मि जरस सो चक्रपागी (चक्रपाणिः); चक्रं हत्थे जरस सो चक्रहत्थो भरहो (चक्रहस्तो भरतः); गंडीधं करे जरस सो गंडीधकरो अग्गुणो (गण्डीधकरोऽग्गुणः) ।

(२) विशेषणपूर्वपद बहुव्रीहि

(४०) जिस बहुव्रीहि का प्रथम पद विशेषण हो, उसे विशेषणपूर्वपद बहुव्रीहि कहते हैं । यथा—

णीलो कंटो जरस सो णीलकंटो मोरो (नीलकण्ठो मयूरः) ।

(३) उपमानपूर्वपद बहुव्रीहि

(५) जिस बहुव्रीहि का प्रथमपद उपमान हो, उसे उपमानपूर्वपद बहुव्रीहि कहते हैं । यथा—

चन्दो इव मुहं जाए = चंदमुहो कन्ना (चन्द्रमुखी कन्या); मियनयणाइं इय नयणाणि जाए सा = मियनयणा (युगनयना); कमलनयणाइं इय नयणाणि जाए सा = कमलनयणा (कमलनयना); गजाणण इय आणणो जरस सो = गजाणणो (गजानन); हंसगमणं इय गमणं जाए सा = हंसगमणा (हंसगमना) ।

(४) अवधारणपूर्वपद बहुव्रीहि

(६) जिसके पूर्वपद में अवधारणा पायी जाए, उसे अवधारणपूर्वपद बहुव्रीहि कहते हैं । यथा—

चरणं चैअ धणं जाणं = चरणधणा साहवो (चरणधनाः साधवः) ।

(२) समाहार अर्थ में जो द्विगु समास होता है, वह एकवचनी बहुलता है और उपमें सदा नपुंसकलिङ्ग और पुरुषचन होता है। यथा—

नवण्हं तत्तार्णं समाहारो = नववत्सं (नववत्सम्), चउण्हं कसायाणं समूहो = चउपसायं (चउपसायम्), तिण्हं लोगाणं समूहो = तिलोयं (तिलोयम्), तिण्हं लोआणं समूहो = तिलोई (तिलोई)।

(३) प्राकृत में कोई-कोई समाहारद्विगु पुलिङ्ग भी हो जाता है। यथा—

तिण्हं वियपपाणं समाहारो त्ति = तिवियपपो (तिवियपपो)।

(४) संज्ञा में जो द्विगु होता है, वह अनेकवचनी बहुलता है और इसमें वचन और लिङ्ग का कोई नियम नहीं रहता है। यथा—

विण्णि लोया = तिलोया (तिलोयाः), चउरो दिसाओ = चउदिसा (चउदिसाः)।

(३) बहुव्रीहि (बहुव्रीहि)

(१) जब समास में आगे हुए दो या अधिक पद किसी अन्य शब्द के विशेषण हों तो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। यथा—

पीअं अंवरं जस्स सो = पीआंवरो (पीताम्बरः)। इस समास के सुबन् दो भेद हैं—(१) समानाधिकरण बहुव्रीहि और (२) व्यधिकरण बहुव्रीहि। विशेषा-पेक्षया इसके सात भेद हैं—(१) द्विपद, (२) बहुपद (३) सहपूर्वपद (४) संख्यो-त्तरपद, (५) संख्योभयपद, (६) व्यतिहारलक्षण (७) दिगन्तराललक्षण।

(१) समानाधिकरण बहुव्रीहि

(२) समानाधिकरण बहुव्रीहि वह है, जिसके दोनों या सभी शब्दों का समास अधिकरण हो अर्थात् वे प्रथमान्त में हों। यथा—

पीअं अंवरं अस्स सो पीआंवरो (पीताम्बरः); आरुढो वाणरो जं रुक्खं सो = आरुढवाणरो रुक्खो (आरुढवाणरः वृक्षः); जिआणि इंदियाणि जेण सो = जिइंदियो मुणी (जितेन्द्रियः मुनिः); जिओ कामो जेण सो = जिअकामो महादेवो (जितकामः महादेवः); जिआ परीसहा जेण सो = जिअपरीसहो गीयमो (जितपरीषदः गौतमः); भट्टो आचरो जाओ सो = भट्टायारो जणो (भट्टाचारः जनः); नट्टो मोहो जाओ सो = नट्टमोहो राहू (नट्टमोहः साधुः); घोरं धंभचेरं जस्स सो = घोरधंभचेरो जंयू (घोरधमचारी—जम्बू); समं चउरंसं छंठाणं जस्स सो = समचउरंससंठाणो रामो (समचउरससंस्थानः रामः); कओ अत्थो जस्स सो = कयत्थो कण्हो (कृतार्थः कृष्णः); आसा अंवरं जेत्ति ते = आसंवरं (दिग्म्बराः);

(४) द्वन्द्व समास (द्वंद्व समास)

(१) दो या दो से अधिक संज्ञाएँ एक साथ रखी गई हों और उन्हें च (य) शब्द के द्वारा जोड़ा गया हो तो वह द्वन्द्व समास कहलाता है। इस समास के तीन भेद हैं—

(१) इतरेतर द्वन्द्व । (२) समाहार द्वन्द्व । (३) पुष्पेय द्वन्द्व ।

(१) इतरेतर द्वन्द्व

(२) जिस समास में आई हुई दोनों संज्ञाएँ अपना प्रमाण व्यक्तित्व रखती हों, उस समास को इतरेतर द्वन्द्व कहते हैं। यथा—

पुष्पं य पारं य = पुष्पपारनाहं (पुष्पपारं) ।

अजिभो अ संती अ = अजिपसंतिसो (अजितशान्ती) ।

उसहो अ वीरो अ = उसहवीरो (ऋषभरीरो) ।

देवा य दानया य गंधव्या य = देवदानगंधव्या (देवदानगन्धर्वोः) ।

पाणरो अ मोरो अ हंसो अ = पानरमोरहंसा (पानरमपूरहंसाः) ।

सात्रभो अ सावित्रा य = सात्रभसात्रिभाभो (श्रायहभारिके) ।

देवा य देवीभो अ = देवदेवीभो (देवदेव्यः) ।

सामू अ बहू अ = सामूबहूभो (श्वभूवहो) ।

भस्त्रं अ अभस्त्रो अ = भस्त्राभस्त्राणि (भस्त्राभस्त्रे) ।

पत्तं य पुष्कं य फलं य = पत्तपुष्कफलाणि (पत्रपुष्कफलाणि) ।

जीवा य अजीवा य = जीवाजीवा (जीवाजीवौ) ।

मुहं य दुक्त्वं य = मुहदुक्त्वाहं (मुग्दुक्ते) ।

सुरा य असुरा य = सुरासुरा (सुरासुराः) ।

हस्ता य पाया य = हस्तपाया (हस्तपादाः) ।

लाहा य अलाहा य = लाहालाहा (लाहालाभो) ।

सारं य असारं य = सारासारं (सारासारेम्) ।

रूपं य सोद्दरगं य जीव्वर्णं य = रूपसोद्दरगजीव्वर्णाणि (रूपसोद्दरगजीव्वर्णानि) ।

(२) समाहारद्वन्द्व

(३) जिस समास में अ या य शब्द से जुड़ी हुई संज्ञाएँ अपना वृथक अर्थ रखने पर भी समूह अर्थ का बोध कराती हों, उसे समाहार द्वन्द्व कहते हैं। यथा—

अस्यं य पारं य पृषिं समाहारो = अस्यपारं (अशनपानम्) ।

तवो अ संजमो अ पृषिं समाहारो = तवसंजमं (तपःसंयमम्) ।

नारं य दंसगं य चरिचं य पृषिं समाहारो = नारदंसगचरिचं

(ज्ञानदर्शनचरित्रम्) ।

(५) बहुपद बहुव्रीहि

(७) साधनदशा में दो में अधिक पदों का जो समास होता है, उसे बहुपद बहुव्रीहि कहते हैं। यथा—

मुओ सन्तो किलेसो जस सो = धुअसन्वकिलेसो जिणो (धुवसन्वकेशो विनः) ।

(६) नञ्, न बहुव्रीहि

(८) निषेध के अर्थसञ्च अ और अण के साथ जो बहुव्रीहि समास होता है, उसे नञ् या न बहुव्रीहि कहते हैं। यथा—

न अत्थि भयं जस्स सो = अभयो (भयः) ; न अत्थि पुत्तो जस्स सो = अपुत्तो (अपुत्रः) ; न अत्थि णाहो जस्स सो = अणाहो (अनाथः) ; न अत्थि पच्छिमो जस्स सो = अपच्छिमो (अपधिमः) ; न अत्थि उयरं जीए सा = अणुयरा (अनुदरा कथा) ; नत्थि उज्जमो जस्स सो = अणुजमो पुरिसो (अनुधमः पुरुषः) ; नत्थि अवज्जं जस्स सो = अणवज्जो मुणी (अनयो मुनिः) ।

(५) सहपूर्व बहुव्रीहि

(९) सह अव्यय जिस बहुव्रीहि समास में हो, उसे सहपूर्व बहुव्रीहि कहते हैं। सह अव्यय का तृतीयान्त पद के साथ समास होता है तथा आक्षेपार्थ अर्थ को छोड़ शेष अर्थों में सह स्थान पर स आदिष्ट होता है। यथा—पुत्रेण सह = सपुत्रो राया (सपुत्रः राजा) ; सीसेण सह = ससीसो आयरिओ (सशिष्यः नाचार्यः) ; पुण्णेण सह = सपुण्णो लोयो (सपुण्यः लोकः) ; पावेण सह = सपावो रक्खसो (सपावः राक्षसः) ; कम्मणा सह = सकम्मो नरो (सकर्मा नरः) ; फलेण सह = सकलं (सकलम्) ; मूलेण सह = समूलं (समूलं) ; चेलेण सह = सचेलं ष्वाणं (सचैलं स्नानम्) ; कलत्तेण सह = सकलत्तो नरो (सकलत्रं) ।

(८) प्रादि बहुव्रीहि

(१०) प, नि, वि, अव, अइ, परि आदि उपसर्गों के साथ जो बहुव्रीहि समास होता है, उसे प्रादि बहुव्रीहि कहते हैं। यथा—

प—पगिइं पुण्णं जस्स सो = पपुण्णो जणो (प्रपुण्यः जनः) ।

नि—निग्गवा एज्जा जस्स सो = निहुजो (निर्लजः) ।

वि—विग्गो धवो जाए सा = विहवा (विधवा) ।

अव—अवगतं रुवं जस्स सो = अवरुवा (अपरुषः) ।

अइ—अइकंठो मग्गो जेण सो = अइमग्गो र्हो (अतिमार्गः रथः) ।

परि—परिअभं जलं जाए सा = परिज्जला परिहा (परिज्जला परिखा) ।

निर्—निग्गवा दणा जस्स सो = निर्दयो जणो (निर्दयो जनः) ।

जोण्हा + आल = जोण्हालो (ज्योह्स्नावान्)

सद् + भास् = सद्दालो (शब्दवान्)

फडा + आल = फडालो (फट्टवान्)

आलु—ईसा + आलु = ईसालु (ईर्ष्यावान्)

दया + आलु + इयान् (इयालु)

नेह + आलु = नेहान् (स्नेहवान्)

एज्जा + आलु = एज्जालु (एज्जावान्), स्त्री० एज्जालुभा (एज्जावती)

इत्त—रुच्य + इत्त = रुच्यइत्तो (काव्यवान्)

माण + इत्त = माणइत्तो (मानवान्)

इर—गव्य + इर = गव्यइरो (गर्गवान्)

इछ—सोहा + इछ = सोहिछो (शोभावान्)

छाया + इछ = छाइछो (छायावान्)

जाम + इछ = जामइछो (यामवान्)

उछ—वियार + उछ = वियारछो (विचारवान्)

वियार + उछ = वियारछो (विचारवान्)

मंस + उछ = मंसुछो (रमधुवान्)

इष्प + उछ = इष्पुछो (दर्पवान्)

मण—धन + मण = धनमणो (धनवान्)

सोहा + मण = सोहामणो (शोभावान्)

बोहा + मण = बोहामणा (भयान)

मंत—हनु + मंत = हनुमंतो (हनुमान्)

सिरि + मंत = सिरिमंतो (भीमान्)

पुण्ण + मंत = पुण्णमंतो (पुण्यवान्)

वंत—धन + वंत = धनवंतो (धनवान्)

भत्ति + वंत = भत्तिवंतो (भक्तिमान्)

(१०) संस्कृत के तस् प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में त्तो और विरुल्लप से दो आदेश होते हैं^१। यथा—

सव्व + तस् (त्तो) = सव्वत्तो, सव्वदो, सव्वओ (सवंतः)

एक + तस् (त्तो) = एकत्तो, एकदो, एकओ (एकतः)

अन्न + तस् (त्तो) = अन्नत्तो, अन्नदो, अन्नओ (अन्नतः)

१. तो दो त्तो वा दा२।१६० तसः प्रत्ययस्य स्थाने त्तो, दो इत्यादेशौ नवतः ।

पुर + इत्ल = पुरित्त्वं (पुरे भवम्), स्त्री० पुरित्स्त्री ।

देट्ट (अधम्) + इत्ल = देट्टित्त्वं (अधो भवम्) स्त्री० देट्टित्स्त्री ।

उपरि + इत्ल = उपरित्त्वं (उपरि भवम्) ।

उल्ल—अप्य + उल्ल = अप्युल्लं (धातमनि भवम्) ।

तरु + उल्ल = तरुल्लं (तरु भवम्) ।

नगर + उल्ल = नगरुल्लं (नगरे भवम्) ।

(६) संस्कृत के चत् प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में 'व्य' आदेश होता है ।

यथा—

व्य—महु + व्य = महुव्य (मधुव्य)

मदुर + व्य = महुव्य पाडलिपुत्ते पासाया (मधुराव्य पाडलिपुत्ते पासायाः)

(७) संस्कृत के हर के स्थान पर प्राकृत में डिमा और त्तण विकल्प से आदेश होते हैं^१ । यथा—

पीण + इमा = पीणिमा (पीनत्वम्) ।

पीण + त्तण = पीणत्तणं, पीण + त्त = पीणत्तं (पीनत्वम्) ।

पुष्फ + इमा = पुष्फिमा (पुष्पत्वम्) ।

पुष्फ + त्तण = पुष्फत्तणं, पुष्फ + त्त = पुष्फत्तं (पुष्पत्वम्) ।

(८) चार अर्थ प्रकट करने के लिए—क्रिया की अभ्यावृत्ति की गणना अर्थ में संस्कृत के इत्वस् प्रत्यय के स्थान पर 'हुत्तं' आदेश होता है^२ । अर्थ प्राकृत में यह प्रत्यय स्तुचं हो जाता है । यथा—

प्य + हुत्तं = प्यहुत्तं (एकवृत्तः—एकवारम्) ।

दु + हुत्तं = दुहुत्तं (द्विवारम्) ।

ति + हुत्तं = तिहुत्तं (त्रिवारम्) ।

सय + हुत्तं = सयहुत्तं (चतवारम्) ।

सहस्स + हुत्तं = सहस्सहुत्तं (सहस्रवारम्) ।

(९) 'याल' अर्थ बतलानेवाले संस्कृत के मत्तप् प्रत्यय के स्थान पर आलु, इल्ल, उल्ल, आल, वन्त और मन्त आदेश होते हैं^३ ।

आल—रस + आल = रसालो (रसवान्) ।

जडा + आल = जडालो (जडामान्) ।

१. चतेब्बं: ८।२।१५० ।

२. इत्वय डिमा-त्तणो वा ८।२।१५४ ।

३. कुत्वसो हुत्तं ८।२।१५८ ।

४. घाल्विल्लोलाल वन्त-मन्तेत्तेर-मणा मतो: ८।२।१५६ ।

जोण्हा + आल = जोण्हालो (ज्योत्स्नावान्)

सह + आल = सहालो (शब्दान्)

फडा + आल = फडालो (फटावान्)

आलु—ईसा + आलु = ईसालु (ईर्ष्यावान्)

दया + आलु + दयालु (दयालु)

नेह + आलु = नेहालु (स्नेहवान्)

एजा + आलु = एजालु (लज्जामान्), स्त्री० एजालुभा (एजावती)

इत्त—गव्व + इत्त = कव्वइत्तो (काव्यवान्)

माण + इत्त = माणइत्तो (मानवान्)

इर—गव्व + इर = गव्विरो (गर्ववान्)

इल्ल—सोहा + इल्ल = सोहिल्लो (शोभावान्)

छाया + इल्ल = छादिल्लो (छायावान्)

जाम + इल्ल = जामइल्लो (यामवान्)

उल्ल—वियार + उल्ल = वियारुल्लो (विवारमान्)

वियार + उल्ल = वियारुल्लो (विचारवान्)

मंस + उल्ल = मंसुल्लो (रमश्रुवान्)

दप्प + उल्ल = दप्पुल्लो (दर्ववान्)

मण—धण + मण = धणमणो (धनवान्)

सोहा + मण = सोहामणो (शोभावान्)

घोहा + मण = घोहामणा (भावान्)

मंत—इनु + मंत = इनुमंतो (इनुमान्)

सिरि + मंत = सिरिमंतो (श्रीमान्)

पुण्ण + मंत = पुण्णमंतो (पुण्यवान्)

वंत—धण + वंत = धणवंतो (धनवान्)

भत्ति + वंत = भत्तिवंतो (भक्तिमान्)

(१०) संस्कृत के तस् प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में चो और विकल्प से दो आदेश होते हैं^१ । यथा—

सञ्ज + तस् (तो) = सञ्जत्तो, सञ्जदो, सञ्जओ (सर्जतः)

एक + तस् (तो) = एकत्तो, एकदो, एकओ (एकतः)

अन्न + तस् (तो) = अन्नत्तो, अन्नदो, अन्नओ (अन्नतः)

१. तो दो ततो वा कारा१६० तसः प्रत्ययस्य स्थाने तो, दो इत्यादेशौ भवतः ।

कु + तस् (त्तो) = कुत्तो, कुत्तो, कुत्तो (कुतः)

ज + तस् (त्तो) = जत्तो, जत्तो, जत्तो (जतः)

त = तस् (त्तो) = तत्तो, तत्तो, तत्तो (ततः)

इ + तस् (त्तो) = इत्तो, इत्तो, इत्तो (इतः)

(११) संस्कृत के ऋप् प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में हि, ह और स्थ प्रत्यय आदेश होते हैं^१। यथा—

ज + ऋ (हि) = जहि, जह, जत्थ (यत्र)

त + ऋ (हि) = तहि, तह, तत्थ (तत्र)

क + ऋ (हि) = कहि, कह, कत्थ (कुत्र)

अन्न + ऋ (हि) = अन्नहि, अन्नह, अन्नत्थ (अन्यत्र)

(१२) स्वार्थिक क प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में विकल्प से अ, इल्ल और उल्ल प्रत्यय आदेश होते हैं^२। यथा—

अ—चंद + अ = चंदआं, चंदो (चन्द्रकः)

हृषय + अ = हृषयअं, हृषयं (हृषयम्)

यहुअ + अ = यहुअअं, यहुअं (यहुम्)

इल्ल—पल्लव + इल्ल = पल्लविल्लो, पल्लवो (पल्लवः)

पुरा + इल्ल = पुरिल्लो, पुरा (पुरा)

उल्ल—पिअ + उल्ल = पिउल्लो, पिआ (पिता)

हृत्थ + उल्ल = हृत्थुल्लो, हृत्थो (हृत्तः)

(१३) अंकोठ शब्द को छोड़ शेष वीजराशो शब्दों से लगने वाले तैल प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में 'एल्ल' प्रत्यय जोड़ा जाता है^३। यथा—

कड्ड + तैल = कड्डएल्लं (कड्डतैलम्)

अंकोठ + तैल = अंकोठएल्लं (अंकोठतैलम्)

(१४) यद्, तद् और एतद् शब्दों से पर में आनेवाले परिमाणार्थक प्रत्यय के स्थान में इत्तिअ आदेश होता है और एतद् शब्द का लुक् भी होता है^४। यथा—

यत् (ज) + इत्तिअ = जित्तिअं (यावत्)

तद् (त) + इत्तिअ = तित्तिअं (तावत्)

एतद् + इत्तिअ = इत्तिअं (एतावत्)

१. ऋपो हि-हित्वाः ८।२।१६१ ऋप् प्रत्ययस्य एते भवन्ति ।

२. स्वार्थे कथ वा ८।२।१६४

३. अन्ङ्गौठात्तैलस्य डेल्लः ८।२।१६५

४. यत्तदैतदोत्तोरित्तिअ एतल्लुक् च ८।२।१६६

(१५) इद्म्, किम्, यद्, तद् और एतद् शब्दों से पर में आनेवाले परि-
माणार्थक प्रत्यय के स्थान में डेत्तिअ, डेत्तिल और डेद्दह आदेश होते हैं। इन
प्रत्ययों के आने पर एतद् शब्द का लुक् हो जाता है^१। यथा—

ज + एत्तिअ = जेत्तिअं	}	यावत्
ज + एत्तिल = जेत्तिलं		
ज + एद्दह = जेद्दहं		
त + एत्तिअ = तेत्तिअं	}	सावत्
त + एत्तिल = तेत्तिलं		
त + एत्तह = तेत्तहं		
एत + एत्तिअ = एत्तिअं	}	एतावत्, इयत्
एत + एत्तिल = एत्तिलं		
एत + एद्दह = एद्दहं		
क + एत्तिअ = केत्तिअं	}	कियत्
क + एत्तिल = केत्तिलं		
क + एद्दह = केद्दहं		

(१६) भाववाचक संस्कृत के त्व और तल प्रत्यय के स्थान पर ये ही प्रत्यय
रक्ष जाते हैं^२। यथा—

मृदुक + त्व = मउअत्त + ता = मउअत्तता, मउअत्तया (मृदुकत्वता) ।

(१७) एक शब्द के उत्तर में होनेवाले दा प्रत्यय के स्थान में सि, सिअं और
इआ आदेश होते हैं^३। यथा—

एक + सि = एकसि	}	एवदा
एक + सिअं = एकसिअं		
एक + इआ = एकइआ		

(१८) भ्रू शब्द से स्वार्य में मया और डमया ये दो प्रत्यय होते हैं^४। यथा—

भ्रू (सु) + मया = सुमया	}	भ्रूः
भ्रू (अ) + डमया = डमया		

(१९) शनि शब्द से स्वार्थिक डिअम् प्रत्यय होता है^५। यथा—

१. इदकिमथ डेत्तिअ-डेत्तिल-डेद्दहा: ५।२।१५७

२. स्वादे: स: ५।२।१७२

४. भ्रूवो मया डमया ५।२।१६७

३. वैकाह: सि सिअं इआ ५।२।१६२

५. शनेषो डिअम् ५।२।१६८

शनैः + इअ = सणिअं (शनैः), सणिअमवगुढो ।

(२०) मनाक् शब्द से स्वार्थिक डयम् और डिअम् प्रत्यय विकल्प से होते हैं । यथा—

मनाक् (मण) + अय = मणयं
मनाक् (मण) + इय = मणियं, मणा } मनाक्

(२१) मिध शब्द से स्वार्थिक डालिअ प्रत्यय विकल्प से होता है^२ । यथा—
मिध (मीस) + आलिअ = मीसाळिअं, मीसं (मिधम्)

(२२) दीर्घ शब्द से स्वार्थिक रो प्रत्यय विकल्प से होता है^३ । यथा—
दीर्घ (दीह) + र = दीहरं, दीहं (दीर्घम्)

(२३) विद्युत्, पत्र, पीत और अन्ध शब्द से स्वार्थ में ल प्रत्यय विकल्प से होता है^४ । यथा—

विद्युत् (विज्जु) + ल = विज्जुला, विज्जू (विद्युत्)

पत्र (पत्त) + ल = पत्तलं, पत्तं (पत्रम्)

पीत (पीअ) + ल = पीअलं, पीअलं, पीअं (पीतम्)

अन्ध + ल = अंधलो, अंधो (अन्धः)

(२४) नव और एक शब्द को स्वार्थ में विकल्प से छो प्रत्यय होता है^५ ।

यथा—

नव + छ = नवल्लो, नवो (नवरुः)

एक + छ = एकल्लो, एको (एकरुः)

अवरि + ल्ल = अवरिल्लो

(२५) पथ शब्द से होने वाले ण के स्थान में इफ्ट् प्रत्यय होता है^६ ।

यथा—

पथ + इअ = पथिओ (पान्थः)

(२६) आत्म शब्द से होनेवाले ईय के स्थान में ण्य आदेश होता है^७ ।

यथा—

अप्प + णय = अप्पणयं (आत्मीयम्)

१. मनाको न या डयं च ८।२।१६६

२. मिधाडुलिअः ८।२।१७०

३. रो दीर्घादि ८।२।१७१

४. विद्युत्पत्र-पीतान्वात्सः ८।२।१७३

५. ल्लो नवेकाडा ८।२।१६५

६. पथो एत्येकट् ८।२।१५२

७. ईयस्यात्मनो ण्यः ८।२।१५३

(२) सर्वाङ्ग शब्द से विहित इन के स्थान में इक आदेश होता है^१ । यथा—
सर्व्वंग + इअ = सर्व्वंगिओ (सर्वाङ्गीणः)

(२८) पर और राजन् शब्द से सम्बन्ध बतलाने के लिए क्क प्रत्यय होता है^२ । यथा—

पर + क्क = परक्कं (परकीयम्)

राय + क्क = राइक्कं (राजकीयम्)

(२९) संस्कृत तद्धितान्त रूपों के ऊपर से प्राकृत के रूप बनाये जाते हैं ।

यथा—

घनिन् = घनी — घणी

कानीनः = फाणीणो

आर्थिकः = अर्थिओ

मदीयम् = मईयं

तपस्विन् = तपस्वी = तवस्ती

पीनता = पीणया

भैक्षम् = भिखलं

राजन्मः = रायणो

आस्तिकः = अस्थिओ

कोशेयम् = कोसेयं

आर्षम् = आरिसं

पितामहो = पिभामहो

ददा = जया; कदा = कया, सर्वदा = सब्बया, तदा = तय, अन्यदा = अण्णदा;

सर्वथा = सब्बदा ।

तर और तम प्रत्यय

प्राकृत में एक से श्रेष्ठ और सबसे श्रेष्ठ का भाव बतलाने के लिए तर (अर), तम (अम), ईयस् (ईअस) और इष्ट (इट) का प्रयोग संस्कृत के समान ही होता है । इन तुलनात्मक विशेषणों की (Degree of Comparison) की तालिका दी जाती है ।

तिक्ख (तीक्ष्ण)	तिक्खअर (तीक्ष्णतर)	तिक्खअम (तीक्ष्णतम)
उज्जल (उज्जल)	उज्जअर (उज्जलतर)	उज्जअम (उज्जलतम)
परमहिय (प्रगृहीत)	परमहियअर (प्रगृहीततर)	परमहियतम (प्रगृहीततम)
थोव (स्तोक)	थोवअर (स्तोकतर)	थोवअम (स्तोकतम)
अप्प (अल्प)	अप्पअर (अल्पतर)	अप्पअम (अल्पतम)
अहिअ (अधिक)	अहिअअर, अहिअअर (अधिकतर)	अहिअअम, अहिअअम (अधिकतम)
पिअ (प्रिय)	पिअअर (प्रियतर)	पिअअम (प्रियतम)
इल्ल, छल्ल (छुषु)	इल्लअर (छुषुतर)	इल्लअम (छुषुतम)

१. सर्वाङ्गादीनस्येकः ८।२।१५१

२. पर-राजन्मां क-डिको च ८।२।१५६

अप्य (अल्प)	कणीअस (कनीयस्)	कणिट्ट, कणिट्टम (कनिष्ठ)
बट्ट	भूयस (भूयस्)	भूइट्ट (भूयिष्ठ)
पावी (पापी)	पावीयस (पापीयस्)	पाविट्ट (पापिष्ठ)
गुरु	गरीयस (गरीयस्)	गरिष्ठ (गरिष्ठ)
जेट्ट (ज्येष्ठ)	जेट्टयर (ज्येष्ठतर)	जेट्टयम (ज्येष्ठतम)
विउल (विपुल)	विउलअर	विउलअम (विपुलतम)
पड्ड (पड्ड)	पड्डीअस, पड्डअर (पटीयस्)	पडिड्ड, पड्डअम (पट्टतम)
धणी (धनी)	धणिअर	धणिअम
महा	महत्तर	महत्तम
बुड्ड (वृद्ध)	जायस (ज्यायस्)	जेट्ट (ज्येष्ठ)
थूल (स्थूल)	थूलअर (स्थूलतर)	थूलअम (स्थूलतम)
बहुल	बंहीअस (बंहीअस्)	बंदिट्ट (बंदिष्ठ)
दीहर (दीर्घ)	दीहरअस (दीर्घतर)	दीहरअम (दीर्घतम)
अंतिम (अन्तिम)	नेदीअस (नेदीयस्)	नेदिट्ट (नेदिष्ठ)
दूर	दवीअस (दवीयस्)	दविट्ट (दविष्ठ)
पाचअ (पाचक)	पाचअअर (पाचरतर)	पाचअअम (पाचरुतम)
विउस (विद्वान्)	विउसअर (विद्वत्तर)	विउसअम (विद्वत्तम)
मिउ (मृदु)	मिउअर (मृदुतर)	मिउअम (मृदुतम)
धम्मी (धर्मी)	धम्मीअस (धर्मीयस्)	धम्मिड्ड (धर्मिष्ठ)
खुद्द (क्षुब्ध)	खुद्दअर (क्षुब्धतर)	खुद्दअम (क्षुब्धतम)
मइम (मत्तिमान्)	मईअस (मतीयस्)	मइड्ड (मतिष्ठ)

नवाँ अध्याय

क्रियाविचार

प्राकृत में क्रिया शब्दों के मूल रूप को धातु कहते हैं। धातुओं में विविध प्रत्यय जोड़ने पर क्रिया के रूप पन्ते हैं।

प्राकृत में क्रियारूपों के विकास पर सादृश्य का प्रभाव संज्ञा आदि रूपों की अपेक्षा और भी अधिक व्यापक रूप में मिलता है। द्विवचन का लोप, कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य के रूपों का प्रायः एकीकरण, आत्मनेपद के रूपों का हास, विविध काल रूपों में अनुरूपता, क्रिया के विभिन्न रूपों में ध्वनिपरिवर्तन के कारण समानता आदि प्राकृत के क्रियाविकास की कुछ मुख्य विशेषताएँ हैं। संस्कृत धातुएँ भ्वादि, भदादि, जुहोत्यादि, स्वादि, तुदादि, रुधादि, लनादि, क्रवादि और चुरादि इन दस गणों में विभक्त हैं। इन गणों के अनुसार ही विभक्तियों के जुड़ने के पूर्व धातु में परिवर्तन होता है। परन्तु इन सबमें भ्वादि रूपों को ही व्यापनता प्राकृत के क्रियापदों के विज्ञान में मिलती है। कालरचना की दृष्टि से वर्तमान, भूत, आज्ञा, विधि, भविष्य और क्रिया-तिपत्ति के प्रयोग प्राकृत में दिखलायी पड़ते हैं। सदायक क्रिया के साथ वृद्धत रूपों का व्यवहार बहुलता से उपलब्ध होता है। अतएव यह कहा जा सकता है कि सादृश्य और ध्वनिविकास के कारण क्रिया के रूप अधिक सरल हो गये हैं। संस्कृत के समान क्रिया-रूपों में पेचीदगी नहीं है।

क्रियारूपों की जानमारी के सम्बन्ध में निम्न नियम स्मरणीय हैं—

(१) प्राकृत में लिप् आदि प्रत्ययों को लिङ् कहते हैं। अकारान्त धातुओं को छोड़कर शेष धातुओं में आत्मनेपदी और परस्मैपदी का भेद नहीं माना जाता। हाँ, अदन्त या अकारान्त धातुएँ उभयपदी होती हैं।

(२) अकारान्त आत्मनेपदी धातुओं के प्रथम और मध्यम पुरुष एकवचन के स्थान में क्रमशः ए और से आदेश विकल्प से होते हैं। यथा—तुवरण < त्वरते, तुवरसे < त्वरसे।

(३) अदन्त धातुओं से 'मि' के पर में रहने पर पूर्व के 'अ' का आत्म विकल्प से होता है। यथा—हसामि, हसमि इत्यादि।

(४) अकारान्त धातुओं से मो, मु और म् पर में रहता पूर्व के अकार के स्थान में इ और आ होते हैं। कहीं-कहीं ए भी हो जाता है। यथा—हसिमो, हसामो, हसेमो, हसिमु, हसेमु इत्यादि।

(६) स्वरान्त धातु से भूतकाल में सभी पुरुषों और वचनों में विहित प्रत्ययों के स्थान पर ही, सी और हीअ आदेश होते हैं। यथा—काही, कासी, काहीअ; ठाही, ठासी और ठाहीअ (आकार्पात्, अकरोत्, चकार; अस्थात्, अतिष्ठत्, तस्थौ)।

(६) व्यञ्जनान्त धातुओं से भूतकाल में विहित सभी प्रत्ययों के स्थान में हअ आदेश होता है। यथा—गहणीअ < अग्रहीत्, अष्टुद्गात्, जग्राह।

(७) अस धातु के सभी पुरुषों के पुरुषवचन में आसि और श्दुवचन में अहेसि आदेश होता है।

(८) वर्तमानकाल और आज्ञार्थ धातुओं में अन्त्य अ हो तो विकल्प से प्रत्यय के पूर्ववर्ती उस अ को विकल्प से ए हो जाता है। यथा—हसेइ < हसति।

(९) वर्तमानकाल के समान ही भविष्यत् काल के प्रत्यय होते हैं, किन्तु मि, मो, मु, म प्रत्ययों से पूर्व विकल्प से हिस्सा और हिस्था आदेश होते हैं।

(१०) धातु से परे भविष्यत् काल के मि प्रत्यय के स्थान पर स्सं विकल्प से होता है।

(११) भविष्यत्काल में पूर्व अ के स्थान पर इ और ए होता है।

(१२) विधि और आज्ञार्थ में धातु से परे इज्जसु, इज्जहि, इज्जे प्रत्यय जोड़े जाते हैं। प्रत्यय का श्लेष होने से धातु का मूल रूप ज्यों का त्यों भी शेष रह जाता है।

(१३) क्रियातिपत्ति में उज्ज, उजा, न्त और माण प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

(१४) क्रियातिपत्ति में उज्ज, उजा प्रत्यय जोड़ने के पूर्व सभी पुरुष और सभी वचनों में अकार को एत्व हो जाता है।

कर्त्तरि में धातुओं के विकरणों के नियम

(१५) व्यञ्जनान्त में अ विकरण जोड़ने के अनन्तर प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

यथा—

भण् + अ—भण + इ = भणइ < भणति

कह् + वा—कह, कह + इ = कहइ < कथयति

सम् + अ—सम, सम + इ = समइ < शशयति

हस् + अ—हस, हस + इ = हसइ < हसति

आप् + अ—आच, आव + इ = आचइ < आप्नोति

सिच् + अ—सिच, सिच + इ = सिचइ < सिचति

रन्ध् = अ—रन्ध, रन्ध + रन्ध + इ = रन्धइ < रन्धति

मुष् + अ—मुस, मुस + इ = मुसइ < मुष्णाति

तण् + अ—तण, तण + इ = तणइ < तनोति

(१६) अकारान्त धातुओं के अतिरिक्त जेप स्वरान्त धातुओं में अ विकरण विकल्प से जुड़ता है । यथा—

पा + अ—पाअ, पाअ + इ = पाअइ, पा + इ = पाइ < पाति
जा + अ—जाअ, जाअ + इ = जाअइ; जा + इ = जाइ < याति
धा + अ—धाअ, धाअ + इ = धाअइ; धा + इ = धाइ < धयति, धायति, दधाति
क्का + अ—क्काअ, क्काअ + इ = क्काअइ; क्का + इ = क्काइ < क्कायति
जंभा + अ—जंभाअ, जंभाअ + इ = जंभाअइ; जंभा + इ = जंभाइ < जंभते
वा + अ—वाअ, वाअ + इ = वाअइ, वा + इ = वाइ < याति
मिला + अ—मिलाअ, मिलाअ + इ = मिलाअइ, मिला + इ = मिलाइ < म्लायति
विक्री—विक्री + अ—विक्रीअ, विक्रीअ + इ = विक्रीअइ, विक्री + इ = विक्रीइ < विक्रीणाति

हो + अ—होअ, होअ + इ = होअइ, हो + इ = होइ < भयति

(१७) उकारान्त धातुओं में उ के स्थान पर उव आदेश होने के अनन्तर अ विकरण जोड़ा जाता है । यथा—

णु—णुव् + अ—णुवअ + इ = णुवइ < लुते
नि + णु—निणुव् + अ = निणुवअ + इ = निणुवइ < निलुते
हृ—हृव्, हृव् + अ—हृवअ + इ = हृवइ < लुहोति
लु—लुव्, लुव् + अ = लुवअ + इ = लुवइ < लुवते
रु—रुव्—रुव् + अ = रुवअ + इ = रुवइ < रौति
कु—कुव्, कुव् + अ = कुवअ + इ = कुवइ < भौति
सू—सूव् + अ = सूवअ + इ = सूवइ < सूते, पवसइ < प्रसूते

(१८) झकारान्त धातुओं में झ के स्थान पर अर् हो जाने के अनन्तर अ विकरण जोड़ा जाता है । यथा—

कृ—कृर्, कृर् + अ = कृअ, कृअ + इ = कृअइ < करोति
धु—धुर्, धुर् + अ = धुअ + इ = धुअइ < धरति
सृ—सृर्, सृर् + अ = सृअ + इ = सृअइ < क्रियते
वृ—वृर्, वृर् + अ = वृअ + इ = वृअइ < वृणोति, वृणुते
सृ—सृर्, सृर् + अ = सृअ + इ = सृअइ < सरति
हृ—हृर्, हृर् + अ = हृअ + इ = हृअइ < हरति
तृ—तृर्, तृर् + अ = तृअ + इ = तृअइ < तरति

(१९) उपान्त्य ऋ वर्णवाली धातुओं में ऋकार के स्थान पर अरि आदेश होता है, पश्चात् अ विकरण जोड़ा जाता है । यथा—

कृप्—कृ = करि—करिस् + अ = करिस + इ = करिसइ < कर्षति

सृप्—सरिस् + अ = सरिस + इ = सरिसइ < सृष्यते

वृप्—वरिस् + अ = वरिस + इ = वरिसइ < वर्षति

हृप्—हरिस् + अ = हरिस + इ = हरिसइ < हृष्यति

(२०) इकारान्त और उकारान्त धातुओं में इकार के स्थान पर ए और उकार के स्थान पर ओ होता है। यथा—

नी—ने + इ = नेइ < नयति, नीति < नयन्ति

उढी—उडे + इ = उडेइ < उढयते, उडेति < उढयन्ते

(२१) कुछ व्यञ्जनान्त धातुओं के उपान्त्य स्वर को दीर्घ होता है। यथा—

रुप्—रुस्—रुस + इ = रुसइ < रुष्यति

तुप्—तुस्—तूस + इ = तूसइ < तुष्यति

शुप्—शुस्—शूस + इ = शूसइ < शुष्यति

पुप्—पुस्—पूस + इ = पूसइ < पुष्यति

शिप् = सीस + इ = सीसइ < शिष्यते

(२२) धातुओं के नियत स्वर के स्थान पर प्रयोगानुसार अन्य स्वर होता है।

ह्वइ—ह्विइ < भ्रति

चिणइ—चुणइ < चिनोति

सइहणं—सइहाणं < अइधानम्

धावइ—धुवइ < धावति

दा—दे—देइ < दाति, दाति

छा—छे—छेइ < णति

विह्वा—विहे—विहेइ < विदधाति, विभाति

वू—वे—वेमि < मरीमि

(२३) कुछ धातुओं के अन्त्य व्यञ्जन को द्वित्व होता है। यथा—

फुडइ, फुडइ < स्फुटति

चलइ, चलइ < चलति

निमीळइ, निमिल्लइ < निमीळति

संमोळइ, उम्मिल्लइ < सम्मोळति

जिम्मइ

परिअट्टइ < पर्यटति

सकइ < शक्नोति

तुट्टइ < तुटति

नट्टइ < नटति

नस्सइ < नश्यति

कुप्पइ < कुप्पति, नृत्यति

(२४) कुछ धातुओं में संसृष्ट के विकरण लुप्त जाने पर च के स्थान में ञ आदेश होता है। यथा—

संपञ्जइ < सम्पजते, सिमइ < सिचति; रिञ्जइ < रिचते

वर्तमानकाल के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष (Third Person)	इ, ए	न्ति, न्ते, इरे
मध्यम पुरुष (Second Person)	सि, से	इथा, इ
उत्तम पुरुष (First Person)	मि	मो, मु, म

भूतकाल के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ईअ	ईअ व्यञ्जनान्त धातुओं के लिए
म० पु०	ईअ	ईअ " "
उ० पु०	ईअ	ईअ " "

स्वरान्त धातुओं में तीनों पुरुष और दोनों वचनों में ली, ही, हीअ ये तीन प्रत्यय जोड़े जाते हैं ।

भविष्यत्काल के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दिइ, दिए	दिन्ति, दिन्ते, दिरे
म० पु०	दिसि, दिसे	दिइ थ, दिइ
उ० पु०	इसं, स्सामि, हामि, हिमि	स्सामो, हामो, हिमो, स्सामु, हामु, हिमु, स्साम, हाम, हिम, हिस्सा, हिइथा ।

विधि और आज्ञाधिक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	उ	न्तु
म० पु०	दि, सु	इ
उ० पु०	मु	मो

इज्जमु, इज्जहि और इज्जे प्रत्यय भी उकारान्त धातुओं में जोड़े जाते हैं और प्रत्यय का लोप भी होता है ।

क्रियासिपत्ति के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ज्, ज्जा, न्त, माण	ज्ज, ज्जा, न्त, माण
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

(२५) वर्तमान का अर्थ बतलाने के लिए वर्तमानकाल; अतीत—भूत का अर्थ बतलाने के लिए भूत; भविष्य का अर्थ प्रकृत करने के लिए भविष्यकाल; सम्भावना (Possibility) या संशय (Doubt) विधि, निमन्त्रण, आमन्त्रण, अधीष्ट (Speaking of honorary Duty), संप्रश्न (Questioning) और प्रार्थना; इच्छा, आशीर्वाद, आज्ञा, शक्ति (Ability) एवं आवश्यकता (Necessity) अर्थ में विधि या अनुज्ञा का प्रयोग और जब परस्पर संज्ञेयवाले दो वाक्यों का एक संज्ञेयवाक्य बने और उसका बोध करानेवाली क्रिया कोई सांकेतिक क्रिया जब अशक्य प्रतीत हो, सब क्रियारतिपत्ति का प्रयोग होता है। क्रियारतिपत्ति में क्रिया की अतिपत्ति (असम्भरता) की सूचना मिलती है। The Conditional is used instead of the potential, when the non-performance of an action is implied.

उभयपदी हस् धातु

वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसइ, हसए	हसन्ति, हसन्ते, हसिरे
म० पु०	हससि, हससे	हसिस्था, हसइ
उ० पु०	हसामि, हसमि	हसिमो, हसामो, हसमो, हसिमु, हसामु, हसमु, हसिम, हसाम, हसम
	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसेइ	हसेन्ते, हसेइरे
म० पु०	हसेसि	हसेइस्था, हसेइ
उ० पु०	हसेमि	हसेमो, हसेमु, हसेम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसीअ	हसीअ
म० पु०	”	”
उ० पु०	”	”

भविष्यकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसिहिइ, हसिहिए	हसिहिनति, हसिहिनते, हसिहिरे
म० पु०	हसिहिसि, हसिहिसे	हसिहिस्था, हसिहिइ

उ० पु०	हसिस्सं, हसिस्सामि हसिहामि, हसिहिमि	हसिस्सामो, हसिहामो, हसिहिमो; हसिस्सामु, हसिहामु, हसिहिमु; हसिस्साम, हसिहाम, हसिहिम; हसिहिस्सा, हसिहिस्था
--------	--	---

विधि और आज्ञार्थकरूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसउ	हसन्तु
म० पु०	हसहि, हसमु, हस्सेज्जपु, हस्सेज्जहि, हसजे, हस	हसइ
उ० पु०	हसिमु, हसामु, हसमु	हसिमो, हसामो हसमो

आज्ञार्थ में एत्वं हो जाता है—

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसेउ	हसेन्तु
म० पु०	हसेहि, हसेमु	हसेइ
उ० पु०	हसेमु	हसेमो

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसेज्ज, हसेज्जा, हसन्तो, हसमाणो	हसेज्ज, हसेज्जा, हसन्तो, हसमाणो
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

हो < भू धातु के रूप—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होइ	होन्ति, होन्ते, होइरे
म० पु०	होसि	होइस्था, होइ
उ० पु०	होमि	होमो, होमु, होम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होसी, होही, होहीअ	होमी, होही, होहीअ
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होहिइ	होहन्ति, होहन्ते, होहिरे
म० पु०	होहिसि	होहिस्था, होहिइ
उ० पु०	होस्सं, होस्सामि होहामि, होहिमि	होस्सामो, होहामो, होहिमो; होस्सामु, होहामु, होहिमु; होस्साम, होहाम, होहिम; होहिस्सा, होहिस्था

विधि एवं आज्ञार्थक

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होउ	होन्तु
म० पु०	होहि, होसु	होइ
उ० पु०	होमु	होमो

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होञ्ज, होञ्जा, होन्तो, होमाणो	होञ्ज, होञ्जा, होन्तो, होमाणो
म० पु०	"	"
उ० पु०	"	"

ठा <स्था धातु (= ठहरना) — वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ठाइ	ठान्ति, ठान्ते, ठाहरे
म० पु०	ठासि	ठाइस्था, ठाइ
उ० पु०	ठामि	ठामो, ठामु, ठाम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ठासी, ठाही, ठाहीअ	ठासो, ठाही, ठाहीअ
म० पु०	"	"
उ० पु०	"	"

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ठाहिइ	ठाहन्ति, ठाहन्ते, ठाहरे
म० पु०	ठाहिसि	ठाहिस्था, ठाहिइ

उ० पु०	ठाहामि, ठाहिमि	ठास्सामु, ठाहामु, ठाहिमु, ठास्साम,
		ठाहाम, ठाहिम, ठाहिस्सा, ठाहिस्था

विधि एवं आज्ञार्थक

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ठाउ	ठान्तु
म० पु०	ठाहि, ठामु	ठाह
उ० पु०	ठामु	ठामो

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ठाज, ठाजा, ठान्तो, ठामाणो	ठाज्ज, ठाजा, ठान्तो, ठामाणो
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

ज्ञा- $\sqrt{\text{धै}}$ (= ध्यान करना) — वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भाइ	भान्ति, भान्ते, भाइरे
म० पु०	भासि	भाइस्था, भाइ
उ० पु०	भामि	भामो, भामु, भाम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भासी, भाही, भाहीअ	शासी, भाही, भाहीअ
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भाहिइ	भाहिन्ति, भाहिन्ते, भाहिरे
म० पु०	भाहिस्सि	भाहिस्था, भाहिइ
उ० पु०	भाह्वं, भाह्वामि	भाह्वामो, भाह्वामो, भाहिमो; भाह्वामु, भाह्वामु, भाह्वियु, भाह्वाम, भाह्वाम, भाहिम; भाहिस्सा, भाहिस्था

विधि एवं आज्ञार्थक

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भाड	भान्तु
म० पु०	भादि, शासु	भाह
उ० पु०	भासु	भामो

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भाज्ज, भाज्जा, भान्तो, भामाणो	भाज्ज, भाज्जा, भान्तो, भामणो
म० पु०	" - "	" "
उ० पु०	" "	" "

ने < नी (= ले जाना) --वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नेइ	नेन्ति, नेन्ते, नेइरे
म० पु०	नेसि	नेइत्था, नेह
उ० पु०	नेमि	नेमो, नेसु, नेम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नेसो, नेही, नेहीअ	नेसो, नेही, नेहीअ
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नेहिइ	नेहिनति, नेहन्ते, नेहरे
म० पु०	नेहिसि	नेहिट्था, नेहिइ
उ० पु०	नेहसं, नेहसामि, नेहामि, नेहिसि	नेहसामो, नेहामो, नेहिमो, नेहसामु, नेहामु, नेहिसु; नेहसाम, नेहाम, नेहिस, नेहिससा, नेहिट्था

विधि एवं आज्ञार्थक

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नेउ	नेन्तु
म० पु०	नेहि, नेसु	नेह
उ० पु०	नेसु	नेमो

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नेज्ज, नेज्जा, नेन्तो, नेमाणो	नेज, नेज्जा, नेन्तो, नेमाणो
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

उड्हे < उड्डी (= उड्ढना) -- धर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	उड्हेइ	उड्हेन्ति, उड्हेन्ते, उड्हेहरे
म० पु०	उड्हेसि	उड्हेहत्या, उड्हेह
उ० पु०	उड्हेमि	उड्हेमो, उड्हेसु, उड्हेम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	उड्हेसी, उड्हेही, उड्हेहीअ	उड्हेसी, उड्हेही, उड्हेहीअ
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	उड्हेहिइ	उड्हेहिन्ति, उड्हेहिन्ते, उड्हेहिरे
म० पु०	उड्हेहिसि	उड्हेहिट्या, उड्हेहिइ
उ० पु०	उड्हेस्सं, उड्हेस्सामि, उड्हेहामि, उड्हेहिमि	उड्हेस्सामो, उड्हेहामो, उड्हेहिमो; उड्हेस्सामु, उड्हेहामु, उड्हेहिमु; उड्हेस्साम, उड्हेहाम, उड्हेहिमि

विधि एवं आज्ञार्थक

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	उड्हेउ	उड्हेन्तु
म० पु०	उड्हेहि, उड्हेसु	उड्हेह
उ० पु०	उड्हेसु	उड्हेमो

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	उट्टेज्; उट्टेजा, उट्टेन्तो, उट्टेमाणो	उट्टेज्, उट्टेजा, उट्टेन्तो, उट्टेमाणो
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

पा पाने (= पीना) — वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पाइ	पान्ति, पान्ते, पाइरे
म० पु०	पासि,	पाइत्था, पाइ
उ० पु०	पामि	पामो, पामु, पाम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पासी, पाही, पाहीअ	पासी, पाही, पाहीअ
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पाहिइ	पाहिनति, पाहिनते, पाहिरे
म० पु०	पाहिमि	पाहित्था, पाहिइ
उ० पु०	पस्सं, पास्सामि; पाहामि, पाहिस	पास्सामो, पाहामो, पाहिमो, पास्सामु, पाहामु, पाहिसु, पास्साम, पाहाम, पाहिस, पाहिस्सरा, पाहित्था

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पाउ	पान्तु
म० पु०	पाहि, पासु	पाइ
उ० पु०	पामु	पामो

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
१० पु०	पाञ्ज, पाञ्जा, पान्तो, पामाणो	पाञ्ज, पाञ्जा, पान्तो, पामाणो
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

ण्हास्ना (स्नान करना) — वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ण्हाइ	ण्हान्ति, ण्हान्ते, ण्हाइरे
म० पु०	ण्हासि	ण्हाइत्था, ण्हाइ
उ० पु०	ण्हामि	ण्हामो, ण्हासु, ण्हाम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ण्हासी, ण्हाही, ण्हाहीअ	ण्हासी, ण्हाही, ण्हाहीअ
म० पु०	" "	" "
पु० पु०	" "	" "

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ण्हाहिइ	ण्हाहिन्ति, ण्हाहिन्ते, ण्हाहिरे
म० पु०	ण्हाहिसि	ण्हाहित्था, ण्हाहिइ
उ० पु०	ण्हास्सं, ण्हास्सामि; ण्हाहिमि, ण्हाहामि	ण्हास्सामो, ण्हाहामो, ण्हाहिमो; ण्हास्सामु, ण्हाहामु, ण्हाहिसु, ण्हास्साम, ण्हाहाम, ण्हाहिम; ण्हाहिस्सा, ण्हाहित्था

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ण्हाउ	ण्हान्नु
म० पु०	ण्हादि, ण्हासु	ण्हाइ
उ० पु०	ण्हासु	ण्हामो

क्रियातिपत्ति

एकवचन और बहुवचन

प्र०, म०, उ० पु० ण्हञ्ज, ण्हञ्जा, ण्हान्तो, ण्हामाणो

गा-गौ (गाना) -- वर्तमान्,

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गाह	गान्ति, गान्ते, गाहरे
म० पु०	गासि	गाहत्था, गाह
उ० पु०	गामि	गामो, गामु, गाम

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र०, म०, उ० पु०—	गासी, गाही, गाहीअ
-------------------	-------------------

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गाहिइ	गाहन्ति, गाहन्ते, गाहिरे
म० पु०	गाहिसि	गाहित्था, गाहिइ
उ० पु०	गाहसं, गाहसामि; गाहामि, गाहिमि	गाहसामो, गाहामो, गाहिमो; गाहसामु, गाहामु, गाहियु; गाहसाम, गाहाम, गाहिम; गाहिससा, गाहित्था

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गाउ	गान्तु
म० पु०	गादि, गामु	गाह
उ० पु०	गामु	गामो

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गाज्ज, गाजा, गान्तो, गामाणो	गाज्ज, गाजा, गान्तो, गामाणो
म० पु०	”	”
उ० पु०	”	”

(२५) अकारान्त धातुओं के अतिरिक्त अन्य स्वरान्त धातुओं में विकल्प से विकरण अ प्रत्यय जुड़ने के परचात्, विभक्तिचिह्न जोड़ा जाता है। यथा—

भा—भा + अ = भाअ + इ = भाअइ, त्रिकृत्याभाव पक्ष में भा + इ = भाइ

या—जा + अ = जाअ + इ = जाअइ, त्रिकृत्याभात्र में जा + इ = जाइ

पा—पा + अ = पाअ + इ = पाअइ, पा + इ = पाइ

ध्या—का + अ = काअ + इ = काअइ, का + इ = काइ

धा—धा + अ = धाअ + इ = धाअइ, धाइ

उद् + वा - उच्चा + अ = उच्चाअ + इ = उच्चाअइ, उच्चाइ

म्लै—मिजा + अ = मिजाअ + इ = मिजाअइ, मिजाइ

त्रि + क्री—विके + अ = विकेअ + इ = विकेअइ, विकेइ

(२६) वर्तमान, भविष्यत् तथा त्रिधि पूर्ण आज्ञार्थ में स्वरांत पातुओं में

प्रत्ययों से पूर्ण तथा प्रत्ययों के स्थान पर विरुद्ध से ज, जा आदेश होता है। यथा—

हो—भू—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होजइ, होजाइ होज, होजा	होजन्ति, होजन्ते, होजिरे होज, होजा
म० पु०	होजसि, होजासि होज, होजा	होजन्तिथा, होजइ, होजाइ होज, होजा
उ० पु०	होजमि, होजामि होज, होजा	होजन्तो, होजामो, होज, होजा; होजसु, होजाम, होज, होजा, होजम, होजाम, होज, होजा

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होजइइ, होजाइइ, होज, होजा	होजइन्ति, होजाइन्ति, होजइन्ते, होजाइन्ते, होजइरे, होजाइरे, होज, होजा
म० पु०	होजइसि, होजाइसि, होज, होजा	होजइन्तिथा, होजाइन्तिथा, होजइइ, होजजाइइ, होज, होजा
उ० पु०	होजइस्सं, होजइस्सामि, होजइहामि, होजाइहामि; होजइहिमि, होजाइहिमि, होज, होजा	होजइस्सामो, होजइहामो, होजाइहामो, होजइहामो, होजइस्सामु, होजइहामु, होजजाहामु, होजइहामु, होजाइहामु, होजइइस्सामा, होजाइइस्सामा, होजइइहामु, होजजाइइहामु, होज, होजा

त्रिधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रथठ, रथेठ	रथन्तु, रथेन्तु
म० पु०	रथदि, रथसु, रथेदि, रथेसु, रथेज्जदि, रथेजे, रथ	रथइ, रथेइ
उ० पु०	रथिसु, रथैसु, रथामु, रथसु	रथिमो, रथामो, रथसो, रथेमा

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रथेज, रथेजा, रथन्तो, रथमाणो	रथेज्ज, रथेजा, रथन्तो, रथमाणो
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

उभयपदी कर < कृ (करना) वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करइ, करए	करन्ति, करन्ते, करिरे
म० पु०	करसि, करसे	करित्था, करइ
उ० पु०	करामि, करमि	करिमो, करामो, करमो, करिसु, करामु, करसु, करिम, कराम, करम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करीअ	करीअ
म० पु०	"	"
उ० पु०	"	"

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करिहिइ, करिहिए	करिहिन्ति, करिहिन्ते, करिहिरे
म० पु०	करिहिसि, करिहिसे	करिहित्था, करिहिइ
उ० पु०	करिहिसु, करिहिसामि, करिहिसामि, करिहिसि	करिहिसामो, करिहिसामो, करिहिसो, करिहिसामु, करिहिसामु, करिहिसु, करिहिसाम, करिहिसाम, करिहिम, करिहिसि, करिहित्था

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होज्जउ, होज्जाउ, होज्ज, होज्जन्तु, होज्ज, होज्जा	होज्जन्तु, होज्ज, होज्जा
म० पु०	होज्जदि, होज्जादि, होज्जसु, होज्जह, होज्जाह, होज्ज, होज्जासु, होज्ज, होज्जा	होज्जह, होज्जाह, होज्ज, होज्जा
उ० पु०	होज्जसु, होज्जासु, होज्ज, होज्जमो, होज्जामो, होज्ज, होज्जा	होज्जमो, होज्जामो, होज्ज, होज्जा

इसी प्रकार ने < नी, मिला < म्लै प्रभृति धातुओं के रूप उज्ज, ज्जा प्रत्ययों के जोड़ने से निष्पन्न होते हैं ।

रव < रु (= कहना या धोला) — वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रवइ, रवप्	रवन्ति, रवन्ते, रविरे
म० पु०	रवसि, रवसे	रवित्था, रवइ
उ० पु०	रवामि, रवमि	रवमो, रवामो, रवमो; रविसु, रवासु, रवसु; रविम, रवाम, रवम
प्र० पु०	रवेइ	रवेन्ति, रवेन्ते, रवेहरे
म० पु०	रवेसि	रवेत्था, रवेइ
उ० पु०	रवेमि	रवेमो, रवेसु, रवेम

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० पु०	म० पु०	उ० पु०	रवोण
----------	--------	--------	------

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रविहिइ, रविहिप्	रविहिन्ति, रविहिन्ते, रविहिरे
म० पु०	रविहिसि, रविहिसे	रविहित्था, रविहिइ
उ० पु०	रविष्मं, रविस्सामि	रविस्सामो, रविदामो, रविहिमो, रविस्सामु, रविहामु, रविहिमु; रविस्साम, रविहाम, रविहिम, रविहित्था, रविहित्था

उभयपदी प्रसं < पुप् -- पुष्ट होना -- वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	प्रसद्, प्रसण, प्रसेद्	प्रसन्ति, प्रसन्ते, प्रसिरे, प्रेन्ति
म० पु०	प्रसासि, प्रसते, प्रसेसि	प्रसिस्था, प्रसद्, प्रसेद् ॥
उ० पु०	प्रसामि, प्रसमि, प्रसेमि	प्रसिमो, प्रसामो, प्रसमो; प्रसिमु, प्रसामु, प्रसमु; प्रसिम, प्रसाम, प्रसम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	प्रसीअ	प्रसीअ
म० पु०	"	"
उ० पु०	"	"

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	प्रसिद्दिद्, प्रसिद्दिप्	प्रसिद्दिन्ति, प्रसिद्दिन्ते, प्रसिद्दिरे
म० पु०	प्रसिद्दिसि, प्रसिद्दिसे	प्रसिद्दिस्था, प्रसिद्दिद्
उ० पु०	प्रसिद्दित्, प्रसिद्दिसामि, प्रसिद्दामि, प्रसिद्दिसि	प्रसिद्दिसामो, प्रसिद्दामो, प्रसिद्दिमो; प्रसिद्दिसामु, प्रसिद्दामु, प्रसिद्दिमु, प्रसिद्दिसाम, प्रसिद्दाम, प्रसिद्दिम, प्रसिद्दिस्मा, प्रसिद्दिस्था

विशेष—अकार को एत्व कर देने से भी इसके रूप बनते हैं ।

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	प्रसउ	प्रसन्तु
म० पु०	प्रसद्दि, प्रसमु, प्रसेज्जपु, प्रसज्जद्दि, प्रस	प्रसद्
उ० पु०	प्रसिम, प्रसामु, प्रसमु	प्रसिमो, प्रसामो, प्रसमो

विशेष—अकार को एत्व कर देने पर भी इसके रूप बनते हैं ।

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० म० उ० पु०	प्रसेज्ज, प्रसेज्जा, प्रसन्तो, प्रसमाणो	प्रसेज्ज, प्रसेज्जा, प्रसन्तो, प्रसमाणो

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करउ, करेउ	करन्तु, करेन्तु
म० पु०	करहि, करसु, करेज्जसु, करेज्जसु, करेज्जहि, करेजे, कर	करइ
उ० पु०	करिसु, करामु, करसु	करिमो, करामो, वरमो

क्रियाविपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करेज्ज, करेज्जा, करन्तो, करमाणो	करेज्ज, करेज्जा, करन्तो, करमाणो
म० पु०	” ”	” ”
उ० पु०	” ”	” ”

इसी प्रकार धर<ध, मर<र, वर<र, सर<र, हर<र, तर<र एवं
जर<र आदि संस्कृत की ऋकारान्त धातुओं के रूप होते हैं ।

अस् (होना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अत्थि	अत्थि
म० पु०	अत्थि, सि	अत्थि
उ० पु०	अत्थि, म्दि, असि	अत्थि, म्दो, म्द

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	आसि	अहेसि
म० पु०	”	”
उ० पु०	”	”

विध्यर्थ, आज्ञार्थ और भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अत्थि	अत्थि
म० पु०	”	”
उ० पु०	”	”

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	धुणेज्ज, धुणेज्जा, धुणन्तो,	धुणेज्ज, धुणेज्जा, धुणन्तो, धुणमाणो
म० पु०		
उ० पु०	"	"

म० पु० " "

उ० पु० " "

इसो प्रकार चिण (चि), जिण (जि), सुण (सु), हुण (हु), लुण (लु), पुण (पु) और धुण (धु) आदि घातुओं के रूप बनते हैं ।

हरिस < हृप् (प्रसन्न होना) -- वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हरिसइ, हरिसए	हरिसन्ति, हरिसन्ते, हरिसिरे
म० पु०	हरिससि, हरिससे	हरिसित्था, हरिसइ
उ० पु०	हरिसामि, हरिसमि	हरिसिमो, हरिसामो, हरिसमो;
		हरिसिसु, हरिसासु, हरिससु;
		हरिसिम, हरिसाम, हरिसम

विशेष—अकार को एरु कर देने पर हरिसेइ, हरिसेन्ति इत्यादि रूप बनते हैं ।

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० हरिसीअ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हरिसिहिइ, हरिसिहिए	हरिसिहिन्ति, हरिसिहिन्ते, हरिसिहिरे
म० पु०	हरिसिहिसि, हरिसिहिसे	हरिसिहित्था, हरिसिहिइ
उ० पु०	हरिसिस्सं, हरिसिस्सामि	हरिसिस्सामो, हरिसिहामो, हरिसिहिमो,
	हरिसिहामि, हरिसिहिमि	हरिसिस्सामु, हरिसिहामु, हरिसिहिसु;
		हरिसिस्साम, हरिसिहाम, हरिसिहिम;
		हरिसिहिस्सा, हरिसिहित्था

विशेष—एरु दो जाने पर हरिसेहिइ, हरिसेहिन्ति आदि रूप होते हैं ।

क्रियातिपत्ति

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० हरिसंज्ज, हरिसंज्जा, हरिसन्तो, हरिसमाणो

इसी प्रकार रुस (रुप्), वृस (वृप्), सूस (सृप्), दूस (दृप्) एवं सीस (शिप्) धातुओं के रूप होते हैं।

उभयपदी धुण < स्तु (स्तुति करना)—वर्तमान

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० धुणइ, धुणव	धुणन्ति, धुणन्ते, धुणिरे
म० पु० धुणसि, धुणसे	धुणिरथा, धुणइ
उ० रु० धुणामि, धुणमि	धुणिमो, धुणामो, धुणमो, धुणिसु, धुणामु, धुणमु, धुणिम, धुणाम, धुणम

विशेष—अकार को एत्व होने पर धुणेइ, धुणेन्ति, धुणेसि आदि रूप होते हैं।

भूतकाल

एकवचन	बहुवचन
प्र०, म०, उ० पु० धुणीअ	धुणीअ

भविष्यत्काल

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० धुणीहिइ, धुणिहिइ	धुणिहिनति, धुणिहिनते, धुणिहिरै
म० पु० धुणिहिसि, धुणिहिते	धुणिहिरथा, धुणिहिइ
उ० पु० धुणिस्सं, धुणिस्वामि, धुणिहामि, धुणिहिसि	धुणिस्सामो, धुणिहामो, धुणिहिसो, धुणिस्सामु, धुणिहामु, धुणिहिसु, धुणिस्साम, धुणिहाम, धुणिहिस धुणिहिस्सा, धुणिहिरथा

विधि एवं आज्ञार्थ

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० धुणउ	धुणन्तु
म० पु० धुणहि, धुणसु, धुणज्जपु धुणज्जहि, धुणज्जे, धुण	धुणइ
उ० पु० धुणिसु, धुणामु, धुणसु	धुणिमो, धुणामो, धुणमो

विशेष—अकार को एत्व हो जाने पर धुणउ, धुणन्तु आदि रूप होते हैं।

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छेज्ज, गच्छेज्जा, गच्छन्तो, गच्छमाणो	गच्छेज्ज, गच्छेज्जा, गच्छन्तो, गच्छमाणो
म० पु०	” ”	” ”
उ० पु०	” ”	” ”

(२७) भविष्यत्काल में सुण (शु) के स्थान पर सोच्छ, सद् के स्थान पर रोच्छ, विद् के स्थान पर वेच्च, दृश् के स्थान पर दच्छ, मुच् के स्थान पर मोच्छ, वच् के स्थान पर वोच्छ, छिद् के स्थान पर छेच्छ, भिद् के स्थान पर भेच्छ, भुज् के स्थान पर भोच्छ आदेश होता है तथा गच्छ धातु के समान रूप होते हैं ।

बोल्ल, जंप, कह < कथ (कहना) — वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बोल्लह, बोल्लप	बोल्लन्ति, बोल्लन्ते, बोल्लिरे
म० पु०	बोल्लसि, बोल्लसे	बोल्लिस्था, बोल्लह
उ० पु०	बोल्लामि, बोल्लमि	बोल्लिमो, बोल्लामो, बोल्लमो बोल्लिसु, बोल्लामु, बोल्लसु, बोल्लिम, बोल्लाम, बोल्लम

विशेष—एत्व हो जाने पर बोल्लेद्, बोल्लेन्ति इत्यादि रूप होते हैं ।

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बोल्लिद्दि, बोल्लिद्दिप	बोल्लिद्दिन्ति, बोल्लिद्दिन्ते, बोल्लिद्दिरे
म० पु०	बोल्लिद्दिसि, बोल्लिद्दित्से	बोल्लिद्दिस्था, बोल्लिद्दिह
उ० पु०	बोल्लिद्दिसं, बोल्लिद्दिस्यामि, बोल्लिद्दिस्यामि, बोल्लिद्दिसि	बोल्लिद्दिसामो, बोल्लिद्दिस्यामो, बोल्लिद्दिसिमो, बोल्लिद्दिस्यामु, बोल्लिद्दिस्यामि, बोल्लिद्दिसिसु, बोल्लिद्दिस्याम, बोल्लिद्दिस्याम, बोल्लिद्दिसिम, बोल्लिद्दिस्या, बोल्लिद्दिस्या

विशेष—एत्त् होने से बोल्लेउ, बोल्लेन्तु आदि रूप होते हैं । विधि एवं आज्ञार्थ रूप पूर्ववत् होते हैं ।

इसी प्रकार वरिस (वृप्), दरिस (दृष्), करिस (कृप्) और मरिस (मृप्) धातुओं के रूप होते हैं ।

उभयपदी गच्छ < गम् (जाना) — वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छइ, गच्छथ	गच्छन्ति, गच्छन्ते, गच्छरे
म० पु०	गच्छसि, गच्छसे	गच्छिथा, गच्छद्
उ० पु०	गच्छामि, गच्छमि	गच्छिमो, गच्छामो, गच्छमो, गच्छिसु, गच्छामु, गच्छसु, गच्छम, गच्छाम, गच्छम

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० गच्छीअ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छइ, गच्छिदिइ गच्छिथ, गच्छिथिथ	गच्छिन्ति, गच्छिदिन्ति, गच्छिन्ते गच्छिदिन्ते, गच्छिरे, गच्छिदिरे
म० पु०	गच्छसि, गच्छिसि, गच्छिसे, गच्छिसे	गच्छिथा, गच्छिदिथा, गच्छिद्, गच्छिदिद्
उ० पु०	गच्छं, गच्छिस्सं, गच्छि- स्सामि, गच्छिदामि, गच्छिमि, गच्छिदिमि	गच्छिस्सामो, गच्छिदामो, गच्छिमो, गच्छिदिमो, गच्छिस्सामु, गच्छिदामु, गच्छिमु, गच्छिदिमु, गच्छिस्साम, गच्छिदाम, गच्छिम, गच्छिदिम, गच्छिस्साम, गच्छिदिथा

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छउ	गच्छन्तु
म० पु०	गच्छदि, गच्छसु, गच्छेज्जसु गच्छेज्जदि, गच्छेज्जे, गच्छ	गच्छद्
उ० पु०	गच्छिसु, गच्छामु, गच्छामु	गच्छमो, गच्छामो, गच्छमो

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	धुवउ	धुवन्तु
म० पु०	धुवहि, धुवसु, धुवेज्जसु, धुवेज्जहि, धुवुज्जे, धुव	धुवइ
उ० पु०	धुविमु, धुवामु, धुवसु	धुविमो, धुरामो, धुवमो

विशेष—आज्ञार्थ में एत्व होने पर धुवेउ, धुवेन्तु इत्यादि रूप होते हैं ।

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	धुवेज्ज, धुवेज्जा, धुवन्तो,	धुवेज्ज, धुवेज्जा, धुवन्तो, धुरमाणो
म० पु०	”	”
उ० पु०	”	”

धातुओं के कर्मणि रूप

(२८) धातुओं के कर्मणि रूपों में वर्तमानकाल और विधि एवं आज्ञार्थ में धातु प्रत्ययों के पूर्व ईश और इज्ज विकरण टूट जाते हैं । पर यह नियम उन्हीं धातुओं के लिए है, जिन धातुओं के स्थान पर आदेश—धात्वादेश नहीं होता है । भरिप्यस्काळ और क्रियातिपत्ति के रूप कर्त्तरि के समान ही होते हैं ।

हस (हँसना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसीअइ, हसीअए हसिज्जइ, हसिज्जए	हसीअन्ति, हसीअन्ते, हसीइरे हसिज्जन्ति, हसिज्जन्ते, हसिज्जिरे
म० प्र०	हसीअसि, हसीअसे हसिज्जसि, हसिज्जसे	हसीअइ, हसीअह हसिज्जिस्था, हसिज्जइ
उ० पु०	हसीअमि, हसीअमि, हसिज्जमि, हसिज्जामि	हसीअमो, हसीअमो, हसीइमो, हसिअमु, हसीआमु, हसीइसु, हसीअम, हसीआम, हसीइम, हसिज्जमो, हसिज्जामो, हसिज्जिमो, हसिज्जमु, हसिज्जामु, हसिज्जिसु, हसिज्जिम, हसिज्जाम,

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बोलीअ	बोलीअ
म० पु०	"	"
उ० पु०	"	"

क्रियाविपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बोलेअ, बोलेअ, बोलेअ, बोलेअ, बोलेअ, बोलेअ	बोलेअ, बोलेअ, बोलेअ, बोलेअ, बोलेअ, बोलेअ
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

उभयपदी धुव < धू (कंपाना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	धुवइ, धुवए	धुवन्ति, धुवन्ते, धुविरे
म० पु०	धुवासि, धुवमे	धुविथा, धुवद्
उ० पु०	धुवामि, धुवमि	धुविमो, धुवामो, धुवमो, धुविमु, धुवामु, धुवमु, धुविम, धुवाम, धुवम

विशेष—एत्व होने पर धुवेइ, धुवेन्ति इत्यादि रूप होते हैं।

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	धुवीअ	धुवीअ
म० पु०	"	"
उ० पु०	"	"

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	धुविदिइ, धुविदिए	धुविदिन्ति, धुविदिन्ते, धुविदिरे
म० पु०	धुविदिसि, धुविदिये	धुविदिस्था, धुविदिद्
उ० पु०	धुविस्सं, धुविस्सामि, धुविदामि, धुविदिमि	धुविस्सामो, धुविदामो, धुविदिमो, धुविस्सामु, धुविदामु, धुविदिमु, धुविस्साम, धुविदाम, धुविदिम, धुविदिस्था, धुविदिस्था

विशेष—एत्व होने पर धुवेदिइ, धुवेदिए इत्यादि रूप होते हैं।

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	धुवउ	धुवन्तु
म० पु०	धुवदि, धुवसु, धुवेज्जसु, धुवेज्जदि, धुवुज्जे, धुव	धुवइ
उ० पु०	धुविसु, धुवासु, धुवसु	धुविमो, धुवामो, धुवमो

विशेष—आज्ञार्थ में एस्स होने पर धुवेउ, धुवेन्तु इत्यादि रूप होते हैं ।

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	धुवेज्ज, धुवेज्जा, धुवन्तो,	धुवेज्ज, धुवेज्जा, धुवन्तो, धुवमाणो
	धुवमाणा	
म० पु०	”	”
उ० पु०	”	”

धातुओं के कर्मणि रूप

(२८) धातुओं के कर्मणि रूपों में वर्तमानकाल और विधि एवं आज्ञार्थ में धातु प्रत्ययों के पूर्व ईअ ओर इज्ज विकरण पड़ जाते हैं । पर यह नियम उन्हीं धातुओं के लिए है, जिन धातुओं के स्थान पर आदेश—धात्वादेश नहीं होता है । भविष्यत्काल और क्रियातिपत्ति के रूप कर्त्तरि के समान ही होते हैं ।

हस (हँसना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसीअइ, हसीअए	हसीअन्ति, हसीअन्ते, हसीइरे
	हसिज्जइ, हसिज्जए	हसिज्जन्ति, हसिज्जन्ते, हसिज्जिरे
म० प्र०	हसीअसि, हसीअसे	हसीइरथा, हसीअइ
	हसिज्जसि, हसिज्जसे	हसिज्जिरथा, हसिज्जइ
उ० पु०	हसीअमि, हसीआमि,	हसीअमो, हसीआमो, हसीइमो; हसिअसु,
	हसिज्जमि, हसिज्जामि	हसीआसु, हसीइसु, हसीअम, हसीआम,
		हसीइम, हसिज्जमो, हसिज्जामो,
		हसिज्जिमो; हसिज्जसु, हसिज्जासु,
		हसिज्जिसु, हसिज्जिम, हसिज्जाम,
		हसिज्जिम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसीअईअ, हसीईअ, असिञ्जीअ	हसीअईअ, हसीईअ, हसिञ्जईअ, हसिञ्जीअ
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हससीअउ, हसिञ्जउ	हसीअन्तु, हसिञ्जन्तु
म० पु०	हसीअहि, हसीअसु, हसीएजसु, हसिहजसु, हसीएजहि, हसीहजहि, हसीएजे, हसीहजे, हसीअ, हसिजहि, हसिजसु, हसिजे- जसु, हसिजजसु, हसिजेजहि, हसिजिजहि, हसिजेजेजे, हसिजिजज, हसिज	हसिजद
उ० पु०	हसीअसु हसीआलु, हसीइसु, हसिजसु, हसिज्जासु, हसिज्जसु	हसीअमो, हसीआमो, हसीइमो, हसिजमो, हसिजामो, हसिजिमो

भविष्यत्काल और क्रियातिपत्ति के रूप कर्चरि के समान होते हैं ।

हो < भू—कर्मणि—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होईअइ होइजइ	होईअन्ति, होईअन्ते, होईइटे, होइजन्ति, होइजन्ते, होइजिरे
म० पु०	होईआसि, होइजसि	होईइस्था, होईअइ, होइजिस्था, होइजइ

ज्ञा < ध्यै (कर्मणि) — वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भाईअइ भाइअइ	भाईअन्ति, भाईअन्ते, झाईइरे भाइअन्ति, भाइअन्ते, भाइअन्ते
म० पु०	भाइअसि भाइअसि	भाइअस्था, भाईअइ भाइअन्ति, भाइअन्ति
उ० पु०	भाईअमि, भाईआमि भाइअमि, भाइआमि	भाईअमो, भाईआमो, भाईइमो, भाईअमु, भाईआमु, भाईइमु, भाईअम, झाईआम, भाईइम, भाइअमो, भाइअमो, भाइअमो, भाइअमु, भाइअमु, भाइअमु, भाइअम, भाइअम, भाइअम

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु०	भाईअसी, भाइअही, भाईअहीअ भाइअसी, भाइअही, भाइअहीअ
----------------	--

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भाईअउ, भाइअउ	भाईअन्तु, भाइअन्तु
म० पु०	भाईअमु, भाईअहि भाइअमु, भाइअहि	भाईअइ भाइअइ
उ० पु०	भाईअमु, भाईआमु, भाईइमु, भाइअमु, भाइअमु, भाइअमु	भाईअमो, झाईआमो, भाईइमो, भाइअमो, भाईअमो, भाइअमो

अभिप्यस्काळ, और क्रियातिपत्ति के रूप कर्त्तरि के समान होते हैं ।

चिच्च < चि (कर्मणि) — वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिच्चइ, चिच्चइ	चिच्चन्ति, चिच्चन्ते, चिच्चिरे
म० पु०	चिच्चमि, चिच्चमि	चिच्चस्था, चिच्चइ

उ० पु०	विश्रामि, चिन्वमि	विश्रिमो, विश्रामो, विश्रमो, विश्रिमु, विश्रामु, विश्रमु, विश्रिम, विश्राम, विश्रम
--------	-------------------	--

एत्व होने पर चिञ्चेद, चिञ्चेन्ति इत्यादि रूप होते हैं। चिञ्-विश्र के स्थान पर विकल्प से चिम्म भावेष भी होता है।

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिञ्चीम	चिञ्चीम
म० पु०	”	”
उ० पु०	”	”

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिञ्चिदिह, चिञ्चिदिह	चिञ्चिद्विन्ति, चिञ्चिद्विन्ते, चिञ्चिद्विरे
म० पु०	चिञ्चिद्विसि, चिञ्चिद्वित्से	चिञ्चिद्विस्ता, चिञ्चिद्विद
उ० पु०	चिञ्चिद्विस्तं, चिञ्चिद्विस्वामि चिञ्चिद्विमि, चिञ्चिद्विमो	चिञ्चिद्विस्तामो, चिञ्चिद्विदामो, चिञ्चिद्विमो, चिञ्चिद्विस्तामु चिञ्चिद्विदामु, चिञ्चिद्विमु, चिञ्चिद्विस्वाम, चिञ्चिद्विम, चिञ्चिद्विम, चिञ्चिद्विस्ता, चिञ्चिद्विस्ता

विशेष—एत्व होने पर चिञ्चेदिह, चिञ्चेद्विस्तं इत्यादि रूप होते हैं।

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिञ्चउ	चिञ्चन्तु
म० पु०	चिञ्चहि, चिञ्चसु, चिञ्चेज्जसु, चिञ्चेज्जहि, चिञ्चेज्जे, चिञ्च	चिञ्चद
उ० पु०	चिञ्चिसु, चिञ्चामु, चिञ्चसु	चिञ्चिमो, चिञ्चामो, चिञ्चमो

विशेष—एत्व होने पर चिञ्चेउ, चिञ्चेन्तु आदि रूप होते हैं।

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिञ्चेज्ज, चिञ्चेज्जा, चिञ्चन्तो, चिञ्चमाणो	चिञ्चेज्ज, चिञ्चेज्जा, चिञ्चन्तो, चिञ्चमाणो
म० पु०	” ”	” ”
उ० पु०	” ”	” ”

इसी प्रकार कर्मणि में चिञ्म (चि), जिञ्म (जि), सुञ्म (सु), हुञ्म (हु), धुञ्म (स्तु), लुञ्म (लु) पुञ्म (पू), धुञ्म (धू) प्रभृति धातुओं के रूप होते हैं।

‘चि’ के स्थान पर प्राकृत में विकल्प से चिण भी होता है। चिण में कर्मणि विकरण और प्रत्यय जोड़ने पर रूप बनते हैं। यथा—

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु०	नेईअसी, नेईअही, नेईअहीअ नेइञ्जसी, नेइञ्जही, नेइञ्जहीअ
----------------	--

विधि एवं आज्ञार्थ

प्र० पु०	नेईअउ, नेइञ्जउ	नेईअन्तु, नेइञ्जन्तु
म० पु०	नेईअसु, नेईअदि नेइञ्जसु, नेइञ्जहि	नेईअइ, नेइञ्जइ
उ० पु०	नेइअसु, नेईआसु, नेईइसु नेइञ्जसु, नेइञ्जासु, नेइञ्जिसु	नेईअमो, नेईआमो, नेईइमो, नेइञ्जमो, नेइञ्जामो, नेइञ्जिमो

विशेष—एस्व होने पर नेईएव, नेईएन्तु, नेइञ्जएव, नेइञ्जेन्तु आदि रूप होते हैं।
अविष्यत्काल और क्रियातिपत्ति के रूप कर्त्तरि के समान होते हैं।

ठाँस्था (= ठहरना) के कर्मणि रूप—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ठाईअइ, ठाइञ्जइ	ठाईअन्ति, ठाइअन्ते, ठाइइरे, ठाइञ्जन्ति, ठाइञ्जन्ते, ठाइञ्जिरे

वर्तमानकाल के घेप रूप नेँनी के समान होते हैं।

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु०	ठाइअसी, ठाईअही, ठाईअहीअ ठाइज्जसी, ठाइज्जही, ठाज्जहीअ ठासी, ठाही, ठाहीअ
----------------	--

विधि एवं आज्ञार्थ

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० ठाईअउ, ठाइज्जउ	ठाईअन्तु, ठाईज्जन्तु

मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष में 'ने' धातु के समान रूपान्तरी होती है ।

पा (पीना) कर्मणि

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० पाईअइ, पाइज्जइ	पाईअन्ति, पाईअन्ते, पाईइरे पाइज्जन्ति, पाइज्जन्ते, पाईज्जिरे

इसके आगे ठा धातु के समान सभी कालों में रूप वन्ते हैं ।

वर्तमान

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० चिणीअइ, चिणीअए चिणिज्जइ, चिणिज्जए	चिणीअन्ति, चिणीअन्ते, चिणीइरे चिणिज्जन्ति, चिणिज्जन्ते, चिणिज्जिरे

इसी प्रकार भागे के रूप वन्ते हैं ।

भण्ण, भण (भण्)—कर्मणि—वर्तमान

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० भण्णइ, भण्णए, भणीअइ भणीअए, भणिज्जइ, भणिज्जए	भण्णन्ति, भण्णन्ते, भण्णिरे, भणीअन्ति, भणीअन्ते, भणीइरे, भणिज्जन्ति, भणिज्जन्ते, भणिज्जिरे,
म० पु० भण्णसि, भण्णमे, भणीअपि, भणिअसे, भणिज्जसि, भणिज्जसे	भण्णि म, भण्णद्, भणीइरथा, भणीअद् भणिज्जिरथा, भणिज्जद्

उ० पु०	भणामि, भणामि	भणिमो, भणामो, भणमो, भणिसु, भणामु, भणसु, भणिम, भणाम,
	भणिमि, भणीभामि	भणम; भणीभमो, भणीभामो, भणीभमो; भणीभसु, भणीभामु, भणीभसु,
	भणिजमि, भणिजामि	भणीभम, भणीभाम, भणीभम भणिजमो, भणिजामो, भणिजमो, भणिजसु, भणिजामु, भणिजिसु, भणिजम, भणिजाम, भणिजिम

पिशेष—एत्वं जोड़ने से भणजेह, भण्णीएह, भण्णिजेह इत्यादि रूप होते हैं ।

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० भण्णीभ, भण्णीभईभ, भण्णीईभ, भण्णिज्जईभ, भण्णिज्जीभ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु	भण्हिह, भण्हिहप भण्हिह, भण्हिहप	भण्हिहन्ति, भण्हिहन्ते, भण्हिहरे भण्हिहन्ति, भण्हिहन्ते, भण्हिहरे
म० पु०	भण्हिसि, भण्हिसिसे भण्हिसि, भण्हिसिसे	भण्हिहस्था, भण्हिह भण्हिहस्था, भण्हिह
उ० पु०	भण्हिस्तं, भण्हिस्तामि भण्हिहामि, भण्हिहमि भण्हिस्तं, भण्हिस्तामि भण्हिहामि, भण्हिहमि	भण्हिस्तामो, भण्हिहामो, भण्हिहमो भण्हिहिस्ता, भण्हिहिस्था भण्हिस्तामो, भण्हिहामो, भण्हिहमो भण्हिहिस्ता, भण्हिहिस्था

विशेष—एत्वं होने पर भण्णेहह, भण्णेहह आदि रूप होते हैं ।

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भणउ, भण्णीभउ, भण्णिज्जउ	भणन्तु, भण्णिभन्तु, भण्णिज्जन्तु
म० पु०	भण्हि, भण्हसु, भण्णेज्जसु भण्णेज्जहि, भण्णेजे, भण भणीभहि, भणीभन्तु, भणीभज्जहि	भण्ह भणीभह

भगीइरज्जहि, भगीएरज्जु, भगीइरज्जु
 भगीएरजे, भगीइरजे, भगीअ,
 भगिइरज्जहि, भगिइरज्जु, भगिइरज्जहि भगिइरज्जु
 भगिइरज्जहि, भगिइरज्जु,
 भगिइरज्जु, भगिइरजे, भगिइरजे,
 भगिइरज्जु

उ० पु० भगिअ, भगिअ, भगिअ, भगिअ, भगिअ, भगिअ,
 भगीअ, भगीअ, भगीअ, भगीअ, भगीअ, भगीअ,
 भगिअ, भगिअ, भगिअ, भगिअ, भगिअ, भगिअ,
 भगिअ

विशेष—एक वर देने में भगिअ, भगिअ, भगिअ आदि रूप बनते हैं ।

क्रियातिपत्ति

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० भगेरज्ज, भगेरजा, भगन्तो, भगमागो
 भगन्तो, भगमागो

लिम्भ, लिह् < लिह (चाटना)—वर्तमान

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु० लिम्भइ, लिहीअइ, लिम्भन्ति, लिहीअन्ति, लिहिइरज्जन्ति,
 लिहिइरज्जइ, लिहिइरज्जन्ते, लिम्भन्ते

इसी प्रकार आगे के रूप भी होते हैं ।

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० लिम्भोअ, लिहीअई, अलिहीअ, लिहिइरज्जई,
 अलिहिइरज्जोअ, लिहीअ

अविपरकाज और विवि पर अत्रार्थ के रूप पूर्ववत् ही होते हैं ।

क्रियातिपत्ति

सभी वचन और पुढों में—

लिम्भेरज्ज, लिम्भेरजा, लिम्भन्तो, लिम्भमागो
 लिहेरज्ज, लिहेरजा, लिहेन्तो, लिहमागो

गम्म, गम < गम् (जाना) वर्तमान

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु० गम्मइ, गमीअइ, गमिञ्जइ गम्मन्ति, गमीअन्ति, गम्मन्ते,
गमीअन्ते, गमिञ्जन्ति, गमिञ्जन्ते
इसी प्रकार आगे रूप भी समक्षने चाहिए ।

प्रेरणार्थक क्रिया

२६. प्रेरणार्थक क्रिया—क्रिया का वह विकृत रूप है, जिससे यह बोध होता है कि क्रिया के व्यापार में कर्त्ता स्वतन्त्र नहीं है; यत्कि उसपर किसी की प्रेरणा है। साधारण धातु में जो कर्त्ता रहता है, वह प्रेरणार्थक में स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे से कार्य कराता है। जैसे—पढ़ता है का प्रेरणार्थक—पढ़ाता है।

(३०) प्राकृत में प्रेरणार्थक बनाने के लिए अ, ए, आव और आवे प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

(३१) अ और ए प्रत्यय के रहने पर उपान्त्य अ को भा हो जाता है। यथा—

कृ—कृ + अ = कार, कृ + आव = कारावइ—काराता है।

कर + ए = कारे; कर + आवे = कारावेइ—काराता है।

(३२) मूळ धातु के उपान्त्य में इ स्वर हो तो ए और उ स्वर हो तो ओ हो जाता है। यथा—

विस् + अ = वेस + इ = वेसइ; विस् + ए = वेसे + इ = वेसेइ

विस् + आव = वेसाव + इ = वेसावइ; विस् + आवे = वेसावे + इ = वेसावेइ

(३३) उपान्त्य दीर्घ स्वर रहने पर धातु में प्रेरणार्थक प्रत्यय जुड़ जाते हैं और उपान्त्य को एकार या ओकार नहीं होता। यथा—

चूस् + अ = चूस + इ = चूसइ; चूस् + ए = चूसे + इ = चूसेइ

चूस् + आव = चूसाव + इ = चूसावइ; चूस् + आवे = चूसावे + इ = चूसावेइ

प्रेरणार्थक क्रियाओं की रूपावलि

हस (हसाता है)—वर्तमान

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु० हासइ, हासेइ, हसावइ; हासन्ति, हासेन्ति, हसावन्ति, हसावेन्ति
हसावेइ; हानए, हासेए, हासन्ते, हासेन्ते, हसावन्ते, हसावेन्ते
हसावए, हसावेए हासिरे हासेरे, हसाविरे, हसावेरे

म० पु०	हासति, हासेति, हसायमि, हसाचेति हासते, हासेते, हसायमे, हसाचेते	हासद्, हासेद्, हसायद्, हसायेद्, हासिस्था, हासेदस्था, हसायिस्था, हसायेदस्था
उ० पु०	हात्मि, हासेमि, हसायमि हसायेमि	हात्मो, हासेमो, हसायमो, हसायेमो हात्मु, हासेमु, हसायमु, हसायेमु हासम, हासेम, हसायम, हसायेम

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० हासीअ, हासेईअ, हसायीअ, हसायेईअ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हासिदिद्, हासेदिद्, हसा- विदिद्, हसावेदिद्, हसादिप्, हासेदिप्, हसा- रिदिप्, हसाचेदिप्	हासिदिन्ति, हासेदिन्ति, हसायिदिन्ति, हसायेदिन्ति, हासिदिन्ते, हासेदिन्ते, हसायिदिन्ते, हसायेदिन्ते, हासिदिरे, हासेदिरे, हसायिदिरे, हसायेदिरे
म० पु०	हासिदिमि, हासेदिमि, हसायिदिमि, हसायेदिमि, हासिदिमे, हासेदिमे, हसायिदिमे, हसायेदिमे	हासिदिस्था, हासेदिस्था, हसायिदिस्था, हसायेदिस्था हासिदिद्, हासेदिद्, हसायिदिद् हसायेदिद्
उ० पु०	हासिस्सं, हासेस्सं, हसायिस्सं, हसायेस्सं	हासिस्सामो, हासेस्सामो, हसायिस्सामो, हसायेस्सामो, हासिस्सामु, हासेस्सामु, हसायिस्सामु, हसायेस्सामु
	हासिस्सामि, हासेस्सामि, हसायिस्सामि, हसायेस्सामि, हासिदामि, हासेदामि हसायिदामि, हसायेदामि हासिदिमि, हासेदिमि,	हासिस्साम, हासेस्साम, हसायिस्साम, हसायेस्साम हासिदामो, हासेदामो, हसायिदामो, हसायेदामो, हासेदामु, हसायिदामु, हसायेदाम, हासिदाम, हासेदाम,

हसाविहिमि, हसावेहिमि ह्मात्रिहाम, ह्सावेहाम, हासिहिमो,
 हासेहिमो, हसाविहिमो, ह्सावेहिमो,
 हासिहिमु, हासेहिमु, ह्साविहिमु;
 हासिहिस्सा, हासेहिस्सा, ह्साविहिस्सा,
 ह्सावेहिस्सा, हासिहिस्था, हासेहिस्था,
 ह्सात्रिहिस्था, ह्सावेहिस्था

विधि एवं आज्ञार्थं

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हासउ, हासेउ, ह्सावउ, ह्सावेउ	हासन्तु, हासेन्तु, ह्सावन्तु, ह्सावेन्तु
म० पु०	हाससु, हासेसु, ह्सावसु, ह्सावेसु, हासहि, हासेहि, ह्सावहि, ह्सावेहि, हासेज्जु, हासेइज्जु, ह्सावेज्जु, हासेज्जि, हासेइज्जि, हासेवेज्जि, हासेज्जे, हासेइज्जे, ह्सावेज्जे, ह्सावेइज्जे, हास, हासे, ह्साव, ह्सावे	हासइ, हासेइ, ह्सावइ, ह्सावेइ
उ० पु०	हासमु, हासेमु, ह्सावमु, ह्सावेमु	हासमो, हासेमो, ह्सावमो, ह्सावेमो

क्रियातिपत्ति

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु०	हासेज्ज, हासेज्जा, ह्सावेज्ज, ह्सावेज्जा, हासन्तो, हासेन्तो, हासवन्तो, ह्सावेन्तो, हासमाणो, हासेमाणो, ह्सावमाणो ह्सावेमाणो
----------------	--

कर < कृ (कराना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कारइ, कारेइ, करावइ, करा- वेइ, कारए, कारेए, करोवए, करावेए	कारन्ति, कारेन्ति, करावन्ति, करावेन्ति, कारन्ते, कारेन्ते, करावन्ते, करावेन्ते कारिरे, कारेइरे, कराविरे, करावेइरे

म० पु०	कारसि, कारेसि, करासि, करावेसि, कारसे, कारेसे, करावसे, करायेसे	कारद्, कारेद्, करावद्, करायेद्, कारित्था, कारेदत्था, करावित्था, करावेदत्था
उ० पु०	कारमि, कारेमि, करासमि, करावेमि	कारमो, कारेमो, करासमो, करावेमो कारमु, कारेमु, करासमु, करावेमु कारम, कारेम, करावम, करायेम

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु०	कारीअ, कारेईअ, कारात्रीअ, काराईअ
----------------	----------------------------------

भविष्यत्काल

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	कारिहिद्, कारेहिद्, काराविहिद्, कारावेहिद् कारिहिप्, कारेहिप्, कराविहिप्, करायेहिप्	कारिहिन्ति, कारेहिन्ति, काराविहिन्ति, करावेहिन्ति, कारिहिन्ते, कारेहिन्ते, कराविहिन्ते, कारावेहिन्ते, कारिहिरे, कारेहिरे, काराविहिरे, कारावेहिरे
म० पु०	कारिहिमि, कारेहिमि, कराविहिमि, करावेहिमि, कारिहिसे, कारेहिसे, कराविहिसे, कराविहिसे, कारावेहिसे	कारिहित्था, कारेहित्था, करावहित्था करावेहित्था, कारिहिद्, कारेहिद्, कराविहिद्, करावेहिद्
उ० पु०	कारिस्सं, कारेस्सं, कारास्स, कारिस्सामि, कारेस्सामि कराविस्सामि, करावेस्सामि कारिहामि, कारेहामि, कराविहामि	कारिस्सामो, कारावेस्सामो, काराविस्सामो, करावेस्सामो कारिहामो, कारेहामो, कराविहामो, करावेहामो, कारिहिमो, कारेहिमो, काराविहिमो, करावेहिमो

विधि एवं आज्ञार्थ

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	कारउ, कारेउ, करावउ, करायेउ	कारन्तु, कारेन्तु, करावन्तु, करावेन्तु
----------	-------------------------------	--

- म० पु० कारमु, कारेसु, करामसु कारद्, कारेद्, करावद्, करावेद्
 करायेसु, कारद्दि, कारेद्दि,
 करावद्दि, करावेद्दि, कारेज्जसु
 कारेद्दज्जसु, करायेज्जसु,
 करायेद्दज्जसु, कारेज्जद्दि, कारेद्दज्जद्दि,
 करायेज्जद्दि, कारेज्जे, करायेज्जे
- उ० पु० कारमु, कारेसु, करावसु, कारमो, कारेमो, करावमो, करावेमो
 करावेसु

क्रियाविपत्ति

एकवचन और बहुवचन

- प्र० म० उ० पु० कारेज्ज, कारेज्जा, करावेज्ज, करावेज्जा, कारन्तो, कारेन्तो, करावन्तो,
 करायेन्तो, कारमाणो, कारेमाणो, करावमाणो, करावेमाणो

ढक्क-छद् (ढक्कवाना, वन्द करवाना)-वर्तमान

- | | एकवचन | बहुवचन |
|----------|---|--|
| प्र० पु० | ढक्कइ, ढक्केइ, ढक्कावइ,
ढक्कावेइ | ढक्कन्ति, ढक्केन्ति, ढक्कावन्ति, ढक्कावेन्ति,
ढक्किरे, ढक्केइरे, ढक्काविरे, ढक्काविरे |
| म० पु० | ढक्कसि, ढक्केसि, ढक्कावसि,
ढक्कावेसि | ढक्कित्था, ढक्केइत्था, ढक्कावित्था,
ढक्कावेइत्था, ढक्कद्, ढक्केद्, ढक्कावद्,
ढक्कावेद् |
| उ० पु० | ढक्कमि, ढक्केमि, ढक्कावमि,
ढक्कावेमि | ढक्कमो, ढक्केमो, ढक्कावमो, ढक्कावेमो,
ढक्कमु, ढक्केमु—इत्यादि |

भविष्यत्काल

- | | एकवचन | बहुवचन |
|----------|--|---|
| प्र० पु० | ढक्कहिइ, ढक्केहिइ,
ढक्काविहिइ, ढक्कावेहिइ | ढक्कहिन्ति, ढक्केहिन्ति, ढक्काविहिन्ति
ढक्कावेहिन्ति, ढक्केहिरे, ढक्कहिरे,
ढक्काविहिरे, ढक्कावेहिरे |
| म० पु० | ढक्कहिसि, ढक्केहिसि,
ढक्काविहिसि, ढक्कावेहिसि | ढक्कहित्था, ढक्केहित्था, ढक्काविहित्था
ढक्कावेहित्था, ढक्कहिद्, ढक्केहिद्
ढक्काविहिद्, ढक्कावेहिद् |

- उ० पु० वन्निस्सं, वन्नेस्सं, वन्निस्सामो, वन्नेस्सामो, वन्कायिस्सामो,
 वन्कायिस्सं, वन्कायेस्सं वन्कायेस्सामो, वन्निद्दामो, वन्निद्दामो,
 वन्निस्सामि, वन्नेस्सामि वन्निद्दिस्सा, वन्निद्दिस्सा
 वन्निद्दामि, वन्निद्दामि

विधि एवं आज्ञार्थं

- | | | |
|----------|--|--|
| | एकवचन | बहुवचन |
| प्र० पु० | वन्कउ, वन्केउ, वन्कावउ, वन्कावेउ | वन्कन्तु, वन्केन्तु, वन्कारन्तु, वन्कापेन्तु |
| म० पु० | वन्कसु, वन्केसु, वन्कावसु, वन्कावेसु | वन्कद्द, वन्केद्द, वन्कारद्द, वन्कावेद्द |
| | वन्कावेहि, वन्कावेहि, वन्कावेहि, वन्कावेहि | वन्कावेहि, वन्कावेहि, वन्कावेहि, वन्कावेहि |
| उ० पु० | वन्कसु, वन्केसु, वन्कावसु, वन्कावेसु | वन्कमो, वन्केमो, वन्कावमो, वन्कावेमो |

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

- प्र० म० उ० पु० वकीअ, वकेईअ, वकावीअ, वकावेईअ

क्रियातिपत्ति

एकवचन और बहुवचन

- प्र० म० उ० पु० वन्केज्ज, वन्केज्ज, वन्कावेज्ज, वन्कावेज्ज, वन्कन्तो, वन्केन्तो,
 वन्कायन्तो, वन्कावेन्तो, वन्कम्माणो, वन्केमाणो, वन्कावमाणो,
 वन्कावेमाणो

हो < भू—वर्तमान

- | | | |
|----------|-----------------------------------|---|
| | एकवचन | बहुवचन |
| प्र० पु० | होअद्द, होएद्द, होआवद्द, होआवेद्द | होअन्ति होएन्ति, होआरन्ति, होआवेन्ति, होअन्ते, होएरे |
| म० पु० | होअसि, होएसि, होआवसि, होआवेसि | होइस्सा, होएइस्सा, होआवइस्सा, होआवेइस्सा, होअद्द, होएद्द, होआवद्द, होआवेद्द |

- उ० पु० होअमि, होएमि, होअमो, होएमो, होआमो, होआवेमो,
होआवमि, होआवेमि होअमु, होएमु, होआममु, होअम

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

- प्र० म० उ० पु० होअसी, होएसी, होआवसी, होआवेसी, होअही, होएही,
होआवही, होआवेही, होअहीअ, होएहीअ,
होआवहीअ, होआवेहीअ

भविष्यत्काल

एकवचन

बहुवचन

- प्र० पु० होइहिइ, होएहिइ होइहिनित्, होएहिनित्,
होआविहिइ, होआवेहिइ होआविहिनित्, होआवेहिनित्
म० पु० होइहित्था, होएहित्था, होआविहित्था, होआवेहित्था,
होआविहित्था, होआवेहित्था होआवेहित्था, होइहित्था
उ० पु० होइस्सं, होएस्सं, होआविस्सं, होइस्सामो, होएस्सामो, होआविस्सामो,
होआवेस्सं, होइस्सामि, होआवेस्सामो, होइहामो, होएहामो,
होएस्सामि—इत्थादि होआविहामो, होआवेहामो—इत्थादि

विधि एवं आज्ञार्थ

एकवचन

बहुवचन

- प्र० पु० होअउ, होएउ, होआवउ, होअन्तु, होएन्तु, होआवन्तु, होआवेन्तु
होआवेउ
म० पु० होअसु, होएसु, होआवसु, होअह, होएह, होआवह, होआवेह
होआवेसु, होअहि, होएहि,
होआवहि, होआवेहि
उ० पु० होअमु, होएमु, होआवमु, होअमो, होएमो, होआवमो, होआवेमो
होआवेमु

क्रियातिपत्त

एकवचन और बहुवचन

- प्र० म० उ० पु० होएज्जा, होएज्जा, होआवेज्जा, होआवेज्जा, होअन्तो, होएन्तो,
होआवन्तो, होआवेन्तो, होअमाणो, होएमाणो, होआवमाणो
होआवेमाणो

कुछ क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूपों का संकेत

धातु	वर्तमान	भूत	भविष्यत्	विधि पयं आज्ञा	क्रियातिपत्ति
पठ (पत्)	पाठइ	पाठीअ	पाठिहिइ	पाठउ	पाठेज्
आहोड (त्)	आहोडइ	आहोडोअ	आहोडिहिइ	आहोडउ	आहोडेज्
नासव (नत्)	नासवइ	नासवोअ	नासविहिइ	नासवउ	नासवेज्
दरिस (द्दा)	दरिसइ	दरिसोअ	दरिसिहिइ	दरिसउ	दरिसेज्
मिस्स (मिथ)	मिस्सइ	मिस्सोअ	मिस्सिहिइ	मिस्सउ	मिस्सेज्
अप्प (अर्प)	अप्पइ	अप्पोअ	अप्पिहिइ	अप्पउ	अप्पेज्
दूम (दू)	दूमइ	दूमोअ	दूमिहिइ	दूमउ	दूमेज्
वा (वा)	वाअइ	वाअसी	वाइहिइ	वाअउ	वाएज्
ठा (स्था)	ठाअइ	ठाअसी	ठाइहिइ	ठाअउ	ठाएज्
क्का (क्थै)	क्काअइ	क्काअसी	क्काइहिइ	क्काअउ	क्काएज्
ण्हा (स्ना)	ण्हाअइ	ण्हाअसी	ण्हाइहिइ	ण्हाअउ	ण्हाएज्
गा (गै)	गाअइ	गाअसी	गाइहिइ	गाअउ	गाएज्
भमाड (भ्रम्)	भमाडइ	भमाडीअ	भमाडिहिइ	भमाडउ	भमाडेज्
सोस (शुप्)	सोसइ	सोसोअ	सोसिहिइ	सोसउ	सोसेज्
तोस (तुप्)	तोसइ	तोसोअ	तोसिहिइ	तोसउ	तोसेज्
रूस (रुप्)	रूसइ	रूसोअ	रूसिहिइ	रूसउ	रूसेज्
मोह (मुह्)	मोहइ	मोहोअ	मोहिहिइ	मोहउ	मोहेज्
नाव (नम्)	नावइ	नावोअ	नाविहिइ	नावउ	नावेज्
पूस (पुप्)	पूसइ	पूसोअ	पूसिहिइ	पूसउ	पूसेज्
खम् (क्षम्)	खामइ	खामसी	खामिहिइ	खामउ	खामेज्

धातुओं के कर्मणि और भाव में प्रेरकरूप

(३४) प्रेरणार्थक धातु में भात्र और वर्मणि के रूप बनाने के लिए मूल धातु में भावि प्रत्यय जोड़ने के उपरान्त कर्मणि और भाव के प्रत्यय ईअ, ईय अथवा इज्ज प्रत्यय जोड़ने चाहिए ।

(३५) मूलधातु में उपान्त्य अ के स्थान पर आ कर दिया जाय और ह्य अंग में ईअ, ईय या इज्ज प्रत्यय जोड़ देने से प्रेरक कर्मणि और भावि के रूप होते हैं ।

कर् + आवि = करावि, करावि + ईअ = करारोअ + इ = करावोअइ < काराप्यते
 कर्—कार + ईअ = कारीअ + इ = कारीअइ, कारीअ + ए = कारीअए < कार्यते
 कराविहिइ, कराविहिय, कराविस्सए < कारायिष्यते ।

प्रेरक भाव और कर्मणि—हास, हसावि—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
६० पु०	हासीअइ, हासीअए हासिअइ, हासिअए, हसावीअइ, हसावीअए हसाविअइ, हसाविअए	हासीअन्ति, हामीअन्ते, हासीइरे हासिअन्ति, हासिअन्ते, हासिअिरे, हसावीअन्ति, हसावीअन्ते, हसावीइरे, हसाविअन्ति, हसाविअन्ते, हसाविअिरे
म० पु०	हासीअसि, हासीअसे, हासिअसि, हासिअसे, हसावीअसि, हसावीअसे हसाविअसे, हसाविअसि	हासीइत्था, हासीअइ, हासिअित्था, हासिअइ, हसावीइत्थर, हसावीअइ, हसावीअइ, हसाविअित्था, हसाविअइ
उ० पु०	हासीअमि, हासीआमि, हासिअमि, हासिआमि हसावीअमि, हसावीआमि, हसाविअमि, हसाविआमि	हासीअमो, हासीआमो, हासीइमो, हामीअमो, हासीअमु, हासीआमु, हासीइमु, हासीअमु, हासीअमु, हासीआम, हासीइम, हासीअम, हासिअमो, हासिआमो, हासिअिमो, हासिअिमो, हासिअमु, हासिआमु, हासिअिमु, हासिअिमु, हासिअम, हासिआम, हासिअिम, हासिअिम हसावीअमो, हसावीआमो, हसावीइमो, हसावीअमो, हसावीअमु, हसावीआमु, हसावीइमु, हसावीअमु, हसावीअम, हसावीआम, हसावीइम, हसावीअम, हसाविअमो

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हासिदिइ, हासिदिए, हसाविदिइ	हासिदिन्ति, हासिदिन्ते, हासिदिरे, हसाविदिन्ति, हसाविदिन्ते, हसाविदिरे
म० पु०	हासिदिसि, हासिदिसे, हसाविसि	हासिदित्था, हासिदिइ हसाविदित्था, हसाविदिइ
उ० पु०	हासिस्सं, हासिस्सामि हासिदामि, हासिदिमि हसाविस्सं, हसाविस्सामि	हासिस्सामो, हासिदामो, हासिदिमो हासिस्सामु, हासिदामु, हासिदिमु, हासिस्साम, हासिदाम, हासिदिम

हसाविहामि, हसाविहिमि हससाविहामो, हसाविहामो, हसाविहिमो,
 हसाविहामु, हसाविहिमु, हसाविहामि,
 हसाविहित्वा

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० हासीअ, हसारीअ, हासीईअ, हसारीईअ, हासिज्जीअ

विधि एवं आज्ञार्थ

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	हासीअउ, हासिज्जउ हसावीअउ, हसाविज्जउ	हासीअन्तु, हासिज्जन्तु, हसावीअन्तु हसाविज्जन्तु
म० पु०	हासीअहि, हासीअसु, हासीएज्जसु, हासीएज्जहि, हासीएज्जे, हासीअ हासिज्जहि, हामिज्जसु, हासिज्जेज्जसु, हासिज्जेज्जहि, हासिज्जेज्जे, हासिज्ज, हसावीअहि, हसावीएज्जहि	हासीअह, हामिज्जइ, हसावीअह, हसाविज्जइ
उ० पु०	हासीअमु, हासीआमु, हासीइमु, हासिज्जमु, हासिज्जामु, हासिज्जिमु, हसावीअमु, हसावीइमु	हासीअमो, हासीआमो, हासीइमो, हासिज्जमो, हासिज्ज मो, हासिज्जिमो हसारीअमो, हसाविज्जमो, हसाविज्जिमो

क्रियातिपत्ति

सभी पुरुष और सभी वचनों में

हासेज्ज, हासेज्जा, हसाविज्ज, हसाविज्जा, हासन्तो, हासेन्तो, हसाविन्तो, हासमानो
 हसाविमानो

खाम, खमावि < क्षम् (क्षमा कराना)—वर्तमान

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	खामीअइ, खामीअइ खामिज्जइ, खामिज्जइ	खामीअन्ति, खामीअन्ते, खामीइरे खामिज्जन्ति, खामिज्जन्ते, खामिज्जिरे
----------	--------------------------------------	---

	खमावीअइ, खमावीअए खमाविज्जइ, खमाविज्जए	खमावीअन्ति, खमावीअन्ते, खमावीइरे, खमाविज्जन्ति
म० पु०	खामीअसि, खामीअसे खामिज्जसि, खामिज्जसे खमावीअसि, खमावीअसे खमाविज्जसि, खमाविज्जसे	खामीइत्था, खामीअइ खामिज्जित्था, खामिज्जइ खमावीइत्था, खमावीअइ खमाविज्जित्था, खमाविज्जइ
उ० पु०	खामीअमि, खामीआमि खामोज्जमि, खामिज्जामि खमावीअमि, खमावीआमि खमाविज्जमि, खमाविज्जामि	खामीअमो, खामीआमो, खामीइमो खामीएमो, खामिज्जमो, खामिज्जामो, खामिज्जिमो, खामिज्जिमो खमावीअमो, खमावीआमो खमावीइमो, खमावीएमो

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु०	खामीईअ, खामीअईअ, खामिज्जोअ, खामिज्जईअ, खमावीईअ, खमावीअइअ, खमाविज्जोअ, खमाविज्जईअ, खामीअ, खमावीअ
----------------	--

भविष्यत्काल

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	खामिहिइ, खामिहए खमाविहिइ	खामिहिन्ति, खामिहिन्ते, खामिहिरे, खमाविहिन्ति, खमाविहिन्ते, खमाविहिरे
म० पु०	खामिहिसि, खामिहिसे खामिहिसि	खामिहिइत्था, खामिहिइ, खमाविहिइत्था, खमाविहिइ
उ० पु०	खामिहिसं, खामिहिसामि खामिहामि, खामिहिमि खमाविहिसं, खमाविहामि	खामिहिसामो, खामिहिसामो, खामिहिसामो, खमाविहिसामो, खामिहिसामो, खमाविहिसामो खामिहिसामो, खामिहिसामो

विधि एवं आज्ञार्थ

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	खामीअउ, खामिज्जउ खमावीअउ, खमाविज्जउ	खामीअन्नु, खामिज्जन्नु खमावीअन्नु, खमाविज्जन्नु
----------	--	--

म० पु०	खामीअहि, खामीअमु खामीपञ्जसु, खामीपञ्जहि खामीपञ्जे, खामीअ, इत्यादि	खामीअह, खामिअह खमायीअह, खमाविअह
उ० पु०	खामीअमु, खामीआसु खामीइसु, खामिअसु, खामिअसु खमायीअसु, खमायीआसु खमायीइसु खमायिअसु, खमायिअसु खमायिअसु	खामीअमो, खामीआमो खामोइमो, खामिअमो, खामिआमो, खामिअमो खमायीअमो, खमायीआमो खमायीइमो खमायिअमो, खमायिअमो खमायिअमो

क्रियातिपत्ति

सभी वचन और पुरुषों में

खामेअज, खामेअजा, खमायिअज, खमायिअजा, खामन्तो, खामन्तो,
खमायिन्तो, खाममाणो, खमायिमाणो

पिवास रूपा (पिलाना, पिलवाना)—वर्तमान

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	पिवासइ, पिवासए	पिवासन्ति, पिवासन्ते, पिवासिरे
म० पु०	पिवाससि, पिवाससे	पिवासित्था, पिवासइ
उ० पु०	पिवासमि, पिवासामि	पिवासमो, पिवासामो, पिवासिमो, पिवासेमो पिवाससु, पिवासामु, पिवासिसु, पिवासेसु, पिवासम, पिवासाम, पिवासिम, पिवासेम

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० पिवासीअ

भविष्यत्काल

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	पिवासिहिइ, पिवासिहिइए	पिवासिहिन्ति, पिवासिहिन्ते, पिवासिहिरे
म० पु०	पिवासिहिसि, पिवासिहिसे	पिवासिहित्था, पिवासिहिइ
उ० पु०	पिवासिस्ते पिवासिस्सामि पिवासिहामि, पिवासिहिमि	पिवासिस्सामो, पिवासिहामो, पिवासि- हिमो, पिवासिस्सामु, पिवासिहामु, पिवासिहिमु, पिवासिस्साम, पिवासिहाम

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पिवासउ	पिवासन्तु
म० पु०	पिवातद्धि, पिवासपु, पिवासेज्जमु, पिवासेज्जहि, पिवासेज्जे, पिवास	पिवासह
उ० पु०	पिवाससु पिवासासु, पिवासिसु	पिवाचमो पिवासाचमो, पिवासिमो

सभी पुरुष और सभी वचनों में

पिवासेज्, पिवासेज्जा, पिवासन्तो, पिवासमाणो

क्रियात्तिपत्ति

धातु	वर्तमान	भूत	भविष्यत्	विधि एवं आज्ञा	क्रियात्तिपत्ति
कार, वरावि < कृ	कारीअह	कारीअ	वारिद्धिह	कारीअउ	कारेज
हो, होआवि < भृ	होईअह	होसी	होदिह	होईअउ	होज
	होआवीअह	होआवीसी	होआविद्धिह	होआवीअउ	होआविज
ने, नेआवि < नी	नेईअह	नेसी	नेदिह	नेईअउ	नेज
	नेआविअह	नेआविसी	नेआविद्धिह	नेआविअउ	नेआविज
भा, भाआवि < भृ	भाईअह	भाईसी	भादिह	भाईअउ	भाज
	भाआवीअह	भाआवीसी	भाआविद्धिह	भाआवीअउ	भाआविज
जुगुज्ज < गुप्	जुगुज्जह	जुगुज्जोअ	जुगुज्जिद्धिह	जुगुज्जउ	जुगुज्जेज
	जुगुज्जआह	जुगुज्जआवीअ	जुगुज्जआविद्धिह	जुगुज्जआवेउ	जुगुज्जआवेज
लिज्ज < लभ्	लिज्जह	लिज्जोअ	लिज्जिद्धिह	लिज्जउ	लिज्जेज
	लिज्जआह	लिज्जआवीअ	लिज्जआविद्धिह	लिज्जआवेउ	लिज्जआवेज

सन्नन्त क्रिया

(३६) किसी कार्य के करने की हज्जा का अर्थ बतलाने के लिए संस्कृत में धातु से सन्न प्रत्यय जोड़ा जाता है। पर प्राकृत में सन्नन्त प्रक्रिया के बनाने के कोई विशेष नियम नहीं हैं। मात्र ध्वनिपरिवर्तन के आधार पर ही इस प्रक्रिया के रूप बनते हैं। यहाँ कुछ किर्यारूप उदाहरणार्थ प्रस्तुत किये जाते हैं।

लिच्छ < लभ्—लिप्सते (= लाभ की इच्छा करना)

वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लिच्छद्, लिच्छत्	लिच्छन्ति, लिच्छन्ते, लिच्छरे
म० पु०	लिच्छसि, लिच्छसे	लिच्छिस्व, लिच्छद्
उ० पु०	लिच्छामि, लिच्छमि	लिच्छामो, लिच्छामो, लिच्छिमो, लिच्छेमो, लिच्छामु, लिच्छम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० म० उ० पु०	लिच्छीभ	लिच्छीभ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लिच्छिद्दिद्, लिच्छिद्दिप्	लिच्छिद्दिन्ति, लिच्छिद्दिन्ते, लिच्छिद्दिरे
म० पु०	लिच्छिद्दिसि, लिच्छिद्दिसे	लिच्छिद्दिस्व, लिच्छिद्दिद्
उ० पु०	लिच्छिद्दिस्वामि, लिच्छिद्दिमि	लिच्छिद्दिस्वामो, लिच्छिद्दिमो, लिच्छिद्दिमो, लिच्छिद्दिस्वामु, लिच्छिद्दिमामु, लिच्छिद्दिमामु, लिच्छिद्दिस्वामि, लिच्छिद्दिमि

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लिच्छत्	लिच्छन्तु
म० पु०	लिच्छद्दि, लिच्छद्दिमु, लिच्छद्दिमामु, लिच्छद्दि	लिच्छद्दि
उ० पु०	लिच्छद्दिमु, लिच्छद्दिमामु, लिच्छिद्दिमु	लिच्छद्दिमो, लिच्छद्दिमो, लिच्छिद्दिमो

क्रियातिपत्ति

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० लिच्छन्ति, लिच्छन्ति, लिच्छन्तो, लिच्छन्तो
जुगुच्छ < जुगुप् (निन्दा या तिरस्कार करने की इच्छा करना)

जुगुच्छद् < जुगुप्सति—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जुगुच्छद्, जुगुच्छद्	जुगुच्छन्ति, जुगुच्छन्ते, जुगुच्छरे
म० पु०	जुगुच्छसि, जुगुच्छसे	जुगुच्छिस्व, जुगुच्छद्

उ० पु०	अगुच्छमि, अगुच्छामि	अगुच्छमो, अगुच्छामो, अगुच्छिमो, अगुच्छेमो, अगुच्छसु, अगुच्छामु, अगुच्छिसु, अगुच्छम, अगुच्छाम
--------	---------------------	--

भूतकाल

सभी वचन और सभी पुरुषों में अगुच्छीअ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अगुच्छिहिइ, अगुच्छिहिप	अगुच्छिहिनित्, अगुच्छिहिनित्ते, अगुच्छिहिरे
म० पु०	अगुच्छिहिसि, अगुच्छिहिसे	अगुच्छिहित्था, अगुच्छिहिह
उ० पु०	अगुच्छिहसं, अगुच्छिहस्तामि अगुच्छिहामि, अगुच्छिहिमि	अगुच्छिहसामो, अगुच्छिहामो, अगुच्छिहिमो

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अगुच्छउ	अगुच्छन्तु
म० पु०	अगुच्छहि, अगुच्छसु अगुच्छेजसु	अगुच्छह
उ० पु०	अगुच्छसु, अगुच्छामु, अगुच्छिसु	अगुच्छमो, अगुच्छामो, अगुच्छिमो

क्रियाविपत्ति

सभी वचन और सभी पुरुषों में

अगुच्छेज, अगुच्छेजा, अगुच्छन्तो, अगुच्छमाणो

बहुवचन < भुज—भोजन करने की इच्छा करना

बहुवचन < बुभुक्षति—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	उदुस्सपइ, उदुस्सप	उदुस्सन्ति, उदुस्सन्ते, उदुस्सिरे
म० पु०	उदुस्ससि, उदुस्ससे	उदुस्सिरथा, उदुस्सह
उ० पु०	उदुस्समि, उदुस्सामि	उदुस्समो, उदुस्सामो, उदुस्सिमो, उदुस्सिमो, उदुस्ससु, उदुस्सामु, उदुस्सिसु, उदुस्सम, उदुस्साम

भूतकाल

सभी वचनों और सभी पुरुषों में

बहुस्त्रीय

भविष्यत्काल

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	बुहुन्निदिद्, बुहुन्निदिद्	बुहुन्निदिन्ति, बुहुन्निदिन्ते, बुहुन्निदिरे
म० पु०	बुहुन्निदिसि, बुहुन्निदिसे	बुहुन्निदिस्था, बुहुन्निदिविद्
उ० पु०	बुहुन्निदिसं, बुहुन्निदिसामि, बुहुन्निदिसामि, बुहुन्निदिसि	बुहुन्निदिसामो, बुहुन्निदिसामो, बुहुन्निदिसामो, बुहुन्निदिसामु, बुहुन्निदिसामु, बुहुन्निदिसिस्ता

विधि एवं आज्ञार्थ

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	बुहुन्निद	बुहुन्निदन्तु
म० पु०	बुहुन्निदिसि, बुहुन्निदिसु	बुहुन्निदिसु
उ० पु०	बुहुन्निदिसु, बुहुन्निदिसामु बुहुन्निदिसु	बुहुन्निदिसामो, बुहुन्निदिसामो, बुहुन्निदिसामो

क्रियातिपत्ति

सभी वचन और सभी पुरुषों में

बुहुन्निदन्तु, बुहुन्निदन्ता, बुहुन्निदन्तो, बुहुन्निदन्तानो

सुस्सुस < श्र (सुनने की इच्छा करना)

सुस्सुसइ < शुश्रूषति—वर्तमान

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	सुस्सुसइ, सुस्सुसइ	सुस्सुसन्ति, सुस्सुसन्ते, सुस्सुसिरे
म० पु०	सुस्सुसिसि, सुस्सुसिसे	सुस्सुसिस्था, सुस्सुसिविद्
उ० पु०	सुस्सुसिसि, सुस्सुसिसामि	सुस्सुसिसामो, सुस्सुसिसामो, सुस्सुसिसामो, सुस्सुसिसामु, सुस्सुसिसामु, सुस्सुसिसामु

भूतकाल

सभी वचन और सभी पुरुषों में

बहुस्त्रीय

भविष्यत्काल

एकवचन

बहुवचन

प्र० पु०	सुस्सुसिदिद्, सुस्सुसिदिद्	सुस्सुसिदिन्ति, सुस्सुसिदिन्ते, सुस्सुसिदिरे
----------	----------------------------	---

म० पु०	सुस्सूसिद्विसि, सुस्सूसिद्वसे	सुस्सूसिद्वित्या, सुस्सूसिद्विह
उ० पु०	सुस्सूसिरस्सं, सुस्सूसिस्सामि सुस्सूसिद्वामि	सुस्सूसिस्सामो, सुस्सूसिद्वामो सुस्सूसिद्विमो, सुस्सूसिस्सामु

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सुस्सूसउ	सुस्सूसन्नु
म० पु०	सुस्सूसद्वि, सुस्सूसद्वु	सुस्सूसद्व
उ० पु०	सुस्सूसद्वु, सुस्सूसामु	सुस्सूसमो, सुस्सूसामो, सुस्सूसिमो सुस्सूसिगु

क्रियातिपत्ति

सभी वचन और सभी पुरुषों में—

सुस्सूसेज्, सुस्सूसेज्जा, सुस्सूसेन्तो, सुस्सूसामो

सनन्त—इच्छार्थक धातुओं के कर्मणि और भावि रूप

लिच्छ < लभ्—लिच्छीभइ (लिरुन्ते)

सुग < गुप्—सुगीभइ (सुगुन्त्यते)

सुहुन्त् < सुज्—सुहुन्क्वीभइ (सुहुन्त्यते)

यङन्त, यङ्लुगन्त और नामधातु

(३७) ध्यञ्जन से आरम्भ होनेवाली किसी भी एकाच् धातु के अनन्तर क्रिया को बार-बार करने अथवा क्रिया को खूब करने का बोध कराने के लिए संस्कृत में यङ् प्रत्यय लगाया जाता है। पर प्राकृत में यङन्त क्रियाएँ वर्णविकार द्वारा ही निष्पन्न होती हैं। यथा—

पेवीभइ, पेवीभए < पेवीयते

लालपइ, लालपए < लालप्यते

वरीवचपइ, वरीवचपए < वरीवृत्पते

सासफइ, सासफए < सासफ्यते

जाजाभइ, जाजाभए < जाजायते

(३८) संस्कृत धातुओं में यङ् प्रत्यय का लोप हो जाने पर भी अविशय या बार-बार अर्थ में क्रिया का प्रयोग होता है। प्राकृत में यह यङ्लुगन्त या यङ्लुगन्त ही वर्णविकार द्वारा अवगत किया जाता है। यथा—

यंम्मइ < यङ्लुमीति

यंम्मणं < यङ्लुमणम्

(१९) संज्ञा या प्रातिपदिक को 'नाम' कहते हैं; उससे किसी विशेष अर्थ में प्रत्यय होकर धातुवत् रूपों की जिनमें उतरति होती है, उसे नामधातु प्रकिया कहते हैं। तात्पर्य यह है कि जब क्रिमी सुबन्त संज्ञा के अनन्तर प्रत्यय जोड़कर धातु बना लेते हैं, तो उसे 'नामधातु' कहते हैं। नामधातुओं के विशेष विशेष अर्थ होते हैं। प्राकृत में नामधातु बनाने के निम्नलिखित नियम हैं।

(४०) नामधातु बनाने के लिए प्राकृत में विकल्प से अ (य) प्रत्यय जोड़ा जाता है। यथा—

गुरुभाइ, गुरुभाअइ < गुरुविव आचरतीति — गुरुहायते

अमराइ, अमराअइ < अमर इव आचरतीति — अमरायते

तमाइ, तमाअइ < तमायते — अन्धकार में होनेवाला आचरण करता है।

अलसाइ, अलसाअइ < अलसायते — आलसी के समान आचरण करता है।

ऊन्दाइ, ऊन्दाअइ < ऊन्दायते — गर्मी में होनेवाला जैसा आचरण करता है।

दमदमाइ, दमदमाअइ < दमदमायते — दम-दम जैसा करता है।

धूमाइ, धूमाअइ < धूमायते — धूम मचाता है।

सुदाइ, सुदाअइ < सुदायते — सुखी होता है, सुख का अनुभव करता है।

सदाइ, सदाअइ < शब्दायते — शब्द करता है।

छोदिआए—इ, छोदिआअए—इ < छोदितायते — छाल होता है।

हंसाए—इ, हंसाअए—इ < हंसायते — हंस के समान आचरण करता है।

अच्छारए—इ, अच्छाराआए—इ < अच्छारायते — अच्छारा के समान आचरण

करता है।

उन्मगाए—इ, उन्मगाअए—इ—उन्मगायते—उन्मना होता है।

कटाए—इ, कटाअए—इ < कटायते — बट का अनुभव करता है।

अस्थाअइ, अस्थाइ < अस्तायते — अस्व होता है।

तणुआइ, तणुआअइ < तणुणायति—दुबला होता है।

संभाअइ, संभाइ < संभायते—संभया होती है।

सीदलाअइ, सीदलाइ < शीतलायति—शीतल होता है।

पुत्तीअइ, पुत्तीइ < पुत्तीयति—पुत्र की इच्छा करता है।

कुरुकुराअइ, कुरुकुराइ < कुरुकुरायते—कुरुकुरु करता है।

धरधरेइ < धरधरायते—धर धर करता है।

धणाअइ, धणाइ < धनायति—धन की इच्छा करता है।

अस्साअइ, अस्साइ < अधस्यति—मैथुनेच्छा करता है।

गब्बाअइ, गब्बाइ < गब्बयति—गो की इच्छा करता है।

- वाआअइ, वाआइ < वाच्यति—वाच करने की इच्छा करता है ।
 रायाअए, रायाए < राजायते—राजा के समान आचरण करता है ।
 असनाअइ, असनाइ < अशनायति—खाने की इच्छा करता है ।
 वापफाअइ, वापफाइ < वाष्पायते—भाप निकलती है ।
 नमाअइ, नमाइ < नमस्यति—नमस्कार करता है ।
 पुत्तकामाअइ, पुत्तकामाइ < पुत्रकाम्यति—पुत्र की कामना करता है ।
 जपकामाअइ, जसकामाइ < यशस्काम्यति—यश की इच्छा करता है ।
 खीराअइ, खीराइ < क्षीरस्यति—दूध की इच्छा करता है ।
 उअआअइ, उअआअइ < उदकस्यति—पानी की व्यास है ।
 वैराअइ-ए वैराइ-ए < वैरायते—वैर जैसा आचरण करता है, वैर करता है ।
 कलहाअइ, कलहाइ < कलहायते—भगवता है ।
 चपलाअइ, चपलाइ < चपलायते—चञ्चल होता है ।
 करुणाअइ-ए, करुणाइ-ए < करुणायते—करुणा करता है ।
 सपत्नाअइ-ए, सपत्नाइ-ए < सपत्नायते—कलह करती-करता है ।
 हरिआअइ, हरीअइ < हरितायति—हरा होता है ।
 मेहाअइ-ए, मेहाइ-ए < मेघायते—वर्षा होती है ।
 दुम्माअइ-ए, दुम्माइ-ए < दुमायते—वृष जैसा मालूम होता है ।
-

कृदन्तविचार

वृत् प्रत्यय धातु के अन्त में लगते हैं और उनके योग से संज्ञा, विशेषण अथवा अव्यय के रूप बनते हैं। वृत् प्रत्ययों से सिद्ध शब्द कृदन्त कहलाते हैं।

वृत् और तिङ् प्रत्ययों में यह अन्तर है कि वृत् प्रत्ययों से सिद्ध कृदन्त शब्द संज्ञा, विशेषण अथवा अव्यय होते हैं। कहीं कहीं वृदन्त शब्द क्रिया का भी कार्य करते हैं। पर तिङ् प्रत्ययों से सिद्ध तिङन्त शब्द सदा क्रिया ही होते हैं। वृत् और तद्धित प्रत्ययों में यह अन्तर है कि तद्धित प्रत्यय सर्वदा किसी सिद्ध संज्ञा, विशेषण अथवा अव्यय में जोड़े जाते हैं; किन्तु वृत् प्रत्यय धातु में ही लगते हैं।

वर्तमान कृदन्त

(४०) धातु में न्त, माण और ई प्रत्यय लगाने से वर्तमान वृदन्त के रूप होते हैं। पर ई प्रत्यय केवल स्त्रीलिङ्ग में ही जोड़ा जाता है।

(४१) धातु के प्रेरकरूप में न्त, माण और ई प्रत्यय लगाने से प्रेरक वर्तमान वृदन्त के रूप होते हैं। यहाँ पर भी ई प्रत्यय केवल स्त्रीलिङ्ग में जुड़ता है।

(४२) धातु के प्रेरक भावि और कर्मणि रूप में न्त, माण और ई प्रत्यय लगाने से प्रेरक भावि और कर्मणि वृदन्त के रूप होते हैं।

(४३) वर्तमान कृदन्त के न्त, माण और ई प्रत्यय के परे पूर्ववर्ती अकार को विकल्प से एकार होता है। यथा—

भण्—भण + न्त = भणन्त, भण + माण = भणमाण—

	पुँल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
	भणंती, भणमाणो	भणंतं, भणमाणं	भणंती, भणंता
	भणेंती, भणेमाणो	भणेंतं, भणेमाणं	भणेंती, भणेंता
पा—	पाअंती, पाअमाणो	पाअंतं, पाअमाणं	पाअंती, पाअंता
	पाएँती, पाएँमाणो	पाएँतं, पाएँमाणं	पाएँती, पाएँता
	पांती, पामाणो	पांतं, पामाणं	पांती, पांता
			पाअमाणी, पाअमाणा
			पाएँमाणी, पाएँमाणा
			पामाणी, पामाणा
			पाई, पाई, पाई

रु—ररंतो, रवमाणो
ररेंतो, रवेमाणो

ररंतं, ररमाणं
ररेंतं, रवेमाणं

ररंती, ररंता
ररेंती, ररेंता
रवमाणी, रवमाणा
रवेमाणी, रवेमाणा
ररई, ररेई

रु—हरंता, हरमाणो
हरेंतो, हरेमाणो

हरंतं, हरमाणं
हरेंतं, हरेमाणं

हरंती, हरंता
हरेंती, हरेंता
हरमाणी, हरमाणा
हरेमाणी, हरेमाणा
हरई, हरेई

वृष्—वरिसंतो, वरिसमाणो
वरिसेंतो, वरिसेमाणो

वरिसंतं, वरिसमाणं
वरिसेंतं, वरिसेमाणं

वरिसंती, वरिसंता
वरिसेंती, वरिसेंता
वरिसमाणी, वरिसमाणा
वरिसेमाणी, वरिसेमाणा
वरिसई, वरिसेई

नी—नेंतो, नेमाणो

नेंतं, नेमाणं

नेंती, नेंता, नेमाणी, नेमाणा
नेई

तुष्—तूसंतो, तूसमाणो
तूसेंतो, तूसेमाणो

तूसंतं, तूसमाणं
तूसेंतं, तूसेमाणं

तूसंती, तूसंता
तूसेंती, तूसेंता, तूसमाणी
तूसमाणा, तूसमाणी, तूसेमाणा
तूसई, तूसेई

दा—देंतो, देमाणो

देंतं, देमाणं

देंती, देंता, देमाणी, देमाणा
देंई

चल्—चल्लंतो, चल्लमाणो
चल्लेंतो, चल्लेमाणो

चल्लंतं, चल्लमाणं
चल्लेंतं, चल्लेमाणं

चल्लती, चल्लंता
चल्लेंती, चल्लेंता, चल्माणी
चल्माणा, चल्माणी,
चल्लेमाणा, चल्ई, चल्लेई

खिद्—खिजंतो, खिजमाणो
खिजेंतो, खिजेमाणो

खिजंतं, खिजमाणं
खिजेंतं, खिजेमाणं

खिजंती, खिजंता
खिजेंती, खिजेंता,
खिजमाणी, खिजमाणा
खिजेमाणी, खिजेमाणा
खिजई, खिजेई

त्वर—	} तुर-तुरंतो, तुरमाणो तूर-तूरंतो, तूरमाणो तुरेंतो, तुरेमाणो	तुरंतं, तुरमाणं तूरंतं, तूरमाणं तुरेंतं, तुरेमाणं	तुरंती, तुरंता तूरंती, तूरंता तुरेंती, तुरेंता तुरमाणी, तुरमाणा तुरेमाणी, तुरेमाणा तुरई, तुरेई
शुश्रूप्—	सुस्सूसंतो, सुस्सूसमाणो सुस्सूसंतो, सुस्सूतेमाणो,	सुस्सूसंतं, सुस्सूसमाणं सुस्सूसंतं, सुस्सूतेमाणं,	सुस्सूसंती, सुस्सूसंता सुस्सूपेंती, सुस्सूसंता सुस्सूपमाणी, सुस्सूलमाणा सुस्सूतेमाणी, सुस्सूतेमाणा सुस्सूपई, सुस्सूतेई
लाज्ज्य—	लाज्जपंतो, लाज्जपमाणो लाज्जपंतो, लाज्जपमाणो	लाज्जपंतं, लाज्जपमाणं लाज्जपंतं, लाज्जपमाणं	लाज्जपंती, लाज्जपंता लाज्जपेंती, लाज्जपेंता लाज्जपमाणी, लाज्जपमाणा लाज्जपेमाणी, लाज्जपेमाणा लाज्जपई, लाज्जपेई
गुरुह्य—	गुरुअंतो, गुरुअमाणो गुरुपंतो, गुरुपमाणो	गुरुअंतं, गुरुअमाणं गुरुपंतं, गुरुपमाणं	गुरुअंती, गुरुअंता गुरुपंती, गुरुपंता गुरुअमाणी, गुरुअमाणा गुरुपमाणी, गुरुपमाणा गुरुअई, गुरुपई
हो < भू—	होअंतो, होअमाणो होपंतो, होपमाणो	होअंतं, होअमाणं होपंतं, होपमाणं	होअंती, होअंता होपंती, होपंता होअमाणी, होअमाणा होपमाणी, होपमाणा होअई, होपई

भावि वर्तमान कृदन्त

भण् + इज्ज (भावि प्रत्यय) = भणिज्ज + ण्त = भणिज्जंतं	भेष्यमानं
भण् + इज्ज (भावि प्रत्यय) = भाणिज्ज + माण = भणिज्जमाणं	”
भण् + ईअ (भावि इत्यय) = भणीअ + ण्त = भणीअंतं	”
भण् + ईअ (भावि प्रत्यय) = भणीअ + माण = भणीअमाणं	”

कर्मणि वर्तमान कृदन्त

	पुलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
भण्—भणीअंतो, भणिञ्जंतो	भणीअंतं, भणिञ्जंतं	भणीअंती, भणीअंती	भणीअंती, भणीअंती
भणोभमाणो, भणिञ्जमाणो	भणोभमाणं, भणिञ्ज-	भणीअमाणी, भणीअमाग-	भणीअमाणी, भणीअमाग-
		माणं	माणो, भणिञ्जमाणा
			भणिञ्जई, भणीअई
हम्—हम्मंतो, हम्ममाणो	हम्मंतं, हम्ममाणं	हम्मंती, हम्मंती	हम्मंती, हम्मंती
			हम्ममाणी, हम्ममाणा
			हम्मई

कर्त्तरि प्रेरक वर्तमान कृदन्त

कृ—कार (प्रेरक कर्त्तरि)—कार + न्त = कारंतो, करंतो < कारयन्
करावि (प्रेरक कर्त्तरि)—करावि + अ + न्त = करावंतो, करावेंतो < कारयन्
कार (प्रेरक कर्त्तरि)—कार + माण = कारमाणो, कारेमाणो < कारयमाणः
करावि (प्रेरक कर्त्तरि)—करावि + अ + माण = करावमाणो, करावेमाणो <

काराप्यमानः

पु०	नपु०	स्त्री०
शुप्—सोसवितो, सोसंतो	सोसवितं, सोसंतं	सोसवित्ता, सोसवित्ता
सोसैंतो, सोसावंतो	सोसैंतं, सोसावंतं	सोसैंती, सोसैंती
सोसविमाणो सोसमाणो	सोसविमाणं, सोसमाणं	सोसैंती, सोसैंती
सोसेमाणो, सोसावमाणो	सोसेमाणं, सोसावमाणं	सोसावंतो, सोसावंता
सोसावेमाणो	सोसावेमाणं	सोसविमाणी, सोसमाणा
		सोसमाणी, सोसविमाणा
		सोसेमाणी, सोसेमाणा
		सोसावमाणी, सोसावमाणा
		सोसावेमाणी, सोसावेमाणा

प्रेरक भावि—वर्तमान कृदन्त

भण—भणाविञ्ज + न्त = भणाविञ्जंतो < भणाप्यमाचन्
भणावी + अ + न्त = भणावीअंतो < भणाप्यमानम्

प्रेरक कर्मणि वर्तमान कृदन्त

भण—भणाविञ्ज + न्त = भणाविञ्जंतो < भणाप्यमानः
भणाविञ्ज + माण = भणाविञ्जमाणो
भणावी + अ + न्त = भणावीअंतो

पु०

नपु०

स्त्री०

भणाविज्जंतो, भणाविज्जानो
भणावीअंतो, भणावीअमाणो

भणाविज्जंतं, भणाविज्जमाणं
भणावीअंतं, भणावीअमाणं

भणाविज्जंती, भणाविज्जंता
भणाविज्जमाणी, भणाविज्ज-
माणा, भणावीअंती,
भणावीअंता, भणावीअमाणी,
भणावीअमाणा

सुस्सूअंतो (शुश्रूषन्)

सुस्सूसमाणो (शुश्रूषमाणः)

सुस्सूविज्जंतो (शुश्रूषमाणः)

सुस्सूविज्जमाणो (शुश्रूषमाणः)

सुस्सूसीअंतो ”

सुस्सूसीअमाणो ”

चंक्रमंतो < चङ्क्रमन्त

चंक्रममाण < चङ्क्रममाणः

चंक्रमिज्जंतो < चङ्क्रमिज्जमाणः

चंक्रमीअंतो < चङ्क्रममाणः

चंक्रमीअमाणो < चङ्क्रमिज्जमाणः

सुस्सूअंतं

सुस्सूसमाणं

सुस्सूविज्जंतं

सुस्सूविज्जमाणं

सुस्सूसीअंतं

सुस्सूसीअमाणं

चंक्रमंतं

चंक्रममाणं

चंक्रमिज्जंतं

चंक्रमीअंतं

चंक्रमीअमाणं

सुस्सूअंती, सुस्सूअंता

सुस्सूसमाणी, सुस्सूसमाणा

सुस्सूविज्जंती, सुस्सूविज्जंता

सुस्सूविज्जमाणी, सुस्सूविज्जमाणा

सुस्सूसीअंती, सुस्सूसीअंता

सुस्सूसीअमाणी, सुस्सूसीअमाणा

चंक्रमती, चंक्रमंता

चंक्रममाणी, चंक्रममाणा

चंक्रमिज्जंती, चंक्रमिज्जंता

चंक्रमीअंती, चंक्रमीअंता

चंक्रमीअमाणी, चंक्रमीअमाणा

कर — करावीअंतो, करावीअमाणो
कराविज्जंतो, कराविज्जमाणो
कारीअंतो, कारीअमाणो
कारिज्जंतो, कारिज्जमाणो

करावीअंतं, करावीअमाणं
कराविज्जंतं, कराविज्जमाणं
कारीअंतं, कारीअमाणं
कारिज्जंतं, कारिज्जमाणं

करावीअंती, करावीअंता
करावीअमाणी, करावीअमाणा
कारिज्जंती, कारिज्जंता
कारिज्जमाणी,
कराविज्जमाणा
कारीअंता, कारीअंती
कारीअमाणी, कारीअमाणा
कारिज्जंती, कारिज्जंता
कारिज्जमाणी, कारिज्जमाणा

भूतकृदन्त

(४४) धातु में अ, द और त प्रत्यय जोड़ने से भूतकालीन कृदन्त के रूप बनते हैं ।

(४५) धातु में अ, द और त प्रत्यय जोड़ने पर भूतकाल में धातु के अन्त्य अ का ह होता है । यथा—

गम्—गम + अ = गमिओ (धातु के अन्त्य ठा को इ किया)	◁ पतः—गया
गम + द = गमिदो	” ◁ गतः—गया
गम + त = गमितो	” ◁ गतः—गया
चल्—चल + अ = चलिओ	” ◁ चलितः—चला
चल + द = चलिदो	” ◁ चलित—चला
चल + त = चलितो	” ◁ चलितः—चला
कृ०—कर + अ = करिओ	” ◁ कृतः—किया
कर + द = करिदो	” ◁ कृतः—किया
कर + त = करितो	” ◁ कृत—किया
पठ्—पठ + अ = पठिओ	” ◁ पठितः—पढ़ा
पठ + द = पठिदो	” ◁ पठित—पढ़ा
पठ + त = पठितो	” ◁ पठितः—पढ़ा
हस्—हस + अ = हसिअं	” ◁ हसितम्—हँसा
हस + द = हसिदं	” ◁ हसितम्—हँसा
हस + त = हसितं	” ◁ हसितम्—हँसा
खस्—खस + अ = खसिअं	” ◁ खसितम्—धमका, सटा—बिपका
खस + द = खसिदं	” ◁ खसितम्— ” ”
खस + त = खसितं	” ◁ खसितम्— ” ”
खर्—खर + अ = खरिअं	” ◁ खरितम्—शीघ्रता की
खर + द = खरिदं	” ◁ खरितम्— ” ”
खर + त = खरितं	” ◁ खरितम्— ” ”
शुभ्रप्—शुभ्रस + अ = शुभ्रसिअ	” ◁ शुभ्रपितम्—सेवा की, शुभ्रपा की
शुभ्रस + द = शुभ्रसिदं	” ◁ शुभ्रपितम्— ” ”
शुभ्रस + त = शुभ्रसितं	” ◁ शुभ्रपितम्— ” ”
क्रम्—चंक्रम + अ = चंक्रमिअं	” ◁ चङ्क्रमितम्—भ्रम या बहुत चला
चंक्रम + द = चंक्रमिदं	” ◁ चङ्क्रमितम्— ” ”
चंक्रम + त = चंक्रमितं	” ◁ चङ्क्रमितम्— ” ”
ध्वे—धा + अ = धाअं—कार्य	” ◁ ध्यातम्—ध्यात किया
धा + द = धादं	” ◁ ध्यातम्—ध्यात किया
धा + त = धातं	” ◁ ध्यातम्—ध्यात किया
लृन्—लृ + अ = लृअं	” ◁ लृन्म्—काश
लृ + द = लृदं	” ◁ लृन्म्—काश
लृ + त = लृतं	” ◁ लृन्म्—काश

ह्र-भू-ह्र + अ = ह्रं < भूतम्—हुआ
 ह्र + इ = ह्रं < भूतम्—हुआ
 ह्र + उ = ह्रं < भूतम्—हुआ

प्रेरणार्थक भूतकृदन्त

(४६) धातु में प्रेरणामूचक आदि और इ प्रत्यय जोड़ने के उपरान्त भूतकृत् प्रत्यय जोड़ने से प्रेरणार्थक भूतकृदन्त के रूप होते हैं । यथा—

कर—कराधि + अ = कराधिअं < कारितम्—कराया, कराया

कराधि + इ = कराधिइं < कारितम्—कराया, कराया

कराधि + उ = कराधिउं < कारितम्—कराया, कराया

कर—कार + इ = कारि (इ प्रत्यय होने पर उपास्य अ को दीर्घ हो जाता है)—

कारि + अ = कारिअं < कारितम्

कारि + इ = कारिइं, कारि + उ = कारिउं—कराया, कराया

ह्रस् + आवि = ह्रसावि + अ = ह्रसाविअं, ह्रसावि + इ = ह्रसाविइं, ह्रसावि +

उ = ह्रसाविउं < ह्रासितम्—ह्रसाया, ह्रसाया

अनियमित भूतकृदन्त

(४७) कुछ ऐसे भी भूतकालीन कृदन्त रूप मिलते हैं, जिनमें उपर्युक्त नियम लागू नहीं होता । ध्वनिपरिवर्तन के नियमों के आधार पर संस्कृत से निष्पन्न कृदन्त रूपों को प्राकृत रूप बनाया जाता है । यथा—

मयं < मतम्—मध्यवर्ती त का लोप हो गया है, और अवगोप स्वर के स्थान पर य धृति हुई है ।

मयं < मतम्—, , ,

कडं < कृतम्—ककारोत्तर ऋ के स्थान पर अ और त के स्थान पर 'प्रत्यादी ड'।

(८११२०६) सूत्र से ड हुआ है ।

हडं < हृतम्—हकारोत्तर ककार को अ और त के स्थान पर ड ।

मडं < मृतम्—मकारोत्तर मकार को अ और त को ड हुआ है ।

जिअं < जितम्—मध्यवर्ती तकार का लोप और अ स्वर गोप ।

तत्तं < तसम्—संयुक्त प् का लोप और त को द्वित्व ।

कयं < कृतम्—विकल्प से मध्यवर्ती त का लोप होने से अ स्वर गोप और अ को य धृति ।

दडं < दृष्टम्—संयुक्त प् का लोप और ड को द्वित्व तथा ड को ड, दकारोत्तर ऋ को अ ।

मिलाणं, मिलानं < म्लानं—स्वरभक्ति के नियम द्वारा म और ल का वृधकरण और इकारागम ।

अक्खार्यं < आख्यातम्—दीर्घ अ को ह्रस्व, ख्या के स्थान पर क्ख, त का छेप और अ स्वर छेप को य भुति ।

निद्वियं < निद्वितम्—तकार का छेप, अ स्वर छेप और य भुति ।

धाणत्तं < दाणत्तम्—ण के स्थान पर ण, संयुक्त प का छेप और त को द्विय ।

संखयं < संख्यत्तम्—कृ के स्थान पर ख, त का छेप, अ स्वर छेप और य भुति ।

आकुट्टं < आकुट्टम्—कु में से संयुक्त रेफ का छेप, संयुक्त पू का छेप, ट को द्वित्व,

द्वितीय ट को ठ ।

विणट्टं < विणट्टम्—न के स्थान पर ण, ट के स्थान पर ट्ट ।

पणट्टं < प्रणट्टम्—प्र के स्थान पर प, ट के स्थान पर ट्ट ।

मट्टं < मृट्टम्—मकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, ट के स्थान पर ट्ट ।

इयं < इयम्—मध्यवर्ती त का छेप, अ स्वर छेप, य भुति ।

जायं < जायम्—

मिलाणं, मिलानं < म्लानम्—स्वर भक्ति के नियम से म्ल का वृधकरण, अकार के स्थान पर इत्व ।

परुविअं < परुपितम्—प्र के स्थान पर, मध्यवर्ती प को व, त का छेप और अ स्वर छेप ।

ठियं < स्थितम्—स्थ के स्थान पर ठ, त छेप, अ स्वर छेप और य भुति ।

विद्वियं < विद्वितम्—त छेप, अ स्वर छेप और अ के स्थान पर य ।

पप्रत्तं, पणत्तं < प्रत्तम्—प्र के स्थान पर प, ङ को ण, संयुक्त प का छेप और त को द्वित्व ।

पपरियं < प्रपारियम्—प्र के स्थान पर प, ङ के स्थान पर ण, प को व, त छेप और अ छेप तथा य भुति ।

सख्यं < संख्यत्तम्—कृ के स्थान पर ख, त छेप, य भुति तथा 'सं' के अनुराग का छेप ।

किलिट्टं < क्लिट्टम्—स्वरभक्ति के नियमानुसार वृधकरण, इकार का आगम, ट के स्थान पर ट्ट ।

मुयं < धुयम्—धु के स्थान पर मु, तकार का छेप, य भुति ।

संसट्टं < संसट्टम्—सकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, ट के स्थान पर ट्ट ।

पट्टं < पट्टम्—पकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, ट के स्थान पर ट्ट ।

भविष्यत्कृदन्त

(४८) धातु में इस्संत, इस्ममाण और इस्सई प्रत्यय जोड़ने से भविष्यन्मूचक कृदन्त के रूप बनते हैं ।

कृ—कर् + इस्संत = करिरसंतो < करिष्यन्—करता होगा ।

कर् + इस्ममाण = करिस्समाणो < करिष्यमाणः—करता होगा ।

कर् + इस्सई = करिस्सई < करिष्यन्ती—करती होगी ।

कर् + आवि = करावि + इस्ममाण = कराविस्वमाणो < कारावयिष्यमाणः ।

करावि + स्संतो = कराविस्संतो < कारावयिष्यन्—कराता होगा ।

हेत्वर्थ कृत् प्रत्यय

(४९) धातु में तुं, दुं और चप हेत्वर्थ कृत् प्रत्यय जोड़ने से हेत्वर्थ कृदन्त के रूप बनते हैं ।

(५०) उपयुक्त हेत्वर्थ कृत्प्रत्ययों के जोड़ने पर पूर्ववर्ती अ को इ और ए हो जाता है ।

तुं (उं), दुं

भण्—भण + तुं (उं) = भणितुं (प्रत्या जोड़ने के पूर्व अकार को इत्थं हुआ) ।

भण + तुं (उं) = भणेउं—प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकार को एत्थं हुआ ।

भण + तुं = भणितुं, भणेतुं—अकार जो इत्थ एवं एत्थ होने से दोनों रूप बनेंगे ।

भण + दुं = भणिटुं, भणेदुं— " " < भणितुम् ।

हस—हस + तुं (उं) = हसितुं, हसेउं—प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकार को इत्थ और एत्थ ।

हस + तुं = हसितुं, हसेतुं, हसिटुं, हसेदुं < हसितुम् ।

हो < भू—होभ + तुं (उं) = होइउं—अकार के रवान पर इकार ।

होभ + तुं (उं) = होणुं— " " एत्थ ।

होभ + तुं, होभ + दुं = होइतुं, होणुं, होइदुं, होणुं < भणितुं ।

प्रेरणार्थक हेतु कृदन्त

(५१) धातु में प्रेरणार्थक प्रत्यय जोड़ने के परचात् तुं, दुं प्रत्यय जोड़े जाते हैं । यथा—

भण्—भण + आवि = भणावि + तुं (उं) = भणावितुं

भण + आवि = भणावि + दुं = भणाविदुं

कर्—कर + आवि = करावि + तुं (उं) = करावितुं

कर + आवि = करावि + दुं = कराविदुं, करावितुं

- कर्—कार + तुं (उं) = कारिउं, कारितुं, कारितुं
 हस्—हास + तुं (उं) = हासिउं, हासेउं, हासितुं, हासितुं
 शुश्रूप्—शुस्सुस + तुं (उं) = शुस्सुसिउं, शुस्सुसेउं, शुस्सुसितुं, शुस्सुसितुं
 चङ्कम्भ्य—चंक्रम + तुं (उं) = चंक्रमिउं, चंक्रमेउं, चंक्रामितुं, चंक्रमितुं

त्तए

- कृ-रर्—वर < त्तए = करेत्तए, करित्तए < कर्तुम्—अकार को ए होने पर करेत्तए और इत्व होने पर करित्तए रूप बने हैं ।
 सिज्ज्—सिज्ज + त्तए = सिज्जित्तए, सिज्जेत्तए < सेज्जुम्
 उववज्ज्—उववज्ज + त्तए = उववज्जित्तए, उववज्जेत्तए < उपपत्तुम्
 विहर्—विहर + त्तए = विहरित्तए, विहरेत्तए < विहर्तुम्
 पाल्—पास + त्तए = पासित्तए, पासेत्तए < दण्डुम्
 गम्—गम + त्तए = गमित्तए < गन्तुम्
 प्र + यञ् पव्वज्—पव्वज + त्तए = पव्वज्जित्तए, पव्वजेत्तए < प्रमज्जितुम्
 आ + ह्—आहर—आहार + त्तए = आहारित्तए, आहारेत्तए—आहर्तुम्
 दा—दल्—दल + त्तए = दलित्तए, दलेत्तए < दातुम्
 अच्चासाद्—अच्चासाद + त्तए = अच्चासादेत्तए < अत्याशातयितुम्
 समभिषोक्—समहिलोक + त्तए = समहिलोकेत्तए, समहिलोकेत्तए < समभि-
 लोकयितुम्

अनियमित हेत्वर्थ कृदन्त

(१२) कुछ ऐसे शब्द हैं, जिनमें हेत्वर्थक कृत्प्रत्यय नहीं जाड़े जाते हैं; बल्कि जिनकी सिद्धि ध्वनिपरिवर्तन के नियमों के आधार पर होती है। यथा—

कृ-क + तुं = का + तुं (उं) = काउं < कर्तुं—ककारोत्तर अ के स्थान पर आ आदेश होने से ।

प्रह् + तुं = पेट् + तुं = पेटुं < प्रहीतुम्—संस्कृत की प्रह् धातु के स्थान पर पेट् आदेश हुआ है और प्रत्यय का संयोग होने से पेटुं रूप बना है ।

त्वर + तुं = तुर + तुं (उं) = तुरिउं, तुरेउं < स्वरितुम्—प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकार को ह्रस्व और एत्व होने से ।

दृश् + तुं = दृद् + तुं (उं) = दृदुं—दृश् के स्थान पर दृद् आदेश हुआ है ।

भुञ् + तुं = भोत् + तुं = भोत्तुं < भोत्तुम्

मुष् + तुं = मोत् + तुं = मोत्तुं < मोत्तुम्

वरु + तुं = रोत् + तुं = रोत्तुं < रोदितुम्

वप् + तुं = वोत् + तुं = वोत्तुं < वत्तुम्

लृप् + तुं = लृत् + तुं < लृत्तुम्

रुप् + तुं = रोत् + तुं < रोटुम्

युध् + तुं = योद् + तुं, जोद् + तुं < योद्दुम्

सम्यन्ध भूतकृदन्त

(१३) घातु में तुं, तूण, तुआण, अ, इत्ता, इत्ताण, आय और भापृ प्रत्यय जोड़ने से सम्यन्धसूचक भूतकृदन्त के रूप बनते हैं ।

(१४) तुं, अ, इत्ता और आय प्रत्यय होने पर प्रत्यय के पूर्ववर्ती अ को विकल्प से इ और पृ आदेश होते हैं ।

(१५) तूण, तुआण और इत्ताण प्रत्ययों में ण के स्थान पर सानुस्वार णं आदेश होता है ।

उदाहरण—

हो < भू—होअ + तुं (उं) = होइउं, होपउं < भूत्वा—प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकार के स्थान पर इत्व तथा एत्व किया है ।

होअ + अ = होइअ, होपअ < भूत्वा—प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकार के स्थान पर इत्व तथा एत्व किया है ।

होअ + तूण (ऊण) = होइऊण, होइऊणं, होपऊण, होपऊणं < भूत्वा—प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकार के स्थान पर इत्व एत्वं एत्वं के अनन्तर विकल्प से ण के ऊपर अनुस्वार किया गया है ।

होअ + तुआण (उआण) = होइउआण, होइउआणं, होपउआण, होपउआणं < भूत्वा—प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकार को इत्व एत्वं एत्व तथा ण के ऊपर विकल्प से अनुस्वार किया है ।

हस्—हस + तुं (उं) = हसिउं, हसेउं < हसित्वा—विकल्प से इत्व तथा एत्व ।
हस + अ = हसिअ, हसेअ < हसित्वा

हस्—हस + तूण (ऊण) = हसिऊण, हसिऊणं, हसेऊण, हसेऊणं < हसित्वा—विकल्प से इत्व एत्वं एत्व तथा ण के ऊपर अनुस्वार ।

हस + तुआण (उआण) = हसिउआण, हसिउआणं, हसेउआण, हसेउआणं < हसित्वा—विकल्प से इत्व एत्वं एत्व तथा ण के ऊपर अनुस्वार ।

भण्—भण + तुं (उं) = भणिउं, भणेउं < भणित्वा

भण + अ = भणिअ, भणेअ—प्रत्यय के पूर्ववर्ती अ को इत्व एवं एत्व ।

भण + तूण (ऊण) = भणिऊण, भणिऊणं, भणेऊण, भणेऊणं

भण + तुआण (उआण) = भणितआण, भणितआणं, भणेउआण, भणेउआणं < भणित्वा ।

प्रेरणार्थक सम्बन्धसूचक कृदन्त

(५५) प्रेरणार्थक बनाने के लिए प्रेरणामूचक प्रत्यय जोड़ने के अनन्तर ही सम्बन्धक भूत वृत्प्रत्ययों को जोड़ना चाहिए ।

उदाहरण—

भण्—भण + आवि = भणावि + तुं (उं) = भणाविउं, भणावेउं;

भणावि + अ = भणाविअ, भणावेअ < भणावित्वा

भणावि + तूण (ऊण) = भणाविऊण, भणाविऊणं

भणावि + तुआण (उआण) = भणावितउआण, भणावितउआणं < भणावित्वा—

कहलाकर या कहलवाकर

भाण + तुं (उं) = भाणितं, भाणेउं

भाण + अ = भाणिअ, भाणेअ

भाण + तूण (ऊण) = भाणिऊण, भाणिऊणं, भाणेऊण, भाणेऊणं

भाण + तुआण (उआण) = भाणितउआण, भाणितउआणं, भाणेउआण, भाणेउआणं

कर—कर + आवि = करावि + तुं (उं) = कराविउं, करावेउं

करावि + अ = कराविअ, करावेअ

करावि + तूण (ऊण) = कराविऊण, कराविऊणं < करावित्वा

कार + तुं (उं) = कारितं, कारेउं

कार + अ = कारिअ, कारेअ

कार + तूण (ऊण) = कारिऊण, कारिऊणं, कारेऊण, कारेऊणं

कार + तुआण (उआण) = कारितउआण, कारितउआणं, कारेउआण, कारेउआणं ।

शुभूप—सुस्सूम + तुं (उं) = सुस्सूमितं सुस्सूमेउं

सुस्सूम + अ = सुस्सूमिअ, सुस्सूमेअ

सुस्सूम + तूण (ऊण) = सुस्सूमिऊण, सुस्सूमेऊण, सुस्सूमेऊणं

सुस्सूम + तुआण (उआण) = सुस्सूमितउआण, सुस्सूमितउआणं, सुस्सूमेउआण, सुस्सूमेउआणं ।

सुस्सूमेउआणं ।

चङ्कम—चङ्कम + तुं (उं) = चङ्कमितं, चङ्कमेउं

चङ्कम + अ = चङ्कमिअ, चङ्कमेअ

चंरुम + त्ण (ऊण) = चंरुमिऊण, चंरुमिऊणं, चंरुमेऊण, चंरुमेऊणं
चंरुम + तुआण = चंरुमिउआण, चंरुमिउआणं, चंरुमेउआण, चंरुमेउआणं

इत्ता प्रत्यय

इस् + इत्ता = इसित्ता, इसेत्ता < इसित्वा—विकल्प से इत्व और एत्व
कृ + इत्ता = करित्ता, करेत्ता, < इत्वा— " "
कह + इत्ता = कहित्ता, कहेत्ता < कथयित्वा— " "
गम + इत्ता < गमित्ता, गमेत्ता < गत्वा— " "

इत्ताण प्रत्यय

इस् + इत्ताण = इसित्ताण, इसेत्ताण, इसित्ताणं, इसेत्ताणं < इसित्वा—विकल्प से इत्व, एत्व तथा ण के ऊपर अनुस्वार
कृ + इत्ताण = करित्ताण, करित्ताणं, करेत्ताण, करेत्ताणं < इत्वा—विकल्प से इत्व, एत्व तथा ण के ऊपर अनुस्वार
गम + इत्ताण = गमित्ताण, गमित्ताणं, गमेत्ताण, गमेत्ताणं < गत्वा—विकल्प से इत्व, एत्व तथा ण के ऊपर अनुस्वार

आय प्रत्यय

गह + आय = गहाय

आए प्रत्यय

संपह + आए = संपहाए < संप्रेक्ष्य
आया + आए = आयाए < अ दाय

अनियमित सम्बन्धक भूत कृदन्त

कृ + तुं = काउं—ककारोत्तर ककार के स्थान पर आकार ।
कृ + तूण = काऊणं— " " "
कृ + तुआण = काउआण, काउआणं— " "
मह — घेत् + तुं = घेत्तुं—मह के स्थान पर घेत् आदेश होता है ।
मह — घेत् + तूण = घेत्तूण, घेत्तूणं— " "
मह — घेत् + तुआण = घेत्तुआण, घेत्तुआणं— " "
त्वर — तुर + तुं (उं) = तुरिउं, तुरेउं—विकल्प से अ को इत्व तथा एत्व
तुर + अ = तुरिअ, तुरेअ— " "
तुर + तूण (ऊण) = तुरिऊण, तुरिऊणं, तुरेऊण, तुरेऊणं—विकल्प से इत्व, एत्व तथा ण के ऊपर अनुस्वार ।

कृत्य प्रत्यय या विध्यर्थ प्रत्यय

अंग्रेजी में जो कार्य (Potential Participle) पोटेंशल् पार्टिसिप्ल से लिया जाता है, वही कार्य प्राकृत में कृत्य या विध्यर्थ प्रत्ययों से लिया जाता है । हिन्दी में विध्यर्थ प्रत्ययों का कार्य 'चाहिये' या 'योग्य' द्वारा प्रकृत किया जाता है ।

(६०) धातु में तत्र, अणिञ्ज और अणीअ प्रत्यय जोड़ने से विध्यर्थ कृदन्त रूप बनते हैं ।

(६१) तत्र या दत्र प्रत्यय जोड़ने पर प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकार को इ तथा प आदेश होता है ।

(६२) संस्कृत के य प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में 'ज' प्रत्यय होता है ।

उदाहरण

धातु	तत्र	अणिञ्ज, अणीअ
ज्ञा—ज्ञाण	जाणिअर्थ, जाणेअर्थ	जाणणिज्जं, जाणणीअं
ज्ञा—मुण	मुणिअर्थ, मुणेअर्थ	मुणणिज्जं, मुणणीअं
स्था—थक्	थक्किअर्थ, थक्केअर्थ	थक्किज्जं, थक्कणीअं
स्था—चिट्ठ	चिट्ठिअर्थ, चिट्ठेअर्थ	चिट्ठणिज्जं, चिट्ठणीअं
पा—पिज्ज	पिज्जिअर्थ, पिज्जेअर्थ	पिज्जणिज्जं, पिज्जणीअं
धु—मुण	मुणिअर्थ, मुणेअर्थ	मुणणिज्जं, मुणणीअं
हन्—हण	हणिअर्थ, हणेअर्थ	हणणिज्जं, हणणीअं
धू—धुण	धुणिअर्थ, धुणेअर्थ	धुणणिज्जं, धुणणीअं
धू—धुव	धुविअर्थ, धुवेअर्थ	धुविज्जं, धुवणीअं
हु—हुण	हुणिअर्थ, हुणेअर्थ	हुणणिज्जं, हुणणीअं
सु—सव	सविअर्थ, सवेअर्थ	सविज्जं, सवणीअं
रतु—धुण	धुणिअर्थ, धुणेअर्थ	धुणणिज्जं, धुणणीअं
लू—लुण	लुणिअर्थ, लुणेअर्थ	लुणणिज्जं, लुणणीअं
पु—पुण	पुणिअर्थ, पुणेअर्थ	पुणणिज्जं, पुणणीअं
कृ—कुण	कुणिअर्थ, कुणेअर्थ	कुणणिज्जं, कुणणीअं
कृ—कर (नाम)	कापर्थ,	करणिज्जं, करणीअं
जृ—जर	जरिअर्थ, जरेअर्थ	जरणिज्जं, जरणीअं
धृ—धर	धरिअर्थ, धरेअर्थ	धरणिज्जं, धरणीअं

तुर + तुआण (उआण) = तुरिउआण, तुरिउआण्यं, तुरेउआण, तुरेउआणं—
विकल्प से इत्थ, एत्थ तथा ण के ऊपर अनुस्वार ।

दृश् + तुं = दृदृश्; दृढ + तूण = दृदूण, दृदूणं, दृढ + तुआण = दृदुआण, दृदुआणं

भुञ् + तुं = भोत् + तुं = भोत्तुं—भुञ् के स्थान पर भोत् ।

भोत् + तूण = भोत्तूण, भोत्तूणं; भोत् + तुआण = भोत्तुआण, भोत्तुआणं

मुष् + तुं = मोत् + तुं = मोत्तुं

मुष् + तूण = मोत् + तूण = मोत्तूण, मोत्तूणं

मुष् + तुआण = मोत् + तुआण = मोत्तुआण, मोत्तुआणं

रुद् + तुं = रोत् + तुं = रोत्तुं

रुद् + तूण = रोत् + तूण = रोत्तूण, रोत्तूणं

रुद् + तुआण = रोत् + तुआण = रोत्तुआण, रोत्तुआणं

वच् + तुं = वोत् + तुं = वोत्तुं

वच् + तूण = वोत् + तूण = वोत्तूण, वोत्तूणं

वच् + तुआण = वोत् + तुआण = वोत्तुआण, वोत्तुआणं

(१६) सस्मृत के वृद्धन्त रूपों में ध्वनि परिवर्तन करने से प्राकृत के कृद्न्त रूप बन जाते हैं । ध्वनिपरिवर्तन के नियम प्रथम अध्याय के ही प्रवृत्त होते हैं ।

आदाय > आयाय—संयुक्तों द का लोप, आ स्वर शेष तथा यधुति ।

गत्वा > गत्ता, गत्ता—संयुक्त व का लोप और त जो द्वित्व, त्वा के स्थान पर संयुक्त ध्वनि परिवर्तन के नियमानुसार ब ।

शात्वा > नत्ता, नत्ता—ज्ञ को ह्रस्व तथा ज्ञ के स्थान पर न या ण और त्वा को चा ।

वृद्धत्वा > वृद्धत्ता—संयुक्त व का लोप और द्द के स्थान उष् ।

भुक्त्वा > भुक्त्ता—भकारोत्तर उकार के स्थान पर ओकार, और क्त्वा के स्थान पर चा ।

मत्वा > मत्ता, मत्ता—संयुक्त व का लोप और त को द्वित्व, एत् के स्थान पर ब ।

वन्दिहत्वा > वन्दिहत्ता—संयुक्त व का लोप और त को द्वित्व ।

विप्रजहाय > विप्पजहाय—प्र में से र का लोप और प को द्वित्व ।

मुक्त्वा > मुक्त्ता—संयुक्त प और व का लोप, त को द्वित्व ।

संहत्य > साहृद्द—अनुस्वार का लोप, अ को आहृत्, हृत्कारोत्तर ऋकार को अ तथा त्य के स्थान पर र्द्द आदेश ।

हत्वा > हत्ता—हृत् धातु के ऋकार को अहृत्कार और संयुक्त व का लोप ।

हृप्—हरिस	हरिसिअन्, हरिमेअन्	हरिसिअन्, हरिसिअन्
मुद्—मुग्ग	मुग्गिअन्, मुग्गेअन्	मुग्गिअन्, मुग्गिअन्
इप्—इच्छ	इच्छिअन्, इच्छेअन्	इच्छिअन्, इच्छिअन्
भिद्—भिन्द	भिन्दिअन्, भिन्देअन्	भिन्दिअन्, भिन्दिअन्
युध्—युग्ग	युग्गिअन्, युग्गेअन्	युग्गिअन्, युग्गिअन्
बुध्—बुग्ग	बुग्गिअन्, बुग्गेअन्	बुग्गिअन्, बुग्गिअन्
पत्—पड	पडिअन्, पडेअन्	पडिअन्, पडिअन्
सद्—सड	सडिअन्, सडेअन्	सडिअन्, सडिअन्
शद्—शड	शडिअन्, शडेअन्	शडिअन्, शडिअन्
वृध्—वृद्ध	वृद्धिअन्, वृद्धेअन्	वृद्धिअन्, वृद्धिअन्
नृत्—नध	नधिअन्, नधेअन्	नधिअन्, नधिअन्
रूद्—रुव	रुविअन्, रुवेअन्	रुविअन्, रुविअन्
नम्—नव	नविअन्, नवेअन्	नविअन्, नविअन्
विसृज्—वोसिर	वोसिरिअन्, वोसिरेअन्	वोसिरिअन्, वोसिरिअन्
अद्—अट्ट	अट्टिअन्, अट्टेअन्	अट्टिअन्, अट्टिअन्
कुप्—कुप्प	कुप्पिअन्, कुप्पेअन्	कुप्पिअन्, कुप्पिअन्
नद्—नट्ट	नट्टिअन्, नट्टेअन्	नट्टिअन्, नट्टिअन्
सिक्—सिक्क	सिक्किअन्, सिक्केअन्	सिक्किअन्, सिक्किअन्
सृग्—सृग्ग	सृग्गिअन्, सृग्गेअन्	सृग्गिअन्, सृग्गिअन्
वन्द्—वन्द	वन्दिअन्, वन्देअन्	वन्दिअन्, वन्दिअन्
प्रह्—पेत्	पेत्तन्	पेत्तन्
वच्—वोत्	वोत्तन्	वोत्तन्
रूद्—रोत्	रोत्तन्	रोत्तन्
भुज्—भोत्	भोत्तन्	भोत्तन्
मुच्—मोत्	मोत्तन्	मोत्तन्
दृन्—दट्ट	दट्टन्	दट्टन्
हस्—हस	हसिअन्, हसेअन्	हसिअन्, हसिअन्

प्रेरक विधयर्था कृदन्त

(६०) प्रात में प्रेरक प्रत्यय जोड़ने के अनन्तर विधयर्थाक सध्य, अणिय और अणीअ प्रत्यय जोड़े जाते हैं । यथा—

हस—हस + आवि = हसावि + तन् = हसावितन्, हसाविअन् < हसावितन्त्यम्
हसावि + अणिअ = हसावणिअन्, हसावणीअन् < हसावणीयम्

तृ—तर	तरिअव्यं, तरेअव्यं	तरणिज्जं, तरणीअं
हृ—हर	हरिअव्यं, हरेअव्यं	हरणिज्जं, हरणीअं
सृ—सर	सरिअव्यं, सरेअव्यं	सरणिज्जं, सरणीअं
स्मृ—सुमर	सुमरिअव्यं, सुमरेअव्यं	सुमरणिज्जं, सुमरणीअं
जागृ—जग्ग	जग्गिअव्यं, जग्गेअव्यं	जग्गणिज्जं, जग्गणीअं
शक्—तीर	तीरिअव्यं, तीरेअव्यं	तीरणिज्जं, तीरणीअं
शक्—सक्क	सक्किअव्यं, सक्केअव्यं	सक्कणिज्जं, सक्कणीअं
पच्, क्षिप्—सोह	सोह्णिअव्यं, सोह्लेअव्यं	सोह्णिज्जं, सोह्णीअं
मुच्—मेल्ल	मेल्लिअव्यं, मेल्लेअव्यं	मेल्लणिज्जं, मेल्लणीअं
सिच्—सिञ्च	सिञ्चिअव्यं, सिञ्चेअव्यं	सिञ्चणिज्जं, सिञ्चणीअं
गर्ज—बुक्क	बुक्किअव्यं, बुक्केअव्यं	बुक्कणिज्जं, बुक्कणीअं
राज्—छज्ज	छज्जिअव्यं, छज्जेअव्यं	छज्जणिज्जं, छज्जणीअं
लज्ज्—जीह	जीहिअव्यं, जीहेअव्यं	जीहिज्जं, जीहिणीअं
मुज्—मुंज	मुंजिअव्यं, मुंजेअव्यं	मुंजणिज्जं, मुंजणीअं
कथ्—बोह्ल	बोह्लिअव्यं, बोह्लेअव्यं	बोह्लणिज्जं, बोह्लणीअं
सिध्—हक्क	हक्किअव्यं, हक्केअव्यं	हक्कणिज्जं, हक्कणीअं
खिद्—खिज्ज	खिज्जिअव्यं, खिज्जेअव्यं	खिज्जणिज्जं, खिज्जणीअं
कुब्ध्—कुब्भ	कुब्भिअव्यं, कुब्भेअव्यं	कुब्भणिज्जं, कुब्भणीअं
स्वप्—छोट्ट	छोट्टिअव्यं, छोट्टेअव्यं	छोट्टणिज्जं, छोट्टणीअं
लिप्—लिम्प	लिम्पिअव्यं, लिम्पेअव्यं	लिम्पणिज्जं, लिम्पणीअं
लुभ्—लुब्भ	लुब्भिअव्यं, लुब्भेअव्यं	लुब्भणिज्जं, लुब्भणीअं
धुम्—धुब्भ	धुब्भिअव्यं, धुब्भेअव्यं	धुब्भणिज्जं, धुब्भणीअं
भ्रम—हुंहुल	हुंहुलिअव्यं, हुंहुलेअव्यं	हुंहुलणिज्जं, हुंहुलणीअं
गम्—गोल	गोलिअव्यं, गोलेअव्यं	गोलणिज्जं, गोलणीअं
रम्—मोद्दाअ-य	मोद्दाइअव्यं, मोद्दाएअव्यं	मोद्दाइणिज्जं, मोद्दाएणीअं
भ्रंश—मुह्ल	मुह्लिअव्यं, मुह्लेअव्यं	मुह्लणिज्जं, मुह्लणीअं
नश्—नस्स	नस्सिअव्यं, नस्सेअव्यं	नस्सणिज्जं, नस्सणीअं
दश्—देस्स	देस्सिअव्यं, देस्सेअव्यं	देस्सणिज्जं, देस्सणीअं
स्पृद्—फास	फासिअव्यं, फासेअव्यं	फासणिज्जं, फासणीअं
स्पृश्—छिव	छिविअव्यं, छिवेअव्यं	छिविज्जं, छिवणीअं
भप्—बुफ	बुफिअव्यं, बुफेअव्यं	बुफणिज्जं, बुफणीअं
पुप्—पूस	पूसिअव्यं, पूसेअव्यं	पूसणिज्जं, पूसणीअं

हृप्—हरिस	हरिसिअअं, हरिमेअअं	हरिसिणिज्जं, हरिसणीअं
मुह्—मुग्म	मुज्जिअअं, मुज्जेअअं	मुज्जणिज्जं, मुज्जणीअं
इप्—इच्छ	इच्छिअअं, इच्छेअअं	इच्छणिज्जं, इच्छणीअं
भिद्—भिन्द	भिन्दिअअं, भिन्देअअं	भिन्दिणिज्जं, भिन्दिणीअं
युध्—युग्म	युज्जिअअं, युज्जेअअं	युज्जणिज्जं, युज्जणीअं
बुध्—बुग्म	बुज्जिअअं, बुज्जेअअं	बुज्जणिज्जं, बुज्जणीअं
पत्—पड	पडिअअं, पडेअअं	पडणिज्जं, पडणीअं
सद्—सड	सडिअअं, सडेअअं	सडणिज्जं, सडणीअं
शद्—शड	शडिअअं, शडेअअं	शडणिज्जं, शडणीअं
वृध्—वृद्ध	वृद्धिअअं, वृद्धेअअं	वृद्धणिज्जं, वृद्धणीअं
नृत्—नच्च	नच्चिअअं, नच्चेअअं	नच्चणिज्जं, नच्चणीअं
रुद्—रुव	रुविअअं, रुवेअअं	रुवणिज्जं, रुवणीअं
नम्—नव	नविअअं, नवेअअं	नवणिज्जं, नवणीअं
विसृज्—वोसिर	वोसिरिअअं, वोसिरेअअं	वोसिरणिज्जं, वोसिरीअं
अद्—अट्ट	अट्टिअअं, अट्टेअअं	अट्टणिज्जं, अट्टणीअं
कुप्—कुप्प	कुप्पिअअं, कुप्पेअअं	कुप्पणिज्जं, कुप्पणीअं
नट्—नट्ट	नट्टिअअं, नट्टेअअं	नट्टणिज्जं, नट्टणीअं
सिक्—सिक्क	सिक्किअअं, सिक्केअअं	सिक्कणिज्जं, सिक्कणीअं
मृग्—मग्ग	मग्गिअअं, मग्गेअअं	मग्गणिज्जं, मग्गणीअं
वन्द्—वन्द	वन्दिअअं, वन्देअअं	वन्दणिज्जं, वन्दणीअं
मह्—घेत्	घेत्तअअं	घेत्तणिज्जं, घेत्तणीअं
वच्—घोत्	घोत्तअअं	घोत्तणिज्जं, घोत्तणीअं
रुद्—रोत्	रोत्तअअं	रोत्तणिज्जं, रोत्तणीअं
भुज्—भोत्	भोत्तअअं	भोत्तणिज्जं, भोत्तणीअं
मुच्—मोत्	मोत्तअअं	मोत्तणिज्जं, मोत्तणीअं
दृश्—दृह	दृहय	दृहयणिज्जं, दृहयणीअं
हस्—हस	हसिअअं, हसेअअं	हसिणिज्जं, हसणीअं

प्रेरक विध्यर्थ कृदन्त

(६०) धातु मे प्रेरक प्रत्यय जोड़ने के अनन्तर विध्यर्थक तव्य, अणिज्ज और अणीअ प्रत्यय जोड़े जाते हैं । यथा—

हस—हस + आवि = हसावि + तव्य = हसावितव्यं, हसाविअव्यं < हसापवितव्यम्
हसावि + अणिज्ज = हसाविज्जं, हसावणीअं < हसापनीयम्

अनियमित विध्यर्थ कृदन्त

दज्जं < कार्यम्—आकार को ह्रस्व, संयुक्त रेफ का लोप, य को ज और द्वित्व ।

किचं < कृत्थम्—ककारोत्तर ऋकार के स्थान पर इकार, त्य के स्थान पर च ।

गेज्जं < ग्राह्यम्—ग्राह्य के स्थान पर गेज्ज आदेश होता है ।

गुज्जं < गुह्यम्—ह्य के स्थान पर ज्ज ।

यज्जं < यज्थम्—संयुक्त रेफ का लोप, य लोप और ज को द्वित्व ।

वज्जं < वद्यम्—संयुक्त द का लोप, य के स्थान प ज और ज को द्वित्व ।

वचं < वाच्यम्—संयुक्त का लोप और च को द्वित्व ।

वकं < वाच्यम्—संयुक्त य का लोप और क को द्वित्व ।

जन्नं < जन्थम्—संयुक्त य का लोप और न को द्वित्व ।

भव्यं < भव्यम्—संयुक्त य का लोप और थ को द्वित्व ।

पेज्जं < पेयम्—संस्कृत के य प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में ज होता है ।

गेज्जं < गेयम्—

” ” ” ”

पक्वं < पाक्यम्—पकारोत्तर आकार को ह्रस्व, संयुक्त थकार का लोप और च को द्वित्व ।

जज्जं < जज्यम्—ज्य के स्थान पर ज्ज हुआ है ।

सज्जं < सहायम्—ह्य के स्थान पर ज्ज ।

देज्जं, देलं < देयम्—संस्कृत के य प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में ज, द्वितीय रूप में य का लोप और अ स्वर शेष ।

शीलधर्म वाचक

शील, धर्म तथा भली प्रकार सम्पादन इन तीनों में से किसी एक अर्थ को व्यक्त करने के लिए प्राकृत में इर प्रत्यय होता है ।

उदाहरण—

हस + इर = हसिरो < हसनशीलः

नव + इर = नविरो < नमनशीलः

हसाव + इर = हसाविरो < हासनशीलः

हस + इर + आ (स्त्री प्र०) = हसिरा } हसनशीला
हस + इर + ई (स्त्री प्र०) = हसिरी }

अनियमित शीलधर्म वाचक कृदन्त

पायगो, पायओ < पाचरुः—च हार का लोप, अ स्वर शेष और य भ्रुति, ककार का लोप और विसर्ग का ओत्व, विकल्प से क के स्थान पर ग ।

नायगो, नायओ < नाचरुः—विकल्प से क के स्थान पर ग तथा विकल्पाभाव पक्ष में क का लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व ।

नेआ, नेता < तकार वा लोप और आ स्वर शेष ।

विज्जं < विद्धान्—द्व के स्थान पर ज्ञ, आकार को ह्रस्व ।

कत्ता < कर्त्ता—संयुक्त रेफ का लोप और त को द्वित्व ।

विकत्ता < विकर्त्ता—संयुक्त रेफ का लोप और त को द्वित्व ।

वत्ता < वक्ता—संयुक्त ककार का लोप और त को द्वित्व ।

उत्ता < उक्ता

कुंभआरो < कुम्भकारः—ककार का लोप, आ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व ।

कम्मगरो < कर्मकरः—संयुक्त रेफ का लोप, म को द्वित्व, क को ग और विसर्ग को ओत्व ।

भारहरो < भारद्वाः—विसर्ग के स्थान पर ओत्व ।

थणंधयो < स्तंधयः—स्तन के स्थान पर थण आदेश हुआ है ।

परंतवो < परंतपः—प के स्थान पर व और विसर्ग को ओत्व ।

छेहओ < छेखरुः—ख के स्थान पर ह, ककार का लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व ।

हंता < हन्ता—हन् धातु के नकार के स्थान पर अनुस्वार ।

अनियमित विध्यर्थ कृदन्त

दृज्जं < कार्यम्—आकार को ह्रस्व, संयुक्त रेफ का लोप, य को ज और द्वित्व ।

किच्चं < कृत्यम्—ककारोत्तर ङकार के स्थान पर इकार, त्य के स्थान पर च ।

गेज्जं < ग्राह्यम्—ग्राह्य के स्थान पर गेज्ज आदेश होता है ।

गुज्जं < गुह्यम्—ह्य के स्थान पर ङ्क ।

वज्जं < वर्ज्यम्—संयुक्त रेफ का लोप, य लोप और ज को द्वित्व ।

वज्जं < वद्यम्—संयुक्त द का लोप, य के स्थान प ज और ज को द्वित्व ।

वच्चं < वाच्यम्—संयुक्त का लोप और च को द्वित्व ।

वकं < वाक्यम्—संयुक्त य का लोप और क को द्वित्व ।

जन्नं < ज्ञ्यम्—संयुक्त य का लोप और न को द्वित्व ।

भव्वं < भव्यम्—संयुक्त य का लोप और व को द्वित्व ।

पंज्जं < पेयम्—संस्कृत के य प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में ज होता है ।

गेज्जं < गेयम्—

” ” ” ”

पच्चं < पाच्यम्—पकारोत्तर आकार को ह्रस्व, संयुक्त यकार का लोप और च को द्वित्व ।

जज्जं < जध्यम्—द्य के स्थान पर ज्ज हुआ है ।

सज्जं < सद्यम्—ह्य के स्थान पर ङ्क ।

देज्जं, देअं < देयम्—संस्कृत के य प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में ज, द्वितीय रूप में य का लोप और अ स्वर लोप ।

शीलधर्म वाचक

शील, धर्म तथा भली प्रकार सम्पादन इन तीनों में से किसी एक अर्थ को व्यक्त करने के लिए प्राकृत में हर प्रत्यय होता है ।

उदाहरण—

हस + हर = हसिरो < हसनशीलः

नव + हर = नविरो < नमनशीलः

हसाव + हर = हसाविरो < हासनशीलः

हस + हर + भा (खी प्र०) = हसिरा
हस + हर + ई (खी प्र०) = हसिरी } हसनशीला

अग्घ	√राग, √मर्हँ	शोभना, चमकना; योग्य होना छायक होना
अग्घा	भा + √प्रा	सूचना
अच्च	√अर्च	पूजना, सत्कार करना
अच्चासाय	अत्था + √धातम्	अपमान करना, हैरान करना
अचीकर	अर्ची + कृ	प्रदंसा करना
अच्छ	√भास्	बैठना
अच्छिद्द	आ + √छिद्	छेद करना, काटना
अच्छोड	आ + √छोटय्	पटकना, पछाड़ना, सौंचना, छिटकना
अज्ज	√अज्ज	पैदा करना, उपार्जन करना
अज्जाव	आ + √जापय्	आज्ञा करना, हुक्म करना
अज्जयाव	अधि + √आप	पढ़ना, सीखना
अज्जवस	अध्य + √वस्	विचार करना, चिन्तन करना
अज्जरस	आ + √मुश्	आक्रोश करना, अभिशाप देना
अज्जावस	अध्या + √वस्	रहना, वास करना
अज्जोववज्ज	अधुप + √वद्	अत्यासक्त होना, आसक्ति करना
अट, अड	√अट्	भ्रमण करना, घूमना
अडरत्तम्	दे०	सँभालना, रक्षण करना
अडक्क	√क्षिप्	फेंकना, गिरना
अण	√अण्	आवाज करना, जानना, समझना
अणुअंच	अनु + √वृप्	पीछे खींचना
अणुरंप	अनु + √कम्प	दशा करना
अणुरुद्ध	अनु + √कृप्	खींचना, अनुसरण करना
अणुकर, अणुकुम्प	अनु + √कृ	अनुकरण करना, नकल करना
अणुरुह	अनु + √कृथ्	दुहराना, अनुवाद करना, पीछे बोलना
अणुकम	अनु + √कम्	अतिक्रमण करना
अणुगच्छ, अणुगम	अनु + गम्	पीछे चलना, अनुगमन करना, अनु- सरण करना
अणुगवेस	अनु + √गवेप्	खोजना, शोधना, तलाश करना
अणुगिल	अनु + √गृ	भक्षण करना
अणुगाह	अनु + √गह	कृपा करना

धातुकोष

प्राकृत में उपसर्ग के साथ मिलने से धातु में अर्थ परिवर्तन तो होता ही है, पर उसकी आकृति भी नयी हो जाती है। उपसर्ग या उपपद सहित धातु का मूलरूप (Root) नया प्रतीत होता है। अतः छुविधा की दृष्टि से उपसर्ग सहित धातुकोष दिया जा रहा है।

अ

अइइ	अति + √इ	उल्लंघन करना
अइकम	अति + √कम्	अतिक्रमण या उल्लंघन करना
अइगच्छ	अति + √गम्	कीटना
अइच्छ	√गम्	जाना, गमन करना
अइट्टा	अति + √स्था	उल्लंघन करना
अइयर	अति + √चर्	” ”
अइवत्त	अति + √वृष्	अतिक्रमण करना
अइवय	अति + √वृञ्	उल्लंघन करना
अइसय	अति + √शी	मात करना
अंगीकर	अङ्गो + √कृ	स्वीकार करना
अंच	√कृष्, √अञ्च	सँचना, जोतना, पूजना
अंवाड	√व्यण्ट्; तिरस् + √कृ	लेप करना, खरादना, उपाळम्भ देना, तिरस्कार करना
अकंद	आ + √कन्द, धा + √कम्	रोना, चिल्लाना; आक्रमण करना
अकम	आ + √कम्	आक्रमण करना
अकस	√गम्	जाना
अकौस	आ + √कुञ्	आक्रोश करना, गाली देना
अकस्र	आ + √कना	कहना, बोलना
अकरतड	आ + √कन्त्	आक्रमण करना
अक्विरय	आ + √क्षिप्	आक्षेप करना, टीका करना, फेंकना, दोषारोपण करना
अकस्रोड	√कृष्; आ + √स्फोटय्	म्यान से तल्लवार सँघना; धोका या पुरु धार झटकना

अणुरंध	अनु + √रध्	अनुरोध करना, स्वीकार करना, बाज़ा का पालन करना, प्रार्थना करना
अणुलिप	अनु + √लिप्	पीतना, छेप करना
अणुलिह	अनु + लिह्	घाटना, छूना
अणुवच्च, अणुवज्ज	अनु + √वच्	अनुसरण करना
अणुवज्ज	√वच्	जाना
अणुवय	अनु + √वद्	अनुवाद करना
अणुवास	अनु + √वात्स्य्	व्यवस्था करना
अणुवृह	अनु + √वृह्	अनुमोदन करना, प्रशंसा करना
अणुवेय	अनु + √वेय्	अनुभव करना
अणुसंचर	अनु + √चर्	परिभ्रमण करना
अणुसघ	अनुसं + √घा	पोजना, हूटना, तलाश करना
अणुसंसार	अनुसं + √स्य्, √स्य्	गमन करना, स्मरण करना
अणुसज्ज	अणु + √संज्	अनुसरण करना
अणुसर	अनु + √स्य्, √स्य्	अनुवर्तन करना; याद करना, चिन्तन करना
अणुसील	अनु + √सील्य्	पालन करना, रक्षण करना
अणुसोय	अनु + √सुच्	सोचना, चिन्ता करना
अणुहर	अनु + √ह	अनुहरण करना, नकल करना
अणुइव, अणुहो	अनु + √व्	अनुभव करना
अणुहुंज	अनु + √हुंज्	भोग करना
अण्ण, अण्ह	√हुंज्	पाना, भोजन करना
अण्णे	अनु + √इ	अनुसरण करना
अण्णोस	अनु + √इप्	खोजना, हूटना
अतिउट्ट	अति + √उट्, √उट्	एत हटना, उत्खनन करना
अत्य	√अर्थाय्	मांगना, याचना करना
अत्यम		अरत होना, अदृश्य होना
अत्थीकर	अर्थी + √कृ	प्रार्थना करना, याचना करना
अत्यु	आ + √स्य्	त्रिछाना, छप्पा करना
अह	√अह्	मारना, पीटना
अहह	आ + √अह्	उत्राळना
अपेकर	अप + √पिह्	अपेक्षा करना, राह देखना
अपोह	अप + √उह्	निःश्रय करना

अणुग्वास	अनु + √प्रासय्	खिलाना, भोजन करना
अणुचर	अनु + √चर्	सेवा करना, अनुष्ठान करना, पीछे जाना
अणुचि	अनु + च्युत्	मरना, एक जन्म से दूसरे जन्म में जाना
अणुचित्त	अनु + √चित्	प्रिचारना, याद करना, सोचना
अणुचिद्द्र, अणुद्धा	अनु + √स्था	अनुष्ठान करना, द्वाद्योक्त विधान करना
अणुजा	अनु + √या	अनुसरण करना, पीछे चलना
अणुजाण, अणुण्णव	अनु + √जा	अनुमति देना, सम्मति देना
अणुज्झा	अनु + √ध्वा	चिन्तन करना, ध्यान करना
अणुर्णा	अनु + √नी	अनुनय-वितय करना
अणुत्प	अनु + √त्प	अनुत्ताप करना, पलताना
अणुपरियद्द्र	अनुपरि + √भट् ; वृत्	घूमना, परिभ्रमण करना, फिरना, फिरते जाना
अणुपविस	अनुप्र + √विश्	प्रवेश करना, पीछे प्रवेश करना
अणुपस्स	अनु + √इश्	पर्यालोचन करना
अणुपाल	अनु + √पालय्	अनुभव करना, प्रतीक्षा करना
अणुप्पणी	अनुप + √णी	प्रणय करना
अणुप्पदा	अनुप्र + √दा	दान देना
अणुप्पवाय	अनुप्र + √वाचय्	पदाना
अणुप्पसाद	अनुप्र + √सादय्	प्रसन्न करना
अणुप्पेह	अनुप्र + √ईक्ष्	चिन्तन करना, विचार करना
अणुवध	अनु + √वध	अनुसरण करना
अणुभव	अनु + √भू	अनुभय करना
अणुभास	अनु + √भाष्	अनुवाद करना, कही हुई बात को दुहराना
अणुसुंज	अनु + √सुञ्ज्	भोग करना
अणुभूस	अनु + √भूष्	भूषित करना, शोभित करना
अणुमण्ण	अनु + √मन्	अनुमति देना, अनुमोदन करना
अणुमाण	अनु + √मानय्	अनुमान करना
अणुमाल	अनु + √मालय्	शोभित होना, चमकना
अणुमोय	अनु + √मुद्	प्रशंसा करना, अनुमति करना
अणुरञ्ज	अनु + √रञ्ज्	अनुरक्त होना, प्रेमी होना

अभिद्वय	अभि + √द्व	दीक्षा करना, द्वाय उपजावना
अभिनिःसृतम	अभि निर + √कृ	दीक्षा केना
अभिमत	अभि + √मन्त्रय्	मन्त्रित करना
अभिमन्त्र	अभि + √मन्	अभिमान करना
अभिरम	अभि + √रि	प्रोक्षा करना, संभोग करना, प्रीति करना
अभिरय	अभि + √रि	पचन्द करना, रचना
अभिरुह	अभि + √रुह्	रोटना, ऊपर चढ़ना
अभिलस	अभि + √लस्य्	धाड़ना, खिलना
अभिवन्द	अभि + √रन्द्	नमस्कार करना, पन्दना करना
अभिवद्द	अभि + √वृष्	चढ़ना, बढ़ा होना, बघत होना
अभिसिच	अभि + √सिच्	अभिषेक करना
अभिहण	अभि + √हन्	मारना, क्षिपा करना
अम	√अम्	जाना, आज्ञा करना
अय	√अय्	गमन करना, जाना
अयंछ	√अय्	संग्रहना
अरिह	√अर्ह्	योग्य होना, पूजा करना
अरोअ	उत् + √रि	उत्पास करना, रिक्त होना
अलंकर	अलं + √कृ	भूषित करना
अल्लिअ	उप + √अल्य्	समीप में जाना
अल्लिव	√अर्षय्	अर्पण करना
अली, अलीअ	आ + √ली	आना, प्रवेश करना, आश्रय करना
अय	√अय्	रक्षण करना
अवअरि, अवअरिअ	√अन्	देगना
अवअच्छ	√छाद्	आनन्द पाना, प्रपन्न होना
अवउत्तम	अव + √उत्तम्	परिस्वाग करना
अवकर	अव + √हाल्	चाड़ना, देखना
अवकर	अव + √कृ	अहित करना
अवकस	अव + √कप्	स्वाग करना
अवकम	अव + √कम्	पीठे बैठना, बाहर निकलना
अवखेर	दे०	खिन्न करना, तिरस्कार करना
अवगाह	अव + √गाह्	अवगाहन करना
अवगुण	अव + √गुण्य्	खोपना, उद्घाटन करना

अपपाह	सं + √दिष्, अधि + √आपय् संदेश देना, खर पहुँचाना; पढ़ाना, सिखाना
अपिण	√अर्षय् अपर्ण करना
अपफाल	आ + √स्फालय् आस्फोटन करना
अपफुंद	आ + √क्रम् आक्रमण करना
अपफोड	आ + √स्फोटय् आस्फालन करना, हाथ से ताल ठोसना
अवभंग	अभि + √अञ्ज् तैल आदि से मर्दन करना, मालिश करना
अवभरथ	अभि + √अर्थय् सत्कार करना
अवभस, अवभास	अभि + √शस् सीखना, अभ्यास करना
अभाअच्छ, अभिगच्छ	अभ्या + √गम् सम्मुख आना, सामने आना
अभिभउ	सं + √गम् संगति करना, मिलना
अवभुक्ख	अभि + √उक्ष् सिचन करना
अवभुट्ट	अभ्युत् + √स्था मादर करने के लिए खड़ा होना
अवभुत्त	√स्ना, प्र + √शेष् स्नान करना, प्रकाशित करना
अवभुद्धर	अभ्युद् + √घ् उद्धार करना
अवभुवगच्छ	अभ्युप + √गम् स्वीकार करना, पास जाना
अभिकख	अभि + √हाड्छ् इच्छा करना, चाहना
अभिगज्ज	अभि + √गर्ज् गर्जना, जोर से आवाज करना
अभिगिज्भ	अभि + √गृध् अतिलोभ करना, आसक्त होना
अभिघट्ट	अभि + √वट्ट् वेग से जाना
अभिजाण	अभि + √जा जानना
अभिजुंज	अभि + √युज् मन्त्र तन्त्रादि से वश करना
अभिणंद	अभि + √नन्द प्रशंसा करना, स्तुति करना
अभिणिगिण्ह	अभिनि + √प्रइ रोकना, अटकना
अभिणिमुज्भ	अभिनि + √बुध् इन्द्रियों द्वारा ज्ञान करना
अभिणी	अभि + √नी अभिनय करना, नाट्य करना
अभितज्ज	अभि + √तर्ज् तिरस्कार करना, डाँटना, ताड़न करना
अभिताव	अभि + √तापय् तपाना, गर्म करना
अभितास	अभि + √तासय् त्रास उपजाना, भयभीत करना
अभित्यु	अभि + √स्तु स्तुति करना, प्रशंसा करना

अयहर	√नद्, √गम्, अप् + √इ	पत्रापन करना; जाना; छीन लेना, अपहरण करना
अयहस	अप + √इत्	उपहास करना, निरुद्धार करना
अयहार	अय + √वारय्	निर्णय या निरूपण करना
अयहाय	√कृप्	दया करना
अयहीर	अय + √धीरय्	शयना करना
अयहोळ	अय + √दोलय्	सूचना, सन्देह करना
अयुष्	यि + √यय्	विरुद्धि करना, प्रार्थना करना
अये	अय + √इ, अप् + इ	जानना; दूर होना, हटना
अयेकर	अप + √ईक्	अपेक्षा करना, अयोजन करना
अयोद्	अप + √ऊद्	त्रिचार करना
अस	√अद्, √आय्	भोजन करना, व्याप्त होना; होना
अस्तस, अस्तास	आ + √रय्, आ + √रयासय्	वारिगत्य लेना, आरगत्य देना
अस्ताद्	आ + √स्ताद्	आस्ताद् करना
अहिगम	अधि + √गम्, अभि + √गम्	जानना, निर्णय करना, सामने जाना
अहिजाण	अधि + √ज्ञा	पहिमानना
अहिज्ज	अधि + √इ	पढ़ना, अभ्यास करना
अहिट्टा	अधि + √स्था	ऊपर चढ़ना, रहना, निवास करना
अहिणिवस	अभिनि + √वय्	वसना, रहना
अहिणु	अभि + √तु	सृष्टि करना
अहिद्व	अभि + √द्वु	हैरान करना
अधिपच्चुअ	√मद्, आ + √गम्	प्रश्न करना, आना
अहिरम	अभि + √रय्	प्रोद्धा करना
अहिलिद्	अभि + √लिप्	चिन्ता करना, लिखना
अहिवद्	अधि + √वर	आना
अहिसर	अभि + √सृ	प्रवेष्ट करना, अभिसरण करना
अहिहर	अभि + √ह	लेना, उठाना
अही	अधि + √इ	पढ़ना

आ

आऊंछ्
आअरुत्

√कृप्
आ + √चश्

लीचना, जोतना
कहना; घोटना, उपरोक्त देना

अपचि	अप + √चि, अव + √चि	हीन होना, कम होना, इकट्ठा करना
अपजाण	अप + √ज्ञा	अपलाप करना
अवट्ट	अप + √ट्ट	घुमाना, फिराना
अवट्टव, अवठंभ	अप + √स्तम्भ्	अवलम्बन करना
अवडाह	उत् + √वृग्	ऊँचे स्वर से रुदन करना
अवगम	अप + √नम्	नीचे नमना
अवणी	अप + √नी	दूर करना, हटाना
अपस्थाव	अव + √स्थापय्	स्थिर करना, उठरना
अवदाल	अव + √रुह्य्	खेलना
अवधार	अव + √वारय्	निश्चय करना
अवधाय	अप + √गाय्	पीठे दौड़ना
अवधुण	अप + √ध्	परित्याग करना
अवघुञ्ज	अव + √जुञ्	जानना, समझना
अवभास	अप + √भास्	धमकाना, प्रकाशित करना
अवमज्ज	अव + √मज्ज्	पीठना, साक करना, भाड़ना
अवमण्ण	अव + √मन्	तिरस्कार करना, अवज्ञा करना
अवयक्व	अप + √रिक्	अपेक्षा करना, राह देखना
अवयर, अवरूह	अप + √रि, √रूह	नीचे उतरना, जन्म ग्रहण करना
अपयास	√शिल्प्, अव + √क्राग्	आर्त्तिगन करना, प्रकट करना
अवरज्ज	अप + √राध्	अपराध करना
अवरुड	दे०	आर्त्तिगन करना
अवलन	अव + √नम्, अप + √नप्	सहारा लेना, आश्रय लेना, असत्य बोलना
अवल्लोअ	अव + लोक्	देखना अलोकन करना
अववास	अव + √राश	अवकाश देना, जगह देना
अवसक्क	अव + √वष्क्	पीठे हट जाना
अवसप्प	अव + √सप्	पीठे हटना
अवसर	अव + √र	आश्रय करना
अवसिज्ज	अव + √सिज्	धारना, पराजित होना
अवसीय	अव + √सिज्	बलेन पाना, विभ्र होना
अवसुअ	उत् + √वा	मूलना
अवह	√रिच्	निर्माण करना, घनाना
अपहृत्य	अप + √हृत्य्	हाथ को, ऊँचा करना

आण	√ज्ञा, आ + √नी	जानना, छाना, आनयन करना
आणंद	आ + √नन्द्	आनन्द पाना
आणम्स		परीक्षा करना
आणम		रमास लेना
आणव	आ + √ज्ञापव्	आज्ञा देना
आणव	आ + √दायव्	सँगराना
आणी, आणे	आ + √नी	छाना
आणे	√ज्ञा	जानना
आदिय	आ + √दा	प्रदूषण करना
आधरिस	आ + √धर्यव्	परास्त करना, तिरस्कार करना
आपुच्छ	आ + √प्रच्छ	आज्ञा लेना, सम्पत्ति देना
आफाल	आ + √स्फाल्यव्	आघात करना
आबंध	आ + √बन्ध	मजबूत बाँधना
आभोग्य	आ + √भोग्ये	देखना, जानना
आमंत	आ + √मन्त्र्य	आह्वान करना, सम्बोधन करना
आमुच, आमिल्ल, } आमुच	आ + √मुच्	छोड़ना, उतारना, त्यागना
आमुस	आ + √मुश्	थोड़ा स्पर्श करना
आमोअ	आ + √मुद्	सुखा होना
आर्यंच	आ + √तञ्च्	सौचना, छिटकना
आयञ्झ	√वेप्	काँपना, हिलना
आयण्ण	आ + √ऊर्णय्	सुनना, श्रवण करना
आयम	आ + √वम्	आचमन करना
आयर	आ + √चर्	आचरण करना, व्यवहार करना
आयल्ल	√लम्ब	ध्यातु होना
आया	आ + √या, + √दा	भाना, आगमन करना; प्रदूषण करना
आयाम	आ + √यमय्	लम्बा करना
आयार	आ + √कारय्	उत्पाना
आयास	आ + √दासय्	कष्ट देना, छिद्र करना
आरंभ	आ + √रभ्	आरम्भ करना
आरड	आ + √रट्	चिह्नाना
आराह	आ + √राधय्	सेवा करना, भक्ति करना
आरुस	आ + √रुप्	क्रोध करना, रोष करना

आअद्भु	दे०,	व्या + √ष्ट	परवश होकर चलना, काम में लगना
आअर		आ + √ट	आदर करना
आअव्व		√रिप्	कांपना
आइ		आ + √दा	ग्रहण करना, लेना
आइघ		आ + √घ्रा	सूँघना
आइस		आ + √दिश	आदेश करना, आज्ञा देना
आईव		आ + √रीप्	चमकना
आउंच		आ + √कुञ्चय्	संकुचित करना, समेटना
आउच्छ		आ + √प्रच्छ्	आज्ञा लेना, अनुज्ञा लेना
आउट्ट		आ + √वृत्, आ + √वृद्ध	व्यवस्था करना, उद्देश्य वरना, हिंसा करना
आउड, आउड्ड		आ + √जोडय्, +कुट्, √लिष्, √मस्त्	जोडना, फूटना; लिखना, दूबना
आउस		आ + √वस्, + √वृश्, +मृन्, + √डप्	रहना, शाप देना, स्पर्श करना, सेवन करना
आऊर		आ + √पूरय्	भरना, पूर्ति करना
आओड		आ + √खोडय्	प्रवेश करना, घुसेड़ना
आओध		आ + √धुप्	छडना
आकद		आ + √कन्द	रोना, चिल्लाना
आकंप		आ + √कम्प्	कांपना
आकुंच		आ + √आकुञ्चय्	समीच करना
आगल		आ + √कल्य्	जानना, लगाना
आगार		आ + √कारय्	बुलाना, आह्वान करना
आघस		आ + √घृप्	घर्षण करना
आघस		आ + √घस्	धिसना
आघुम्म		आ + √घूर्ण्	ढोलना, हिलना
आघोस		आ + √घोपय्	घोपणा करना
आडह		आ + √दह्	चारों ओर जलाना
आडुआल		दे०	मिथन करना, मिलाना
आडोव		आ + √धोपय्	आडंघर करना
आढव		आ + √धम्	आरम्भ करना
आडा		आ + √ट	आदर करना, मानना

आह	√ म्	कहना
आहल	आ + √ चल्	दिलना, चलना
आहा	आ + √ पा, + √ वया	स्थापन करना, कहना
आहार	आ + √ हारय्	पाना, भोजन करना
आहिंड	आ + √ हिण्ड्	गमन करना, जाना
आहु	आ + √ हु	दान करना, श्याग करना
आहोड	√ ताप्रय्	साधना करना, पीटना
		इ
इ	√ इण्	जाना, गमन करना
इच्छ	√ इप्	इच्छा करना, चाहना
इज्ज	आ + √ इ	जाना, आगमन करना
		इ
इर	√ इरि	प्रेरणा करना
इस	√ इषि	ईर्ष्या करना, द्वेष करना
इह	√ इक्षि	देखना, विचारना
		उ
उअऊह	उप + √ गृह्	छिपाना, आलिगन करना
उइ	उत् + √ इ, उप + √ इ	उदित होना, समीप जाना
उंघ	नि + √ ग्रा	नौद लेना
उंज	√ तिच्, √ युज्	सौचना, प्रयोग करना, जोड़ना
उंभ	दे०	पूति करना, पूरा करना
उकंप	उत् + √ कम्प	कांपना, हिलना
उकत्त	उत् + √ कृत्	काटना, कतरना
उकम	उत् + √ कम्	ऊँचा जाना, उल्टे क्रम से रखना
उकर, उफिर	उत् + √ कृ	सोदना
उक्कुक्कुर	उत् + √ क्वा	उठना, खड़ा होना
उक्कुज्ज	उत् + √ कृज्	ऊँचा होकर नीचा होना
उक्कूव	उत् + √ कृव्	अव्यक्त आवाज करना, चिह्नाना
उक्कोस	उत् + √ कुस्	रोना, चिह्नाना
उक्खंड	उत् + √ कृण्डय्	तोड़ना, दुच्छा करना
उक्खण, उक्खिण	उत् + √ क्खन्	उखाड़ना, उच्छेद करना
उक्खिण	उत् + √ क्खिप्	कँटना

आरुह, आरोह, } आरुव	आ + √रुह्, + √रोपय्	ऊपर चढ़ना
आलम्ब	अ + √लक्षय्	जानना
आलभ	आ + √लभ्	प्राप्त करना
आलिप	आ + √लिप्	लीपना, पोतना
आलिह	आ + √लिह्	विन्यास करना
आली	आ + √ली	हीन होना, भासक्त होना
आलुंख	√दह्, √सृश्	जलाना; स्पर्श करना
आलुंष	आ + √लुम्प	हरण करना
आलोअ	आ + √लोप्	गुरु को अपना अपराध कहना
आलोड	आ + √लोडय्	मन्थन करना, हिलोरना
आलोव	आ + √लोपय्	आच्छादित करना
आव	आ + √या	माना, आगमन करना
आवज्ज	आ + √पद्	प्राप्त होना
आवट्ट, आवत्त	आ + √वृत्	चक्र की तरह घूमना, परिभ्रमण करना
आवर	आ + √वृ	आच्छादन करना
आवस	आ + √वस्	रहना, वास करना
आवह	आ + √वह्	धारण करना, चढ़न करना
आवा, आविअ	आ + √पा	पीना
आविध	आ + √व्यध्	विधना
आविस	आ + √विन्	सम्बद्ध होना
आविहव	आविर् + √भृ	प्रकट होना
आवीड	आ + √वीड्	पीना देना, दधाना
आवेअ	आ + √विदय्	निवेदन करना
आवेस	आ + √विशय्	भूत्ताविष्ट करना
आस	√आस्	बैठना
आसंक	आ + √शङ्क	सन्देह करना
आसव	आ + √वृ	धीरे-धीरे भ्राना, टपटना
आसस	आ + √श्वम्	विभ्राम लेना
आसाअ	आ + √स्वाद्, + √सादय् + √शातय्	स्वाद लेना; प्राप्त करना, अवज्ञा करना
आसास	आ + √शास्, + √श्रासय्	आशय करना, आश्रयामन देना
आसेव	आ + √सेव	सेवन करना, पाठन करना

आह	√ मू	कहना
आहस्र	आ + √ वल्	हिलना, चलना
आहा	आ + √ घा, + √ घ्या	स्थापन करना, कहना
आहार	आ + √ हारय्	खाना, भोजन करना
आहिड	आ + √ हिण्ड्	गमन करना, जाना
आहु	आ + √ हु	दान करना, स्थाग करना
आहोड	√ ताडय्	ताड़ना करना, पीटना
		इ
इ	√ इण्	जाना, गमन करना
इच्छ	√ इप्	इच्छा करना, चाहना
इज्ज	आ + √ इ	आना, आगमन करना
		ई
ईर	√ ईर्	प्रेरणा करना
ईस	√ ईषं	ईर्ष्या करना, द्वेष करना
ईह	√ ईष्	देखना, विचारना
		उ
उअऊह	उप + √ गूह्	छिपाना, आश्रित्तन करना
उइ	उद् + √ इ, उप + √ इ	उदित होना, समीप जाना
उंघ	नि + √ दा	नौद लेना
उंज	√ मिच्, √ युन्	सौचन, प्रयोग करना, जोड़ना
उंभ	दे०	पूरति करना, पूरा करना
उकंप	उत् + √ कम्प्	कंपना, हिलना
उकत्त	उत् + √ कृत्	काटना, कतरना
उकम	उत् + √ कम्	लेना जाना, उल्टे क्रम से रखना
उकर, उक्किर	उत् + √ कृ	खोदना
उक्कुक्कुर	उत् + √ क्था	उठना, खरा होना
उक्कुज्ज	उत् + √ कृञ्	ऊँचा होकर नीचा होना
उक्कूव	उत् + √ कृन्	अध्यक्त भाग्य करना, विज्ञाना
उक्कोस	उत् + √ कृन्	रोना, पिछाना
उक्कंड	उत् + √ कृण्डय्	खोदना, दुब्दा करना
उक्कण, उक्किण	उत् + √ कृन्	उत्पादना, उक्कण्ड करना
उक्किय	उत् + √ कृप्	कैरना

उक्खुड	उत् + √तुड्	तोड़ना, टुकड़ा करना
उग, उग्ग, उग्गम	उत् + √गम्, + √घाट्य्	उदित होना; खोलना
उग्गह	√रच्य्, उद् + √प्रह्	रचना, निर्माण करना; प्रदण करना
उगिगल	उद् + √गृ	ढकार लेना, बोलना, कहना
उग्गोव	उद् + √गोप्य्	खोजना, प्रकट करना
उग्घड, उग्घाड	उद् + √घाट्य्	खोलना
उग्घोस	उद् + √घोष्य्	घोषणा करना
उच्चर	उत् + √वर	पार जाना, उचीर्ण होना
उच्चल	उत् + √चल्	चलना, जाना
उघाड	दे०	रोकना, निवारण करना
उचार	उत् + √चार्य्	बोलना, उच्चारण करना
उच्चाल	उत् + √चाल्य्	ऊँचा फैरना
उच्चिट्ठ	उत् + √स्था	खड़ा होना
उच्चिण	उत् + √चि	एकत्र करना, इकट्ठा करना
उच्चुड	उत् + √चुड्	अपसरण करना, हटना
उच्चुण्ण	√चुड्	घटना, आरूढ होना, ऊपर बैठना
उच्चण्ण	उत् + √सर्प्य्	उन्नत करना, प्रभावित करना
उच्छल	उत् + √शल्ल्	उछलना, ऊँचा जाना
उच्छह	उत् + √सह्	उत्साहित होना
उच्छाह	उत् + √साह्य्	उत्साह दिलाना
उच्छिद	उत् + √च्छिद्	उन्मूलन करना
उच्छुभ	उत् + √क्षिप्	बाफोश करना, गाली देना
उच्छेर	उत् + √क्षि	ऊँचा होना, उन्नत होना
उच्छोल	उत् + √मूल्य्, + √क्षाल्य्	उन्मूलन करना; प्रक्षालन करना, धोना
उज्जम	उद् + √यम्	उद्यम करना, प्रयत्न करना
उज्जल	उद् + √जयल्	जलना; प्रकाशित होना
उज्जाल	उद् + √जाल्य्	उजाला करना
उज्जोअ	उद् + √जोतय्	प्रकाश करना
उग्ग	√उग्गम्	स्याग करना, छोड़ना
उद्द, उद्दाय	उत् + √स्था, + √स्थाप्य्	उठना, गढ़ा होना, उठाना
उद्दंभ	अथ + √तम्भ्	शालग्राम देना, सहारा देना
उद्दुभ	अथ + √दुप्	भूरना
उद्दाय	उद् + √दाप्य्	उढ़ाना

उष्णम्, उष्णाम्	उद् + √नम्	ऊँचा होना, उन्नत होना; ऊँचा करना
उष्णी	उद् + √नी	ऊँचा ले जाना
उत्तम्म	उत् + √तय्	खिन्न होना, उद्विग्न होना
उत्तर	उत् + √ठ्	बाहर निकालना, उतरना
उत्तस	उत् + √सस्	प्राप्त देना, पीड़ा देना
उत्ताड	उत् + √ताड्य्	ताड़ना, तड़न करना
उत्तुय	उत् + √तुद्	पीड़ा करना, परेशान करना
उत्थंघ	उद् + √नमय्, √रुध्	ऊँचा करना, उन्नत करना, रोकना
उत्थर, उत्थार	आ + √क्रम्, अव + √स्त्र्	आक्रमण करना, दवाना, आच्छादन करना
उत्थञ्ज	उत् + √नाल्	उछलना, चूदना
उदाहर	उदा + √ह्	दृष्टान्त देना
उदि	उद् + √इ	ऊन्नत होना
उदीर	उद् + √दीरय्	प्रेरण करना
उदा	उद् + √दा	बनाना, निर्माण करना
उद्दाल	आ + √डिद्	खींच लेना, हाथ से छीनना
उद्दिस	उद् + √दिश्	नाम निर्देश पूर्वक वस्तु का निरूपण करना
उद्दंस	उद् + √धष्, उद् + √ध्वस्	मारना, माली देना, विनाश करना
उद्धम	उद् + √ह्वम्	उड़ाना, वायु से भरना, दाँख फूंकना
उद्धर	उद् + √ह्	कैसे हुए को निकालना
उद्घूल	उद् + √घूल्य्	व्याप्त करना
उन्नन्द	उद् + √नन्द्	अभिनन्दन करना
उत्पञ्ज	उत् + √पद्	उत्पन्न होना
उत्पय, उत्पड, उत्पाड	उत् + √पत्	उड़ना, ऊँचा जाना, चूदना, उलाड़ना
उत्पण	उत् + √पृ	फटकेना, साफ करना
उत्पिय	उत् + √पि	आस्वादन करना
उत्पील	उत् + √पीड्य्	झसकर बाँधना
उत्पेक्ख	उत् प्र + √ईक्ष्	सम्भावना करना, कल्पना करना
उत्पेल	उद् + √नमय्	ऊँचा करना, उन्नत करना

उवनिस्खेव	उपनि + √उपय्	धरोहर रचना
उवरंज	उप + √रञ्ज्	प्रस्त करना
उवरम	उप + √रम्	निवृत्त होना, श्रित होना
उवरुंध	उप + √रुध्	बटकाव करना, रोकना
उवलंभ	उप + √रम्	प्राप्त करना, उछाहना देना
उवलक्ख	उप + √लक्ष्	जानना, पहिचानना
उवला	उप + ला	प्रहण करना
उवलौभ	उप + √लौभय्	एलच देना
उवल्लि	उप + ली	रहना
उववूह	उप + वृंह्	पुष्ट करना, प्रशसा करना
उवसंधर	उपसं + √इ	उपसंहार करना
उवसप्प	उप + √सप्	समीप में जाना
उवसम, उवसाम	उप + √सम्, + √शामय्	क्रोध रहित होना, शान्त होना; शान्त करना
उवसोभ	उप + √सुभ्	शोभना, विराजना, शोभित होना
उवहत्थ		बनाना, रचना करना
उवहर	उप + √इ	पूजा करना, उपस्थित करना
उवहुंज	उप + √मुज्	उपभोग करना, कार्य में लगना
उवाइण, उवादा	उपा + √दा	प्रहण करना
उवाय	उप + √याच्	मनोवी मनाना
उवालह	उपा + √रम्	उछाहना देना
उवास	उप + √भास्	उपासना करना
उवम	उत् + √वम्	चमन करना, उल्टी करना
उव्वर	उत् + √वृ	शेष रहना, बच जाना
उव्वल	उत् + √वल्ल्	उपलेपन करना
उव्वह	उप + √वह्	धारण करना, उठरना
उव्विय, उव्विय	उत् + √विज्	उद्वेग करना, उदासीन होना
उव्विल्ल	उत् + √विल्, प्र + √वृ	चउना, कांपना, फैलना, पसरना
उव्वील	अव + √वीडय्	पीड़ा पहुंचाना
उस्सक्क	उत् + √वग्ग्	उत्पंठित होना
उस्सर, ऊसर	उत् + √सृ	हटना, दूर जाना
उस्सस, ऊसस	उत् + √सस्	उचउनास लेना, ऊँचा भास लेना
उस्सिच	उत् + √सिच्	सोचना, सेक करना
उस्सिक्क	√सुप्	छोड़ना, त्याग करना

ऊ

ऊसल, ऊसुंभ	उत् + √०त्	उल्लसित, हाना
ऊसार	उत् + √सारय्	दूर करना
ऊद्	√ऊद्	तीर्थ करना

ए

ए	भा + √इ	आना, आगमन करना
एड	√एड्	छोड़ना, स्थगन करना
एस	भा + √इय्	खोजना, निर्देश्य भिक्षा की खोज करना या ग्रहण करना
एह	√एघ्	यचना, उन्नत होना

ओ

ओअंद	भा + √तिन्	यत्नपूर्वक छोड़ना
ओअकर	√इन्	देखना, अवलोकन करना
ओअरा	वि + √आप्	ध्याप्त करना
ओअर	अर + √वृ	जन्म ग्रहण करना, अवतार लेना
ओअल्ल	अव + √वल्	चलना
ओअय	√साथय्	साथना, वश में करना, जीतना
ओआर	अप + √वारय्	ढाँकना, रोकना
ओइंध	आ + √सुव्	छोड़ना, स्थगन
ओकस	अव + √कृप्	निमग्न होना, गड़ जाना
ओकरंड	अव + √खण्डय्	तोड़ना
ओगाह	अव + √गाह्	अवगाहन करना
ओगिम्भ	अव + √मह्	आश्रय लेना
ओग्गाल	√रोमन्धय्	पगुराना, चर्चार्थ हुई वस्तु को पुनः चर्चाना
ओच्छर	अव + √सृ	विछाना, फैलाना
ओच्छाय	अव + √उादय्	आच्छादन करना
ओणंद	अव + √नन्द्	अभिनन्दन करना
ओणल्ल	अप + √लम्ब्	लटकना
ओणिअत्त	अप नि + √वृत्	पीछे हटना, वापस छौटना
ओढंस	अव + √धंस्	गिराना, हटाना

ओधाव	अव + √धाव्	पीठे दीवना
ओवुम्भ	अव + √वुम्भ्	जानना
ओमिण	अव + √मा	मापना, मान करना
ओमील	अव + √मील्	मुद्रित होना, मन्द होना
ओमुय	अव + √मुय्	पहनना
ओरस	अव + √र	नीचे उतरना
ओरुम्मा	उर + √रा	मूषना
ओलग	अव + √लग्	पीठे लगना
ओलिप	अव + √लिप्	छीपना, छेप छमाना
ओरुहव	रि + √रुहापय्	हुम्काना, रंश करना
ओवत्त	अप + √वत्तय्	उल्टा करना, घुमाना
ओमुफ	√तिज्	तीक्ष्ण करना, तीव्र करना
ओहृद्	अप + √वृद्	कम होना, हास होना
ओहर, ओहिर	अप + √ह, अर + √ह	अपहरण करना; टेढ़ा होना, धक्का होना
ओहाम	√वुलय्	ठौठना, गुलना करना
ओहार	अव + √धारय्	निश्चय करना
ओहाव	आ + √रुय्	आक्रमण करना
ओहाव	अव + √धाव्	पीठे हटना
ओहोर	नि + √दा	सो जाना, निद्रा लेना

क

कंड	√कण्ड्	धान का छिलका अलग करना
कंडार	उत् + √ह	खोदना, छील-छाल कर डीक करना
कंद	√कन्द्	रोना, आक्रन्दन करना
कंप	√कम्प्	कपिना, हिलना
कज्जलाव	√कृज्	दूबना, वृद्धना
कट्ट, कत्त	√कृत्	काटना, उड़ना
कडकर	√कडाक्षय्	कटाक्ष करना
कडुड	√कृड्	घोचना
कढ	√कृड्	घाथ करना, उपाधना, गरम करना
कण	√कण्	शब्द करना, भावाज करना
कण्प	√कृप्	समर्थ होना, कल्पना करना
कम	√कम्	घादना

कयत्वा	√कृष्यम्	हैरान करना
कर, कुग, कुञ्ज	√कृ	करना, धनाना
कराल	√कृणात्	काटना, टिप्प करना
कन्व	√कृण्वत्	संख्या करना, जानना
कय	√कृ	आवाज करना, शब्द करना
कत	√कृत्	कमना, विषयवा
कमाय	√कृताम्	साइन करना, मारना
कद्	√कृष्यम्, √कृ	फटना, धोखना; काय करना, उवाचना
कार	√कारम्	कायना, बनयाना
कास	√कास	कहरना, गाँवना
किट्ट	√कीर्षय	रखाया करना, स्तुति करना
किट्टु, कीळ	√कीर्ष	रोचना, क्रोध करना
किर	√कृ	कैटना
कियाग	√कृणम्य	खान्त करना, नित्र करना
किलिस	√कृण्	लेद पाना, भरु जाना, दुःखी होना
कीण, के	√की	गरीदना, मोठ लेना
कुंच	√कुञ्च	जाना, चटना
कुन्ड	√कृत्स्	निन्दा करना, चिढारना
कुम्क	√कुम्	मोपा करना
कुट्ट	√कुट्ट	दूरना, पीसना, साइन करना
कुप्प	√कुप्, √भाप्	कोप करना, धोखना, कटना
कुरुकुरु	√कुरुकुराप्	कुण्टुणाना, बबबडाना
कुरुल	√कुरु	आगम करना, कौप का धोखना
कुह	√कुम्	सङ्ग जाना, दुर्गन्ध देना, बदरु खाना
केलाय	समा + √रचम्	साफ करना, ठीक करना
कीफ	व्या + √कृ	गुलाना, आह्वान करना

स

संच	√कृष्य	खींचना, बरा में करना
संज	√सिञ्	लंगड़ा होना
संड	√सण्डय	तोड़ना, टुकड़े करना
संप	√सिष्य	सौचना, टिपकना
सख	√सख्य	पावन करना, पवित्र करना

सङ्ग, खुङ्ग	√सृङ्	मर्दन करना
खग	√खन्	खोदना
खम	√क्षम्	क्षमा करना
खर, खिर	√खर्	करना, टपकना, नष्ट होना
खरंट	√खरष्ट्य्	दुतकारना, निर्भर्त्सना करना
खल	√खल्	पड़ना, गिरना
खन	√क्षपय्	नाश करना
खस	दे०	खिलकना, पड़ना
खा	√खाद्	खाना, भोजन करना
खाम	√क्षमय्	माफी माँगना
खाल	√खालय्	घोना, पत्थारना
खिल, खेल	√खिल्	क्रीडा करना, खेल करना
खिव	√खिप्	केंकना
खुट्ट, खुड	√खुड्	तोड़ना, टुकड़े करना, खंडित करना
खुडुक	दे०	नीचे उतरना
खुप्प	√मस्ज्	झुगना, निम्न होना
खेअ	√खेअय्	खिन्न करना, रोद करना
खेड, खेड्ड	√कृप, √रम्	खेती करना; क्रीडा करना, तेजना
खोट्ट	दे०	खटखटाना, ठोकना
खोभ	√शोभय्	विचलित करना, धैर्य से च्युत होना

ग

गंठ	√गंथ्	गूँथना, गठना
गच्छ	√गम्	जाना, गमन करना
गज्ज	√गज्ज्	गरजना, घड़घड़ाना
गडयड	दे०	गर्जन करना, आगज करना
गण	√गणय्	गिनना, गिनती करना, गणना करना
गद्	√गद्	दोष्टना, कहना
गम	√गम्	जाना, गति करना, चष्टना
गरह्	√गर्ह्	निन्दा करना, घृणा करना
गरुअ, गरुआ	√गुरुआय्	गुरु करना, बड़ा बनाना
गल	√गल्	गल जाना, सड़ना
गवेस	√गवेपय्	मद्यपना करना, वषारा करना

गह	√गह्	ग्रहण करना
गहगह	दे०	दुर्घ से भर जाना
गा, गाअ	√गे	गाना, आलापना
गाल	√गालय्	गालना, छानना
गाह	√गाहय्	ग्रहण करना
गिम्क	√गिष्	वासक होना, लम्पट होना
गिर, गिल	√गि	बोलना, उच्चारण करना; निगलना
गुंठ	√गुण्ठ्	पूसरित करना, धूक के रंग का करना
गुभ, गुम्ह, गुंफ	√गुम्फ्	गूँघना
गुड	√गुड्	गुद के लिए तथ्यार करना, सजाना
गुण	√गुणय्	गिलना
गुप्प	√गुप्	व्याकुल होना
गुम	√गुम्	घूमना, पर्यटन करना
गुम्म, गुम्मड	√गुह्	गुरध होना, घबड़ाना, व्याकुल होना
गुलगुंछ	उत् + √ग्लिप्, उत् + √नमय	ऊँचा फैकना, ऊँचा करना, उद्यत करना
गुलगुल	√गुलगुलाय्	गुलगुल आवाज करना
गुल्ल	चाड् √ग्ल्	गुल्लामद करना
गूह	√गूह्	छिपाना, गुप्त रखना
गोएह	√गोह्	ग्रहण करना
गोवाथ'	√गोवाय्	छिगना, रक्षण करना

घ

घट्ट	√घट्ट्	स्पर्श करना, घृना
घड, घडाव	√घट्	चेष्टा करना, घनाना, मिछाना; घनयाना
घत्त, घल्ल	√घिप्, √घिष्	फँटना, टाकना, टडना, मोडना
घत्त	√घह्	ग्रहण करना
घाड	√घेन्	भट्ट होना, झुल होना
घाय	√घेन्	मारना, दिनास करना
घिस	√घिष्	घमना, निगलना, भक्षण करना
घुडुष	√घट्टे	घट्टना

घुम्म	√घुर्ण	घूमना, चक्राकार फिाना
घुरफ	दे०	घुडकना, घुड़की देना
घुरुघुर	√घुरुघुराय्	घुरघुराना
घुलघुल	√घुलघुलाय्	घुलघुल की आवाज करना
घुसल	√मथ्	मथना, विन्डोडन करना
घे	√ग्रह्	ग्रहण करना
घोर	√घुर्	निद्रा में घुरघुर की आवाज करना
घोल	√घोषय्	विसना, रगड़ना
घोस	√घोषय्	घोषणा करना

च

चंकम	√चङ्कम्	बारम्बार चलना, इधर-उधर भ्रमण करना
चंल, चच्छ	√तक्ष्	छीलना, तरासना, काटना
चंड	√पिप्	पीसना
चंप	दे०	चांपना, दवाना
चंप	√चर्च्	चर्चा करना
चकम, चकम्म	√अम्	घूमना, भटकना
चक्ख	आ + √स्वाद्य्	चखना, स्वाद लेना, चीखना
चच्छुप्प	√अर्पय्	अर्पण करना
चज्ज	√ट्ठना	देखना, अवलोकन करना
चट्ट	दे०	चाटना
चड	आ + √वड्	चढ़ना, ऊपर बैठना
चड्ढ	√मृद्, √पिप्, √भुज्	मर्दन करना, मसलना, पीसना; भोजन करना
चप्प	आ + √कम्	आक्रमण करना
चमक्क	चमत् + √कृ	विस्मित करना, आश्चर्यान्वित करना
चमड	√भुज्	भोजन करना
चय	√त्यज्, √सक्, √च्यु	छोड़ना, सरुना, समर्थ होना; मरना
चर	√वर	गमन करना, चलना
चल	√चल्	" "
चव	√रुधय्, √च्यु	कहना, बोलना; मरना, च्युत होना

चाव	√चव्
चाह	√वाञ्छ्
चिइच्छ	√चिस्त्रिस्त्
चित	√चिन्तय्
चिगिचिगाय	√चिरुचिकाय्
चिह्न	√स्था
चित्त	√चिप्रय्
चु	√च्यु
चुध	√श्चुत्
चुंठ	√चि
चुंव	√चुम्ब्य्
चुक्क	√अंश
चुण्ण	√चूर्णय्
चूर	√चूरय्
चूह	√क्षिप्
चेअ	√चित्
चोअ	√चोदय्

चवाना
चाहना, वाञ्छा करना
दरा करना, चिकित्सा करना
चिन्ता करना, विचार करना
चकचकाट करना
बैठना, स्थिति करना
चित्र बनाना
सरना, जन्मान्तर में जाना
करना, टपकना
पुष्पचयन करना
चुम्बन करना
चूकना, भूलना
चूरना, टुकड़े-टुकड़े करना
खण्ड करना
फँकना, डालना
चेतना, सावधान होना
प्रेरणा करना, फहना

छ

छंद	√छन्द्
छज्ज	√राज्
छड	आ + √सद्
छड्ढ	√छर्दय्, √सुच्
छण	√क्षण्
छल	√उल्य्
छाय	√आदय्
छिद	√छिद्
छिव, छुव, छिह	√स्यन्
छुंद	आ + √कम्
छुर	√सुर्
छेअ	√उदय्
छोड	√छोटय्

चाहना, वाञ्छना
शोभना, चमकना
भारूढ होना, चढ़ना
वसन करना, छोड़ना, त्याग करना
हिंसा करना
ठगना, चप्पन करना, छल करना
आच्छादन करना, ढकना
छेदना, रिच्छेद करना
स्पर्श करना, छूना
आक्रमण करना
छेप करना, छीपना
छिन्न करना
छोड़ना, पन्थन मुक्त करना

ज

जअड	√जर	हरा करना, शीघ्रता करना
जंप	√जल्प	बोलना, यदना
जंभा	√जृम्भ्	जंभाई लेना
जग	√जागृ	√जागना, नींद से उठाना
जज्जर	√जर्जरय्	जीर्ण करना, खोखला करना
जण	√जनय्	उत्पन्न करना
जम	√जमय	कार में छाना, नियन्त्रण करना
जम्म	√जन्, √जम्	उत्पन्न होना; खाना, भक्षण करना
जय	√जि, √यत्	जीतना, पूजा करना
जर	√जृ	जीर्ण होना, पुराना होना, वृषा होना
जल	√जल्	जलना, दग्ध होना
जप्र	√वापय्, √जप्	गमन करना, भेजना; जाप करना
जह	√हा	रथागना, छोड़ना
जा	√जन्, √या	उत्पन्न होना; जाना, गमन करना
जाण	√जा	जानना, समझना, ज्ञान प्राप्त करना
जाम	√जन्	साफ करना, मार्जन करना
जाय	√शाच्, √यातय्	प्रार्थना करना, सांगना; पीड़ना, यन्त्रणा करना
जिअ, जीव	√जीय्	जीना, प्राणधारण करना
जिण	√जि	जीसना, बस करना
जिम, जेम	√युज्	जीमना, भोजन करना
जीह	√जृञ्	लज्जा करना
जुहु	√हु	देना, बर्षण करना
जूर	√क्रुञ्, √रिञ्, √ञ्	क्रोध करना, गुस्सा करना; रोद करना; मूखना, झुरना
जो	√जन्	देवना
जोअ	√जुत्, √जोञ्	प्रकाशित होना, जोड़ना, युक्त करना
जोह	√जुप्	लड़ना, युद्ध करना
		झ
झंख	सं + √तप्	संतप्त होना, संताप करना
झंख	वि + √ञ्	विज्ञाप करना, दख्खाद करना

भंर	उपा + √लभ्	उपालंभ देना, उलाहना देना
भंर	निर् + √रयस्	निश्वास लेना
भंभग	√संभगाप्	भन-भन करना
भंप	√भ्रम्	भ्रमना, फिरना
भड	√शब्	भङ्गना, टपकना
भडप्प	आ + √छिद्	भपटना, भपट मारना, छीनना
भग, भुग	√भृगुप्स्	भृणा करना
भर. भूर	√क्षर, √स्मृ	भरना, टपकना; याद करना
भत्त	√भवे	चिन्ता करना, ध्यान करना
भाम	√दह्	जलाना, भस्म करना
भिल्ल	√स्ना	स्नान करना, जल गिराना
भुग, भूर	√भृगुप्स्, √क्षि	भृणा करना, निन्दा करना, क्षीण होना
भोट	√वाध्व्	पेड़ आदि से पत्तों को गिराना
भोस	√गवेपय्	सोजना, अन्वेषण करना
		ट
टिचिडिक्क	√मण्डय्	मण्डित करना
टिट्टियाव	दे०	चोखने की प्रेरणा करना
टिरिटिल्ल	√अम्	भ्रमना, फिरना
उट्ट	√भुद्	हटना, कट जाना
		ठ
ठय	√स्थग्	बन्द करना, रोकना
ठव, ठाव	√स्थापय्	स्थापन करना
ठा	√स्था	बैठना, स्थिर रहना
ठिव्व	वि + √कुद्	मोड़ना
		ड
डर	√त्रस्	डरना, भयभीत होना
डल्ल	√पा	पीना
डप	आ + √भम्	आरम्भ करना
डह्	√दह्	जलाना, दग्ध करना
डिभ	√संसत्	नीचे गिरना, ध्वस्त होना
डिक्क, डिक्क	√गर्ज्	साँड़ का गर्जना करना
डिप्प	√दीप्, वि + √गल्	दीपना, चमकना; गल्लजाना, सब जाना

हुं, हुल्ल
हुल, डोल
डैव

√भ्रम्
√डोल्य्
उत् + √लंघ्

धूमना, चक्कर लगाना
डोलना, हिलना, फांपना
उल्लंघन करना, कूद जाना

ढ

ढंढल, डुम
ढफ
ढाल
डुकक

√भ्रम्
√ढादय्
दे०
√ढौक्

धूमना, भ्रमण करना
ढरना, भाचडादन करना
टपकना, नीचे गिरना, नीचे पड़ना
भेंट करना, अर्पण करना

ण

णंद

√नन्द्

सुश होना, आनन्दित होना,
समृद्ध होना

णच्च, णट्ट
णञ्ज, णप्प, णा
णड
णद
णस
णाम
णास, णासव
णिअ, णिअच्छ
णिअच्छ
णिअट्ट
णिअद
णिअम
णिउंज
णिउड्ड
णिद
णिमाय
णिकित्त
णिकुट्ट
णिकस
णिकिण

√नृत्, √नट्
√ज्ञा
√णप्
√नट्
नि + √अस्, √नश्
√नमय्
√नाशय्
√दश्
नि + √यम्
नि + √ट्ट
नि + √गद्
नि + √पम्
नि + √धुज्
√मस्त्, नि + √ट्टुड्
√निन्द्
नि + √हाचय्
नि + √कृत्
नि + √कुट्ट्
निर् + √कस्
निर् + √की

नाचना, नृत्य करना
जानना, समझना
व्याजुल होना
नाइ करना, आराज करना
स्थापन करना; भागना, पलायन करना
नमाना, नीचा करना
नाश करना
देखना
नियमन करना
निरूत होना, बनाना
कहना, बोलना
नियन्त्रित करना
जोड़ना, संयुक्त करना
मज्जन करना, डूबना
निन्दा करना
नियमन करना, नियन्त्रण करना
कारना, छेदना
कूटना
निकासना, बाहर निकालना
निष्कय करना, सरीदना

णिगद्	नि + √गद्	कहना
णिगिण्ह	नि + √सिह्	निग्रह करना, दण्ड करना, दण्ड देना
णिगुञ्ज	नि + √गुञ्ज्	गूँजना, अव्यक्त शब्द करना
णिगूह	नि + √गूह्	छिपाना, गोपन करना
णिगाच्छ	निर् + √गच्छ्	बाहर निकालना
णिञ्चल	√क्षर्, √सुच्	भ्रमना, टपकना; दुःख को छोड़ना, दुःख का त्याग करना
णिच्छय	निस् + √चि	निश्चय करना, निर्णय करना
णिच्छल	√छिद्	छेदना, काटना
णिच्छुभ	नि + √क्षिप्	बाहर निकालना
णिच्छोड	निस् + √छोड्य्	बाहर निकलने के लिए धमकाना
णिच्छोळ	निस् + √तक्ष्	छीलना, छाल उतारना
णिञ्जर	निर् + √जृ	क्षय करना, नाश करना
णिञ्जा	निर् + √या	बाहर निकालना
णिञ्जण	निर् + √जि	जीतना, पराभय करना
णिञ्जूह	निर् + √यूह्	परित्याग करना, रचना, निर्माण करना
णिञ्मर	√क्षि	क्षीण होना
णिञ्मा	निर् + √च्यै	विशेष चिन्तन करना
णिट्टञ	√क्षर्	टपकना, चूना
णिट्टय, णिड्डव	नि + √स्थाप्य्	समाप्त करना, पूर्ण करना
णिट्टा	नि + √स्था	समाप्त होना
णिट्टुह	नि + √रताम्	निष्टम्भ करना, निश्चेष्ट होना
णिण्णास	निर् + √नाशय्	विनाश करना
णिण्हव	नि + √हु	अपलाप करना
णित्थर	निर् + √वृ	पार करना, पार उतरना
णिदंस	नि + √दस्य्	उदाहरण दत्तलाना, दृष्टान्त दिखाना
णिहह	निर् + √दह्	जपना देना, भस्म करना
णिहिस	निर् + √दिरा	उच्चारण करना, कथन करना
णिद्वाप	निर् + √धाव	दौड़ना
णिद्धुण	निर् + √धू	विनाश करना, बुर करना
णिप्पत्त	निर् + √पक्षय्	पक्षरहित करना, पंख तोड़ना
णिप्पञ्ज	निर् + √पङ्	उपजना, सिद्ध होना

णिष्फिड	नि + √स्फिड्	बाहुर निरखना
णिवंध	नि + √बंध्	बांधना
णियुद्ध, णियोल	नि + √मस्त्	निमज्जन करना, दूषना
णिबभच्छ	निर + √भस्त्	तिरस्कार करना, अपमान करना, अपदेहना करना
णिबभर	निर + √भृ	भरना, पूर्ण करना
णिबिभद्	मिर + √भिद्	तोड़ना, विदारण करना
णिभाल	नि + √भाल्य्	देपना, निरीक्षण करना
णिभेल	निर + √भेल्य्	बाहुर करना
णिम, णिस	नि + √अस्	स्थापन करना
णिमंत	नि + √मन्त्र्य्	निमन्त्रण देना
णिमज्ज	नि + √मस्त्	दूषना, निमज्जन करना
णिमिद्ध	नि + √मीळ्	आंख मूँदना, आंख मोंचना
णिमे	नि + √मा	स्थापन करना
णिम्म	निर + √मा	चनाना, निर्माण करना
णिम्मच्छ	नि + √म्रश्	विधेपन करना
णिम्मह	√गम्	जाना, भग्न करना
णिरस्स, गिरिक्ख	निर + √रिश्	निरीक्षण करना, देपना
णिरथ	धा + √क्षिप्	वाक्षेप करना
णिरस	निर + √अस्	अपारत करना
णिराकर	निरा + √कृ	निषेध करना, बूर करना
णिरिग्व	नि + √गी	आश्लेष करना, भेंट करना
णिरिणास	√गम्, √पिप्, √नश्	गमन करना; पीसना; पछायन करना
णिरभ	नि + √रुष्	निरोध करना, रोकना
णिरुवार	√मह्	प्रहण करना
णिरुव	नि + √रुप्य्	विचार कर रहना
णिलिज्ज	नि + √ली	भेंटना, मिलना
णिलीअ		दूर करना
णिलुक्क	√बुद्ध्	तोड़ना
णिल्लस	उत् + √लस्	उल्लखना, विकसन
णिल्लुद्ध	√सुष्	छोड़ना, स्थागना
णिवज्ज	निर + √पद्, नि + √सद्,	उपजना; पैदना
णियद्द	नि + √इत्	निवृत्त होना, लौटना, हरना

णिगद्	नि + √गद्	कदना
णिगिण्ह	नि + √गह्	निगह करना, दण्ड करना, दण्ड देना
णिगुंज	नि + √गुञ्ज्	गुंजना, अव्यक्त शब्द करना
णिगूह	नि + √गूह्	छिपाना, भोपन करना
णिग्गच्छ	निर् + √गच्छ्	बाहर निकालना
णिच्चल	√क्षर्, √मुच्	भरना, टपकना; दुःख को छोड़ना, दुःख का त्याग करना
णिच्छय	निस् + √चि	निश्चय करना, निश्चय करना
णिच्छल्ल	√छिद्	छेदना, काटना
णिच्छुभ	नि + √क्षिप्	बाहर निकालना
णिच्छोड	निस् + √छोड्य्	बाहर निकालने के लिए धमकाना
णिच्छोळ	निस् + √तक्ष्	छीलना, छारु उतारना
णिज्जर	निर् + √जृ	क्षय करना, नाश करना
णिज्जा	निर् + √या	बाहर निकालना
णिज्जण	निर् + √जि	जीतना, पराभव करना
णिज्जूह	निर् + √जूह्	परित्याग करना, रचना, निर्माण करना
णिज्भर	√क्षि	क्षीण होना
णिज्भा	निर् + √ध्ये	विशेष चिन्तन करना
णिट्टज	√क्षर्	टपकना, चूना
णिट्टय, णिट्टव	नि + √स्थापय्	समाप्त करना, पूर्य करना
णिट्टा	नि + √स्था	समाप्त होना
णिट्टुह	नि + √रतम्भ्	निष्टम्भ करना, निश्चेष्ट होना
णिण्णास	निर् + √नाशय्	विनाश करना
णिण्हव	नि + √हृ	अपलाप करना
णित्थर	निर् + √हृ	पार करना, पार उतरना
णिदंस	नि + √दंशय्	उदाहरण बतलाना, दृष्टान्त दिखाना
णिइह	निर् + √इह्	जला देना, भरन करना
णिइस	निर् + √इस्	उच्चवारण करना, कथन करना
णिद्धाव	निर् + √धाव	दौड़ना
णिद्दुण	निर् + √दु	विनाश करना, दूर करना
णिप्पंस	निर् + √पक्षय्	पक्षरहित करना, पंख तोड़ना
णिप्पज्ज	निर् + √पद्	उपजाना, सिद्ध होना

णिस्सम्भ	निर् + √श्रम्	वैठना
णिस्सिच	निर् + √सिच्	प्रक्षेप करना, डालना
णिहण	नि + √हन्, + √खन्	मारना; गाड़ना
णिहम्म	नि + √हम्	जाना, गमन करना
णिहर	नि + √ह्, + √ख्	पाखाना जाना, शहर निकलना
णिहस	नि + √हृप्	घिसना
णिहा	नि + √घा, + √हा, √टश	स्थापन करना; त्याग करना; देखना, संभोग की अभिलाषा करना
णिहुव	√कामय्	
णिहोड	नि + √वारय्, √पातय्	निवारण करना; गिराना, नाश करना
णी, णीण	√गम्	जाना, गमन करना
णीरंज	√मञ्	तोड़ना
णीरव	आ + √क्षिप्	आक्षेप करना
णीहर	{ आ + √हृन्द, नि + √ख्, नि + √हृइ	आक्रन्दन करना, घाहर निकालना, प्रतिभ्रमि करना
णुमञ्ज	नि + √सृ	बैठना
णुव्व	प्र + √काशय्	प्रकाशित करना
णूम	√आइय्	ढरना, छिपाना
णोल्ल	√क्षिप्, √तुइ	फेंकना, प्रेरणा करना
ण्हव	√स्नपय्	नहलाना, स्नान कराना
एहा	√स्ना	स्नान करना, नहाना

त

तक्क	√तर्क	तर्क करना
तक्ख	√तक्ष्	छीलना, काटना
तड, तड्ड, तण	√तम्	विस्तार करना
तडप्फड	दे०	तड़फड़ाना
तणुअ	√तनय्	पतला करना, धृश करना
तप्प, तव	√तप्	तप करना
तमाड	√ध्रमय्	धुमाना, फिराना
तम्म	√तम्	छेद करना
तर	√तृ	तेरना
तलहट्ट	√सिच्	सौचना

णिवड	नि + √पठ्	नीचे पढ़ना, नीचे गिरना
णिवस	नि + √वस्	निरास करना
णिवह	√गम्, √नद्, √पिप्	जाना, भागना, पलायन करना, पीसना
णिवार	नि + वारय्	निवारण करना, निषेध करना
णिविस	निर् + √त्रिष्	बैठना
णिवेअ	नि + √विद्ध्य्	सम्मानपूर्वक ज्ञापन करना
णिञ्चड	√सुच्, √भू	हु ख को टोड़ना; पृथक् होना, जुदा होना
णिञ्चण्ण	निर् + √वर्णय्	रहावा करना, प्रशंसा करना, देखना
णिञ्चत्त	निर् + √वर्तय्, + √वृत्तय्	बनाना, करना; गोल बनाना, बर्तुल करना
णिञ्चय	निर् + √ट्	शान्त होना
णिञ्चर	√क्य्, √छिइ	दुःख बहना; छेदन करना, काटना
णिञ्चल	निर् + √पट्	निष्पन्न होना
णिञ्चव	निर् + √वापय्	ठंडा करना, बुझाना
णिञ्चह	{ निर् + √बह्, } { उट् + √बह् }	निभाना, निर्बाह करना; धारण करना, ऊपर उठाना
णिञ्चा	वि + √श्रम्	विभ्राम करना
णिञ्चिञ्ज	निर् + √विट्	निर्वेद पाना, विरक्त होना
णिञ्चिस	निर् + √विश्	त्याग करना
णिञ्चिह	निर् + √विष्टय्	नाश करना, क्षय करना
णिञ्चेल	निर् + √विल्	फुरना
णिञ्चोल	√कृ	क्रोध से होठ काटना, होठ को मल्लि करना
णिसम	नि + √शमय्	सुनना
णिसाण	नि + √शाणय्	ज्ञान पर चढ़ाना, तीक्ष्ण करना
णिसिर	नि + √सृज्	घाहर निकालना, त्याग करना
णिसीअ	नि + √पट्	बैठना
णिसुंभ	नि + √शुम्भ्	मार डालना, मारना
णिसुण	नि + √शु	सुनना
णिसेव	नि + √सेव्	सेवा करना
णिसेह	नि + √विघ्	निषेध करना, निवारण करना

दम	√दमय्	निमद् करना
दय	√दय्	रक्षण करना, कृपा करना, देना
दल, दा, दल	√दल, √दल्, √दलय्	देना, दान करना, विक्रमना, फटना
दलिद्धा	√दरिद्रा	चूर्ण करना, दुस्त्रे करना
द्व	√द्व	दुर्गति होना, दरिद्र होना
दवाव	√दापय्	छोड़ना
दह	√दह्	दिलाना
दार	√दारय्	जलना, भस्म करना
दिक्ख	√दीक्ष्	प्रिदारना, तोड़ना
दिगिच्छ	√जिघत्स्	दीक्षा देना
दिप्प, दीव, धिप्प	√दीप्	जाने की इच्छा करना
दिष, देव	√दिष्	चमकना, तेज होना
दुक्खाव	√दु खप्	क्रोधा करना, जीतने की इच्छा करना
दुगुण	√द्विगुणय्	दु ख उपजाना, दु खी करना
दुरीडुल	√अम्	दुगुना करना
		खोपी हुई वस्तु की तलाश में घूमना, भ्रमण करना
दुरह	आ + √रह्	आरुह्य होना, चढ़ना
दुह	√दुह्	दुहना, दूध निकालना
दुहाव, दूभ	√लिह्, √दु खग्	उदना, दु खी करना
दू, दूम	√दू	उत्ताप करना, सन्ताप करना
दूज्जइ	√दू	गमन करना, विहार करना
दूस	√दुष्	दूषित होना, दूषण लगाना
देस	√दिशय्	बहना, उपदेश देना
दोल	√दोलय्	हिलना, भ्रमण

ध

धम	√धमा	धमना, भाग में तपाना
धर	√ध	धारण करना, पृथ्वी का पालन करना
धरिस	√धृष	सदत होना, प्रकट होना
धवक्क	दे०	धडकना, भय से व्याकुल होना
धवल	√धवलय्	संपद करना
धस	√धस्	धसना, नीचे जाना

वय, वाय	१'वपप्, १'वापप्	गर्म करना
तस	१'वस्	उरना, प्राप्त पाना
वाढ	१'वाडप्	ताडना
वाळिअंट	१'वामप्	पुमाना, विमाना
विउट्ट	१'वुट्ट	दृटना
विप्प	१'वर्णप्, १'विप्	वृत्त करना; क्लृप्ता, पूना
तिम्म	१'वोम्	भीमना, आर्द्र होना
वीर	१'वक्, १'वीरप्	समर्थ होना; मनात करना, परिपूर्ण करना
तुआ	१'तु	व्यथा करना, पीडा करना
तुअर	१'तर	शीघ्रता करना, स्वरा करना
तुट्ट, तुढ	१'तुट्ट	दृटना
तुपट्ट	व्यम् + १'तुप्	पारस्यं कां घूमना, कश्यप वश्यना
तुउ	१'तोळप्	तोळना
तूस, वोस	१'तुप्	तुल होना
तेअ	१'तेअप्	तेज करना
		ध
धंभ	१'रतन्न्	रटना, स्तब्ध होना, स्थिर होना
धक्क	१'स्था, १'क्क, १'धम्	रहना, बैठना; नीचे जाना; यकना, भ्रान्त होना
धगधग	१'धगधगप्	कड़कना, कांपना
धण	१'स्तन्	गर्जना, कांपना
धय	१'स्थगप्	भाषणादन करना
धरयर	दे०	कांपना
धव, धुण	१'स्व	स्तुति करना
धिप	१'धप्	वृष होना, सन्तुष्ट होना
धिप्प	वि + १'गल्	गल्ल जाना
धिम्म	१'स्तिम्	आर्द्र करना, गीला करना
धियधिय	दे०	धिवधिय आवाज करना
धुक्क	दे०	धूकना
		द
दंस, दरिस, दाव	१'दर्सप्	दिखलाना, वतलाना
दक्ख	१'दन्	देखना, अवलोकन करना

दम	√दमय्	निग्रह करना
दय	√दय्	रक्षय करना, कृपा करना, देना
दल, दा; दल	√दा, √दल्, √दलय्	देना, दान करना; विकसन, फटना
दलिदा	√दरिदा	चूर्ण करना, दुरङ्गे करना
दव	√द्व्	दुर्गति खाना, दरिद्र होना
दवान	√दापय्	छोड़ना
दह	√दद्	दिखाना
दार	√दारय्	जलना, भस्म करना
दिक्ख	√दीक्ष्	विदारना, तोड़ना
दिगिच्छ	√जिघरस्	दीक्षा देना
दिप्प, दीव, धिप्प	√दीप्	खाने की इच्छा करना
दिय, देव	√दिर्	चमकना, तेज होना
दुक्खाव	√दुःखय्	क्रीड़ा करना, जीतने की इच्छा करना
दुगुण	√द्विगुणय्	दुःख उपजाना, दुःखी करना
दुरुदुल	√धम्	दुगुण करना
		खोयी हुई वस्तु की तलाश में घूमना, भ्रमण करना
दुरह	धा + √रुह्	आरूढ होना, चढ़ना
दुह	√दुह्	दुहना, बूध निकालना
दुहाव, दूम	√द्विद्, √दुःसम्	छेदना, दुःखी करना
दू, दूम	√दू	उत्ताप करना, सन्ताप करना
दूजजइ	√दू	गमन करना, विहार करना
दूस	√दुष्	दूषित होना, दूषण लगाना
देस	√दिशय्	बढ़ना, उपदेश देना
दोळ	√दोळय्	हिलना, झूटना

ध

धम	√धमा	धमना, धाम में तपाना
धर	√ध्	धारण करना, पृथ्वी का पालन करना
धरिस	√धृष	संहत होना, एकत्र होना
धवक्क	दे०	धड़कना, भय से व्याकुल होना
धवल	√धवलय्	सन्द करना
धस	√धस्	धसना, नीचे जाना

धा, धाव	√धा, √ध्वे, √धार	धारण करना; ध्यान करना; दौड़ना
धाड	निर् + √ख, √धाड	बाहर निकलना; प्रेरणा करना, नाश करना
धार	√धारय	धारण करना
धिक्कार	धिक् + √कारय	धिक्कारना, तिरस्कार करना
धीर, धीख	√धीरय	धीर्य देना, सान्त्वना देना
धुअ	√धु	कंपना
धुव, धोअ; धुव	√धाव, √धु	धोना, शुद्ध करना; कंपना, हिचाना
धे	√धा	धारण करना

प

पउंज	प्र + √युज्	जोड़ना, युक्त करना
पउत्त	प्र + √वृत्	प्रवृत्ति करना
पउल	√पच्	पकाना
पउस	प्र + √द्विष्	द्वेष करना
पंस	√पांसय	मस्तिन करना
पकत्थ	प्र + √कस्व	रक्षावा करना, प्रशंसा करना
पकलर	सं + √नाह्वय	सन्नद्ध करना, घोड़े को सजाना
पकलल	प्र + √पल्ल	गिरना, पड़ना
पगंध	प्र + √कथय	निन्दा करना
पगड्ड	प्र + √कुप	खींचना
पगल	प्र + √गल्	करना, टपकना
पगग	√प्रह्	महण करना
पच	√पच्	पकाना
पच्चक्स		त्याग करना, छोड़ना
पच्चाअ	प्रति + √आपय	प्रतीति करना, विश्वास करना
पच्चाया	प्रत्या + √जन्	उत्पन्न होना, जन्म होना
पच्चोगिल	प्रत्यव + √गिल्	आश्वासन करना
पच्चोणिवय	प्रत्यव नि + √पत्	उल्लस कर नीचे गिरना
पच्चौर	प्रत्यव + √वृ	नीचे उतारना
पच्छ	प्र + √अर्थय	प्रार्थना करना
पजह	प्र + √डा	त्याग करना
पज्ज	√पायय	पिलाना, पान कराना

पधर	√रुपप्	कहना, बोचना
पञ्जुवडा	पयुप + √रुधा	उपदिःत होना
पञ्जम्भ	प्र + √म्भम्	भरना, उपरना
पट्ट	√धा	पीना, पान भरना
पडिक्कप्प	प्रति + √रुप्	समाना, सत्रावट करना
पडिक्क	प्रति + √रुध्	प्रतीक्षा करना, पाठ जोहना
पडिरिञ्ज	पति + √रिञ्ज्	रिख होना, बलवन्त होना
पडिन्द्ध	प्रति + √रुप्	मार्ग करना
पडिदा	पति + √धा	पीउ देना, शान हा पाना देना
पडिजय	प्रति + √जावप्	कहना
पडिपुच्छ	प्रति + √पच्छ्	पूटना
पडिवाह	प्रति + √वाप्	रोटना
पडिबुज्ज	प्रति + √बुज्	बोध पाना
पडिबोह	प्रति + √बोधप्	जगना
पडिभञ्ज	प्रति + √भञ्ज्	दरना, भग्न होना
पडिवण	प्रति + √वण्	यापय जाना
पडिसत्र	प्रति + √धु	प्रतिष्ठा करना, ररीकार करना
पडिसा	√शम्	शाभत होना, भागना, पणान करना
पडिइण	प्रति + √इण्	प्रतिघात करना
पडिहा	प्रति + √हा	मादम होना
पडुह	√धुम्	धुञ्च होना
पढ	√रुड	पहना, भाग्याप करना
पणाम	√अपय्, प्र + √नमय्	अपय करना, नमाना
पणिहा	प्रणि + √धा	पुत्राभ विस्तन करना, पणन करना
पण्णव	प्र + √णवप्	प्रकृत्य करना, उपदेश देना
पण्णा	प्र + √ण	प्रकृषे मे जानना
पण्णअ	प्र + √ण्	भरना, उपरना
पतार	प्र + √तारप्	उठना
पत्ति	प्रति + √ट्	जानना, विरहाग करना
पत्थ	प्र + √मर्थप्	प्रार्थना करना
पत्थर	प्र + √थ्	दिजाना
पत्ताव	√पुह्	नर्दन करना
पप्प	प्र + √मार	प्राप्त करना

धा, धाव धाड	√धा, √धै, √धाव् निर + √ध्, √धाड्	धारण करना; ध्यान करना; दौड़ना बाहर निकलना; प्रेरणा करना, नाश करना
धार धिककार धीर, धीस्व धुअ धुव, धोअ; धुव धे	√धारय् धिक् + √कारय् √धीरय् √धु √धाव्, √धू √धा	धारण करना धिकारना, तिरस्कार करना धैर्य देना, साह्य देना कांपना धोना, शुद्ध करना, कपाना, द्विगता धारण करना

प

पउंज पउत्त पडल पडस पंसु पकरथ पकखर पकरल पगथ पगड्ड पगल पग्ग पच पच्चकल पचाअ पचाया पचोगिल पचोगिबय पचोर पच्छ पजइ पज्ज	प्र + √युज् प्र + √युत् √पच् प्र + √दिप् √पांसय् प्र + √कत्थ् सं + √नाइय् प्र + √प्लत् प्र + √रुथय् प्र + √कृग् प्र + √गल् प्रद √पच् प्रति + √आपय् प्रत्या + √जन् प्रत्यय + √गिल् प्रत्यय नि + √पत् प्रत्यय + √ट् प्र + √अर्थय् प्र + √इ √पायय्	जोड़ना, युक्त करना प्रवृत्ति करना पठाना द्वेष करना मलिन करना श्लथ करना, प्रदर्शना करना सज्ज करना, घोड़े को सजाना गिरना, पड़ना निन्दा करना खोजना भरना, टपकना ग्रहण करना पठाना त्याग करना, छोड़ना प्रतीति करना, विचास करना उत्पन्न होना, जन्म होना आस्वादन करना उटल कर नीचे गिरना नीचे उतारना प्रार्थना करना त्याग करना पिछाना, पान कराना
---	---	--

पमञ्ज	प्र + √मृञ्	मार्जन करना, साफ सुधरा करना
पमा	प्र + √मा	सत्य-सत्य ज्ञान करना
पमाय	प्र + √मइ	प्रमाद करना
पमिलाय	प्र + √म्लै	मुरझाना
पम्हअ, पम्हस	प्र + √स्मृ	भूल जाना
पय	√पच्, √रइ	पकाना, जाना
पयह	√ह	शिथिलता करना, ढीला होना
पया	प्र + √या	प्रयाण करना, प्रस्थान करना
पयार	प्र + √वारय्	प्रचार करना, प्रतारण करना
पराइ	परा + √जि	हराना, पराजय करना
परामुस	परा + √मृग्	स्पर्श करना, छूना
परि	√क्षिप्	फेंटना
परिआल	√गिद्य्	वेष्टन करना, लपेटना
परिक्कम	परि + √क्म	पाँव से चलना, पैदल चलना
परिगिला	परि + √लै	रखानि होना
परिजव	परि + √जिच्	पृथक् करना
परिन्ता	परि + √त्रै	रक्षण करना
परिथु	परि + √स्तु	स्तुति करना
परिमइल	परि + √मृज्	मार्जन करना
परिलहस	परि + √लस्	गिर पड़ना, सरक जाना
परिवड्ड	परि + √वृध्	बढ़ना
परिथा	परि + √था	सूखना
परिस्सअ	परि + √स्वञ्ज्	आलिंगन करना
परिह	परि + √धा	पहिरना
परी	परि + √ड, √क्षिप्, √अस्	जाना, फेंटना, भ्रमण करना
पलट्ट	परि + √अस्	पलटना, बदलना
पलाय	परा + √यय्	भाग जाना
पविणी	प्र वि + √णी	दूर करना
पहास	प्र + √भाष्	बोहना
पहुच्च	प्र + √भ्	पहुँचना
पाए	√पायय्	पिलाना
पागड	प्र + √कटय्	प्रकट करना

पाठ, पाठाव	√पाठ्य्	पठाना, अध्ययन कराना
पाण	प्र + √आनय्	जिखाना
पाणम		निःश्वास लेना
पाम		प्राप्त करना
पाधार		पधारना
पार	√धात्, √पारय्	सरुना, करने में समर्थ होना, पार पङ्क्तिना
पारंभ	प्रा + √भ्	आरम्भ करना, शुरु करना
पाल	√पाल्य्	पालन करना, रक्षण करना
पाच	प्र + √आय्	प्राप्त करना
पाह		प्रार्थना करना
पाहर	प्र + √ह	प्रर्ष से छाना, छे भाना
पिज	√पिञ्ज्	रुई धुनना, पीजना
पिड		पुकवित्त करना, संश्लिष्ट करना
पिध		ढकना
पिञ्ज, पिय	√पा	पीना
पिट्ट	√पीडय्	पीडा करना
पिडव	√पिज्	पैदा करना, उपार्जन करना
पिस, पीस	√पिप्	पीसना
पिह	√पिह्	इच्छा करना, चाहना
पुंज	√पुञ्ज्	इकट्टा करना, फैलाना
पुंस	√पुञ्ज्	मार्जन करना, पीछना
पुञ्ज, पूज	√पूजय्	पूजन करना, आदर करना
पुण	√पू	परित्र करना
पेच्छ	√पेक्ष्	देखना
पेर	प्र + √पेरय्	भेजना, प्रेषण करना
पेह	√पेक्षिप्	कैंकना
पेस	प्र + √पेषय्	भेजना, पठाना, प्रेषण करना
पोस	√पुष्	पुष्ट होना

फ

फट्	√फट्	थोडा दिसना, धड़कना
फंफ		टल्लना

फंस—फसइ		भसत्य प्रमाणित होना
फंस, फस, फास, } फुस, फरिस }	√स्फुन्	छुना, स्पर्श करना
फट्ट	√स्फट्	फटना, हटना
फड	√स्फट्	खोदना
फल	√फल्	फलना, फलाभित होना
फव्वीह	√ल्भ्	यथेष्ट लाभ प्राप्त करना
फाड	√स्फाट्	फाड़ना
फिट्ट	√अस्	नीचे गिरना, ध्वस्त होना
फिर	√गम्	फिरना, चलना
फुक्क—फुक्कइ		फुफकारना, फू फू की आवाज करना
फुट्	√स्फुट्	निकलना, खिलना
फुम, फुस	√अस्, स्फ + √ह	अमग करना; फूंक मारना
फुर	√स्फुर्	फड़कना, हिलना, अपहरण करना
फुरफुर		धरधराना
फुल्ल	√कुल्ल्	फूलना, विकसित होना
फेल	धिप्	फेंकना, बूर करना
फेल्लुस	दे०	फिसलना, घिसलना, खिसक कर गिरना
फोड	स्फोट्	फोड़ना, विदारण करना

ब

बइरा	डप + √त्रिग्	बैठना
बध	√बन्ध्	बाँधना
बडबड	दे०	बिलाप करना, बड़बड़ाना
बल	√मह्	मदण करना
बन, बुध, बू	√भ्	बोलना
बाह	√नाध्	विरोध करना, रोकना
बिंघ	√बिन्घ्	प्रतिबिम्बित करना
बिह	√बिह्	पोषण करना
बीह	√भो	ढरना, भयभीत होना
बुक्क	√गर्ज्, √उक्	गर्जन करना, गरजना, कुत्ते का भूँकना

बुञ्ज	√बुध्	जानना, ज्ञान करना
बुङ्ङ	√मस्ञ्	द्वयना
बुब्बुअ		उ, वु, की आवाज
बोट्ट	दे०	जूठा करना, उच्छिष्ट करना
बोल		बुधाना
बोल्ल		बोळना
बोह	√बोधय्	समझना, ज्ञान करना

भ

भंज	√भञ्ज्	तोड़ना, भग्न करना
भड	√भाण्डय्, √भण्ड्	भडारा करना, समझ करना, भर्त्सना करना
भस	√भ्रग्	नीचे गिरना
भक्ख	√भक्षय्	भक्षण करना, खाना
भञ्ज	√भ्रस्ञ्	पकाना, भूतना
भण्, भण्ण	√भण्	बहना, बोलना
भम	√भ्रम्	भ्रमण करना, श्रुमना
भय	√भज्	सेवा करना
भर	√भृ	भरना, धारण करना
भल	√भल्	सन्हालना
भव	√भृ	होना
भस	√भप्	भूँकना
भा	√भा	घमकना
भा	√भी	ढरना, भय करना
भाव	√भावय्, √भाम्	वासित करना, विन्तन करना, दिवाना
भास	√भाप्, √भास्	बोलना, शोभना, प्रकाशना
भिद्	√भिद्	भेदना, तोड़ना
भिकख	√भिक्ष्	भीख माँगना
भिट्ट	दे०	भेंटना
भिड	दे०	भिड़ना, मिलना, सटना
भिल्लिंग	दे०	मालिश करना
भिस	√भ्लप्	जलाना
भुज	√भुज्	भाजन करना

भुल्ल	√भ्रंश्	श्रुत होना
भूस	√भृपय्	सजावट करना
भेल	√भिलय्	मिछाना, मिश्रण करना
भोअ	√भुञ्	खिलाना, भोजन करना

म

मइल	.	मैला करना, मलिन बनाना
मइल	दे०	तेज रहित होना, फीका लगना
मउल		सकुचना, संकुचित होना
मंड	√मण्ड्	भूषित करना, सजाना
गंड	दे०	भागे धरना
मकख	√म्रक्ष्	चुपड़ना, स्तिरथ करना
मग्ग	√मार्गय्, √मग्	माँगना; गमन करना, चलना
मज्ज	√मस्ज्, √मद्	स्नान करना; अभिमान करना
मड्ड्, मद्	√मृद्	मर्दन करना, चूर्ण करना, मसलना
मण	√मन्	मानना; जानना
मर	√मृ	मरना
मरह्	√मृप्	क्षमा करना
मल्ह	दे०	मौज करना, लीला करना
मय	√मापय्	नापना, पाप करना
मह्	√रूढ्क्ष्, √मर्, √मद्	चाड़ना, वांछना; मथना; पूजा करना
माण	√मानय्	सम्मान करना, आदर करना
मार	√मारय्	ताडन करना, दिसा करना
माल	√माल्	शोभना, वेष्टित होना
मिट	दे०	मिटाना, छोप ररना
मिण	√मा, √मी	नापना, तोलना
मिळ	√मिल्	मिछना
मिळा	√न्त्ले	म्लान होना, निस्तेज होना
मिस	√मिस्	शब्द करना
मिसमिस	दे०	भक्षयन्त घमरना, लूज जलना
मिसल, मिस्स	√मिभय	मिश्रण करना, मिशाना
मिह्	√मिभ्	स्नेह करना
मील	√मील्	सट्टवाना

मुअ, मुफक, मुअ	√मोदय्, √मुच्	सुख होना; छोड़ना
मुँड	√मुण्डय्	मूँडना
मुच्छ	√मुच्छ्	मुच्छित होना
मुष्म	√मुद्	मोह करना
मुण	√डा	जानना
मुद्	√मुदय्	मोहर लगाना
मुर	√मृड्	घिटास करना, जीभ चखाना, व्याप्त करना

मुस	√मुष्	चोरी करना
मेळ	√मिलय्	मिळाना
मोड	√मोदय्	मोड़ना, टेढ़ा करना
मोह	√मोहय्	ध्रम में डालना

य

यंच	√यञ्च्	गमन करना
याण	√या	जानना

र

रंग	√रङ्	इधर-उधर जाना
रंग	√रङ्गय्	रंगना
रंज	√रञ्जय्	रंग लगाना
रध	√रध्	रंधना, पकाना
रंप	√रध्	छीलना, पतला करना
रंभ	√रम्भ्, आ + √रम्भ्	जाना, गति करना, आरम्भ करना
रक्ख	√रक्ष्	रक्षण करना, पालन करना
रच्च, रञ्ज	√रञ्च्	अनुराग करना, आसक्त होना
रड	√रट	रोना, चिहाना
रप्प	आ + √रप्पम्	आक्रमण करना
रम	√रम्	फ्रीडा करना, समोग करना
रय	√रज्, √रचय्	रगना; बनाना, निर्माण करना
रव	√र	कहना, बोलना
रव, राव	दे०	आर्द्र करना
रस	√रस्	चिहाना, आवाज करना
रह	दे०	रहना

रह	√रह	त्यागना, छोड़ना
रा	√रा	देना, दान करना
राण	वि + √नम्	विशेष ममना
राम	√रम्य्	रमण करना
राय	√राज्	चमकना, शोभित होना
रिअ	√री, प्र + √रिश्	गमन करना, प्रवेश करना
रिग	√रिङ्	रेंगना, चलना
रिड	मण्ड्य्	विभूषित करना
रुअ	√रुद्	रोना
रुच	√रुञ्च्	कपास से उसके धीज अलग करने की क्रिया करना
रुज	√रु	आवाज करना
रुंध	√रुध	रोकना, अटकना
रुश्च	√रुच्	रुचना, पसंद होना
रेह	√राज्	शोभना, चमकना
रौच	√रिष्	पीसना

ल

लघ	√लघ्	छापना, अतिक्रमण करना
लघ	√लम्ब्	सहारा देना
लंभ	√लभ्	प्राप्त करना
लनल	√लक्ष्य्	जानना
लगा	√लग्	लगाना, सम्बन्ध करना
लड	√लृष्ट्	स्मरण करना
लभ	√लभ्	प्राप्त करना
लय	√ला	प्रदण करना
लल	√लल्	बिछास करना, मौज करना
लय	√ल्ल, √लप्	काटना; बोलना, कहना
लस	√लस्	श्लेष करना
लाल	√लाळ्य्	स्नेहपूर्णक पाठन करना
लिअ, लिप	√लिप्	छेपन करना, छीपना
लिच्छ	√लिप्स्	प्राप्त करने की चादना
लिस	√स्वप्, √लिप्	सोना, चयन करना, आलिंगन करना

लिह	√लिप्, √लिङ्	लिखना; घाटना
लुंढ, लुट्, लूड	√लुण्ट	लुटना
लुक्	√नि + √ली, √लुच्	लुक्कना, लिपना; इटना
लुट्	√लुङ्	लुट्कना, लेटना
लुङ्भ	√लुम्	लोभ करना
लूस	√लूप्य्	बध करना, मार डालना
लूह	√लुञ्	पोछना
ले	√ला	लेना
लोढ	दे०	कवास निकालना
व		
वंच	√वञ्	ठगना
वंज	वि + √अञ्ज्	व्यक्त करना
वंद	√वन्द्	प्रणाम करना
वंफ	√काष्ट्	चाहना, अभिलाषा करना
वग	√वल्ग	पूशना, जाना, वर्ग करना
वज्ज	√वस्, √वद्	डरना; वजना
वजर	√वथ्य्	कहना, मोलना
वट्ट	√वृत्	परोक्षना, व्यवहार करना, वरतना
वड्ढ	√वृष्	वदना
वड्ढव	√वर्धय्	बढ़ाना, वृद्धि करना
वणग	√वर्णय्	वर्णन करना
वम	√वम्	उलथी डरना, वमन करना
वय	√वच्, √वद्	बोलना, कहना, गमन करना
वर	√वृ	सगर्ह करन, सम्बन्ध करना
वल	√वल	छोडाना, वापस करना, प्रहय करना
वह	√वह्, √वच्, √वथ्	पहुचाना; मारना, पीडा करना
वा	√वा, √व्लै, √व्ने	गति करना, चलना; सूचना, उनना
वाय	√वाड्य्	बनाना
वाल	√वाल्य्	मोहन, वापस लौटाना
वावर	व्या + √वृ	काम में लगना
वायाअ	व्या + √पाड्य्	मार डालना, विनाश करना
वास	√वाड्	पशु पक्षियों का मोलना
वाह	√वाह्य्	बहन करना, चयना

वाहर	व्या + हृ	घोलना, कहना
विअ	√विइ	जानना
विअंभ	वि + √जृम्भ	उत्पन्न होना, विकसना
विअट्ट	वित्तं + √रट्, वि + √रट्	अप्रमाणित करना, विचारना, विहरना
विअर	वि + √वर, वि + √वृ	विहरना, घूमना, देना, अर्पण करना
विअप	पि + √कल्पय्	विचार करना, संशय करना
विअळ	√भुञ्, वि + √गल्, √ओजय्	मोड़ना; गल्ल जाना; मजबूत होना
विअल्ल	वि + √चल्	धुब्ध होना
विअस	वि + √कस्	खिलना, विकसित होना
विआण	वि + √जा	जानना, मालूम करना
विआय	वि + √जनय्	जन्म देना, प्रसव करना
विआर	वि + √कारय्, + √वारय्, + √दारय्	विकृत करना; विचार करना; फाड़ना, चीरना
विउकम	व्युत् + √कम्	परिस्थापन करना, उल्लंघन करना
विउकस	व्युत् + √रुपय्	गर्व करना, बढ़ाई करना
विउम्भ	वि + √उभ्	जागना
विउट्ट	वि + √तोडय्, + √ट्ट, √वर्तय्	तोड़ डालना, उत्पन्न होना; विच्छेद होना
विउस	वि + √उन्, विद्रस्य्	विशेष घोलना; विद्वान् की तरह साधारण करना
विओज	वि + √गोजय्	अलम करना
विङ्ग, विङ्ग	वि + √घट्	अलम होना
विट	√विष्टय्	बेधन करना, छपेटना
विध, विङ्ग	√धय्	बॉधना, ठेदना, बेधना
विकंध	वि + √रथ्	प्रसंगा करना
विकट्ट	वि + √हट्	फाटना
विहर	वि + √ह	विहार पाना
विक्रिग, विकरु, विके	वि + √ओ	धेपना
विकिर, विगगर	वि + √हृ	विभारना
विहुप्य	वि + √हृप्	कोव करना
विकूड	वि + √हृय्	प्रतिपात करना

विक्रूण	वि + √कृट्	घृणा से मुँह मोड़ना
विक्रकोस	वि + √कृश	चिह्नाना
विक्रिखव, विच्छुह	वि + √क्षिप्	बुर करना, फेंकना
विगण	वि + √गणथ्	निन्दा करना, घृणा करना
विगत्त	वि + √गृत्	काटना, छेदना
विगरह	वि + √गर्ह्	निन्दा करना
विगाह	वि + √गाह्	अवगाहन करना
विगिच	वि + √विच्	पृथक् करना, अलग करना
विगिला, विगिलाअ	वि + √रलै	त्रिदोष रखानि होना, खिन्न होना
विगोच	वि + √गोपथ्	प्रकाशित करना
विघुम्भ	वि + √घूर्णथ्	डोलना
विघ्न	वि + √भथ्	व्यय करना
विघ्न	दे०	समीप में आना
विच्छड्ड	वि + √उदथ्	परित्याग करना
विच्छुह	वि + क्षुभ्	विक्षोभ करना, चंचल हो उठना
विज्ज	√विद्	होना
विट्टाल	दे०	अस्पृश्य करना, उच्छिष्ट करना
विडंथ	वि + √डम्बथ्	तिरस्कार करना, अपमान करना
विटप्प	व्युत् + √पद्	व्युत्पन्न होना
विढथ	√भर्ज	उपार्जन करना, पैदा करना
विणड	वि + √नट्थ्, वि + √णुप्	व्याकुल करना, विडम्बना करना
विणभ	√वेदथ्	खिन्न करना
विणिच्छ	विनिष् + √वि	निश्चय करना
विण्जुंज	विनि + √युञ्	जोड़ना, कार्य में लगना
विणिमट्ट	विनि + √रुत्	निरुत्त होना, पीछे हटना
विणिवाए	विनि + √वावथ्	मार गिराना
विणिवार	विनि + √वारथ्	रोकना, निवारण करना
विणिहा	विनि + √धा	व्यवस्था करना
विणोअ	वि + √नोदथ्	खण्डित करना, तेल करना, कुतूहल करना
विण्णव	वि + √जापथ्	बिन्ती करना, प्रार्थना करना
विण्णस	वि + √न्यामथ्	स्थापन करना, रखना

विस्थर, विस्थार	वि + √स्तृ	फैलाना, बढाना
विद्वा	वि + √दा	खराब होना
विद्ध	√व्यध्	वर्धना, छेदना
विपरिणाम	विपरि + √णमय्	त्रिपरीत करना
विपलाअ	विपरा + √अप्	दूर भागना
विप्पजह	विप्र + √हा	परित्याग करना, छोड़ देना
विप्पलंभ	विप्र + √लभ्	ठगना
विप्पसीअ	विप्र + √सइ	प्रसन्न होना
विप्फाल	दे०	पूछना
विम्हय	वि + √स्मि	चमस्कृत होना, आश्चर्यान्वित होना, त्रिस्मित होना
विम्हर	√स्मृ	याद करना
विर	√अञ्ज्, √गुप्	तोड़ना; व्याकुल होना
विरमाल	प्रति + √ईक्ष्	राह देखना, घाट जोड़ना
विरल्ल	√तन्	विस्तारना, फैलाना
विरेअ	वि + √रेचय्	मल निकालना, दस्त खेना
विलस	वि + √रस्	मौज करना
विलुंप	√काङ्क्ष्	अभिलाषा करना, चाहना
विवर	वि + √इ	घाल सँकारना, व्याख्या करना
विवह	वि + वह्	विवाह करना
विस	वि + √वृ	हिंसा करना, नष्ट करना
विसट्ट	वि + √क्स् √दल्	फटना, टूटना; विकसित होना, खिलना
विसिस	वि + √शिप्	विशेषण युक्त करना
विसुवभ	वि + √शुध्	शुद्धि करना
विसूर	√खिइ	खेद करना
वीसुंभ	दे०	पृथक् होना
बुज्ज	√प्रस	डरना
बुड्ड	√इध्, √अर्धय्	बचना, बचाना
वेअ	√विदय्; √वेप्	शत्रुभाव करना, भोगना, जानना; कांपना
वेआर	दे०	ठगना, प्रतारण करना

वेढ	√विष्ट्	लपटना
वेल्ल	√विस्त्, √रम्	कांपना, छटना; फ्रीडा करना
वेह	√ज्यध्	वीधना
बोल	√गम्	चलना, गति करना
बोल्ल	√भा + √रम्	आक्रमण करना
बोसर	व्युत् + √सृज्	परित्याग करना, छोड़ना

स

सअ	√स्वइ	चखना, स्वाद लेना, प्रीति करना
संक	√शङ्क्	संशय करना, सन्देह करना
संकल	सं + √कलय्	संकलन करना, जोड़ना
सफेअ	सं + √कितय्	इशारा करना
संरा	सं + √स्त्वै	आवाज करना, सान्द्र होना, निविड बनना
संखुड्ड	√रम्	फ्रीडा करना, संभोग करना
सगह	सं + √मइ	संचय करना, संमइ करना
संगा	सं + √गे	मान करना
संप	√रुध्	बहना
संचाय	सं + √शक्	समर्थ होना
संचिकर	सं + √रि	रहना, ठहरना
संछुह	सं + शिष्	एकत्र करना, इकट्ठा करना
संजत्त	दे०	तंगार करना
संभाअ	सं + √भै, √सन्धाय्	छयाल करना, चिन्तन करना
संगम्भ	सं + √नह्	सन्ध्या की तरह आचरण करना
संद	√स्थन्द्	कवच धारण करना, बखतर पहनना
संदाण	√ठ	करना, टपकरना
संध	सं + √धा	अत्रलम्बन करना, सद्दारा देना
संपाव	संप्र + √आप्	अनुसन्धान करना, खोजना, जोड़ना
संलुंच	सं + √लुञ्च्	प्राप्त करना
संर	सं + √ट्	काटना
संविञ्ज	सं + √विञ्ज्	निरोध करना, रोचना
सवेह	दे०	बिद्यमान होना
		समेहना, समेटना, संबुचित करना

संस	खंस्, खंस्	खिसकना, गिरना; कहना, प्रशंसा करना
सक	खक, खप्, खक्	सकना, समर्थ होना; जाना, गति करना
सज्ज	खज्ज, खसज्	आसक्ति करना, आर्त्तिमान करना; तैयार होना
सड	खड्, खड	सड़ना, विषाद करना, खेद करना
सड्ढ	खड्ढ	विनाश करना, कृश करना
सदह	श्रद् + खधा	श्रद्धा करना, विश्वास करना
सप्प	खप्	जाना, गमन करना
सम	खम्, खमय्	{ शान्त होना, उपशान्त होना; { उपशान्त करना, दशाना
समत्थ	सम् + खर्थय्	सिद्ध करना, पुष्ट करना
समर	ख्स्मृ	याद करना
समाण	खञ्ज, सम् + खभाप्	भोजन करना, खाना; समाप्त करना
समोसव	दे०	दुकषा-दुकड़ा करना
सम्भ	खम्	शान्त होना
सय	खी, खवप्; ख्वड्	सोना, शयन करना; पचना, जीर्ण होना
सय	ख्ज, ख्रि	भरना, टपकना; सेवा करना
सर	ख्ज, ख्स्मृ, ख्वर	सरसना, खिसकना; याद करना; आवाज करना
सल्लह	खल्लाघ्	प्रशंसा करना
सव	खशप्, ख्ज, ख्ज	शाप देना, गाली देना; उत्पन्न करना; करना, टपकना
सस	खसस्	श्वास लेना
सह	खश, खह्, वा + खडा	शोभना; सहन करना; भादेश देना
सार	खसारय्, प्र + खह, खमारय्	ढीक करना; प्रहार करना; याद दिलाना
सार	ख्वरय्	डुलवाना
साराय, साराव	साराय्	सार रूप होना; चिपकवाना, छगवाना
सास, साह	खशास्, खथय्	सजा करना, सीख देना; कहना
साह	खशाध्	सिद्ध करना; बनाना
सिगार	खश्रारय्	सिगार करना, सजावट करना

सिघ	√शिङ्घ्	सूघना
सिच	√सिच्	सौघना, छिङ्गना
सिज	√शिञ्	अस्तुष्ट आवाज करना
सिक्ख	√शिक्ख्	सीसना, पदना, अभ्यास करना
सिक्खाव	√शिक्खाव्	सियाणा, पदाना, अभ्यास कराना
सिज्ज	√सिज्ज्	पसीना होना
सिज्ग	√सिज्	निष्पन्न होना, बनना, मुक्त होना
सिणा	√सिना, √सिनाप्य्	स्नान करना, स्नान कराना
सिणिज्ज	√सिनिज्	प्रीति करना
सिर	√सिज्	यनाना, निर्माण करना
सिलाह	√सिलाह्	प्रशंसा करना
सिलेस	√सिलिप्	आच्छिन्न करना, भेंटना
सिव्व, सीव	√सिवाच्	सीना
सिह	√सिह्	इच्छा करना, चाहना
सीअ	√सीअ्	विवाद करना, लेद करना
सीआव	√सीआव्	शिथिल करना
सीमंत	दे०	वेचना
सील	√सील्य्	अभ्यास करना
सीस	√सिप्, √सिथ्य्	वध करना, हिंसा करना; कहना
सुप्प, सुअ, सुव	√सुवप्, √सु	सोना; सुनना
सुआ	√सु	शयन करना, सोना
सुंघ	दे०	सूघना
सुक्क, सुक्ख	√सुक्, √सुक्खप्	सूखना; सुखाना
सुज्ज	√सुज्	शुद्ध होना
सुड, सुमर	√सुड्	याद करना
सुण	√सु	सुनना
सुरह	√सुरभ्य्	सुगन्धित होना
सुस्स	√सुप्	सूखना
सुस्सुयाय	√सुस्सुयाय्, √सुस्कार्य्	सू सू आवाज करना, सत्कार करना
सुस्सूस	√सुस्सुप्	सेवा करना
सुह	√सुह्य्	सुखी करना
सूअ	√सूअ्य्	सूचना करना, जानना
सूस, सोस	√सुप्	सूखना

सेव	√सेव्	आराधना करना, आश्रय करना
सो	√सु, √स्वप्	दारु बनाना, पीढा करना, सोना
सोभ, सोह	√शुम्, √शोभय्	शोभना, चमकना, शोभा युक्त करना, चमकना
सोस्त	√क्षिप्, √पच्, √रि	फेंकना, पकाना, प्रेरणा करना
सोह	√शोधय्	शुद्धि करना, खोजना
ह		
हक	दे०	उच्चारना, आह्वान करना
हकार	दे०	ऊँचे फैलाना
हक्खुव	उत् + √क्षिप्	ऊँचा करना, उठाना, फेंकना
हण, हम्म	√हन्	वध करना, मारना
हम्म	√हम्म	जाना
हर	√ह, √मड, √हृ	हरण करना, छीनना, प्रहण करना, आनाच करना
हरिस	√हृप, √हृष	खुशी होना, हर्ष से रोमाञ्चित होना
हरेस	√हृप	गति करना
हय	√हृ	होना
हस	√हस, √हस	हँसना, हास्य करना, हीन होना
		कम होना
हा	√हा	त्याग करना, गति करना
हार	√हारय्	नाश करना, हारना, पराभव होना
हाव	√हापय्	हानि करना, त्याग करना
हास	√हामय्	हँसाना
हिरि	√ही	लज्जित होना
हाल	√हृषय्	अज्ञा करना, तिरस्कार करना
हुण	√हु	हाम करना
हुळ	√क्षिप्, √हृञ्	फेंकना, मार्जन करना, साफ करना
हेर	√दि०	देखना, निरीक्षण करना
होम	√होमय्	होम करना

दशवाँ अध्याय

अन्य प्राकृत भाषाएँ

शौरसेनी

- (१) शौरसेनी में जितने भी शब्द आते हैं, उनकी प्रकृति संस्कृत है।
(२) शौरसेनी में अनादि में वर्तमान असंयुक्त त का द होता है।^१ यथा—
माहदिना, मन्तिदो—त के स्थान पर द।

पदाहि, पदाओ < पृतस्मात्।

विशेष—(क) संयुक्त होने पर त का द नहीं होता। यथा—अजउत्त और सउन्तणे में त का द नहीं हुआ है।

(ख) भादि में होने पर भी त का द नहीं होता। यथा—

“तधाऋरेथ जधा तस्स राइणो अणुक्कम्पणीआ भोमि” में तधा और तस्स के तकारों को द नहीं हुआ।

(३) कहीं-कहीं शौरसेनी में वगर्ग-तर के अघ.—अनन्तर वर्तमान त का द होता है।^२ यथा—

महन्दो < महान्त —दकारोत्तर आकार को इत्थ और त को द।

निश्चिन्दो < निश्चिन्त.—श्च के स्थान पर च तथा त को द।

अन्दे-उरं < अन्त पुरम्—त को द और पकार का छोप।

(४) शौरसेनी में तावत् शब्द के आदि तकार को विकल्प से दडार होता है।^३ यथा—

दाव, ताव < तावत्—विकल्प से तकार को द तथा हलन्त्य त् का छोप।

(५) शौरसेनी में थ के स्थान पर विकल्प से ध होता है।^४ यथा—

कधं < कथम्—थ के स्थान पर विकल्प से ध।

कधेदि < कथयति— ” ”

कधिदं < कथितम्— ” ”

१. तो दोनादी शौरसेन्यामयुक्तस्य ८।४।२६० हे०। २. अघ. कश्चित् ८।४।२६१।
३. बादेस्तावति ८।४।२६२ हे०। ४. थो ध. ८।४।२६७।

नाधो, नाहो < नावः—ध के स्थान पर विकल्प से ध और विकल्पाभाव में—
ध को ह हुआ है ।

राजपधो, राजपहो < राजपध —

(६) शौरसेनी में इन्नन्त शब्दों से आमन्त्रण—सम्बोधन की प्रथम विभक्ति के पुरुषचन में विकल्प से इन् के न का आकार होता है । यथा—

भो कञ्जुहभा < भो कञ्जुकिन् ।

सुहिभा < सुहिन् ।

अन्यत्र—भो तपस्सि < भो तपस्विन्

भो मणस्सि < भो मनस्विन्

(७) शौरसेनी में नकरान्त शब्दों में सम्बोधन पुरुषचन में विकल्प से न् के स्थान पर अनुस्वार होता है । यथा—

भो राथं < भो राजन्—ज का लोप, अ स्वर शेष और न को थ, न् का विकल्प से अनुस्वार ।

भो विअयवर्मं < भो विअयवर्मन्—जलोप, अ स्वर शेष और न् को अनुस्वार ।

(८) शौरसेनी में भवत् और नगरत् शब्दों में प्रथमा विभक्ति के पुरुषचन में नकार के स्थान पर अनुस्वार हो जाता है । यथा—

पट्टु भवं, समणे भगवं महावीरे ।

(९) शौरसेनी में र्य के स्थान पर विकल्प से व्य आदेश होता है और विकल्पाभाव में ज आदेश होता है । यथा—

अध्यउत्तो, अजउत्तो < आर्यपुत्रः—र्य के स्थान पर व्य तथा विकल्पाभाव में ज और पञ्ज का लोप, उ को त ।

कव्यं, कवं < कार्यन्—र्य को विकल्प से व्य, विकल्पाभाव में ज ।

पद्याकुलो, पद्माकुलो < पर्वाकुलः—, ,

सुप्यो, सुब्बो < सूर्यः—, ,

वज्जपरवसो < कार्यपरवशः—, ,

(१०) शौरसेनी में इह और इ् आदेश के इकार के स्थान में विकल्प से ध होता है । यथा—

इध < इह—इ के स्थान पर ध हुआ है ।

होध < होइ—भवथ—, ,

परिचायध < परिचायह—परिचायध्वे—प्र को त और ह को ध ।

१. भा आमन्त्र्ये सौ वेनो न. दा४।२६३ ।

२. मो वा दा४।२६४ ।

३. भवद्भवतो दा२।२६५ ।

४. न वा र्यो व्य दा४।२६६ ।

५. इह-सोहंस्य दा४।२६८ ।

(११) शौरसेनी में भू धातु के हकार को विकल्प से भ आदेश होता है ।^१
यथा—

भोदि, होदि < भवति—प्राकृत में भू के स्थान पर हो आदेश होता है, शौरसेनी में विकल्प से भू के स्थान पर भ हुआ है ।

(१२) शौरसेनी में पूर्व शब्द के स्थान पर विकल्प से 'पुरव' आदेश होता है ।^२
यथा—

अपुरव नाड्यं < अपूर्व नाड्यम्—पूर्व के स्थान पर पुरव आदेश हुआ है ।

अपुरवागदं, अपुव्यागदं < अपूर्वागतम्— " "

(१३) शौरसेनी में इत् और पृत् के पर में रहने पर अन्त्य मकार के आगे णकार का विकल्प से आगम होता है ।

(१४) शौरसेनी में इदानीम् के स्थान पर दाणि आदेश होता है ।^३ यथा—
अनन्तर करणीयं दाणि आणेवद् अट्यो ।

प्राकृत—महाराष्ट्री प्राकृत में भी इदानीम् के स्थान पर दाणि आदेश होता है ।

(१५) शौरसेनी में तस्मात् के स्थान पर ता आदेश होता है ।^४ यथा—

ता जाव पविसामि < तस्मात् तावत् प्रविसामि ।

ता अलं पृदिणा माणेण < तस्मात् अलं पृत्तेन मानेन ।

(१६) शौरसेनी में इत् और पृत् के पर में रहने पर अन्त्य मकार के णकार का आगम विकल्प से होता है ।^५ यथा—

जुत्तं णिमं, जुत्तमिमं—इकार के पर में रहने से ।

सरिसं णिमं, सरिसमिमं— " "

ऋणेदं, किमेदं—एकार के पर में रहने से

एवं णेदं, एवमेदं— " "

(१७) शौरसेनी में एव के अर्थ में व्येव निपात से सिद्ध होता है ।^६ यथा—

मम व्येव वम्भणस्स; सो व्येव पत्तो—एव के स्थान पर व्येव ।

(१८) चेटी के आह्वान अर्थ में शौरसेनी में हजे इस निपात का प्रयोग होता है ।^७ यथा—

हजे चटुरिके ।

१. शुबो मः ८।४।२६६ ।

२. पूर्वस्य पुरव. ८।४।२७० ।

३. इदानीमो दाणि ८।४।२७७ हे० ।

४. तस्मात्ता. ८।४।२७८ ।

५. मोन्तपत्तणो वेदतोः ८।४।२७६ ।

६. एवार्थे व्येव ८।४।२८० ।

७. हजे चेट्याह्वाने ८।४।२८१ ।

तृ०	तइया	ण, णं	हि, हिं
च०	चउत्थी	स्स, आय	ण, णं
पं०	पंचमी	अट्टु, आदो	आदो, चो, हिंतो, सुंतो, हि
प०	छट्ठी	स्स	ण, णं
स०	सत्तमी	त्ति, म्मि	सु, सुं

वीर शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	वीरो	वीरा
वी०	वीरं	वीरे, वीरा
त०	वीरेण, वीरेण्	वीरेहिं, वीरेहिं
च०	वीराय, वीरस्स	वीराणं, वीराण
प०	वीरादो, वीराट्टु	वीरादो, वीराहिंतो, वीरासुंतो, वीरेहिंतो, वीरेसुंतो
छ०	वीरस्स	वीराण, वीराणं
स०	वीरंत्ति, वीरम्मि	वीरेसु, वीरेसुं

इसी प्रकार सभी आकारान्त शब्दों के रूप बनते हैं ।

इकारान्त और उकारान्त शब्दों के विभक्ति चिन्ह

	एकवचन	बहुवचन
प०	दीर्घ	अउ, अउो, णो
वी०	अनुस्वार	णो, दीर्घ
त०	णा	हि, हिं
च०	णो, स्म	ण, णं
प०	दो, ट्टु	चो, ओ, उ, हिंतो, सुंतो
छ०	णो, स्स	ण, णं
स०	त्ति	सु, सुं

शौरसेनी में इति < ष्टिपि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	इथी	इसउ, इसउो, इसिणो
वी०	इत्ति	इसिणो, इथी
त०	इसिणा	इसीहिं, इसीहिं

एअ < एतद्

	एकवचन	बहुवचन
प०	एत्, एत्तो	एदे
वी०	एदं	एदे, एदा
त०	एदेश, एदेणं, एदिणा	एदेहि, एदेहिं
च०	एदस्स	एदेस्सि, एदाण, एदाणं
प०	एदाद्दु, एदादो	एअत्तो, एआओ, एआहिंतो, एआसुंतो
छ०	एदस्स	एदेस्सि, एदाण, एदाणं
स०	एत्थ, अयम्मि, ईअम्मि एअम्मि, एअंस्सि	एएसु, एएसुं

क्रियारूप

(३५) शौरसेनी में ति के स्थान पर दि और ते के स्थान पर दे, दि आदेश होते हैं ।

(३६) शौरसेनी में भविष्यत् अर्थ में विहित प्रत्यय के पर में रहने पर स्ति होता है । भविस्सिदि, करिस्सिदि, गच्छिस्सिदि, आदि ।

(३७) शौरसेनी में भूधातु के स्थान पर भो आदेश होता है । यथा—भोवि ।

(३८) शौरसेनी में तिङ् के पर में रहने पर दा धातु के स्थान में दे आदेश होता है और भविष्यत् में दइस्स होता है ।

(३९) शौरसेनी में कृन् धातु के स्थान में कर आदेश होता है । यथा करेमि ।

(४०) शौरसेनी में तिङ् के पर में रहने पर स्था धातु के स्थान में चिद आदेश होता है ।

(४१) शौरसेनी में स्मृ, दृश और अग धातुओं के स्थान में क्कमः सुमर, पेक्क और अच्च आदेश होते हैं ।

(४२) तिप् के साथ अस् धातु के सकार के स्थान में स्थि आदेश होता है ।

(४३) भविष्यत्कारण में निप् सहित अस् के स्थान में विकल्प से स्स् आदेश होता है । विकल्पाभाव में धातु के स्वर का दीर्घ भी होता है । स्स्, आस्स् आदि ।

(४४) बहुवचन में सकार का घकार भी होता है ।

(४५) उत्तम पुरुष में न्ह होता है तथा निप् के स्थान पर स्सन् होता है ।

वर्तमान में शौरसेनी के धातु प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष (Third Person)	दि, दे	न्ति, न्ते, इरे
मध्यम पुरुष (Second Person)	सि, से	इत्था, घ, इ
उत्तम पुरुष (First Person)	मि	मो, मु, म

शौरसेनी के भविष्यत्काल के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	(1 st Person) स्विदि, स्विदे	स्विति, स्विते, स्विदरे
म० पु०	(2 nd Person) स्विति, स्विते	स्विद, स्विध, स्विद्वत्था
उ० पु०	(3 rd Person) स्वन्, स्वन्मि	स्विमो, स्विमु, स्विम

भूतकाल, आज्ञा एवं रिधि में प्राकृत के समान ही प्रत्यय होते हैं।

हस् धातु के रूप

वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसदि, हसेदे	हसन्ति, हसते, हसिरे, हसदरे
म० पु०	हससि, हससे	हसिथा, हसध, हसद
उ० पु०	हसमि, हसेमि	हसमो, हसमु, हसम, हसिमो, हसिमु, हसिम, हसिमो, हसंसु, हसंस

भविष्यत्काल—भण

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भणिसिदि, भणिसिदे भणिसिदे, भणिसिदे	भणिसिति, भणिसिते, भणिसिते भणिसिते, भणिसिदरे, भणिसिदरे
म० पु०	भणिसिति, भणिसिते	भणिसिद, भणिसिध, भणिसिद्वत्था
उ० पु०	भणिसिन्, भणिसिमि	भणिसिमो, भणिसिमु, भणिसिम

अन्य सभी धातुओं के रूप इस और भण के समान होते हैं।

कृत् प्रत्यय

(४६) शौरसेनी में क्त्वा प्रत्यय के स्थान पर इय, वृण और त्वा प्रत्यय होते हैं। यथा—

इय—

भृ + क्त्वा—इय = भविय < भूत्वा

इविय < भूत्वा

पठ + इय = पठिय < पठित्वा

दूण—

भू + दूण = भोदूण < भूत्वा

हो + दूण = होदूण < भूत्वा

पठ + दूण = पठिदूण < पठित्वा

त्ता—

भू + ता = भोत्ता < भूत्वा

हो + ता = होत्ता < भूत्वा

पठ + ता = पठित्ता < पठित्वा

(४७) शौरसेनी में कृ और गम् धातुओं से पर में आनेवाले क्तया प्रत्यय के स्थान में विकल्प से अहुअ आदेश होता है और धातु के रि का लोप होता है। यथा—

कृ + क्त्वा = क + अहुअ (दि—अ का लोप) = कहुअ < कृत्वा ।

गम् + क्त्वा = गम् + अहुअ (रि—अम् का लोप) = गहुअ < गत्वा ।

विकल्पाभाव पक्ष में कृ—कर + इय = करिय < कृत्वा ।

कर + दूण = करिदूण; कर + ता = करित्ता ।

गम्—गच्छ + इय = गच्छिय; गच्छ + दूण = गच्छिदूण ।

(४८) अवशेष कृदन्त रूपों में त के स्थान पर द कर दिया जाता है। यथा—

भू + तव्यं—हो + तव्यं = होदव्यं < भवितव्यम् ।

कुछ शौरसेनी धातु

संस्कृत	शौरसेनी	क्रियारूप
भू	भो या हो	भोदि, होदि
इस्	पेच्छ	पेच्छदि
वू	बुच्च	बुच्चदि
फथ	कथ	कथेदि
घ्रा	जिग्घ	जिग्घदि
भा	भाअ	भाअदि
सृज्	फुस	फुसदि
घूर्ण	घुम्म	घुम्मदि
खु	धुण	धुणादि
भी	भा	भादि
सृज्	पस	पसदि
चर्व	चप्व	चप्वदि

मद्	गेण्ड	गेण्डदि
गृह	गेज्झ, गेप्प	गेज्झदि, गेप्पदि
शक	सस्कुण, सक्क	सस्कुणदि, सक्कदि
म्लै	मिआअ	मिआअदि
उद् + स्था	उत्थ	उत्थेदि
स्वप्	सुअ	सुअदि
शीङ्	सुआ	सुआदि
रुध्	रोव	रोवदि
रुद्	रोद	रोददि
मस्ज	वुड्ढ	वुड्ढदि
दुह्य	दुहीअ	दुहीअदि
वह्य	वहीअ	वहीअदि
लिय	लिहीअ	लिहीअदि

वद्धित, समास, कारक आदि सभी अनुशासन शौरसेनी में प्राकृत के समान ही होते हैं। वर्णपरिवर्तन के नियम भी शौरसेनी में प्राकृत के समान ही हैं। केवल त का द और थ का ध होना ही शौरसेनी की विशेषता है।

जैनशौरसेनी

नाटकीय शौरसेनी से भिन्न होने के कारण प्रचनसार, कार्तिकेयानुप्रेक्ष, गोम्मट-सार, समथसार आदि ग्रन्थों की भाषा को पृथक् भाषा माना गया है। इस भाषा की मूलप्रवृत्ति शौरसेनी की होने पर भी इसके ऊपर प्राचीन अर्धमानधी का प्रभाव है। जैनशौरसेनी का साहित्य नाटकों की अपेक्षा पुरातन है। पदखण्डागम के मूल सूत्र भी जैनशौरसेनी में लिखे गये हैं। बुन्दकुन्दाचार्य और स्वामिकार्तिकेय ईस्वी प्रथम शताब्दी के विद्वान् हैं। अतः हमारा अनुमान है कि जैन शौरसेनी का विकसित और परिपक्व रूप ही नाटकीय शौरसेनी है। यही कारण है कि नाटकीय शौरसेनी में जैन शौरसेनी की अनेक प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं। कुछ विद्वान् शौरसेनी के इस भेद को स्वीकार नहीं करते, पर हमारे विचार से यह नाटकीय शौरसेनी की अपेक्षा भिन्न है। जैनशौरसेनी की निम्न प्रमुख विशेषताएँ हैं।

(१) त के स्थान पर द और थ के स्थान पर ध का होना । यथा—

विगदरागो < विगदरागः — त के स्थान पर द (प्र० सा० गा० १४)

संजुदो < संजुतः — " " " "

रदिया < रदिता—	र के स्थान पर य	(रसा० का० गा० १२८)
पडिथ्य < पडितम्—	” ”	(रसा० का० गा० ३९०)
ध = ध—तधप्पदेया < तध्याप्रदेया—	ध के स्थान पर ध	(प्र० सा० गा० १३०)
जध < य गा—	” ”	(प्र० सा० गा० १३७)
तथा < त गा—	” ”	(प्र० सा० गा० १४६)
वाध < वाथ—	” ”	(प्र० सा० गा० १६३)
वाजधा < अय गा	” ”	(प्र० सा० गा० ८९)
कथं < क म्—	” ”	(प्रव० सा० गा० २७, ११३, १०६)

(३) जैौ शौरसेनी में आँमागधी के समान क के स्थान पर ग भी होता है ।
यथा—

वेदग < वेदक—	क के स्थान पर ग	(प्र० प्र० सं०)
पुग < पुक—		
समं < स्वकं—	” ”	(प्र० सा० गा० ६५)
पुगतोण < पुकातेन—	” ”	(प्र० सा० गा० ६६)
थोगप्पमंदि < थायात्मके—	” ”	(प्र० सा० गा० ७३)
सागातो < साकारः—	” ”	(गो० सा० जी० गा० ७)
वाजगातो < अनाकार—	” ”	” ”
उत्तसामगे < उत्तशामके—	” ”	(गो० सा० जी० ६६)
दपगे < क्षपणे—	” ”	” ”
पुगविगळे < पुकविगळे—	” ”	(गो० सा० जी० ७१)
पेदगा < पेदकाः—	” ”	(गो० सा० जी० ९३)

(४) जैौ शौरसेनी में क के स्थान पर क और व भी पाये जाते हैं । हमसे यह
ज्ञि भी अर्धमागधी से मिलती-जुलती है ।

क = क

संतोसकरं < स-तोपकरं	(रसा० का० गा० ३३६)
चिरकातं < चिरकातं—	(रसा० का० गा० २६३)
मणवदकावदि < मनोयचनकावैः	(रसा० का० गा० ३३२)
अणुरत्तं < अनुत्तं	(रसा० का० गा० ४६९)
ओमकोट्टाप < अकमकोट्टपा	(गो० सा० जी० गा० १३२)
हीणरुमं < हीनरुमम्	(गो० सा० जी० गा० १७९)
एकसमवदि < एत्तसमये	(प्र० सा० गा० १४२)

क = य

सामाह्वयं < सामायिकम् (स्वा० का० गा० ३७२)

कम्मविवायं < कर्मविषाकं (स्वा० का० गा० ३७२)

सुहयरो < सुखकरः (स्वा० का० गा० ३७२)

नेरइपा < नैरयिकाः (गो० सा० जी० ६३)

वियसिदिपेसु < विस्लेन्द्रियेषु (गो० सा० जी० ८९)

एययिलम्पा < एयविकलाक्षाः (गो० सा० जी० ९०)

गाहया < ग्राहकाः (गो० सा० जी० १७३)

पत्तेयं < प्रत्येकं (गो० सा० जी० १८४)

ओराळियं < औसालिकं (गो० सा० जी० १८४)

क = अ—स्वरशेष

अलिअं < अलीकं (स्वा० का० गा० १०६)

आलोओ < आलोकः (स्वा० का० गा० ३४४)

नरए < नरके (प्र० सा० गा० ११४)

पज्जयट्टिण < पर्यावार्थिकेन (प्र० सा० गा० ११४)

पेउच्चिओ < वैक्रियिकः (प्र० सा० गा० १७१)

(५) जैन शौरसेनी में मध्यवर्ता क, ग, घ, ज, त, द, और प का लोप विकल्प से पाया जाता है। अथवा यों कह सकते हैं कि इनका लोप अनियमित रूप से पाया जाता है। यथा—

सुयकेवलिसिणो < धृतकेवलिनमृषयः (प्र०सा०गा० ३३)—उकार का लोप और अवशिष्ट स्वर के स्थान पर य भ्रुति।

लोपउदीयरा < लोकप्रदीपकरा—उकार का लोप और अवशिष्ट स्वर के स्थान में य भ्रुति। (प्रवचनसार गा० ३६)

यपणेहि < यपनीः (प्र० सा० गा० ३४)—उकार का लोप अवशिष्ट स्वर के स्थान पर य भ्रुति।

सयजं < सयलम् (प्र०सा०गा० ६१)—फ या लोप और अवशिष्टस्वर के स्थान पर य भ्रुति।

उरओगो < उपयोगः (प्र० सं० गा० ४)—प के स्थान पर व।

पट्टुनेपा < पट्टुनेदा (प्र० सं० गा० ३६)—उकार का लोप और अवशिष्ट स्वर के स्थान पर य भ्रुति।

गुदाव < गुभागुः (प्र० सं० गा० ३८)—उकार का लोप और उ स्वर लोप।

सापारं < सपारं (प्र०सं०गा० ४२)—उकार का लोप और अवशिष्ट भा स्वर के स्थान पर य भ्रुति।

(६) जैन शौरसेनी में महाराष्ट्री के समान ही मध्यवर्ती व्यञ्जन का लोप होने पर अवशिष्ट अ या आ स्वर के स्थान में ही य ध्रुति पायी जाती है। यथा—

तित्थयरो < तीर्थङ्कर.—यहाँ क का लोप होने पर अवशिष्ट अ स्वर के स्थान में ही य ध्रुति हुई है।

पयत्थ < पदार्थः—दकार का लोप और अवशिष्ट आ स्वर के स्थान में य ध्रुति।

वेयणा < वेदना—दकार का लोप और अवशिष्ट अ के स्थान में आ को य ध्रुति।

आहारया < आहारका—ककार का लोप और अवशिष्ट आ को य ध्रुति।

(७) उ के, पश्चात् लुप्त वर्ण के स्थान में वहुधा व ध्रुति पायी जाती है। यथा—

बालुया < बालुका—ककार का लोप और अवशिष्ट आ स्वर के स्थान में व ध्रुति।

बहुवं < बहुकं—ककार का लोप और अवशिष्ट स्वर के स्थान में व ध्रुति।

विह्व < विधूत—तकार का लोप और अवशिष्ट स्वर के स्थान में व ध्रुति।

(८) जैन शौरसेनी में महाराष्ट्री के समान प्रथमा विभक्ति के एकवचन में ओ और अर्धमागधी के प्रभाव के कारण सप्तमी के एकवचन में म्मि और म्मि विभक्ति चिह्न पाये जाते हैं। षष्ठी और चतुर्थी के बहुवचन में सि प्रत्यय जोड़ा जाता है। पञ्चमी के एकवचन में शौरसेनी के समान आदो, आदु प्रत्ययों का योग पाया जाता है।

द्वसहावो < द्वस्वभावः.—प्रथमा के एकवचन में ओ प्रत्यय जोड़ा गया है।

सद्विसिट्टो < सद्विशिट्टः— " "

एकसमयम्हि < एकसमये—(प्र० सा० गा० १४२)—सप्तमी के एकवचन में म्मि प्रत्यय जोड़ा गया है।

एगम्हि < एरुम्मिन् (प्र० सा० गा० १४३)—सप्तमी के एकवचन में म्मि प्रत्यय जोड़ा गया है।

अणदवियम्हि < अणद्वये (प्र० सा० गा० १५९)— " "

सुदम्मि < सुभे (प्र० सा० गा० ७९)—सप्तमी के एकवचन में म्मि प्रत्यय जोड़ा गया है।

चरियम्हि < चरिके (प्र० सा० गा० ७९)—सप्तमी के एकवचन में म्मि प्रत्यय जोड़ा गया है।

गठमम्मि < गर्भे (स्वा० का० गा० ७४)—सप्तमी के एकवचन में म्मि प्रत्यय जोड़ा गया है।

ससरुवम्मि < स्वस्वरूपे (स्वा० का० गा० ४८३)—सप्तमी के एकवचन में म्मि प्रत्यय जोड़ा गया है।

जोगम्मि < योगे (स्वा० का० गा० ४८४)— " "

पुक्मिन्, पुक्मिद्ध, लोपमिन्, लोपमिद्ध, जैसे वैकल्पिक प्रयोग भी जैन शौरसेनी में पाये जाते हैं।

तेसिन् < तेभ्यः (प्र० सा० गा० ८२) चतुर्था के वटुप्रत्यय में सि प्रत्यय जोड़ा गया है।

सर्वोसिन् < सर्वेषाम् (स्वा० का० १०३) षष्ठी के चतुर्प्रत्यय में सि प्रत्यय जोड़ा गया है।

(९) कृ धातु का रूप जैन शौरसेनी में कुब्बदि भी मिलता है। इसका प्रयोग स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा गा० ३१३, ३२९, ३४०, ३५७, ३८४ आदि में देखा जाता है।

(१०) स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा और प्रवचनसार में शौरसेनीके समान वरेदि का भी निम्न गाथाओं में प्रयोग मिलता है। यथा स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा—गा० ६१, २२६, २९६, ३२०, ३२, ३५०, ३६९, ३७८, ४२०, ४४०, ४४९ और ५५१। प्रवचनसार में गा० १८५ में करेदि रूप आया है।

(११) जैन शौरसेनी में महाराष्ट्री के समान कृ धातु के रूप कुणेदि और कुणइ रूप भी निम्न गाथाओं में पाये जाते हैं। यथा—

कुणेदि—स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा गा० १८२, १८८, २०९, ३१९, ३७०, ३८८, ३८९, ३९६ और ४२०। प्रवचनसार में गाथा ६६ और १४९ में कुणादि क्रिया व्यवहृत की गयी है।

स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा में गा० २०९, २२७, २८५ और ३१० में कृ धातु के कुणइ रूप का व्यवहार पाया जाता है।

जैन शौरसेनी में कृ धातु का करेइ रूप भी मिलता है। स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा गा० २२५ में यह रूप आया है।

(१२) जैन शौरसेनी में क्त्वा के स्थान में च्वा का व्यवहार होता है। यथा—
जाण + च्वा = जाणिच्वा, यियाण + च्वा = यियाणिच्वा।

णयस + च्वा = णयसिच्वा, पेच्छ + च्वा = पेच्छिच्वा।

(१३) जैन शौरसेनी में क्त्वा के स्थान पर य भी पाया जाता है। यथा—
भवीय (प्रवचनसार गा० १२), संस्कृत के लाटृक्त्वा के स्थान पर आपिच्छ रूप आया है। गहियन् < गृह्यीत्वा (स्वा० का० गा० ३७३)।

(१४) स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा में क्त्वा के स्थान पर च्वा का व्यवहार मिलता है। यथा—क्रिच्वा < कृत्वा, ठिच्वा < ठिक्त्वा।

शौरसेनी प्राकृत के कृष्ण और महाराष्ट्री के ऊण प्रत्यय भी संस्कृत के क्त्वा के स्थान में जैन शौरसेनी में पाये जाते हैं। यथा—गमिऊण (गोम्मन्मार गा० ५०),

मागधी

(१) मागधी की प्रकृति शौरसेनी मानी गयी है । साधारण प्राकृत भी मागधी का मूल मानी जा सकती है ।

(२) मागधी में अकारान्त पुलिङ्ग शब्दों के प्रथमा के एकवचन में ओकारान्त रूप न होकर एकारान्त होते हैं^१ । यथा—

एशे मेशे < एप मेप*, एशे पुलिशे < एप पुरप., करोमि भन्ते < करोमि भदन्त ।

(३) मागधी में रेफ के स्थान पर लजार और दन्त्य सकार के स्थान पर तालव्य शकार होता है^२ । यथा—

गळे < नरः— २ के स्थान पर ल और विसर्ग को एत्व

कळे < करः — ” ”

बिआळे < बिचारः— ” ”

हंशे < हंसः — दन्त्य के स्थान पर तालव्य श और विसर्ग को एत्व

शालशे < सारसः—आद्यन्त दन्त्य स के स्थान पर तालव्य श और रेफ को ल

शुदं < भुतम्—शुदं—दन्त्य स को तालव्य श और शौरसेनी के समान त को द ।

शोभणं < सोदणं < शोभनम्—

(४) मागधी में यदि सकार और पकार—अलग अलग संयुक्त हों तो उनके स्थान में स होता है । शीघ्र शब्द में उक्त आदेश नहीं होता^३ । यथा—

पत्रलद्वि हस्ती < प्रस्त्रलति हस्ती—यहाँ स् और त संयुक्त हैं, अतः संयुक्त स के स्थान पर तालव्य श नहीं हुआ ।

बुदस्परी < घृदस्पति.—संयुक्त स् को तालव्य श नहीं हुआ और दन्त्य स ज्यों का त्यों बना रहा ।^१

१. अत एत्सौ वृत्ति मागध्याम् ८।४।२८७ ।

२. २-छोतं-शी ८।४।२८८ ।

३. स-पोः संयोगे खोऽप्रोप्ये ८।४।२८९ ।

मस्फली < मस्फरी—संयुक्त स ज्यों का त्यों और रेफ को छट्ट ।

सुस्नदालुं < सुस्फदासं—प् और क संयुक्त हैं, अतः संयुक्त मूर्धन्य प् के स्थान पर साख्य श न होकर दन्त्य स हो गया है और रेफ को छ हुआ है ।

करटं < कष्टम्—संयुक्त मूर्धन्य प के स्थान पर दन्त्य स हुआ है ।

बिस्नुं < विष्णुम्— " "

निस्फलां < निष्फलम्— " "

धनुस्खंडं < धनुषखण्डम्— " "

गिन्धुवाशले < ग्रीष्मयासरः—ग्रीष्म शब्द में उक्त निपन सामू नहीं हुआ है ।

(५) द्विरुक्त ट (ट्ट) और पकार से युक्त ठकार के स्थान पर मागधी में ट आदेश होता है, यथा—

पस्ते < पट्टः—ट्ट के स्थान में स्त ।

भस्पालिना < भट्टारिना—ट्ट के स्थान में स्त और रेफ के स्थान में छ ।

सुस्तु कदं < सुस्तु कट्टम्—त के स्थान श, ट्टु के स्थान पर स्त तथा ककारगेतर ऋकार के स्थान पर अ एवं त के स्थान पर द ।

कोस्त्रागालं < कोष्टागारम्—ष्ट के स्थान पर स्त और र के स्थान पर छ हुआ ।

(६) स्थ और र्थ इन दोनों वर्णों के स्थान में मागधी में सकार से संयुक्त वकार होता है, यथा—

उवसित्थे < उपस्थितः—प के स्थान पर व, स्थि के स्थान पर रित तथा त के स्थान पर द और विसर्ग को प्लव ।

सुस्तिदे < सुस्थितः—दन्त्य स के स्थान पर साख्य श, स्थ के स्थान पर स्त, त के स्थान पर द और विसर्ग को प्लव ।

अस्तवद्दी < अर्थवती—र्थ के स्थान में स्त और त स्थान पर द होता है)

शस्तवादे < सार्थवाद्—दन्त्य स के स्थान पर श, र्थ के स्थान पर स्त और विसर्ग को प्लव ।

(७) मागधी में ज, च और य के स्थान में थ आदेश होता है, यथा—

यणवेदे < जनपदः—ज के स्थान पर य और प के स्थान पर व हुआ है ।

अय्युणे < अर्जुनः—र्जु के स्थान पर य्यु और न के स्थान पर ण ।

याणादि < जानाति—ज के स्थान पर य, न को ण और त के स्थान पर द ।

मय्यिदे < मर्जितः—र्ज के स्थान पर य्य और त को द, विसर्ग को प्लव ।

१. ट्ट-ट्टोत्तः ८।४।२६० ।

२. स्थ-थ्योत्तः ८।४।२६१ ।

३. ज-द्य-या यः ८।४।२६२ ।

दुय्यणे < दुज्जणे < दुर्जनः — र्ज के स्थान पर य्य और न को ण ।

वच्चिदे < वर्जितः — ” ” त को द और विचर्ग को एत्त ।

मय्यं < मयम् — य के स्थान में य्य ।

अय्य किल विद्यादळे आगदे < अच्च किल विद्याधर आगतः ।

यादि < यादि — य के स्थान पर य ।

(८) मागधी में न्य, ण्य, ज्ञ और ञ्ज इन संयु-नाक्षरों के स्थान पर द्विरक्त ञ्ज होता है ।^१ यथा—

अहिमञ्जुकुमाळे — अभिमन्जुकुमारः — न्य के स्थान पर ञ्ज ।

कञ्जकावलणं < कन्यकावरणम् — न्य के स्थान पर ञ्ज; र को ल ।

अयन्दृञ्जं < अमल्लण्यम् — ण्य के स्थान पर ञ्ज आदेश ।

पुञ्जार्हं < पुण्याहम् — ण्य के स्थान पर ञ्ज ।

पञ्जाविशाले < प्रज्ञाविशालः — ज्ञ के स्थान पर ञ्ज ।

शञ्ज्जे < सर्ज्जः — दन्त्य स के स्थान पर श और ज्ञ के स्थान ञ्ज ।

अवञ्जा < अवजा — ज्ञ के स्थान पर ञ्ज ।

अञ्जली < अञ्जलिः — ञ्ज के स्थान पर ञ्ज ।

धणञ्जपु < धनञ्जयः — ञ्ज के स्थान पर ञ्ज ।

एञ्जळे < एञ्जरः — ” ” शौर रेफ को एत्त ।

(९) मागधी में अनादि से वर्तमान छ के स्थान में शरार संयुक्त घ (ध) होता है ।^२ यथा—

गध < गछउ — 'छ' के स्थान पर ध ।

उधलदि < उछउत्ति — छ के स्थान पर ध और त को द ।

तिरधि वेच्छदि < तिरिच्छिउ पच्छइ < तिर्यक् प्रेक्षते — छ के स्थान पर ध और क्ष के स्थान पर र्क, त को द ।

भावन्नवधळे < भापन्नपरसलः — छाक्षणिक होने से त्त के स्थान पर भी ध आदेश ।

(१०) मागधी में धनादि में वर्तमान क्ष के स्थान पर जिदाम्-नीव × क आदेश होता है ।^३ यथा—

य×के < यक्षः — क्ष के स्थान पर × क आदेश और विसर्ग को एत्त ।

छ × फने < राक्षमः — रेफ के स्थान पर छ, अनियमित दृश्य, क्ष के स्थान पर × फ, दन्त्य स के स्थान पर ताल्ज्य श और विसर्ग को एत्त ।

१. न्य-एय-ज्ञ-ञ्जो ञ्जः वा. १. २. २३ ।

२. धाय धोवापी वा. १. २. २५ ।

३. धस्य × फः वा. १. २. २६ ।

(११) मागधी में प्रेक्ष और आचक्ष के स्थान पर स्क आदेश होता है ।^१ यथा—
पेस्कदि < प्रेक्षते—संयुक्त रेफ का लोप होने से प्र के स्थान पर प, स के स्थान पर
स्क तथा स को व । मागधी में ति और ते इन दोनों के स्थान पर दि आदेश होता है ।

(१२) मागधी में हृदय शब्द के स्थान पर हृदक आदेश होता है ।^२ यथा—
हृदके आलळे मम < हृदये आदरो मम—हृदय के स्थान पर हृदके आदेश, तथा
व और र के स्थान पर ल, प्रथमा पुरुषचन में रिभक्ति ए का संयोग ।

(१३) मागधी में अस्मद् शब्द को प्रथमा पुरुषचन में सु रिभक्ति में हके, हगे
और अहके ये तीन आदेश होते हैं ।^३ यथा—

हके, हगे, अहके भगामि < अहं भगामि ।

(१४) मागधी में शृगाल शब्द के स्थान पर शिआल और शिआलक आदेश
होते हैं ।^४ यथा—

शिआळे आअळट्ठि, शिआलके आअळट्ठि < शृगाल आगळट्ठि ।

शब्दरूपों के नियम

(१५) मागधी में प्रथमा पुरुषचन में एस्त्र होता है । यथा—पुलिजे < पुरुषः ।

(१६) मागधी में अर्ण से पर में आनेवाले टल्—पठी के एस्त्रचन के स्थान
में विकल्प से आह आदेश होता है । आह के पूर्ववर्ती टि का लोप होता है ।^५ यथा—
हगे न ईदिसाह कम्महा काली < अहं न ईदिसस्य कर्मणः कारी; भगदत्त-सोणि-
दाह कुंभे; पक्ष में—भीमयोगस्स परचादो हिण्ठीअदि ।

(१७) मागधी में अर्ण से पर में विद्यमान आम् के स्थान में विरुप से आह
आदेश होता है और पूर के टि का लोप हो जाता है ।^६ यथा—

आहँ—येवाम्; विरुपवाभाउ से—यानं < येवाम् ।

(१८) मागधी में अहम् और वयं के स्थान पर हगे आदेश होता है ।^७ यथा—
हगे शकावदालतिस्वनिवाशी धीउले < अहं शक्रायतारकीर्थनिरासी धीवरः ।

(१९) मागधी में अकारान्त शब्दों को सु पर रहते ह, ए होते हैं और सु का
लोप होता है ।^८ यथा—

एसि लाभा < एप राजा—यहाँ ए को श और अकार को इकार ।

एजे पुलिजे < एप पुरुषः—एस्त्र होने से एजे होता है ।

१. स्कः प्रेक्षाचक्षोः ८।४२६७ ।

२. हृदस्य हृदकः ११।६ वर० ।

३. अस्मदः सौ हके-हगे-अहके ११।६ वर० ।

४. शृगालशब्दस्य शिआलाशिआलकाः ११।१७ पर० ।

५. अर्णोऽदि उतो डाहः ८।४।२६६ हे० । ६. मामो डाहँ वा ८।४।३०० हे० ।

७. अहं वयमोहगे ८।४।३०१ हे० ।

८. अत इदेती सुम् ११।१० व० ।

(२०) इस अकारान्त शब्द के अन्तिम अकार को सम्बुद्धि पर रहते दीर्घ होता है । यथा—

पुलिशा आगच्छ < हे पुरुष आगच्छ—सम्बोधन होने से अकार को दीर्घ ।

माणसा आगच्छ < हे मानुष आगच्छ " "

विभक्तिचिह्न

	एकवचन	बहुवचन
पदमा	प	भा
बीआ	अनुरवार	भा
सइआ	ण, णं	दि, दिं, दिं
चउत्थी, छट्ठी	इ, स्स	इं, ण, णं
पंचमी	आदो, आदु	ओ, ओ, उ, दि, दिन्तो, मुंतो
सत्तमी	सि, म्मि	शु, शुं

वील—वीर शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पदमा	वीले	वीला
बीआ	वीलं	वीला
सइया	वीलेण, वीलेणं	वीलेदि, वीलेदिं, वीलेदिं
चउत्थी	वीलाह, वीलस्स	वीलाहं, वीलाण, वीलाणं
पंचमी	वीलादो, वीलादु	वीलओ, वीलओ, वीलउ, वीलादिन्तो, वीलाशुन्तो
छट्ठी	वीलाह, वीलस्स	वीलहं, वीलाण, वीलाणं
सत्तमी	वीलंसि, वीलम्मि	वीलेशु, वीलेशुं
संबोधन	हे वीले	हे वीला

अन्य अकारान्त शब्दों के रूप भी वील शब्द के समान होते हैं ।

चतुसक लिङ्ग में शौरसेनी के समान ही शब्दरूप धनते हैं ।

सर्वनामवाची शब्द मागधी में वील < वीर के समान होंगे । यहाँ उदाहरण के लिए कुछ शब्द रूप प्रस्तुत किये जाते हैं ।

शब्द < सर्व के शब्दरूप

	एकवचन	बहुवचन
पदमा	शब्धे	शब्धा
बीआ	शब्धं	शब्धा

तइया	शब्धेण, शब्धेणं	शब्धेहि, शब्धेहिं, शब्धेहिँ
चउत्थी	शब्धाह, शब्धस्स	शब्धाहँ, शब्धाण, शब्धाणं
पंचमी	शब्धादो, शब्धादु	शब्धचो, शब्धभो, शब्धउ, शब्धाहित्तो, शब्धाशुन्तो
छट्ठी	शब्धाह, शब्धस्स	शब्धाहँ, शब्धाण, शब्धाणं
सप्तमी	शब्धंसि, शब्धम्मि	शब्धेशु, शब्धेषुं
संवोहण	हे शब्धे	हे शब्धा

त, थ तत् शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	थे	ते, जे
थी०	थं, थं	ते, ता, जे, णा
त०	तेण, तेणं, तिणा जेण, जेणं	तेहि, तेहि, तेहिँ, जेहि, जेहि, जेहिँ,
च०	ताह, तस्स	ताहँ, तेसि, जेसि, ताणं, साण, णाण, णाणं
प०	तादो, तादु	तत्तो, ताओ, ताउ, ताहि, तेहि, ताहित्तो, तेहित्तो, ताशुंतो, तेशुंतो णत्तो, णाओ आदि
छ०	ताह, तस्स	ताहँ, तेसि, जेसि, ताण, णाण
स०	ताहे, ताआ, तइभा त्तम्मि, तत्तिस, तत्ति, तत्थ, णम्मि, णत्तिस, णत्थ	जेथु, जेथुं

एअ एतद्

	एकवचन	बहुवचन
प०	एजे, एश	एदे
थी०	एवं	एदे, एदा
त०	एदेण, एदेणं, एदिणा	एदेहि, एदेहि, एदेहिँ
च०	ए, एदाद	सि, एदाहँ, एदाण, एदाणं
पं०	एदादु, एदादो	एदत्तो, एदाओ, एदाओ, एदाहि, एदहि, एदाहित्तो, एदहित्तो, एदाशुंतो, एदशुंतो

छ०	धे, एदाइ	शि, एदाई
स०	एत्थ, अयम्मि, ईअम्मि, एअम्मि, एअस्सि	एएशु, एएशुं

इकारान्त और उकारान्त शब्दों के मागधी विभक्ति प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प०	दीर्घ	अउ, अओ, णो०
वी०	अनुस्वार	णो०
त०	णा	हि, हिं, हिँ
च०	ह	हँ, ण
प०	दो, दु	त्तो, ओ, उ, हिन्तो, शुन्तो
छ०	इ	हँ, ण, णं
स०	शि	शु, शुं

इशि < ऋषि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	इशी	इशाउ, इशाओ, इशिणो, इशी
वी०	इशि	इशिणो, इशी
त०	इशिणा	इशीहि, इशीहिं, इशीहिँ
च०	इशिह	इशिहँ, इशीण, इशीणं
प०	इशिदो, इशिदु	इशित्तो, इशिओ, इशीउ, इशिहित्तो, इशीशुन्तो
छ०	इशिह	इशिहँ, इशीण, इशीणं
स०	इशिशि	इशीशु, इशीशुं
सं०	हे इशि, हे इशी	हे इशाउ, हे इशाओ, हे इशिणो

मागधी में इन्-अन्तवाले शब्दों में सम्बोधन एरुवचन में विकल्प से न के स्थान पर अकार आदेश होता है ।

हे वंदिआ, हे दण्डी < इण्डिन्
हे शुदिआ, हे शुदि < सुखिन्
हे तवशिआ, हे तवसि < तपस्विन्

उकारान्त—भाणु शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प०	भाणू	भाणुणो, भाणुओ, भाणउ, भाणू
वी०	भाणुं	भाणुणो, भाणू

त०	भाणुणा	भाणूहि, भाणूहिँ, भाणूहिँ
च०	भाणुइ	भाणुइँ
प०	भाणुदो, भाणुदु	भाणुदो, भाणुदो, भाणुदु भाणूहिँतो, भाणूदुंतो
छ०	भाणुइ	भाणुइँ, भाणूण, भाणूणं
स०	भाणुशि, भाणुमि	भाणुशु, भाणुसुं
सं०	हे भाणु, हे भाणू	हे भाणुणो, हे भाणुओ, हे भाणू

इसी प्रकार यउ, गुलु < गुरु, शाहु, मेलु < मेरु, कालु < कारु, लाहु < राहु आदि उकारान्त शब्दों के रूप बनते हैं। उकारान्त या इकारान्त शब्दों के रूप मागधी की प्रवृत्ति के अनुसार ही वर्णविहित कर बनाने चाहिए। व्यञ्जनान्त या दोष स्वरान्त शब्द प्राकृत की शब्दरूपावली में मागधी की प्रवृत्ति के अनुसार वर्णविहित करने से निष्पन्न होते हैं।

मागधी में प्रथमा, चतुर्थी, पञ्चमी और षष्ठी विभक्ति में ही अन्तर पड़ता है। स्पष्टीकरण के लिए अकारान्त पितृ शब्द के रूप भी दिये जाते हैं।

पिउ, पिआ, पिआल < पितृ

	एरुवचन	बहुवचन
प०	पिआ, पिअळे	पिअला, पिउणो, पिअओ
ची०	पिअलं	पिअळे, पिअला, पिउणो
त०	पिअळेण, पिअळेणं, पिउणा	पिअळेहि, पिअळेहिँ, पऊहिँ
च०, छ०	पिअलाइ	पिअलाइँ, पिअलाण
प०	पिअलादो, पिअलादु	पिअलतो, पिअलाओ, पिअलाहिँतो, पिअलासुंतो
स०	पिअळे, पिअलंशि, पिअलमि, पिउशि, पिउमि	पिऊशु, पिऊसुं
सं०	हे पिअ, हे पिअळे	हे पिअला, हे पिउणो

इसी प्रकार दाउ, दायाल < दातृ का प्रथमा के एरुवचन में दायाळे, चतुर्थी—षष्ठी के एरुवचन में दायालाइ और बहुवचन में दायालाइँ, पञ्चमी के एरुवचन में दायालादो, दायालादु और सप्तमी के एरुवचन में दायालशि तथा सप्तमी के बहुवचन में दायाळेसु, दायाळेसुं रूप बनते हैं।

मागधी के धातुरूप

मागधी की धातुरूपावली शौरसेनी के समान होती है। अतः मागधी के धातुविद् शौरसेनी के समान ही हैं।

- (२१) मागधी में वज्र धातु के जकार को अ आदेश होता है । यथा—
वज्रदि < वज्रति ।
- (२२) प्रेक्ष और आचक्ष धातु के अ के स्थान पर स्फ आदेश होता है । यथा—
पेस्कदि < प्रेक्षते, आचस्कदि < आचक्षते ।
- (२३) मागधी में स्था धातु के तिष्ठ के स्थान पर चिष्ट आदेश होता है । यथा—
चिष्टदि < तिष्ठति । मतान्तर से प्राकृत के समान चिट् भी आदेश होता है ।

ह्रस्वधातु—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ह्रस्दि, ह्रशेदि	ह्रसति, ह्रसते
म० पु०	ह्रसशि, ह्रसणे, ह्रशेज्ज	ह्रसइत्था, ह्रसथ, ह्रशेथ
उ० पु०	ह्रसामि, ह्रसमि, ह्रशेमि, ह्रशेज्ज	ह्रसामो, ह्रसामो, ह्रसिमो, ह्रशेमो, ह्रसथु, ह्रसथ

भविष्यत्काल—भग

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भगिस्सिदि, भगेस्सिदि भगिस्सिदे, भगेस्सिदे	भगिस्सति, भगेस्सति, भगिस्सिते भगिस्सिते, भगेस्सिते, भगेस्सित्थे
म० पु०	भगिस्सिथि, भगेस्सिथि भगिस्सिणे, भगेस्सिणे	भगिस्सिथ, भगेस्सिथ भगिस्सिथ, भगेस्सिथ, भगिस्सित्थथा
उ० पु०	भगिस्सं, भगेस्सं, भगेस्सिमि	भगिस्सिमो, भगेस्सिमो, भगिस्सिथु, भगेस्सिथु

शेष सभी धातुरूप और वृद्धत रूप शौरसेनी के समान मागधी में होते हैं ।

मागधी के कतिपय विशेष शब्द

माशे < मापः	दुष्यणे < दुर्जनः
विलाशे < विलासः	लस्कणे < लाक्षसः
वायदे < जायते	दस्के < दक्षः
पलिचये < परिचयः	दरके, धदके, हगे < अहम्
गहिदुचठे < गृहीचठलः	पुलिआभा < एष राजा
वियके < मित्रलः	हशिथु, हशिदि, हशिद < हसितः
रिन्कणे < निर्भरः	पुलिथे < पुरुषः
हदके < हृदयः	चिष्टदि < तिष्ठति
वालके < आदरः	कडे < वृत्तः
कस्ये < कार्यम्	मडे < मृतः
फारिदागि < वृत्त्या	सहिदागि < सोढ्या
गदे < गतः	शिआळे, शिआळे < श्रमालः

अर्धमागधी

साधारणतः अर्धमागधी शब्द की व्युत्पत्ति 'अर्ध' मागध्या' अर्थात् जिसका अर्धांश मागधी का हो वह भाषा 'अर्धमागधी' कहलायेगी। परन्तु जैनसूत्र ग्रन्थों की भाषा में उक्त व्युत्पत्ति सम्यक् प्रकार घटित नहीं होती। हाँ, नाटकीय अर्धमागधी में मागधी भाषा के अधिकांश लक्षण पाये जाते हैं।

अर्धमागधी शब्द की एक व्युत्पत्ति में "अर्धमगधस्येयं" अर्थात् मगध देश के अर्धांश की भाषा को अर्धमागधी कहा जायेगा। इस व्युत्पत्ति का समर्थन ईस्वी सन् सातवीं शताब्दी के विद्वान् जित्दासगणि महत्तर ने निशोधचूर्ण-नामक ग्रन्थ में— "पोराणमदमागधभासानिययं हवइ सुत्त" द्वारा किया है। अर्धमगध शब्द की बदलाया करते हुए 'मगधद्वयिसयभासानिद्वं अदमागहं' अर्थात् मगधदेश के अर्ध प्रदेश की भाषा में निघद होने से प्राचीन सूत्रग्रन्थ अर्धमागध कहलाते हैं। अर्धमागधी में अट्टारह देशी भाषाएँ मिश्रित मानी गयी हैं। बताया है— "अट्टारसदेशीभासानिययं वा अदमागहं"। अन्यत्र भी इसे सर्वभाषामयी कहा है।

अर्धमागधी का मूल उत्पत्ति स्थान पश्चिम मगध और शूरसेन (मथुरा) का मध्य-वर्त प्रदश अयोध्या है। तीर्थङ्करों के उपदेश की भाषा अर्धमागधी मानी गयी है। आदि तीर्थङ्कर ऋषभदेव अयोध्या के निवासी थे, अतः अयोध्या में ही इस भाषा की उत्पत्ति हुई मानी जायगी। पर भाषा की भौगोलिक प्रवृत्तियाँ वा विश्लेषण करने पर अवगत होता है कि शौरसेनी या पूर्वी हिन्दी के साथ इस भाषा का विशेष सम्बन्ध नहीं है। महाराष्ट्री प्राकृत या आधुनिक मराठी के साथ इस भाषा का घनिष्ठ सम्बन्ध पाया जाता है। इन्हीं विशेषताओं के आधार पर डॉ० हार्गले ने बताया है कि अर्धमागधी ही

१. सर्वार्धमागधीं सर्वभाषासु परिणामिनीम् ।

सर्वेषा सर्वतो वाचं सर्वज्ञीं प्रणिदम्भे ॥

—वाग्भट्ट काव्यानुशासन पृ० २

प्रारिसवयणे सिद्धं देवाण ऋद्धमागहा वाणी ।

—काव्यासकार की नमिसाधुवृत टीका २, १२ ।

२. "It thus seems to me very clear, that the Prakrit of chanda is the Arsha or ancient (Purana) from the Ardhumagadhi, Maharashtra and Sauraseni"—Introduction to Prakrit Lalshana of chanda Page XIX

आर्ष प्राकृत है, और इसीसे परवर्ती काल में नाटकीय अर्धमागधी, महाराष्ट्री और शौरसेनी निकली हैं। आचार्य हेमचन्द्र के प्राकृत व्याकरण के अध्ययन से भी यही निरूपण निकलता है कि पुरु ही भाषा के प्राचीन रूप को आर्ष प्राकृत और अर्वाचीन रूप को महाराष्ट्री कहा गया है। आर्ष प्राकृत से अर्धमागधी अभिप्रेत है। उन्होंने “आर्षम्” ८।१।३ सूत्र में ‘अर्षं प्राकृतं बहुलं भवति’ तथा ‘आर्षे हि सर्वे विधयो विरुह्यन्ते’ कथन में आर्ष—क्षपिभाषित प्राकृत के अनुशासन की बात कही है।

अर्धमागधी के प्रथम पृक्वचन में मागधी के समान ए प्रत्यय जोड़ा जाता है। ऋ में समाप्त होनेवाले धातु के त स्थान में अर्धमागधी में ङ होता है। अर्धमागधी की यह प्रवृत्ति भी मागधी से मिलती जुळती है। अर्धमागधी की वर्णपरिवर्तनसम्बन्धी निम्न विशेषताएँ हैं।

(१) अर्धमागधी में दो स्वरों के मध्यवर्ती अत्युक्त क के स्थान में सर्वत्र ग और अनेक स्थलों में त और य होते हैं। यथा—

ग—पगप्प < प्ररूप—प्र के स्थान पर प, क को ग और संयुक्त छ का लोप तथा द को द्वित्व।

आगर < आकर—क के स्थान पर ग।

आगास < आकाश—क को ग और श के स्थान पर दन्त्य स।

पगार < प्रकार—प्र को प और क को ग।

सावग < आवक—संयुक्त रेफ का लोप, श को स और क के स्थान पर ग।

विवज्जम < विवर्जक—संयुक्त रेफ का लोप, ज को द्वित्व और क को ग।

अह्विगरणं < अधिहरणं—ध के स्थान पर ह और क के स्थान पर ग।

णिसेवग < निषेवकः—न के स्थान पर ण, मूर्धन्य प को स और क को ग।

छोगे < छोरुः—क के स्थान पर ग और पृक्वचन का ए प्रत्यय।

आगह < आहृतिः—क के स्थान पर ग, ककारोत्तर ऋ को अ, तकार का लोप।

त्त—आराहृत < आराधक—ध के स्थान ङ, क के स्थान पर त।

सामातित्त < सामायिक—य के स्थान पर त और क के स्थान पर त।

विमुद्धित < विमुद्धिक—तालव्य क्ष को दन्त्य स और क को त।

अहित्त < अधिक—ध के स्थान पर ह और क को त।

साउणित्त < शाकुनिक—तालव्य श को दन्त्य स, ककार का लोप और उ स्वर लोप, न को ण त रा अन्तिम क के स्थान पर त।

णेतज्जिउ < नैवधिक—रेकार के स्थान पर एकार, प को स, ध के स्थान पर ज और क को त हुआ है।

वीरासणित्त < वीरासनिक—न को ण और क के स्थान पर त।

धृत्वति < पर्थकि—रेफ का लोप, ध को द्वित्व और मूर्धन्य द, पूर्वर्ती द को उ तथा फ के स्थान पर त ।

नेरतित < नैरयिक—ऐकार का पुकार, य को त और क को त ।

सीर्मतत < सीर्मतरु—क को त हुआ है ।

नरतातो < नरकात्—क के स्थान पर त ।

माद्यधित < माद्यम्यिक—रु के स्थान पर त ।

कोहुंनित < कौटुम्यिक—औकार को ओकार, उ को इ तथा रु को त ।

सचननुत्तेण < सचक्षुष्केण—क्ष के स्थान पर क्ल और क के स्थान पर त ।

वृणित < कृणिक—क को त ।

य—काश्यं < कायिक—मध्यवर्ती यकार का लोप और क को य ।

ल्योय < ल्योक—क को य हुआ है ।

अययारो < अयकारो—फ के स्थान पर य ।

(२) दो स्वरों के बीच का असंयुक्त ग प्रायः कायम रहता है । कहीं कहीं त और य भी होता है । यथा—

ग—आगम < आगम—ग के स्थान पर ग रह गया है ।

आगमणं < आगमनं—ग के स्थान पर ग और न को ण हुआ है ।

अणुगामिय < अनुगामिरु—ग के स्थान पर ग, न के स्थान पर ण और क के स्थान पर य हुआ है ।

आगामिस्स < आगमिधत्— ग के स्थान पर ग, संयुक्त य का लोप और त को द्वित्व; अन्तिम हल् ल् का लोप ।

भगवं < भगवन्— ग के स्थान पर ग और न् को अनुस्वार ।

त—अत्तित < अत्तिग—ग के स्थान पर त ।

य—सायर < सगर—ग के स्थान पर य ।

(३) दो स्वरों के बीच में आनेवाले असंयुक्त च और ज के स्थान में त और य दोनों ही होते हैं । यथा—

त्—णारात् < नारात्—न के स्थान पर ण और च के स्थान पर त ।

वति < वचस्—अन्त्य हल् स् का लोप और च के स्थान त तथा इकार ।

पावतण < प्रवचन—प्र के स्थान पर य और च के स्थान पर त ।

य—कयाती < कदाचित्—इकार का लोप, आ णेप और य ध्रुति, च के स्थान पर य और अन्तिम व्यञ्जन ल् का लोप एवं पूर्ववर्ती इ को दीर्घ ।

वायणा < वाचना—च को य और क को ण ।

आर्ष प्राकृत है, और इसीसे परवर्ती काल में नाटकीय अर्धमागधी, महाराष्ट्री और शौरसेनी निकली हैं। आचार्य हेमचन्द्र के प्राकृत व्याकरण के अध्ययन से भी यही निष्कर्ष निकलता है कि एक ही भाषा के प्राचीन रूप को आर्ष प्राकृत और अर्धमागधी रूप को महाराष्ट्री कहा गया है। आर्ष प्राकृत से अर्धमागधी अभिप्रेत है। उन्होंने “आर्षम्” ८।१।३ सूत्र में ‘आर्षं प्राकृतं बहुलं भरति’ तथा ‘आर्षे हि सर्वे विधयो विकल्प्यन्ते’ कथन में आर्ष—ऋषिभाषित प्राकृत के अनुशासन की बात कही है।

अर्धमागधी के प्रथमा एकवचन में मागधी के समान ए प्रत्यय जोड़ा जाता है। ऋ में समास होनेवाले धातु के त स्थान में अर्धमागधी में ड होता है। अर्धमागधी की यह प्रवृत्ति भी मागधी से मिलती जुलती है। अर्धमागधी की वर्णपरिवर्तनसम्बन्धी निम्न विशेषताएँ हैं।

(१) अर्धमागधी में दो स्वरों के मध्यवर्ती असंयुक्त क के स्थान में सर्वत्र ग और अनेक स्थलों में त और य होते हैं। यथा—

ग—पगप्प < प्रकल्प—प्र के स्थान पर प, क को ग और संयुक्त ल का लोप तथा द को द्वित्व।

आगर < आकर—क के स्थान पर ग।

वागास < आकास—क को ग और श के स्थान पर दन्त्य स।

पगार < प्रकार—प्र को प और क को ग।

सावग < श्रावक—संयुक्त रेफ का लोप, श को स और क के स्थान पर ग।

विवज्जग < विवर्जक—संयुक्त रेफ का लोप, ज को द्वित्व और क को ग।

अह्मिगरणं < अधिकरणं—घ के स्थान पर ह और क के स्थान पर ग।

णित्सेवग < निपेवकः—न के स्थान पर ण, मूर्धन्य प को स और क को ग।

लोगे < लोरुः—क के स्थान पर ग और एकवचन का ए प्रत्यय।

आगइ < आहृतिः—क के स्थान पर ग, ककारोपर ऋ को अ, तकार का लोप।

त—आराहत < आराधक—ध के स्थान ह, क के स्थान पर त।

सामावित < सामायिक—य के स्थान पर त और क के स्थान पर त।

विमुद्धित < विशुद्धिक—तालव्य श को दन्त्य स और क को त।

अहित < अधिक—ध के स्थान पर ह और क को त।

सावणित < शाकुनिक—तालव्य श को दन्त्य स, ककार का लोप और उ स्वर शेष, न को ण तथा अन्तिम क के स्थान पर त।

णेयज्जि < नैयधिक—रेकार के स्थान पर एकार, प को स, ध के स्थान पर ज और क को त हुआ है।

वीरासणित < वीरासनिक—न को ण और क के स्थान पर त।

करेति < करोति—ओकार को एत्व, त ज्यों का ह्यो ।

वते < वत — विसर्ग को एत्व, , ,

सलत्रति < संपति—प को त और , ,

पमिति < प्रमृति—प्र को प, भकारोत्तर ऋकार को इकार और त ज्यों का ह्यो

बना रहा ।

करयल < करतल—मध्यप्रती त के स्थान पर य हुआ ।

(५) दो स्वरों के बीच में स्थित द का द और त ही अधिकांदा में देला जाता है, कहीं कहीं य भी होता है । यथा—

द—पदिसो < प्रदिश.—प्र को प, द के स्थान पर द और श को स हुआ है ।

अणाद्विधं < अनाद्विकं—न के स्थान पर ण, द को द और क के स्थान पर ग ।

वदमाण < वदत्—द के स्थान पर द और संस्कृत के शतृ प्रत्यय के स्थान पर माण हुआ है ।

णद्वि < नद्वि—न के स्थान पर ण और द को द ही रह गया है ।

जणपद < जनपद—न के स्थान पर ण, प के स्थान पर व और द को द ।

वेदिद्विती < वेदिप्यति—संयुक्त य का लोप, प को स और स के स्थान पर ह तथा द और त के स्थान पर उक्त दोनों ज्यों ही विद्यमान हैं ।

त—ज्रता < ददा—ग के स्थान पर ज और द को त ।

पात < पाद्—द के स्थान पर त ।

निसाव < निपाद्—मूर्धन्य व को स और द को त ।

नती < नदी—द को त ।

मुसागत < मृपावाद—मकारोत्तर ऋ के स्थान पर उ, प को स और द के स्थान पर त हुआ है ।

वावित < वादिक—द के स्थान पर त और क के स्थान पर भी त ।

अन्नता < अन्नदा—संयुक्त य का लोप, न को द्वित् और द को त ।

वताती < रुदाचित्—द के स्थान पर त, च को त और अन्तिम हल् त का लोप तथा त् के पूर्ववर्ती ङकार को दीर्घ ।

जति < यदि—य को ज और द को त ।

चिरातीत < चिरादिक—द और क के स्थान पर त, इकार को दीर्घ ।

य—पडिच्छावण < प्रतिच्छाद—प्रति के स्थान पर पडि, द को य और न को ण ।

धउप्य < चतुप्य—तवार का लोप, उ स्वर कोप, संयुक्त व का लोप, प को द्विव और द के स्थान पर य ।

कयरयो < कदर्य—द के स्थान पर य, र्थ को रथ ।

उपवार < उपवार—प को व और च को य ।

छोय < छोच—च के स्थान पर य ।

आचार्य < आचार्य—च को य और स्वरभक्ति के नियमानुसार र् तथा य का पृथक्करण, इ स्वर का आगम ।

ज = त—भोति < भोजिन्—ज के स्थान पर त और अन्तिम न् का लोप ।

वतिर < वत्र—ज के स्थान पर त और र् का पृथक्करण तथा त में ह्रस्व इकार का संयोग ।

पूता < पूजा—ज के स्थान पर त ।

राजीशर < राजेशर—ज के स्थान पर त, ऐकार को ईत्व, संयुक्त व का लोप और तालव्य श को दन्त्य स ।

असते < आत्मजः—संयुक्त म का लोप और त को द्वित्व तथा ज को त ।

पयाय < प्रजात—प्र के स्थान पर प, लकार को य और त का लोप, ऊ स्वर दोष तथा वक्षुति ।

कामज्जग < कामध्वजा—ध्व के स्थान पर ज्क, ज के स्थान पर य ।

अत्तय < आत्मज—संयुक्त म का लोप, त को द्वित्व और ज को य ।

(४) दो स्वरों का मध्यवर्ती त प्रायः बना रहता है; कहीं-कहीं इसका य होता है । यथा—

चंदति < चन्दते—त के स्थान पर त ही बना रहा । आत्मनेपद की क्रिया परस्मैपद में परिवर्तित हो गई ।

नर्मसति < नमस्यति—संयुक्त य का लोप और म के ऊपर अनुस्वार ।

पञ्जसति < पञ्पास्ते—संयुक्त रेफ का लोप, य को ज और द्वित्व । प के स्थान पर व और स्वरभक्ति के अनुसार पृथक्करण, प का इत्व ।

जित्तिद्विप < जित्तेन्द्रिय—एकार को इत्व, संयुक्त रेफ का लोप और त ज्यों का त्यों बना हुआ है ।

सतत < सतत—तकार जैसे का तेसे बना हुआ है ।

अंतरति < अन्तरति—, " "

धेरत < धैवत— " "

जाति < जाति— " "

आगति < आट्टति—क के स्थान पर ग, ऋकार को इ और त की स्थिति ज्यों की त्यों बनी हुई है ।

विहरति < विहरति—त की स्थिति ज्यों की त्यों बनी है ।

पुरतो < पुरतः—विसर्ग को विसर्ग से ओत्व और त ज्यों का त्यों बना है ।

करेति < करोति—ओकार को एत्व, त ज्यो का त्यो ।

तते < तत — विसर्ग को एत्व, , ,

संलभति < संलभति—प को न और ,, ,,

पभिति < प्रभृति—प्र को प, भकारोत्तर ऋकार को इकार और त ज्यो का त्यो

घना रहा ।

करयल < करतल—मध्यवर्ती त के स्थान पर य हुआ ।

(६) दो स्वरो के बीच में स्थित द वा द और त ही अधिकांश में देजा जाता है, कहीं कहीं य भी होता है । यथा—

द—पदिसो < प्रदिशः—प्र को प, द के स्थान पर द और श को स हुआ है ।

अणादियं < अनादिकं—न के स्थान पर ण, द को द और क के स्थान पर य ।

वदमाण < वदत्—द के स्थान पर द और संस्कृत के शतृ प्रत्यय के स्थान पर माण हुआ है ।

णदति < नदति—न के स्थान पर ण और द को द ही रह गया है ।

अणवद < अणवद—न के स्थान पर ण, प के स्थान पर व और द को द ।

वेदिद्विती < वेदिष्यति—संयुक्त य का लोप, प् को स और स के स्थान पर द तथा द और त के स्थान पर उक्त दोनों र्ण ही विद्यमान हैं ।

त—जता < यदा—य के स्थान पर ज और द को त ।

पात < पाद—द के स्थान पर त ।

निताव < निपाद—मूर्धस्य प को स और द को त ।

नती < नदी—द को त ।

मुसावात < मृषावाद—मकारोत्तर ऋ के स्थान पर उ, प को स और द के स्थान पर त हुआ है ।

यातित < वादिक—द के स्थान पर त और क के स्थान पर भी त ।

अन्नता < अन्वदा—सयुक्त य का लोप, न को द्वित् और द को त ।

कताती < कदाचित्—द के स्थान पर त, च को स और अन्तिम हल् त् का लोप तथा त् के पूर्ववर्ती इकार को दीर्घ ।

जति < यदि—य को ज और द को त ।

पिरातीत < चिरादिक—द और क के स्थान पर त, इकार को दीर्घ ।

य—पडिच्छायन < प्रतिच्छादत्—प्रति के स्थान पर पडि, द को य और न को ण ।

चउप्पय < चतुप्पद—तकार का लोप, उ स्वर शेष, संयुक्त प का लोप, प को द्वित्व और द के स्थान पर य ।

कयत्थो < कदर्थ—द के स्थान पर य, र्थ को त्थ ।

उपचार < उपचार—प को व और च को य ।

छोय < लोच—च के स्थान पर य ।

आयरिय < आचार्य—च को य और स्वरभक्ति के नियमानुसार र् तथा य का पृथक्करण, इ स्वर का आगम ।

ज = त—भोति < भोजिन्—ज के स्थान पर त और अन्तिम नू का लोप ।

वतिर < वन्न—ज के स्थान पर त और र् का पृथक्करण तथा त में ह्रस्व इकार का संयोग ।

पूता < पूजा—ज के स्थान पर त ।

राठीसर < राजेश्वर—ज के स्थान पर त, ऐकार को ईत्व, संयुक्त व का लोप और ताछञ्व क्ष को दन्त्य स ।

अत्तते < आत्मजः—संयुक्त म का लोप और त को द्वित्व तथा ज को त ।

पयाप < प्रजात—प्र के स्थान पर प, लकार को य और त का लोप, ऊ स्वर श्लेष तथा यभ्रुति ।

कामञ्जका < कामञ्जजा—ञ्व के स्थान पर ञ्क, ज के स्थान पर य ।

अत्तप < आत्मज—संयुक्त म का लोप, त को द्वित्व और ज को य ।

(४) दो स्वरों का मध्यवर्ती त प्रायः बना रहता है; कहीं-कहीं इसका व होता है । यथा—

वदति < वन्दते—त के स्थान पर त ही बना रहा । आत्मनेपद की क्रिया परस्मैपद में परिवर्तित हो गई ।

नमंसति < नमस्यति—संयुक्त य का लोप और म के ऊपर अनुस्वार ।

पञ्जुवासति < पयु'पास्ते—संयुक्त रेफ का लोप, य को ज और द्वित्व । प के स्थान पर व और स्वरभक्ति के अनुसार पृथक्करण, ए का इत्व ।

जित्तिदिय < जितेन्द्रिय—एकार को इत्व, संयुक्त रेफ का लोप और त ज्यों का स्थान बना हुआ है ।

सतत < सतत—तकार जैसे का तैसे बना हुआ है ।

अंतरित < अन्तरित—,, ,, ,,

धेवत्त < धेवत्—,, ,, ,,

जाति < जाति—,, ,, ,,

आगति < आगति—क के स्थान पर ग, फकार को ह और त की स्थिति ज्यों की स्थिति बनाई है ।

विदरति < विदरति—त की स्थिति ज्यों की स्थिति बनाई है ।

पुरतो < पुरतः—विसर्ग को विरल्य से ओट्ट और त ज्यों का स्थान बना है ।

धरेति < करोति—ओकार को एत्व, त ज्यों का त्यो ।

तते < तत —यिसर्ग को एत्व, , ,

संखवति < संखपति—प को व और , ,

पभिति < प्रभृति—प्र को प, भकारोत्तर ऋकार को इकार और त ज्यों का त्यो बना रहा ।

करयल < करतल—मध्यवर्ती त के स्थान पर य हुआ ।

(६) दो स्वरो के बीच में स्थित द टा द और त ही अधिकांश में देखा जाता है, कहीं कहीं य भी होता है । यथा—

द—पदिसो < प्रदिश.—प्र को प, द के स्थान पर द और श को स हुआ है ।

अणाद्वि < अनाद्विकं—न के स्थान पर ण, द को द और क के स्थान पर य ।

वदमाण < वदन्—द के स्थान पर द और संस्कृत के शतृ प्रत्यय के स्थान पर माण हुआ है ।

णद्वि < नद्वि—न के स्थान पर ण और द को द ही रह गया है ।

जणवद < जनपद—न के स्थान पर ण, प के स्थान पर व और द को द ।

वेदिद्विती < वेदिप्यति—संयुक्त य का श्लोप, प् को स और स के स्थान पर इ तथा द और त के स्थान पर उक्त दोनों वर्ण ही विद्यमान हैं ।

त—जता < यदा—य के स्थान पर ज और द को त ।

पात < पाद—द के स्थान धर त ।

निसात < निपाद—मूर्धन्य प को स और द को त ।

नती < नदी—द को त ।

मुसायात < मृपायाद—मकारोत्तर ऋ के स्थान पर उ, प को स और द के स्थान पर त हुआ है ।

वातित < वादिक—द के स्थान पर त और क के स्थान पर भी त ।

अधता < अन्धदा—संयुक्त य का श्लोप, न को द्वित् और द को त ।

कताती < कदाचित्—द के स्थान पर त, च को त और अन्तिम इल् त् का श्लोप तथा ऋ के पूर्ववर्ती इकार को दीर्घ ।

जति < यदि—य को ज और द को त ।

पिरातीत < चिरादिक—द और क के स्थान पर त, इकार को दीर्घ ।

य—पडिच्छायण < प्रतिच्छाद—प्रति के स्थान पर पडि, द को य और न को ण ।

चउप्यय < चतुष्पद—तकार का श्लोप, उ स्वर श्लोप, संयुक्त प का श्लोप, प को द्वित् और द के स्थान पर य ।

कयथो < कदर्थ—द के स्थान पर य, र्थ को स्थ ।

उयरं < उदरम्—द को य ।

पयाहिणा < पदक्षिणा—प्र को प, द के स्थान पर य और क्ष के स्थान पर ह हुआ है ।

(६) दो स्वरों के मध्यवर्ती प के स्थान पर व होता है । यथा—
पापग < पापक—मध्यवर्ती प को व और अन्त्य क को ग हुआ है ।

संलपति < संलपति—

स्रोत्रवार < सोपचार—प को व और च के स्थान पर य हुआ है ।

अतिवात < अतिपात—प के स्थान में व हुआ है ।

उवणीय < उपनीत—प के स्थान में व और न को ण, तथा त को थ हुआ है ।

अज्भोववयण < अध्युपपन्न—ध्य के स्थान पर ज्भ, उ को ओत्व, उत्तरवर्ती दोनों प्रकारों को व तथा न को ण ।

उवगूढ < उपगूढ—प को व हुआ है ।

आहेवच < आधिपत्य—ध के स्थान पर ह, इकार को एत्व, प को व और त्य को च ।

तवथ < तपक—प को व और क को य ।

वरोपित < व्यरोपित—संयुक्त य का लोप, प को व हुआ है ।

(७) स्वरों का मध्यवर्ती य प्रायः ज्यों का त्यों रह जाता है और कहीं-कहीं उसका त भी हो जाता है । यथा—

वायव < वायव—य ज्यों का त्यों स्थित है ।

पिय < प्रिय—प्र के स्थान पर प और य ज्यों का त्यों वर्तमान है ।

निरय < निरय—य ज्यों का त्यों वर्तमान है ।

इंदिय < इन्द्रिय—संयुक्त रेफ का लोप, और य ज्यों का त्यों ।

गायइ < गायति—य ज्यों का त्यों, त लोप और इ श्लेष ।

त—सिता < सिया—य के स्थान पर त ।

सामातित < सामाधिक—य के स्थान पर त और क को भी व हुआ ।

पालतिस्सति < पालयिष्यन्ति—य के स्थान पर त और त्य को स्त ।

परिवात < पर्याव—स्वरभक्ति के नियम से र्वा का गृहकारण और इ का आगम दोनों य के स्थान पर त ।

पातग < नायक—ग के स्थान पर ण, य को त और क के स्थान पर ग ।

गातति < गाति—य के स्थान पर त ।

ठाति—स्थायिन्—स्था के स्थान पर ठा, य को त और अन्त्य नू का लोप ।

साति < शायिन्—साख्य श को स, य के स्थान पर त और अन्त्य नू का लोप ।

नैरतिव < नैरयिक—ऐकार को एकार, य के स्थान में त और क को भी त ।

इदित < इन्द्रिय—संयुक्त रेफ का लोप और य के स्थान पर त ।

(८) दो स्वरों के मध्यवर्ती व के स्थान पर व, त और य होता है । यथा—

व—वायव < वायव—व के स्थान पर व ही रह गया है ।

गारर < गौरव—गौकार के स्थान पर गकार और व के स्थान पर व ।

भगति < भवति—व के स्थान पर व ही रहा ।

धणुवीति < अनुविचिन्त्य—ॠ के स्थान पर ण, इ को ईत्य, व के स्थान पर व और चिन्त्य के स्थान पर ति ।

त—परितल < परियार—व के स्थान पर त और र के स्थान ल ।

कति < कवि—व के स्थान पर त ।

य—परिवट्टण < परिवर्तन—व के स्थान पर य, त के स्थान पर ट्ट और न को ण ।

परिवट्टणा < परिवर्तना— " "

(९) शब्द के आदि, मध्य और संयोग में सर्वत्र ण की तरह न भी स्थित रहता है । यथा—

नई < नदी—न ज्यों का त्यों और द का लोप, ई स्वर श्रेय ।

नावपुत्त < ज्ञातपुत्र—ऋ के स्थान पर न, त को व और ॠ के स्थान पर त्त ।

भारनाल < आरनाल—न के स्थान पर न ही रह गया है ।

अनिल < अनिल— " "

पज्ञा < प्रज्ञा—प्र को प और ज्ञा के स्थान पर ज्ञा ।

विन्नु < विन्न—स के स्थान पर न्नु ।

सव्यन्तु < सर्वज्ञ—संयुक्त रेफ का लोप, व को द्वित्व और ज के स्थान पर झ और अकार को उत्त्व ।

(१०) एव के पूर्व अम् के स्थान में आम् होता है । यथा—

जामेव < यमेव—य के स्थान पर ज और एव के पूर्ववर्ती अम् के स्थान पर आम् ।

तामेव < तमेव—एव के पूर्ववर्ती अम् के स्थान पर आम् ।

खिन्वामेव < क्षिप्रमेव—क्ष के स्थान पर ख, संयुक्त रेफ का लोप और एव को द्वित्व तथा एव के पूर्ववर्ती अम् को आम् ।

एवामेव < एवमेव—एव के पूर्ववर्ती अम् के स्थान पर आम् ।

पुन्वामेव < पूर्वमेव—पूर्व के स्थान पर पुन्व और एव के पूर्ववर्ती अम् को आम् ।

(११) दीर्घ स्वर के धाद इति वा के स्थान में ति या और इ वा का प्रयोग होता है । यथा—

हृदमहे ति वा < इन्द्रमह इति वा—इति वा के स्थान में ति वा ।

हृदमहे इ वा < इन्द्रमह इति वा— " " इ वा ।

(१२) यथा और यात् शब्द के य का लोप और ज दोनों ही दते जाते हैं ।
यथा—

अहुरखाय < यथाखायत—यथा के स्थान पर अह और ख्यात को ख्याय होता है ।

अहायात < यथाजात—यथा के स्थान पर अहा हुआ है ।

जडागामय < यथानामय—य के स्थान ज, थ को ह, न को ण और स्वार्थिक क के स्थान पर ए ।

धायनदा < यावदका—य का लोप, अ स्वर शेष, अस्य हल्त् का लोप और य के स्थान पर ह ।

जायजीय < यायजीय—य के स्थान पर ज हुआ है ।

(१३) दियस् शब्द में य और सकार के स्थान पर विकल्प से यकार और हकार आदेश होते हैं । यथा—

दियहं, दियसं < दिवसं—विकल्प से व के स्थान पर य और स के स्थान पर ह; स के स्थान पर ह न होने पर दियसं रूप बनेगा ।

दियहं, दियसं < दिवसं—स के स्थान पर ह होने से प्रथम रूप और विकल्पाभाव में द्वितीय रूप बनता है ।

(१४) गृह शब्द के स्थान पर गह, घर, हर और गिह आदेश होते हैं । यथा—

गहं < गृहम्—गृह के स्थान पर गह आदेश होने से ।

घरं, हरं, गिहं < गृहम्—गृह के स्थान पर घर, हर और गिह आदेश होने से ।

(१५) म्लेच्छ शब्द के छ के स्थान पर विकल्प से क्ख आदेश होता है तथा पकार के स्थान पर विकल्प से प्कार और उकार होते हैं । यथा—

मिलेक्खू, मिलक्खू, मिलप्पू < म्लेच्छ.—स्वर भक्ति के नियम से म और छ का पृथक्करण, इकार का आगम, छ के स्थान पर क्ख तथा पकार के स्थान पर विकल्प से थकार और उकार होते हैं ।

(१६) परियाय शब्द के यां भाग के स्थान पर विकल्प से रियाग, रिआग और व्याय आदेश होते हैं । यथा—

परियागो, परिआगो, प्ज्जायो < पर्याय ।

(१७) बुधादिगण पठित शब्दों के धकार के स्थान पर विकल्प से हकार आदेश होता है । यथा—

छच्च	छक्क	माहण	बम्हण
जाया	जत्ता	मिलवखू, मेचछ	मिलिच्छ
णिगण, णिगिण	णग्ग	वग्गू	वाया
णिगिणिण	णग्गत्तण	वाहणा (उपानह्)	उवाणभा
तच्च (तृतीय)	तइअ	सरेज्ज	सहाअ
तच्च (तथ्य)	तच्चउ	सीआण, सुसाण	मसाण
तेगिच्छा	चिइच्छा	सुमिण	सिमिण
दुपालसग	वारसग	सुहम, सुहुम	सण्ह
दोच्च	दुइअ	सोडि	सुदि

दुवाल्ल, वारस, तेरस, अउण्णायोसइ, बचीस, पणत्तीस, इगयाल, तेयालीस
पणयाल, अडयाल, एगट्टि, वावट्टि, तेवट्टि, छावट्टि, अडसट्टि, अउणत्तरि, वाबत्तरि,
पणत्तरि, सत्तइत्तरि, तेयासी, छप्पसीइ, वाणउइ आदि सख्या-शब्दों के रूप अर्धमागधी
में महाराष्ट्री से भिन्न हैं।

शब्दरूप

(२३) अर्धमागधी में पुछिङ्ग अकारान्त शब्द के प्रथमा एकवचन में प्रायः
सर्वत्र ए और क्वचित् ओ होता है।

(२४) सप्तमी एकवचन में स्ति प्रत्यय होता है।

(२५) चतुर्थी के एक वचन में आरे या आते प्रत्यय जाड़े जाते हैं।

(२६) अर्धमागधी में कुछ शब्दों में तृतीया के एकवचन में सा प्रत्यय जोड़ा
जाता है। यथा—

मणसा, बयसा, कायसा, जोगसा आदि। महाराष्ट्री में मणेण, वपण आदि रूप
चन्ते हैं।

(२७) कम्म और धम्म शब्द के तृतीया के एकवचन में पालि की तरह कम्मणा
और धम्मणा रूप होते हैं। महाराष्ट्री में कम्मणेण और धम्मणेण रूप चन्ते हैं।

(२८) अर्धमागधी में तत् शब्द के पञ्चमी के एकवचन में तेओ रूप भी
पाया जाता है।

(२९) सुप्पद् शब्द के पष्ठी के एकवचन में तय और इस्मद् शब्द के पष्ठी
के बहुवचन में अस्माक रूप पाये जाते हैं। ये रूप महाराष्ट्री में नहीं होते हैं।

अर्धमागधी के विभक्ति प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	ए, ओ	आ
द्वि०	अनुस्वार	ए

तृ०	इण, सा	इहि, हि
च०	आप्, आत्ते	अणं
प०	ओ, आत्ते	इहितो
प०	स्स	अणं
स०	सि, मि	इयु

अकारान्त जिण शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	जिणे	जिणा
द्वि०	जिणं	जिणे
तृ०	जिणेण, जिणेणं	जिणेहि, जिणेहि
च०	जिणाप्, जिणात्ते	जिणाणं
प०	जिणाओ, जिणातो	जिणेहितो
प०	जिणस्स	जिणाणं
स०	जिणंसि, जिणम्मि	जिणेषु
सम्बो०	ओ जिणे, ओ जिणा	ओ जिणे

इसी प्रकार गोवम, देव, गीर आदि अकारान्त शब्दों के रूप होते हैं।

अर्धमागधी में भगवत् (भगवन्त) शब्द का प्रथमा के एकवचन में भगव और भगवन्तो; मत्तिमन्त् का मत्तिमं और मत्तिमन्तो; कारव और कारयन्तो; प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में भगवन्तो, मत्तिमन्तो, कारयन्तो परं तृतीया के एकवचन में भगवया और भगवता रूप बनते हैं। पछी के एकवचन में भगवओ और भगवतो रूप होते हैं। इन शब्दों के रूप रूप जिण शब्द के समान होते हैं।

(३०) तार प्रत्यान्त शब्दों में प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में पुरार और ओकार आदेश होते हैं। यथा—

पसत्थारे, पसत्थारो; कत्तारे, कत्तारो, भत्तारे, भत्तारो परं तृतीया के एकवचन में तार के स्थान पर तु आदेश होने से पसत्थुणा, कत्तुणा, भत्तुणा रूप भी विकल्प से बनते हैं। येप शब्द रूप जिण शब्द के समान होते हैं।

राय शब्द के रूप (राजन् शब्द)

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	राया	राये
द्वि०	रायं, रायाणं	रायाणो
तृ०	रजा	राहि

च०	रायाए, रायाते	राईणं
प०	रायाओ, रायातो	रायेहितो
प०	रओ	राईणं
स०	रायंसि, रायन्मि, राये	रायेसु

संस्कृत के आत्मन् शब्द के स्थान पर अर्धमागधी में अत्त और अप्प आदेश होते हैं। अतः इस शब्द के रूप निम्न प्रकार चलते हैं।

अत्त, अप्प < आत्मन्

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	अत्ता, अप्पा	अत्ते, अप्पे
द्वि०	अत्ताणं, अप्पाणं	अत्ते, अप्पे, अप्पा
तृ०	अत्तणा, अप्पणा	अत्तेहि, अप्पेहि
च०	अत्ताए, अप्पाए	अत्ताणं, अप्पाणं
प०	अत्ताओ, अप्पाओ	अत्ताहितो, अप्पाहितो
प०	अत्तणो, अप्पणो	अत्ताणं, अप्पाणं
स०	अत्तंसि, अप्पंसि, अत्तन्मि, अप्पन्मि	अत्तेसु, अप्पेसु

जस, मग, वय, काय, तेय, चम्पु और जोग शब्द के तृतीया एकवचन में जससा, मणसा, वयसा, कायसा, तेयसा, चम्पुसा; जोगसा; पञ्जी के एकवचन में जससो, जसस्स; मणणो, मणस्स; वयसो, वयस्स, कायसो, कायस्स; तेयसो, तेयस्स; चम्पुसो, चम्पुस्स; जोगसो, जोगस्स एवं सप्तमी विभक्ति एकवचन में मगसि, मणंसि, मणंसि, वयसि, वयंसि, वयंसि, कायसि, कायंसि, कायंसि, तेयसि, तेयंसि, तेयंसि, चम्पुसि, चम्पुंसि, चम्पुंसि और जोगसि, जोगंसि, जोगंसि रूप बनते हैं।

इकारान्त मुणि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	मुणी	मुणिणो, मुणी
द्वि०	मुणि	मुणिणो, मुणी
तृ०	मुणिजा, मुणिस्स	मुणीहि, मुणीहि
च०	मुणिगो, मुणिस्स	मुणीणं
प०	मुणिणो, मुणीओ	मुणीहितो
प०	मुणिणो, मुणिस्स	मुणीणं
स०	मुणिसि, मुणिमि, मुणी	मुणीसु
सं०	ओ मुणि, ओ मुणी	ओ मुणिणो

इकारान्त शब्दों के अतिरिक्त उकारान्त शब्दों के रूप भी प्राकृत—महाहात्री प्राकृत के समान चलते हैं।

पिटृ शब्द का प्रथमा के एकवचन में पिता, पितृ, पितरो, पितरो, द्वितीया के एकवचन में पितरं, पितरं एवं चतुर्थी के एकवचन में पिउप, पिउस्स और पिउणो रूप बनते हैं।

सर्व शब्द के रूप प्राकृत के समान ही होते हैं।

क < किम् के शब्दरूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	के, को	के
द्वि०	कं	के
तृ०	केणं, वेण	केहिं, केहि
च०	काप	केसि
प०	कम्हा, काओ	कओहिन्तो
प०	कस्स	केसि
स०	करिस्स, कसि, वमि, के	केसु

अय < इद्म्

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	अयं, इमे	इणमो, इमो
द्वि०	इणं, इय	इमे
तृ०	अणेण, इमेण, इमेण	इमेहिं, इमेहि
च०	इमाप	इमेसि
पं०	इमाओ, इमा	इमेहितो
प०	अस्स, इमस्स	इमेसि
स०	अरिस्स, इमंसि, इमंसि	इमेसु

एस् < एत्तद्

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एसो, एसे, ए	एप
द्वि०	एय	एप
तृ०	एएण, एएण	एएहिं, एएहि
च०	एयाप	एएसि
प०	एयाओ, एया	एएहितो
प०	एएसस्	एएसि

स० एणस्सि, एण्ति, एण्मि एण्सु
इसी प्रकार अन्य सर्वनाम शब्दों के रूप होते हैं ।

अकारान्त स्त्रीलिंग माला शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	माला	मालाओ, माला
द्वि०	मालं	मालाओ, माला
तृ०	मालाए	मालाहिं
च०	मालाप	मालाणं
पं०	मालाओ	मालाहितो
प०	मालाप	मालाखं
स०	मालाप	मालासु
सं०	भो माले	भो माला

स्त्रीलिंग इकारान्त दिट् < दृष्टिः

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	दिट्ठि	दिट्ठीओ, दिट्ठी
द्वि०	दिट्ठिं	दिट्ठीओ, दिट्ठी
तृ०	दिट्ठीए	दिट्ठीहिं
च०	दिट्ठीप	दिट्ठीणं
पं०	दिट्ठीओ	दिट्ठीहितो
प०	दिट्ठीप	दिट्ठीणं
स०	दिट्ठिसि	दिट्ठीसु
सं०	भो दिट्ठी	भो दिट्ठीओ

इकारान्त और ऊकारान्त शब्दों के रूप भी प्राकृत के समान ही होते हैं ।

स्त्रीलिंग में जा < यद् सर्वनाम शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	जा	जाओ
द्वि०	जं	जाओ
तृ०	जाए, जाप	जाहिं
च०	जासे, जाप	जासि
पं०	जाप, जाओ	जाहितो

प०	जीसे, जाए	जासि
स०	जीसे, जाए	, जासु
सं०	हे जा	हे जाओ

नपुंसकलिङ्ग में शब्दों के रूप प्राकृत के समान ही होते हैं ।

तद्धित

अर्धमागधी में संस्कृत के समान तद्धित प्रत्ययों को अपत्यार्थक, देवतार्थक, समुहार्थक, अध्ययनार्थक, विकारावयवार्थक, अनेकार्थक, मनुवर्थक और स्वार्यिक इन आठ भागों में विभक्त किया जा सकता है । शेषिक प्रत्यय भी अर्धमागधी में पाये जाते हैं ।

अपत्यार्थक और समुहार्थक

(३१) समूह, सम्बन्ध और अपत्यार्थक दत्तलाने के लिए इय, अण् और इञ् प्रत्यय जोड़े जाते हैं । यथा—

वखिलस्स इयं—वखिलियं < कापालिकम्—वविल + इय—लकारोत्तर अकार का लोप और वृद्धि होने से, विभक्ति चिह्न जोड़ने से उक्त रूप बनता है ।

उत्तरस्स इमं—उत्तरिजं < औत्तरेयम्—उत्तर + इञ्—रकारोत्तर अकार का लोप और विभक्तिचिह्न जोड़ने से उक्त रूप बना है ।

कोसस्स इमं—कोसेजं < कौशेयम्—कोस + इञ्—गुणं और विभक्ति चिह्न जोड़ने से ।

समुहार्थ—

सगडाणं समूहो—सागडं < शाकटम्—सगड + अ—वृद्धि और विभक्तिचिह्न ।

वेसालीए अवक्कं—वेसालिओ < वैशालिकः—वेसालिसावपु < वैशालिक-

श्रावणः—इय (अ) प्रत्यय जोड़ा गया है ।

पण्डवस्स अण्चारिणि—पाण्डवा—पाण्डव + अण् (अ) पाण्डवा, पण्डवा; इसी प्रकार अण् प्रत्यय जोड़ देने से—लाघवं, अजयं, मदनं आदि रूप भी बनते हैं ।

व्यापार यो वृत्ति अर्थ—

धोरस्स वावारी—चोञ्जं < चौर्यम्—चोरियं में इञ् और इय प्रत्यय जोड़े गये हैं ।

वणियस्स पात्रारो—वाणिजं < वाणिज्यम्—व्यापार अर्थ में इञ् प्रत्यय ।

(३२) अप्पण शब्द से सम्बन्ध दत्तलाने के लिए इच्चिय और इच्चिय प्रत्यय होते हैं । यथा—

अप्पणस्स इयं—अप्पणिच्चियं < आहमीयम्—अप्पण + इच्चिय = अप्पणिच्चियं,

अप्पण + इच्चिय = अप्पणिच्चियं ।

पयातीणं समूहो—पायत्तं < पदावम्—पयत्त + अण् = पायत्तं ।

पडिहारीए इयं—पाडिहैरं < प्रातिहार्यम्—पडिहारी + अग्—पडिहारी शब्द में हा के स्थान पर हे आदेश हुआ है और रकारोत्तर हकार का लोप ।

मम + इय—ममाहै, ममाहए < ममत्वी, ममायितः ।

(३३) पर शब्द से सम्बन्ध बतलाने के लिए कीय प्रत्यय होता है । यथा—
पर + कीय—परकीयं ।

(३४) राय शब्द से सम्बन्ध बतलाने के लिए ण्ग प्रत्यय होता है । यथा—
राय + ण्ग—राइण्णं, रायण्णं—य कार के स्थान पर इकार ।

(३५) कम्म शब्द से सम्बन्ध बतलाने के लिए ण और अ प्रत्यय जोड़े जाते हैं ।
कम्म + ण = कम्मणं < कार्मणम्, कम्म + अ = कम्मअं

भवार्थक प्रत्यय

(३६) भवार्थ में इम, इह, इज्ज, इय, इक, क आदि प्रत्यय जोड़े होते हैं ।

अब्भंतरे भवो—अब्भंतरिए, अब्भंतरगो < आभ्यन्तरकः—अब्भन्तर + इय = अब्भन्तरिए; त्रिकल्पाभाव में अब्भन्तर + क (ग) = अब्भन्तरगो । अपरिल्लं < आपरम्

पुरा भवं—पुरकिम्मं, पुरत्थिमं < पौरस्त्यम्—पुरत्थ + इम = पुरत्थिमं, पुरत्थ के स्थान पर पुरच्छ होने से पुरकिम्मं रूप बनता है । अन्ते भवं—अन्तिमं—अन्त + इम = अन्तिमं ।

उपरि भवं—उपरिल्लं—उपर + इल्ल = उपरिल्लं < उपरितनं; उपरि + इम = उपरिमं ।

भंडारे अहिगडो—भाण्डारिए < भाण्डारिकः—भाण्डार + इयण् (इए) = भाण्डारिए ।

स्वार्थिक

(३७) स्वार्थ बतलाने के लिए अण्, इक्, इज्ज, इज्जन्, इय, इयण्, इम, इल्ल, क और मेत्त प्रत्यय होते हैं ।

जायमेत्तं, जायमिच्छं < जातमात्रम्—जाय + मेत्त = जायमेत्तं—एको इत्य होने से जायमिच्छं रूप बनता है ।

णियदिउता < निवृत्तिगत्ता—णियउ + इत्त = नियदिउल छीलिङ्गवाची वा प्रत्यय जोड़ने से नियदिउत्था । उत्तर + इत्तं = उत्तरिल्लं < गोचरेयम्, आग + इत्त + इय = आगिदिउयं < आनीतयम्; उ + य = उय, उ + ल्लं < पट्टम् ।

(३८) पौष शब्द से उत्त और पत्त तथा सुक् शब्द से स्वार्थिक इत्तग प्रत्यय होता है । यथा—

पौष + उत्त = पौपुत्तगो < पौषक, पत्त + इत्तग = पत्तेत्तगो < पत्तक ;
सुक् + इत्तग = सुक्केत्तगो < सुक्तर ।

(३९) लोभादि शब्दों से स्वार्थिक चा प्रत्यय होता है और चा के स्थान पर विकल्प से या हो जाता है । यथा—

गवेषण + चा = गवेषणत्ता < गवेषणिका; लोभ + चा = लोभत्ता, लोभया < लोभकः, सील + चा = सीलत्ता, सीलया < सीलकम्, छीण + चा = छीणत्ता, छीणया < छीणकम्; अणुकंपण + चा = अणुकंपणत्ता, अणुकंपणया < अणुकम्पनकम्; दुक्खण + चा = दुक्खणत्ता, दुक्खणया < दुक्खणकम्; लिप्पण + चा = लिप्पणत्ता लिप्पणया < लिप्पणकम्; पिट्ठण + चा = पिट्ठणत्ता, पिट्ठणया < पिट्ठणकम् ।

मड + इल्लि = मडल्लिओ < मृतकः ~ यहाँ ड का लोप हुआ है और विभक्ति का ओ चिह्न जोड़ दिया है ।

(४०) पढम शब्द से स्वार्थ में इल्लु प्रत्यय जोड़ा जाता है । यथा—

पढम + इल्लु = पढमिल्लु < प्रथमकः

(४१) एग (एऊ) शब्द से स्वार्थ में णागि, इणिय, इय प्रत्यय होते हैं ।

एग + णागि = एगानी < एकाकी, एग + अणिय = एगानिय, एगानिय; एक + इय—एक्किया—क को द्वित्व हुआ है ।

(४२) नीसोदि शब्द से स्वार्थ में क प्रत्यय होता है । यथा—

नीसोदि + क = निसोदिगा, क के स्थान पर य होने से निसोदिया < निसोदिका, नैपेधिदी वा ।

(४३) अपेक्षा कृत अतिशय—त्रिशिष्ट अर्थ बतलाने के लिए तर प्रत्यय होता है । यथा—अइसएण तुच्छं—तुच्छतरं

(४४) तर के स्थान पर तराय आदेश होता है । यथा—बहुतराय, अल्पतराय

(४५) धम्मादि शब्दों को अतिशय अर्थ बतलाने के लिए इट्ट प्रत्यय होता है । यथा—अइसएण धम्मी—धम्मिट्ठो < धम्मिष्ठः, अइसएण अधम्मी—अइमिट्ठो < अधम्मिष्ठः ।

(४६) घेर, धीर, पिय शब्दों से अतिशय अर्थ प्रकट करने के लिए इज्ज प्रत्यय होता है और घेर के स्थान पर य, धीर के स्थान पर घ और पिय के स्थान पर प आदेश होते हैं । यथा—

घेर + इज्ज—य + इज्ज = येज्ज < स्थैर्यम्

धीर + इज्ज—ध + इज्ज = धेज्ज < धैर्यम्

पिय + इज्ज—प + इज्ज = पेज्ज < प्रियतरम्

(४७) धर्हति और करोति धार्थ में इय और क प्रत्यय होते हैं तथा अर्जकार शब्द में विकल्प से आदि स्वर की गृही होती है । यथा—

अभिसेकमर्हति—अभिसिको—अभिसेक+रु = अभिसिक्क < अभिपिस्यः; अलं-
कारं करेइ च्ति—अलंकार + इय = अलंकारिण, अलंकारिण < अलंकार्यः; पसिणं करेइ
च्ति—पासणिण < प्रादिनरुः ।

अनेकार्थक प्रत्यय

(४८) वृत्तियास्त से निवृत्त, क्रीत, चरति, व्यवहरति और जीवित अर्थ में इत्ता,
इय, इम, आउ, इल्ल और अ प्रत्यय होते हैं । यथा—

अभोगमेत निवृत्ता—अभोगम + इत्ता = अभोगमिया (त्त के स्थान
पर य हुआ है) < आभ्युपगमिकी; अहिरण + इत्ता—या + अहिरणिया < आधि-
करणिकी; दण्डेण निवृत्तं दण्डिनं—दण्ड + इय = दण्डियं < दण्डिमन्; सवेण कोयं—
सतिथं; सइयं—सत + इय = सतिथं, तत्कार का छोप होने पर सइयं < सतरम् ।

णाएणं व्यवहरति—णेयाउओ, णेयाइयो < नैयायिकः ।

तेल्लेणं जीवइ—तेल्लओ—तेल्ल + व्लिअ = तेल्लओ < तेल्लरुः ।

आहारयणं ववरइ = आहारायणियं < यथारान्निम्; तेयदियं < तैजोहितम् ।

चन्नुणा णिण्णहइ—चन्नुसं < चाक्षुपम् ।

अस्सिणिए जुत्ता पुण्णमासी—आसोई, अस्सोई < अचिनो; आताओ < आपाओ,
कत्तिवा < कात्तिओ, जेट्टाम्वा < जेट्टान्जो, फग्गुणी < फाल्गुनी, विसाओ < वैशाखी,
मगसिरा < मार्गशीर्षा, साविट्ठी < श्राविष्ठा, पोट्टवतो < प्रौष्ठपद्मी, पोसी < पौषी, माही <
माघी, चेतो < चैत्री ।

आसोइ पुण्णमासी अस्सि मासंमि—आसोओ मासो—असोइ + भण् =
आसोओ मासो < आचिनो मासः; वातेण उवइयं—वातीणं, वाईणं—वात + इन =
वासीर्णं, वाईणं—तत्कार का छोप होने पर ।

पसंमाओ आगयं—पासद्वियं < प्रासंगिकम् । पारितोसियं < पारितोषिकम् ।

(४९) पाई शब्द से भवार्थ में ण प्रत्यय होता है । यथा—

पाई + ण = पाईणं, पाईणं < प्राचीनम्

(५०) पहादि सप्तम्यन्त शब्दों से साधु अर्थ में एज्जण् प्रत्यय होता है । यथा—
यहे साहू—पाहेज्जं < पायेयः ।

(५१) सप्तम्यन्त पात शब्द से इल्ल प्रत्यय होता है । यथा—

पास + इल्ल—पासिल्लओ < पारिवलः ।

(५२) वहि शब्द को अण् प्रत्यय के परे म और र का आगम होता है ।

तथा—

पहि + अ = बहिमं, वहिरं < बाह्यम् ।

(५३) मज्झ शब्द से म और इल्ल प्रत्यय होते हैं । यथा—

मज्झमं, मज्झिमं, मज्झिल्लं < मध्यमम् ।

मतुवर्थक प्रत्यय

(६४) हिन्दी में जो अर्थ वान् या वाला आदि प्रत्ययों के द्वारा सूचित किया जाता है, अर्धमागधी में वह अर्थ मन्त, न्त, इण् आदि प्रत्ययों से । मन्त प्रत्यय जोड़ते समय म के स्थान पर विकल्प से व आदेश होता है । यथा—

वण्ण + मन्त = वण्णवन्तो—विकल्प से व का लोप न् का अनुस्वार होने से वण्णर्वं < वर्णवान् रूप धनेगा ।

भग + मन्तो = भगवन्तो, भगर्वं < भगवान् ; वीइ + मन्तो = वीइमन्तो < वीचिमान् ; जाति + मन्तो = जातिमन्तो < जातिमान् ; तिवूलो इमस्य अतिथि—तिवूलिओ—तिवूल + इय = तिवूलिओ < तिवूलिकः ; गंडी अतिथि अस्ति—गंडिलो—गंडि + छ = गंडिलो < ग्रन्थिमान् ; माया अतिथि इमस्स—माइछो—माया + इछ-वकार का लोप = माइछो < मायायी ; ऋतुग्या अतिथि इमस्स—कलुणो < कदगः ; थाउस + न्त—भाउसन्तो < आयुष्मान् ।

गो + मन्त—गोमी, गोमिणी—मन्त प्रत्यय के स्थान पर मी और मिणी आदेश होता है ।

जस + मन्त—जसवन्तो, जसमन्तो < यशस्वीन्

आयार + मन्त—आयारवन्तो, आयारमन्तो < गाचारवान् ; णति + मन्त = णतिवन्तो, णाइर्वं < जातिवान् ; बुसि + मन्त = बुसिमन्तो < उशी ।

जय + इण्—जइणो < जयी; दोसि + इणो = दोसिणो < दोषी; वरदि + इण = वरदिणो < बर्ही; किमि + ण = किमिणो < इमिमान् ; पंक + मन्त—रञ्जीलिङ्गविक्षा में आहारान्त आदेश और म के स्थान पर ण, न का लोप तथा जीप् प्रत्यय होने से पंकावती रूप बनता है ।

(६५) मन्ध, तुन्द आदि शब्दों से इल प्रत्यय होता है । यथा—

मन्ध + इल = मन्धिणो, तुन्द + इल = तुन्दिणो < तुन्दिलः ।

(६६) जडा शब्द को इल प्रत्यय होने से प्रत्यय सहित विकल्प से जडुल और जडियाल का निपातन होता है । यथा—

जडा + इल = जडुलो, जडियालो, जडिलो < जडिलः ।

(६७) रय शब्द से विकल्प से स्सल प्रत्यय होता है । यथा—

रय + स्सल = रयस्सला, रइल—विकल्प से इल प्रत्यय होने पर; < रजस्सला ।

(६८) पम्हादि शब्दों से मतुवर्थ में विकल्प से छ प्रत्यय होता है । यथा—

पम्ह + छ = पम्हलो < पम्हलः ; पत्त + छ = पत्तलो < पत्तलः ; वणु + छ =

वणुलो < वणुलः ।

(५९) दया आदि शब्दों से मतुवर्थ में आलु प्रत्यय होता है । यथा—
दया + आलु = दयालु < दयालुः ; वीसरण + आलु = विसरणालु—विनाशीकः ।

(६०) मतुवर्थ के राज्ञा शब्द से उ प्रत्यय होता है ।

राज् + उ = राजू < राजालुः ।

(६१) मतुवर्थ में जसादि शब्दों से अंसी और स्वी प्रत्यय होते हैं । यथा—
जस + अंसी = जसंसी, जस + स्वी = जसस्वी < यशस्वी, तेय + अंसी = तेयंसी,
तेयस्वी < तेजस्वी; वचंसी, वचस्वी < वर्चस्वी ; ओयंसी, ओयस्वी < औजस्वी ।

भावार्थ तथा कर्मार्थ

(६२) क्रिसी शब्द से भाववाचक संज्ञा बाने के छिप्ट अर्थमागधी में च और तण प्रत्यय होते हैं । यथा—

अपर + च = अपरत्तं < अपरत्वम् ; उत्सुग + च = उत्सुगतं < उत्सुगत्वम्,
अंब + चण = अंबत्तणं < आम्भत्तम्, तीय + तण = तीयत्तणं < तृतीयत्वम्, पहु + तण
= पहुत्तणं < प्रसुत्तम्, अंध + तण = अंधत्तणं < अन्धत्वम् ।

(६३) भाव अर्थ में चा, अद्र और इयण् प्रत्यय भी होते हैं । जैसे—अरि +
चा = अरिचा < अरिता ।

उपपलदं + चा = उपपलकं चा < उत्पलकन्दता ।

धादत्तद्वियं, आहातद्वियं < याधातधिकम्—इयण् प्रत्यय हुआ है ।

जहातहं < यधात्तथम्—अद्र प्रत्यय हुआ है ।

(६४) जडादि शब्दों से भाव अर्थ में इण प्रत्यय होता है । यथा—

जडा + इण = जडिणो < जडत्वम् ; णग + इण = णगिणो, णिगिणो < नग्नत्वम् ।

सुंड + इण = सुंडिणो < सुण्डत्वम् ; संघाड + इण = संघाडिणो < संघाडत्वम् ।

(६५) इस्तरादि शब्दों से भाव अर्थ में इय प्रत्यय होता है ।

इस्तर + इय = इस्तरियं < पेशव्यम् ।

अजजत्र + इय = अजजत्रियं < आर्जवम् ; सामग + इय = सामगियं <

सामग्र्यम् ।

अप्पायहु + क + अप्पायहुगं, अप्पायहुकं, अप्पायहुयं, अप्पायहुत्तं < अप्पायहुत्वम् ।

(भावार्थ में क प्रत्यय हुआ है ।)

(६६) उवमादि शब्दों से भाव अर्थ में अण् प्रत्यय होता है । यथा—

उवमा + अण् = ओवम्मं < औपम्यम् ;

आद्विककं < आधिस्यम्, दोहगं < दौर्भाग्यम्, सोहगं < सोभाग्यम्, सेलुवकं <

शैलोक्यम्, तेलोककं < शैलोक्यम् ।

जुवाण + अण् = जुवरणं, जोवरणं, जोरणं, जोरणं < जोवनम्—वकार के धाकार को ह्रस्व और च को विरूप से द्वित्व हुआ है।

दूय + अण् = दोचवं < दोस्थम्—य के स्थान पर च आदेश हुआ है।

अहातर्चवं < यावातर्चम्, वेयातर्चवं < वैयातर्चम्।

विद्यामड + ह्रण् = वेयावडियं < वैयावडिकम्।

कलुण + अण् = कोलुणं < काळणम्।

सइ + अण् = साइल्लं, साफल्लं < साफलयम्।

सुकुमार + अण् = सोगमल्लं < सोकुमार्यम्—सुकुमार के स्थान पर मुगमल्ल आदेश होता है।

विभारार्थक और सुन्प्रन्धार्थक प्रत्यय

(६७) विभारार्थ में प्रधानरूप से अण और मव प्रत्यय होते हैं। यथा—

अथो + मव = अथोमवम्, फण्णु + मयं = फण्णिमयं < फण्णिमयम्; वभो + मय = वभोमयं < वभोमयम्।

वई + मय = वईमयं < वाइमयम्; रथय + मव = रथयामयं, रथयमयं < रजतमयं—विकल्प से अकार आदेश हुआ है।

(६८) संख्यायाचक शब्दों में पूर्व अर्थ में य प्रत्यय होता है। यथा—

सत्त + म = सत्तमं < सप्तमम्, अट्ट + म = अट्टमं < अष्टमम्, नव + म = नवमं, शतारस + म = शतारसमं < शतादशम्, वीसइ + म = वीसइमं < विंशतिसम्।

(६९) द्रु और ति शब्दों से इय, तिय और तीय इत्यय होते हैं। यथा—

वि + इय = विइयं, त्रि + तीय = त्रितोयं,

वित्तिज्जं, दोच्च < द्वितीयम्—य के स्थान पर ज् आदेश।

ति + इय = तीयं, तइयं, ततीयं, तच्चं—तृतीयम्।

(७०) छ शब्द से पूर्णों में द्रु प्रत्यय होता है। यथा—

छ + द्रु = छद्रुं < पष्ठम्।

(७१) धनु शब्द से पूर्णों में त्यं प्रत्यय होता है। यथा—

चतु + त्यं = चतुत्थं, चउ + त्य = चउत्थं < चतुर्थम्।

(७२) कादि शब्दों से निर्घारण अर्थ में तर प्रत्यय होता है। यथा—

क + तर = कयरो < कतरः, एगयरो < एगतरः, अन्नयरो < अन्नयतरः।

बहु + सो = बहुसो < बहुशः।

कम + सो = कमसो < कमशः, पगाम + सो = पगामसो < पगामशः, एगन्त + सो = एगन्तसो < एगन्तशः। कुंभग + सो = कुंभगसो < कुंभगशः। एक्क + सि = एक्कसि < एक्कशः। एगय + ती = एगयओ, एगयतो < एगतरः।

द्वय + ओ = द्वयो, द्वयतो = द्वयतः; पिट्ओ, पिट्ओ < पृष्टत, कम्म+तो = कम्मओ, कम्मतो < कर्मतः ।

अत्थ + तो = अत्थतो, अत्थओ < अर्थत ।

धम्म + तो = धम्मतो, धम्मओ < धर्मतः; दुह + तो = दुहओ, दुहतो < द्विधा ।

(७३) संख्यासप्तक शब्दों से चारवार अर्थ प्रतलाने के लिए क्मुत्तो प्रत्यय होता है । यथा—

दु + क्मुत्तो < द्विकृत्यः ; ति + क्मुत्तो = तिम्मुत्तो < त्रिकृत्यः ; सदस्स + क्मुत्तो = सदस्सम्मुत्तो < सदस्समृत्यः ; अणंत + क्मुत्तो = अणंतम्मुत्तो < अणन्तकृत्यः ।

स्ति—एकस्ति < पुरुषः ।

(७४) प्रकार अर्थ में हा प्रत्यय होता है । यथा—

सव्व + हा = सव्वहा < सर्वाधा; अण्ण + हा = अण्णहा < अण्वहा ;

अट्ठ + हा = अट्ठहा < अष्टधा ; ज + हा = जहा < यथा; त + हा = तहा < तथा ।

(७५) ज और त शब्दों से ह और हं प्रत्यय होते हैं । यथा—

ज + ह = जह, ज + हं = जहं < यथा; त + ह = तह, त + हं = तहं < तथा ।

(७६) प्रकार अर्थ में धा प्रत्यय होता है । यथा—

त + धा = तथा < तथा ।

(७७) इयर शब्द से प्रकार अर्थ में इहरा शब्द का विस्वर से निपातन होता

है । यथा—

इहरा, इयरहा < इतरथा ।

(७८) प्रकार अर्थ में क शब्द से अह, अहं, इह और इण्णा प्रत्यय होते हैं ।

यथा—

क + अह = कह, क + अहं = कहं, क + इह = किह, क + इण्णा = किण्णा <

कथम् ।

(७९) इहं शब्द से प्रकार अर्थ में इहं का निपातन होता है । यथा—

इहं—इहं, इहं < इहं ।

(८०) एरु शब्द से ए प्रत्यय होता है । यथा—एरु + ए = एरु ।

(८१) इन शब्द से एव प्रत्यय होता है । यथा—

इम + एव = इहव—इम के स्थान पर इ आदेश ।

इम + एव = एहव—इम के स्थान पर ए आदेश ।

इम + एव = इपरएव < इतरएव—इम के स्थान पर इपर आदेश ।

इम + एव = इहव—मकार का लोप ।

इम + एव = इहं—, ॥

द्वय + ओ = द्वयो, द्व्यतो = द्व्यतः, पिट्टओ, पिट्टतो < पृष्टत, कम्म+तो = कम्मओ, कम्मतो < कर्मतः ।

अत्थ + तो = अत्थतो, अत्थओ < अर्थत ।

धम्म + तो = धम्मतो, धम्मओ < धर्मतः ; दुह + तो = दुहओ, दुहतो < द्विधा ।

(७३) संज्ञायाचरु शब्दों से चारंपार अर्थ वतनाने के लिए क्त्तुतो प्रत्यय होता है । यथा—

दु + क्त्तुतो < द्विष्टवः, ति + क्त्तुतो = तिम्रुत्तो < त्रिकृतः ; सहस्स + क्त्तुतो = सहस्सम्भुत्तो < सहस्रभूतः ; अणंत + क्त्तुतो = अणंतम्भुत्तो < अणन्तकृतः ।

स्सि—एकस्सि < एकाशः ।

(७४) प्रकार अर्थ में हां प्रत्यय होता है । यथा—

सव्व + हा = सव्वहा < सर्वथा; अण्ण + हा = अण्णहा < अन्यथा ,

अट्ठ + हा = अट्ठहा < अष्टथा ; ज + हा = जहा < यथा; त + हा = तहा < तथा ।

(७५) ज और त शब्दों से ह और हं प्रत्यय होते हैं । यथा—

ज + ह = जह, ज + हं = जहं < यथा; त + ह = तह, त + हं = तहं < तथा ।

(७६) प्रकार अर्थ में धा प्रत्यय होता है । यथा—

त + धा = तधा < तथा ।

(७७) इयर शब्द से प्रकार अर्थ में इहरा शब्द का विकल्प से निपातन होता है । यथा—

इहरा, इयरहा < इतरथा ।

(७८) प्रकार अर्थ में क शब्द से अह, अहं, इह और इण्णा प्रत्यय होते हैं । यथा—

क + अह = कह, क + अहं = कहं, क + इह = किह, क + इण्णा = किण्णा < कथम् ।

(७९) इहं शब्द से प्रकार अर्थ में एहं का निपातन होता है । यथा—

इहं—एहं, इतं < इत्थम् ।

(८०) एरु शब्द से च प्रत्यय होता है । यथा—एग+च = एगत्त ।

(८१) इन शब्द से त्थ प्रत्यय होता है । यथा—

इम + त्थ = इत्थ—इम के स्थान पर इ आदेश ।

इम + त्थ = इत्थ—इम के स्थान पर ए आदेश ।

इम + त्थ = इयरत्थ < इतरण—इम के स्थान पर इयर आदेश ।

इम + ह = इहव—मकार का लोप ।

इम + हं = इहं—, ,

धातुप्रत्यय

वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	इ	न्ति
म० पु०	सि	द्
उ० पु०	मि	मो

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्सइ, हिइ	स्सन्ति, हिन्ति
म० पु०	रससि, हिसि	रसद्, हिद्
उ० पु०	स्तामि, ह्यामि	स्सामो, ह्यामो

भूतकाल

भूतकाल के सभी पुरुष और सभी वचनों में ईसु प्रत्यय होता है। महाराष्ट्री में इसका अभाव है।

विध्यर्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	इज्ज, एज्ज, इज्जा एज्जा, ए	इज्ज, एज्ज इज्जा, एज्जा, ए
म० पु०	इज्ज, एज्ज, एज्जसि	इज्ज, एज्ज, एज्जाद्
उ० पु०	इज्ज, एज्ज, एज्जामि	इज्ज, एज्ज, एज्जामो

आज्ञा

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	उ	उन्तु
म० पु०	दि	ह, एइ
उ० पु०	मि	मो

कर्मणि में इज्ज प्रत्यय और प्रेरणा में धावि प्रत्यय जोड़ने के अनन्तर धातु प्रत्यय जोड़ने से कर्मणि और प्रेरणा के रूप होते हैं।

गच्छ—गमन करना

वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छद्	गच्छन्ति
म० पु०	गच्छसि	गच्छद्
उ० पु०	गच्छामि	गच्छामो

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छिस्तद्, गच्छिद्विद्	गच्छिस्तन्ति, गच्छिद्विन्ति
म० पु०	गच्छिस्तसि, गच्छिद्विमि	गच्छिस्तद्, गच्छिद्विद्
उ० पु०	गच्छिस्तामि, गच्छिद्वामि	गच्छिस्तामो, गच्छिद्वामो

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छिन्	गच्छिन्
म० पु०	गच्छिन्	गच्छिन्
उ० पु०	गच्छिन्	गच्छिन्

विधि

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छिन्, गच्छेन्न (जा) गच्छे	गच्छिन्, गच्छेन्न (जा) गच्छे
म० पु०	गच्छिन्, गच्छेन्न (जा) गच्छे, गच्छेन्नासि	गच्छिन्, गच्छेन्न (जा) गच्छे, गच्छेन्नाह
उ० पु०	गच्छिन्, गच्छेन्न (जा) गच्छे, गच्छेन्नामि	गच्छिन्, गच्छेन्न (जा) गच्छे, गच्छेन्नामो

आज्ञा

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छत	गच्छन्तु
म० पु०	गच्छाहि, गच्छ	गच्छद्, गच्छेद्
उ० पु०	गच्छामि	गच्छामो

कर्मणि रूप

वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छिन्न	गच्छिन्नन्ति
म० पु०	गच्छिन्नसि	गच्छिन्नद्
उ० पु०	गच्छिन्नामि	गच्छिन्नमो

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छिजिस्सइ, गच्छिजिहिइ	गच्छिजिस्सन्ति, गच्छिजिह्वन्ति
म० पु०	गच्छिजिस्ससि, गच्छिजिह्विसि	गच्छिजिस्सइ, गच्छिजिहिइ
उ० पु०	गच्छिजिस्सामि, गच्छिजिह्वामि	गच्छिजिस्सामो, गच्छिजिह्वामो

भूतकाल

भूतकाल के सभी वचन और सभी पुरुषों में गच्छिजिस्सु रूप बनता है ।

विधि

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छिजिञ्ज, गच्छिज्जेञ्ज (जा)	गच्छिजिञ्ज, गच्छिज्जेञ्ज (जा)
	गच्छिज्जे	गच्छिज्जे
म० पु०	गच्छिजिञ्ज, गच्छिज्जेञ्ज (जा)	गच्छिजिञ्ज, गच्छिज्जेञ्ज (जा)
	गच्छिज्जेञ्जासि	गच्छिज्जेञ्जाइ
उ० पु०	गच्छिजिञ्ज, गच्छिज्जेञ्ज (जा)	गच्छिजिञ्ज, गच्छिज्जेञ्ज
	गच्छिज्जेञ्जामि	गच्छिज्जेञ्जामो

आज्ञा

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छिज्जउ	गच्छिज्जन्तु
म० पु०	गच्छिज्जाहि, गच्छिज्ज	गच्छिज्जइ, गच्छिज्जेइ
उ० पु०	गच्छिज्जामि	गच्छिज्जामो

प्रेरणार्थक

वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छावेइ	गच्छावन्ति, गच्छावेन्ति
म० पु०	गच्छावेसि	गच्छावेइ
उ० पु०	गच्छावेमि	गच्छावेमो

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छाविस्सइ, गच्छाविहिइ	गच्छाविस्सन्ति, गच्छाविह्वन्ति
म० पु०	गच्छाविस्समि, गच्छाविह्विसि	गच्छाविस्सइ, गच्छाविहिइ
उ० पु०	गच्छाविस्सामि, गच्छाविह्वामि	गच्छाविस्सामो, गच्छाविह्वामो

भूतकाल

भूतकाल के सभी पुरुष और सभी वचनों में गच्छार्थिभु रूप होता है ।

विधि

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छावेज्, गच्छारेजा गच्छाविज्, गच्छाविजा	गच्छावेज्, गच्छाविज् गच्छावेजा, गच्छाविजा
म० पु०	गच्छावेज्, गच्छाविज् गच्छावेजा, गच्छाविजा गच्छावेजासि	गच्छावेज्, गच्छाविज् गच्छावेजा, गच्छाविजा गच्छावेजाइ
उ० पु०	गच्छावेज्, गच्छाविज् गच्छावेजा, गच्छाविजा गच्छावेजामि	गच्छाविज्, गच्छावेज् गच्छाविजा, गच्छावेजा गच्छावेजामो

आज्ञा

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छावेड	गच्छाविन्तु, गच्छावेन्तु
म० पु०	गच्छावेहि	गच्छावेह
उ० पु०	गच्छावेमि	गच्छावेमो

अस—सत्ता

वर्तमान

एकवचन	बहुवचन
अस्ति	सन्ति
सि	इ
असि, मि	मो

आज्ञा में सभी पुरुष और सभी वचनों में अशु और भूतकाल में प्रथम पुरुष और मध्यम पुरुष के सभी वचनों में अस्ति और आसी तथा उत्तम पुरुष के एक वचन में आसि, आसी और बहुवचन में आसिमो रूप पन्ते हैं ।

कुछ धातुरूपों का संकेत

धातु	अर्थ	कर्त्तरिरूप	कर्मणि	द्रेरणा
अच्छ	बैठना	अच्छइ	अच्छिञ्चइ	अच्छारेइ
अण	जानना, आवाज करना	अणइ	अणिञ्चइ	अणायेइ
आ + अण	उच्छ्वास महण करना	आणमइ	आणमिञ्चइ	आणमायेइ

अय	गमन करना	अयइ	अइजइ	आयावेइ
उव + अय	उपासना करना	उवायइ	उवाइजइ	उयायावेइ
इ	गमन करना	इइ	इजइ	इभावेइ
अइ + इ	उल्लंघन करना	अईति	अईजइ	अईवेइ
उव + इ	उदय होना	उवेइ	उविजइ	उवावेइ
प + इ	परलोक गमन	पेचइ	पेचिजइ	पेचावेइ
पति + इ	विश्वास करना	पत्तिपइ	पत्तिजइ	पत्तिआवेइ
वि + इ	व्यय करना	वेइ	वेइजइ	वेभावेइ
अहि + इ	अध्ययन करना	अहिजइ, अहीयइ	अहिजइ	अजभावेइ
इच्छ	इच्छा करना	इच्छइ	इच्छिजइ	इच्छावेइ
पडि + इच्छ	स्वीकृति करना	पडिच्छइ	पडिच्छिजइ	पडिच्छावेइ
उंच	कुटिलता करना	उंचइ	उंचिजइ	उंचावेइ
पलि + उंच	अपलाप करना	पलिउंचइ	पलिउंचिजइ	पलिउंचावेइ
उंज	योग करना	उंजइ	उंजिजइ	उंजावेइ
उव + उंज	उपयोग	उवउंजइ	उवउंजिजइ	उवउंजावेइ
वि + उंज	वियोग-वियुक्त करना	विउंजइ	विउंजिजइ	विउंजावेइ
आशरण	सुनता	आयज्ञइ	आयज्ञिजइ	आयज्ञावेइ
कप	आश्रयण	रसइ	कसिजइ	कसावेइ
फा	करना	फाइ	फाइजइ	फावेइ
कुण	करना	कुणइ	कुणिजइ	कुणावेइ
खा	खाना	खाइ, खायइ	खाइजइ	खावेइ
खम	सहना	खमइ	खमिजइ	खामेइ
गम	चलना	गमइ	गम्मइ	गमावेइ
आ + गम	आगमन	आगमइ	आगम्मइ	आगमावेइ
गा	गाना	गाइ	गिजइ, गीयइ	गानेइ
गिज्भ	आसक्ति	गिज्भइ	गिजिज्भइ	गिज्भावेइ
गिला	रत्नानि	गिलाइ	गिलाइजइ	गिलावेइ
गुर	उत्तम करना	गुरइ	गुरिजइ	गुरावेइ
घा	सूचना	जिग्धइ	घाइजइ	घावेइ
चिगिच्छ	चिद्विस्तार	चिगिच्छइ	चिगिच्छिजइ	चिगिच्छावेइ
चिणइ	चयन करना	चिणइ	चिजइ	चिणावेइ
उव + चिण	उपचयन	उवचिणइ	उवचिजइ	उवचिणावेइ

सम् + विण	संचय करना	संपिणइ	संपिणइ	संपिणारेइ
अं	घोलना	अंपइ	अपिणइ	अंसाणेइ
जय	जय—जीतना	जयइ	जपिणइ	जयाणेइ
परा + जय	हानना	पराजयइ	पराजयपिणइ	पराजयाणेइ
वि + जय	विजय करना	विजयइ	विजयिणइ	विजयाणेइ
जहा	स्थाग करना	जहइ, जहाइ	जहाइणइ	जहाणेइ
जा	जाना, उत्पन्न होना जाइ, जायइ		जाइणइ	जाणेइ, जायेइ
उत् + जा	ऊपर गमन करना	उत्जाइ	उत्जाइणइ	उत्जाणेइ
पति + भा + ज्ञ	प्रत्यागमन	पचाभाइ	पचापाइणइ	पचापाणेइ
ज्ञान	अवबोधन—जानना	जागाइ, जागइ	जागिणइ	जागाणेइ
उक्ता, क्तिना	ध्यान करना	भाभाइ, भायइ	भाभाइणइ	भाभाणेइ
ईम	काटना	इसइ	इतिणइ	ईसाणेइ
घी	आकाश में चलना	घीइ	घीइणइ	घीसाणेइ
उत् + घी	" "	उत्घीइ	उत्घीइणइ	उत्घीसाणेइ
दा	दाना	दाइ	दाइणइ	दाणेइ
तिप्प	दुःख देना, वृत्ति			
	तर्पण करना	तिप्पइ	तिप्पाइ	तिप्पाणेइ
गुम	सन्तोष करना	गुसइ	गुमिणइ	गोमेइ
तस	उद्वेग करना	तसइ	तसिणइ	तागेइ
धुण	स्मृति	धुणइ	धुमिणइ	धुमाणेइ
दण	दान देना	दणइ	दणिणइ	दणाणेइ
दव	धारण करना	दवइ	ददिणइ	ददाणेइ
सद् + दद	भङ्ग करना	सदइ	सददिणइ	सददाणेइ
दिस	देखना, देना	देइ	दितिणइ	दिपाणेइ
दुस	विरति, द्वेष	दुसइ	दुमिणइ	दुसाणेइ
देव	विक्राय	देवइ	देविणइ	देवाणेइ
धुग	केंपना, कम्पन	धुगइ,	धुगण	धुगाणेइ
नम	नम्र होना, प्रणम			
	करना	नमइ, णमइ	नमिणइ	नामेइ
नस्त	नाश होना	नसइ	नासिणइ	नासेइ
ने	छे जाना	नेइ	निणइ	नेसाणेइ
न्हा	स्नान करना	णहाइ	णहविणइ	णहाणेइ

पज्ज	गमन करना	पज्जइ	पज्जिज्जइ	पज्जापेइ
उद् + पज्ज	उत्पत्ति होना	उप्पज्जइ	उप्पज्जिज्जइ	उप्पज्जापेइ
णि + पज्ज	निष्पत्ति	णिप्फज्जइ	णिप्फज्जिज्जइ	निप्फज्जापेइ
पड	पतन—गिरना	पडइ	पडिज्जइ	पाडेइ
पा	पीना	पिवइ	पाइज्जइ	पजेइ
पुच्छ	पूछना	पुच्छइ	पुच्छिज्जइ	पुच्छेइ
बंध	बंधन	बंधइ	बंधिज्जइ	बंधावेइ
वीइ	भयभीत होना	भीमइ	धीहिज्जइ	धीइवेइ
भव	सत्ता—होना	भवइ	भविज्जइ	भावेइ
भिद्	विदीर्ण करना	भिद्इ	भिदिज्जइ	भिदावेइ
भुंज	भोजन करना	भुंजइ	भुज्जइ	भुंजावेइ
माइ	प्रमाद करना	माइइ	मादिज्जइ	मादावेइ
मिल	मिलना	मिलइ	मिलिज्जइ	मिलावेइ
रंभ	आरंभ करना	रंभइ	रंभिज्जइ	रंभावेइ
रिम	गमन करना	रिमइ	रिइज्जइ	रियावेइ
रुद	रोना	रोवइ	रुदिज्जइ	रुदावेइ
लभ	प्राप्त करना	लभइ	लब्भइ	लाभेइ
लुण	छेदना, काटना	लुणइ	लुणिज्जइ	लुणावेइ
लुभ	खोभ करना	लुब्भइ	लुभिज्जइ	लोभेइ
सुण	सुनना	सुणेइ, सुणइ	सुव्वइ	सुणापेइ
वच्च	बोलना	वच्चइ	उच्चइ	वच्चावेइ
वह	पहुँचाना	वहइ	वुज्जइ	वहावेइ
वा	हवा चलना	वाइ	वाईज्जइ	वावेइ
सास	अनुशासन	सासइ	सासिज्जइ	सासावेइ
सिर	बनाना, निर्माण करना	सिरइ	सिरिज्जइ	सिरावेइ
सिञ्च	सीना, बांधना	सि वइ	सिञ्चिज्जइ	सिञ्चावेइ
सीय	शोरु करना, विपाद करना	सीयइ	सीइज्जइ	सीयावेइ
सुय	साना	सुवइ, सुयइ	सुइज्जइ	सुयावेइ
सुस्सुस	सेवा करना	सुस्सुमइ	सुस्सुसिज्जइ	सुस्सुसावेइ
दण	हिंसा करना	दणइ	दम्मइ	दणावेइ

कर	करना	करेइ	किञ्जइ, कञ्जइ	कारेइ, कारावेइ
अञ्च	पूजा	अचेइ	अचिञ्जइ	अञ्चावेइ
कास	प्रकाश, चमरुना	कासेइ	कासिञ्जइ	कासावेइ
किलाम	इलानि करना	किलामेइ	किलामिञ्जइ	किलामावेइ
तक्क	कल्पना करना	तक्केइ	तक्किञ्जइ	तक्कावेइ
ताड	ताडना करना	ताडेइ, ताडेइ	ताडिञ्जइ	ताडावेइ, ताडावेइ
दा	देना	देइ	दिञ्जइ	दाणेइ
दीव	दीसि	दीवेइ	दीविञ्जइ	दीयावेइ
धार	धारण करना	धारेइ	धारिञ्जइ	धारावेइ
उस	निन्दा करना	उसेइ, उसइ	उसिञ्जइ	उसावेइ
फइ	फइना	कहेइ, कइइ	कहिञ्जइ	कहावेइ
वि + कीर	त्रिकीर्ण करना	विक्खिरइ	विम्प्लीरिञ्जइ	विम्प्लीरावेइ
क्किण	खरीदना	क्किणेइ, क्किणइ	क्किणिञ्जइ	क्किणावेइ
वि + क्किण	बेचना	विक्कणेइ	विक्कणिञ्जइ	विक्कणावेइ
खिर	प्रेरणा	खिवेइ	खिप्पइ	खेवावेइ
खुभ	शुग्ध होना	खुभइ	खुभिञ्जइ	खोभेइ
गिणइ	ग्रहण करना	गेणइ	गेण्णइ, गिण्णइ	गिण्णावेइ
चल	हल-चल करना	चलइ, चलेइ	चळिञ्जइ	चाळेइ
चिट्ठ	ठहरना	चिट्ठइ	चिट्ठिञ्जइ	चिट्ठावेइ
जर	जीर्ण होना	जेरइ, जरइ	जेरिञ्जइ	जरावेइ
धा	धारण, पोषण	धाइ	धोयण्	धायेइ
पास	देखना	पासेइ	पासिञ्जइ	पासावेइ
भास	भाषण करना	भासइ	भासिञ्जइ	भासावेइ
मन्न	समझना	मन्नेइ	मन्निञ्जइ	मन्नावेइ

कृदन्त

(८७) अर्धमागधी में सम्बन्धार्थक क्त्वा प्रत्यय के स्थान में त्ता, तु, त्ण हु, उँ, ऊण, ह्य, इत्ता, इत्ताणं, एत्ताणं, इत्तु, च आदि प्रत्यय होते हैं । यथा—

इत्ता—कर + इत्ता = करित्ता, च + इत्ता = चइत्ता, पास + इत्ता = पासित्ता, विउट्ट + इत्ता = विउट्टित्ता, एभ + इत्ता = एभित्ता ।

एत्ता—कर + एत्ता = करेत्ता, पास + एत्ता = पासेत्ता ।

एत्ताणं—पास + एत्ताणं = पासेत्ताणं, कर + एत्ताणं = करेत्ताणं ।

इत्ताणं—पास + इत्ताणं = पासित्ताणं, कर + इत्ताणं = करित्ताणं, चइ + इत्ताणं = चइत्ताणं, भुञ्ज + इत्ताणं = भुञ्जित्ताणं ।

इत्तु—दुरुद + इत्तु = दुरुहित्तु, जाण + इत्तु = जाणित्तु, वध + इत्तु = वधित्तु ।
 चा—क्रि + चा = क्रिचा, ण + चा = णचा, सो + चा = सोचा, भुज + चा =
 भोचा, वय + चा = चेचा ।

इया—परिजाण + इया = परिजाणिया, दुरुद + इया = दुरुदिया ।

दु—क + ददु, साह + दु = साहदु, अवह + द्दु = अवहदुदु ।

उं—सुण—सो + उं = सोउं, दद + उं = ददुं, छोद + उं = छोउं ।

तूण—भुज + तूण—भोत्तूण, सुंच + तूण = मोत् + तूण = मोत्तूण, सुत्तूण ।
 शह + तूण—धेत्तूण ।

ऊण—अभिवाह + ऊण = अभिवाहऊण, छम + ऊण = छमूण, सुण + ऊण =
 सोऊण, द्रुम + ऊण = छोहूण, नि + ऊण = निऊण; गम + ऊण = गामिऊण, निः +
 चिण + ऊण = निच्छिऊण ।

हेत्वर्थ कृदन्त

(८८) हेत्वर्थक तुमुन् के अर्थ में इत्तप, इत्तते, तुं, उं प्रत्यय होते हैं ।

इत्तए—कर + इत्तए = करित्तए, पत् कर + पत्तए = पकरित्तए, वागर + पत्तए =
 वागरित्तए, विप्रगरित्तए, कारवेत्तए, कारावित्तए, कारावेत्तए ।

इत्तत्ते—उवलाय + इत्तते = उनसमित्तते ।

तुं—वच् + तुं = वत्तुं ।

उं—वारस + उं = वास + उं = वासिउं, वरित्सेउं

वर्तमानकृदन्त

वर्तमान अर्थ में प्राकृत के समान स्त और माण प्रत्यय अर्धमागधी में भी होते
 हैं । यथा—

न्त—कर + न्त = करिन्तो, करेन्तो; गाय + न्त = गायन्तो, जणय + न्त =
 जणयन्तो, समावयन्तो ।

माण—पडज + माण = पडजमाणो, विहाय + माण = विहायमाणो, चिप्प +
 माण = चिप्पमाणो, परिगिजक + माण = परिगिजकमाणो, जाय + माण = जायमाणो,
 आदिय + माण = आदियमाणो ।

(८९) फकारान्त धातु के त प्रत्यय के स्थान में ड होता है । यथा—

कृ + त = कड, म + त = मड, अभिहड, वाग्ड, संबुड, विषड, विस्थड ।

जैन महाराष्ट्री

अर्धमागधी के आगम ग्रन्थों के अतिरिक्त चरित, कथा, दर्शन, तर्क, ज्योतिष, भूगोल और स्तोत्र आदि विषयक प्राकृत का पिछला साहित्य है। इस साहित्य की भाषा को वैयाकरणों ने जैन महाराष्ट्री नाम देकर महाराष्ट्री और अर्धमागधी से पृथक् इस भाषा का अस्तित्व बताया है। यद्यपि काव्य और नाटकों की भाषा से यह भाषा बहुत कुछ अंशों में मिलती-जुलती है, फिर भी यह एक स्वतन्त्र भाषा है। इसका रूप महाराष्ट्री और अर्धमागधी के मिश्रण से निर्मित हुआ है। आगम ग्रन्थों पर रचे गये बृहत्सल्पभाष्य, व्यवहारसूत्रभाष्य, विशेषावश्यकभाष्य एवं निरीधचूणि प्रभृति टीका और भाष्य ग्रन्थों में भी इस भाषा का प्रयोग पाया जाता है। धर्मसंग्रहणो, समराइक्षकहा, कुवलयमाला वसुदेवहिण्डी, पञ्चमचरिय प्रभृति ग्रन्थों में भी इसी भाषा का प्रयोग हुआ है। हमें ऐसा लगता है कि काव्यों और नाटकों की भाषा से यह जैन महाराष्ट्री प्राचीन है। अर्धमागधी की भाषागत प्रवृत्तियों में थोड़ा-सा परिवर्तन होकर जैन महाराष्ट्री का विकास हुआ होगा और इसी जैन महाराष्ट्री से व्यंजन वर्णों का लोप होकर काव्य और नाटकों की महाराष्ट्री का प्रादुर्भाव हुआ है। जैन महाराष्ट्री की मूल-प्रवृत्ति अर्धमागधी से सम्बन्ध रखती है। इसमें अधिक व्यंजनों का लोप नहीं होता है। य और व जैसे मृदुल व्यंजनों का अत्यधिक स्थान प्राप्त है। अर्धमागधी और शौरसेनी के समान इस भाषा की मूलप्रवृत्ति पर संस्कृत का पर्याप्त प्रभाव लक्षित होता है।

ध्वनिपरिवर्तन सम्बन्धी जैन महाराष्ट्री की निम्न विशेषताएँ हैं :—

(१) क के स्थान में अनेक स्थलों में ग पाया जाता है। यथा—

सावम < श्रावक—क के स्थान पर ग हुआ है।

णिगरं < निकरम्—मध्यवर्ती क के स्थान पर ग।

तित्थगरो < तीर्थकरः—रु के स्थान पर ग।

लोगो < लोरुः— " "

आगरिसो < आरुपः— " "

आगारो < आकारः— " "

उवासगो < उपासकः— " "

दुगुल्लं < दुगुल्लम्— " "

गेदुवर् < कन्दुवम्— " "

इस शब्द का विकल्प से जैन

महाराष्ट्री में कन्दुक रूप भी पाया जाता है।

(२) लुस व्यंजनों के स्थान पर य क्षुति हांती है। यथा—

यद्धानयं < कथानकम्—यहाँ लुस क के स्थान पर य क्षुति ;

भगयया < भगयता—लुस त के स्थान पर य।

- चेयणा ऽ चेतना—लुस त के स्थान पर य ।
 भणियं ऽ भणितम्— " " "
 वितार्यं ऽ विपार्यं—लुस द के स्थान पर य ।
 महारायस्स ऽ महाराजस्य—लुस ज के स्थान पर य ।
 रयथं ऽ रजतम्—लुस ज और त के स्थान पर य ।
 पथावईं ऽ प्रजापतिः—लुस ज के स्थान पर य ।
 गया ऽ गदा—लुस द के स्थान पर य ।
 कपरगहो ऽ कचप्रहः—लुस च के स्थान पर य ।
 कायमणो ऽ काचमणिः— " " "
 छावणं ऽ छावण्यम्—लुस व के स्थान पर य ।
 मयणो ऽ मदनः—लुस द के स्थान पर य ।

यह प्रवृत्ति काव्य और नाटकों की भाषा में नहीं पायी जाती है और न अर्धमागधी में सार्वत्रिक मिलती है। महाराष्ट्री में व्यञ्जनों का छोप होने पर मात्र स्वर शेष रह जाते हैं। य ध्रुति की प्रवृत्ति जैन महाराष्ट्री का प्रमुख चिह्न है।

(३) शब्द के आदि और मध्य में भी ण की तरह न रह जाता है। यह प्रवृत्ति अर्धमागधी की देन है। यथा—

नाणुमयमेपसिं ऽ नानुमतमेतयोः—आदि न ज्यों का त्यों स्थित है।

नियमोचवसिहिं ऽ नियमोपवासैः— " "

नियट्टीप ऽ निट्टय— " "

नूणमेसा ऽ नूनमेपा— " "

भक्तिनिभरा ऽ भक्तिनिभरा—मध्य न ज्यों का त्यों स्थित है।

अणुचविय ऽ अनुजाप्य— " "

कडमत्रया ऽ कथमन्यथा— " "

अलहनिहा ऽ अलधनित्रा— " "

उववत्राओ ति ऽ उपपत्रे इति— " "

अग्रहा ऽ अग्रथा— " "

कन्नयाप ऽ कन्यकायाः— " "

पत्रिपत्रा ऽ प्रतिपत्रा—अन्तिम न ज्यों का त्यों स्थित है।

नुवत्रा एसा ऽ निपत्रा एषा—आदि और अन्तिम न ज्यों का त्यों स्थित है।

नुवधो ऽ निपत्रः— " " "

समुपपत्रा ऽ समुत्पत्रा—अन्तिम न ज्यों का त्यों स्थित है।

उपपत्रो ऽ उपपत्रः— " " "

विवाहजत्रो ऽ विवहपत्रः— " " "

(४) यथा और यान् के स्थान में अमनः जहा और जाय को तरह अहा और धाय भी होते हैं।

(१) कुछ पदों में समास होने पर उत्तरपद के पूर्व म् का आगम हो जाता है ।
यथा—

अन्नमन्न < अन्न + अन्न—उत्तर पद के अन्न के पूर्व मकारागम ।

एगमेग = एग + एग—उत्तर पद एग के पूर्व मकारागम ।

चित्तमाणंदियं = चित्त + आणंदियं = उत्तर पद आणंदियं के पूर्व मकारागम ।

(६) पाय, माय, तेगिच्छिग, पडुप्पण, साहि, सुहुम आदि शब्दों का पत्, मेत् चेद्वच्छय आदि की तरह उपयोग होता है ।

(७) तृतीया के एकवचन में अर्धमागधी के समान कहीं-कहीं सा का प्रयोग भी पाया जाता है । और प्रथमा विभक्ति के एकवचन में महाराष्ट्री के समान ओ पाया जाता है । यथा—

मन + सा = मणसा < मनसा;—जिण—जिणो ।

वय + सा = वयसा < वचसा; वीर—वीरो ।

काय + सा = कायसा < कायन; गोयम = गोयमो ।

(८) आइक्खइ, कुब्बइ, सडइ, सोछइ, वोसिइ प्रवृत्त धातुरूप उपलब्ध होते हैं ।

(९) वरवा प्रत्यय के रूप अर्धमागधी के धा और चु प्रत्यय जोड़ने से भी बनाये जाते हैं । महाराष्ट्री तूण और ऊण भी पाये जाते हैं । यथा—

सुण + धा = सो + धा = सोधा < भुत्वा ।

छ + धा = कि + धा = किधा < कृत्वा ।

वंदित्तु—वंदि + तु = वंदित्तु < वंदित्वा ।

आलोचि + ऊण = आलाचिऊण < आलोच ।

चवि + ऊण = चविऊण < च्युत्वा ।

सुच् + तूण—मोत् + तूण = मोत्तूण < मुक्त्वा ।

(१०) त् प्रत्ययान्त रूप ड में परिवर्तित विसलावी पड़ते हैं । यथा—

कड < इत्तम्—त के स्थान पर ड ।

बावड < व्यापुत्तम्— " "

संबुड < संबुत्तम्— " "

(११) अद् धातु का सभी काल, वचन और सभी पुरुषों में अर्धमागधी के समान आसी रूप पाया जाता है । सभी कालों के बहुवचन में महाराष्ट्री के समान अहेसी रूप भी उपलब्ध होता है ।

अवशेष नियम प्राकृत के समान ही जैन महाराष्ट्री में प्रवृत्त होते हैं ।

पैशाची

पैशाची एक बहुत प्राचीन प्राकृत भाषा है। इसकी गणना पालि, अर्धमागधी और शिलाखेखीय प्राकृतों के साथ की जाती है। चीनी-तिब्बत के खरोष्टी शिलाखेखों में पैशाची की विभेपताएँ देखने को मिलती हैं। डा० जार्ज ग्रियर्सन के अनुसार पैशाची पालि का एक रूप है, जो भारतीय आर्यभाषाओं के विभिन्न रूपों के साथ मिश्रित हो गयी है।

पैशाची की प्रकृति शोरसेनी है। मार्कण्डेय ने पैशाची भाषा को कैकय, शौरसेन और पञ्जाल इन तीन भेदों में विभक्त किया है। अतः सिद्ध होता है कि पैशाची भाषा पाण्ड, कान्ची और कैकय आदि प्रदेशों में बोली जाती थी। अब यहाँ यह आशंका उत्पन्न होती है कि इतने दूरवर्ती इन तीनों प्रदेशों में एक ही भाषा का व्यवहार क्यों और कैसे होता था ? इसका उत्तर यह हो सकता है कि पैशाची भाषा एक जातिविशेष की भाषा थी। यह जाति जिस जिस स्थान पर गयी, उस उस स्थान पर अपनी भाषा को भी लेती गयी। अनुमान है कि यह कैकय देश में उत्पन्न हुई और बाद में उसीके समीपस्थ शूरसेन और पञ्जाब तक फैल गयी। डा० सर जार्ज ग्रियर्सन के अनुसार पैशाची का आदिम स्थान उत्तर-पश्चिम पञ्जाब अथवा अफगानिस्तान प्रांत है। यहाँ से इस भाषा का अन्यत्र विस्तार हुआ है। डा० हार्नलि का मत है कि अनार्य लोग आर्यजाति की भाषा का जिस विकृत रूप में उच्चारण करते थे, वह विकृत रूप ही पैशाची भाषा का है। दूसरे देशों में जो कहा जा सकता है कि द्राविड भाषा से प्रभावित आर्यभाषा का एक रूप पैशाची प्राकृत है। पंजाब, सिन्ध, बिलोचिस्तान और काश्मीर की भाषाओं पर इसका प्रभाव आज भी लक्षित होता है।

वाग्भट्ट ने पैशाची को भूतभाषा कहा है। पिशाच नाम की एक जाति प्राचीन भारत में निवास करती थी। उसकी भाषा को पैशाची कहा गया है। पैशाची की व्याकरण सम्बन्धी निम्न विभेपताएँ हैं—

(१) पैशाची शब्दों में आदि में न रहने पर, वगों के तृतीय और चतुर्थ वर्णों के स्थान पर उसी वर्ण के क्रमशः प्रथम और द्वितीय वर्ण हो जाते हैं। यथा—

गकनं < गगनम्—ग के स्थान पर क हुआ है।

मेखो < मेघ—स्वर्ग के चतुर्थ वर्ण घ के स्थान पर उसी वर्ण का द्वितीय वर्ण ख हुआ है।

राचा < राभा—चर्या के तृतीय वर्ण ज के स्थान पर उमी वर्ग का प्रथम वर्ण घ हुआ है ।

गिञ्जरो < गिञ्जरो < निर्दोरः—ञ्क के स्थान पर ञ् ।

दसवदनो < दसवदनो < दशवदनः—मध्यवर्ती द के स्थान पर त ।

सलफो < सलभो < शलभः—भ के स्थान पर फ ।

(२) पैशाची में ज्ञ के स्थान पर ज्ञ आदेश होता है^१ जैसे—

यज्जा < यज्ञा—ज्ञ के स्थान पर ज्ञ हुआ है ।

सज्जा < संज्ञा— ” ”

सब्बज्जो < सर्वज्ञः— ” ”

विज्जानं < विज्ञानम्— ;, ”

(३) राजन् शब्द के रूपों में जहाँ-जहाँ झ रहता है, यहाँ-यहाँ झ के स्थान में विकल्प से चिञ् आदेश होता है^२ यथा—

राचिपा छपितं, रज्जा छपितं < राज्ञा छपितम्—विकल्प से ज्ञ के स्थान में चिञ् आदेश होने पर राचिना और रिक्लराभाव में झ के स्थान पर ज्ञ आदेश होने से रज्जा रूप बना है ।

राचिजो धनं, रज्जो धनं < राज्ञो धनम् ।

(४) पैशाची में न्य और ण्य के स्थान में ज्ञ आदेश होता है^३ यथा—

कञ्जका, अभिमञ्जू < कन्वा, अभिमन्वुः—न्य के स्थान पर ज्ञ ।

कुञ्जहं < कुन्वाहम्— ” ”

(५) पैशाची में णकार का नकार होता है^४ यथा—

गुणगणयुक्तो < गुणगणयुक्तः—शौरसेनी के ण के स्थान पर न ।

गुणेन < गुणेन— ” ”

(६) पैशाची में तरार और दमार के स्थान में तरार हो जाता है^५ यथा—

भगवती, पश्वरी < भगवती, पार्वती—तकार के स्थान त हुआ है ।

मतनपश्वसो < मदनपरवशः—द के स्थान पर न आदेश हुआ है ।

सतनं < सदनम्— ” ”

दामोत्तरो < दामोदरः— ” ”

होतु < होदु—शौरसेनी के द के स्थान पर तु हुआ है ।

(७) पैशाची में छ के स्थान ङकार हो जाता है^६ यथा—

१. जो ङ पैशाच्याम् दा४।३०३ हे० २. राज्ञो वा चिञ् दा४।३०४ ।
 ३. न्य-ण्योब्जः दा४।३०५ । ४. यो नः दा४।३०६ ।
 ५. तदोस्तः दा४।३०७ । ६. लो ङः दा४।३०८ ।

सखिळं < सखिलम्—ख के स्थान पर छ हुआ है ।

कमळं < कमलम्—

(८) पैशाची श और प के स्थान स आदेश होता है । यथा—

सोभति < सोभते—श के स्थान पर स हुआ है ।

सोभनं < सोभनं—

ससी < सशी—

विसमो < विपमः—मूर्धन्य प के स्थान पर स हुआ है ।

विसानो < विषाणः—

(९) पैशाची में हृदय शब्द के यकार के स्थान में पकार हो जाता है । यथा—

हितपकं < हृदयकम्—द के स्थान पर त और य के स्थान प आदेश होता है ।

(१०) पैशाची में टु के स्थान पर विकल्प से तु आदेश होता है । यथा—

तुतुम्बकं, कुटुम्बकं < तुटुम्बकम् ।

(११) पैशाची में कहो-कहीं र्य, स्न और छ के स्थान में रिय, सिन और सट आदेश होते हैं । यथा—

भारिशा < भार्या—स्वरभक्ति के नियमानुसार र और य का पृथक्करण होकर इत्व हो गया है ।

सिनातं < स्नातम्—

कसटं < कष्टम्—

सनानं < स्नानम्—स्वरभक्ति के नियमानुसार स और न का पृथक्करण ।

सनेहो < स्नेहः—

(१२) पैशाची में यादश, तादश आदि के द के स्थान पर ति आदेश होता है । यथा—

यातिसो < यादशः—द के स्थान पर ति और श को स ।

तातिसो < तादशः—

भवातिसो < भवादशः—

अज्जातिसो < अन्यादशः—न्य के स्थान पर ज्ज और द को ति ।

युम्हातिसो < युष्मादशः—प्म के स्थान पर म्ह और द के स्थान पर ति ।

अम्हातिसो < अस्मादशः—स्म

(१३) पैशाची में शौरसेनी के ज के स्थान में च आदेश होता है । यथा—

वच्चं < कच्चं < कार्यम्—शौरसेनी के ज के स्थान पर च ।

(१४) पैशाची में शौरसेनी का मुञ्ज शब्द ज्यों का त्यों रह जाता है ।

मुञ्जो < सूर्यः—शौरसेनी में र्ज के स्थान में ज्ज आदेश होता है और पूर्वर्ती ऊकार को ह्रस्व होने से मुञ्ज बनता है । पैशाची में भी यही रूप पाया जाता है ।

(१५) पैशाची में स्वरों के मध्यवर्ती क, ग, च, ज, त, द, य और व का लोप नहीं होता । यथा—

छोक < छोक—क का लोप नहीं हुआ ।

हंगार < अंगार—ग का लोप नहीं हुआ है ।

पतिभास < प्रतिभास—घ के स्थान पर प और त का लोप नहीं हुआ ।

करणीय < करणीय—य ज्यों का त्यों रह गया है ।

सपथ < शपथ—प का लोप नहीं हुआ ।

(१६) पैशाची में ख, भ, और व के स्थान पर ह नहीं होता । यथा—

साखा < शाखा—श के स्थान पर स और ख के स्थान पर ह नहीं हुआ ।

पतिभास < प्रतिभास—भ के स्थान पर ह नहीं हुआ ।

सपथ < शपथ—प के स्थान में व भी नहीं हुआ और न य को ह ही हुआ ।

(१७) पैशाची में ट के स्थान पर ठ और ठ के स्थान पर ढ नहीं होता ।

यथा—भट < भट—ट के स्थान पर ट ही रह गया है ।

मठ < मठ—ठ के स्थान पर ठ ही रह गया है ।

(१८) पैशाची में रेफ के स्थान में ल और ह के स्थान में घ नहीं होता ।

यथा—गरुड < गरुड—र के स्थान में ल नहीं हुआ ।

रेफ < रेफ—

” ”

दाह < दाह—ह के स्थान में घ नहीं हुआ ।

शब्दरूप

(१९) पञ्चमी के एकत्रचन में आतो और आतु प्रत्यय होते हैं । यथा—

जिनातु, जिनातो ।

(२०) पैशाची में तद् और इदम् शब्दों में टा प्रत्यय सहित पुल्लिङ्ग में नेन और स्त्रीलिङ्ग में ताप् आदिष्ट होते हैं । यथा—

नेन कतस्मिन्नेन < तेन वृत्तस्मानेन अथवा शनेन ।

पूजितो च नाप् < पूजितश्चानया ।

वीर शब्द के रूप

एकत्रचन

बहुवचन

प० वीरो

वीरा

वी० वीरं

वीरे, वीरा

त० वीरेन, वीरेनं

वीरेदि, वीरेदि

च०	वीराय, वीरस्स	वीरान; वीरानं
प०	वीरातो, वीरातु	वीरात्तो, वीराहितो; वीरायुन्तो, वीरेहितो, वीरेयुन्तो
छ०	वीरस्स	वीरान, वीरानं
स०	वीरंसि, वीरम्मि	वीरेसु, वीरेसुं

इकारान्त इसि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	इसी	इसउ, इसभो, इसिनो
वी०	इसिं	इसिभो, इसी
त०	इसिना	इसीदि, इसीदिं
च०	इसिनो, इसिस्स	इसीन, इसीनं
प०	इसितो, इसिस्स	इसीओ, इसीउ, इसीहितो, इसिसुंतो
छ०	इसिनो, इसिस्स	इसीन, इसीनं
स०	इसिसि	इसीसु, इसीसुं

इसी प्रकार अग्नि, सुनि, बोहि और कवि आदि इकारान्त शब्दों के रूप होते हैं ।

भानु शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प०	भानू	भानुनो, भानपो, भानूओ
वी०	भानुं	भानुनो, भानू
त०	भानुना	भानूदि, भानूदिं
च०	भानुनो, भानुस्स	भानून, भानूनं
प०	भानुतो, भानुतु	भानुत्तो, भानूओ, भानूउ भानूहितो, भानुसुंतो
छ०	भानुनो, भानुस्स	भानून, भानूनं
स०	भानुंसि, भानुम्मि	भानूसु, भानूसुं

नपुंसकलिङ्ग के शब्दरूप शौरसेनी के समान होते हैं ।

सर्वादि गण के शब्दों के रूप पञ्चमी विभक्ति एकवचन को छोड़, अवशेष रूप शौरसेनी के समान ही होते हैं । पञ्चमी विभक्ति एक वचन में अतो और अतु प्रत्यय जोड़े जाते हैं ।

इम < इदम् शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	अयं, इमो	इमे
वी०	इमं, इजं, नं	इमे, इमा, ने, ना

त०	इमेन, इमेन, नेन	इमेदि, इमेदि, इमेदि
च०	इमस्त, अस्व, से	सि, इमेसि, इमान, इमानं
पं०	इमात्, इमातो	इमघो, इमाउ, इमाओ इमाहितो, इमागुं तो
छ०	इमस्व, अस्व, से	इमान, इमानं
स०	इमरिस, इममि, अरिस, इत्	इमेत्, इमेत्

एअ < एतद्

	एकवचन	बहुवचन
प०	एत्, एतो	एते
वी०	एत्	एते, एना
त०	एतेन, एतिना	एतेदि, एतेदि, एतेदि
च०	एतस्त	एतेसि, एतान
पं०	एतातो, एतात्	एमाउ, एमाओ, एमादि, एमाहितो, एएहितो
छ०	एतस्त	एतेसि, एतान
स०	एत्थ, अयमि, एअरिस	एतेत्, एएत्

राया < राजन्

	एकवचन	बहुवचन
प०	राय	रायानो, राइनो
वी०	राइनं रायं	राये, राया, रायिनो, रण्यो
त०	राचिना, राचिण्या	राइदि, राइदि, राइदि
च०	राचिनो, रण्यो	राइन, राइनं, रायान, रायानं
पं०	रायातो, रायन्तु, राचिओ, रण्यो	राइनो, राइओ, राइहितो, राइसुं तो
छ०	राचिनो, रण्यो	राइन, राइनं, रायान, रायानं
स०	राचिजि, रण्यि	रायेत्, रायेसुं, राइत्, राइसुं
सं०	रायं, राया, रायो	रायानो, राइनो

क्रियारूप

(२०) पैशाची में शौरसेनी के दि और दे प्रत्ययों के स्थान पर ति आर ते प्रत्यय होते हैं ।

(२१) पैशाची में भविष्यत्काल में रित प्रत्यय के स्थान पर एव्य प्रत्यय जोड़ा जाता है । यथा— हुवेय < भविष्यति ।

(२२) पैशाची में भाव और कर्म में ईअ तथा इन् के स्थान में इव्य प्रत्यय होता है ।

हस धातु—वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसति, हसेते	हसन्ति, हसंते, हसिरे, हसेहरे
म० पु०	हससि, हससे	हसिस्वा, हसध, हसद्
उ० पु०	हसमि, हसेमि	हसमो, हससु, हसम

कृदन्त

वत्वा प्रत्यय के स्थान में त्, स्त्वन और खून प्रत्यय होते हैं । यथा—
 पठित्त्न < पठित्वा—पठ धातु में त् प्रत्यय जोड़ने से ।
 गन्त्तुन < गत्वा—गम् धातु में त् प्रत्यय जोड़ने से ।
 नत्थून < नष्ठा—नश् धातु में त्थून प्रत्यय जोड़ने से ।
 सत्थून < दृष्ठा—दृश् धातु में त्थून प्रत्यय जोड़ने से ।
 नद्दून < नष्ठा—नश् धातु में द्धून प्रत्यय जोड़ने से ।
 तद्दून < दृष्ठा—दृश् धातु में धून प्रत्यय जोड़ने से ।

पैशाची के कुछ शब्द

पैशाची	संस्कृत	ध्वनिपरिवर्तन
मेलो	मैयः	घ के स्थान पर ख हुआ है ।
गरुनं	गरुन्म्	ग के स्थान पर क ।
राचा	राजा	ज के स्थान पर च ।
णिच्छरो	निर्भरः	र्भ के स्थान पर छ ।
वसिं	वडिन्म्	ड के स्थान पर ट ।
दशरत्तनो	दशवदनः	द के स्थान पर त ।
माधयो	माधवः	ध के स्थान पर य ।
गोत्रिन्तो	गोत्रिन्दः	द के स्थान पर त ।
केसरो	केदारः	श के स्थान पर स ।
सरफमं	सरभसं	भ के स्थान पर फ ।
सल्लो	सल्लभः	” ”
संगामो	संग्रामः	म के स्थान पर ग ।
पिर	इर	इव के स्थान पर पिव आदेश ।
तलुनी	तलुनी	र के स्थान पर ल ।
कसटं	कटम्	स्वरभक्ति के नियम से ट का वृथस्करण ।
सदानं	स्नानम्	” स्न का ”
सनेदो	स्नेहः	” ” ”
भारिभर	भार्यो	” र्यां का ”

विज्जातो	विज्ञातः	उ के स्थान पर पाठिके समान ङ ।
सव्वज्जो	सर्वज्ञः	” ”
कञ्जा	कन्या	न्य के स्थान पर ङ ।
वच्चं	कार्यम्	र्य के स्थान पर च ।
दातूनं	दत्त्वा	वत्त्वा के स्थान पर तून ।
घेत्तूनं	गृहीत्वा	” ”
हित्तभकं	हृदयकम्	हृदयक के स्थान पर हित्तभकं आदेश ।



चूलिका पेशाची

यद्यपि वररुचि आदि वैयाकरणों ने पेशाची के लक्षणों के अन्तर्गत ही चूलिका पेशाची का अनुशासन बताया है; पर हेमचन्द्र और पद्मभापाचन्द्रिका के कर्त्ता पं० छद्मीधर ने इस भाषा का भी स्वतन्त्र अस्तित्व मानकर इसकी विशेषताओं का निर्देश किया है। चूलिका पेशाची के कुछ उदाहरण हेमचन्द्र के कुमारपाल और जयसिंह सूरि के हम्मीरमर्दन नामक नाटक तथा पद्मभापा स्तोत्रों में पाये जाते हैं। यह सत्य है कि चूलिका पेशाची पेशाची का ही एक भेद है। इसमें पेशाची की अपेक्षा अधिक विशेषताएँ दृष्टिगोचर नहीं होतीं। ध्वनि परिवर्तन सम्बन्धी निम्न विशेषताएँ हैं।

(१) चूलिका पेशाची में र के स्थान में विकल्प से ल होता है। यथा—

गोली < गोरी—र के स्थान पर ल।

चलन < चाण—र के स्थान पर ल और ण को न।

लुद < रुद—र के स्थान पर ल, संयुक्त रेफ का लोप और द को द्वित्व।

लाचा < राजा—र को ल और ज को च।

लामो < रामो—र के स्थान पर ल।

हलं < हरं—र के स्थान पर ल।

(२) चूलिका पेशाची में वर्ग के तृतीय और चतुर्थ अक्षरों के स्थान पर प्रथम और द्वितीय अक्षर होते हैं। यथा—

मकनो < मार्गणः—संयुक्त रेफ का लोप और ग के स्थान में क तथा ण को द्वित्व और ण को न।

नको < नगः—ग के स्थान पर क।

मेखो < मेघः—घ के स्थान पर ख।

वखो < व्याघ्रः—संयुक्त य का लोप तथा संयुक्त रेफ का लोप और घ को ख।

चीमूतो < जीमूतः—ज के स्थान में च।

छो < क्रः—झ के स्थान पर छ और रेफ को ल।

तयकं < तडाकं—ड के स्थान में ट।

टमलुको < टमरुकः—ड को ट और रु के स्थान में ल।

काडं < गावम्—ग के स्थान में क।

ठरुका < डक्का—ड के स्थान में ठ।

मवनो < मदनः—द के स्थान में त।

चामोवखो < दामोदरः—द के स्थान में त और रेफ को ल।

मधुलो < मधुरो—ध के स्थान थ और रैफ को ल ।

थाळा < धारा—ध के स्थान में थ और रैफ को ल ।

पादपो < पादपः—व के स्थान में प और ड को ट ।

पालो < घाळः—व के स्थान पर प ।

लफतो < रभतः—र के स्थान पर ल और भ के स्थान पर फ ।

लंफा < रंभा—

फवो < भवः—भ के स्थान पर फ ।

फरुवती < भगरती—भ के स्थान पर फ और ग को क ।

पनमध < प्रणमत—ण के स्थान में न और त को थ ।

नरतत्पनेसुं < नरत्तर्पणेसुं—र्ध के स्थान पर तत्प और ण को न ।

चलदरग < चरणाम—र को ल, ण को न और संयुक्त रेफ का लोप और ग को द्वित्व ।

पशातस < पकादश—द को त और श को स ।

तनुथलं < तनुधरं—ध के स्थान पर थ और र को ल ।

पानुवलेनेन < पादोत्त्रेणेण—द को ल, क्ष के स्थान पर वल ।

यसुधा < वसुधा—ध को थ ।

नमथ < नमत—त को थ ।

(३) चूलिका पैशाची में आदि अक्षरों में उक्त नियम लागू नहीं होता । यथा—

गती < गतिः—ग के स्थान पर हेमचन्द्र के मत से क नहीं हुआ ।

धम्मो < धर्मः—ध के स्थान पर ध नहीं हुआ ।

जीमूतो < जीमूतः—ज के स्थान पर घ नहीं हुआ ।

डमरको < डमरकः—ड के स्थान पर ट नहीं हुआ ।

नियोजित्वं < नियोजितम्—युज धातु में भी उक्त नियम नहीं लगा ।

पनो < घनः—घ के स्थान पर ल नहीं हुआ ।

जनो < जनः—ज के स्थान पर घ नहीं हुआ ।

कल्लरी < कल्लरी—क के स्थान पर ल नहीं हुआ ।

(४) शब्दरूप और धातुरूप चूलिका पैशाची में पैशाची के समान ही होते हैं, परन्तु वर्षपरिवर्तन सम्बन्धी नियमों का प्रयोग कर केना आवश्यक है । यथा—

फोति < भवति—भ को फ हुआ है ।

फरते < भवते—

फरति < भवति—

फोह्य < भोह्य—

ग्यारहवाँ अध्याय

अपभ्रंश

प्राकृत वैयाकरणों ने अपभ्रंश को प्राकृत का एक भेद माना है। काव्यालंकार की टीका में नमिताशु ने “प्राकृतमेवापभ्रंशः” (२।१२) अर्थात् शौरसेनी, मागधी आदि की तरह अपभ्रंश को प्राकृत का एक भेद बताया है। महर्षि पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य में लिखा है “भ्रूयांसोऽपभ्रंशाः अल्पीयांसः शब्दा इति । एकैकस्य द्वि शब्दस्य बहवोऽपभ्रंशाः । तथा गौरिस्यस्य शब्दस्य गावी गोणी गोता गोपोतलिकेत्यादयो बहवोऽपभ्रंशाः ।” अर्थात् संस्कृत व्याकरण में असिद्ध शब्दों को अपभ्रंश बताया है। दण्डी ने अपने काव्यादर्श में प्राकृत और अपभ्रंश का अलग-अलग निर्देश किया है। पतञ्जलि के भाष्यवाले उपयुक्त कथन से भी स्पष्ट है कि संस्कृत से भिन्न सभी प्राकृत भाषाएँ अपभ्रंश के अन्तर्गत हैं। उनके गावी, गोणी, गोता और गोपोतलिका आदि उदाहरण उक्त अर्थ में ही चरितार्थ हैं।

डा० हार्नेल्लि का मत है कि आर्यों की बोलचाल की भाषाएँ भारत के आदिम निवासी अनार्य लोगों की भिन्न-भिन्न भाषाओं के प्रभाव से जिन रूपान्तरों को प्राप्त हुई थीं, वे ही भिन्न-भिन्न अपभ्रंश भाषाएँ हैं और ये महाराष्ट्री की अपेक्षा अधिक प्राचीन हैं। सर जार्ज ग्रियर्सन प्रकृत विद्वान् डा० हार्नेल्लि के मत को नहीं मानते। इनका मत है कि साहित्यिक प्राकृतों को व्याकरण के नियमों में आबद्ध हो जाने पर जिन नूतन कथ्य भाषाओं की उत्पत्ति हुई, वे भाषाएँ अपभ्रंश कहलायें। अपभ्रंश भाषा का साहित्य में प्रयोग ईस्वी सन् की पाँचवी शताब्दी के पहले ही होने लगा था। अपभ्रंश भाषा के बहुत भेद हैं। प्राकृत चन्द्रिका में इसके सत्ताईस भेद बतलाये गये हैं। प्राचड, लाटी, वैदर्भी, उपनागर, नागर, वार्वर, अवन्ती, पञ्जाली, टाक, मालवी, कैकयी, गौडी, कौन्तली औद्री, पात्राज्या, पाण्ड्या, कौन्तली, सैहली, कालिङ्गी, प्राच्या, फाणांठी, फाञ्ची, द्राविडी, गौर्जरी, धाभीरी, मध्यदेशीया एवँ वैतालिकी इन २७ भेदों का उल्लेख मार्कण्डेय ने भी अपने प्राकृतसर्वस्व में किया है। प्रधान रूप से अपभ्रंश को नागर, उपनागर और प्राचड इन तीन भेदों में ही विभक्त किया गया है।

१. पातञ्जल-महामाष्यम् (प्रदीपोद्घोतसमन्वितम्) पृ० १७; सन् १६३५ ।

२. टाकं टकभाषानागरोपनागरदिभ्योऽवधारणीयम् । तु-बहुला मालवी । वाडीबहुला पाञ्जाली । उल्लप्राया वैदर्भी । संबोधनाञ्जा लाटी । ईकारोकारबहुला ओद्री । सबीष्या कैकेयी । समाज्ञाञ्जा गौडी । टकारबहुला कौन्तली । एकारिणी च पाण्ड्या । युक्ताञ्जा

आचार्य हेमचन्द्र ने सामान्य अपभ्रंश के नाम से अनुशासनसम्बन्धी नियम दिये हैं। अतः इस प्रकरण में भी सामान्य अपभ्रंश के अनुशासन सम्बन्धी नियम दिये जाते हैं।

(१) अपभ्रंश में अ, इ, उ, एँ और ओँ ये पाँच ह्रस्व स्वर और आ, ई, ऊ, ए और ओ ये पाँच दीर्घ स्वर माने गये हैं। ऋ, ॠ, ऐ और औ का अभाव है।

(२) ऋ स्वर के स्थान पर अपभ्रंश में अ, इ, उ, आ, ए, और रि आदेश हो जाया है। कुछ स्थानों में ऋ उर्वाँ का र्वाँ भी पाया जाता है। यथा—

ऋ = अ	तणु < तृण, पट्टि < पृष्ट, कञ्जु < कृत्स्न
ऋ = आ	काञ्जु < कृत्स्न;
ऋ = इ	तियु < तृण, विट्टि < पृष्ट ।
ऋ = उ	पुट्टि < पृष्ट
ऋ = ए	गेड < गृड
ऋ = रि, री	रिण < ऋण; रित्तहो < ऋयम; रीउ < ऋउ

(३) ॠ के स्थान पर अपभ्रंश में इ और इलि आदेश होता है। यथा—
किन्नो, किलिन्नो < कृत्स्न ।

(४) ऐ के स्थान पर अपभ्रंश में एँ, ए और अइ तथा औ के स्थान पर ओ, ओँ और अउ आदेश होते हैं। यथा—

ऐ = एँ	अवरेँक < अपरैक
ऐ = ए	देर < दैर
ऐ = अइ	दइम < दैर
औ = ओँ	गौरी < गौरौ
औ = ओ	जोँवण < जोवन
औ = अउ	पउर < पौर, गउरी < गौरौ

(५) अपभ्रंश में पद के अन्त में स्थित उँ, हुँ, विँ और हँ का भी लघु—इस्व उच्चारण होता है। यथा—

- (फ) भञ्जु उ तुच्छुंते धनदे ।
(ख) ददु घडाउइ यणि तरहुँ ।
(ग) तणहुँ तदब्बो भंगि नरि ।

सैहलो । द्वियुक्ता काविज्जी । प्राच्या उद्देयीयनापान्ना । ज (म) द्वादिबहुता चाभोरो । यणैविपभंयात् कालाये । मध्यदेयीया उद्देयीनाम्ना । संस्कृताम्ना च गौबंरो । पञ्जान् पूर्वोत्तद्वद्भापाग्रहणम् । ख (न) ह्यो व्यत्ययेन पाञ्चारत्ना । रेच्यव्यत्येन शान्तिरो । उकारबहुता यैतालिकी । एपीबहुता काञ्ची ।

(६) अपभ्रंश में एक स्वर के स्थान पर प्रायः दूसरा स्वर हो जाता है^१ । यथा—

अ = इ	क्रिणिण < कृपण ।
अ = उ	मुणइ < मनुते ।
अ = ए	वेरिळ < वली ।
आ = अ	सीय < सीता ।
आ = उ	उवल < आर्द्र ।
आ = ए	देइ < दा, लेइ < ला, मेत्त < मात्र ।
इ = अ	पडियत्त < प्रतिपत्ति ।
इ = ए	वेळ्ळ < विलय, एस्था < इत्थु ।
इ = अ	हरडइ < हरीतिकी ।
इ = आ	कम्हार < कारमीर ।
इ = ऊ	विहूण < विहीन ।
इ = ए	एरिस < ईरस । वेण < वीणा ।
इ = ई	खेंहुअ < खीडा ।
उ = अ	मउड < मुकुट; वाह < वाहु; सउमार < सुमार ।
उ = इ	पुरिस < पुरष ।
उ = ओ	मोरंगर < मुद्गर, पोस्थय < पुस्तक, कोंतत < कुन्त ।
ऊ = ए	नेउर < नूपुर ।
ऊ = ओ	मोहल < मूत्य ।
ऊ = ओ	योर < स्यूळ; तावोळ < ताम्बूळ ।
ए = इ, ई, ए	खिइ, छोइ, लेइ < खेया ।

(७) अपभ्रंश में स्वादि विभक्तियों के अन्ते परं प्रायः कभी तो प्रतिपादिक के अन्त्य स्वर का दीर्घ और कभी ह्रस्व हो जाता है^२ । यथा—

ढोला सामलर < विट श्यामल — विट में रहनेवाले अ को ढोला में दीर्घ कर दिया है । सामल में भी ल को दीर्घ हुआ है ।

धण < धन्या — दीर्घ को ह्रस्व हुआ है ।

सुवणरेह < सुवर्णरेता — दीर्घ को ह्रस्व हुआ है ।

विदीप < पुत्रि — स्त्रीलिङ्ग में ह्रस्व का दीर्घ हुआ है ।

पइट्टि < प्रविष्टा — स्त्रीलिङ्ग में दीर्घ का ह्रस्व हुआ है ।

निसिआ जग < निशिता खड्गा „ „

१. स्वप्नणा स्वप्नः प्रायोपपन्नं चै माहा ३२६ हे० ।

२. स्यादौ दीर्घ-ह्रस्वी माहा ३३० ।

(८) अनुस्वारयुक्त ह्रस्व स्वर के आगे र श प स और ह हो तो ह्रस्व को दीर्घ और अनुस्वार का लोप हो जाता है। यथा—

घोस < विशति; सीह < सिह ।

(९) अपभ्रंश में छन्द के कारण ह्रस्व को दीर्घ और दीर्घ को ह्रस्व हो जाता है। कई स्थानों पर ह्रस्व को दीर्घ न बरके अनुस्वार कर देते हैं।

दंतण < दर्शन ।

फंस < स्पर्श ।

अंसु < अशु ।

व्यञ्जनविकार

सामान्यतः शब्द के आदि व्यञ्जन में विकार नहीं होता। पर ऐसे भी कुछ अपवाद हैं जिनमें आदि व्यञ्जन में परिवर्तन पाया जाता है। यथा—

दिष्टि < धृति—यहाँ शब्द के आदि ध के स्थान पर द हो गया है।

धुअ वा धुआ < दुहिता—शब्द के आदि व्यञ्जन ध के स्थान पर द हुआ है।

यादि < जाति—शब्द के आदि में ज के स्थान पर य अपभ्रंश में य होता है।

(१०) अपभ्रंश में पद के आदि में वर्तमान किन्तु स्वर से पर में आनेवाले और असंयुक्त क, ख, त, ध, प और फ वर्णों के स्थान में प्रायः ग, घ, द, ध, च और भ होते हैं। यथा—

विभमाणुसविच्छोदगरु < प्रियमतुष्यप्रिशोभकरम्—क के स्थान पर ग।

सुविं चिन्विज्जइ माणु < सुखं चिन्त्यते मानः—ख के स्थान पर घ।

कथिदु < कथितम्—ध के स्थान पर घ और त के स्थान पर द।

सयधु < सपयम्—प के स्थान पर व और थ के स्थान पर ध।

सभलठ < सफणम्—फ के स्थान पर भ।

(११) कुछ शब्दों में अपभ्रंश में दो स्वरों के बीच में स्थित र, प, थ, ध, फ और भ को ह होता है। यथा—

साहा < शारा—तालव्य श के स्थान पर स और र को ह।

पहुल < पृधुल—पकारोत्तर फ को अकार और थ के स्थान पर ह।

अहर < अघर—घ के स्थान पर ह।

मुत्ताहल < मुक्ताफल—संयुक्त क् का लोप, त् को द्वित्व और फ को ह।

(१२) अपभ्रंश में प्राकृत के समान ट के स्थान पर ङ, ढ के स्थान पर ठ और प के स्थान पर व होता है। यथा—

तड < तट, कयड < कपट, सुदड < सुभट—ट के स्थान में ड हुआ है।

मड < मठ, वीड < वीठ—ठ के स्थान पर ड हुआ है।

दीव < द्वीप, पात्र < पाप—प के स्थान पर व हुआ है।

(१३) अपभ्रंश में कुलशाब्दों में अल्पप्राण वर्गों के स्थान पर महाप्राण वर्ण हो जाते हैं।

लेडड < लीड, सप्पर < कर्पर, नोक्सि < नवस्की—अल्पप्राण फ के स्थान पर महाप्राण ख हुआ है।

भारथ < भारत, वसथि < वसति—अल्पप्राण त के स्थान पर थ हुआ है।

फंसड < संशति, फासु < परशु—अल्पप्राण प के स्थान पर महाप्राण फ हुआ है।

(१४) अपभ्रंश में दन्त्य व्यञ्जनों में मूर्धन्य व्यञ्जन हो जाते हैं। यथा—

पडिड < पतित—स दन्त्य वर्ग के स्थान पर मूर्धन्य ड हुआ है।

पडाय < पताका— " " और क के स्थान पर य।

गंडिपाल < मन्धिपाल—थ के स्थान पर ड हुआ है।

डदड < ददति—दन्त्य द के स्थान पर मूर्धन्य ड हुआ है।

धुडिय < धुधित—दन्त्य ध के स्थान पर मूर्धन्य ड हुआ है।

डोलड < डोलायते— " द के " "

डुकर < दुकर " " "

विथडड < विदग्ध—दन्त्य ध के स्थान पर मूर्धन्य ड हुआ है।

(१५) अपभ्रंश में पद के आदि में अवर्तमान असंयुक्त मकार के स्थान में विकल्प से अनुनासिक वकार होता है^१। यथा—

कवैलु < कमलम्—म के स्थान में विकल्प से सांनुनासिक वै हुआ है।

भवैरु < भ्रमरः— " " "

जिवै < जिम— " " "

तिवै < तिम— " " "

(१६) अपभ्रंश में संयोग के बाद में आनेवाले रेफ का विकल्प से लुक् होता है^२। यथा—

जइ केवैइ पावीसु पिउ < यदि कथञ्चित् प्राप्स्यामि प्रियम्—संयुक्त रेफ का लोप हुआ है।

(१७) अपभ्रंश में कहीं-कहीं सर्वथा अविद्यमान रेफ भी होता देखा जाता है^३। यथा—

१. मोजुनासिको धो वा ८।४।३६७ । २. वाषो रो लुक् ८।४।३६८ ।

३. ममूतोऽपि क्वचित् ८।४।३६९ ।

प्रिय < पड—र का छोप और य को उ ।

पेम्मा < प्रेम— ” ”

सर < स्वर—य का छोप ।

दीव < द्वीप— ” और य को व ।

(२२) अपभ्रंश में प्राकृत के समान त्य के स्थान पर ष, थ्य के स्थान पर ष्ट और थ के स्थान पर ज्ञ आदेश होता है । यथा—

अद्यंत < अत्यन्त—त्य के स्थान पर ष्ट ।

निष्ठत्त < निध्यात्त—थ्य के स्थान पर ष्ट ।

अज्जु < अज—थ के स्थान पर ज्ञ ।

(२३) अपभ्रंश में क्ष के स्थान पर ख, छ, झ, घ, क्ल और ह आदेश होते हैं । यथा—

खार < क्षार; खण < क्षण—क्ष के स्थान पर ख ।

छग < क्षग—प्राकृत के समान क्ष के स्थान पर छ ।

क्लिह < क्षीयते—क्ष के स्थान पर झ आदेश ।

कडक्ख < कडाक्ष—ट को ठ और क्ष को क्ल आदेश हुआ है ।

निहित्त < निक्षित्त—क्ष के स्थान पर ह और संयुक्त प का छोप और त को द्वित्व ।

अपभ्रंश में वर्णोपगम, वर्णविपर्यय (Metathesis), वर्णछोप और स्वरभक्ति आदि भी उपलब्ध हैं ।

(२४) वर्णोपगम में स्वर या व्यञ्जन का आदि, मध्य और अन्त्य स्थान में आगम होता है । यथा—

इत्थी < स्त्री—स्त्री का त्थी हो जाता है और आदि में इ स्वर का आगम होजाने से इत्थी पद बनता है ।

मायु < व्यास—मध्य में र व्यञ्जन का आगम हुआ है ।

मध्य में स्वर के आगम को स्वरभक्ति (Anaptyxis) कहा जाता है । यथा—

समाखण < रमशान—पृथक्करण होकर मध्य में आकार का आगम हुआ है ।

सलहइ < श्लाघते—पृथक्करण होकर अ स्वर का मध्य में आगम हुआ है ।

दीहर < दीर्घ—

” ” ”

(२५) स्वर भक्ति का एक भेद अपनिहित्वा (Epenthesis) है, जिस शब्द के अन्त में इ, उ, ए और ओ में से कोई एक हो तो बीच में इ या उ का आगम हो जाता है तथा लृतीय स्वर भी परिवर्तित हो जाता है । यथा—

वेल्लि < वल्लि—वल्ल + इ—इस स्थिति में ल्ल के पहले इ का आगम होने पर व + इ + ल्ल + इ = वेल्लि—पूर्ववर्ती इ का ल के साथ गुण हुआ है ।

अपभ्रंश में वर्णविपर्यय (Metathesis) के भी उदाहरण पाये जाते हैं ।
यथा—

हर < गृह—वर्णविपर्यय ।

रहस < हर्ष— ”

वर्णनिकार में समीकरण (Assimilation) और विपरी (Disassami-
lation) के भी उदाहरण मिलते हैं । यथा—

जुष < युक्त—य के स्थान पर ज और त के संयोग से क ध्वनि भी त में परि-
वर्तित है ।

रत्त < रक्त—त के संयोग से क् ध्वनि त् में परिवर्तित है ।

सह < शब्द—द के संयोग से ध् ध्वनि द में परिवर्तित है ।

अग्नि < अग्नि—ग के संयोग से न ध्वनि ग में परिवर्तित ।

सप्तति < सप्तती—प दो व और त के संयोग से न ध्वनि त में परिवर्तित ।

वर्णलोप में भी आदि, मध्य और अन्त्य वर्णों का लोप होता है । यथा—

वि < अवि—आदि स्वर का लोप (Aphaerasis)

रण < अरण्य— ” ”

पोष्कल < पूष्कल—मध्य वर्णों का लोप (Syncope)

भविष्यत्तकथा < भविष्यदत्तकथा—यहाँ अक्षर लोप (Haplology) है ।

शब्दरूपावलि

(२६) अपभ्रंश में प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के एकवचन में अकारान्त
शब्दों के अन्तिम अ को उ होता है । यथा—

दसमुह < दसमुखः—स को ह और ख को ह, प्रथमा एकवचन में उ विभक्तिचिह्न ।

सोसिअ-संकर < सोपित-शंकरः—प्रथमा एकवचन में उ विभक्तिचिह्न ।

चवमुह < चतुर्मुखम्—द्वितीया के एकवचन में उ विभक्तिचिह्न ।

छमुह < पण्मुहम्—पट् के स्थान पर छ और द्वितीया के एकवचन में उ
विभक्तिचिह्न ।

जिणु < जिनः—प्रथमा के एकवचन में उ विभक्तिचिह्न ।

(२७) अपभ्रंश में पुंल्लिङ्ग में वर्तमान अकारान्त शब्दों के प्रथमा के एकवचन
में विकल्प से अन्तिम अ के स्थान में ओ होता है । यथा—

जो < यः—य के स्थान पर ज और विभक्ति प्रत्यय ओ ।

सो < सः—विभक्ति प्रत्यय ओ जोड़ा गया है ।

(२८) अपभ्रंश में तृतीया विभक्ति के पुरुवचन में अन्तिम व के स्थान पर प हो जाता है ।^१ यथा—

पवसन्ते < प्रवसता—तृतीया के पुरुवचन में व को प हुआ है ।

नहे < नयेन—

अपभ्रंश में तृतीया पुरुवचन में ण और अनुस्वार दोनों होते हैं । अतः तृतीया पुरुवचन में तीन रूप बनते हैं । यथा—

देवे, देवे, देवेण < देवेन ।

(२९) अपभ्रंश में शब्द के अन्त्य अकार और छि—सप्तमी पुरुवचन के स्थान में इकार और पकार होते हैं ।^२ यथा—

तलि धल्लइ, तळे धल्लइ < तळे क्षिपति ।

(३०) अपभ्रंश में तृतीया विभक्ति के बहुवचन में अन्त्य अकार के स्थान में विक्लप से एकार आदेश होता है और हिं प्रत्यय जुड़ जाता है ।^३ यथा—

लक्तेहिं, गुणहिं < लक्षैः, गुणैः ।

(३१) अपभ्रंश में अकारान्त शब्दों से पञ्चमी विभक्ति के पुरुवचन में हे और हु प्रत्यय जोड़े जाते हैं ।^४ यथा—

वच्छे वृण्हइ < वृक्षात् वृद्धाति—हे प्रत्यय जुड़ने से ।

वच्छहु वृण्हइ < वृक्षात् वृद्धाति—हु प्रत्यय जुड़ने से ।

(३२) अपभ्रंश में अकारान्त शब्दों में पञ्चमी विभक्ति के बहुवचन में हुं प्रत्यय जोड़ा जाता है ।^५

यथा—गिरिसिगहुं < गिरिशिंगीभ्यः ।

(३३) अपभ्रंश में अकारान्त शब्दों से, पर में आनेवाले पष्ठी के बहुवचन में सु, हो और स्सु ये तीन प्रत्यय होते हैं ।^६ यथा—

तसु < तस्य— सु प्रत्यय जोड़ा गया है ।

दुल्लहो < दुर्लभस्य—हो ,, ,,

सुअणस्सु < सुअणस्य—स्सु प्रत्यय जोड़ा जाता है ।

(३४) अपभ्रंश में अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाली पष्ठी विभक्ति के बहुवचन में हें प्रत्यय जोड़ा जाता है ।^७ यथा—

१. एहि मा४।३३३ ।

२. मित्येद्वा मा४।३३५ ।

५. स्वसो हुं मा४।३३५ ।

७. प्रामो हें मा४।३३९ ।

२. हिरनेव मा४।३३४ ।

४. लसेहेंहु मा४।३३६ ।

६. उवः सु-हो-स्सवः मा४।३३८ ।

तणहं < नृणानाम्—तकार का अ होकर तण शब्द बना है, इसमें पठी विभक्ति के बहुवचन में हं प्रत्यय जोड़ दिया गया है।

(३५) अपभ्रंश में इकारान्त और उकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले आम् प्रत्यय—पठी के बहुवचन में हुं और हूं दोनों आदेश होते हैं^१ यथा—

सवणिहं < शकुनीनाम्—पठी विभक्ति के बहुवचन में हं प्रत्यय होता है।

सप्तमी विभक्ति बहुवचन में भी हं प्रत्यय होता है। यथा—

दुहै < द्वयोः—

(३६) अपभ्रंश में इकारान्त और उकारान्त शब्दों से पञ्चमी के एकवचन, पञ्चमी बहुवचन और सप्तमी के एकवचन में क्रमशः हे, हुं और हि आदेश होते हैं^२ यथा—

गिरिहे < गिरेः गिरि + हे = गिरि + हे = गिरिहे।

तरहे < तरोः—तर + हे = तर + हे = तरहे।

तरहुं < तरुभ्यः—तर + भ्यस् = तर + हुं = तरहुं।

कलिहि < कली—कलि + डि = कलि + हि = कलिहि।

(३७) अपभ्रंश में इकारान्त और उकारान्त शब्दों से तृतीया विभक्ति के एकवचन में एं, ण और अनुस्वार आदेश होते हैं^३ यथा—

अग्निर्णं < अग्निना—अग्नि + णं = अग्निर्णं।

अग्निणं < अग्निना—अग्नि + णं = अग्निणं।

अग्निं < अग्निना—अग्नि + ण् = अग्निं।

(३८) अपभ्रंश में ए, अन्, जस् और दास् विभक्तियों का लोप हो जाता है^४। यथा—

एइ ति घोडा < एते ते घोडकाः—जस् का लोप।

घालइ वाग < बालयति वशाम्—अम् का लोप।

अपभ्रंश में पठी विभक्ति का प्रायः लुक् हो जाता है^५ यथा—

गय कुम्भहं दारण्यु < गजाना कुम्भान् दारयन्तम्।

(३९) अपभ्रंश में यदि किसी शब्द के सम्बोधन में जस् विभक्ति आयी हो तो उसके स्थान में हो आदेश होता है^६। यथा—

तरुणहो, तरुणिहो < हे तरुणाः, हे तरुण्यः—जस् के स्थान में हो आदेश हुआ है।

१. हुं वेदुभ्याम् वा४।३४०।

२. उसिभ्यस्-जोना हे-हं-हयः वा४।३४१।

३. एं वेदुता वा४।३४३।

४. स्पमजस्यसा लुक् वा४।३४४।

५. पठ्याः वा४।३४५।

६. ग्रामभ्ये जसो होः वा४।३४६।

अपभ्रंश में भिस् और सुप् के स्थान में हि आदेश होता है^१। यथा—
गुणहिं < गुणोः, मरुगोहिं तिहिं < मार्गेषु त्रिषु ।

(४०) अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान शब्द से पर में आनेवाले जस् और शस् के स्थान में उ और ओ आदेश होते हैं^२। यथा—

अंगुलिउ < अङ्गुल्यः—यहाँ जस् के स्थान में उ हुआ है ।

सर्व्यगाउ < सर्वाङ्गी—यहाँ शस् के स्थान में उ हुआ है ।

विलासिणीओ < विलासिनीः—शस् के स्थान पर ओ हुआ है ।

(४१) अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान शब्द से पर में आनेवाले टस् (पष्ठी एकवचन) और डस्ति (पञ्चमी एकवचन) के स्थान में हे आदेश होता है^३। यथा—

मज्जोहे < मज्ज्यायाः—पञ्चमी के एकवचन में हे प्रत्यय आदेश हुआ है ।

तवेहे < तस्याः—षष्ठी के एकवचन में हे प्रत्यय आदेश हुआ है ।

धणोहे < धन्यायाः—पञ्चमी के एकवचन में हे आदेश ।

वालहे < वालायाः— ” ”

(४२) अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में भ्यस् (पञ्चमी बहुवचन) में और आम् (षष्ठी बहुवचन) के स्थान में हु आदेश होता है^४। यथा—

वर्यसिअहु < वर्यस्याभ्यः; अथवा वर्यस्यानाम्—हु प्रत्यय हुआ है ।

अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में सप्तमी एकवचन में दि आदेश होता है^५। यथा—
मदिहिं < मह्याम् ।

(४३) अपभ्रंश में नपुंसकलिङ्ग में प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में हं आदेश होता है^६। यथा—

कमलइं < कमलानि ।

(४४) अपभ्रंश में नपुंसक लिङ्ग में वर्तमान कान्त—जिसके कान्त में अ सहित क हो, शब्दों से पर में आनेवाले प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के एकवचन में उ आदेश होता है^७। यथा—

बुच्छउउं < बुच्छउउम्; भग्गउं < भग्गवम् ।

(४५) अपभ्रंश में अकारान्त सर्वादि शब्दों को पञ्चमी के एकवचन में हाँ आदेश होता है^८। यथा—

१ भिस्तुपोहिं वा०४।३४७ ।

२ त्रियां जस्-शसोक्तोत् वा०४।३४८ ।

३ जस्-जस्योहे वा०४।४५० ।

४ म्यत्तामोहुं वा०४।३५१ ।

५ डोहे वा०४।३५२ ।

६ क्लीये जस्-शसोरि वा०४।३५३ ।

७ कान्तस्यात् उं स्यमोः वा०४।३५४ ।

८ सबदिज्जेहाँ वा०४।३५५ ।

जहां होन्तउ आगतो, तहां होन्तउ आगतो < यस्मात् भवान् आगतः, तस्मात् भवान् आगतः ।

फहां < कस्मात् ।

(४६) अपभ्रंश में अकारान्त क (किम्) शब्द से पद्यमी के एकवचन में इहे आदेश होता है और क के अकार का छोप होता है^१ । यथा—

किहे < कस्मात् ; कहां < कस्मात् ।

(४७) अपभ्रंश में अकारान्त सर्वादि शब्दों से सप्तमी के एकवचन में डि के स्थान में हि आदेश होता है^२ । यथा—

जहि < यस्मिन्, तहि < तस्मिन्, एकहि < एकस्मिन् ।

(४८) अपभ्रंशमें य, त, क (यद्, तद्, किम्) शब्दों को षष्ठी के एकवचन में आसु आदेश होता है^३ । यथा—

जासु < यस्य, तासु < तस्य, कासु < कस्य ।

(४९) अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में या, ता, का (यद्, तद्, किम्) से षष्ठी के एकवचन में अहे आदेश और आ का छोप भी होता है^४ । यथा—

जहे केरउ < वस्याः वृते; तहे केरउ < तस्याः वृते; कहे करउ < कस्याः वृते ।

(५०) अपभ्रंश में प्रथमा और द्वितीया के एकवचन में यद् और तद् के स्थान में क्रमशः भ्रुं और व्रं प्रिस्वन से आदेश होते हैं^५ । यथा—

प्रंगणि चिट्टदि नाहु भ्रुं व्रं रणि करदि न व्रंति—प्राज्ञणे तिष्ठवि नाथः यद् यद् रणे करोति न भ्रान्तिम् ।

(५१) अपभ्रंश में नपुंसकलिङ्ग में इहं शब्द के स्थान में प्रथमा और द्वितीया के एकवचन में इसु आदेश होता है^६ । यथा

इसु कुलु तुह तणउँ; इसु कुलु देक्सु < इहं कुलं ।

(५२) अपभ्रंश में प्रथमा और द्वितीया के एकवचन में एतद् शब्द के स्त्रीलिङ्ग में एह, पुंलिङ्ग में एहो और नपुंसकलिङ्ग में एहु रूप होते हैं^७ । यथा—

एह कुमारी < एषा कुमारी, एहो नरु < एष नरः; एहु माणोरह-ठाणु < एषन्मनोरथस्थानम् ।

१ किमो डिहे वा ना४।३५६ ।

२ डोहि ना४।३५७ ।

३ यत्तत्किन्मो डसो असुनं वा ना४।३५८ ।

४ स्त्रियां डहे ना४।३५९ ।

५ यतदः स्यमोघ्रुं व्रं ना४।३६० ।

६ इदम् इसुः क्लीबे वा४।३६१ ।

७ एतदः स्त्री-पुं-क्लीबे एह एहो एहु ना४।३६२ ।

(६३) अपभ्रंश में प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में अद्स् शब्द के स्थान में ओइ आदेश होता है । यथा—

ओइ < अमूनि ।

(६४) अपभ्रंश में प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में एतू शब्द के स्थान पर एइ आदेश होता है । यथा—

एइ पेच्छ < एतान् प्रेषस्व ।

(६५) अपभ्रंश में इद्स् शब्द के स्थान पर आय आदेश होता है । यथा—

आयह' < इहमानि; आयेण < एतेन, आयहो < अस्य ।

अपभ्रंश में सर्व शब्द के स्थान में विरूप से साह आदेश होता है । यथा—
साहु वि लोउ. सवु वि लोउ < सर्वोऽपि लोउः ।

(६६) अपभ्रंश में किम् शब्द के स्थान में विकल्प से काह' और कवण आदेश होते हैं । यथा—

काह' न दूरे देखखइ < किं न दूरे पश्यति ।

ताहँ पराई कवण घृण < < तयोः परकीया वा घृणा ।

किं गज्जहि खल मेह < किं गर्जसि खल मेघः ।

पुल्लिङ्ग अकारान्त शब्दों में जोड़े जानेवाले विभक्ति प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प०	उ, ओ, ०	०
यी०	उ, ०	०
त०	ए, एं ण	हिं
च०	सु, स्सु, हो, ०	हं, ०
पं०	हु, हे	हु
छ०	सु, स्सु, हो, ०	हं, ०
स०	ह, ए	हिं
सं०	उ, ०	हो, ०

देव शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	देव, देवो, देव	देव, देवा
यी०	देवु, देव, देवा	देव, देवा
त०	देवें, देवे, देवेण	देवहिं, देवेहिं
च०	देव, देवसु, देवस्सु, देवहो	देवहं

प०	देवदे, देवहु	देवहुँ
छ०	देव, देवसु, देवहो, देवस्सु	देव, देवहँ
सं०	देवे, देनि	देम, देवा, दमहो

वीर शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	वीर, वीरो वीर, वीरा	वीर, वीरा
वी०	वीर, वीर, वीरा	वीर, वीरा
त०	वीरेण, वीरेणं, वीरें	वीरेहिं, वीराहिं, वीरहिं
च० छ०	वीरसु, वीरस्सु, वीरासु, वीराहो, वीरहो, वीर, वीरा	वीराहुँ, वीरहँ, वीर, वीरा
पं०	वीराट्, वीरहु, वीरादे, वीरदे	वीराहुँ, वीरहु
स०	वीरि, वीरे	वीराहिं, वीरहिं
सं०	वीर, वीरो वीर, वीरा	वीराहो, वीरहो वीर, वीरा

पुल्लिङ्ग इकारान्त ओर उकारान्त शब्दों के विभक्ति-प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प०	०	०
वी०	०	०
त०	पं, ण, म्	हिं
च०	०	हु, हँ
पं०	ह	हुँ
छ०	०	०, हु, हँ
स०	हि	हिं, हु
सं०	०	हो, ०

इसि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०, वी०	इसि, इसी	इसि, इसी
त०	इमिण, इमिणं, इसीण, इसीणं इसिपं, इसीपं, हसि, इसी	इचीहिं, इसीहिं

च०	छ०	इसि, इसी	इसिहुं, इसीहुं	इसिहं, इसीहं
पं०		इसिहे, इसीहे	इसिहुं, इसीहुं	
स०		इसिदि, इसीदि	इसिहिं, इसीहिं	इसिहो, इसीहो
सं०		इसि, इसी	इसि, इसी	

गिरि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०, वी०	गिरि, गिरी	गिरि, गिरी
त०	गिरिहं, गिरिण, गिरि	गिरिहिं, गिरीहिं
च०, छ०	गिरि, गिरी	गिरीहिं, गिरिहं, गिरिहुं, गिरीहुं
पं०	गिरिहे, गिरीहे	गिरिहुं, गिरीहुं
स०	गिरिदि, गिरीदि	गिरीहुं, गिरिहुं, गिरिहिं
सं०	गिरि, गिरी	गिरि, गिरी, गिरिहो

उकारान्त भाणु शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	भाणु, भाणू	भाणु, भाणू
वी०	" "	" "
त०	भाणुण, भाणुणं, भाणूण	
	भाणूखं, भाणुपं, भाणूपं,	भाणूहिं, भाणूहिं
	भाणू, भाणू	
च०, छ०	भाणु, भाणू	भाणूहुं, भाणूहुं, भाणूहं, भाणूहं
पं०	भाणूहे, भाणूहे	भाणूहुं, भाणूहुं
स०	भाणूदि, भाणूदि	भाणूहिं, भाणूहिं, भाणूहुं, भाणूहुं
सं०	भाणु, भाणू	भाणूहो, भाणूहो, भाणु, भाणू

स्त्रीलिङ्ग शब्द

स्त्रीलिङ्ग में प्रायः शेष ईकारान्त शब्द ह्रस्व हो जाते हैं। ककारान्त शब्द उकारान्त हो जाते हैं और देव शब्द के समान उनके रूप बनते हैं।

स्त्रीलिङ्ग के विभक्तिचिह्न

	एकवचन	बहुवचन
प०	०	०, उ, ओ
वी०	०	" "
त०	ए	हि

च०, छ० हे	ह
पं० हे	ह
स० हि	हि
सं० ०	०, हो

माला शब्द के रूप

एकवचन	बहुवचन
प०, वी० माला, माल	मालाउ, मालाओ, माल, माला
त० मालए, मालए	मालाहि, मालहि
च०, छ० मालाहे, मालाहे, माला, माल	मालाहुं, मालहुं
पं० मालाहे, मालातो, मालादो,	मालाहु, मालहु, मालातो, मालादो,
मालाहु, मालाहितो	मालाहु, मालाहितो, मालामुत्तो
स० मालाहि, मालहि	मालाहि, मालहि
सं० माला, माल	मालाहो, मालहो

मइ शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०, वी० मइ, मई	मइउ, मईउ, मइओ, मईओ, मइ, मई
त० मइए, मईए	मइहि, मईहि
च०, छ० मइहे, मईहे, मइ, मई	मइहु, मईहु, मइ, मई
पं० मइहे, मइहे	मइहु, मईहु
स० मइहि, मईहि	मइहि, मईहि
सं० मइ, मई	मइ, मई

पइट्टी ऽ प्रविष्टा

एकवचन	बहुवचन
प०, वी० पइट्टी, पइट्टि	पइट्टिउ, पइट्टीउ, पइट्टिओ, पइट्टीओ,
	पइट्टीओ, पइट्टी, पइट्टि
	पइट्टी, पइट्टि
त० पइट्टिए, पइट्टीए	पइट्टिहि, पइट्टीहि
च० छ० पइट्टिहे, पइट्टीहे,	पइट्टिहु, पइट्टीहु,
पइट्टी, पइट्टि	पइट्टी, पइट्टि
पं० पइट्टिहे, पइट्टीहे	पइट्टिहु, पइट्टीहु
स० पइट्टिहि, पइट्टीहि,	पइट्टिहि, पइट्टीहि
सं० पइट्टि, पइट्टी	पइट्टिहो, पइट्टीहो
	पइट्टी, पइट्टि

धेणु ऽ धेनु

	एकवचन	बहुवचन
प०	धेणु, धेणू	धेणुउ, धेणूउ धेणुओ, धेणूओ
बी०	धेणु, धेणू	धेणुउ, धेणूउ, धेणुओ, धेणूओ. धेणु, धेणू
त०	धेणुए, धेणूए	धेणुहि, धेणूहि
च० छ०	धेणुदे, धेणूदे	धेणुहु, धेणूहु
प०	धेणुदे, धेणूदे	धेणुहु, धेणूहु
स०	धेणुहि, धेणूहि	धेणुहि, धेणूहि
सं०	धेणु, धेणू	धेणुहो, धेणूहो

बहू ऽ बधू

	एकवचन	बहुवचन
प०, बी०	बहु, बहू	बहुउ, बहूउ, बहुओ, बहूओ
त०	बहुए, बहूए	बहुहि, बहूहि
च० छ०	बहुदे, बहूदे	बहुहु, बहूहु
प०	बहुदे, बहूदे	बहुहु, बहूहु
स०	बहुहि, बहूनि	बहुहि, बहूहि
सं०	बहु, बहू	बहुहो, बहूहो

नपुंसकलिङ्ग के विभक्ति चिह्न

	एकवचन	बहुवचन
प०	०	०, इं
बी०	०	०, इं

शेष विभक्तिचिह्न पुँल्लिङ्ग के समान होते हैं ।

कमल शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प०	कमलु, कमला, कमल	कमलाइं, कमलइं
बी०	कमलु, कमला, कमल	कमलाइं, कमलइं

शेष रूप पुँल्लिङ्ग के समान होते हैं ।

इलन्त शब्द अपभ्रंश में नहीं होते । अतः उनके स्थान पर भजन्त हो जाते हैं ।
अन्तिम इल् होने से प्रायः इलन्त शब्द अकारान्त होते हैं ।

सर्वनाम (Pronoun)

सञ्च < सर्व—सव (अन्य पुरुष या प्रथम पुरुष)

	एकवचन	बहुवचन
प०	सञ्चु, सञ्चो, सञ्च	सञ्चे, सञ्च, सञ्चा
बी०	सञ्चु, सञ्च, सञ्चा	सञ्च, सञ्चा
त०	सञ्चें, सञ्चेण	सञ्चेहि
च०, छ०	सञ्चसु, सञ्चस्सु, सञ्चहो	सञ्चहँ, सञ्च, सञ्चा
प०	सञ्चहां, सञ्चाहां	सञ्चहँ, सञ्चाहँ
स०	सञ्चहिँ	सञ्चहिँ

सञ्च के स्थान पर अपभ्रंश में साह आदेश होता है। अतः साह शब्द के रूप भी अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के समान बनते हैं।

तुम < युष्मद्

	एकवचन	बहुवचन
प०	तुहँ	तुम्हे, तुम्हह
बी०	पहँ, तहँ	तुम्हे, तुम्हह
त०	पहँ, तहँ	तुम्हेहि
च०, छ०	तउ, तुज्ज, तुध (तुहु)	तुम्हहँ
प०	तउ, तुज्ज, तुध	तुम्हहँ
स०	पहँ, तहँ	तुम्हासु

अहं < अस्मद्

	एकवचन	बहुवचन
प०	हउं	अम्हे, अम्हहँ
बी०	महँ	अम्हे, अम्हहँ
त०	महँ	अम्हेहि
च०, छ०	महु, मज्जु	अम्हहँ
प०	महु, मज्जु	अम्हहँ
स०	महँ	अम्हासु

एह < एतद्

	एकवचन	बहुवचन
प०	एहो	एह
बी०	"	"

शेष रूप सञ्च के समान होते हैं।

जो < यत्—सम्बन्धी सर्वनाम

	एकवचन	बहुवचन
प०	जु, जो	जे
वी०	जं	जे
त०	जेण, जिं, जें	जेहि
च०, छ०	जासु, जसु, जस्त, जदो, जहे	जाई, जाइ
पं०	जउ, जहे	जहु
स०	जहि, जन्मि	जहि

सो < तद्—बह—निर्देशवाचक सर्वनाम

	एकवचन	बहुवचन
प०	सो, सु, स	ते
वी०	तं	ते
त०	तेण, तइं, तें, तिं	तेहि, ताहें, तेहि
च०, छ०	तासु, तदो, तदि, तसु	तहु
पं०	तहे, तउ	तहु
स०	तहि, तहि	तहि

क < किम्—क्या, कौन—प्रश्नवाचक सर्वनाम

	एकवचन	बहुवचन
प०, वी०	को, कु	के
त०	केण, कइं	केहि
च०, छ०	कदो, कहु, कस्त, कासु	काई
पं०	कउ, किहे, कहां	कहु
स०	कहि, कहि	कहि

कवण के रूप सव के समान होते हैं ।

आय < इद्म्—यह

	एकवचन	बहुवचन
प०	आयु, आयो, आय, आया	आये, आय, आया
वी०	आयु, आय, आया	आय, आया
त०	आयेण, आयेणं, आयें	आयेहि, आयहि, आयारहि

शेष शब्दरूप सव के समान बनते हैं ।

स्त्रीलिङ्ग नं सञ्चा शब्द के रूप माछा के समान होते हैं । एतद् शब्द के स्थान पर स्त्रीलिङ्ग में एद आदेश होता है । अतः प्रथमा और द्वितीया के एकवचन में एद और इन विभक्तियों के बहुवचन में एदउ, एदाऊ रूप बनते हैं ।

स्त्रीलिङ्ग जा < यत्—जो

	एकवचन	बहुवचन
प०	जा	जाउ
बी०	जं	जाउ
त०	जाइं, जाएं, जिए	जेहिं
च०, छ०	जाहि	जाहिं
पं०	जाहे	जाहिं
स०	जाहि	जाहि

सा < तद्—यह

	एकवचन	बहुवचन
प०	सा, स	ताउ, ति
बी०	सं	ताउ
त०	तइं, तिप, ताप, तप	तेहि
च०, छ०	तिहि, साहि, तहे	ताहि
पं०	ताहें, तहें	ताहिं
स०	ताहि, ताहिं	ताहि

का < किम्—कौन, क्या ?

	एकवचन	बहुवचन
प०, बी०	का, क	कायउ, काउ
त०	काइं, काए	केहि, काहि
च०, छ०	काहि, काहि	काहि
पं०	काहे	काहिं
स०	काहिं	काहिं

नपुंसकलिङ्ग—सञ्च

	एकवचन	बहुवचन
प०, बी०	सञ्च, सञ्चु, सञ्चा	सञ्चाइं, सञ्चइं

शेष रूप पुलिङ्ग के समान होते हैं ।

ज < यत्

	एकवचन	बहुवचन
प०	जं, भुं	जाइं
बी०	जं, छु	जाइं

शेष रूप पुलिङ्ग के समान होते हैं ।

स < तद्

	एकवचन	बहुवचन
प०	सं, तु	ताइ'
वी०	सं, सं	ताइ'

शेष रूप पुंलिङ्ग के समान बनते हैं ।

क < किम्

	एकवचन	बहुवचन
प० वी०	किं	काइ'

अवशेष रूप पुलिङ्ग के समान होते हैं ।

इदम्

	एकवचन	बहुवचन
प०, वी०	इमु	आयाइ', आयइ'

सर्वनाम शब्दों से निष्पन्न विशेषण

परिणामवाचक

जेवइ, जेतुल—जितना	जेरइ, केतुल—कितना
तेवइ, तेत्तिल—उतना	एवइ, एतुल—इतना

गुणवाचक

जइमो, जंहु—जैसा	तइसो, तेहु—तेसा
कइसो, केहु—कैसा	अइसो, एहु—ऐसा

सम्बन्धवाचक

एरिस—इस जैसा	तुम्हारिस—तुम्हारे जैसा
हम्हारिस—हमारा जैसा	तुम्हार < तुम्हारा

रीतिवाचक

जेम, जिम, जिद, जिध—जिस प्रकार	केम, किम, किद, किध—किस प्रकार
तेम, तिम, तिद, तिध—तिस प्रकार	

अव्यय

स्थानवाचक अव्यय

एत्थु—यहाँ	जेत्थु, जत्तु—जहाँ
तेत्थु, वत्तु—तहाँ	केत्थु—कहाँ
एत्तेदे तेत्तेह—यहाँ वहाँ	केत्तेह—कहाँ
तेत्तेह—तहाँ	

समयवाचक अव्यय

जामाहिं, जाम, जाउं—जय सक
तो—तवसे

तामहिं, ताम, ताउं—तव तरु

अन्य अव्यय

अन्न, अन्नह् < अन्यथा—

अन्य प्रकार से ।

अवसें < अवशेन

वश में न होने से ।

अवस < अवश्यम्

अवश्य ही ।

अहुरह् < अथवा—

आहरजाहर, ऐंहिरेयाहिरे—

पुम्यहि < इदानीम्

इस समय ।

उद्ववदस < उत्तिष्ठमिष

उठने का ह्छद्म ।

इवकसि < पुरुशः

एक वार ।

एत्तेह् < अत्र

यहाँ

एत्तेह् < इतः

यहाँ से अथवा वाक्पारम्भ के लिप् ।

जि

जिससे ।

पुम्व < पुं

इस प्रकार, ऐसे या वाक्य छोड़ना ।

पुम्वह् < पुवं

” ”

कहंतिह् < कुतः

कहाँ से ।

किह्, किव < कथम्

क्यों या किस तरह ।

किर < किल

किल, निश्चय ।

केस्थु < कुत्र

कहाँ ।

केदि

सादर्भ्य बतलाने के लिप् या क्तिके ।

साहं

निरर्थक वाक्य पूर्ति के लिप् ।

घहं

” का अनुकरण करने में ।

धुगघ

जो ।

धुह् < यदि

जानना या ह्व की सूचना के लिप् ।

जणि, जणु

जहाँ ।

जेत्थु, जलु < यत्र

जैमा ।

जैम, जिम, जैम्ब, जिम्ब < यथा

जिह्, जिध

जाम, जाउं, जामहिं < यावत्

जय सक ।

तणेण

सादर्भ्य की सूचना के लिप् ।

तेम, तेम्य, तिम, तिम्य < तथा	इसी प्रकार, वैसे ।
तिह, तिध	
ताडं, ताम, तामहिं < तत्रित्	तत्र तक ।
तेत्थु, तत्तु, तेहिं < तत्र	वहाँ
तो < ततः, तदा	अनन्तर, तब ।
दिवे < दिवा	दिवस ।
भुडु < भुवम्	निश्चय
नउ, नाह, नावह, नं	जानने के अर्थ में ।
नाहिं < नहि	निषेध अर्थ में, ह्वार्थ में ।
पक्कलिउ < प्रत्युत	इसके विपरीत ।
पक्कह < परचात्	पीछे ।
पर < परम्	परन्तु ।
अवरोपरं, अवरुपरं < परस्परम्	आपस में ।
पाडिक्कं, पाडिक्कं < प्रत्येकम्	एक-एक ।
प्राउ, प्राहव, प्राहम्ब, परिगम्ब < प्रायः	प्रायः, बहुधा ।
पुणु < पुनः	फिर ।
मगाडं < मनाक्	थोड़ा
मं < मा	निषेधार्थक, मत ।
रेत्ति, रेत्ति	तादर्थ्य बतलाने के तिप् ।
वहिल्ल < शीघ्रम्	शीघ्र ।
विणु < बिना	बिना ।
समाणुं < समानम्	समान ।
सव्वेत्तेहे < सर्वत्र	सब जगह ।
हुहुय	आवाज करना ।

तद्धित

(१७) अपभ्रंश में संज्ञा से परे स्वार्थ में अ, अइ वीर उल्ल प्रत्यय होते हैं और स्वाधिक क प्रत्यय का छोप होता है^१ । स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए ई प्रत्यय जोड़ा जाता है^२ । यथा—

पथिउ —अ प्रत्यय जोड़ा गया है—

१. अ-उड-उल्ला. स्वाधिक-क-मुक् च ना।।४२६ । २. क्रिया तदन्ताडोः ना।।४३१ ।

वे दोसवा < द्वौ दोषौ—यहाँ अट् प्रत्यय हुआ है ।

कुडुलखी < कुण्डलिनी—दुल्ल प्रत्यय हुआ है ।

द्विभट्ट—अट् + अ प्रत्यय जोड़ा गया है ।

सुडुलखड—दुल्ल + अ ” ”

वलुलखड—दुल्ल + अट् ” ”

गोरड + ई—गोरधी—ख्रीलिंग बनाने के लिए ई प्रत्यय जोड़ा है ।

(५८) अपभ्रंश में भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए ट् और तल् प्रत्यय के स्थान में प्पणु और चणु प्रत्यय जोड़े जाते हैं^१ । चणु का चण भी हो जाता है । यथा—

यडुप्पणु, यडुचणु, यडुचणुहो < मडुचणु—यडुप्पन ।

ख्रीलिंग बनाने के लिए अपभ्रंश में आ और ई प्रत्यय में से कोई एक प्रत्यय जोड़ा जाता है । यथा—

गोरधी, धूलडिआ ।

क्रियारूप

(५९) अपभ्रंश में संस्कृत की व्यञ्जनान्त धातु में अ प्रत्यय जोड़ कर रूप बनाये जाते हैं । यथा—

कड + अ + इ = कडइ—अ विवरण के रूप में जोड़ा गया है ।

पड + अ + ई = पडइ— ” ”

(६०) उकारान्त धातुओं का उव, ईकारान्त को ए और ऋकारान्त धातुओं में ऋ स्वर को अर होता है । कुछ धातुओं में उपान्त्य स्वर को दीर्घ भी हो जाता है । यथा—

सु—सुवइ—सु = स + उव + इ = सुवइ—सोता है ।

नी—नेइ—न + ए + इ = नेइ—के जाता है ।

कृ—करइ—कृ + अर् + इ = करइ—करता है ।

हर—हरइ—हृ + अर + इ = हरइ—हरता है ।

तुप्—तुसइ—उपान्त्य स्वर उकार को दीर्घ हुआ है ।

उप्—उसइ— ” ”

(६१) अपभ्रंश में कुछ धातुओं में एउ स्वर का दूसरा स्वर हो जाता है । यथा—

चिन—चुनइ—चिनइ—चुनता है । इकार को उकार हुआ है ।

(६२) अपभ्रंश की कुछ धातुओं में धातु के अन्तिम व्यञ्जन को द्वित्व हो जाता है । यथा—

१. स्व-सतो। षणुः नाशशशरे० ।

कृत्—कृद्दह—कृत्वा हे । यहाँ ट को द्वित्व हुआ है ।

तुद्—तुद्दह—तोड़ता हे ।

लग—लग्गह—लगता हे । ग को द्वित्व हुआ है ।

कुप्—कुप्पह—कुपित होता हे । प को द्वित्व हुआ है ।

(६३) अपभ्रंश में प्राकृत के समान संस्पृत्त के घ के स्थान पर ज होता है ।

यथा—

संपज्जह < संपज्यते—संपादित होता हे ।

खिज्जह < खिज्यते—खिन्न होता हे ।

(६४) अपभ्रंश में धातु से वर्तमान काल के प्रथमपुरुष बहुवचन में विकल्प से हि प्रत्यय जोड़ा जाता है । यथा—

सद्दहि < शोभन्ते ।

वरहि < वरुतः ।

(६५) अपभ्रंश में धातु से वर्तमान काल के मध्यम पुरुष एकवचन में विकल्प से हि आदेश होता है । यथा—

रुअहि < रोदिषि—हि प्रत्यय जोड़ा गया है ।

लद्दहि < लभसे—

(६६) अपभ्रंश में धातु से वर्तमान के मध्यम पुरुष बहुवचन में विकल्प से हु आदेश होता है । यथा—

इच्छहु < इच्छथ—हु प्रत्यय जोड़ा गया है ।

(६७) अपभ्रंश में धातु से वर्तमान काल उत्तमपुरुष एकवचन में विकल्प से उं प्रत्यय जोड़ा जाता है । यथा—

कड्डउं < कपांसि—उं प्रत्यय जोड़ा है । विकल्पाभाव में—कड्डहामि ।

(६८) अपभ्रंश में धातु से पर में आनेवाले वर्तमानकाल के उत्तम पुरुष बहुवचन में विकल्प से हुं आदेश होता है । यथा—

लद्दहुं < लभामहे, जाहुं < यामः, वलाहुं < वलामहे ।

(६९) अपभ्रंश में हि और स्व के स्थान पर इ, उ और ए ये तीनों आदेश होते हैं । यथा—

मुनरि < स्मर; मेल्लि < मुञ्ज; विलम्बु < विलम्बस्व; करे < कुरु ।

(७०) अपभ्रंश में भविष्यत्काल में स्य के स्थान में स विकल्प से आदेश होता है । यथा—

होसइ, पक्ष में होदिइ < भविष्यति ।

अपभ्रंश का धात्वादेश

धातु	आदेश	उदाहरण
भू	हुच	अहरि पडुचइ नाहु < अधरे ' प्रभवति नापः ।
भ्रू	भ्रुव	बुवइ सुदासिउ किपि < भ्रूत सुभाषितम् किञ्चित् ।
भ्रू	भ्रोष्प	ब्रेष्पिणु < उरुत्वा ।
भ्रज	युज	युजइ, युजेष्पि, युजेष्पिणु ।
ददा	प्रसस	प्रससदि ।
प्रह	रृणइ	पठ गृण्देषिणु मृगु < पठ गृहीत्या मतम् ।
तक्ष	डोक्क	ससि छोटिलजन्तु < शशो अतिक्षिप्त ।
तापि	मल्लक	सासानलनाळ झलकिअउ < रासानज्ज्याला- सन्तापितम् ।
शल्याम	शुडुळ	हिअइ शुडुळइ < हृदयं शल्यायते ।
गर्ज	शुडुळ	शुडुळइ मेहु < गर्जति मेघः ।
धंच	धंचइ	जाता है ।
भञ्ज	भञ्जइ	भाग करता है ।
धुट्ट	धुट्ट अइ	वर्ग शब्द करता है ।

क्रियाओं में जुड़ने वाले प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	इ, ए	हिं
म० पु०	दि	इ
उ० पु०	उं	हुं

आह्वार्थ एवं विध्यर्थक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	उ	हुं
म० पु०	इ, उ, ए	हु
उ० पु०	उ	उं

भविष्यत्काल के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	इ	हिं
म० पु०	दि, सि	हु, हो
उ० पु०	मि, मो	इ

कर धातु के रूप
वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करइ, करेइ	करहिं, करन्ति
म० पु०	करहि, करसि	करहु, करह
उ० पु०	करिमि, काउं	करहुं, करिसु

आज्ञार्थ एवं विध्यर्थक

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करिञ्जउ	करिञ्जंतु, करिञ्जहुं
म० पु०	करिञ्जहि, करिञ्जइ	करिञ्जहु
उ० पु०	करिञ्जउ	रिञ्जउं

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करेसइ, करेइह	करेसहिं, करेहिंति
म० पु०	करेसहि, करेससि, करिहिसि	करेसहु, करेसहो
उ० पु०	करेसमि, करीहिमि, करिसु	करेसहुं

भूतकाल के लिए भूतकृदन्त का ही प्रयोग होता है। यथा—

गयं < गतम्, कियं < कृतम्, पइहं < प्रतिष्ठितम्।

कर्मणि प्रयोग के लिए इञ् या इय प्रत्यय जोड़कर रूप बनाये जाते हैं।।

इञ्—गणिञ्इ, कहिञ्इ, वणिण्इइ।

इय—फिष्टियइ, वणिणियइ।

कृदन्त

(७१) वर्तमान कृदन्त अंत और माण प्रत्यय जोड़कर बनाया जाता है।

अंत प्रत्यय परस्मैपद में और माण प्रत्यय आत्मनेपद में जुड़ता है। यथा—

अंत—इञ्फ + अंत = इञ्फंत—परस्मैपद में।

सिच + अंत = सिचंत— „

कर + अंत = करंत— „

पइस + अंत = पइसंत— „

वज्ज + अंत = वज्जंत— „

उग्गम + अंत = उग्गमंत— „

माण—पविस्स + माण = पविस्समाण—आत्मनेपद में।

वट्ट + माण = वट्टमाण— „

भण + माण = भणमाण— „

हुच्च + माण = हुच्चमाण— „

एवि—कृ + एवि = करेवि < कर्तुम्—करना ।

पाल् + एवि = पाळेवि < पालयितुम्—पालना ।

एविणु—कृ + एविणु = करेविणु < कर्तुम्—करना ।

छा + एविणु = छेविणु < छातुम्—छाना ।

विध्यर्थ कृदन्त

(७५) अपभ्रंश में 'चाहिण्' या किसी विधिविशेष के लिए इएव्वडं, एव्वडं एवं एवा प्रत्यय जोड़े जाते हैं । संस्कृत में जिस अर्थ में तन्व्य प्रत्यय जोड़ा जाता है या हिन्दी में 'चाहिण्' जोड़ते हैं, उसी अर्थ में उक्त प्रत्यय लगाये जाते हैं । यथा—

इएव्वडं—कर + इएव्वडं = किरएव्वडं < कर्तव्यम् ।

मर + इएव्वडं = मरिएव्वडं < मर्तव्यम् ।

सह + इएव्वडं = सहिएव्वडं < सोढव्यम् ।

एव्वडं—कर + एव्वडं = करेव्वडं < कर्तव्यम् ।

मर + एव्वडं = मरेव्वडं < मर्तव्यम् ।

सह + एव्वडं = सहेव्वडं < सोढव्यम् ।

एवा—कर + एवा = करेवा < कर्तव्यम् ।

मर + एवा = मरेवा < मर्तव्यम् ।

सह + एवा = सहेवा < सोढव्यम् ।

सो + एवा = सोएवा < स्वप्तव्यम् ।

जग + एवा = जगएवा < जागरितव्यम् ।

शीलार्थक

(७६) संस्कृत में शीलधर्म को बतलाने के लिए वृ प्रत्यय लगाया जाता है ; या अपभ्रंश में शील, स्वभाव और साधर्म्य में अणअ प्रत्यय जोड़ा जाता है ।

अणअ—इस + अणअ = इसणअ—इसणउ—इसनशील ।

भस + अणअ = भसणअ—भसणउ—भौकनेवाला ।

कर + अणअ = करणअ—करणउ—करनेवाला ।

मार + अणअ = मारणअ—मारणउ—करनेवाला ।

वज्र = अणअ = वज्रणअ—वज्रणउ—वाहनशील ।

क्रियाविशेषण

वरिष्ठउ—शीघ्र, निष्ठट्टु—प्रगाड, कोड्डु—कौतिक, ठड्डरि—अवृभुत, दडवड—शीघ्र एवं जुअंजुअ—अलग-अलग आदि है ।

विद्यालु—नीच संसर्ग, अप्पणु—आहमीय, सड्डलु—असाधारण, रवण्ण—सुन्दर, नाळिअ, वड—मूर्ख और नरस—नया-व्यचित्र आदि विशेषण भी अपभ्रंश में उपलब्ध हैं ।

परिशिष्ट १

उदाहृतशब्दानुक्रमणिका

अअहणं	५०	अच्छेरं	३०, ७७, १२७	अन्तो-वीसम्भ-	
अ आणिभ	८	अज्जा	३३, ६९, १३३	निवेसिभाषो	३१
अ आणंतेण	८	अज्जू	३३, ८९	अहो	६८
अइसुच्चयं	१८	अजोगो	६३	अहं	३४
अइसुंतयं	१८	अज्ज्जाओ	७८	अधणो	५६
अहरेगअट्टवास	८	अज्जिअं	१६	अधीरो	५६
अहसरिअं	४८, १०६	अट्टो	१३६	अनुमई	२१४
अको	५३, ६८	अट्टो	१२३	अन्नं	१०७
अक्खइ	५६	अट्ठं	१३६	अन्नारिच्छो	१०३
अद्धो	२७	अण्णा	६९	अन्नारिसो	४७, १०३
अगह	५२	अणित्तयं	१८	अन्नुत्तं	१०७
अगहं	९४	अणित्तयं	१८, ११४	अप्पउत्थ	१०
अगओ	१५	अणित्तयं	११९	अप्पज्जो	६९, १६३
अरिगणी	२१	अणित्तं	७५, १३०	अप्पणू	६९, १३३
अशयइ	५६	अणोउय	९	अप्पा	१३७
अशो	५३, ६९	अणं	१०५	अप्पाणो	१३७
अहणो	१६	अत्तमाणो	१२३	अप्पिअं	३१
अह्णो	२९	अत्थि	१३०	अप्पेइ	३१
अच्छअरं	१३७	अन्तरगयं	३१	अमुगो	५३, १०९
अच्छरसा	२५, १३८	अन्तरप्पा	२३	अमूरिच्छो	१०४
अच्छरा	२४, २५, ७७, १२७	अन्तप्पाओ	२२	अमूरिसो	१०३
अच्छरिअं	८६, १३७	अन्तरिदा	२३	अम्हकेरं	७२
अच्छरिअं	१३७	अन्तरं	१६	अम्हक्केरं	७२
अच्छरीअं	१३७	अन्तारिअं	११	अम्हारिच्छो	४७, १०४
अच्छिअं	१२५	अन्तारिअरी	३१	अम्हारिसो	४७, ८०, १०४, १३१
अच्छो	७२	अन्तेउरं	३१	अम्हेत्थ	२०
अच्छुओ	४१	अन्तोपरि	२४	अम्हेत्थ	२०
		अन्तोवीसंभो	१५	अम्हेत्थ	२०

एञोएत्य	१२	कउक्लोभभो	६०	कम्पइ	१७
एअं	६०	कउरवो	६०, १०८	कमो	८१
एकमेक्षेण	१८	कउला	६०	कम्मो	१३८
एकमेकं	१८	कउलो	१०८	कन्हारा	८०, ९२, १३१
एक्षेक्षेण	१८	कउसलं	१०८	कन्हारो	८०
एक्षेकं	१८	कउहा	२५, १३८	कयग्गहो	५१, ५३
एकौ	७१, १३७	कउहं	११६	कयण्णू	८६
एगत्तं	५३	कउसासा	१४	कयणं	११५
एगिदिय	१४	ककोडो	१७	कयन्धो	६२, ११८
एगण	१४	ककटा	७३, १२५	कयं	११३
एगो	५३, ११७	ककजो	७२, १२५	कयलं	१३७
एत्तिभमेत्तं, एत्तिभसत्तं	१०	ककजं	७८, १२८	कयं	९६
एथ	३१, ८६	कक्कुओ	१६	करली	११६
एमेव	१२३	ककट्टं	७५, १३०	करणिज्जं	६३
एरावणो	४७, १०७	ककणं	११५	करणीअं	६३
एरिण्णो	१०४	ककडं	११३	कररुहोरंप	११
एरिसो	३९, ९४, १०४	ककणअं	६१	करिभरोस	९
एव	१९	ककणयं	११७	करिसो, करीसो	३८, ९३
एवमेअं, एवमेदं	१६	ककणवीरो	१२०	ककभो	८८
एवं	१९	ककणेरु	१३८	ककभो	३२
एवंनेदं	१६	ककणेरु उस्सिअं	८	ककणो	६४, १२०
एममो	२०	ककणेरसिअं	८	ककणपो	१७, ११६
कभाग्गहो	२२, ५१	ककणुप्पल	१४	ककहारं	८०, १३३
कभावराह	७	ककण्टओ	१६	ककहिओ	११६
कअं	४२, ६०	ककणं	१६	ककणुओ	१३६
कअअं	४८, १०६, ११९	ककणठरं	२२	ककवाओ	५४
कअअं	२२	ककणिमारो	१३७	ककविणो	८४
कअमो	२९, ८४	ककण्हो	४४, ७९, १३२	ककपोओ	५४
कअसं	४७, १०७	ककणी	७७	ककणपन्नओ	९७
कअसाओ	४८, १०७	ककथइ	५६	ककसाओ	६६
कअसार्ह	११९	ककचिओ	७६	ककसापो	१२२
कअं	५३	ककमणो	५३	ककव	१९
		ककमथो	६२, ११८	ककइ	११५

कदमवि, कहुँपि	१९	किदी	९८	कुदारो	९६
कहावणो	७०	किमवि, किंपि	२०	कुदलं	१३०
कदेहि	५५	किमेअं, किमेदं	१६	कुदो	१५
कहं	१९, ५५	किलम्मइ	१३४	कुप्पलं	७३
काउभाण, काउभाणं	१८	किल्हिदं	८१	कुप्पिसो, कुप्पासो	९८
काउण	१८	किल्हिदं	१३४	कुम्भभारो	१३
काउणं	१९	किल्लिणं	८१	कुमरो	३२
काउँधो	११९	किल्लिणं	१३४	कुमारो	३२
कायमणी	५३	किल्लिस्सइ	८१	कुम्भारो	१३
कायरो	११४	किल्लेसाणळ	७	कुम्हाणो	८०, १३१
कालओ	३२	किल्लेसो	८१, १३४	कुमुसुप्पयरो	७०
कालायसं	६३	किल्लंतं	१३४	कुसो	६६, १२१
कालासं	६०, १२३	कियणो	४२	केठवो	४८, ५७, १०७
कालेण, कालेणं	१८	किवा	४२, ९८	केणवि, केणावि	१९
कालो	५३	किवाणं	४३, ९८	केरवं	४८, १०७
कासइ	२७	किविणो	२९, ९८	केरिच्छो	१०७
कासओ	२७	किवो	४४, ९८	केरिसो	३९, ४७, ९४
कासवो	२६	किसरा	९८	केखासो	४८, १०७
कासा	९८	कितरो	४३	केलं	१३७
कासं	१९	किसरं	१०५	केवट्टो	७६, १२९
काहलो	६५, ११४, १२०	किसलं	६७, १२३	केसरं	१०५
काहावणो	१३७	किसल्यं	६७	केसुअं, किमुअं	९२
कि, किं	१९	किसा	९८	कोउदलं, कोऊदलं	७१, ९६
किअं	५१	किसाणू	४२, ९८		९५, ९६
किई	४२, ९८	किसिओ	९८	कोउदहलं	७१, १३७
किच्चा	९८, १२६	किमुअ, किमुअं	१९	कोत्थुदो	१०९
किच्ची	९८, १३५	किसो	४३	कोंचो	४९, १०९
किचं	४३	कित्ति	२०	कोट्टिमं	४१
किच्छं	४३, ९८	कीलइ	५७	कोट्टागारं	१३०
किट्टो	१२०	कीळा	११२	कोत्थुदो	४९
किणेदं	१६	कुक्खेअओ	५०	कान्तलो	४२
किण्हो	४४	कुच्छअयं	१२५	कोप्परं	९६
कित्ती	७६	कुच्छी	७३, १२५	कोमुई	४९, १०८

कोसिओ	४९, १०९	खाणू	७२	'गुरुओ, गुरुओ'	४०, १२४
कोसंधी	४९, १०९	खीणं	७२, १२४	गुरुई	४१, १२४
कोहण्डी	९६, १३७	खीरं	१२४	गुरुओ	४१, १३७
कोहलं	१३७	खीलओ	१०९	गरिहो	१२४
कोहं	९७	खीलो	१०९	गरोह	१२४, १३७
कंकोडो	१७	खुजो	१०	गहिअं	१३७
कंसुओ	१६, १२६	खुहुगेगावलि	१०	गहिरं	३७, ९३
कंटओ	१६	खुडिओ, खंडिओ	८९	गहीरिअं	१३९
कंठमुत्तरत्थ	१०	खुडिओ	३०	गहो	१३७, ६८
कंडुअइ	९९	खेडओ	१२४, १२६	गाऊं	११०८
कंडुया	९६	खोडओ	१२४	गारवम्	११०८
कंडुयणं	९६	खंदो	१२६	गाढ-जोध्वणा	१३७, ६३
कंडं	१६	खंधावरो	७४	गामणीइहासो	१३७
कंधा	९६	खंधावारो	१२६	गामणीसरो	१३७, ६८
कंपइ	१७	खंधुक्खेव	१२१	गामेणी	१३७
कंसं	१९, ८७, ३३	खंधो	७४, १२९	गाहा	१३७
कंसिओ	३३, ८७	खंओ	९६, १३०, १३९	गिंडी	१३७
खओ	७२, १२४	गभा	९२	गिटी	४३, ९८
खइअं	३२	गओ	९१, ६०	गिड्डी	४३
खइरं, खाइरं	८८	गइंद	१३	गिन्दी	९८
खगाउसभ	१०	गड	१०८	गिम्हो	१३३, १३३
खगो	२१	गठआ	३०, ८९, १०८	गिरा	१३३, १३३
खट्टा	९७	गठओ	३०, ८९, १०८	गिरिलुडिओअहि	१३३
खट्टो	९७	गठखं	१०८	गिरिं	१३३
खणो	७३	गठओ	९६, १०८	गिष्ठाइ	१३४
खण्डिओ	३०	गऊ	१०८	गिष्ठाणं	१३४
खणू	७२	गऊइ घणो	१९६	गुठं	१३४
खण्वरं	१०९	गअन्ते ले मेहा	१९६	गुम्भं	८०, १२८
खमा	७३	गहो	१२६	गुहोदन	१२९
खडिओ	२२	गन्ध	१२	गुत्तो	१२९
खडोडो	३३	गम्धो	९३	गुदओ	४०
खसिओ	१११	गडिणो	११४	गुरखावा	३४
खइअं	३२	गमणूमुअ-	११४	गुद्री	३४

गुंफद्	६१	घचरं	१२६	चंशो, चंश्री	१०, १८
गूढ उअरं, गूढोअरं	९	घद्, घाद्	३२	छडी	१२२
गेज्भं	९०	घन्श्री	१७	छट्टो	२२, १२२
गेड्डभं	३१	घदिछा	६७	छट्टी	१३६
गैकुळं	८६, ११०	घमरं	३२	छट्टो	१३६
गोढी	२२	घर्म	२२	छणो	७३, १२४
गोदमो	४९	घयइ	१२६	छत्तपण्णो	२९, १२२
गोरिहरं, गोरीहरं	११	घलणो	६४	छत्तिपण्णो	२९
गोरी	१४९	घवेडा	१०६	छप्पहो	१२२
गंभीरिवं	१३५	घविश	६७, १०६	छमा	७३, १२४
गिठी	१७	घविळा	११२	छमी	१२१
गुंछं	१७	घाओ	१२६	छमुहो	१२२
घअं	४२	घाई	१२६	छयं	७३, १२४
घट्टो	४२, ९७	घाउरन्त	२८	छारो	७३, १२४
घड्ड	६७	घाउंढा	११९	छाळी	१११
घरो	६७, ११२	घिड्ड	६७	छाळो	१११
घरं	१३८	घिण्हं	३६	छावो	१२१
घाणिदिय	१४	घिलाओ	६४, ११०	छाहा	६४
घिको	१३८	घिहुरो	११०	छिरा	१२१
घिणा	९८	घुळुं	११३	छिहा	१००, १३६
घुसिणं	४२, ९८	घेण्हं	३६	छोअं	४०, ७२
घंथा	६७	घुण्णो	३४	छोणं	७२, १२४
घइओ	४९, १०७	घेत्तो	४९, १०७	छोयं	१२४
घहत्तं	१०६	घोगुणो	१३७	छोरं	७२
घउट्टो	१३६	घोच्चारो	१३८	घुळुं	११३
घउहथी	३६, १३७	घोत्थी	१६, १३७	घुण्णो	७३, १२४
घउत्थो	१३७	घोहथो	१३७	घुरो	१२४
घउहवी	३६, १३८	घोहसी	३६, १३८	घुहा	२६, ७३, १२३
घउएइ	१३७	घोहइ	१३७	घुदं	१३८
घउल्लारो	१३८	घोरिअं	१३६	घेसं	७३, १२६
घकाओ	१३	घोरो	६३	छंमुहो	१६
घळं	६८	घंदिमा	११०	जमा	३३
				जमो	६०

जइ	३३, ५२	जारिचडो	१०४	भडिलो	१११
जइत्थ	२०	जारिसो	४७, १०४	भरणं	७८, १२८
जइमा	२०	जारो	५३	भायइ	१२८
जइसं	४७	जाला	६७	भिनजइ	७२, १२५
जइदं	२०	जालोलि	१०	भोगं	१२५
जउंणयई	११	जाव	२३	भुणी	२९, ८५
जउंणा	११९	जिअइ, जिअउ	३८	टक्को	५७
जअखो	१२४	जिणधम्मो	५६	टगरो	११३
जओ	७८, १२८	जिणो	३९	टसरो	११३
जटो	१२६	जिण्ह	१२२	टव्वरो	११३
जडिलो	१११	जिणिंद	१३	ठड्ढो	१३६
जढळं	६५	जिम्भा	१३१	ठविओ, ठाविओ	८८
जण्ह	७९, १३३	जिभिदिय	१४	ठविअं, ठाविअं	३२
जणवळेण	२१	जिवउ	९३	ठाई	५७
जमो	६२, ११९	जीआ	८२	ठीणं	३३, ८९
जम्मो	७९, १३१	जीओ	५२	ठड्ढो	११५
जळअरो, जळचरो	५३	जीअं	१२३	ठग्गो	११५
जएमहअं, जएमअं	८७	जीहा	९१, १३१	ठरो	११५
जळोह	११	जुी	१२७	ठसइ	६०
जळं	१५	जुगं	६७, १३१	ठसणं	११५
जवणिअं, जवगोअं	६३	जुक्कउइ	७७, १२७	ठह	११५
जसो	२३, ६२, ११९	जुणो	३९	ठहइ	६०
जह, जहा	३२, ८९	जुणं, जिणं	९३	ठाहो	११५
जहणं	५५	जुत्तमिणं, जुत्तंइणं	१६	ठिओ	५७
जहिदिलो	३९	जुम्मं	१३१	ठोळा	११५
जहुदिलो	३९, ६४, ९२	जेणहं	७	ठोइओ	११५
जा	१२३	जोओ	१२७	ठंडो	११५
जाइ	६२, ११३	जोइसिंद	१३	ठंओ	११५
जाणं	४७	जोरगो	२१	ठंस	११५
जादिसं	४७, ६९	जोणहा	७९, १३२	णअणं	५२
जामाउओ	४५, १०१	जाण्यणं	४९, ७१, १०९	णअरं	५१
जामाडुओ	४५	जं	१५, २५	णओ	५१
जारि	१०४	अओ	१२६		

ण आणामि	८	णिचं	७१	तण्	२१७
ण आणामि	८	णिङ्कालं	२९, ६१, ८१	तण्करो	७५
ण आणीयदि	८	णिङ्गा	३१	तण्चं	७७, १३१
णई	६१, ११७	णिरभो	३७	तणं	१२, ९७
ण उणा, ण उणाई	३२	णिरावाध	२३	तण्दै	७७
णउलो	५१	णिरुचरं	२३	तम	२३
णरकंचरो	५२	णिरुद्ध	३७	तमदि	२०
णरुलो	६१	णिभ्युभं	४४	तयानि	६८, ९३
णरुवा	७५, १२६	णियुवुई	४५	तरु	५३
णरुभो	७६	णियुवुं	४४	तरुचोटं, तालचंट	३२, ८८
णरुलं	२९, ६१, १२१	णिसाभरो	३३	तण्प्रयो	५७
णरुो	५६	णिसासो	३७	तण्यथ	११२
णपहुप्यंत	८	णिसिभरो	३३	तद्, तद्वा	३२, ८९
णयरं	५१	णिस्सवो	३७	तद्वाच, तद्वाचि	२७
णराभो	३२	णिद्रुभं	४५	तदा	३२
णरो	६१, ११७	णुमञ्चद्	३७, ९१	ताभो	६०
णरुदुत्त	८	णुमणो	३७	ताविसं	४७
णरेला	१०	णुमचो	९१	तादिमं	४७
णसद्विअपडिबोद्	८	णेद्	११७	तारिकु	१०४
णसद्विआलोभ	८	णेद्वा	३५	तारिचुओ	१०४
णहं	२३, ५५	णेभा	५१	तारिसो	४७, १०४
णहुप्यल	१४	णेमछिआ	३५	तार	२३
णगभ	७	णंगलं	१२१	तिअसीयो	१३
णाणं	६१, ८९, १२९	ण्हाभो	१३२	तिग्गं	१३५
णालवद्	७	ण्हाऊ	७९	तिग्गं	१३१
णाल्लिअद्	७	ण्हाणं	७९	तिण्हं	१३३
णाल्लिदि	७	ण्हाडिभो	११७	तिण्णुवी, तण्णुं	८१
णाहणो	६१, १२१	तभा	३३	तिचिरो	९०
णिअसं	९७	तभो	६०	तिचं	९८
णित्तं	४५	तद्	३३	तिहपपरो	५१
णित्तकण्ठं	२४	तद्भं	३८, ९३	तिह्यं	३४, ३९
णिच्चलो	२२, ७७	तद्भो	११९	तिव्यं	४३
णिचोडग	९	तद्दसं	४७	तिव्वं	१३१

तिरिच्छि	१३२	थुई	७९, १२९	दण्डन्दरुहिरलित्तो	१२
तीसा	१९, ९१, १३८	थुछो	७१	दणुवहो	१०३
तुण्डभो	७२	थूणो	१०५	दणू	१०३
तुण्डको	७२, १३७	थिणं	३३, ७२	दरिओ	१०३
तुम्ह	११९	थीणं	३३, ७२, १२९	दरिसणं	१३४
तुम्हकेरो	११८	थूलभहो	१२१	दलिहाइ	६४, १२०
तुम्हारि	१०५	थूलो	१२१	दलिहो	६४, १२०
तुम्हारिच्छो	१०५	थुवओ	८९	दावगी, दावगी	३२
तुम्हारिसो	४७, ६३, १०५	थेणो	१०५	दवो	५३
तुरिअं	८५	थेरिअं	१३५	दस	६६, १२१
तुहं	३९, ९३, १३७	थेरो	१३८	दसयं	१७
तेणं	१८	थेवं	१३८	दसमुहो	६६
तेचीसा	१३८	थोअं	७९, १२९	दसरहो	६६
तेरह	११६, १२२, १३८	थोअं	१३८	दह	१२२
तेरहो	३०	थोण	९६	दइबलो	६६, १२२
तेछुक्कं	१०७	थोचं	७८, १२९	दहमुखो	१२३
तेछोअं, तेछोअं	७०	थोरो	७१	दहमुहो	६६
तेरलं	७०, १३७	थोरं	६६, ९६, १२१	दहरहो	६६, १२२
तेवीसा	१३८	थोवं	१३८	दहीसरो	८
तेणीरं	९६	दआळू	५२	दहो	१३८
तेणं, तणं	९६	दइअवं	१०६	दाडा	१३८
तेणं	४१	दइओ	४८, १०६	दारं	३४
तं	१५, २५	दइणं	४८	दालिहं	६४, १२०
तचेअ, तंवेअ	७२	दइअं	४८	दालिणो	२८, ८३, १३७
तंवेव...पुण्डिहं	१२	दइवजो	६९	दिअरो	१०५
तंपि	२०	दइवणू	६९	दिअहो	५२
तंवो	७९	दइवं	७२	दिओ	३७
तंयोअं	९६	दइओ	१३७	दिउओ, दुइओ	३७
तंवं	३४, १३७	दइअं	७२	दिउणो	३७
तंमं	१७	दइआ	१२६	दिट्टो	७४, ९८, १३०
तंभो	१२९	दइओ	७३, १२५	दिट्टं	४२, ९८
तंभो	१२९	दइओ	१३०	दिट्टंति	२०
तंभो	१२९	दइओ	१३६	दिणं	२९, ८४, १३६

दिव्यद	६०	दुगाई	३०	दोहो, मोहो	६८
दिरमो	३०	दुगारिभो	४९, १०८	द्वंगर्ष	१७
दिवहो	१२३	दुगिहो	९१	घटा	१००
दिवा	२५	दुवे	३७	घण्टा	२५, १३८
द्वितोभ	९	दुमभो	४१	घण्ट	२५
दीभो	६३	दुस्तहो, वृस्तहो	२३, ९५	घन	१९
दीभं	१५	दुहलो	४१	घर्षाभो	५२
दीभं	६३	दुहमहर्षं, दुहमभं	८०	घर्ष	६८
दीदाउलो	२५	दुहा	११	घम्माकडावमान	०
दीदाऊ	२५	दुहाऊभं	३०	घम्मिळ, घम्मेल	३५
दीवदिसा उदहीणं	१०	दुबारिञ्चर	३०	घम्मो	२१
दीहो	१३०	दुर्ग	१३७	घर्ष	९३
दुमणो	३७	धृदिमल्लवमान	७	घिई	४३, ९९
दुमल्लं	९५	धूमदो	२३, ४१	घिहो	१००
दुगाई	९१	धूमासणो	२०	घिना	४३
दुभारं	३४	धूदभो	४१, ९५	घिन्वद	६०, ११६
दुहभो, विहभो	९२	धूदगो	९५, ११६	घोष	११६
दुहभं	३८, ९३	धूडलं	१२३	घोरिभं	१३५
दुवणो	९२	धूपरो	१०५	धीरं	७०, १०९
दुवर्षं	५९, ९७, ११३	धेर	३४, ९०	धुणो	७१
दुवर्षं	११३	धेयजो	१३३	धुरा	२४
दुवर्षं	७४	धेरणू	१३३	धूभा	१३८
दुरवगाहं	२४	धेर-रधुइ	७०	नरगामो	७०
दुगुल्लं	११०	धेविइडि	१४	नरमोर्षं	११
दुगायो	१०३	धेविइ	१३	नई	५२, ६१
दुवर्षं	२२	धेवोपप्लथ	१२	नरन्वा	७१
दुमणो	९१	दारभणं	३०	नरन्वो	१३७
दुरागदं	२४	दोवपणं	९२	नरमो	६०
दुवर्षं	२४	दोहमो	४९	न लुपंति	२०
दुवेहो	९१	दोहयो	११५, ११६	नरहाइ	१२८
दुवल्हो	५६	दोहा, दुहा	९२	नदइ	१२९
दुवमर्षं	३०	दोहाऊभं	३०	नडो	११२
दुवपणं	९२	दोहा किञ्चइ	३०	नत्तिभो	४६, ९९

नक्षत्रो	४६, १०१	निष्कृतां	१०१	पद्मको	१३८
नमोकारो	३१, ७४, ८६	निष्कृते	१०१	पद्महा	२६, ६९
नपर्णं	११७	निष्कृती	६९	पद्महाद्यं	६९
नयरं	६१, ६३	निसदो	११६	पद्मद्विर्भ	२६
नराओ, नाराओ	८८	निसाभरो	१२	पद्मङ्गा	६९
नरिंदो	१३, ३४	निसिअरो	१२, ८९	पद्मसमयं	६९
नरो	६१	निसित्तो	२७	पद्महरं	११
न वेरिअग्गेविअवयासो	१२	निसीदो	११६	पई	६४
नहा	७१	निसंतो	६६, ९९, १२२	पईयं	६९
नहं	११८	निस्तहं	२३	पउअं	३२
नाइदूरं	७	निहसो	११०, १२२	पउट्टो	१०२, १०७
नाभिजाणइ	७	निहुअं	१०१	पउत्तो	४४, १०२
नावा	१०९	नीचअं	१०६	पउमं	३१
नाहो	६६, ११६	नीडं	३९, ७१	पउरिसं	४०, ६०, १०८
निअत्तं	४६	नीमी	६६, १२१	पउरो	६०, १०८
निउअं	१०१	नीमो	११८	पअं	२१, २९
निउरं, नुउरं	९६	नीलुपपलं	३४	पअलीणं	१२४
निआओ	७४	नीवी	६६	पअसेधो	१२४
निआमं	७३	नीसरइ	९१	पअलो	६६
निअसं	१२६	नीसदो	२७	पअुरणं	१३८
निरवसेसं	२३	नीसहं, निस्तहं	२३, ९१	पअओ	७६, १२६
निअं	७६	नीसासुसासा	१३	पअअउं	७६
निट्टुरो	२२, ६७, १२१	नीसो	२७	पअअसो	७६, १२६
निट्टुलो	६६, १२१	नूणं	१९	पअअदो	७६
निणं	७८, १२९	नेउरं, नूउरं	९६	पअआ	७७, १२७
निण्णओ	१३०	नेडं	३९, ७१, ९४	पअिअमं	७७, १२७
निण्णेमो	७६, १३०	नेडूं	७१, १३७	पअिओणं	१२६
निम्मलं	२६	नेदो	२२	पअिअकम्मं, पअआकम्मं	१०
नियो	९९	नोणीअं	१३८	पअउं	७७, १२७
निअत्तओ	७६	नोमाअिआ	१३८	पअत्तं	१२८
निअत्तणं	७६	पअअं	२७	पअत्तं	७८
निअुत्तं	४६	पअओ, पअओ	३२	पअआ	६६, १३३
निअो	४३	पअापई	११	पअआओ	७८, १२८

पञ्जुणो	७८, १२९	पण्डो	१३२	पल्हाओ	८०, १३३
पञ्चीर्णं	१२६	पस्थरो	३२, ७९, १३०	पवट्टो	१०७, ११०
पञ्चो	१३३	पस्थारो	३२	पयत्तओ	७६
पहणं	१३६	पस्थवो, पस्थवो	३२	पवयणउवघोयग	१०
पहं	१००	पन्थो	१६	पवासु	२८
पठर्म	३०	पमुक्कं, पम्मुक्कं	७०	पवाहो, पवहो	३२
पठमसमय उवसंसं	१०	पमुहेण	६६	पव्वहुम्मूळिदं	१४
पडंसुआ १७, ६८, ११३		पम्हलं	१३२	पसत्थो	१३०
	३९, ९०	पम्हाइ	१३२	पसिआ	३८
पडाया	६८, ११३	पम्हाइं	८०	पसिदिलं	९१
पट्टिकरइ	६८, ११३	पयट्टइ	७६, १२९	पसिद्धी	२८
पट्टिनिश्चत्तं	६८, ११३	पयत्तणं	७६	पसिओ	१३
पट्टिफद्धी	२८, ७९, १३१	पययं, पावयं	८८	पमुत्तं	२८
पट्टिमा	६८, ११३	पयागजलं	६२	पदरो	३२
पट्टिवआ	२४, २८	पथारो	६६	पदा	११८
पट्टिवणं	६८	पथावई	६४	पदाओ	६६
पट्टिवहो	६०	परहुओ	४४, १०१	पदारो	३२
पट्टिवया	२४, ६८, ११३	परामुट्टो	४४, १०१	पहावळिउरुणो	१२
पट्टिसरो	६८	परिट्टविओ	८८	पहुडि	६८, १०१, ११३
पट्टिसारो	६८, ११३	परिट्टा	२६	पहुदि	४४
पट्टिसिद्धि	२८, ६८	परिट्टिअं	२६	पहो	३६, ९०
पट्टिदारो	६८	परिट्टिअं, परिट्टाविअं	३२	पहोळि	१०१
पट्टिदासो	६८, ११३	परुयेइ	२१४	पामठोर	९
पट्टिसुर्व	११८	परोप्परं	३१, ८६	पामळं	२७
पट्ट	११३	परोहो	२८	पाठओ	१०२
पट्टमो	११४	परंसुहो	१६, २६	पाठअं	३२, ४६
पट्टर्म	३०	पळिअं	११४	पाउरणं	१३८
पणट्टभओ	६६	पळिअं	६०, ११६	पाउवणं	४६
पण्णाइ	१३६	पळिलं	११४	पाउसो	२६, ४४, १०२
पण्णा ६९, ७८, १३३		पळिविअं	३८, ९३	पाडिफदी, पट्टिफदी	८४
पण्णासा	१३६	पळीवेइ	६०, ११६	पाडिफद्धी	२८, ६८
पण्णो	१३३	पलंबपणो	९६	पाडिवया, पट्टिवआ	३८
पण्हओ	१३२	पल्लथो	१३०	पाडिनिद्धी	२८, ८४

पाणिर्भ, पाणीभं ३८, ९३	पियगमणं ५२	पुद्गुली ४५, ८१
पातुवखेव ११	पिलुट्टं ८१, १३४	पुहं ४६
पायडं, पयडं ८३	पिलोसो १३४	पुंछं १७
पायवं ९७	पिसल्लो १११	पूसो २७
पायालं ५४	पिसागो १११	पेआ ६३
पारओ १२३	विहडो ११२, १२०	पेजसं ३९, ९४
पारकं, परकं २८, ८३	विहं १५, १८, २६, ४६	पेज्जा ६३
पारकेरं, परकेरं २८, ८३	पीअलं ११४	पेट्टं ३५
पारद्धी ११८	पीढं ३९	पेढं ३९, ९४
पारेवओ, पारावओ ३४	पीवलं ११४	पेण्डं ३५
पारो ६६, १२३	पुछं १७	पेम्म १३७
पारोहो, परोहो २८, ८४	पुट्टो ७०, १०३, १३०	पेम्मं ७१
पावड्यं १२३	पुट्टं ४५	पेरंतो, पअंतो ८६
पावयणं २८	पुंडर्म ३०, ८५	पेरंतं ३०
पावासुओ ९२	पुडुमं ३०	पोक्खरिणी ७४, १२५
पावासू, पयासू २८, ९१	पुडवी ३५, ११५	पोक्खरं ७१, ७४, १२५
पावीढं १२२	पुणा ८३	पोग्गलं ४२
पावं ५३	पुणाइ, पुणो ८७	पोत्थअं ४१
पासइ २६	पुंनाभाइं १११	पोप्फलं १३८
पासिद्धी, पसिद्धी २८, ८४	पुप्फं ६१, ७९, १३०	पोम्मं ३१, ८७
पासुत्तो, पसुत्तो ८४	पुरओ १५	पोरो १३८
पासुत्तं २८	पुरा २४	पंको, पळो १६
पासू १९	पुरिसुत्ति २०	पंचूण १४
पाहुडं, ४४, ५८, ११३	पुरिलो ४०, ९४	पंडवो ८७
पिओत्ति २०, ३६	पुरिसोत्ति २०, ३६	पंढिओ ५४
पिठओ ४५, १०१	पुरेकडं ९७	पंति, पंती १६
पिडत्ति २०	पुरंदरो ५२	पंत्ती २६
पिढं, पकं २१, २९, ६८	पुलोमी ४९, १०८	पंधो १६
पिच्छी ७५, ९९, १२६	पुवण्हो ३२, ८०, ८८	पंसणो ३३, ८७
पिट्टं ३५, १००	पुव्याण्हो ३२	पंसू १९, ३३, ८७
पिठो ११२	पुहं ३५, ४५, ९०, १०१	फणसो ११७
पिण्डं ३५	पुहरी ४५	फणी ६१
पित्थी ४४	पुहवीस ८	फन्दनं २३

फरसो	११७	बहुदग	७	भाणु उरन्काभो	८
फलिहा	६५, ११७, १२०	बहुसुद	११	भाणुरन्काभो	८
फलिहो	५८, ६५, ११०	बेदेडो	९०, ३५, ३९	भामिगो	१११
फल	१५	बाम्हणो	३२	भाण	१२३
फसो	१७	बारह	११६, १२५	भितडी	४०, ५९
फाट्टि	११७	बाहह	११७	भिक	४२
फाडेह	५७	बाहो	११६	भिगारो	४३
फालिहो	६६, ११७	विदको	६३	भिगो	४३, ९९
फाठेह	५७, ११२	बीओ	६३	भिम्भणो	१२१
फासिदिय	१४	सुम्भा	७५, १२६	भिसत्र	२५
फुल्लेला	१०	बुधो	१७	भिसिणी	२६, ११८
फंदणं	७९, १३१	बुधो	१७	सुभमंतं, सुभामंतं	११
फांसो	१७, ७९	बोरें	३५, १३८	सुरें	४५, १०२
घडलो	६५	बंधवो	१७	सुत्तं	२२
घन्दारओ	९७	बंधचरें	८०, १३७	सुमया	९६
घन्दारया	४५	बंधणो	८०	सुमओ	९०
घन्धह	५६	घंसो	१२२	भेडो	१२०
घन्धयो	१७	भइरवो	४८, १०६	भोगणमेत्तं	९०
घम्भणं	१३६	भरगो	६७	भोचा	७५, १२६
घम्भहो	१३१	भजा	७८, ११८	मधणो	५२
घम्हवरिअं	१३५	भजो	५६, ११२	मधलांछग	९७
घम्हचेरें	३१, ८०, ८६	भई, भई	६८	मभयहू	९७
घम्हणो	३२, ८०, ८८	भमरो	६२	मओ	४२, ५२, ९७
घम्हा	८०, १३३	भरिया	१३५	मदल्ल	१३८
घलया	८८	भवओ	१५	महंद	१३
घलही	५७	भयन्तो	१५	मडआ	९७
घहफई	१००	भवारि	१०४	मडअं	९८
बहिणी	१३८	भवारिच्छो	१०४	मडदो	९४
बहिरो	११६	भवारिसो	४७, १०४	मडई	३९
बहुअरं	८	भसणो	६२, ६५, ११८	मडणं	५०, १०८
बहुआइल...अंगे	१२	भाइरही	५१	मडत्तणं	९८
बहुअअरं	८	भाडओ	४४, १०३	मडरं	९४
बहुत्तं	७१, १३७	भागूण	१४	मडली	५०, १०८

मउखो	९४	मणोपणं	६९	महु-खट्टी	६३
मउलं	३९, ५१	मणोरहो	५९	महुसव	१४
मऊरो	३६	मणोसिखा	१५	महोसि	९
मऊद्वो	३६, १३८	मणोदरं	१०७	महो	५५
मन्मिषम	१२४	मणंसिनी	२८	माहमंडलं	४६, ९०१
मन्मगओ	१५	मणसिखा	१७	माहदरं	४६, १००
मन्मगो	२२, ०३	मणंमो	१७, २८	माहद्वजाल	१३
मन्मनु	९७, १०१	मन्मणं	१३१	माहं	९९
मन्मत्तरो	७७, १२७	मन्महो	७९	माउवा	४५, १०२
मन्मिआ	७३, १२५	मयगलो	११०	माउओ	१०२
मन्मया	१२८	मयणो	११७	माउअं	७१
मन्मजरो	१७, ३२	मयं	११४	माउकं	७१, ९८
मन्मजं	७७, १२८	मयंको	५१, १००	माउमंडलं	४६
मन्मिभमो	२९, ८४	मरगयं	११०	माउळिगं	११४
मन्मज्जं	७८, १२८	मरलो	३२	माउहरं	४६
मन्मज्जं	८०	मरहट्टो	८७	माऊ	४५
मन्मिभा	१३६	मरहट्टं, मरहट्टं	३३	माज्जारो	३२
मन्मिओलिच	१०	मरालो	३२	मागुसो	६१
मन्मिया	९७	मखय सिहरक्खण्डं	७०	माणंसिणो	८४
मन्मट्टं	९७	मसाणं	१३८	माणसी, मणसी २८, ८४	
मन्मयं	११३	मसू	१७	मादु	४५
मन्मट्टं	११४	महुणयसमा सहिभा	६७	मादुमंडलं	४६
मन्मियो	१३६	महाभालंद, महाक्खन्द	७	मादुहरं	४५
मन्मदा	५६	महाउदग	१०	माओहड	१०
मन्महरं	१०७	महाराआधिराओ	७	मासलं	१९
मन्मसिणो, मणंसिणो	१७	महिङ्खिय	४१	मासं	१९
मन्मसिखा	११, १७, २७	महिशाओ	५४	मादणी	५५
मन्ममी	१७	महिविट्टं	४४	माहूळिगं	११४
मन्ममो	२७	महिंद	१३	माहो	५५
मन्मामिषा	११	महुअमहुअगिरा	२४	मिहंगो	४५, ९९
मन्मभो	१२	महुअं, महुअं	९६	मिघू	१०१
मन्मपुण्यं	१३३	महुआ	५५	मिष्ठा	१२०
मन्मोळं	४९, १३३	महुदं	१२	मिहं	४३, ९९

मिचं	२२	मूसावओ	११५	रयथं	५३
मियतण्हा	१००	मेहला	५५	रसाभलं	५१
मियसिराओ	१००	मेहो	५५	रसायलं	५३
मिथंको	१००	मोंडं	४१, ५७	रस्सी	६७, ८०
मिरिअं	२९, ८४	मोत्ता	४१	राओ	३२
मिछाह	१३४	मोत्तलं	१५	राईसर	१४
मिलानं	८१, १३४	मोसा	४६, १०३	राउलं	१३
मिछिऊओ	३४	मोसावओ	४६	रापुसि	९
मिहुणं	५५, ११५	मोरो	३६	रामऊण्हो	९७
मीसं	२६	मोहो	३६, १३८	रामा इअरो	९
मुहंगो	२९, ४६, ८४	मंजरो	१७, १३८	रामे अरो	९
मुको	७२, १३७	मंडूको	७१, १३७	रायवह्यं	७६, १२९
मुरगु	२२	मंसलं	१९	राहा	५५
मुट्टी	७४, १३०	मंसू	१७	रिऊ	४७, ५२, १०५
मुडालं	४४	मंसं	१९, ३३, ८७	रिखो	१२४
मुडं	१७	रअओ	५१	रिखलं	७३
मुणालं	१०२	रअअं	६०	रिछो	१०३, १२५
मुणिइणो, मुनीणो	८	रअअं	५१	रिछं	७३
मुणिईसरो, मुणीसरो	८	रअणं	५२	रिज्जू	४६, १०५
मुत्ताहलं	६१	रअदं	५९	रिणं	४६, १०५
मुत्तो	७७	रऊठा	७७	रिदी	४६, ४७
मुत्तो	७७	रउणी	१२३	रिसहो	४६, १०५
मुत्तं	६७	रत्तो	६८	रिसी	४७, १०५
मुणिदो	३४	रमणिजं	६३	रुखलादो आअओ	१२
मुसा	४६, १०३	रमणीअरो	१२	रुखो	१३८
मुहलो	६४, १२०	रमणीअं	६३	रुण	१३८
मुहं	५५	रमाअदीणो	७	वटो	६८
मुहुत्तो	७७	रमाआरामो	७	रुप्पिणी	७३, १३०
मुंजायणो	४९, १०८	रमाउवचिअं	९	रुपं	७३
मूओ	७२	रमारामो	७	रेभ	६१
मूसओ	३५	रमादीणो	७	रोअदि	५१
मूसलं, मुसलं	४०, ९५	रमोवचिअं	९	लवखणं	७२, १२४
मूसा	४६, १०३	रपथुज्जल	१४	लरगो	६७

वाडलो	७१	विचरुडो	१२६	विलपार्लो, विलपेसो	९
वाणारसो	१३८	विचरुडो	३६	विलिअं	२८, ३८, ९३
वायरणं	६६	विछिओ	१७, १२७	विलोअं	८५
वाया	२४	विछिओ	१७	विल्लं	३५
वारणं	६६, १२३	विजं	१२६	विसद	१२२
चारिमई, वारीमई	११	विजा	७७	विसडो	६२, ११८
वारं	३४	विज्जू	२४	विममइअं	८७
वावडो	५८	विज्जुलाअणुमिअं	९	विसो	४३, ९९
वास	९	विजं	७५, १२५	विसेमुअओगो	१४
वासरईसरो	९	विज्जो	१६	विसेसो	६६
वामा	२७	विज्जो	१२८	विसो	४४
वासेणोल्ल	१०	विटं	४६, १०१, १०३	विदत्थी	११४
वासेसी	९	विट्ठी	४६, ९९	विदुफ्फई	४६, १००
वासो	२७	विट्ठो	९९	विदुलो	७०, १२१, १३१
वाहइ	५५	विडवो	४६, ५७	विदा	४३, ९९
वाहा	५५	विड्डा	७१, १३७	विदिओ	७१
वादिअं	०९	विड्ढी	४३	विदिसो	७१
वादिअं	४३	विण्णाणं	७८, १२९	विदुओ	४३, ९९
वाद्दो	१३७	विण्णू	८६	विहीणो	३९
विअ	१२	विण्ह	३५, ७९, १३२	विहूणो	३९, ९४
विअड्डो	१३६	वित्तिण्हो	४३	वीरिअं	१३५
विअणा	१०५	विची	४३, ९९	वीसंभो	२७
विअण	२८, ८५	विचं	४३, ९९	वीसमइ	२६
विअणं	५१	विहाओ	४३	वीससइ	२७
विआओ, विओहो	५२	विद्धकई	९९	वीसा	१९, ९१, १३८
विहज्जो	११९	विडो	१०१	वीसाणो	२७
विहण्हो	९९	विप्पो	५४	वीसामो	२६
विउअं	४५, १०२	विण्हओ	८०, १३२	वीसुं	१५, २६, २७, ८५
विउदं	६०	विण्हयणिजं	६३	उट्ठी	४६, १०२
विउल्लं	५२	विण्हयणीअं	६३	उट्ठी	४६, १०२
विकासरो	२७	विअल्लो	१२१, १३१	उड्डो	४४, १०१, १०२
विकुवो	२१, ६८	विरहणो	३४	उत्ततो	१०२
विण्णुओ	४३, ९९	विलया	१३८	उचान्तो	४५

बुंद	४६, १०२	बंसिओ	३३	सण्ह	६८, ९६, १३३
बुंदानया	४६	बंसियो	८८	सण्णा	६९
बुंदावणो	४६, १०२	बंसो	६६	सणिच्छरो	१०६
बुंहुं	३०	सभदं	६१	सत्तरी	११४
बुद्धफुड	१३१	सभयं	६१	सत्तावीसा	११, २२
बेअणा	१०६	सभा	३३	सत्तुअं	१९
बेवालिओ	४९	सइ	३३, ४३, १००	सहो	६६, ६८, १२२
बेकुंठो	६७	सइरं	१०६	सद्धा	२३
बेज्जं	७७	सई	६१	सन्तो	१६
बेयो	१०७, १२८	सउण	६३	सप्पओ	६७
बेंटं	४६, १०१, १०३	सउरा	६०, १०८	सप्पो	६४
बेडिसो	२८, ८६, ११४	सउहं	६०, १०८	सप्फं	७९, १३०
बेणुछट्टी	६३	सकलं	११०	समत्तं	७९
बेणू	११२	सकअं	१९	समरी	६१
बेण्ह	३६	सकथं	७४	समलं	६१
बेरं	४८, १०७	सक्यारो	१९, ७४	समरो	१२१
बेल्डी, बल्ली	३०, ८६	सकालो	६४, १२०	समवाओ	६२
बेल्द	११२	सक्यो	२१	सम्मं	१६
बेलुवणं	१४	सक्यं	१६, २६	समिद्धी	२७, ४४, १००
बेल्हं	३६	सज्जो	१६	समुदो	६८
बेसमणो	१२१	सघायं	६२	सम्मं	२६
बेसलिअं	१३८	सचं	७६, १२६	सयवो	६७, ११२
बेसवणो	४९, १०७	सच्छाहं	१२०	सयछ	८
बेसिओ	४९	सओ	२२, ६७	सरअ	२६
बेसिअं	१०७	सज्जसं	१२६	सरहहं	१०७
बेसंपाअणो	४९	सज्जआओ	७८, १२८	सरि	१०६
बेसंपायणो	१०७	सज्जओ	१२८	सरिअ	२४
बेहुअं	४८, १०७	सज्जं	१२८	सरिअओ	२८, ७३, १०६
बोक्कं	४२	सज्जा	१६	सरिया	२४
बोटं, पोण्टं	४६, १०३	सठा	६७, ११२	सरिसो	१०६
बंफ, बंफ	१७	सठो	६६	सरो	६७, ८०
बंपज्ज	१७	सधुवा	१३६	सरोदुं	१००
		सण्णो	१६, ६६	सयवो	६१

सवहो	१४, ११	सारसं	२७	सीतां	२७
सध्व	८	साह	११, ११७	सीहो	१९, ६६, ८१
सध्वभो	११	साहृभवो	८	सुभइ	८१
सभ्यभो ३०, ६८, १३३		सिभाखो	१००	सुडरिमो	१३, ११
सभ्यणू ३०, ६८, ८६		सिगारो	४२, १००	सुडरी	१९
सभ्योउय	९	सिगं	१०१	सुडलं	१३१
सहभरो, सहभारो	१३	सिघ	१९, ६६, १२३	सुडुडं	१९, ११४
सहकारो	१३	सिड्डी	४२, ७४, १००	सुडुधं	११४
सहचरो	१३	सिड्डं	४४, १००	सुडुधुमं	१२
सहरी	६१	सिड्डिखो	६४, १११, १२०	सुडुधुम्भो	८१
सहलं	६१	सिड्डिलं	९१	सुगभो	१२
सहस्सातिरेक	७	सिगिडो	६७	सुगंघत्तणं	४९
सहा	११, ११८	सिगहो	१३२	सुडुड	१३०
सहावो	११, ११८	सिस्थं	६७	संढो	१०८
सहिभो	१२३	सिदूरं	३९	सुगहा	८९, १२२
सही	११	सिन्धवं	१०६	सुसो	२२
साभरो	११	सिधं	१०६	सुपरिसणं	१३४
साऊभयं	८	सिध्वी	१३८	सुद्धोभणी	१०९
सामभो	३३, ८८	सिभा	६१	सुद्धं	१२२
सामघंजं	१२७	सिमिणो २८, ६१, १२१		सुन्दरिभं	४९, १३९
सामा	१२२	सियाखो	४३	सुन्देरं	३०, ४९, ७०
सामिडी, समिडी	८४	सिरिसो	३८, ९३	सुपरिणभो	१०९
समोभभं	९	सिरोरिभणा	१०७	सुभिणो	२८
सायरो	११	सिरं	२३	सुम्हा	८०, १३२
सारिखलं	१२४	सिखवटो	१७	सुगुहा	१३०
सारिखजो	२८, ८४	सिखाखलिभं	११	सुगहो	७-
सारिखंजं	७३, १२१	सिखिड्डं, सिखिड्डं	८१ १३१	सुयड	३१
साङ्गवाहणो	११४	सिखिम्हा	१३१	सुयण्णिभो	४९
साखाहणो	१३	सिखेसो	१३४	सुयेकभं	८२
सायणो	११०	सिखोभो	८१, १-१	सुयेवना	८२
सावो	१४	सिमिणो २८, ६१, ८१		सुय्याणं	१३८
सासऊपासा	९	सीभरो	सीभरो, ११०	सुइभा	८०, १११
सासाण्ण	७	सीहरो	११०	सुइमदभं	८७

सुद्धमं	८१	सोदह	५५, ६६, ११८	संभ्रुओ	१३६
सुंणडो	४९	सोद्वर्गं	४९	संमुहं	१९
सूयर्भ	५१	सोद्वणं	५५	सवच्छरो	१२७
सूर्ई	५१	संकंतो	६९	संबट्टिअं	७६, १२९
सूरिओ	१३५	संकरो	५२	संवत्तओ	७६
सूरिसो	१३	संक्खा	१११	संयत्तणं	७६
सूद्वओ	४०, ९५, १११	संखो	१६, ५६	संवरो	५२
सूसासो	१०८	संगं	१०१	संबुअं	१०३
सेच्चवं	४७	संधारो	६६	ससिद्धिओ	३३, ८८
सेज्जा	३०, ७८, ८६, १२८	संजतिओ	८८	संहारो	६६
सेवूरं	३५	संजत्तिओ	३३	हत्थो	७८
सेमालिआ	६१	संजदो	५९	हदो	५९, ६८
सेअं	१०६	संजमउवधाय	११	हरडइ	५८, ९२
सेळग जक्खआरुहण	८	संजमो	६२	हरो	२९, १३८
सेला	१०७	सज्जा	६९, १३४	हलद्दा	३५, ९०
सेलो	४७	संजादो	६०	हएही	३५
सेव्वा	७१	संजोओ	६२	हलिआरो	१३२
सेसो	६६	संक्का	१६, ६९	हलिओ	३२, ८९
सेहालिआ	६१	संठविओ	८८	हलिद्दा	१२१
सोअमव्वं	४०, ९४	संठविअं	३२	हलिहो	६४
सोहंदिय	१४	संठो	४९, १२२	हल्लुअं	१३८
सोचिअ	७२	संण	७८, १३४, १३९	हिअअं	४३, १००
सोच्च	७०, १२६	संदेअमोचिअ	९	हिअं	४३, १२३
सोच्चिअ	८१	संदेओ	७५	हीणो	३९, ९४
सोत्तम्	७१	संपआ, संपया	२४	हीरो, हरो	३९, ८५
सोमालो	६४, १२०, १३८	संपअं	६०	हुत्तं	७१
सोमो	६७	संपदि	६०	हुअं	७१
सो य, सो अ	५३	संफत्तो	२७	हुणो	३९, ९४
सोरिअं	१३५	संफासो	२७	हेट्ठिमउपरिय	१०
साउद, सुउद	८७	संडुदी	५९	होद्वद	१३

परिशिष्ट २

लिङ्गानुशासन एवं स्त्रीप्रत्ययप्रयोगानुक्रमणिका

अजा	१४२	पूसा वाहा,	राद्वर्ग	१४१
अओ	१४७	पूसो वाहो	खण्ड	१४३
अचल	१४३	पूसा महिमा,	एत्तियो, एत्तिया,	
अच्छी	१४०, १४१	पूसो महिमा	एत्तियाणी	१४६
अच्छीहं	१४०	ऊअली	गट्टई	१४३
अच्छं	१४१	ऊच्छउरो-ऊच्छरी	गिह्वइ, गिह्वण्णी	१४५
अयलो-अयला	१४७	करइहं, करइओ	गुणो	१४१
अहिवइ-अहिवण्णी	१४५	कामुओ-कामुआ,	गुणं	१४१
आयट्टियाणी	१४४	कामुई	गोणा	१४४
आयरिओ-आयरिआणी,		काळी	गोरी	१४३
आयरिआ	१४६	काळी-काळा	गोवाळिआ,	
इत्थी	१४६	किन्नरो, किन्नरी	गोवाळओ	१४६
इमाणं-इमीणं	१४४	किसोरी	गोवो, गोरी	१४६
इमीए-इमाए	१४४	कोए, काए	गंठी, गंठी	१४२
इंदाणी	१४४	कीओ-काओ	गंपिओ, गंपिआ	१४६
इंदो-इंदाणी	१४६	कीमु-कामु	घोडी	१४३
उवज्झायाणी	१४४	कुंडी, कुंडा	घउरा	१४३
उवज्झाओ-उवज्झाया-		कुमारी	घउत्	१४०
उवज्झायाणी	१४६	उरुचरी, उरुचरा	घउआ	१४२
एईए-एभाए	१४४	कुरंगी	घउओ, घउआ	१४०
एईणं-एभाणं	१४४	उलो	घन्दमुहो, घन्दमुही	१४६
एसा अच्छी	१४०	वुलं	घम्म	१४०
एसा अंजली,		जुसला	घणला	१४२
एसो अंजली	१४२	जुसी, जुसा	घणओ	१४७
एसा गरिमा,		कुंभआरी	घोरिओ, घोरिआ	१४२
एसो गरिमा	१४१	कुंभआरो	घंशली	१४३
एसा पुत्तिमा, एसो		काइला	छन्दो, छन्दं	१४०
पुत्तिमा	१४१	खण्यो	छाया	१४४

छाही	१४४	पओ	१३९	साआ	१४६
जम्भो	१३९	पइ	१४६	साउलो, माउली,	
जउणाणी	१४४	पडी	१४३	साउलाणी	१४४, १४५
जसो	१३९	पढ, पढन्ती	१४६	मागुसो, माणुसो	१४५
जाणवदी	१४४	पढमो, पढमा	१४७	माइणो, माइणी	१४६
जोओ, जाओ	१४५	पढमा	१४३	माइणपो, माइणपं	१४०
जुवा, जुवई	१४५	पणहा, पणहो	१४१	मिडाणी	१४४
जंभुई	१४३	पदिई	१४३	मुगि, मुणी	१४५
णअणो, णअणं	१४०	पाउसो	१३९	मूसिया	१४५
णई	१४३	पाणिगहीदा	१४४	मंडरगं, मंडरगो	१४१
णायणी, णायिआ	१४७	पाणिगहीदी	१४४	मंडली	१४३
तमो	१३९	पिओ	१४६	रक्खसी	१४३
तरणी	१३९	पीवरो, पीवरी	१४६	रस्सी, रस्सी	१४२
तरुणी, तरुणो	१४७	पुई	१४१	राथा, राणो	१४५
ताओ, तीओ	१४४	पुत्तवई	१४३	रन्पा, रन्खाइ	१४१
तुअंती	१४५	पुरिसो	१४६	रदो, रुदाणी	१४७
तेओ	१३९	वाळओ, वालिआ	१४६	रदाणी	१४४
थली	१४३	बाला	१४२	छोअणो	१४०
थली, थला	१४४	बीयो, बीया	१४७	वअणो, वअणं	१४०
दुक्खा, दुक्खाहं	१४०	बंभणी	१४३	वग्दी	१४३
देवा, देवाणि	१४१	वहिणी	१४६	वण्डा	१४२
घणवई	१४३	अज्जा	१४३	वम्मो	१३९
घीवरी	१४६	भवाणी	१४४	वयं	१३९
घीवरो, घीवरी	१४५	भवो, भवाणो	१४७	विउसो, विउसो	१४५
नद्यो, नदी	१४६	भागां, भागी	१४४	विडाली	१४३
नम्मो	१३९	भायणा	१४०	विही, विही	१४२
नई	१४०	भायणार्ह	१४०	वोया	१४३
निउणा	१४३	भाया	१४६	वुत्तिगारो, वुत्तिगारी	१४६
निउणो, निउणा	१४७	मई	१४३	सम्मं	१४०
निसाअरी	१४३	मऊरो, मऊरी	१४६	सरओ	१३९
निही, निही	१४२	मण्डो, मण्डी	१४५	सरो	१३९
नीली, नीला	१४४	मलिणा	१४३	सण्णाणी	१४४
		महिसी	१४७, १४३	सदा, सदी	१४५

सारसी	१४३	सुदा, सुहो	१४५	सूपरी	१४३
साहणी, साहणा	१४३	सुनरी	१४३	सेट्टि, सेट्टिनी	१४६
साहु, साहु	१४५	सुप्पणहो, सुप्पणहा,		संखपुष्को, संखपुष्की	१४७
सियाली	१४३	सुप्पगद्दी	१४७	हत्थि, हत्थिणी	१४६
सिरीमई	१४३	सुप्पगद्दी, सुप्पणहा	१४४	हरिणी	१४३
सिरं	१४०	सुमणं	१४०	हलही, हलहा	१४४
सीसो, सीसा	१४६	सुपुसा, सुपुसी, सुपुसो	१४५	हसमाणी, हसमाणा	१४४
सीदी	१४३	सुपणगआरो,		हंसी	१४३
सुचगारो, सुचगारी	१४६	सुपणगआरी	१४६		

परिशिष्ट ३

अव्ययप्रयोगानुक्रमणिका

आओ	२१५	अत्थि	२१५	आहव	२१६
आइ	२१५	अत्थं	२१५	आहवा	२१६
आईओ	२१४	अनुमई	२१४	आहा	२१६
आईव	२१५	अपरज्जु	२१५	आहिममर्थं	२१४
आगओ	२१५	अप्पणो	२१५	आदिप्पाओ	२१४
आगे	२१५	अप्पव	२१६	आदिरोहइ	२१४
आचवन्तं	२१४	अभिरख	२१६	आहीइ	२१४
आज्ज	२१५	अभितो	२१६	आहे	२१६
आज्जाओ	२१४	अभिहणइ	२१४	आयन्तो	२१५
आण, मण्	२१५	अछादि	२१६	आयासा	२१५
आणुगमइ	२१५	अख	२१६	आवि	२१६
आणुजाणइ	२१४	अवहरइ	२१४	आसमुहं	२१५
आणुहरइ	२१३	अवमाणो	२१४	आहचव	२१६
आणंतरे, अणयरे	२१५	आवरिं	२१६	आहरइ	२१३
आणमण्णं	२१५	अवस्तं	२१६	आअरइ	२१४
आणहा	२१५	असइं	२१६	ओअरो	२१४
आद्य	२१५	अहत्ता	२१६	ओआसो, अवयासो	२१४

ओमस्तं	२१४	एरुहभा, एरुकहभा	२१६	जइ	२१७
ओमरह, अयसरह	२१४	एककया	२१६	जभो	२१७
ओसरिअं,		एरुससिअं	२१६	जरथ	२१७
अयसरिअं	२१४	एरुससि	२१६	जइ-जहा	२१७
अंतरं	२१४	एरुससि	२१६	जइ-तहा	२१७
अंतो	२१५	एगइवा, एगवा	२१६	जोय	२१७
इ	२१६	एगइहा	२१६	जाय	२१७
ई	२१६	एगवभो	२१६	जे	२१७
इभो	२१६	एगीतयो	२१६	जेण	२१७
इयसरिअं	२१६	एतावठा	२१६	जं	२१७
इकवि, इकविअं	२१६	एरुथ, एरुथं	२१६	कगिति	२१७
इकएथो	२१६	एवाकया	२१६	कति	२१७
इरथल	२१६	एय	२१६	ण, णं	२१७
इयानि	२१६	एयमंय	२१६	णइ	२१७
इर	२१६	एयं	२१६	णमो	२१७
इह	२१६	कभो	२१६	णरति	२१७
इदुवं	२१६	कएपइ	२१६	णररं	२१७
इहा।	२१६	कअलं	२१६	णामा	२१७
ईति, ईति	२१६	कइ	२१६	गिअथं, गिअथे	२१७
उरगभो	२१६	कइह	२१६	गिओगो	२१७
उरगकउइ	२१६	कइं	२१६	गुण, गुणं	२१७
उकवभ	२१६	काअभो	२१६	गो	२१७
उक्याओ, ओउक्याओ,		काइ	२१७	गउ	२१७
उरगक्याओ	२१६	किपि	२१७	गभो, गथो, गतो	२१७
उकभभो	२१६	किअगा, किआ, किओ	२१७	गएथ	२१७
उकभपुवे	२१६	किअवि	२१७	गउगिअइ	२१७
उकएगिआ	२१७	किअ, किअ	२१७	गइ, गइ	२१७
उकि	२१६	केअअरं	२१७	गइ, गइ	२१७
उकवि, उकवि	२१६	केअअरिअ	२१७	गउ, ग	२१७
उकइइ	२१६	केअअं	२१७	गिअिअं	२१७
उकअअमा	२१६	कोइ, कोइ	२१६	गिओ	२१७
कुअं	२१६	कउ, कउ	२१७	कैअं	२१७
		किअ, कैअ	२१७	कु	२१७

तं	२१७	पर्येद	२१४	त्रिभुज	२१४
सजहा	२१७	परोपपरं	२१८	त्रिगो	२१४
यू	२१७	परं	२१७	त्रिगा	२१८
दा	२१७	परंमुहं	२१८	त्रिहरद	२१३
दिवास्तं	२१७	पठिहो	२१८	योमुं	२१८
दुर्दु	२१७	पस्यह	२१८	वे	२१८
दुष्टे नियमद	२१६	पहरद	२१२	वेणुआ	२१४
दुजयो	२१४	पाओ, पायो	२१८	व्य	२१८
दुहओ, दुहा	२१७	पातो	२१८	सह	२१८
दूहयो	२१७	पि	२१८	सहसं	२१८
धु	२१७	पिहं	२१८	सञ्चो	२१८
णामओ	२१६	पुणरुत्तं	२१८	सद्धि	२१८
निग्मओ	२१४	पुणरपि	२१८	सन्निधेओ	२१६
निम्मल्लं	२१४	पुरओ	२१८	सपक्खि	२१८
निविसह	२१६	पुरस्था	२१८	समं	२१८
नीलहो	११४	पुरा	२१८	सम्मं	२१८
पगे	२१७	पुहं	२१८	सया	२१८
पञ्चुअ	२१७	पेच	२१८	सयं	२१८
पञ्ठा	२१७	यहिद्धा	२१८	सञ्चओ	२१८
पतिट्ठा	२१६	यहिया	२१८	सह	२१८
परज्जु	२१७	यहिं	२१८	सहमा	११८
परसये	२१८	अुजो	२१८	सिग, सिय	२१८
परापाओ	२१४	मग्गतो	२१८	मुअर	२१४
पराजिणद	२१४	मणयं	२१८	मुवस्वि	२१८
पतिट्ठा, परिट्ठा	२१६	मा	२१८	मुवे	२१८
पडिआरो	२१६	मुहु	२१८	मुदो	२१४
पडिमा	२१६	मुसा	२१८	सेयं	२१८
पडिरुवं	२१७	मोदउल्ला	२१८	सस्त्रिद	२१४
परिगमद	२१६	हो	२१८	सखित्तं	२१४
परितो	२१८	रहो	२१८	हव्यं	२१८
परिवुदो	२१६	लहु	२१८	हेटा	२१८
परिहरद	२१३	यदकतो	२१४	हंद	२१८
परप्परं	२१८				

परिशिष्ट ४

कारकप्रयोगानुक्रमणिका

अह्देवा किमणो	२३७	को अत्यो पुत्तेण***२३९	णई अणुवसिआ सेना	२३७
अणुहरि सुरा	२३७	कोहत्तो मोहो अहिजाअइ		
अच्छेहि अछा व		२४१	णाणं	२३९
दीवइ	२३८	गमणेण रामं अणुहरइ	तस्स**पेसिआ	२४१
अज्झणेण वसइ	२३८	२३८	तस्स**रोयइ	२३९
अज्झायणत्तो पराजयइ	२४१	गवाणं गोसु वा सामी	तिणेण**इसराणं	२३९
अलं मल्लो मल्लस्स	२४०	गवाणं गोसु वा पसुओ	तिलेसु तेलं	२४२
अन्तेउरे रमितं भागयो		२४२	त्तिसु**पुइत्री	२४३
राया	२४३	गामे वसामि	तिस्या सुइस्स भरिमो	२४२
अन्नस्स हेउस्स वसइ	२४२	गामं गच्छइ	तुइ * अंगाणि	२४१
अहिधो किरणं	२३७	गामं समया	तेसिमेअमणा इण्णं	२४३
अहिचिइइ वइउंठं हरी	२३६	गोत्तेण गरगो	तेणं काळेणं	२३९
अहिनिवसइ सम्मगं	२३६	गोरी***सराइइ	तेणं समण्णं	२३९
अहियमइ वइउंठं	२३७	गोरी **चिइइ	दुहाण को न धीइइ	२४१
अत्थं चिण्वइ	२३६	गोरी सवइ	दुवाळ**सुणइ,	२३८
आवसइ वइउंठं	२३७	चिरस्स मुक्का	देवदत्तो**नहाति	२३८
इअराइं**सद्धिआण	२४२	चोरओ धीइइ	देवस्स देवाय नमो	२४०
पृथंतरम्मि**त्ति	२४३	चोरस्स धीइइ	दडेण घडो जाओ	२३८
कडे भासइ कागो	२४२	चोरेण धीइइ	धणस्स लुद्धो	२४२
कण्णेन धहिरो	२३८	जडाहि तावसो	धम्मत्तो पमायइ	२४०
काअस्स अंगाणि पसंसेइ	२४१	जळत्तो	नमो नाणस्स	२४०
कामत्तो कोहो अहिजाअइ	२४१	जळेन	नधरे न जामि	२४३
		जलं	निउहा लंकं	२३७
		जलं विना***सळइ	पआणं सुत्थि	२४०
		जिणो	पइइअ चारु	२३८
		भाणं भाइअइ		

पञ्चुणो	२३५	माणरअं धम्मं तागइ	२३६	वञ्जं वञ्जं पटि गिञ्चइ	२३७
पयेण ओदनां भुञ्जइ	२३६	मोगरअं पदं पुञ्जइ	२३६	वाउ	२३७
परिजणो विट्ठइ	२३७	मासेसु धरसं वधइ	२३५	विउगानं मेवीअउ	२३८
परिओ कियणं	२३७	मुत्तिणो हरि भजइ	२४०		२३९
पापण गंजो	२३८	मुणिरस, मुणोणं देइ	२४०	विउज्जोमं भाइ रति	२३९
पाउणो दृगुञ्जइ		मोउसे इच्छा अरिय	२४१		२४०
विमइ वा	२४०	मोहणं अणुगञ्जइ हरी	२४७	विउय वा विउरय	२४१
विमरणं सुदा	२४०			गारं देइ	२४१
विमरेण सण्णणइ	२४८	रतेण महुरो	२३८	वेअं पउइ	२४१
विअं रामेण, रामं वा	२३८	रायणो	२३८	मण्णो भयं	२४१
पुण्णेण विट्ठो हरि	२३८	रामेण वाणेन हओ		सणेण मण्णय वा	
पुणेण सदाभओ पिआ	२३६	वालो	२३७	परिणीउइ	२४०
पुसवकं पइइ	२३६	रामो जलेन कउं		सयं-दु	२३५
पुष्कणं सिइइ	२३९	पञ्जालइ	२३७	सामो अस्वरदणो	
वाउकस्स मोअआ		रामो कलहणो बोहइ	२४१	मइं धरइ	२३९
रोअन्ते	२३९			सोमापरस्स जइइ	२४१
वैभगस्स दिअं सुदं वा	२४०	रामो भाईअइ	२३५	मुत्तिपअं वञ्जं	२३७
अउहस अत्ताय वा पइइ		दरये ओचिअइ		सुं उ आइ	२३८
मोउरं हरी	२३९	कणइ	२३८	संअइ	२४०
अत्थी णाणाय कण्णइ	२४०	उम्भणो रामेण		हरिणो नमो	२४०
अत्थी णाणाय संअइ		साअं गञ्जइ	२३८	हरिणो रोपइ अत्थी	२४१
जाअइ वा	२४०	गञ्जो हरि पटि		हरि भजइ	२३६
अत्थो विसयुं पटि		अणु वा	२३७	हरी वइउं उअअइ	
अणु वा	२३७	वञ्जं पटि विउज्जइ			२३७
अम वउ विचारो रोपइ	२३९	विउउ	२३७	हा विउणो नरां	२३७

परिशिष्ट ५

समासप्रयोगानुक्रमणिका

अहपल्लंको	२४८	आरूढवाणरो	२९०	गिहजाभो,	२४७
अहमदगो रहो	२९२	आसंवरा	२९०	गिहत्यो	२४८
अकथं	२४८	ईसरकडे	२४६	गुडमिस्तं	२४६
अरिगपडिओ	२४६	ईदियातीतो	२४६	गुणसंपन्नो	२४६
अजियसंतिणो	२९३	उत्तरगामो	२४९	गावसभो	२४८
अणवज्जो मुणी	२९३	उन्हेलो	२४८	घोरबंधेरो, जंबू	२९०
अणवज्जं	२४८	उसहवीरा	२९३	घउककसायं	२९०
अणायारो	२४८	पुगादंतो	२९१	घउदिसा	२९०
अण्णाहो	२९९	बकल्लवो	२४८	घउम्मुहो	२९१
अणिट्ठं	२४८	पट्टावणो	२४६	चक्रपाणी	२९१
अणीसो	२४८	कडाहपकको	२४७	चक्रहत्यो, भरहो	२९१
अणुजमो, पुरिसो	२९२	कण्हपकखो	२४८	चन्दमुहं	२४९
अणुयरा	२९२	कप्तामुहं	२४७	चरणधणा, साहवो	२९१
अदिट्ठं	२४८	कमलनयणा	२९१	चोरभयं	२४७
अदेवो	२४८	कम्मसुखलो	२४७	चंदमुही कप्ता	२९१
अज्ञागतिमिरं	२४९	कयत्थो, कण्हो	२९०	चंदाणं	२४९
अज्ञाणभव्यं	२४७	कलससुयणं	२४६	जिअकामो, अकलंओ	२९१
अपच्छिमो	२९२	कलासुखलो	२४७	जिअपरीसहो, गोयमो	२९०
अवंभणो	२४८	किसणसिओ	२४६	जिअकामो, महादेवो	२९०
अभयो	२९२	कुंभआरो	२४८	जिआरिगणो, अजिओ	२९१
अळोगो	२४८	कुंभअट्ठिआ	२४६	जिअंदिओ, मुणी	२९०
अपरकायो	२४९	कुमारगच्छिभणी	२४९	जिगस्रित्तो	२४६
अवरुओ	२९२	कुमारसमणा	२४९	जिगा	२९४
अविरई	२४८	पुण्यगुणरिसी	२४६	जिणेन्द्रो	२४७
असत्थम्	२४८	गज्जाणो	२९१	जिणोत्तमा	२४७
असणपाणम्	२९३	गंधीवकरो, अउत्तणो	२९१		
आदियो	२४८	गणिआउकावओ	२४७		
आवारनिउणो	२४६	गवहिअं	२४६		

जीवाजीवा	२९३	निल्लजो	२९२	महारापो	२४९
गहृभिण्णो	२४६	निध्ववा	२४८	महापोतो	२४८
सप्तसंगमं	२९३	नीयगा	२४८	मट्टमत्तो	२४६
सप्तोधयं	२४९	नेत्ताई	२९४	माउगरिमी	२४६
तिणेत्तो हरो	२९१	पत्तनागो मुणो	२९१	निपत्तयणा	२९१
तिलोई	२९०	पत्तपुण्णककानि	२९३	मेगाइभरुगो	२४६
तिलोयं	२९०	पपुण्णो जगो	२९३	मोरत्तनानं	२४६
तिलोया	२९०	पत्तपत्तम	२४९	रत्तवत्तो	२४६
धेणभीओ	२४७	परमवर्ष	२४८	रत्तदीअं वर्यं	२४९
धोवमुत्तो	२४७	परिज्जया परिहा	२९२	रत्तसेत्तो	२४८
धंभरुद्धं	२४६	पल्लयगभो	२४६	रत्तपुण्णं	२४६
दशावुष्ठा	२४६	पापरिधो	२४८	राभदोपभयभोई	२९४
देवदाणवगंधवा	२९३	पाययो	२४८	रिणमुत्तो	२४७
देवपुज्जभो	२४७	पात्तजासभो	२४८	रुरसमाना	२४६
देवदेवाभो	२४३	विभरा	२९४	रुवमोइरगजोअरगानि	
देवमदिरं	२४७	पीअवत्थं	२४८		२९३
देवपुरे	२४७	पीआंअरो	२९०	सादात्ताहा	२९३
देविदा	२४७	पुण्णपागोई	२९३	खेहुमाण	२४७
दिग्गववा साहवो	२९१	पुण्णपाईअं	२४९	लोगमुट्टो	२४६
दिरगभो	२४६	पुत्तकापो	२४९	लोपदिभो	२४६
दंसणमट्टो	२४७	पत्तलिषो	२४६	परपभयं	२४७
घणसामो	२४९	पत्तमत्तो सीहो	२४६	यत्तंइहो	२४९
धम्मपुत्तो	२४७	यत्तुत्तएदिभो	२४६	विज्जाठानं	२४७
नट्टमोहो, साह	२४७	यत्तुमुहं	२४७	विज्जादरयो	२४७
नट्टदंसगो मुणो	२९१	याएयिरो	२४६	विज्जादिहो	२९७
नम्मवा	२४८	यानरमोरहंसा	२९३	विइसा	२९२
नरसेट्टो	२४७	यंभएत्तमा	२४७	वीरजिन्दि	२४९
नरिंदो	२४७	यंभएदिभं	२४६	वीरजिनो	२४८
नरत्तं	२९०	भक्खाभक्खाएि	२९३	वीरयो	२९०
नाणदंसणघरितं	२९३	भट्टागारा जना	२९०	योरास्मिभो	२८६
नाणघयं	२४९	भइरत्तो	२४६	युत्तिभारो	२४८
नाएज्जभो	२४७	भासभरो	२४८	सगइविम	२४८
निककासी	२४८	भ्यवत्तो	२४६	मनवत्तंअमंठानो	२९०
निइयो जगो	२९२				

सभापंदिभो	२४७	साहुवंदिभो	२४६	सुदपत्तो	२४६
समत्थो	२४८	सिखगभो	२४६	सुंदरपडिमा	२४८
समाहिदार्णं	२४७	स्त्रीउपहं जलं	२४९	सेयंवरा	२५१
सव्यण्णु	२४८	सुत्तमारो	२४८	संजमधर्णं	२४९
समुरा	२५४	सुत्तसिद्धा गुहा	२५१	संसारभीओ	२४७
सारासारं	२५३	सुद्धपम्पो	२४८	हृत्थपाया	२५३
सावभसारविआओ	२५३	सुरासुरा	२५३	हंसगमणा	२५१
सामूज्हुओ	२५३	सुद्धदुक्खाहं	२५३		

परिशिष्ट ६

तद्धितप्रयोगानुक्रमणिका

अण्णहा	२६१	अन्धलो, अन्धो	२६०	कया	२६१
अस्तिअओ	२६१	इत्तिअं	२५८	कच्चइत्तो	२५७
अन्नचो, अन्नदो, अन्नभो	२५७	इत्तो, इदो, इभो	२५८	कहि, कह, कथ	२५८
अप्प, कमीगत, कणिट्ट, कणिट्टम	२६२	ईसाल्ल	२५७	काणीणो	२६१
अप्प, अप्पअर, अप्पअम	२६१	उज्जअ, उज्जअअर, उज्जअअम	२६१	उत्तो, उदो, उओ	२५८
अप्पणयं	२६०	उत्तरिल्लं	२५६	केत्तिअं	२५९
अप्पुत्तं	२५६	एअत्तो, एअदो, एअओ	२५७	केत्तिल्लं	२५९
अम्हंकेरं	२५५	एअत्तो, एअओ	२६०	केइइं	२५९
अम्हंउयं	२५५	एअइआ	२५९	कोसियं	२६१
अपरिस्सो	२६०	एअत्ति	२५९	गुह, गुहअर, गुहअम	२६२
अदिअ, अदिअअर, अदिअअम	२६१	एअत्तिअं	२५९	गन्धिरो	२५७
आरितं	२५१	एअत्तिअं	२५९	गामिल्लं	२५६
अणुअत्तेअत्तं	२५८	एअत्तिअं	२५९	चंओ, चंओ	२५८
अन्तिअ, नेरीअअ, नेरिइ	२५२	एअइ	२५९	छाइत्तो	२५७
		एअत्तुअं	२५९	जजालो	२५६
		एअत्तुअं	२५८	जजो, जओ, जओ	२५८
				जजा	२६१

अदि, जद, जदथ	२९८	धणरंतो	२९७	पुष्पिमा	२९६
जामदल्लो	२९७	धणी	२६१	पुरिल्लो, पुरा	२९८
जेद, जेट्थर, जेट्थयम	२६२	धणी, धणिअर,		पुरिल्लं, पुरिल्ली	२९६
जित्तिअं	२९८	धणिअम	२६२	फडाळो	२९७
जेत्तिअं	२९९	धम्मी, धम्मीअस,		घट्ट, भूयम, भूदट्ट	२६२
जेत्तिलं	२९९	धम्मिदु	२६२	घट्टअं, घट्टअं	२९८
जेदहं	२९९	नवल्लो, नरां	२६०	महुळ, बंधीअस,	
जोग्हालो	२९७	नयरुल्लं	२९६	बंधिट्ट	२६२
तथा	२६१	नेहाल्ल	२९७	घोदामणो	२९७
सरुल्लं	२९६	परगदिय, परगदियअर,		भत्तिरंतो	२९७
तरस्सो, तपस्सो	२६१	परगदियपत्तम	२६१	भमथा	२९९
तदि, तद, तत्थ	२५८	पडु, पडुअर, पडुअम	२६२	भमिरो	२९९
तिस्स, तिक्कअर,		पत्तलं, पधं	२६०	भिरुलं	२६१
तिक्कअम	२६१	परकेरं	२९९	मइम, मइअस, मइदु	२६२
तित्तिअं	२९८	परधं	२६१	मईयं	२६१
तित्तुअं	२९६	पल्लरिल्लो, पल्लयो	२९८	मउअत्तता,	
तेत्तिअं	२९६	पहिओ	२६०	मउअत्तथा	२९९
तेत्तहं	२९९	पाचअ, पाचअअर,		मगथं	२६०
तेहिलं	२९९	पाचअअम	२६२	मणियं	२६०
तुम्हकेरो, तुम्हकेरं	२९९	पावी, पावीपस,		महा, महत्तर, महत्तम	२६२
तुम्हेचयं	२९९	पाविदु	२६२	मागइत्तो	२८७
थूल, थूलअर,		पिअ, पिअअर,		मिउ, मिउअर,	
थूलअम	२६२	पिअअम	२६१	मिउअम	२६२
थोव, थोवअर,		पिआमइओ	२६१	मीमाळिअं	२६०
थोवअम	२६१	पिउल्लो, पिआ	२९८	मीलं	२६०
दप्पुल्लो	२९७	पीअलं, पीअलं, पीअं	२६०	मुदुअ	२९६
दगल्ल	२९७	पीणत्तगं	२९६	मंगुल्लो	२९७
दीहर, दीहरअस,		पीणत्तं	२६०	रसालो	२९६
दीहरअम	२६२	पीणया	२६१	रादुळं	२६१
दीहरं	२६०	पीणिमा	२९६	रापकेरं	२९९
दुदुत्तं	२९६	पुणमंतो	२९७	रादणो	२६१
दूर, दूरीअस, दविदु	२६२	पुण्णत्तणं	२९६	रोचिरो	२९९
धणमणो	२९७	पुण्णत्तं	२९६	एज्जालु	२९७

लबालुआ	२६७	सणिअं	२६०	सोहामणो	२६७
लबिरो	२६६	सहालो	२६७	सोहिल्लो	२६७
विउल, विउलअर,		सयहुत्तं	२६६	हयुमंतो	२६७
विउलअम	२६२	सव्वत्तो, सव्वदो,		हत्थुल्लो, हत्थो	२६८
विउस, विउसअर,		सव्वओ	२६७	हल, हलअर,	
विउसअम	२६२	सव्वंगिओ	२६१	हलअम	२६१
विज्जुला, विज्जू	२६०	सअरया	२६१	हसिरो	२६६
वियारुल्लो	२६७	सहस्सहुत्तं	२६६	ह्तिअयअं, ह्तिअयं	२६८
शुद्ध, जायस, जेद्ध	२६२	सिरिमंतो	२६७	हेट्ठिल्लं, हेट्ठिल्ली	२६६

परिशिष्ट ७

यङन्त, यङ्लुगन्त और नामधातु प्रयोगानुक्रमणिका

अकळारए,	अकळाराआए	३१३	अत्थाअइ, अत्थाइ	३१३	अमराअइ, अमराइ	३१३	अलसाअइ, अलसाइ	३१३	असनाअइ, असनाइ	३१४	अस्ताअइ, अस्ताइ	३१३	उअआअइ, उअआइ	३१३	उम्मणाअए,	उम्मणाए	३१३	उम्हाअइ, उम्हाइ	३१३	कट्ठाअए, कट्ठाए	३१३	करणाअइ, करणाइ	३१४	कलहाअइ, कलहाइ	३१४	कुरुकुराअइ, कुरुकुराइ	३१४	खीराअइ, खीराइ	३१४	गव्वाअइ, गव्वाइ	३१३	गुरुआअइ, गुरुआइ	३१३	अकमइ	३१२	अकमणं	३१२	अवलाअइ, अवलाइ	३१४	असकामाअइ,	असकामाइ	३१४	जाजाअइ, जाजाअए	३१२	तणुआअइ, तणुआइ	३१३	तमाअइ, तमाइ	३१३	थरथरैइ	३१३	दमदमाअइ, दमदमाइ	३१३	दुम्माअइ, दुम्माइ	३१४	धणाअइ, धणाइ	३१३	धूमाअइ, धूमाइ	३१३	नमाअइ, नमाइ	३१४	पुत्तकामाअइ,	पुत्तकामाइ	३१४	पुत्तीअइ, पुत्तीइ	३१३	पेरीअइ, पेरीअए	३१२	मेहाअइ, मेहाइ	३१४	रायाअए, रायाए	३१४	लालप्पइ, लालप्पए	३१२	लोहिआअइ,	लोहिआए	३१३	वरीवच्चइ, वरीवच्चए	३१२	वाआअइ, वाआइ	३१४	वापफाअइ, वापफाइ	३१४	वराअइ, वेराइ	३१४	सहाअइ, सहाइ	३१३	सपन्नाअइ, सपन्नाइ	३१३	सासकइ, सासकए	३१२	सीदलाअइ, सीदलाइ	३१३	सुदाअइ, सुदाइ	३१३	संक्काअइ, संक्काइ	३१३	हरिआअइ, हरिअइ	३१४	हंसअए, हंसए	३१३
---------	----------	-----	-----------------	-----	---------------	-----	---------------	-----	---------------	-----	-----------------	-----	-------------	-----	-----------	---------	-----	-----------------	-----	-----------------	-----	---------------	-----	---------------	-----	-----------------------	-----	---------------	-----	-----------------	-----	-----------------	-----	------	-----	-------	-----	---------------	-----	-----------	---------	-----	----------------	-----	---------------	-----	-------------	-----	--------	-----	-----------------	-----	-------------------	-----	-------------	-----	---------------	-----	-------------	-----	--------------	------------	-----	-------------------	-----	----------------	-----	---------------	-----	---------------	-----	------------------	-----	----------	--------	-----	--------------------	-----	-------------	-----	-----------------	-----	--------------	-----	-------------	-----	-------------------	-----	--------------	-----	-----------------	-----	---------------	-----	-------------------	-----	---------------	-----	-------------	-----

परिशिष्ट ८

कृदन्तप्रयोगानुक्रमणिका

अक्षराद्यं	३२२	कराविस्ततो	३२३	कारिणं,	३२१
अद्यासाद्देश्य	३२४	करायंतो, करायंतो	३२८	कारंता, कारंता	३२८
अद्विभक्तं, अद्विजिजं	३२१	करिभो	३२०	किञ्च	३२२
आकुटं	३२२	करितो	३२०	कुम्भिकञ्च,	
आणत्तं	३२३	करिष्ठा, करिष्ठा	३२७	कुम्भगिजं	३३०
आयाए	३२७	करिष्ठाण, करिष्ठाण,		कुम्भिकञ्च, कुम्भगिजं	३२९
आयाय	३२८	करिष्ठाण, करिष्ठाण	३२७	कुम्भिकञ्च, कुम्भगिजं	३३१
आहारिष्ठाए,		करिष्ठा	३२०	कुम्भिकञ्च	३३३
आहारिष्ठाए	३२४	करिष्ठा	३२३	कुम्भिकञ्च,	
इच्छिभक्तं,		करिष्ठा	३२३	कुम्भिकञ्च	३३०
इच्छिगिजं	३२१	करिष्ठा	३२३	कुम्भिकञ्च,	
उपयञ्चिष्ठाए,		करिष्ठा	३२३	कुम्भिकञ्च,	
उपयञ्चिष्ठाए	३२४	करिष्ठा	३२४	कुम्भिकञ्च	३३०
कर्म	३२१	कहिष्ठा, कहिष्ठा	३२७	गता, गता	३२८
कत्ता	३२३	काउभाण, काउभाण	३२७	गमिभो	३२०
कम्मगरो	३२३	काउ	३२७	गमिष्ठाए	३२४
कर्यं	३२१	काउ	३२७	गमिष्ठा, गमिष्ठा	३२०
करिजं	३२१	काउ	३२७	गमिष्ठाणं	३२०
करारमाणो,		काउ	३२७	गमिष्ठाणं	३२०
करावेमाणो	३२८	कारि	३२१	गमिष्ठा	३२०
कराविभ, करावेभ	३२६	कारिभ, कारिभ	३२६	गमि	३२१
कराविजं	३२६, ३२६	कारिभं	३२६	गदाय	३२०
कराविजण,		कारिजभाग, कारिजभागं,		गिजानं, गिजानं	३२२
कराविजणं	३२६	कारिजभागं,		गुम्भ	३२३
कराविषं	३२१	कारिजभाग	३२६	गुम्भ	३२३
कराविदं	३२१	कारिजं, कारिजं	३२४, ३२६	गुम्भ	३२३
कराविदुं, कराविदुं	३२३	कारिजं	३२६	गुम्भ	३२३
कराविस्तमाणो	३२३	कारिजं	३२६	गुम्भ	३२३
		कारिजं	३२६	गुम्भ	३२३

चेत्तुआण, चेत्तुआणं ३२७	हुंडुंलिअब्बं ३३०	नायओ, नायगो ३३३
चेत्तूण, चेत्तूणं ३२७	तत्तं ३२१	निद्वियं ३२२
चलिओ ३२०	तरिअब्बं, तरणिज्जं ३३०	नेआ, नेता ३३३
चलितो ३२०	तीरिअब्बं, तीरणिज्जं ३३०	पयं ३३२
चलिदो ३२०	तुरिअ, तुरेअ ३२७	पडिअब्बं, पडणिज्जं ३३१
चंक्रमिअ, चंक्रमेअ ३२६	तुरिअं ३२०	पडिओ ३२०
चंक्रमिअं ३२०	तुरिउआण ** ३२८	पडितो ३२०
चंक्रमिउं, चंक्रमेउं ३२४	तुरेउआणं ३२८	पडिइ ३०२
चंक्रमिउआण*****	तुरिउं, तुरेउं ३२७	पणहं ३२२
चंक्रमेउआणं ३२७	तुरिउण, तुरेउणं ३२७	पणणत्तं ३२२
चंक्रमिउग****	तुरितं ३२०	पणत्तं ३२२
चंक्रमेउणं ३२७	तुरिइं ३२०	पणवियं ३२२
चंक्रमितं ३२०	धदिअब्बं, धद्धणिज्जं ३२९	परुविअं ३२२
चंक्रमिदं ३२०	धणधयो ३३३	परंउवां ३३३
चिट्ठअब्बं, चिट्ठणिज्जं ३२९	धुणिसअब्बं, धुणणिज्जं ३२९	पव्वइत्तए, पव्वएत्तए ३२४
उच्चिअब्बं, उच्चणिज्जं ३३०	इट्ठं ३३१	पायओ, पायगो ३३३
उट्ठिअब्बं, उट्ठिणिज्जं ३३०	इट्ठुआण, इट्ठुआणं ३२८	पासित्तए, पासेत्तए ३२४
उत्था ३३३	इट्ठुण, इट्ठुणं ३२८	पिच्चिअब्बं,
उत्थिअब्बं, उत्थणिज्जं ३३०	इहं ३२१	पिच्चणिज्जं ३२९
उत्थं ३३२	इएइत्तए, इएएत्तए ३२४	पिद्वियं ३२२
उत्थिअब्बं,	देविअब्बं,	पुणिअब्बं, पुणणिज्जं ३२९
उत्थणिज्जं ३२९	देकअणिज्जं ३३०	पूतिअब्बं, पूमणिज्जं ३३०
उत्थं ३३०	देअं ३३२	पेअं ३३२
उत्थिअब्बं, उत्थणिज्जं ३२९	धरिअब्बं, धरणिज्जं ३२९	फामिअब्बं,
उत्थं ३२२	धुणिअब्बं,	फामणिज्जं ३३०
उत्थो ३३१	धुणणिज्जं ३२९	यग्गिअब्बं, यग्गणिज्जं ३३१
उत्थिआब्बं,	नद्या, नद्या ३२८	पुत्थिअब्बं, पुत्थिणिज्जं ३३०
उत्थिणिज्जं ३३०	नद्धिअब्बं, नद्धणिज्जं ३३१	पुत्थआ ३२८
उत्थिअब्बं,	नद्धिअब्बं, नद्धणिज्जं ३३१	पुत्थिआब्बं,
उत्थणिज्जं ३३१	नरिअब्बं, नरणिज्जं ३३१	पुत्थणिज्जं ३३१
उत्थं ३२०	नरिओ ३३२	पुत्थिआब्बं,
उत्थं ३२०	नरिअब्बं,	पुत्थिणिज्जं ३३०
उत्थं ३२२	नरमणिज्जं ३३०	भनाविअ, भनावेअ ३२६

परिशिष्ट ९

शौरसेनीशब्दानुक्रमणिका

अक्षरिअं	३८७	गच्छिवृण	३९२	भो तयस्ति	३८४
अन्दे-उरं	३८३	गिहो	३८६	भोत्ता	३९२
अपुरवागर्दं,		जज्जो	३८६	भोदि, होदि	३८६
अपुरवागर्दं	३८५	जुत्तणिमं, जुत्तमिमं	३८६	भोवृण	३९२
अपुरवं नाह्यं	३८५	जेव्व	३८७	भो मगस्ति	३८४
अम्महे...सुपलि-		णं अकणोदया	३८६	भो रायं	३८४
गदिदो भव्यं	३८५	णं अठपमिस्तेदि		भो विभववम्मं	३८४
अठपउत्तो, अज्जउत्तो	३८४	पुदमंकेय आणत्तं	३८६	मन्तिदो	३८३
अहह अक्षरिअं,		पं भवं मे अग्गदो		मद्वन्दो	३८३
अक्षरिअं	३८७	वळदि	३८६	मारदिगा	३८३
हत्थो	३८७	ता अलं प्दिगा		राजपयो, राजवहो	३८४
इप	३८४	माणेण	३८६	विअ	३८७
इयिअणो	३८७	ता जाव पात्रिसामि	३८६	विज्जो	३८६
एदादि, एदाओ	३८३	दाव, ताय	३८३	सञ्जणो	३८७
एवंणेदं, एवमेदं	३८५	नाधो, नाहो	३८४	सरिसणिमं,	
कज्जो	३८६	निळिवन्दो	३८३	सरिसमिमं	३८६
कज्जपरवसो	३८४	पट्याकुलो, पन्नाकुलो	३८४	मुय्यो, मुत्तो	३८४
कज्जुअ	३९२	पटिय	३९१	सुद्धिवा	३८४
कयेदि	३८३	पटिच्चा	३९२	दज्जे च्चुरिके	३८६
कपिदं	३८३	पटिवृण	३९२	हविप	३९१
कंधं	३८३	परिच्चायध	३८४	होत्ता	३९२
कण्ठं, कज्जं	३८४	पुडो, पुत्तो	३८६	होदव्वं	३९३
कारिय	३९२	वम्महुज्जो	३८६	होवृण	३९३
किणेदं, किमेदं	३८५	यावडो	३८६	होघ	३८४
गहुअ	३९२	भविय	३९१	हीही भो संपन्ना	३८६
		भो कज्जुइया	३८४		

परिशिष्ट '१०'

जैनशौरसेनीशब्दालुक्रमणिका

अश्वलातोदो	३९४	गन्धम्मि	३९७	पदिमहिदो	३९४
अञ्जना	३९६	गमिऊण	३९८	पयत्थ	३९५
अणगारो	३९९.	गयं	३९४	पयासदि	३९४
अण्णद्विपम्हि	३९७	गहिय	३९८	परिणमदि	३९९
अणुमूलं	३९९	गाहया	३९६	पंचिउत्ता	३९८
अदिदिओ	३९४	चरियम्हि	३९७	यहुभेया	३९६
अधिसतेजो	३९४	चिरकालं	३९९	यहुवं	३९७
अछिअं	३९६	जध	३९६	बालुवा	३९७
आलोओ	३९६	जलतरंगचपला	३९४	बिहुव	३९७
आदारया	३९७	जाणदि, जाणदि,		भणिदो	३९४
ओगण्णगेहि	३९९	णादि	३९६	भणिया	३९४
ओमकोडाए	३९६	जादो	३९४	भासदि	३९९
ओउालियं	३९६	जायदि	३९६	भूदो	३९४
उण्णजदि	३९९	जोगम्मि	३९७	मणयकाएहि	३९९
उण्णदो	३९४	ठिक्का	३९८	मण्णदि	३९९
उण्णओमो	३९६	ठिदि	३९४	मदिणणं	३९४
उवसागमे	३९९	तथा	३९९	महव्वयं	३९४
पस्सपम्हि	३९९, ३९५	तित्थयो	३९७	मुत्तममुत्तं	३९४
पग	३९९	तिव्वतिसाए	३९४	मुत्तिगदो	३९४
पगम्हि	३९७	तिहुवणत्तिएयं	३९४	रहिया	३९९
पगविगळे	३९९	तेसि	३९९	रहियं	३९४
पगतेण	३९९	दव्वसहाओ	३९४	छेगण्णदीव्वरा	३९६
पयत्रियल्लखा	३९६	नए	३९६	वट्टदि	३९९
फयं	३९९	नेरइया	३९६	वयणेहि	३९६
फम्मविराथं	३९६	परिव्वज्जिदो	३९४	वाध	३९९
किचा	३९८	पञ्चयट्टिएण	३९६	विगदरगो	३९३
खरगे	३९९	पडियं	३९९	विजाणदि	३९९
ओपदि	३९९	पचेयं	३९६	विज्जादि	३९९

वितीह	३९४	सम्भूदो	३९४	सुनुवरो	३९६
वेवणा	३९७	सगलं	३९६	सुहाड	३९६
विपसिदियेसु	३९६	सञ्चेसि	३९८	संवाया	३९४
बियागित्ता	३९८	ससरुमि	३९७	संजुदो	३९३
विसहते	३९४	सागारो	३९६	संति	३९४
चेउळियवो	३९६	सामाहयं	३९६	संतोसहरं	३९६
चेदग, चेदगा	३९६	सागरं	३९६	सपधो	३९४
सगं	३९६	सुयकेरलिमिसिगो	३९६	हयदि	३९४, ३९६
सद्विसिदो	३९७	सुमिदिना	३९४	हीगकर्म	३९६
सव्यगयं	३९४	सुहमि	३९७	होदि, जावि	३९६

परिशिष्ट ११

मागधीशब्दानुक्रमणिका

अज्ञेयी	४०२	एणे पुलिये	४०२	यल	४०७
अवम्हज्जं	४०२	गुमे मेरा	४००	विष्टदि	४०८
अध्य मिळ विख्याहळे		कञ्जकावलणं	४०२	गिरभळे	४०८
आगदे	४०२	कटे	४०८	तिरिध	४०२
अप्युणे	४०१	कप्ये	४०८	दळे	४०८
अलळे	४०८	कळे	४००	दुय्यणे	४०१, ४०८
अपञ्जा	४०२	कस्ट	४०१	घणज्जप	४०२
अरसवद्री	४०१	कारिदाणि	४०८	अनुस्लंडं	४०१
अहूके हगे	४०८	कालु	४०७	नळे	४०८
अहिमपञ्चकुमाळे	४०२	छोस्टागालं	४०१	गिरफलं	४०१
आचरुदि	४०८	गध	४०२	पञ्जस्रदि	४००
आवदावअळे	४०२	गचे	४०८	पञ्जळे	४०२
उअळदि	४०२	गट्टिदे	४०१	पञ्जाविभाळे	४०२
उवस्तिदे	४०१	गदिदळळे	४०२	पलिचये	४०८
पशिलाभा	४०२, ४०८	गिम्हवादाळे	४०१	पस्टे	४०१

पुञ्जाहं	४०२	यादि	४०२	शुर्वं	४००
पुलिशा भागच्छ	४०४	यापदे	४०८	शुस्कदालुं	४०१
पुलिशे	४०२, ४०८	लस्करो	४०८	शुमुकदं	४०१
पेनकदि	४०३, ४०८	लाहु	४०७	शुस्तिदे	४०१
बुहस्पदी	४००	वप्ञ्जादि	४०८	शोभणं	४००
भस्टालिका	४०१	वच्चिदे	४०२	सहिदाणि	४०८
मध्यं	४०२	विआळे	४००	हके, हगे,	
मडे	४०८	वियळे	४०८	अहके भगामि	४०३
मस्कली	४०१	विलाशे	४०८	हके	४०८
माणुशा भागच्छ	४०३	विस्तुं	४०१	हगे न ईदिशाह	
माशे	४०८	शब्ज्जे	४०२	कम्माह काली	४०३
मेल्ल	४०७	शस्तवाहे	४०१	हगे "धीवळे	४०३
यणवदे	४०१	शालसे	४००	हडके आलले मम	४०३
याणादि	४०१	शिआळे, शिआलके	४०८	हशिदु, हशिदि, हशिद	४०८
याणं	४०३	शिआळे आअच्छदि	४०३	हंसे	४००

परिशिष्ट १२

अर्धमागधीशब्दानुक्रमणिका

अहसपण तुच्छ	४२९	अणुवीति	४१९	अनिल	४१६
अज्जावियं	४२८	अणतक्खुत्तो	४३०	अन्नता	४१३
अज्जमोववयण	४१४	अणहा	४३०	अन्नयरो	४२९
अट्टमं	४२९	अतित	४११	अपरत्तं	४२८
अट्टहा	४३०	अतिवात्त	४१४	अप्पणस्सइयं	४२३
अट्टारसम	४२९	अत्त, अप्प	४२०	अप्पणिच्चियं	४२३
अणादिय	४१३	अत्तत्ते	४१२	अप्पाअट्टयं,	
अणुकंपणया,		अत्तय	४१२	अप्पवट्टुत्तं	४२८
अणुकंपणत्ता	४२९	अत्थओ, अत्थतो	४३०	अन्नभोगमिया	४२६
अणुगामिय	४११	अत्तित्तं	४२४	अन्नभंतरीय,	
				अन्नभंतरगो	४२४

अभिसिस्को	४२६	आहृत्तद्वियं	४२८	अंधत्तर्णं	४२८
अरिष्ठा	४२८	आह्वारायमियं	४२६	अर्धत्तर्णं	४२८
अवधारो	४११	आद्विकं	४२८	यताती	४१३
अवरिल्लं	४२४	आदेयच्च	४१४	कति	४१६
अह्नस्त्राय	४१६	इत्तो	४३१	कत्तारे, कत्तारो	४१९
अह्मिद्वो	४२६	इदार्णि	४३१	कत्तिया	४२६
अहाजात्त	४१६	इयरस्थ	४३०	कत्तो	४३१
अहात्तच्चं	४२९	इस्सरियं	४२८	कस्थ	४३१
अद्दिगरणिया	४२६	इहुरा, इयरदा	४३०	कम्मसो	४२९
अद्दिगरणं	४१०	इंदमहे इ वा	४१६	कम्म	४१५
अद्दित्त	४१०	इंदमहे ति वा	४१६	कम्मणं	४२४
अहुणा	४३१	इंदित्त	४१५	कम्मचो	४३०
आउज्जणं,		उत्तरस्म इमं	४२३	कयस्थो	४१३
आवज्जणं	४१७	उत्तरिल्लं	४२४	कयो	४२९
आउसन्तो	४२७	उत्पणकंदत्ता	४२८	कयाती	४११
आगइ	४१०	उयरं	४१४	करयल	४१३
आगत्ति	४१२	उयगूढ	४१४	करेत्ति	४१३
आगमणं	४११	उउणीय	४१४	कलुणो	४२७
आगम	४११	उउयार	४१२	करिलस्सइयं	४२३
आगर	४१०	उस्सुगत्तं	४२८	काइयं	४११
आगामिस्स	४११	एक्कस्सि	४२८	कामउक्कया	४१२
आगास	४१०	एक्कस्सि	४३०	कायसा	४१८
आणिल्लियं	४२४	एगन्तसो	४२९	काहे	४३१
आयरिय	४१२	एगयभो, एगयतो	४२८	किण्णा	४३०
आयारमन्तो	४२७	एगयरो	४२९	किमिणो	४२७
आरनाल	४१०	एगागी	४२९	रुजित	४११
आराहत्त	४१०	एगाणिये, एकाणिये	४२६	केरचिरं	४३१
आलंकारिणं,		एस्थं, इस्थं	४३०	कोहुवित्त	४११
आलंकारिणं	४२६	एवामेउ	४१६	कोलुणं	४२९
आवक्कदा	४१६	एहुंतो	४१७	कोसस्म इमं	४२३
आसाढी	४२६	ओयस्सी	४२८	कुंभगतो	४२९
आसोई, अस्सोई	४२६	ओवम्म	४२८	कोसस्स इमं	४२३
आसोओ, मासो	४२६	अंतरित्त	४१२	किप्पामेउ	४१५
				सुत्ता	४१७

गवेषणत्ता	४२६	जायजीव	४२६	तेलोकं	४२८
गहं	४१६	जित्तिदिय	४१२	तेल्लिओ	४२६
गासति	४१४	जुब्बणं	४२९	थेजं	४२९
गायइ	४१४	जेट्टामूला	४२६	दण्डिय	४२६
गारव	४१६	जोगसा	४१८	दयालू	४२८
गोडरं, गोपुरं	४१७	जोरणगं, जोरणं,		ददरगं	४२८
गंडिल्लो	४२७	जोच्चणं	४२९	दियहं, दियसं	४१६
घरं, हरं, गिहं	४१६	ठाति	४१४	दिग्गं, दियसं	४१६
चउत्थं	४२९	णगिणो, गिगिणो	४२८	दुक्खणत्ता,	
चउप्पय	४१३	णदत्ति	४१३	दुक्खणया	४२९
चन्नुसं	४२६	णाहवं	४२७	दुग्गो, दुहत्तो	४३०
चिरातीव	४१३	णातग	४१४	दोच्चं	४२९
चेतो	४२६	णारात्त	४११	दोसिणो	४२७
चोरस्स वासरो	४२३	णियटिल्लया	४२४	धणुहं, धणुवखं,	
छट्टं	४२९	णित्तेवग	४१०	धग्गुं	४१७
जओ, जतो	४३१	णेयाइओ,		धम्म	४१८
जइणो	४२७	णेयाउओ	४२६	धम्मतो, धम्मओ	४३०
जडुल्लो, जडिगालो,		णेसज्जि	४१०	धम्मिट्ठो	४२९
जडिल्लो	४२७	तप्प	४३१	पेजं	४२९
जणरद	४१३	तणुलो	४२७	पेवत्त	४१२
जता	४१३	तते	४१३	नई	४१९
जत्ति	४१३	तथा	४३०	नती	४१३
जसयन्तो	४२७	तवय	४१४	नमंसत्ति	४१२
जसस्सो	४२८	तहा	४३०	नरतातो	४११
जडा	४३०	सहं	४३०	नायपुत्त	४१६
जहाणामप्प	४१३	सामेय	४१६	निरय	४१४
जहातहं	४२८	साल्लउहं, साल्लपुहं	४१७	निग्गात्त	४१३
जहं	४३०	तिरग्गुत्तो	४३०	निसीहिगा,	
जाए	४३१	तिग्गुलिओ	४२७	निग्गीहिगा	४२६
जाति	४१२	धीयत्तणं	४२८	मेरत्तित्त	४११, ४१६
जातिमत्तो	४२७	सुग्गिइओ	४२७	पगप्प	४१०
जामेय	४१६	तेयस्सो	४२८	पगामतो	४३१
जायमेयं, जायमिथं	४२४	तेवहिं	४२६	पगामतो	४२९

पगभ	४१०	पुरचिह्नम्, पुरस्वियम्	४२४	मुंशिनो	४२५
पञ्जुनासति	४१२	पुरतो	४१२	रयधमयं	४२९
पण्डवस्स अयचारिणि	४२२	पु-वामेव	४१५	रादण्णं, रायण्णं	४२४
पडिच्छायण	४१३	पूवा	४१२	रातीसर	४१२
पट्टिहारीपद्दयं	४२४	प-म्	४२५	रुदिरं	४१७
पत्तलो	४२७	पोद्धवती	४२६	छज्जू	४२८
पदिसो	४१३	पाकुल्लभो	४२४	खिण्णत्ता, खिण्णया	४२६
पद्मा	४१५	पोली	४२६	खीणत्ता, खीणया	४२६
पभिति	४१३	परगुणी	४२६	खोगं	४१०
पम्हलो	४२०	फळिइमयं	४२९	खोभत्ता, खोनया	४२६
पयातीण	४२३	वच्चस्सी	३२८	खाय	४११, ४१२
पयाय	४१२	वडल्लगा	४२४	वर्मियं	४२९
परितात्त	४१४	वरदिणो	४२७	वभोमयं	४२९
परिताल	४१५	वहिम, वधिर	४२६	वड्ढति	४११
परियट्ठण, परियट्ठणा	४१५	वहुतराप	४२५	वण्णयं	४२७
परियागो, परिआगो,		वहुलो	४२९	वणियस्स चावारो	४२३
पञ्जायो	४१६	वुहा	४१७	वति	४११
पसत्थारे	४१०	भगवं	४११, ४२७	वतिर	४१२
पसत्थारो	४१९	भत्तारे, भत्तारा	४१९	वदमाण	४१३
पहुत्तण	४२८	भयति	४१५	वपसा	४१८
पात्त	४१२	भाण्डारिण	४२४	ववरोपित	४१४
पादीण	४२६	मगसिरा	४२६	वात्तित	४१३
पारितोसिय	४२६	मज्झमं, मज्झिम,		वायव	४१५
पालतिस्सति	४१४	मज्झिक्ख	४२६	वायणा	४११
पावग	४१४	मणसा	४१८	विन्नु	४१५
पावतण	४११	माइस्सा	४२७	विज्जग	४१०
पासङ्गिय	४२६	ममाई, ममाइप	४२४	विस्साही	४२६
पासणिप	४२६	माइवित	४११	विमुद्धित	४१०
पासिष्ठओ	४२६	माही	४२६	विहरति	४१२
पादेज्जं	४२६	मिळेरल्ल, मिळेरल्ल,		वीहमन्तो	४२०
पिट्ठणत्ता, पिट्ठणया	४२५	मिलुक्ख	४१६	वीरासणित	४१०
पिट्ठओ, पिट्ठो	४२०	मुळेण्णो	४२४	वीसइमं	४२६
पिय	४१४	मुवारत	४१३	वुसिमन्तो	४२७

वेदिद्विती	४१३	सञ्चम्बु	४१९	सावित्री	४२६
वेयावच्च	४२९	सञ्चदा	४२०	साद्वर्ल	४२९
वेयावडियं	४२९	सदस्सञ्चुत्तो	४२०	सिता	४१४
वेसालीपु समूहो	४२३	साउणित	४१०	सीमंतत	४११
वंदति	४१२	साति	४१४	सीलत्ता, सीलया	४२५
सद्वपं	६२६	सामगियं	४२८	सोगमव्ल	४२९
सगडाणं समूहो	४२३	सामात्रित	४१०, ४१४	सोयार	४१४
सचञ्चुत्तेण	४११	सापर	४११	सोहरगं	४२८
सतत	४१२	सावग	४१०	संधाडिणो	४२८
सत्तमं	४२८			संलत्ति	४१३, ४१७

परिशिष्ट १३

जैनमहाराष्ट्रीशब्दानुक्रमणिका

अणुग्रयिप	४४२	मेदुंअं	४४१	मगसा	४४३
अग्रहा	४४२	चविऊण	४४३	मयणो	४४२
अलदनिहा	४४२	वेथणा	४४२	महारायस्त	४४२
आगरिसो	४४१	णिगरं	४४१	मोत्तण	४४३
आगारो	४४१	तिरुधगरो	४४१	रययं	४४२
आलोचिऊण	४४३	दुगुल्ल	४४१	हायणं	४४२
उयत्रयसो चि	४४२	नाणुमपमेपुसि	४४२	लोमो	४४१
उवइप्रो	४४२	नियट्टीप	४४२	वयसा	४४३
उवासगो	४४१	नियमोयसिदि	४४२	वायडं	४४३
ऊडं	४४३	नुवघा पसा	४४२	बिजाहज्जन्तो	४४२
ऊप्रयाप	४४२	नुयप्रो	४४२	त्रिसायं	४४२
ऊपरगहो	४४२	नूणमेसा	४४२	यंदिणु	४४३
ऊहमप्रवा	४४२	पदिउपा	४४२	समुप्पन्ना	४४२
ऊहाणयं	४४१	पयारं	४४२	सारग	४४१
ऊयमणी	४४२	भगइया	४४१	सोच्या	४४३
ऊपसा	४४३	भणियं	४४२	संयुटं	४४३
ऊष्ठा	४४३	भत्तिनिम्मरा	४४२		
गवा	४४२				

परिशिष्ट १४

पैशाचीशब्दानुक्रमणिका

अञ्जातिसो	४४६	दातूनं	४६०	राया	४६०
अभिमन्जु	४४६	दाद	४४७	रेफ	४४७
दम	४४८	नत्पून	४६०	छोक	४४७
इंगार	४४७	नत्रूपून	४६०	घरिस	४६०
कधं	४४६	नेन वतसिनानेन	४४७	विज्जातो	४६१
कज्जा	४६१	पञ्जा	४४६	विज्जानं	४४६
कमळं	४४६	पटितून	४६०	विसमो	४४६
करणीय	४४७	पतिभास	४४७	विसानो	४४६
कसर्टं	४४६, ४६०	पवती	४४६	सतनं	४४६
कुटुंबकं	४४६	पिय	४६०	सनानं	४४६
केसवो	४६०	पुञ्जाई	४४६	सनेदो	४४६
शकनं	४४४	पूजितो घ नाए	४४७	सपथ	४४७
शन्तून	४६०	भगवती	४४६	सवळजो	४४६
गरुड	४४७	भट	४४७	सरफसं	४६०
गुनेन	४४६	भवातिसो	४४८	सलफो	४४६
गोविन्तो	४६०	भारिआ	४६०	सरिलं	४४६
घेत्तूनं	४६१	भारिया	४४६	ससी	४४६
णिच्छो	४४६	मठ	४४७	सापा	४४७
तत्पून	४६०	मतनपरवसो	४४६	सिनातं	४४६
तद्रूपून	४६०	माथयो	४६०	सुजो	४४७
तलुनी	४६०	मेखो	४४४	सोभति	४४६
सातिसो	४४६	यातिसो	४४६	सोभनं	४४६
सामोतरो	४४६	युम्हातिसो	४४६	सगामो	४६०
दसपत्तनो	४४६	रज्जो धनं	४४६	द्वितार्क	४६१
दसवत्तनो	४६०	राचा	४४६	द्वितपर्क	४४६
				द्वोषु	४४६

परिशिष्ट १५

चूलिकापैशाचीशब्दानुक्रमणिका

पुत्रातस	४६३	वयक	४६२	फवो	४६३
फाव	४६२	तनुथर्ल	४६३	फोड्प्य	४६३
गती	४६३	तानोवलो	४६२	फोवि	४६३
गोळी	४६२	थाला	४६३	मकनो	४६२
घनो	४६३	धम्मो	४६३	मवनो	४६२
चछन	४६२	नको	४६२	मथुलो	४६३
चछनरा	४६३	नखतप्पनेमु'	४६३	मेखो	४६२
चीमूतो	४६२	नमथ	४६३	खफमो	४६३
छलो	४६२	नियोजित	४६३	छाचा	४६२
ज्जो	४६३	पनमथ	४६३	छामो	४६३
जीमूतो	४६३	पातुक्खेवेन	४६३	छब्ब	४६२
झछरी	४६३	पाटपो	४६३	खफा	४६३
ठमलुको	४६२	पालो	४६३	वखो	४६२
ठका	४६२	फकवती	४६३	वसुथा	४६३
डमरुको	४६३	फवति	४६३	दल	४६२
		फवते	४६३		

परिशिष्ट १६

अपभ्रंशशब्दानुक्रमणिका

भस्मि	४६१	एम्ब, एम्बई	४७१	क्रिय	४८०
भस्मिर्पं	४६३	एम्बहि	४७६	क्रिर	४७९
भस्मिर्णं	४६३	परिस	४९६	क्रिलिघो	४९९
भार्धत	४६०	पूठ	४७१	क्रिगिण	४९६
भञ्जु	४६०, ४६४	पूह कुमारी	४६९	क्रिद, क्रिप	४७६
भञ्ज	४६९	पूहोनर	४६९	क्रिदे	४६६
भलसी	४६९	ओइ	४६८	कीक	४६९
भन्ने क	४६९	अंगुलिउ	४६२	केरथु	४७६
भयरोप्पवं	४७६	अंसु	४६०	उडुली	४७७
अदस	४७२	क	४७२, ४७४	कम्पर	४६८
आहर	४६७	कउरल	४६९	करण	४६०
आहरि, एडुघइ नाहु	४७२	कचु	४६९	कार	४६०
आहवह	४७२	कदुवउं	४७८	विमइ	४७८
आहं	४७१	कधिरु	४६७	गुडिय	४६८
आय	४७२	कमलई	४६४	रोडुअ	४६६
आयहं	४६६	कम्हार	४६६	गेउइ	४६८
आयेण	४६६	करहि	४७८	गउरी	४६६
आपहो	४६६	कलिदि	४६३	गयुम्भई दारन्नु	४६३
आहर, जाहर	४७६	कदइ	४६८	गथं	४८०
इकसि	४७६	करैलु	४६८	गिम्भो	४६९
इणउडु	४७८	वहा	४६९	गिरिसिगडुं	४६२
इस्थी	४६९	कटेकरउ	४६९	गिरिहे	४६३
उडुवइस	४७६	का	४७३	गुण्दि	४६४
उछ	४६६	काई न पूरे देन्वइ	४६६	गह	४६६
एइति घोटा	४६३	काचु	४६६	गोरी	४६६
एइपेणउ	४६३	कामु	४६६	गंदिनाल	४६८
एइहि	४६६	कि गम्भहि कलमेइ	४६६	कउरुडु	४६१
एचडे	४७६	किघो	४६६	कउन	४६१

सुडसुड	४७७	तरुहे	४६३	धणहे	४६४
छ	४६९	तरुहं	४६३	धुअ, धुआ	४६७
छग	४६९	तलि धछइ	४६२	ध्रुव	४७६
छसुहु	४६१	तलाउ	४६९	नउ, नाइ, नावइ, नं	४७६
छुडु	४७६	तसु	४६२	नहे	४६२
ज	४७३	तहि	४६६	नार्हि	४७६
जइकेवई पावीसु पिउ	४६८	तंहेकेरउ	४६६	नियळ	४६९
जमुना	४६९	ताउं, ताम, तामहि	४७६	निसिआ खग	४६६
जहां, दोन्तउ,		तासु	४६६	निहित	४६९
आगरो	४६६	ताहं पराई कवण		नेउर	४६६
जसु	४६९	घुण	४६६	नोन्निख	४६८
जहि	४६६	तिसु	४६६	पइछि	४६६
जइ केरउ	४६६	तिवै	४६८	पउर	४६६
जा	४७३	तुऊउउं	४६७, ४६४	पऊवा लिउ	४७६
जामु	४६६	तुम	४७१	पऊछइ	४७६
जियु	४६१	तेसु, तसु, तेहि	४७६	पट्टि	४६६
जिवै	४६८	तेम, तेम्व, तिम, तिम्व	४७६	पडाय	४६८
जुच	४६१	तो	४७६	पडिउ	४६८
जेतु, जसु	४७६	तोसिअ-संकस	४६१	पडिवत्त	४६६
जेम, जिम, जिम्व,		थोर	४४६	पठ गृण्हेप्पिणु वुतु	४७९
जेम्व	४७६	दइअ	४६६	पपट्ट	४६९
जो	४६१, ४७२	दइसुहु	४६१	पर	४७६
जोइसिउ	४६९	दिट्टि	४६७	पवसन्ते	४६२
जोव्वण	४६६	दिवे	४७६	पहुलु	४६७
जिअइ	४६९	दोव	४६८, ४६०	पाठिकं, पाठिपुळं	४७६
कइइ	४६८	दीहर	४६०	पाउ	४६८
कुडर	४६८	दुउइहा	४६२	पाहाय	४६९
कोल्लइ	४६८	दुडु	४६३	विअमाणुस-	
कोला सामळा	४६६	देइ	४६६	बिऊओइगर	४६७
कउ	४६७	देव	४६६	पिट्टि	४६६
कणई	४६३	देवण	४६२	पिउ	४६०
कणु	४६६	दंणण	४६७	पोलिय	४५९
कणुहो, कणुहो	४६३	धण	४६६	पंम्म	४६९

उद्धि	४९६	यादि	४९७	युजइ	४७९
उद्यु	४७६	रण	४६१	येल्लि	४९६
पुरिस	४९६	रघ	४६१	स	४७४
पेम्म	४९६	रहस	४९९, ४६१	सङ्गिह	४६१
पोरथय	४६०	रिसहो	४९५	सव्यु	४९७
पोप्फळ	४९६	रीछ	४९९	सभलउ	४९७
फारेसु	४९८	रुअहि	४७८	समारु	४७६
फंम	४९७	रुअपेदि	४६२	समासण	४६०
फंसइ	४९८	रुइदि	४७८	सर	४९९
यल्लुडा	४७७	रुइहुं	४७८	सलइइ	४६०
वालडे	४६४	लिइ, लीइ	४९६	सगधि	४६१
वीस	४९७	छेइ	४९६	सञ्ज	४७१
धुवइ सुदासिउ किपि	४७९	वळउइ गिणइइ	४६२	सञ्जचेइ	४७६
वे दोखडा	४७७	वळउइ गिणइइ	४६२	रानु वि छोउ	४६६
वेल्ल	४९६	वयंसिअहु	४६४	सञ्जगाउ	४६४
वेल्लि	४९९	वसयि	४९८	ससि छोव्लिअन्नु	४७९
मरगउं	४६४	वहिल्ल	४७६	सहदि	४७८
मर्वे	४९८	वामोइ	४९९	संपजइ	४७८
भविसचक्रुडा	४६१	वालइवरम	४६३	सा	४७३
भारथ	४९८	वावारउ	४९९	साहा	४९७
मउड	४४६	वासेण वि भारहर-		सीय	४९६
मग्गेहि तिहि	४६४	खम्भि चद	४६१	सोइ	४९७
मज्जइ	४६४	मासुमहारिसि पउं		मुअणस्सु	४६२
मउ	४९७	अणइ	४६१	सुधिचिन्तिअइमाणु	४९७
मगाउं	४७६	विचळ	४९९	सुमरि	४७८
महिहि	४६४	विज्जुलिया	४९९	सुवणरेइ	४९६
मं	४७६	विट्टीए	४९६	सो	४६१, ४७२
मिच्छत्त	४६०	विणु	४७६	सोलस	४९९
मुणइ	४९६	वियउठ	४९८	हर	४६१
सुसाहल	४९७	विलासिणीओ	४६४	हरइइ	४९६
साँरगर	४९६	विहण	४९६	दिअइ सुडुअइ	४७९
मोँरल	४९६	वीट	४९८	दिअउठ	४७७
				होसइ	४७८

अभिनव प्राकृत-व्याकरण

डा. नेमिचन्द्र शास्त्री

तारा पब्लिकेशन्स
वाराणसी